Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सामवेदभाष्यम्

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public D

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

ओ३म्

भगवतीभाष्यसमलंकृतम्

सामवेदभाष्यम्

भाष्यकार

परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वितरक :

भगवती प्रकाशन

एच १/२, मॉडल टाउन, दिल्ली-११०००९

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

प्रकाशक :
स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
वेदसदन
एच १/२, मॉडल टाउन,
दिल्ली-११०००९.

संस्करण : प्रथम
षष्ठीपूर्ति के अवसर (२०.१.९१) पर

मूल्य : १००.०० मात्र

मुद्रक :
राधा प्रेस,
कैलाश नगर, दिल्ली

द्वारा फोटोटाईपसैटिंग
क्लासिक फोटोटाईपसैटर्स
जी-२४ विजय नगर सिंगल स्टोरी
फोन : ७१२१५८४

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दो शब्द

वेद आर्य-संस्कृति के मूलाधार हैं। **'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा'** (यजु:० ७।१४)। वैदिक संस्कृति सारे संसार की प्रचीनतम संस्कृति है और सारे विश्व के द्वारा वरणीय है। वेद आर्ष ज्ञान-विज्ञान के अक्षय कोष हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।" वेद सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का प्राण है। वह भक्तिरस का निर्झर (स्रोत) और गम्भीर विचारों का आकर (खान) है। वेदों में तेज, ओज, और वर्चस्व की राशि है। वेद में दिग्दिगन्त को पावन करनेवाले दिव्य उपदेश हैं, मानवता को झकझोरनेवाले अनुपम आदेश और सन्देश हैं। वेद में आधिभौतिक उन्नति की चरम सीमा है, आधिदैविक अभ्युदय की पराकाष्ठा है और आध्यात्मिक आरोहण का सर्वोन्नत रूप है।

वेद चार हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद में तृण से लेकर ब्रह्मपर्यन्त सारा ज्ञान दिया हुआ है। यजुर्वेद यज्ञवेद है। इसमें अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों का वर्णन है तथा श्रेष्ठ कर्म करने का उपदेश है। सामवेद उपासना वेद है। इसमें प्रभु-उपासना की मन्दाकिनी चूड़ान्तरूप में प्रवाहित हो रही है। अथर्ववेद विज्ञानवेद है। इसमें नाना प्रकार की ओषधियों और युद्ध के भयकरतम अस्त्र-शस्त्रों का वर्णन है। इस प्रकार यह युद्ध और शान्ति का वेद है।

सभी वेदों की अपनी-अपनी विशेषता है। उपासना-वेद होने के कारण सामवेद तापत्रय से सन्तप्त मानवों को अपूर्व शान्ति प्रदान करता है। आधि-व्याधि और वासनाओं से विक्षुब्ध मानव-हृदय साम-मन्त्रों का उच्चारण करते हुए भक्तिरस के आनन्दसागर में निमग्न हो जाता है। इसीलिए श्रीकृष्णजी ने कहा था– **'वेदानां सामवेदोऽस्मि'**– वेदों में मैं सामवेद हूँ।

सर्वसाधारण को वेद पढ़ने में रुचि हो, वह वेद को सरलतापूर्वक समझ सके, इसलिए सर्वप्रथम इस वेद की सरस, सरल, मनोहारी, हृदयग्राही व्याख्या करने का प्रयत्न किया है। साधारण पाठक के लिए शब्दार्थ की आवश्यकता नहीं है, अतः हमने शब्दार्थ न करके विस्तृत भावार्थ ही लिखा है, इस भावार्थ को लिखते हुए मूलवेद के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है। जहाँ आवश्यक था, वहाँ एक-दो पंक्तियाँ बढ़ाकर अर्थ को स्पष्ट कर दिया है।

इस सामवेद में लगभग २७५ मन्त्र ऐसे हैं, जो दो बार आये हैं। हमारे विचार में ये मन्त्र पुनरुक्त नहीं हैं, अतः दूसरी बार जहाँ भी ये मन्त्र आये हैं हमने उनका दूसरा अर्थ किया है। अनेक मन्त्रों के दो-दो अर्थ किये हैं, कुछ मन्त्रों के तीन-तीन अर्थ भी किये हैं,एक मन्त्र के चार अर्थ भी दर्शाये हैं। पाठक पढ़ें और आनन्द लें।

हम वेद क्यों पढ़ें? वेद उत्तम मनुष्य बनने और उत्तम सन्तान पैदा करने का आदेश देते हैं। ऋग्वेद में कहा है– **'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्'** (१०।५३।६)। वेद के स्वाध्याय से मनुष्य के मन और मस्तिष्क में यह बात भली-भाँति बैठ जाती है कि यह संसार परमात्मा द्वारा रचा गया है, जो अद्वितीय है। उससे बड़ा तो क्या उसके बराबर भी कोई नहीं है। वह परमात्मा न्यायकारी है। 'मनुष्य जैसे कर्म करता है, वैसा ही फल उसे प्राप्त होता है'– यह विचार मनुष्य को पुण्यात्मा, सदाचारी, दयालु, परोपकारी, न्यायकारी, पर-दुःखकातर, निर्भय और मानवता के गुणों से सुभूषित बना देता है। वेद हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। हमारा अपने प्रति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband

क्या कर्तव्य है, दूसरों के प्रति (परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के प्रति) हमारा क्या कर्तव्य है, परमात्मा के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है– इस सबका ज्ञान हमें वेद से ही प्राप्त होगा। वर्ण-आश्रम धर्मों का प्रतिपादन भी वेद में सुन्दररूप में प्रस्तुत किया गया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र– इन सभी वर्णों के तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास– इन सभी आश्रमवासियों के कर्तव्यकर्मों का सदुपदेश वेद में विद्यमान है, जिनपर आचारण करने से मनुष्य का जीवन उदात्त भावनाओं से पूर्ण, नियमित, संयमित और सन्तुलित बन जाता है। मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने के लिए वेद का अध्ययन अनिवार्य है। वह और कुछ पढ़े या न पढ़े वेद तो उसे पढ़ना ही चाहिए।

धर्मशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, युद्धशास्त्र, भूगोलशास्त्र, विज्ञानशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, गणितशास्त्र, ज्यामितिशास्त्र, वायु-विज्ञान, जलविज्ञान, वस्त्र-वयनविज्ञान, वास्तुविज्ञान, कला-कौशलविज्ञान, नौ-विमानविज्ञान, ज्योतिष (गणित)-विज्ञान, छन्दविज्ञान, पशुविज्ञान, औषधविज्ञान, प्रजननविज्ञान, सन्तति-निर्माणविज्ञान, गृहस्थविज्ञान, यज्ञविज्ञान, वृष्टिविज्ञान शरीरविज्ञान, आत्मविज्ञान, योग-विज्ञान, मनोविज्ञान, चिकित्साविज्ञान, कृषिविज्ञान, मन्त्रविज्ञान यन्त्रविज्ञान– ये और इस प्रकार के अनेक विज्ञानों के जानने के लिए वेद का स्वाध्याय आवश्यक है।

वेद कठिन नहीं है, वेद की भाषा बहुत सरल है, चारों वेदों में तीन शब्दों से अधिक का समास नहीं है। परमात्मा ने अपने अमृतपुत्र और पुत्रियों से ऐसी भाषा में बात नहीं की है, जिसे वे समझ न सकें। आप कम-से-कम इतना संकल्प अवश्य लें कि प्रतिदिन दो मन्त्र अवश्य पढ़ने हैं। यदि आप इतना भी करें तो लगभग २८ वर्ष में चारों वेदों का पारायण पूरा हो जाएगा। दो मन्त्रों के पढ़ने में आपके तीन मिनट से अधिक नहीं लगेंगे। इतना-सा भी करने से आप अपने परमधर्म का पालन करेंगे और वेद की ज्योति को जलाने में सहायक होंगे।

सामवेद पर अनेक भाष्य हैं। मुझे जिन व्यक्तियों के भाष्य अधिक उत्तम लगे हैं, वे हैं– १. पं० श्री भगवदाचार्यजी, २. स्वामी ब्रह्ममुनिजी, ३. पं० हरिशरणजी सिद्धान्तालंकार और ४. पं० विश्वनाथजी विद्यामार्तण्ड। मैंने सभी के भाष्यों से भरपूर सहायता ली है, तदर्थ मैं उन सभी का हार्दिक आभारी हूँ।

ईक्ष्य-वाचन = प्रूफ संशोधन में पं० श्री रविदत्तजी 'गौतम' एम.ए. ने जो सहयोग दिया है, तदर्थ उन्हें भी साधुवाद देता हूँ।

इस भाष्य के पढ़ने से कुछ भी पाठकों की वेद के स्वाध्याय के प्रति रुचि जाग्रत् हुई तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा।

वेदसदन
एच १/२, मॉडल टाउन,
दिल्ली-११०००९.

विदुषामनुचर
– **जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ओ३म्

सामवेदभाष्यम्

पूर्वार्चिकः

आग्नेयपर्व

अथ प्रथमः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ २ १ २र ३ १ २

१. अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हम आपकी स्तुति=गुणगान करते हैं। आप उपदेश करते हुए हमारे हृदय-मन्दिर में आइए– हमें अपने दर्शन दीजिए। किस लिए? हमारे अविद्या-अन्धकार को दूर करके ज्ञान-ज्योति प्रदान करने तथा अपने आनन्दामृत का पान कराने के लिए। प्रभो! आप हमारे जीवन-यज्ञ के सञ्चालक बनकर निरन्तर हमारे उस हृदय-मन्दिर में विराजमान रहो जो दुर्गुण, दुर्व्यसन और पाप-वासनाओं से शून्य है तथा कुशा-घास के समान शुद्ध, पवित्र और निर्मल है।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

२. त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने।।

हे सबको आगे ले-जानेवाले! सर्वोन्नति-साधक प्रभो! आप सब श्रेष्ठ कर्मों के करनेवाले हैं और अपनी प्रजा को भी शुभ कर्म ही करने की प्रेरणा देनेवाले हैं। आप मननशील, योगाभ्यास से अपनी शक्ति का विकास करनेवाले तथा विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व आदि दिव्य गुणों को अपने जीवन में धारण करनेवाले उपासक द्वारा हृदय-मन्दिर में धारण किये जाते हैं।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३ १२

३. अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।।

हमारे आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक– तीनों तापों के नाशक, मुमुक्षुओं के मार्गदर्शक, सर्वप्रेरक और जीवन-उत्कर्षक, मोक्षसुख और सब सम्पत्तियों के दाता, वेद द्वारा उत्तम उपदेश करनेवाले– सर्वज्ञाननिधि, शोभन प्रज्ञा और कुशलकर्मा होने के कारण हमारे जीवन-यज्ञ का उत्तमरूप से सञ्चालन करनेवाले परमात्मा का हम वरण करते हैं, उसकी उपासना करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २३ १ २ १ २ ३ १ २र
४. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः।।

शम-दम आदि षट्सम्पत्ति से विभूषित उपासक को चाहनेवाला, हृदय-मन्दिर में प्रदीप्त और प्रत्यक्ष किया हुआ, शुद्धस्वरूप, योगानुष्ठान द्वारा हृदय में धारित– अपनाया हुआ, नाना प्रकार की स्तुतियों से स्तुत किया गया प्रकाशस्वरूप परमात्मा हमारी साधना और ईश्वरप्रणिधान के आवरकों=विघ्नों– अविद्या, अज्ञान, रोग-शोक, काम-क्रोध आदि वासनाओं को भली प्रकार नष्ट करता है।

ऋषिः-उशना। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २र
५. प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! मैं प्रियतमों–शरीर और प्राणों से भी प्रिय–अत्यन्त प्रिय, सर्वव्यापक और अतिथि के समान पूज्य, मित्र के समान आनन्ददायक और हृदय को तृप्त करनेवाले, उपासकों के हृदय-मन्दिर में रमण करनेवाले तथा ज्ञातव्य और प्राप्तव्य–जानने और प्राप्त करने योग्य, आपकी उपासना करता हूँ। प्रभो! तू अत्यन्त प्यारा है, आत्मा का सहारा है, अतः मेरे जीवन में रम जा और आत्मा में समा जा।

ऋषिः-सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
६. त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य।।

हे परमेश्वर! आप अपनी महान् रक्षण-शक्तियों के द्वारा सर्वदिशाओं में होनेवाले अशान्तिप्रद कारणों से, सब प्रकार की अदान-भावनाओं से, अविद्या-अज्ञान आदि शत्रुओं से और मनुष्य-सुलभ द्वेष-भावनाओं से, जीवन की क्षणभंगुरता को भुलाकर द्वेष करनेवाले मनुष्यों से हमारी रक्षा कीजिए।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १२३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७. एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः।।

हे परमदेव परमात्मन्! तू आ, अवश्य आ और मेरे हृदय-मन्दिर में विराज, जिससे कि मैं तेरे सान्निध्य में रहता हुआ सामान्य व्यवहार में भी सदा सत्य ही बोलूँ–जीवन में सर्वदा मन, वचन और कर्म से सत्य का ही पालन करूँ। प्रभो! तू हमारे सत्यभाषण, सत्याचरण आदि द्वारा हमारे हृदय में समिद्ध हो, भक्तिरस से आप्लावित=सराबोर रस-बिन्दुओं से हमारे हृदय-मन्दिरों में प्रकाशित हो।

ऋषिः-वत्सः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
८. आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामये गिरा।।

हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! आपके गुणों का गान करनेवाला आपका प्रिय पुत्र/उपासक दूर-दूर स्थानों में भटकनेवाले अपने मन को वहाँ से हटाकर आपके आनन्ददायक स्वरूप में नियन्त्रित करता है–अपनी चित्तवृत्तियों को आपमें समाहित करता है। प्रभो! मैं अपने स्तुति-वचनों से–आपके गुणगान से अपने जीवन को तदनुकूल बनाता हुआ तुझे और केवल तुझे चाहता हूँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २

९. त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! संशयरहित, स्वसंकल्प में दृढ़, निश्चल चित्तवृत्तिवाले उपासक–योगी ने शरीर की पुष्टि करनेवाले, रक्त और प्राणों के सञ्चालक हृदय से और समस्त शरीर का वहन करनेवाले मस्तिष्क से आपको मथा है– शरीर को नीचे की अरणि और प्रणव=ओ३म् को ऊपर की अरणि बनाकर अथवा अभ्यास और वैराग के सम्मिश्रण से आपको मथा है और मथकर आपको प्रकट किया है–आपका साक्षात्कार किया है।

ऋषिः–वामदेवः! **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २२ ३ २

१०. अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे। देवो ह्यसि नो दृशे।।

हे प्रकाशस्वरूप देव! कुपथ से रक्षण के लिए और महान् श्रेय=मोक्ष प्राप्ति के लिए आप हमें अभ्यास और वैराग्य से साध्य अपने प्रकाशमय स्वरूप का दर्शन कराइए। प्रभो! हम आपके दर्शन के लिए आकुल और व्याकुल हैं। आप हमें अपना साक्षात् कराइए, क्योंकि आप ही हमारे इष्टदेव हैं।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः–आयुङ्क्ष्वाहिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २

११. नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय।।

हे सर्वप्रकाशक प्रभो! हम आपको नमस्कार करते हैं। योगरूपी खेती करनेवाले अथवा आपको अपनी ओर आकृष्ट करनेवाले वा आपकी ओर आकर्षित हुए उपासकजन दया, दान, दाक्षिण्य, वात्सल्य, सरलता आदि आध्यात्मिक सम्पत्ति और आत्मबल की प्राप्ति करने के लिए आपकी आराधना करते हैं। हे आनन्दमय परमेश्वर! आप अपने महापराक्रम से हमारे काम-क्रोधादि आन्तरिक महावैरियों और चोर, डाकू, लुटेरे आदि बाह्य शत्रुओं को नष्ट कर दीजिए।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २

१२. दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा।।

हे परमेश्वर! आप वेदरूपी ज्ञान के संदेशवाहक-सर्गारम्भ में अग्नि आदि ऋषियों के हृदय में वेदज्ञान के प्रेरक, त्रिविध तापों के नाशक, कुमार्गगामियों-दुराचारियों का दमन करनेवाले, सकलैश्वर्यों के स्वामी और सर्वज्ञ, मानवमात्र को दान और भोग योग्य पदार्थों को प्राप्त करानेवाले, अजर-अमर और मोक्षरूपी सम्पत्ति के महान् दाता हो। मैं अपनी स्तुति वाणियों द्वारा आपका गुणगान करता हुआ आपकी आराधना करता हूँ-आपको प्रसन्न करता हुआ आपको अपने अन्दर संस्थापित करता हूँ।

ऋषिः–प्रयोगः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२ २

१३. उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन्।।

हे ज्ञानरूप प्रभो! योगसाधना द्वारा शुद्ध, पवित्र, निर्मल किये हुए अपने मन को आपमें अर्पित करनेवाले

उपासक की स्तुतियाँ– गुणगान करनेवाली वाणियाँ एक-दूसरे से बढ़-बढ़कर तेरी और केवल तेरी ओर निर्देश करती हुई वायुवत् सबके प्राणाधार, सबसे अधिक बलशाली आपमें स्थिर होती हैं। प्रभो! आप हमारे इस गुणगान को स्वीकार करो– हमें शक्ति प्रदान करो कि हम उपासक भी आपके गुणों से समलंकृत हो जाएँ।

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३१२३ १२ ३२ ३२ २३ १२३ १ २

१४. उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।।

हमारे अविद्या-अन्धकार का नाश करनेवाले हे प्रभो! हम उपासक प्रतिदिन सायं-प्रातः ध्यान-धारणाओं द्वारा–नियमित योगसाधन– सन्ध्योपासना द्वारा, ज्ञानपूर्वक कर्म करते हुए श्रद्धा-भक्तिपूर्वक नमस्कार की भेंट लिये हुए तेरे समीप आ रहे हैं–तुझे पाने के लिए योगमार्ग पर आगे और आगे बढ़ रहे हैं।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १२ ३ १२ ३१२ १२ ३१२ ३ २

१५. जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम्।।

वृद्धावस्था के द्वारा चेतना प्रदान करनेवाले हे परमात्मन्! आप अपने भक्तों, उपासकों के कल्याण के लिए उनके राग-द्वेषशून्य विशाल हृदय-मन्दिरों में प्रविष्ट होओ; जिससे उन्हें उपासना रूपी यज्ञ का फल प्राप्त हो सके। हम अतिशय पूजनीय, दुष्टों को रुलानेवाले, सर्गारम्भ में वेदज्ञान प्रदान करनेवाले आपके लिए मनोहर, दर्शनीय=क्रियात्मक स्तुति करते हैं, केवल जिह्वा से बोली जानेवाली नहीं, अपितु कर्मों से प्रकट होनेवाली स्तुति करते हैं।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३१ २३२३ १ २ ३१ २ ३ १ २

१६. प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि।।

विद्वानों के द्वारा प्राप्तव्य हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! हम अपने हिंसारहित सुन्दर जीवन-यज्ञ में अपनी इन्द्रियों की रक्षा के लिए श्रद्धा और भक्ति से आपको पुकारते हैं–गौ-ज्ञानामृत-रस-आनन्दामृत का पान करने के लिए तुझे पुकारते हैं– तेरा ध्यान और तेरी उपासना करते हैं। हे प्रभो! तू प्राणों के साथ–प्राणसाधना के द्वारा हमारे जीवन में प्रकट हो–अपनी रक्षण-शक्तियों से हमारे जीवन-यज्ञ में प्रकट हो जिससे हम काम-क्रोधादि हिंसक वृत्तियों का दलन कर सकें।

ऋषिः–शुंनःशेपः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १२ ३.१ २ ३१ २र ३१२ ३१ २

१७. अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम्।।

वारवन्तम्=प्रशस्त बालोंवाले अर्थात् उत्तम नस्लवाले अश्व=घोड़े की जैसे **नमोभिः**=अन्नों के द्वारा सेवा की जाती है उसी प्रकार **वारवन्तम्**=दोषों के निवारक, अत्यन्त बलवान्, वरण करने योग्य, शरणागतवत्सल, हिंसा आदि दोषरहित यज्ञों के सम्राट्– प्रकाशक उस सर्वप्रसिद्ध परमात्मा की हम नमस्कारों द्वारा वन्दना करते हैं, जो काम-क्रोधादि दुर्गुणों को स्व-सामर्थ्य से उसी प्रकार परे भगा देता है, जैसे उत्तम नस्ल का घोड़ा शत्रुओं पर आक्रमण करके उन्हें दूर खदेड़ देता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

ऋषिः–प्रयोगः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २३१२
१८. और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे। अग्निं समुद्रवाससम्।।

अत्यन्त विशाल– उदार हृदयवाले मनुष्य की भाँति, ज्ञानाग्नि में परिपक्व मनुष्य के समान– ज्ञानपूर्वक कर्म करनेवाले के समान, क्रियाशील जीवनवाले के समान अर्थात् उदार हृदय, ज्ञानी और कर्मयोगी बनकर मैं शुद्ध, पवित्र, अत्यन्त निर्मल–अपापविद्धम्=पापशून्य, प्रकाशस्वरूप और आनन्दमय परमेश्वर को श्रद्धा-भक्ति आदि द्वारा अपने हृदय में प्रकट करता हूँ।

ऋषिः–प्रयोगः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१९. अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमिन्धे विवस्वभिः।।

मनुष्य **मनसा**=श्रवण, मनन, निदिध्यासन और ध्यानादि के द्वारा परमात्मा को अपने हृदय-मन्दिर में प्रदीप्त करता हुआ ज्ञानपूर्वक कर्मों का अनुष्ठान करे। इसके साथ ही मनुष्य धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा तथा विद्वानों के सत्संग से परमात्मा को अपने हृदय में दीप्त-प्रकाशित करे– उसका साक्षात्कार करे।

ऋषिः–वत्सः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२उ ३ २ ३ १२३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २
२०. आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवि।।

योगिजन योगाभ्यास के अनन्तर ही जगत् की उत्पत्ति से पूर्व भी वर्तमान और जगत् में व्याप्त प्रकाशस्वरूप परमात्मा की ज्योति का दर्शन किया करते हैं, उस ज्योति का दर्शन किया करते हैं जोकि दिन के समान प्रकाशमान है, सर्वोत्कृष्ट है। ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र और तारागणों के रूप में द्युलोक में चमक रही है।

तृतीया दशतिः

ऋषिः–प्रयोगः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
२१. अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते।।

हे मनुष्यो! तुम उस प्रकाशस्वरूप परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयत्न करो जो तुम्हारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक सर्वविध उन्नति करनेवाला है, जो हिंसारहित श्रेष्ठकर्मों– अहिंसा, सत्य आदि उत्तम व्रतों को पूर्ण करनेवाला है, जो सर्वव्यापक और सबके द्वारा कामना करने योग्य है। उसे किसलिए प्राप्त करें? परमात्मा के नप्ता=पौत्रवत् प्रिय और बलवान् बनने के लिए। बलशाली बनकर हम संसार के ऐश्वर्यों को भोगें और नप्ता=गुणवान् बनकर मोक्षानन्द प्राप्त करें।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ १२ ३ १ २ ३ २
२२. अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद् विश्वं न्या३त्रिणम्। अग्निर्नो वंसते रयिम्।।

तेजःस्वरूप, मोक्ष की ओर ले-चलनेवाला वह प्रभु अपने तीक्ष्ण ज्ञानमय तेज से हमारे अन्दर प्रविष्ट हो जानेवाले और हमें खा जानेवाले, हमारी आध्यात्मिक उन्नति के शत्रु काम, क्रोध, लोभ आदि को– हमारे अन्दर उठनेवाली सकल पापवृत्तियों को नियन्त्रित करता है, दबा देता है। वह ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ही हमारे

लिए लौकिक और पारलौकिक-सांसारिक भोग और मोक्ष प्रदान करता है।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
२३. अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप हमें सुखी कीजिए। आप महान् हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं, अतः प्राणिमात्र को सुखी कर सकते हैं। हे प्रभो! आप तुझ इष्टदेव को तथा दिव्यगुणों को चाहनेवाले, अपने जीवन का विकास करनेवाले, अपने-आपको शम, दम आदि दैवी सम्पत्तियों से अलंकृत करनेवाले उपासक को प्राप्त होते हो। हे देव! दुर्गुण और दुर्व्यसनों से रहित, वासनाओं से शून्य मेरे हृदय-कमल में विराजमान होने के लिए आप आइए।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
२४. अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति स्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप हमें शारीरिक, वाचिक और मानसिक तीनों प्रकार के पापों से बचाइए। हे देव! हमारे जीवन को नष्ट करनेवाले, हमारा पतन करनेवाले प्रत्येक पाप से हमें बचा। प्रभो! आप अजर हैं, जीर्ण-शीर्ण होनेवाले नहीं हैं, अतः अपने सन्तापक साधनों से हमारे काम-क्रोधादि को भस्म कर दीजिए।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ र ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
२५. अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः।।

हे प्रकाशस्वरूप! सबको आगे ले-जानेवाले परमेश्वर! आपकी प्राप्ति के लिए मेरे शरीररूप रथ में इन्द्रियरूपी घोड़ों को आप जोतिए, क्योंकि ये घोड़े आप द्वारा ही प्रदान किये हुए हैं। हे दिव्य गुणयुक्त प्रभो! आप द्वारा जोते गये ये इन्द्रियरूपी घोड़े कल्याणसाधक होने से उपासक को साधना-मार्ग पर चलाते हुए उसकी यात्रा को सिद्ध करनेवाले हैं, शीघ्रता से मार्ग को तै करनेवाले हैं, और न थकते हुए बड़ी सुन्दरता के साथ साधक को उसके जीवन-लक्ष्य परमात्मा तक पहुँचानेवाले हैं।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
२६. नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्। सुवीरमग्न आहुत।।

हे प्रातव्य प्रभो! हे संसार के स्वामिन्! उपासकों द्वारा पूर्णरूपेण अपने हृदय में स्थापित और अपने भक्तों को चारों ओर से उत्तम पदार्थों को प्राप्त करानेवाले ज्योतिस्वरूप परमात्मन्! हम उपासकगण ज्योतिर्मय, सर्वोत्तम ज्योति– वेदज्ञान के दाता, परमपद=मोक्ष के प्रदाता आपका निरन्तर ध्यान करते हैं, आपको अपने अन्दर धारण करते हैं।

ऋषिः-विरूपः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ र ३ २ ३ २ ३ १ २ र
२७. अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति।।

वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा संसार का शिरोमणि है—संसार में उससे बड़े होने की तो बात ही क्या कोई

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

उस जैसा भी नहीं है। वह अनुपम है। वह ज्ञान की महान् राशि है। वह निरतिशय ज्ञानमय है। वह पृथिवी का रक्षक और स्वामी है। वह परमेश्वर जीवों को कर्मों का यथायोग्य फल प्रदान कर उन्हें तृप्त करता है।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३२३ २उ ३ १ २ ३१ २३१ २र १२ ३२३ १ २

२८. इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः।।

हे अनन्त ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आप हमारी सभी इन्द्रियों में संविभागपूर्वक बाँटकर खाने और दान देने का, आपकी अर्चना का, और निन्दा न करके स्तुति=गुणगान करने के पाठ का निश्चय ही अच्छी प्रकार प्रवचन कर दें। आपकी कृपा से हमारे हाथ-पैर, नेत्र-श्रोत्र आदि सभी इन्द्रियाँ दानशील, प्राणिमात्र की सेवा में संलग्न और सदा सबके लिए कल्याण की भावनावाली हों–सबके प्रति प्रशंसात्मक शब्द ही बोलें, निन्दात्मक शब्द न बोलें।

ऋषिः–गोपवनः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३१२ २१ २र १२ ३१२

२९. तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अंगिरः। स पावक श्रुधी हवम्।।

हे ज्ञानस्वरूप! ज्ञानाग्नि से पापवासनाओं को भस्म कर देनेवाले प्रभो! अंग-प्रत्यंग में रस का सञ्चार करनेवाले और उन्हें सन्मार्ग में प्रेरित करनेवाले परमेश्वर! अपनी इन्द्रियों को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनानेवाला उपासक आपके गुणगान के द्वारा आपको अपने हृदय-मन्दिर में प्रकट करता है– आपका साक्षात्कार करता है। सबको सुप्रेरणा करके पवित्र करनेवाले हे प्रभो! आप मेरी पुकार को सुनो और मुझे भी पवित्र कर दो।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२३ १२ ३२३२ ३१२ ३१ २ ३१२

३०. परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।

मोक्षपद का स्वामी, वेदरूपी काव्य का रचयिता, कवियों का कवि, क्रान्तदर्शी, सर्वज्ञ, प्रकाशस्वरूप परमात्मा उपासकों की भावपूर्ण स्तुतियों को स्वीकार करता है और आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक के लिए नानाविध रत्न=अंगों का स्वास्थ्य, मधुर वाणी, सुबुद्धि, धैर्य, योगज विभूतियाँ, मोक्ष और अपना दर्शनरूप रमणीय धन प्रदान करता है।

ऋषिः–प्रस्कण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२३ २ ३१२ ३१ २ ३१२ ३१ २र ३ १२

३१. उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।।

जिससे चारों वेद प्रकट हुए हैं, जो सर्वत्र व्याप्त है, जो सब जगत् को जानता और सब जगत् का उत्पादक है, उस देवों के देव, चराचर जगत् के सञ्चालक, सब जीवादि जगत् के प्रकाशक परमेश्वर की विश्वविद्या की प्राप्ति के लिए हम लोग उपासना करते हैं। वेद की श्रुतियाँ और जगत् की रचना-विशेष तर्क-वितर्क के साथ उसी परमेश्वर को जनाते और प्राप्त कराते हैं। हम लोग सदा उस संसार के स्वामी, सर्वान्तर्यामी परमेश्वर की ही उपासना करें, अन्य किसी की नहीं।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २३ १ २र ३१२ ३२ ३१२ ३१२

३२. कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम्।।

हे आनन्दामृतपान के अभिलाषिन्! तू हिंसारहित और राग-द्वेषादि समस्त मानसिक विकारों से शून्य अपने जीवनयज्ञ में सबको आगे ले-चलनेवाले उस जगदीश्वर की स्तुतिकर, सदा अपने समीप समझते हुए उस प्रभु का गुणगान कर जो क्रान्तदर्शी और सर्वज्ञ है, नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्तस्वभाव है, जो शारीरिक, मानसिक सब प्रकार के रोगों का नाशक महावैद्य है अथवा काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मात्सर्य आदि महामशकों=मच्छरों का विनाशक है, दिव्य गुणयुक्त और प्रकाशस्वरूप है।

ऋषिः–सिन्धुद्वीप आम्बरीषः, त्रित आप्त्यो वा। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २उ ३ १ २
३३. शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।।

प्रकाशकों का प्रकाशक, आनन्दप्रद परमेश्वर मनोवाञ्छित फलों=लौकिक अभ्युदय की प्राप्ति के लिए और पूर्णानन्द=मोक्ष की प्राप्ति के लिए हमारे लिए कल्याणकारी हो। वह परमेश्वर हमपर चारों ओर से सुखों की वृष्टि करे।

ऋषिः–उशनाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३४. कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते। गोषाता यस्य ते गिरः।।

पवित्र मन, वचन और कर्मवाले मनुष्यों और मुमुक्षुओं के पालक हे परमेश्वर! तू किसके अन्तःकरण चतुष्टय=मन, बुद्धि, चित्त, अहंकाररूपी प्रज्ञानों को मोक्ष में तृप्त करता है? तेरी परमकृपा उसपर होती है जिसकी इन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों से विरत होकर तेरी स्तुतियों में लग जाती हैं—जिसकी आँखें सर्वत्र तेरी महिमा को निहारती हैं, कान तेरी महिमा के गीत और वेद की ऋचाओं का श्रवण करते हैं, जिसकी नासिका विषय-वासनाओं की गन्ध न लेकर 'ओ३म्' का स्मरण करती है।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–शंयुः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
३५. यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे।
१ २ ३ २ ३१२ ३ १ २ ३ २ ३१ २र
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम्।।

हमारे सारे यज्ञ=श्रेष्ठतम कर्म और सारी स्तुतियाँ तुझ सर्वत्रव्याप्त और ज्ञानस्वरूप परमेश्वर के लिए हैं, अतः हम निरन्तर उस प्रभु की स्तुति करते हैं—खूब गुणगान करते हैं जो अजर, अमर और अविनाशी है, जो सर्वज्ञ, सब जगत् का सञ्चालक और वेदज्ञान का दाता है तथा मित्र के समान अत्यन्त प्रिय है।

ऋषिः–भर्गः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहतीः। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
३६. पाहि नो अग्न एकया पाह्यू३त द्वितीयया।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप ऋग्वेदरूप प्रथम वाणी=विज्ञान द्वारा हमारी रक्षा कीजिए। यजुर्वेदरूप द्वितीय वाणी=उत्तम कर्मों से हमारी रक्षा कीजिए। ज्ञान और ज्ञानानुसार उत्तम कर्म करने से ही हमारी रक्षा हो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सकेगी। हे बलों के स्वामिन्! तीसरी सामवेदरूपी वाणी=सामवेदानुसार उपासना से तुझ अनन्त के साथ एकतान होने से हमारी रक्षा कर और सबको बसानेवाले प्रभो! अपनी अथर्ववेदरूपी चौथी वाणी से हमें अथर्व=निश्चल, संशयरहित और स्वाध्यायशील बनाकार हमारी रक्षा कर।

ऋषिः–शंयुः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३७. बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवत् पावक दीदिहि।।

हे दिव्य गुणयुक्त परमेश्वर! शम, दम, दया, दान आदि उपासना-समग्री से हम आपकी उपासना करते हैं, हे देव! परमप्रकाशक! आप सत्यज्ञान से देदीप्यमान हैं, मुझे भी अपने उस ज्ञान से प्रकाशित कीजिए। हे जरारहित, अविनाशी, नित्य युवा, सदा अखण्डैकरस प्रभो! सबको पवित्र करनेवाले! आप आध्यात्मिक ज्ञान, धन, बल-प्राप्ति के इच्छुक उपासकों को आध्यात्मिक सम्पत्तियाँ देते हुए उनके हृदयों में प्रकाशित होओ।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ २ ३ १ २
३८. त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम्।।

उपासना द्वारा हृदय-मन्दिर में भली प्रकार स्थापित हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आपको प्रिय हों। कौन? जो आपके सच्चे उपासक हैं, जो विद्वान् और स्वाध्यायशील हैं, जो मन को वश में रखनेवाले और दानशील हैं, जो मनुष्यों में इन्द्र बनते हैं (इन्द्र बनकर जम्भ=हर समय खाते रहने की वृत्ति, वल=निर्बलों पर अत्याचार, शुष्ण=ईर्ष्या, शंबर=क्रोध और नमुचि=अहंकार–अभिमान को नष्ट करते हैं–वे प्रभु के प्यारे होते हैं) और अपनी ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय के सूमह को अपने वश में रखते हैं।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३९. अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ २
अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः।।

सबको आगे ले-चलनेवाले प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हे सकल दुरित=दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर करनेवाले प्रभो! सबके सुमनोरथों को पूर्ण करनेवाले देव! आप प्रजाजनों के एकमात्र स्वामी, रक्षक, पालक और पोषक हैं। आप राक्षसी वृत्तियों– काम-क्रोध आदि के सन्तापक हैं। आप दुष्टों के संहारक हैं। हे हृदय-सदन के स्वामिन्! आप हमारे हृदय-गृहों को चाहते हुए वहाँ से कभी अन्यत्र प्रवास न करें। आप महान् हैं। आप आनन्दप्रदाता और हृदय के प्रसादक हैं।

ऋषिः–प्रस्कण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १' १ २र
४०. अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य।
२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः।।

हे सर्वप्रकाशक! सब जगत् को जाननेवाले, सर्वत्र विद्यमान, सकल ज्ञाननिधान, अजर, अमर, अविनाशी परमात्मन्! आप आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक के लिए अविद्या-अज्ञान-विनाशक, विशेष सुखप्रद, आश्चर्यप्रद = अलौकिक स्वदर्शनरूप धन प्राप्त कराइए। हे प्रभो! आप हमें आज ही ऐसे महापुरुषों, योगियों, उपासकों का दर्शन और सत्संग प्राप्त कराइए जिन्होंने अविद्या-अज्ञान को नष्टकर आत्मदर्शन प्राप्त किया हो।

ऋषिः–तृणपाणिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
४१. त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय।
३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः॥

हे सब प्राणियों को बसानेवाले और सबके भीतर वास करनेवाले, विलक्षण शक्ति-सम्पन्न परमेश्वर! आप अपनी रक्षण-शक्तियों द्वारा हमें तत्त्वज्ञान और सदाचाररूप धन प्रदान करें। हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! आप ज्ञाननिधि के स्वामी हैं, अतः ज्ञानधन-प्राप्ति के लिए मैं आपको छोड़कर और किससे याचना करूँ? हमारा पतन न होकर उत्कर्ष हो, अतः हमारे ज्ञान और भक्ति के लिए हमें अविलम्ब = शीघ्र विवेक और वैराग्यरूप आश्रय प्रदान कीजिए।

ऋषिः–विरूपः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
४२. त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतः कविः।
१ २र ३ १ २ ३ १ २
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः॥

हे सुपथ पर ले-जानेवाले! हे दुःखों से बचानेवाले प्रभो! आप निश्चय ही सर्वव्यापक हैं, सत्यस्वरूप हैं और क्रान्तदर्शी– सर्वज्ञ हैं। अपने गुणों का दान देकर सबको चमकानेवाले और स्वयं चमकनेवाले प्रभो! आपको अपने जीवन का लक्ष्य बनानेवाले मेधावी उपासक, योगी अपने हृदय-मन्दिर में सदा आपकी ही स्तुति, आपका ही गुणगान करते हैं।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४३. आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम्।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम्॥

हे अग्रनायक! हे शारीरिक, वाचिक और मानसिक मलों के शोधक परमेश्वर! आप हमें वय= आयुवर्धक ब्रह्मचर्यरूप अथवा ज्ञानरूप सर्वश्रेष्ठ धन प्राप्त कराइए। हे जीवन को ऊँचा उठानेवाले देव! आप हमारे लिए अत्यन्त चाहने योग्य, उत्तम मार्ग से कमाई गई, धर्म और न्यायमार्ग से उपार्जित, उत्तभ यश प्रदान करनेवाली सांसारिक सम्पत्ति भी प्रदान कीजिए।

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
४४. यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।
२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

हे मनुष्यो! जो आनन्द और तृप्तिदाता मनुष्यों को लौकिक और अलौकिक सब प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करता है, उस प्रकाशस्वरूप परमात्मा के लिए हमारे रसभरे स्तुति-वचन उसी प्रकार प्राप्त हों जैसेकि श्रेष्ठ अतिथियों के लिए मधुर रस से परिपूर्ण श्रेष्ठ पात्र भेंट किये जाते हैं।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
४५. एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमाहुवे। प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्।।

मैं अपनी विनम्र स्तुतिरूप भेंटों और आत्मसमर्पण द्वारा उस परमपिता परमात्मा को पुकारता हूँ जो हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक बलों के रक्षक हैं, हमारे इन बलों को गिरने नहीं देते–क्षीण नहीं होने देते, जो प्राणिमात्र के साथ स्नेह करनेवाले हैं और सभी मनुष्यों से स्नेह करने योग्य हैं, जो मनुष्यों को सदा सचेत करनेवाले हैं, सर्वव्यापक और प्राप्तव्य हैं, जो सृष्टयुत्पत्ति, उसका पालन और संहार तथा जीवों को कर्मफल प्रदान करना आदि उत्तम कर्म करनेवाले हैं, समस्त संसार को वेदरूपी ज्ञान का सन्देश देनेवाले और मनुष्यों के अन्दर प्रविष्ट हो जानेवाली काम-क्रोधादि आसुर भावनाओं को मार भगानेवाले हैं, जो मोक्ष के साधक, मृत्यु से बचानेवाले और अविनाशी हैं।

ऋषिः–भर्गः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
४६. शेषे वनेषु मातृषु सं त्वा मर्तास इन्धते।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि।।

हे परमेश्वर! आप वन में अग्नि के समान सब प्राणियों के आत्माओं में और शरीरों की नाड़ियों में प्रसुप्त होकर व्याप्त रहते हो। आपको पाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देनेवाले उपासक विवेक-वैराग्य आदि द्वारा काम-क्रोधादि शत्रुओं का उन्मूलन कर आपको अपने हृदय-मन्दिर में प्रदीप्त करते हैं– आपका साक्षात्कार करते हैं। हे प्रभो! सदा सावधान, अनन्त ज्ञानवान् आप श्रद्धा-भक्तिपूर्वक आत्म-समर्पक उपासकों की श्रद्धा-समन्वित भेंट को स्वीकार करते हो और इन आत्म-समर्पक भक्तों, उपासकों को मुक्तात्माओं में विराजमान कर देते हो–मोक्ष में पहुँचा देते हो।

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
४७. अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः।
२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः।।

हमारी वाणियाँ=स्तुति-गान सदा सबको आगे ले-जानेवाले ज्ञानस्वरूप प्रभु को पुकारें, उसके द्वार को खटखटाएँ जो ज्ञान, उत्तम चरित्र आदि प्रदान करके आर्य=श्रेष्ठ पुरुषों के आनन्द की वृद्धि करनेवाले, श्रेष्ठ पुरुषों को उत्साहित करनेवाले हैं, योगाभ्यास के अनुष्ठान से जिसका भली-भाँति साक्षात्कार किया जाता है, जिसकी प्राप्ति के लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि व्रतों को धारण किया जाता है। ऐसे अनुपम परमेश्वर को श्रेष्ठ मार्ग पर चलनेवाला–ब्रह्ममार्ग की ओर गमन करनेवाला उपासक देखता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

है–उसका प्रत्यक्ष और साक्षात्कार करता है।

ऋषिः–मनुः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

४८. अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम्।।

हृदय-आकाश में प्रारम्भ किये हुए स्तुत्य ब्रह्मयज्ञ में हमने परमात्मा को आदर्शरूप में अपने सामने स्थापित किया है। वाक्-श्रोत्रादि इन्द्रियाँ अति प्रबल हैं, वे विषय-वासनाओं के पंक में फँसकर हमारा पतन न कर दें, अतः उनपर विवेक का अंकुश रक्खा है। हे अविद्या, अज्ञान और तमस् के हर्ता, स्थितप्रज्ञ उपासक समुदाय के रक्षक प्रभो! इन्द्रियाँ कुमार्ग में न जाएँ, विषयों में न फँसें, अतः उनकी रक्षा के लिए मैं स्तुति-गानों द्वारा आपकी वरणीय रक्षा की प्रार्थना करता हूँ।

ऋषिः–सुदीतिपुरुमीढौ। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

४९. अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम्।
अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरोऽग्निः सुदीतये छर्दिः।।

हे तत्त्वज्ञानी उपासक! तू अपनी रक्षा के लिए वेदमन्त्रों और स्तुति-गानों से उस ज्ञानस्वरूप और सर्वव्यापक परमेश्वर की स्तुति कर जिसकी ज्ञान-ज्वालाएँ मनोवृत्तियों के देवासुर-संग्राम में उपासक की काम-क्रोधादि वासनाओं को भस्मीभूत कर देती हैं। हे उपासक! तू लौकिक=सांसारिक ऐश्वर्य के लिए और पारलौकिक=मोक्षरूपी ऐश्वर्य के लिए भी उसी सुप्रसिद्ध ज्ञानस्वरूप परमेश्वर की शरण में जा। हे विषयों में न फँसनेवाले उपासको! एक रहस्य की बात सुनो और सुनकर समझो। वह ज्ञानस्वरूप परमेश्वर आत्मसमर्पण करनेवाले भक्त के लिए शरण बन जाता है।

ऋषिः–प्रस्कण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

५०. श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः।
आ सीदतु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे।।

हे सबकी टेर=पुकार सुननेवाले, सबको आगे ले-चलनेवाले, सर्वोन्नति साधक परमेश्वर! आप मेरी प्रार्थना सुनो। मेरी प्रार्थना है कि सहगमन करनेवाले (साथ-साथ चलनेवाले), प्रातःकाल की शुभवेला में प्राप्त किये जानेवाले आप, आपके समीप ले-चलनेवाले शम-दमादि दिव्य गुणों के द्वारा मित्र के समान स्नेहार्द्र होकर घात-पात, ईर्ष्या-द्वेष की भावनाओं से सर्वथा शून्य मेरे विशाल हृदय-मन्दिर में आ विराजें।

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

५१. प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि।।

जीवात्मा इस भूमि-माता पर रहने के पश्चात् वापस लौट जाता है और मोक्षलोक के आनन्द में रमण करता है। परन्तु कौन-सा जीवात्मा मोक्षलोक में पहुँच पाता है? वह; जो परमात्मा का दास बनता है, न कि प्रकृति का; जो अपने-आपको आगे और आगे ले-चलने के लिए कृतसंकल्प होता है–शरीर, मन और बुद्धि तीनों के दृष्टिकोण से आगे बढ़ने के संकल्पवाला होता है, जो संसार को क्रीड़ा-स्थली समझता है और जो प्रकृष्टरूप से प्रभु में लीन हो जाने से–सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते सदा अपने-आपको प्रभुमय बनाये रखने से परमैश्वर्यशाली प्रभु के समान तेजस्वी, ओजस्वी और सहनशील बन जाता है।

ऋषिः–मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
५२. अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि।
३ १ २ ३क २र ३ २उ ३ १ २
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतो पृण॥

सर्वश्रेष्ठ मानव-योनि में उत्पन्न हे जीवात्मन्! हे उत्तम प्रज्ञा, उत्तम कर्म और उत्तम संकल्पवाले आत्मन्! तू अपने मस्तिष्क को ज्ञान-ज्योति से द्योतित करके अपने हाथों से दानशील बनकर और हृदय को पवित्र बनाकर अपना सर्वविध पालन और पोषण कर। यह सब-कुछ कैसे सम्भव होगा? प्रभुप्रदत्त वेदवाणी द्वारा प्रतिदिन वेद के स्वाध्याय को अपना परमधर्म बनाकर अपने शरीर-रथ से आगे बढ़ता हुआ– उन्नति करता हुआ तू पृथिवी=पार्थिव भोगों, विषय-वासनाओं से ऊपर उठ और प्रकाशमय मस्तिष्क में कौंधनेवाली योगज विभूतियों से भी ऊपर उठकर महान् परब्रह्म–मोक्षलोक में अवस्थित हो।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २उ ३ १ २र ३ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
५३. कायमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः। न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभुवः॥

हे उन्नति के सोपान पर चढ़नेवाले जीवात्मन्! तू जो ज्ञानप्रकाश की प्राप्ति और प्रभु-उपासना की कामना करता हुआ भी, धन में आसक्ति करके ज्ञान और उपासना से दूर ले-जानेवाले हिंसक कर्मों में फँस गया है, बहुत दूर आगे बढ़कर– अत्युत्तम अवस्था में पहुँचकर भी जो तू इस वर्तमान शोचनीय अवस्था में पहुँच गया है, तेरे इस पतन को मैं क्षमा नहीं करता– अच्छा नहीं समझता, अतः ज्ञान और उपासना-मार्ग को अपनाकर अपनी दयनीय अवस्था से ऊपर उठ।

ऋषिः–कण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५४. नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ १ ३ १ २
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः।

जीव परमात्मा से निवेदन करता है– हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! मननशील उपासक तुझे अपने हृदय-मन्दिर में धारण करता है। शाश्वत प्रजाओं–जीवात्माओं के लिए आप ज्योतिस्वरूप हैं। समस्त प्रजाएँ आपको नमस्कार करती हैं। आप मनसा, वाचा, कर्मणा सत्य का अनुष्ठान करनेवाले, वेदज्ञान को अपनानेवाले, वेद का अध्ययन, चिन्तन और मनन करनेवाले व्यक्ति में प्रकट होते हैं। श्रवण, मनन और निदिध्यासन (ध्यान) से आप मेधावी उपासक में ज्योतिरूप में चमकते हैं।

द्वितीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५५. देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम्।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते।।

हे उपासको! ज्ञान, बल और धन– भौतिक और पारमार्थिक सब सम्पत्तियाँ देनेवाला आनन्दप्रद परमेश्वर तुम्हारे श्रद्धा-भक्ति-समन्वित विशुद्ध अन्तःकरण को चाहे अर्थात् तुम्हारा अन्तःकरण इतना निर्मल हो कि परमात्मा उसमें विराजमान होने की इच्छा करे। अपने हृदयों को इतना दयार्द्र बना लो कि दया तुम्हारे हृदयों से बाहर प्रवाहित होने लगे और तुम दीन-दुःखी, रोगी, सहायता के अधिकारी जनों के समीप पहुँचकर उन्हें सुखी बनाओ। इतना करने के पश्चात् ही वे आनन्दप्रद प्रभु प्राप्त होते हैं।

[वह परमात्मा भक्तिरस से परिपूर्ण हृदय-चमस् को ही चाहता है।]

ऋषिः–कण्वः। **देवता**–ब्रह्मणस्पतिः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३क २र ३ १ २ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
५६. प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता। अच्छा वीरं नर्यं पंक्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः।।

वेदों का पति, ज्ञान का स्वामी, परमगुरु, सर्वज्ञ परमात्मा हमें प्रकर्ष रूप से प्राप्त हो। ज्ञान का प्रकाश देनेवाली, हमारे सारे अज्ञान और दुःखों को नष्ट करनेवाली, सत्य, प्रिय वेदवाणी हमें प्राप्त हो। सब प्राकृतिक शक्तियाँ हमारे लिए ऐसी अनुकूल हों और विद्वान् ऐसी व्यवस्था करें कि हमें अविद्या की विदारक, राग-द्वेष आदि की संहारक, लोकहितकारक, मानवमात्र का कल्याण करनेवाली ऐसी सन्तान प्राप्त हो जो विवेक-ज्ञान से सम्पन्न और यज्ञिय=श्रेष्ठ कर्मों को करनेवाली हो।

ऋषिः–कण्वः। **देवता**–यूपः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ १ २र ३ २
५७. ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता।
३ १ २र ३ १ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे।।

जैसे प्रकाशमान सूर्य हमारी सुरक्षा के लिए सौर-मण्डल में स्थित है, वैसे ही सारे संसार को उत्पन्न करनेवाला, समग्र ऐश्वर्ययुक्त परमेश्वर हमारी सुरक्षा के लिए सदा तत्पर है। शक्ति और समृद्धि देनेवाला वही परमात्मा शक्ति और समृद्धि प्रदान करने के लिए भी सदा उद्यत है, परन्तु कब? तब जबकि हम उपासक उसके स्पृहणीय स्वरूप को प्रकट करनेवाली, उसका ज्ञान करानेवाली ऋचाओं–वेदमन्त्रों, स्तुति-गानों से उसे विशेष रूप से बुलाते हैं, उसकी उपासना करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

ऋषिः–सोभरिः। देवता–अग्निः। छन्दः–बृहती। स्वरः–मध्यमः।

२उ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५८. प्र यो राये निनीषति मर्तो यस्ते वसो दाशत्।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम्।।

सबको सुख-शान्ति में बसानेवाले हे प्रभो! जो मरणधर्मा उपासक रमणीय लौकिक धन और आध्यात्मिक ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए उत्कट श्रद्धा-भक्ति से आप तक पहुँचना चाहता है और जो आपके प्रति अपना आत्मसमर्पण कर देता है, हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! वह उपासक आपकी कृपा से वासनाओं के विध्वंसक उस पुत्र को प्राप्त करता है जोकि वैदिक सूक्तों द्वारा आपका गुणगान करता है अर्थात् प्रभु-भक्त होता है। वह बिना किसी की सहायता के, अपनी सामर्थ्य से सहस्रों मनुष्यों का अपने आध्यात्मिक ज्ञान और धन-सम्पत्ति से पालन-पोषण करता है।

ऋषिः–कण्वः। देवता–अग्निः। छन्दः–बृहती। स्वरः–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५९. प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम्।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे यं समिदन्य इन्धते।।

जिस अनुपम, दर्शनीय परमात्मा को अन्य लोग ध्यान, जप, तप, दान और अध्ययन द्वारा अपने हृदय-मन्दिर में सन्दीप्त करते हैं, उसी प्राप्त करने और पुकारने योग्य परमेश्वर को वे लोग प्राप्त करते हैं जो अपनी न्यूनताओं को दूर करके काम-क्रोधादि आसुर वृत्तियों से अपनी इन्द्रियों का रक्षण करनेवाले हैं, जो दूसरों के दुःखों को दूर करके उन्हें शान्ति प्रदान करनेवाले हैं, जो शम-दम आदि दिव्य गुणों को अपनानेवाले हैं। उसी अग्रनायक, ज्ञानस्वरूप परमेश्वर को हम मधुरता से उच्चारण किये गये वैदिक वचनों से वरण करते हैं, अपनाते हैं, उसकी उपासना करते हैं।

ऋषिः–उत्कीलः। देवता–अग्निः। छन्दः–बृहती। स्वरः–मध्यमः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र १ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६०. अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य। राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम्।।

ज्ञानियों और योगियों द्वारा सर्वत्र अनुभूयमान वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा प्रकृष्ट बल का स्वामी है, बलवानों से अत्यन्त बलवान् है। वह परमात्मा ही सचमुच सौभाग्य– सर्वसम्पत्तियों, ज्ञान, वैराग्य, धर्म, यश और श्री– का भी अधीश्वर है। वही परमेश्वर उन सदाचार और संयमरूप ऐश्वर्यों का स्वामी है जिनसे हमारी सन्तानें उत्तम और आदर्श नागरिक बनती हैं तथा हमारी इन्द्रियाँ प्रशस्त बनती हैं। वह परमात्मा पापों, पापी पुरुषों के हनन करनेवाले बल और साधनों का भी अधीश्वर है।

ऋषिः–वसिष्ठः। देवता–अग्निः। छन्दः–बृहती। स्वरः–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
६१. त्वमग्ने गृहस्पतिस्त्वं होता नो अध्वरे। त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यासि च वार्यम्।।

हे ज्ञानस्वरूप प्रभो! आप हमारे शरीरों, हृदय-सदनों और ब्रह्माण्डरूप गृह के स्वामी हैं। हमारे हिंसाशून्य आध्यात्मिक यज्ञ के आप होता हैं, सञ्चालक और सम्पादक हैं। हे सब क्लेशों के निवारक तथा

सबके द्वारा वरणीय प्रभो! आप अपने उपासकों के जीवन को पवित्र बनानेवाले और महान् ज्ञानी हैं। आप हमें कल्याण-मार्ग में प्रेरित कीजिए। आप वरणीय गुणों को हमारे साथ संगत कीजिए— हमें प्राप्त कराइए, क्योंकि आप उन्हीं उपासकों को प्राप्त होते हैं, जो ज्ञान, चरित्रादि से वरणीय हैं।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

६२. सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये। अपां नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्तिमनेहसम्॥

हे परमेश्वर! हम मरणधर्मा उपासक आपके मित्र बनकर अपनी सर्वविध रक्षा के लिए प्रकाशकों के प्रकाशक, आनन्दप्रद आपका वरण करते हैं। कैसे प्रभु का वरण करते हैं? जो आप अनाथों के नाथ हैं, अथवा अपने उपासकों को सत्कर्मों से पतित नहीं होने देते, जो महैश्वर्ययुक्त हैं, सुकर्मा हैं, अपने भक्तों को उत्तम ज्ञान के प्रदाता हैं, जो पापों के नाशक हैं, संसार-सागर को तरने के लिए उत्तम साधन हैं और सर्वथा निष्पाप हैं।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः–श्यावाश्ववामदेवौ। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

६३. आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम्।
इडस्पदे नमसा रातहव्यं सपर्यता यजतं पस्त्यानाम्॥

हे उपासको! प्रभु के लिए आत्मसमर्पणरूपी हवि की आहुति दो, इस प्रकार अपना आत्मशोधन करते हुए उसे प्रसन्न करो। लौकिक और पारलौकिक सर्वधनप्रदाता, हृदय-सदन और ब्रह्माण्ड के स्वामी तथा रक्षक परमात्मा को हृदय-मन्दिर में धारण करो— उसका साक्षात्कार करो। श्रद्धा के स्थान हृदय में नमस्कारों, श्रद्धा और भक्ति के द्वारा भोग्य पदार्थों के दाता उस परमेश्वर की पूजा किया करो जोकि मनुष्य-मात्र द्वारा यजनीय— पूजनीय और संगति करने योग्य है।

ऋषिः–उपस्तुतो वार्हिष्टव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

६४. चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावन्वेति धातवे।
अनूधा यदजीजनदधा चिदा ववक्षत् सद्यो महि दूत्यां३ चरन्॥

शिशु के समान राग-द्वेष से रहित परन्तु कार्य करने में युवक के समान महाबलवान् परमात्मा का संसार का वहनरूपी कार्य आश्चर्यकारक है। यह परमात्मारूपी शिशु अपने धारण और पोषण के लिए माता-पिता के पास नहीं जाता अर्थात् उसके माता-पिता नहीं हैं। वह परमदेव परमात्मा बिना किसी आयास के— बिना परिश्रम के, सहज स्वभाव से सब प्रजाओं और सारे संसार को उत्पन्न करता है। वह सबका धारण, पालन और पोषण करता है। कैसे धारण करता है? वह परमात्मा बिना किसी कालक्षेप के— बिना विलम्ब के— महान् दूत कर्म करता है— मानवमात्र को वेद का सन्देश देता है और प्रजा के शत्रुओं को सन्तप्त करता है।

ऋषिः–बृहदुक्थः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

६५. इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व।
संवेशनस्तन्वे३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

हे परमात्माग्ने ! यह पृथिवीस्थ अग्नि तेरी एक ज्योति है, द्युलोक में विद्यमान सूर्य तेरी दूसरी ज्योति है। तेरी तीसरी उत्कृष्ट ज्योति ज्ञानमय है। प्रभो ! तू अपनी इस ज्ञान-ज्योति के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में प्रवेश कर। हमारी आत्मा में सम्यक् प्रविष्ट हुआ तू अपने शरीररूप मुझ आत्मा में अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य से स्थित हो, जिससे मेरी आत्मा भी सुन्दर बन जाए। प्रभो ! तू मुमुक्षुओं का प्रिय है, अतः मैं संसार के उत्पादक तुझ ज्योतिस्वरूप परमेश्वर में समर्पित हूँ।

ऋषिः–कुत्सः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ २उ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
६६. इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया।
३ २उ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २र ३ १ २र
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषमा वयं तव।।

पूजनीय, सब जगत् को जाननेवाले, सब जगत् के उत्पादक, सब भूतों में व्याप्त, ऋग्वेदादि चारों वेदों के प्रकटकर्त्ता परमेश्वर के लिए स्तुतिप्रवाह को रथ के समान (जैसे रथ लक्ष्य-स्थान पर पहुँचाता है, उसी प्रकार जीव के अभीष्ट मोक्ष-धाम पर पहुँचानेवाले को) उत्कट श्रद्धा-भक्ति के साथ समर्पित करते हैं। उस परमात्मा की संगति में हमारी बुद्धि निश्चय ही कल्याणी, शुभ विचारोंवालीी और सुखदायिनी हो जाती है। हे प्रभो ! आपकी मित्रता में हम कभी भी पीड़ित, हिंसित और दुःखित न हों।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्ः। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ २
६७. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः।।

शिर के समान सर्वश्रेष्ठ, प्रकाशयुक्त और प्रकाशरहित पृथिवी आदि लोकों के स्वामी, प्राणिमात्र के हितकारक और विश्वनायक, वेदों में प्रभूत रूप से वर्णित, सत्यपूर्ण हृदय में प्रकट होनेवाले, क्रान्तदर्शी, वेदरूपी काव्य के कवि, सर्वत्र प्रकाशमान, सबके सम्राट्, मनुष्यों के लिए अतिथि के समान पूजनीय, हमारे प्रमुख पूजापात्र, प्रकाशस्वरूप परमात्मा को योगी, ध्यानी, तपस्वी, मुमुक्षुजन अपने हृदय-मन्दिर में प्रकट करते हैं।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२उ ३ १ २र ३ २ ३ १२ ३ २
६८. वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
तं त्वां गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्याजिं न गिर्ववाहो जिग्युरश्वाः।।

जैसे पर्वत के शिखर से जल नीचे की ओर प्रवाहित होते हैं, उसी प्रकार हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आपकी स्तुतियों = गुणगानों से आप के दिव्य गुण, आपकी दिव्यता (Divinity) उपासकों में विशेषरूप से प्रादुर्भूत होती है। इस प्रकार दिव्यता के अवतरण से देवरूप बने हुए उपासक को उत्तम स्तुतियोंवाली वाणियाँ प्रभु को प्राप्त कराती हैं। प्रभु के समीप पहुँचनेवाले, स्तुतियों को धारण करनेवाले ये भक्त हृदय में निरन्तर होनेवाले देवासुर-संग्राम को उसी प्रकार जीत लेते हैं जैसे अश्वारोही युद्धों को जीतते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband...

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

६९. आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्।।

हे उपासको! आपके हिंसाशून्य जीवन-यज्ञ को प्रदीप्त करनेवाले सम्राट्, पापियों को रुलानेवाले, वेदवाणी द्वारा उपदेश देनेवाले, जीवन-सञ्चालन के लिए आवश्यक पदार्थों को देनेवाले, द्युलोक और भूलोक में सर्वत्र व्याप्त, सत्य के द्वारा ही सेवनीय– उपासनीय, हितकर, रमणीय और ज्योतिर्मय रूपवाले प्रभु को, विद्युत् की चमक के समान घनघोर गर्जन करती हुई अकस्मात् आ जानेवाली मृत्यु से पहले ही अपनी रक्षा के लिए, जीवन्मुक्त बनकर मोक्षधामप्राप्ति के लिए, अपना कवच बना लो जिससे आवागमन– जन्म-मरण के चक्र से छूट जाओ।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

७०. इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन।
नरो हव्येभिरीडते सबाध आग्निरग्रमुषसामशोचि।।

सारे संसार में सर्वत्र प्रकाशमान, विश्व ब्रह्माण्ड का स्वामी परमेश्वर उत्कट प्रेम, श्रद्धा और भक्ति द्वारा आत्मा में प्रकाशित होता है। वह परमात्मा तेजःस्वरूप है– सहस्रों सूर्यों के समान कान्तिमान है। विघ्न और बाधाओं से पीड़ित मनुष्य– आर्तजन योगाभ्यास और आत्मसमर्पण द्वारा परमेश्वर की स्तुति करते हैं– उसके गुणों का गान करते हैं। वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा उषाकाल से पूर्व ब्राह्ममुहूर्त में उपासकों के हृदयों में चमक उठता है, इसीलिए प्रातःकाल=ब्राह्ममुहूर्त ही उसकी उपासना का सर्वोत्तम समय है।

ऋषिः–त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

७१. प्र केतुना बृहता यात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति।
दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध।।

प्रकाशस्वरूप परमात्मा अपने महान् ज्ञानप्रकाश से अन्तरिक्षलोक में, पृथिवीलोक में, द्युलोक में, उसके बाहर के लोक में, उसके समीप के लोक में– सर्वलोकों में गया हुआ है, रमा हुआ है, इनमें सर्वत्र व्याप्त है। वह भक्तों की सब कामनाओं का पूरक है, जीवों को सादा सदुपदेश करता है। वह सर्वशक्तिमान् प्रभु प्राणों के आश्रयभूत हृदय में ध्यान द्वारा प्रकाशित होता है।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिपाद् विराड् गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

७२. अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम्। दूरेदृशं गृहपतिमथर्व्युम्।।

हे मुमुक्षुजनो! तुम दूर दृष्टिवाले, अतीन्द्रिय विषय के भी जाननेंवाले, हृदय-सदन और ब्रह्माण्डगृह के स्वामी, सर्वव्यापक, निश्चल योगियों को चाहनेंवाले, अत्यन्त प्रंशसनीय,ज्योतिस्वरूप परमात्मा को प्राणायाम और ध्यानवृत्तियों द्वारा दो लकड़ियों के मन्थन से प्रगट की गई अग्नि की भाँति मस्तिष्क और हृदय से, ज्ञान और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भक्ति से, शरीररूप अधर=नीचे की अरणि और प्रणव=ओम् रूपी उत्तर =ऊपर की अरणि से प्रकट करो— हृदय-मन्दिर में उसका साक्षात्कार करो।

तृतीया दशतिः

ऋषिः–बुधगविष्ठिरौ। देवता–अग्निः। छन्दः–त्रिष्टुप्। स्वरः–धैवतः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
७३. अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ।।

उपासकों, योगिजनों के आत्मसमर्पण से प्रकाशस्वरूप परमात्मा की ज्योति उपासकों के हृदय-मन्दिर में प्रदीप्त हो उठती है, ठीक उसी प्रकार जैसे सूर्याग्नि प्रभातवेला में पृथिवी पर प्रकट हो जाती है। जैसे बड़े-बड़े पक्षियों के झुण्ड-के-झुण्ड वृक्ष की शाखाओं पर उतरकर वहाँ आश्रय लेते हैं, उसी प्रकार उपासकों की आत्माएँ भी तेज से उद्दीप्त होकर, दुःखों के लेश से शून्य, आनन्दस्वरूप परमात्मा को प्राप्त होती हैं— परमात्मा में आश्रय लेती हैं।

ऋषिः–वत्सप्रिः। देवता–अग्निः। छन्दः–त्रिष्टुप्। स्वरः–धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १२
७४. प्र भूर्जयन्तं महाँ विपोधां मूरैरमूरं पुरां दर्माणम्।
१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २
नयन्तं गीर्भिर्वना धियं धा हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम्।।

हे उपासको! तुम सर्वत्र विजयशील, सर्वतो महान्, योगियों, उपासकों, मुमुक्षुओं के रक्षक, धारक और पोषक; मरणधर्मा =नश्वर पदार्थों में रहकर भी स्वयं अविनाशी अथवा मूढ=अज्ञानबद्ध जीवात्माओं को ज्ञान देकर उनकी शरीररूपी पुरियों का विदारण करके उन्हें मोक्ष दिलानेवाले, स्वयं ज्ञानपूर्ण, अज्ञान-बन्धन से सर्वथा पृथक्, वेदज्ञान प्रदान करके श्रेष्ठ गुणों और बुद्धि को प्राप्त करानेवाले, स्वर्ण जैसी कान्तिवाले आदित्यवर्ण अथवा परम कृपालु, दुःखहारी, आध्यात्मिक धनों का प्रकाश करनेवाले, भक्तों के रक्षक परमेश्वर को अपने हृदय में धारण करो। उसी में अपने मन और बुद्धि को स्थिर करो। इस प्रकार तुम शक्तिशाली और प्रभावशाली बनो।

ऋषिः–भरद्वाजः। देवता–पूषा। छन्दः–त्रिष्टुप्। स्वरः–धैवतः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
७५. शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
विश्वा हि माया अवसी स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।।

हे प्रभो! आपका एक रूप तो कान्तिमान्–प्रकाशमान् मोक्ष है। आपका दूसरा रूप यजन में–आचरण में लाने योग्य रात्रि के समान संसार नामक है। दिन और रात्रि के समान आपके ये दोनों रूप भी भिन्न-भिन्न — परस्पर विरुद्ध हैं। आप सूर्य के समान हैं। जैसे सूर्य दिन और रात्रि का आधार है, उसी प्रकार आप मोक्ष और संसार के आधार हैं। हे परम रसीले तथा पोषण-कर्ता परमात्मन्! आप समस्त संसार की सब प्रकार की मायाओं=सृष्टियों का पालन करते है, अतः इस लोक– जीवन में आपका दान कल्याण और सुख देनेवाला हो। जहाँ हमें लौकिक सुख प्राप्त हो वहाँ इसी जीवन में मोक्ष-सम्पत्ति भी प्राप्त हो।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

७६. इडामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।।

हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप मुझे शरीर-रथ को स्वस्थ रखने के लिए अन्न प्रदान कीजिए। मुझे पापों से बचानेवाला ज्ञान प्राप्त कराइए, मुझे वेदवाणियों के उपदेश का दाता– वेदोपदेशक बनाइए। आपको पुकारनेवाले, आपके प्रति आत्मसमर्पण करनेवाले मुझ उपासक को शाश्वत मोक्ष-सुख प्रदान कीजिए। हे सबको आगे ले-चलनेवाले प्रभो! आपकी कृपा से हमारे पुत्र और पुत्रियाँ सत्कर्मों का विस्तार करनेवाले और विजयशील हों। प्रभो! हमारी यही प्रार्थना है कि आप द्वारा वेदों में उपदिष्ट कल्याणी मति हममें सदा बनी रहे।

ऋषिः–वत्सप्रिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

७७. प्र होता जातो महान्नभोविन्नृषद्मा सीददपां विवर्ते।
दधद्यो धायी सुते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः।।

वह परमेश्वर स्तुति के योग्य और जीवों के लिए आवश्यक सब पदार्थों का दाता है। वह अत्यन्त प्रसिद्ध और सर्वत्र प्रकट है– प्रत्येक वस्तु में उसकी महिमा झलकती है। वह सर्वतो महान् है। वह आकाश में सर्वत्र विद्यमान है, हृदय-आकाश में भी वही समाया हुआ है। अन्तरिक्षलोक में, जलप्रवाहों में, समस्त प्रजाओं में भी वही विद्यमान है। वह विधाता हमारी सन्तानों को–सब प्रजाओं को दीर्घजीवन प्रदान करता हैं, वह सर्वनियन्ता है और नियमपूर्वक कार्य-सम्पादन करनेवाले पुरुष के निवास के लिए आवश्यक सब प्रकार के धन प्रदान करता है तथा उनके शरीरों की रक्षा करता है।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

७८. प्र सम्राजमसुरस्य प्रशस्तं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य।
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु।।

मनुष्य का कर्तव्य है कि वह उपासकों के यथार्थ वन्दनीय, प्राण और प्रज्ञाप्रद, पौरुषयुक्त– सृष्टिरचना और कर्मफलप्रदान-समर्थ परमात्मा के प्रशंसनीय और शोभायुक्त कान्तिमान् स्वरूप को जाने। मनुष्य सूर्य के समान तेजस्वी परमात्मा के कर्मों– सृष्टि-सञ्चालन, ज्ञानदान और कर्मफलप्रदानरूप कर्मों का गान=बखान करे और प्रातः-सायं प्रभु की वन्दना करते हुए उसके स्तुतियुक्त कार्यों को स्वयं भी करने की अभिलाषा करे।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

७९. अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इवेत् सुभृतो गर्भिणीभिः।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः।।

वेदों का प्रकाशक, सर्वज्ञ, प्रत्येक पदार्थ में विद्यमान प्रभु ज्ञान और भक्तिरूप दो अरणियों में रक्खा हुआ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है। जैसे अरणियों को रगड़ने से अग्नि प्रदीप्त होती है, उसी प्रकार ज्ञान और भक्ति की रगड़ से उपासक को प्रभु-दर्शन होता है। गर्भिणी स्त्रियों द्वारा जैसे गर्भस्थ शिशु गुप्तरूप से धारित किया जाता है, उसी प्रकार परमात्मा भी जगत् की धारक शक्तियों में उत्तम रूप से सुरक्षित है। वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा उपासना कर्म में सदा जागरूक— सदा सावधान, आत्मसमर्पण करनेवाले मनुष्यों द्वारा प्रतिदिन प्रातः-सायं उपासना करने योग्य है।

ऋषिः-पायुः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३ १ २   ३ २ ३   २   ३ १ २ ३ १ २

८०. सनादग्ने मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः।

१ २   ३ १ २   ३ २ ३ १   २ ३ १ २   ३   १ २

अनु दह सहमूरान् कयादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः।।

हे शत्रुसन्तापक परमात्मन्! तू पीड़ादायक काम-क्रोध आदि शत्रुओं, पाप-विचारों और पापीजनों को सदा से नष्ट करता आया है। राक्षस-जिनसे रक्षा करनी चाहिए ऐसे पापविचार और पापीजन संघर्ष-संग्रामों में तुझे जीत नहीं सकते, तेरे दण्डविधान का उल्लंघन नहीं कर सकते। आप मूढ, मनुष्य का कच्चा मांस खा जानेवाली चिन्ता, ईर्ष्या, द्वेष आदि राक्षसी वृत्तियों को अपने तेज से भस्म कर दीजिए। ये अशुभ वृत्तियाँ आपके अलौकिक हनन-साधन से छूटने न पाएँ।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः-गय आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३   १ २ ३ १   २   ३ २ ३ १ २   १   २ ३ १   २र   ३ २ ३   १ २ ३ १   २

८१. अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो। प्र णो राये पनीयसे रत्सि वाजाय पन्थाम्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप हमें तेजस्वी, ओजस्वी बनानेवाला आत्मिक धन और यश प्राप्त कराइए। हे अप्रतिहत गतिवाले प्रभो! आप हमें स्तुत्य; न्याय और धर्मपूर्वक उपार्जित धन-प्राप्ति के लिए ले-चलिए। हम धर्मपूर्वक ही धन कमाएँ। प्रभो! आत्मबल और आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए आप हमारे लिए मार्ग को विशेषरूप से तैयार रखिए—अर्थात् हमें उपाय सुझाइए।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २   ३ २उ   ३   २ ३ १ २   ३ १ २   ३ १ २ ३ १ २ ३ १   २र   ३   १ २

८२. यदि वीरो अनु ष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः। आजुह्वद्धव्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम्।।

यदि मनुष्य अपने हृदय में प्रभु को प्रदीप्त करे—प्रभु की उपासना करे तो वह काम-क्रोधादि शत्रुओं का कँपानेवाला शूरवीर बन जाता है और यदि वह निरन्तर आत्मारूपी हवि को परमात्मारूपी अग्नि में समर्पित करता है तो देवों=मुक्तात्माओं के सुख—मोक्षानन्द को भी अवश्य भोगता है।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २   ३ २उ   ३ १   २र   २ ३ २उ   ३ २उ   ३ १ २   ३   १ २

८३. त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि सं च्छुक्र आततः। सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे।।

हे पवित्र करनेवाले प्रभो! जैसे यज्ञाग्नि से उठा धुआँ आकाश की ओर गति करता है, उसी प्रकार आपका अत्यन्त निर्मल प्रकाश द्युलोक तक सम्यक् फैला हुआ है। जैसे सूर्य अपनी दीप्ति द्वारा दमकता है, उसी प्रकार हे प्रभो! आप अपनी तेजोमयी शक्ति और सामर्थ्य से सर्वत्र—सारे ब्रह्माण्ड में प्रकाशमान हो रहे हो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २र ३ १ २र ३ १ २र १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र

८४. त्वं हि क्षैतवद् यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे। त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि।।

हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! सूर्य के समान आप ही सबको निवास और गति देनेवाले तथा अन्न और बल को भी नाना प्रकार से प्राप्त कराते हो। जीवों के निवास के लिए आवश्यक सब वस्तुएँ प्रदान करनेवाले प्रभो! सारे विश्व को देखनेवाले–सबके धारण-पोषण की व्यवस्था करनेवाले, सबको आश्रय देनेवाले प्रभो! आप हमारे अन्दर ज्ञान का पोषण करते हो और शारीरिक पुष्टि भी प्राप्त कराते हो।

ऋषिः–मृक्तवाहा द्वितः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २

८५. प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः। विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते।।

हे मनुष्यो! प्रातःकाल–ब्राह्ममुहूर्त में उस परमेश्वर की स्तुति करो जो सबको आगे ले-चलनेवाला है, जो प्राणिमात्र का पालन, पूरण और तृप्त करनेवाला है, जो सर्वप्रिय और सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक है। तुम उस परमेश्वर का स्मरण करो जिस अविनाशी परमेश्वर के आश्रय में सब मरणधर्मा मनुष्य अपने मन को प्रकाशित करते हैं–निर्मल बनाते हैं।

ऋषिः–वसूयव आत्रेयः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३२उ ३ १ २

८६. यद् वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो। महिषीव त्वद् रयिस्त्वद् वाजा उदीरते।।

ज्ञान को ही धन समझनेवाले हे उपासक! इधर-उधर भटकनेवाली इन्द्रियों के मुखिया अत्यन्त चञ्चल मन को परमात्मा के प्रति समर्पित कर दे। इस मन को प्रभु के प्रति समर्पित करके उसकी खूब पूजा कर। जिस प्रकार इस भूमि से नाना प्रकार के अन्न और रत्न प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर से धन और अन्न प्रकट हो जाते हैं–जिसे जितनी आवश्यकता होती है, उतने उनके पास पहुँच जाते हैं।

ऋषिः–गोपवनः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

८७. विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २

अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः।।

हे उपासको! आत्मबल-प्राप्ति के इच्छुक तुम लोग समस्त प्रजाओं के अतिथि के समान पूज्य, सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक, अतिप्रिय, सबका पालन, पूरण और सबको तृप्त करनेवाले, कल्याण के साधक, सुख-शान्ति के धाम, ज्ञानस्वरूप परमेश्वर की, उसके गुणों का वर्णन करनेवाले वेदमन्त्रों से, स्तुति करो।

ऋषिः–पूरुरात्रेयः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३२उ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २

८८. बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये। यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः।।

हे उपासको! तुम अपनी आयु के बहुत बड़े भाग को सर्वप्रकाशक, आनन्दप्रद, सबको आगे ले-जानेवाले परमेश्वर के लिए समर्पित कर दो। उस प्रभु के लिए समर्पित कर दो जिस प्रभु को कल्याणप्राप्ति और यशस्वी होने के लिए मरणधर्मा मनुष्य मित्र के समान सदा अपने सम्मुख–अपने लक्ष्य में रखते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–गोपवनः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८९. अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम्। यः स्म श्रुतर्वन्नार्क्षे बृहदनीक इध्यते।।

उत्कट श्रद्धा और भक्ति के साथ हम उस परब्रह्म को प्राप्त हुए हैं जोकि ज्ञान को आवृत कर लेनेवाले=ढक लेनेवाले काम-क्रोधादि वृत्रों को जड़मूल से नष्ट करनेवाले हैं, ज्ञान, बल, धनादि में सबसे बड़े है, जीवों को सदा आगे ले-जानेबालें हैं—इसे आगे बढ़ने के लिए सदा उत्साहित करते रहते हैं, इस प्रकार वे मनुष्यमात्र के हितकारी हैं। हम उस परमात्मा को प्राप्त हुए हैं जो परमात्मा सूर्य-रश्मियों, विशाल आकाश और नक्षत्र-मण्डल में प्रकाशित हो रहा है।

ऋषिः–वामदेवः, काश्यपो वा मारीचः, मनुर्वा वैवस्वतः, उभौ वा। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
९०. जातः परेण धर्मणा यत्सवृद्भिः सहाभुवः।
३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
पिता यत्कश्यपस्याग्निः श्रद्धा माता मनुः कविः।।

मनुष्यों का आराध्यदेव परमेश्वर अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तप, धारणा, ध्यान द्वारा उपासक के हृदय में प्रकट होता है। वह अकेला प्रकट नहीं होता अपितु ज्ञान, बल, क्रियादि अपनी स्वाभाविक शक्तियोंसहित प्रकट होता है। परमात्मा का साक्षात्कार होने पर उपासक दिव्यदृष्टि से सम्पन्न बनकर यथार्थ और सूक्ष्मद्रष्टा 'कश्यप' बन जाता है। तब ज्ञानस्वरूप परमात्मा इस कश्यप–सूक्ष्मद्रष्टा, मन को वश में करनेवाले योगी का पिता=पालक और रक्षक बन जाता है, श्रद्धायुक्त, वैराग्यवान्, आत्मसमर्पक उपासक की माता बन जाता है और मननशील उपासक का आचार्य बन जाता है।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–अग्निस्तापसः। **देवता**–विश्वेदेवाः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
९१. सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे। आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्।।

हम उपासक **अग्निम्**=पाप-वासनाओं को दग्ध करनेवाले ज्ञानस्वरूप परमात्मा का बार-बार स्मरण करते हैं, उसका अवलम्बन=आश्रय, सहारा लेते हैं, जो अग्निस्वरूप परमात्मा **सोमम्**=शान्तिदायक, सब जगत् का प्रेरक और उत्पादक है, **राजानम्**=विश्वब्रह्माण्ड का सम्राट् है, राजा है, नियन्ता और व्यवस्थापक है, **वरुणम्**=सर्वश्रेष्ठ, वरणीय और पापनिवारक है, **आदित्यम्**=सूर्य के समान प्रकाशमान, अखण्ड सुख-सम्पत्ति और मोक्ष का अधिपति है, **विष्णुम्**=चराचर जगत् में व्यापक है, **सूर्यम्**=सबका प्रेरक है **ब्रह्माणम्**=सृष्टि का रचयिता है और **बृहस्पतिम्**=वेदवाणी का पति—स्वामी है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अंगिराः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
९२. इत एत उदारुहन् दिवः पृष्ठान्या रुहन्। प्र भूर्जयो यथा पथोद्यामंगिरसो ययुः।।

परमात्मा के सोम आदि नामों की उपासना करके जीवन को रसीला बनानेवाले योगिजन इस पार्थिव लोक से ऊपर उठकर आदित्य के समान प्रकाशमान मोक्ष-सुख को प्राप्त करते हैं। **भूर्जयः**=प्राणों को जीतनेवाले,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्राणायाम अभ्यासी भी वेद में निर्दिष्ट यथार्थ मार्ग से, वैदिक पथ से स्वर्ग=सुखविशेष—मोक्षसुख को प्राप्त कर लेते हैं।

प्राणायाम के अभ्यासी योगी मूलाधार चक्र से—सुषम्णा नाड़ी के पथ से क्रमशः ऊपर-ऊपर आरोहण करते हुए स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञाचक्र से होते हुए मस्तिष्क के आभा से दीप्त सहस्रार चक्र में आरोहण करते हैं। यहाँ उन्हें दिव्य प्रकाश प्राप्त होता है, अनेक प्रकार की ज्योतियाँ प्रकट होने लगती हैं। हे उपासक! तू भी योगाभ्यास के निमित्त सामर्थ्यवाला बन और अभ्यास मार्गों पर विजय प्राप्त कर।

ऋषिः--वामदेवः काश्यपोऽसितो देवेलो वा। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
९३. राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि। ईडिष्वा हि महे वृषं द्यावा होत्राय पृथिवी।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! अष्टांगयोग के सम्यक् अनुष्ठान से हम तुझे अपने हृदय-मन्दिर में प्रदीप्त करते हैं। किसलिए? मोक्ष-सुख की प्राप्ति के लिए। महान्, उदार और विशाल हृदय बनने के लिए तथा अपने-आपको आपके प्रति समर्पित करने के लिए। उपासकों के आत्मा और मानस में आनन्द की वर्षा करनेवाले प्रभो! हम ज्ञान-प्राप्ति के लिए मस्तिष्क=ज्ञानेन्द्रियों के नैर्मल्य और शान्ति तथा शरीर के स्वास्थ्य के लिए आपकी उपासना करते हैं।

ऋषिः–सोमाहुतिर्भार्गवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ २
९४. दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्मेति वेरु तत्।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत्।।

जब उपासक आत्मसमर्पण द्वारा परमात्मा को अपने हृदय-मन्दिर में प्रतिष्ठित कर लेता है, तब यह उपासक कान्तिमान् और दूसरों के द्वारा कमनीय हो जाता है। फिर यह उपासक दूसरों को उस ब्रह्म का प्रवचन करता है कि वह ब्रह्म ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्राप्तव्य देव है। जिस प्रकार पहिये के चारों ओर नेमि=परिधि होती है, उसी प्रकार वे प्रभु सब ज्ञानों और आनन्दों के चारों ओर है। जैसे परिधि के हटते ही पहिया टूट जाता है, इसी प्रकार प्रभु हमारे जीवन से दूर हुए, हम प्रभु को भूले और हमारे सब ज्ञान और आनन्द समाप्त हुए।

ऋषिः–पायुः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३क २र ३क २र
९५. प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतस्परि। यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्जवीर्यम्।।

हे पाप-ताप दाहक, अज्ञान-अन्धकार-निवारक परमात्मन्! आप अपने तेज से हमें पीड़ा देनेवाले दुष्ट पुरुषों और काम-क्रोधादि राक्षस-भावों के अत्याचारकारी बल और ज्वलन—वेग को सब प्रकार से, सब ओर से सर्वथा नष्ट कर दो। आप उनके बल और प्रभाव को निर्बल कर दो, निस्तेज कर दो और सर्वथा भस्मीभूत कर दो।

ऋषिः–प्रस्कण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
९६. त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत। यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमतेजस्वी परमात्मन्! आप इस संसार में वसुओं=निराश्रितों को आश्रय देनेवालों, लोगों को बसानेवालों, रुद्रों=ज्ञान का उपदेश करनेवालों, आदित्यों=गुणग्राहकों, पाप के निवारकों, स्वध्वरों= हिंसारहित जीवनवालों, शोभन अध्यात्म यज्ञ करनेवालों, किसी भी प्राणी की हिंसा न करनेवालों, जनों=निर्माणात्मक कर्म करनेवालों, मनुजातों=मननशक्ति से युक्त, ब्रह्मचारी, संयमी, दोषों को दग्ध करनेवाले, विवेकी, दिव्य गुणयुक्त विद्वानों और घृतप्रुषों=दूसरों पर अपना तेज फैलानेवाले पुरुषों को अपनी संगति में रखिए। प्रभु हमारे निवास-स्थान बनें, प्रभु के साथ हमारा मेल हो और हम उसका सत्संग-लाभ कर सकें, इसके लिए मन्त्र में वर्णित सात गुणों को जीवन में धारण करना चाहिए।

यहाँ प्रथम प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ द्वितीयः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–दीर्घतमः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
९७. पुरु त्वाँ दाशिवाँ वोचेऽरिरग्ने तव स्विदा। तोदस्येव शरण आ महस्य॥

हे जीवनप्रदातः परमात्मन्! नाना प्रकार के पदार्थों का दाता तू ही है, अतः मैं तेरे प्रति समर्पण करता हूँ। मैं तेरी ही स्तुति और प्रार्थना करता हूँ। मैं तेरा भक्त बनता हूँ, क्योंकि तू ही सबका स्वामी है। मैं भृत्य = सेवक की भाँति तुझ महान् प्रेरक, आज्ञादाता गृहस्वामी की शरण में आऊँ—तेरा कृपापात्र बन जाऊँ।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २र ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
९८. प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत्। विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे॥

हे उपासको! प्रभु के कृपापात्र बनने के लिए तुम विद्वानों के लिए ज्ञान, प्रकाश आदि गुणों को देनेवाले, विश्व-विधाता, मोक्षप्रदाता, ज्ञानस्वरूप प्रभु के लिए श्रेष्ठों में श्रेष्ठ-सर्वश्रेष्ठ स्तुतिवचन—'ओ३म्' का खूब ही उच्चारण करो—अर्थभावनापूर्वक जप करो।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
९९. अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो। अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः॥

हे सबको आगे ले-चलनेवाले प्रभो! आप ईशान हैं—स्वामी हैं। आप हमें प्रशस्त इन्द्रियोंवाला बल प्रदान कीजिए। हे सर्वतो महान् प्रभो! हमें सहनशक्ति प्रदान कीजिए। हे सर्वज्ञ प्रभो! हमें अत्यन्त प्रशंसनीय उत्तम ज्ञान प्राप्त कराइए।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
१००. अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज। होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः॥

हे ज्ञानवान् परमेश्वर! हिंसारहित उत्तम कर्मों में सबसे बड़े यजनशील, दानी, सर्वोत्तम संगति करने योग्य तो आप ही हैं, अतः दिव्य गुणों की कामना करनेवाले मेरे लिए आप निर्भयता, नम्रता, सदाचार आदि दिव्य गुणों को प्राप्त कराइए। इस प्रार्थना को सुनकर परमात्मा जीवात्मा से कहते हैं—तू होता— दानपूर्वक अदन करने-(खाने)-वाला बन, सदा प्रसन्न मनोवृत्तिवाला बन और दूसरों को हानि पहुँचाने की भावनाओं से ऊपर उठ। ऐसा करने पर तू इस संसार में विशेष रूप से शोभावाला होगा—तेरा जीवन चमक उठेगा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–त्रितः। देवता–पवमानः। छन्दः–उष्णिक्। स्वरः–ऋषभः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

१०१. जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये। अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा।।

सप्त मातृभिः=योग के सात निर्माण-सोपानों (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान) द्वारा वह प्रभु उपासक के हृदय-मन्दिर में प्रकट हो जाता है। उस परमात्मा का साक्षात्कार करता हुआ उपासक अपनी कल्याणमयी स्थिति के लिए, अपने जीवन को शोभायुक्त बनाने के लिए उससे मेधा=धारणवती बुद्धि तथा नव-नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा को चाहता है। वह परमेश्वर लौकिक और अलौकिक—सभी प्रकार के धनों का पवित्र पात्र है—आश्रय है। ऐसा ही वह प्रभु जाना गया है।

[उसके पास जीव को देने के लिए सभी कुछ है, परन्तु हम उससे मेधा की ही याचना करें।]

ऋषिः–इरिम्बिठिः। देवता–अग्निः। छन्दः–उष्णिक्। स्वरः–ऋषभः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २

१०२. उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्यागमत्। सा शन्ताता मयस्करदप स्रिधः।।

वह क्षीण न होनेवाली मतिः=विचारशीलता, मेधा बुद्धि, नव-नवोन्मेषिणी प्रतिभा हमारी रक्षा के लिए प्रतिदिन हमें प्राप्त हो। वह विचारशीलता शान्ति का विस्तार करनेवाली हो, आभ्यन्तर सुख और आनन्द देनेवाली हो तथा विनाशकारी काम-क्रोधादि की कुवृत्तियों को हमसे दूर करनेवाली हो।

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। देवता–अग्निः। छन्दः–उष्णिक्। स्वरः–ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१०३. ईडिष्वा हि प्रतीव्यां३ यजस्व जातवेदसम्। चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम्।।

हे मनुष्य! तू प्रतीव्याम्=प्रत्येक पदार्थ में व्यापक और प्रत्येक पदार्थ की रक्षा करनेवाले, काम-क्रोधादि प्रतिकूल शत्रुओं का संहार करनेवाले परमेश्वर की उपासना कर। जातवेदसम्=सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, वेदप्रापक परमेश्वर को जीवन में संगत कर–उसके गुणों को जीवन में धारण कर, उस जैसा बनने का प्रयत्न कर। चरिष्णुधूमम्=क्रियाशील और सब बुराइयों को कम्पित करके दूर करनेवाले प्रभु को प्राप्त कर। अप्रतिहत कान्तिवाले—निर्मल कान्तिवाले प्रभु के प्रति अपना समर्पण कर दे।

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। देवता–अग्निः। छन्दः–उष्णिक्। स्वरः–ऋषभः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१०४. न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः। यो अग्नये ददाश हव्यदातये।।

जो मनुष्य आनन्दामृत का पान करानेवाले प्रकाशस्वरूप परमात्मा के लिए आत्मसमर्पण कर देता है, शत्रुजन भी छल-कपट द्वारा उस पुरुष पर स्वामित्व नहीं कर सकता, उसे वश में नहीं कर सकता, उसे दबा नहीं सकता।

ऋषिः–ऋजिश्वा भारद्वाजः। देवता–अग्निः। छन्दः–उष्णिक्। स्वरः–ऋषभः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र १ २ ३ २ ३ २

१०५. अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्। दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम्।।

हे सत्पुरुषों के पालक! हमें जीवन-यात्रा में आगे ले-जानेवाले प्रभो! आप हमारे जीवन-मार्ग को सुगमता से जाने योग्य–अत्यन्त सरल बना दीजिए। हमारे मार्ग की रुकावट-इस वासना-(काम)-रूप शत्रु को आप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दूर-से-दूर, सात समुद्र पार फेंक दीजिए। यह कामरूपी वासना कैसी है? वृजिनम्—वर्जनीय है, रिपुम्—यह हमें नष्ट-भ्रष्ट करनेवाली है, यह स्तेन है—हमारे जीवनों में चोर की भाँति घुसी हुई है। यह दुराराध्य है—इसका वश में करना कठिन है। प्रभो ! इस वासनारूप शत्रु को हमसे दूर फेंक दीजिए जिससे जीवन-मार्ग में हम आगे बढ़ पाएँ।

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१०६. श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते। नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह।।

हे सबको आगे ले-जानेवाले अग्नि के समान तेजस्वी परमात्मन् ! काम-क्रोधादि शत्रुओं का संहार करनेवाले और इस प्रकार प्रजाओं का पालन और रक्षण करनेवाले प्रभो ! आप मेरे क्रियामय, स्तुतिपूर्ण हार्दिक गान को सुनिए। आप छली-कपटी—विपरीत आचरण करनेवाले—मन में कुछ और आचरण में कुछ तथा ऐसे दुष्ट जिनसे अपने को बचाना चाहिए, उनको अपने तेज से सर्वथा भस्म कर दीजिए अथवा मेरे भीतर से छल-कपटयुक्त विचारों और राक्षसी भावों को भस्म कर दीजिए।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः–प्रयोगो भार्गवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१०७. प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये।।

हे स्तोतागणो ! उपासको ! तुम भक्ति में निमग्न होकर, मस्ती में झूम-झूमकर सबसे बड़े दानदाता, सत्यमय, यज्ञशील, अमृतरूप मोक्षानन्दधारी, महान्, शुभ्र-प्रकाश–निर्भ्रान्त ज्ञानवाले, सबको आगे ले-चलनेवाले परमेश्वर के लिए खूब गान गाओ, उसकी स्तुति और उपासना करो।

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१०८. प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः। यस्य त्वं सख्यमाविथ।।

हे अग्रनेता परमात्मन् ! आप जिसके मित्र बन जाते हो अथवा जो आपको अपना मित्र बना लेता है–तेरा स्नेहपात्र बन जाता है, वह सौभाग्यशाली मनुष्य आपकी रक्षाओं द्वारा संसार-सागर से पार उतर जाता है। दुःख-सागर से पार उतर जाता है। कैसी हैं उस प्रभु की रक्षाएँ? जो उपासक को कायर नहीं अपितु वीर बनाती हैं और अपने ध्येय में आगे बढ़ने के लिए बलकारिणी, शक्तिदायिनी होती हैं।

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१०९. तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे।।

बार-बार जन्म-मरण से रहित, मुक्त आत्माएँ जिस मोक्ष प्राप्त करानेवाले, जगत्स्वामी, अन्तर्यामी परमात्मदेव को प्राप्त किये हुए हैं, हे उपासक ! साधक ! तू भी उसी परमात्मा की उपासना किया कर। किसलिए? समर्पण करने योग्य स्वात्मा को मुक्तात्माओं में पहुँचाने के लिए अर्थात् मुक्ति-प्राप्ति के लिए तू भी परमेश्वर की ही उपासना किया कर, पाषाण आदि जड़ पदार्थों की नहीं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

ऋषिः-प्रयोगो भार्गवः सोभरिः काण्वो वा। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २ ३ १२ ३ १२३ १ २ ३२ ३२ २ ३१२ ३२
११०. मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः। यः सुहोता स्वध्वरः।।

जो सबको बसानेवाला और सबके हृदय में बसनेवाला है, जो सर्वाग्रणी और ज्योतिस्वरूप है, जो पालक और पूरक होने के कारण प्रशंसनीय है, जो सर्वोत्तम दाता और सबको अपनानेवाला है, जो हमारे अध्यात्मयज्ञ का परम इष्टदेव है, जो उत्तम मार्ग–दर्शक है–ऐसे अतिथि के समान पूजनीय परमात्मा के प्रति हममें से कोई भी मनुष्य रोष, अनादर या लज्जा प्रदर्शित न करे।

ऋषिः-सोभरिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३ १ २ ३१ २र ३२ ३१ २ ३१२३२ ३२ ३१ २र
१११. भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः।।

हे सौभाग्य-सम्पन्न उपासक! जिसके प्रति हमने पूर्णतया अपना समर्पण कर दिया है, ऐसा प्रकाशस्वरूप परमात्मा हम सबके लिए सुख-प्रदाता हो। उस परमेश्वर का दिया हुआ दान, उसकी दान-धाराएँ हमारे लिए कल्याणकारिणी हों–उनकी प्राप्ति और उनका प्रयोग हमारा कल्याण करे। हमारा अहिंसात्मक यज्ञ भी कल्याणकारी हो, सुख-शान्ति और ऐश्वर्यदायक हो और परमात्मा के लिए गाये गये हमारे संकीर्तन आदि भी कल्याणकारी हों–फलदायक हों। हमारा कीर्तन भाँडों के समान बेसुरा आलाप न हो।

ऋषिः-सोभरिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २ ३१२३१ २र३१२ ३ २ ३१२ ३१२
११२. यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।।

हे प्रभो! आप दान दाताओं में सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपास्य, देवों में भी देव–महादेव हैं। आपके देने की शक्ति असीमित है, आप सब पदार्थों के दाता हैं, अविनाशी हैं और हमारे इस जीवन-यज्ञ का उत्तम प्रकार से सम्पादन–पूर्ण करनेवाले हैं–ऐसे आपका हम वरण करते हैं, आपको अपनाते हैं और आपके समान बनने का प्रयत्न करते हैं।

ऋषिः-सोभरिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१२ ३ १ २र३ २ ३ २ ३ १२३ १ २३१२ ३ १ २र ३क २र
११३. तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासाहा सदने कं चिदत्रिणम्। मन्युं जनस्य दूढ्यम्।।

हे तेजःस्वरूप परमात्मन्! आप हमें वह ज्योति–आध्यात्मिक बल प्रदान कीजिए जिसके द्वारा हम अपने शरीर-गृह में विद्यमान जिस किसी भी अत्रिणम्–खा जानेवाले, कभी तृप्त न होनेवाले काम को, मन्युम्–क्रोध को और मनुष्य को बुद्धिहीन बना देनेवाले लोभ को पूर्णतया पराभूत–पराजित कर दें।

ऋषिः-विश्वमनाः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-ककुप्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ २उ ३ २उ ३ १ २
११४. यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे। विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति।।

जब सब प्रजाओं का स्वामी, पापों का दाहक (पापों को जलानेवाला, पापों को भस्म करनेवाला), शत्रुओं का संहारक परमात्मा उपासक द्वारा हृदय-मन्दिर (हृदयरूप गृह) में सुप्रसन्न–सुतृप्त कर लिया जाता है तब वह अपने तीक्ष्ण तेज से काम-क्रोध आदि सारे ही राक्षसों और राक्षसी वृत्तियों को दूर कर देता है।

।।इत्याग्नेयपर्व।।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऐन्द्रपर्व

तृतीया दशतिः

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २ २उ ३ २ ३ १ २
११५. तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद् गवे न शाकिने।।

हे मनुष्यो! तुम सब एक-साथ मिलकर सबके द्वारा पुकारे जानेवाले, महाबलशाली, काम-क्रोधादि शत्रुओं को नष्ट करनेवाले, गौ जैसे निर्दोष और शक्तिमद में चूर होकर निर्बलों पर अत्याचार करनेवाले अत्याचारी–दोनों का ही कल्याण करनेवाले (शरण में आने पर परमात्मा अत्याचारी का भी कल्याण करते हैं) परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का यज्ञों, उत्सवों में कीर्तन करो, गुणगान गाओ।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ १२ ३१ २र
११६. यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः। तेन नूनं मदे मदेः।।

हे अनन्त पराक्रमवाले और अनन्त ज्ञान के भण्डार परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपका जो परम यशस्वी, कीर्तिदायक, ऐश्वर्यपूर्ण आनन्द है, अपने उस तृप्तिकारी आनन्दरस से आप मुझ निरानन्द को भी आनन्दित कर दीजिए।

ऋषिः–हर्यतः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
११७. गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! तत्त्वज्ञान प्रदान करनेवाली, अर्थगाम्भीर्यवाली और श्रेष्ठतम कर्मों का उपदेश देनेवाली वेदवाणियों का मेरे उस हृदय-आकाश में उपदेश कीजिए जिसकी मैंने काम-क्रोध आदि की वृत्तियों के आक्रमण से रक्षा की है। प्रभो! आपके समीप उपस्थित हमें उस वेदवाणी का उपदेश कीजिए जो हमारे दोनों कानों के लिए हितकर और रमणीय है।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२३१ २ ३ १२३ २ ३ १२ २ ३ १ २ ३ १ २
११८. अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने।।

वेदों की मर्यादा में विचरण करनेवाले उपासक! हाथ-पैर आदि कर्मेन्द्रियों की शक्ति प्राप्त करने के लिए परमेश्वर का खूब गुणगान=प्रभु का स्मरण करो। ज्ञानेन्द्रियों की पवित्रता के लिए, वेदवाणी के रहस्यों को हस्तगत करने के लिए भी परमेश्वर का ही गुणगान करो और आत्मा के तेज के लिए, आत्मा को बलवान्, समर्थ और शक्तिशाली बनाने के लिए भी उसी परमात्मा के गुण गाओ।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २
११९. तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्।।

कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति बढ़ाने के स्थान पर हम आत्मा को ही शक्तिशाली बनाते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

किसलिए? महत्त्व प्राप्ति के लिए और ज्ञान पर आवरण डालनेवाले कामरूप वृत्र=शत्रु के विनाश के लिए। आत्मा की शक्ति को बढ़ाकर उपासक शक्तिशाली और सुखवर्षक बन जाता है। स्वयं शक्तिशाली बनकर यह औरों पर भी सुख की वृष्टि करता है।

ऋषिः–इन्द्रमातरो देवजामयः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २र
१२०. त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं सन् वृषन् वृषेदसि।।

हे जीवात्मन्! तू बल=शारीरिक बल, सहस=मानस बल और ओज=आत्मबल के कारण संसार में प्रसिद्ध और सर्वश्रेष्ठ है। तू संसार में विशेष सत्तावाला बनना—आत्मसत्ता से युक्त बनना। हे शक्तिशाली, सर्वमनोरथपूरक और सुखवर्षक जीवात्मन्! तू सचमुच बलवान् है, सुखवर्षक है और परोपकारादि से सबको तृप्त करनेवाला है।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
१२१. यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि।।

पूज्य और उपास्य परमेश्वर द्युलोक में विद्यमान है। उसी परमेश्वर के नियम और व्यवस्था में पृथिवी घूम रही है। उस सृष्टियज्ञ के सञ्चालक यज्ञरूप परमात्मा की उपासना से जीवात्मा शक्ति-सम्पन्न बन जाता है—उसकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सभी शक्तियों का विकास हो जाता है।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३२उ ३ १ २र३ २ ३ २ ३ २ ३२ ३ १ २
१२२. यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जिस प्रकार आप अकेले ही धन, ज्ञान आदि सब उत्तम वसुओं=रत्नों के स्वामी हैं, उसी प्रकार यदि मैं भी धन और ज्ञानैश्वर्यों से युक्त होता तो मेरी स्तुति करनेवाला ज्ञानरूप मित्रवाला अर्थात् महाज्ञानी हो जाता। प्रभो! मैं कब से आपकी स्तुति में लगा हूँ। बस, आपकी कृपा का एक कण चाहिए।

ऋषिः–मेधातिथिरांगिरसः प्रियमेधः काण्वश्च। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३२ ३ १ २
१२३. पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय।।

अपने जीवन में भक्तिरस=परमात्मा के आध्यात्मिक आनन्द का अभिषव करने-(निचोड़ने)-वाले प्रभु के प्यारो! सचमुच स्तुति के योग्य, अत्यन्त प्रशंसनीय **सोमम्**=भक्तिरस को प्राप्त करने के लिए दौड़ो, शीघ्रता करो, योगानुष्ठान में प्रवृत्त होओ। इस भक्तिरस का पान मद्याय=आपके जीवन में आनन्द के लिए होगा। इसके पान से ऐसी मस्ती, ऐसा हर्ष, ऐसा आनन्द आएगा जो अवर्णनीय होगा। इसकी मादकता, मस्ती कभी उतरेगी नहीं। इसका पान वीराय=जीवन में पराक्रम फूँकनेवाला होगा। इसके पान से जीवन में उदारता आदि गुणों का विकास होगा और अन्त में इसका पान शूराय=जीवन की बुराइयों को शीर्ण=नष्ट करनेवाला होगा।

ऋषिः–मेधातिथिरांगिरसः प्रियमेधः काण्वश्च। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१२४. इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन् ररिमा ते।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शरीर में उत्तम ढंग से निवास करनेवाले जीव! यह आध्यात्मिक आनन्दरस=भक्तिरस तैयार है, तू इसका पान कर। इसका पान तुम्हारे जीवन का पालन और पूरण करेगा और तुम्हारे जीवनों को मादकता, उदारता, शौर्य, धैर्य आदि गुणों से सुभूषित कर देगा। हे निर्भय जीव! योगिन्! उपासक! तेरे लिए यही सर्वोत्तम भेंट है।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–सुकक्षश्रुतकक्षौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २
१२५. उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य।।

अविद्या-अन्धकार को दूर करनेवाला प्रभुरूपी सूर्य निश्चय ही उस व्यक्ति के हृदय में उदित होता है, जो शास्त्र-श्रवण को–विद्याविलास को अपना ऐश्वर्य समझता है। यह सूर्य प्रजाजनों पर सुखों की वृष्टि करनेवाले के हृदय में उदित होता है। प्राणिमात्र का हित करनेवाले–**सर्वभूतहिते रतः** के जीवन में प्रकाशित होता है और अन्त में यह ज्ञान-सूर्य उसके हृदय में उदित होता है, जिसने काम-क्रोधादि वासनाओं को परे फेंक दिया है।

ऋषिः–सुकक्षश्रुतकक्षौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१२६. यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! संसार में जो कुछ है, जो ताना-बाना है, विस्तार है, फैलाव है, वह सब आपके वश में है। हे वृत्रहन्! वासनारूपी वृत्र ने आपकी (प्रभुरूपी) ज्योति को आवृत किया (ढका) हुआ है। इस वृत्र का नाश तो आप ही करेंगे। यदि आज ही समाप्त करेंगे तो आपकी कृपा! यदि फिर कभी करेंगे तो आपकी इच्छा! हे सहस्रों सूर्यों के समान देदीप्यमान प्रभो! मेरी तो यही अभिलाषा है कि आप मेरे हृदय-मन्दिर में शीघ्र उदित हों।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ २ ३ १ ३ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१२७. य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा।।

जो परमेश्वर सुनीति–उत्तम साधन, उपाय द्वारा तुर्वशं=काम-क्रोधादि नाशक वृत्तियों को वश में करने की इच्छावाले और **यदुम्**=इस विषय में प्रयत्न करनेवाले उपासक को बहुत दूर से भी सुमार्ग पर ले-आता है, वह सब शक्तियों का स्वामी हमारा सच्चा सखा है। वह युवा है, पाप से छुड़ानेवाला और भद्र के साथ मिलानेवाला है।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २ ३ २
१२८. मा न इन्द्राभ्याऽऽ३ दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत्। त्वा युजा वनेम तत्।।

हे शत्रुओं का विदारण करनेवाले इन्द्र! परमेश्वर! रात्रि के समान अज्ञान-अन्धकारों में और चारों दिशाओं से भी चुपके-चुपके छापे मारनेवाले महाबलवान् काम-क्रोधादि शत्रु हमपर काबू न पा लें, हमें अपने वश में न कर लें, अपितु हे प्रभो! आपसे युक्त होकर, आपको अपना सहायक बनाकर हम ही इन शत्रुओं को मार डालें।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ १२ ३ १२
१२९. एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप बाँटकर उपभोग में आनेवाले, विजयशील बनानेवाले, सदा स्वावलम्बी और सहिष्णु बनानेवाले, बहुत समय तक टिकनेवाले धन को हमारी रक्षा के लिए सब ओर से हमें प्रदान कीजिए।

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३१ २ ३२उ ३ १२ १ २ ३१२ ३ १ २
१३०. इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम्।।

हम परमैश्वर्यशाली प्रभु को महाधन=आत्मसम्पत्ति–मोक्ष-प्राप्ति के लिए पुकारते हैं। उसी ऐश्वर्य के भण्डार इन्द्र को अल्पधन=सांसारिक धन-सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए पुकारते हैं। हमारे साथ रहनेवाले मित्र, वज्रधारी परमेश्वर को हम उस समय भी पुकारते हैं जब काम-क्रोधादि दुर्वासनाएँ हमें घेर लेती हैं।

(ख) हमारे साथ चलनेवाले बड़े-बड़े संग्रामों में और छोटे-छोटे कलहों के अवसर पर और सद्गुणों के आवरक काम-क्रोधादि वृत्रों से संघर्ष होने पर हम हमारे साथ युक्त होनेवाले मित्र और वज्री=ओजस्वी परमात्मा को पुकारते हैं।

ऋषिः–त्रिशोकः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
१३१. अपिबत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे। तत्रादादिष्ट पौंस्यम्।।

आत्म-सम्पत्ति से रहित व्यक्ति इन्द्रियों का दास बन जाता है, परन्तु जिस दिन कद्रुवः=बुरी तरह से रुलानेवाली सर्पिणी के सुतम्=पुत्र को अर्थात् कुटिलता की वृत्ति को पी जाता है–समाप्त कर देता है, उस दिन यह व्यक्ति इन्द्र=परमैश्वर्यशाली बन जाता है और सहस्रबाह्वे=सहस्रों प्रयत्न करने में समर्थ होता है। सहस्रबाहु बनने पर परमेश्वर उस व्यक्ति में पौरुष स्थापित कर देता है। भाव यह है कि कुटिलता समाप्त होने पर मनुष्य सहस्रबाहु और पौरुषसम्पन्न बन जाता है।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ १ २
१३२. वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र नोनुमो वृषन्। विद्धि त्वा३स्य नो वसो।।

हमारी कामनाओं के पूरक परमेश्वर! हम आपको और केवल आपको चाहते हैं। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपकी शरण में पहुँचने के लिए हम बारम्बार आपको प्रणाम करते हैं–निरन्तर आपकी स्तुति करते हैं। हे हृदयवासिन्! आप हमारे इस निश्चय को कि 'हम आपको चाहते हैं', जानें और हमारी कामना को पूर्ण करें।

ऋषिः–त्रिशोकः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३२ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१३३. आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा।।

जो उपासक प्रकाशस्वरूप परमज्योति परमात्मा को अपने हृदय-मन्दिर में प्रदीप्त करते हैं और सदा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

युवा, अखण्डैकरस, शुभ से संयुक्त और अशुभ से पृथक् करनेवाला परमेश्वर जिनका मित्र बन जाता है, वे उपासक अपने हृदय-मन्दिर में से काम-क्रोध, राग-द्वेष आदि को समूल नष्ट करके अपने निर्मल हृदय-आसन को परमात्मा के स्वागत में निरन्तर बिछाये रहते हैं।

ऋषिः–त्रिशोकः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ २३ २३ २३ १ २ ३१ २र १२ ३१ २२
१३४. भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जहि मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर।।

हे परमेश्वर! आप हमारी सब द्वेष-भावनाओं को छिन्न-भिन्न कर दीजिए, जीवन में आनेवाली विघ्न-बाधाओं और रोगों को हमसे पृथक् कीजिए, संग्रामकारी काम-क्रोध आदि शत्रुओं को नष्ट कर दीजिए और हमारा जो स्पृहणीय धन, ज्ञान और मोक्षरूपी धन है, उसे हमें प्राप्त कराइए।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–कण्वो घौरः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३१२ ३ २ ३ १ २३ १ २र १ २र ३१२
१३५. इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्। नि यामं चित्रमृञ्जते।।

द्वेष-भावनाओं, विघ्न-बाधाओं और संग्रामकारी आसुरी भावों के हाथों में मानो चाबुकें हैं। मैं रोग, कष्ट, शारीरिक और मानसिक व्यथाओं के रूप में इनकी मार की आवाज़ इसी जीवन में सुन रहा हूँ—कर्मफल के रूप में इसी जीवन में भोग रहा हूँ। परमेश्वर इन चाबुकों के द्वारा अपने कर्मफल-प्रदान के मार्ग—शासन, न्याय-व्यवस्था और अद्भुत स्वरूप को प्रकट कर रहा है।

ऋषिः–त्रिशोकः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्रीः। **स्वरः**–षड्जः।

३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१३६. इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टावन्तो यथा पशुम्।।

जैसे पशुपालक पशु के पोषण के लिए दाना-घास आदि पुष्टिकारक पदार्थ लेकर पशु के दर्शन के लिए उसके समीप जाते हैं और उसे अत्यन्त स्नेह से देखते हैं, उसी प्रकार हे परमैश्वर्यशाली प्रभो! हम उपासक भी आपके सखा–ज्ञानी भक्त अपने आत्मिक प्रेम और श्रद्धा-भक्ति की भेंट लेकर आपको उत्सुकतापूर्वक निहार रहे हैं कि अब दर्शन हुए, अब दर्शन हुए।

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१३७. समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः।।

परमैश्वर्यशाली परमात्मा के सहस्रों सूर्यों की भाँति उद्दीप्त स्वरूप के दर्शन करने के लिए समस्त प्रजाएँ—साधारण जन और कृष्टयः=योगरूपी खेती करनेवाले योगाभ्यासी, अपनी हृदय-स्थली से वासनारूपी घास-फूँस को विवेक द्वारा बाहर निकालनेवाले उपासक उसी प्रकार झुकते हैं, द्रवीभूत होते हैं, उत्कण्ठित होते हैं जैसे नदियाँ बिना रुके हुए तीव्रगति से समुद्र की ओर जाती हैं।

ऋषिः–कुसीदी काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३१ २र ३२ १ २ ३ १ २ २ १ २
१३८. देवानामिदवो महत् तदा वृणीमहे वयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(क) विद्वानों, योगियों, जीवन्मुक्तों की जो बड़ी भारी रक्षा या शरण है, हम उसे अपने लिए स्वीकार करते हैं, क्योंकि इनकी शरण हमपर सुख-शान्ति की वर्षा करनेवाली है और हमारे रक्षण के लिए है।

(ख) देवों=इन्द्रियों का रक्षण सबसे महान् कार्य है, क्योंकि ये इन्द्रियाँ ही जीव को विषयों में फँसाकर नाना प्रकार के नाच नचाती हैं, अतः हम इनकी रक्षा का ही वरण करते हैं। सुसाधित इन्द्रियाँ सुखों का वर्षण करनेवाली हैं और हमारी जीवन-रक्षा का साधन हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २
१३९. सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः।।

हे वेदज्ञान के स्वामिन्! प्रभो! मैं आपका कान्तियुक्त, सबका भला चाहनेवाला मेधावी पुत्र हूँ, साथ में वेदज्ञान की प्राप्ति के लिए कमर कसे हुए तैयार हूँ। आप मुझे वेदविद्यावालों में—वेद के विद्वानों में वेदविद्या से प्रकाशित कर दीजिए।

ऋषिः-श्रुतकक्षः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १२ ३ २ ३ १ २
१४०. बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम्।।

पाप-वृत्रों का हनन करनेवाला, सर्वशक्तिमान् आनन्द की धारा उँडेलनेवाला अथवा जिसकी अनेक प्रकार से स्तुति की जाती है वह परमेश्वर हमारे मनों में अवश्य ही बोध प्रदान करे और हमारी स्तुति-प्रार्थना, निवेदन को सुने। अथवा परमात्मा हमसे बोले जाते हुए शुभ शब्दों को ही सुने अर्थात् हमारी वाणी से शुभ शब्दों का ही उच्चारण हो। हम अशुभ और अमंगल शब्दों का प्रयोग न करें, मीठा बोलें, कड़वा न बोलें।

ऋषिः-श्यावाश्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१४१. अद्या नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम्। परा दुःष्वप्न्यं सुव।।

हे सकल जगत् के उत्पादक, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, आनन्दप्रद परमात्मन्! आप हमें इस जीवन में ज्ञानपूर्वक सौभाग्य—ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य—प्रदान कीजिए। आप हमारे बुरे संकल्पों, कुसंकल्पों से प्राप्त होनेवाले पापों और दुःखों को दूर कीजिए।

ऋषिः-प्रगाथः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
१४२. क्वा३स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः। ब्रह्मा कस्तं सपर्यति।।

सुखवर्षक, तृप्त करनेवाला, सदा अजर-अमर, अखण्डैकरस, अनन्त शिरवाला—सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, वेदरूपी ज्ञान का उपदेष्टा; कभी न झुकनेवाला, किसी से न झुकाया जानेवाला वह परमेश्वर कहाँ है? कौन उसकी भक्ति और उपासना करता है? वह सर्वत्र है। वेद के विद्वान् और आनन्द के अभिलाषी ही परब्रह्म परमात्मा की उपासना करते हैं।

ऋषिः-वत्सः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
१४३. उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(क) पर्वत की गुफाओं में और नदियों के संगम पर अर्थात् एकान्त, रमणीय, विघ्नों से रहित शान्त प्रदेश में ध्यान और धारणाओं से चारों वेदों का विद्वान् ब्राह्मण बन जाता है, परमात्मा का ध्यान करने से ब्रह्मज्ञान में कुशल हो जाता है।

(ख) वक्षस्थल की हड्डियों के मध्य हृदय में और इडा, पिंगला तथा सुषुम्णा नाड़ियों के संगम–आज्ञाचक्र में ध्यान करने से साधक विप्र=ब्राह्मण बन जाता है।

(ग) माता-पिता, आचार्य तथा अतिथि—इन गुरुओं के निकट रहकर और प्रभु-गुणगान करनेवाले ब्रह्मनिष्ठ योगियों के सत्संग में आकर बुद्धि द्वारा उनके उपदेश श्रवण कर और उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति से मनुष्य ब्राह्मण=ज्ञानी, मेधावी बनता है।

ऋषिः–इरिम्बिठिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१४४. प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः। नरं नृषाहं मंहिष्ठम्।।

हे मनुष्यो ! सब मनुष्यों के अधीश्वर, परमैश्वर्यशाली, स्तुत्य=स्तुति–गुणगान करने योग्य, सबके नेता, भक्तों को परमपद=मोक्ष प्रदान करनेवाले, दुष्टों का पराभव करनेवाले, सब मनुष्यों को अपने तेज से दबानेवाले, सबसे अधिक पूजनीय और महादानी परमेश्वर की स्नेह-सिक्त वाणियों से खूब स्तुति करो।

अथ द्वितीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
१४५. अपादु शिप्रचन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः। इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः।।

भक्ति-मार्ग में आगे बढ़े हुए, आत्मसमर्पण करनेवाले, वीर्य को सुरक्षित रखनेवाले और कर्मेन्द्रियों को वश में रखनेवाले उपासक के अज्ञान-अन्धकार को परमैश्वर्यशाली परमात्मा शीघ्र नष्ट कर देता है।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १ २
१४६. इमा उ त्वा पुरूवसोऽभि प्र नोनवुर्गिरः। गावो वत्सं न धेनवः।।

हे प्रभूत ऐश्वर्यवाले ! विविध धन-प्रदाता परमेश्वर ! जैसे दूध देनेवाली नवप्रसूतिका (नयी ब्यायी हुई) गौएँ अपने बछड़े का ध्यान करती हुई उसी के पास चली जाती हैं, उसी प्रकार मेरे स्तुतिवचन आपको लक्ष्य बनाकर निरन्तर आपका ही स्तवन करनेवाले हों, मेरी चित्तवृत्तियाँ इधर-उधर से हटकर आपमें ही केन्द्रित हों।

ऋषिः–गौतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र ३ २ ३ १ २ २ ३ २
१४७. अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे।।

सूर्य की किरणें सूर्य से पृथक् होकर चन्द्रमा के गृह में पहुँचती हैं, अर्थात् चन्द्रमा अपने प्रकाश से नहीं अपितु सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है, ऐसा विद्वान् लोग मानते हैं। इसी प्रकार उपासकगण ऐसा मानते हैं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कि प्रभुरूपी सूर्य का प्रकाश उपासक के मनरूपी चन्द्रमा में पहुँचता है। इस प्रकाश को प्राप्त करके उपासक का जीवन चमक उठता है, उसमें निराली आभा और तेज आ जाता है। वह आह्लादित हो उठता है।

ऋषि:–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२उ ३ १२३१ २ ३२३१ २र १२ ३१२३ १२
१४८. यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभुवत् सचा।।

आनन्दरस-धाराओं से हृदय को अत्यन्त तृप्त करनेवाला परमैश्वर्यशाली परमेश्वर जब आनन्दरस की धाराओं को बड़ी मात्रा में उपासकों के अन्तःकरण में उँडेलता है, तब पोषणकर्ता आचार्य=गुरु भी इस कार्य में सहायक होता है, अर्थात् गुरु के सदुपदेश से उपासक की प्रभु-भक्ति की ओर प्रवृत्ति होकर भगवद्विषयक रति उत्पन्न होती है, तब प्रभु उपासकों के अन्तःकरण में भगवद्विषयक वृत्तियों को उत्पन्न करते हैं।

ऋषि:–बिन्दुः पूतदक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३१२ ३२३२ ३१२ ३२उ ३ १२
१४९. गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम्। युक्ता वह्नी रथानाम्।।

गौ जैसे अपने सेवकों को दूध पिलाती है, वैसे ही परमेश्वर अपने उपासकों को आनन्दरस का पान कराता है। वह परमेश्वर आत्मिक ऐश्वर्य से सम्पन्न प्राणधारियों की माता है। वह सदा उनका यश चाहता है। जब अष्टांग योग द्वारा वह माताओं की माता परम माता उपासकों के शरीर-रथ के साथ युक्त हो जाती है, तब इन रथों को यथास्थान-मोक्षावस्था में पहुँचा देती है।

ऋषि:–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३१२ ३२ ३१२ १२ ३१२ ३२
१५०. उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम्।।

हे समस्त हर्षों और आनन्दों के स्वामिन्! हमारे इन्द्रियरूपी घोड़े हृष्ट-पुष्ट बने रहें, इसके लिए आप हमें शक्ति प्रदान कीजिए। सोम-पान=वीर्य के शरीर में ही व्यापन से इन्द्रियों के शक्तिशाली बनने पर हमें इन्द्रियों के द्वारा सुतम्=यज्ञ को प्राप्त कराइए। शक्तिशाली बनी हुई हमारी इन्द्रियाँ मार्गभ्रष्ट न हों अपितु यज्ञों—श्रेष्ठतम कर्मों में ही प्रवृत्त हों।

ऋषि:–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३१२ ३१२ ३२ १२ ३१ २र
१५१. इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे। अच्छावभृथमोजसा।।

उपासना-यज्ञ में—योगाभ्यास द्वारा ऐश्वर्यशाली परमात्मा का साक्षात्कार करने के लिए मनोवांछित स्तुति-प्रार्थना-उपासनाओं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करो और सरलता, नम्रता, श्रद्धा-भक्ति आदि गुणों से विभूषित होकर परमात्मा के आनन्दरस में गोता लगाकर आनन्दमग्न होओ।

ऋषि:–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३१ २र ३२३१२ ३१२ ३१ २र
१५२. अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह। अहं सूर्य इवाजनि।।

मुझ उपासक ने सारे संसार के स्वामी परमात्मा से सत्यज्ञान की बुद्धि को—ऋतम्भरा बुद्धि को सर्वतः प्राप्त कर लिया है। प्रभु-उपासना द्वारा मैं परमात्मा से ज्योति पाकर सूर्य के समान महान्, तेजस्वी, पवित्र और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नियमित जीवनवाला बन गया हूँ।

ऋषिः-शुनःशेपः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१५३. रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम।।

अपने-अपने विषयों का सेवन करनेवाली हमारी इन्द्रियाँ स्वभावतः आनन्दस्वरूप प्रभु की भक्ति में निमग्न होकर प्रभूत बल से सम्पन्न हो जाती हैं। इन बलवती इन्द्रियों के साथ हम भक्ति और ज्ञान-सम्पन्न होकर परमात्मा के आनन्दरस का पान करने में समर्थ हो जाते हैं।

ऋषिः शुनः शेपो वामदेवो वा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः** गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ २क २र ३ २
१५४. सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम्। देवत्रा रथ्योर्हिता।।

(क) शान्ति-प्रदाता और सर्वरक्षक परमेश्वर पृथिवीवासी सब मनुष्यों का निरीक्षण करता है, उन्हें चेतना प्रदान करता है और उनका कल्याण करता है। वह सज्जनों का रक्षक है। वह जीवात्माओं का हितैषी है और मन का कल्याणसाधक है।

(ख) प्रभो! सौम्यता और पोषण—पुष्टि और शक्ति—ये दोनों मेरे जीवन में जाग उठें। मैं विनम्र और शक्तिसम्पन्न बन जाऊँ। ये सोम और पूषा सब उत्तम मनुष्यों में निहित होते हैं। इन्हें अपने में धारण कर मैं भी उत्तम मनुष्य बन जाऊँ। ये देवों में निहित होते हैं। इन्हें अपनाकर मैं भी देव बन जाऊँ। ये सोम और पूषा उस दम्पती में निहित होते हें जो शरीररूपी रथ के अधिष्ठाता होते हैं, मैं भी वैसा ही बन जाऊँ।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः-श्रुतकक्षः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धार

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१५५. पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत। विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम्।।

हे उपासको! तुम्हारे ध्यान=उपासना करने योग्य, ज्ञान की रक्षा करनेवाले, सबको पराजित करनेवाले—दुष्ट-संहारक, स्वयं किसीसे पराभूत न होनेवाले, सैकड़ों कर्म करने में समर्थ और सैकड़ों प्रज्ञानों से युक्त-सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ, मनुष्यों की अभिलाषाओं को पूर्ण करनेवाले, सब-कुछ देनेवाले, आनन्द की वर्षा करनेवाले परमात्मा की, मस्ती में भरकर स्तुति करो। उसका गुणगान करते हुए अपने आपको भी वैसा ही बनाने का प्रयत्न करो।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री! **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१५६. प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने।।

हे समान ज्ञानवाले मित्रो! ज्ञान-प्राप्ति के उद्देश्य से मिलकर चलनेवाले साथियो! परमैश्वर्यशाली और अपने उपासकों को ऐश्वर्य प्राप्त करानेवाले, तुम्हारे इन्द्रियरूप अश्वों=घोड़ों को विषयों से लौटानेवाले, तुम्हारी इच्छाओं को जाननेवाले, तुम्हारी शान्ति के रक्षक परमात्मा के लिए दिन-रात, सोते-बैठते, खाते-पीते मस्ती-भरे स्तुतिगान गाओ, जिससे तुम्हें आनन्द की प्राप्ति हो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २

१५७. वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपके मेधावी मित्रजन आपको चाहते हुए प्रशंसनीय वचनों से आपकी स्तुति=गुणगान करते हैं। हम भी इसी लक्ष्य को लेकर आपकी प्रसन्नता के लिए, आपको अपना बनाने के लिए आपकी स्तुति करते हैं।

ऋषिः-श्रुतकक्षः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१५८. इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः।।

हमारी वाणियाँ भक्ति-भावना से प्रस्फुटित (स्वनिर्मित) स्तुतिवाक्यों से परमैश्वर्यशाली, आनन्ददायक परमात्मा का मस्ती में भरकर खूब गुणगान करें। हमारी वाणियाँ परमात्मा से प्रार्थना करें कि "हमारा हृदय दुर्गुण, दुर्व्यसन और वासनाओं से शून्य होने के कारण पवित्र है। आप इसमें आकर विराजमान हों।" इन स्तुतियों के करनेवाले कर्मशील उपासक ही उस उपासनीय प्रभु की सच्ची उपासना करते हैं।

ऋषिः-इरिम्बिठिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १ २

१५९. अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमने निज हृदय-मन्दिर में विशुद्ध भावनाओं की छलनी में छानकर यह उपासना-रस निष्पन्न किया है। यह आपके प्रति समर्पित है। हे प्रभो! आप आओ—प्रकट होओ। इस भक्तिरस के प्रति शीघ्र आओ और इसे स्वीकार करो।

ऋषिः-मधुच्छन्दाः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

१६०. सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि।।

दूध की इच्छावाला गौ दुहने के लिए जैसे सरलता से दुहानेवाली (लात और सींग न मारनेवाली) गाय की कामना करता है, वैसे ही उपासक अपनी रक्षा के लिए प्रतिदिन उस परमात्मा को बुलाते हैं जो प्राणियों और पदार्थों के उत्तम-उत्तम रूप बनानेवाले, मनुष्यों के शरीर,मन और आतमा को संस्कृत करनेवाले तथा नाना प्रकार की आकृतियों का निर्माण करनेवाले हैं।

ऋषिः-त्रिशोकः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१६१. अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्।।

हे सुखवर्षक! मनोरथपूरक परमेश्वर! आपके द्वारा उत्पन्न किये हुए इस संसार में विषय-भोगों से ऊबकर परमानन्द=मोक्ष-प्राप्ति के लिए अपने हृदय-मन्दिर में निष्पादित उपासनारस को आपके प्रति श्रद्धा-भक्ति से समर्पित करता हूँ। इसे स्वीकार कर मुझे तृप्त कीजिए और मुझे अपना आनन्दामृत प्राप्त कराइए। मुझे अपने आनन्द-बिन्दुओं से आप्लावित—सराबोर कर दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–कुसीदीः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६२. य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे॥

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! मैं अपने मन, बुद्धि, चित्त और अहंकाररूपी चमसों में आपके लिए मनन, चिन्तन, स्मरण और ममता द्वारा रस भरता हूँ और बाह्य इन्द्रियरूपी पात्रों–वाणी, नेत्र और श्रोत्र में–स्तुति, दर्शन और श्रवणरूप में जो भक्तिरस आपके निमित्त उत्पन्न हुआ है, उसे आपके प्रति समर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार करें, क्योंकि आप ही इस भक्तिरस के अधीश्वर हैं।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६३. योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये॥

योगाभ्यास की भिन्न-भिन्न भूमियों–भिन्न-भिन्न योगावस्थाओं में और देवासुर-संग्राम में–प्रत्येक जीवन-संघर्ष के अवसर पर, इन्द्रियों के कुमार्गगामी होने पर अथवा कुमार्गगामियों के साथ संघर्ष होने पर हमारी शक्ति को बढ़ानेवाले, अत्यन्त बलशाली परमेश्वर का हम आह्वान करते हैं। हम परमात्मा के सखा हैं–मित्र हैं, अतः अपनी रक्षा के लिए उसे पुकारते हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६४. आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखायः स्तोमवाहसः॥

स्तोत्रों के द्वारा परमात्मा का आह्वान करनेवाले उपासक मित्रो ! आप लोग आइए, अवश्य आइए। शीघ्र आइए। आकर नियतरूप से–श्रद्धा, भक्ति, प्रेम से चारों ओर बैठ जाइए; परमैश्वर्यसम्पन्न परमात्मा को लक्ष्य करके, मस्ती में भरकर, उल्लासपूर्ण हृदय से परमेश्वर का गुणगान करो।

तृतीया दशतिः

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६५. इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते। पिबा त्वा३स्य गिर्वणः॥

हे सर्वसिद्धियों के स्वामिन् ! हे स्तुतिवचनों से प्रशंसनीय परमात्मन् ! हमारी समस्त आराधनों के रक्षक ! किसी की भी आराधनाओं को व्यर्थ न जाने देनेवाले परमेश्वर! हमने अनुक्रमपूर्वक श्रवण, मनन कर पुनः निदिध्यासन बल से अपने हृदय-मन्दिर में जो उपासनारस निष्पन्न किया है, वह आपको समर्पित है। प्रभो ! इसे शीघ्र स्वीकार कीजिए और अपने भक्तों का कल्याण कीजिए।

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६६. महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः॥

परमपिता परमात्मा गुणों की दृष्टि से सर्वमहान् है, विस्तार की दृष्टि से उसका बल द्युलोक के समान फैला हुआ है। वह परमैश्वर्यवान् है। वह सदा हमारे सम्मुख विद्यमान रहे, अर्थात् उठते-बैठते, सोते-जागते,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चलते-फिरते सदा प्रभु-प्राप्ति ही हमारे जीवन का लक्ष्य हो। पाप और पापियों के प्रति दण्डधारी, दुष्टविनाशक परमेश्वर के लिए लोगों में पूज्यभाव होना ही चाहिए।

ऋषिः–कुसीदी काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र
१६७. आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! फुँकारते हुए और विचित्र रूपवाले—नाना रूपों में सामने आनेवाले पापरूपी ग्राह (मगरमच्छ) को सम्यक् रूप से पकड़कर हमें उसकी पकड़ से मुक्त कर दीजिए, हमें निष्पाप बना दीजिए। जैसे बड़ा हाथी अपने बलशाली सूँड से शाखा आदि को उखाड़ फेंकता है, ऐसे ही आप भी मेरे पापों को उखाड़ फेंकिए।

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१६८. अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम्।।

हे उपासक! तू यथार्थ ज्ञान के लिए वेदवाणी के स्वामी, सज्जनों=उपासकों के योग-क्षेम का वहन करनेवाले, सत्य के प्रेरक, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की वेदवाणियों के द्वारा मस्ती में भरकर अर्चना किया कर।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
१६९. कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

हे परमेश्वर! आश्चर्यजनक गुण-कर्म-स्वभाववाले और हम जीवात्माओं को सदा उन्नति की ओर ले-जानेवाले आप किस प्रसादन=प्रसन्न करने की विधि से, किस कर्म=व्यवहार से और किस आचरण से हमारे मित्र बन जाते हो?

[परमात्मा की लीला अद्भुत है, उसकी कृपा अपार है, पता नहीं हमारी किस प्रवृत्ति से वह हमारा उत्कर्षक सखा बन जाए, अतः उसकी स्तुति-प्रार्थना करते रहना चाहिए।]

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१७०. त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये।।

हे उपासक! तू अपनी रक्षा के लिए उस परम मित्र, इष्टदेव परमेश्वर को ही अपनी ओर अभिमुख कर-अपनी ओर झुका। उस परमेश्वर को जो अपने अविनाशी और सत्यस्वरूप से दुष्टों का पराभव करता है और वेद की सब वाणियों में व्याप्त है, अर्थात् वेद का प्रत्येक मन्त्र जिसकी ओर इंगित करता है।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१७१. सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम्।।

जिसमें सूर्य आदि सब देव निवास करते हैं—ऐसे, ब्रह्माण्ड के स्वामी, आश्चर्यरूप—अद्भुत गुण-कर्म-स्वभाववाले, अत्यन्त प्रिय, कामना करने के योग्य परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की स्तुति और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपासना करके उससे भोग सामग्री, नाना-प्रकार के अन्न और धन तथा मेधा=धारणावती बुद्धि की याचना करता हूँ।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३२उ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १२

१७२. ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः। उत श्रोषन्तु नो भुवः।।

हे परमेश्वर! आप द्वारा निर्दिष्ट जो ज्ञान पर आश्रित मार्ग हैं, जिनपर आप विशिष्ट अश्वोंवाले अर्थात् पवित्र इन्द्रियरूप घोड़ोंवाले पुरुषों को चलाते हैं, विचारशील ज्ञानी उपदेशक भी हमें उन मार्गों का श्रवण कराएँ—उन मार्गों का उपदेश करें जिससे उन मार्गों पर चलकर हम अपने जीवनों को सफल बना सकें और पुरुषार्थ चतुष्टय—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध कर सकें।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १२ ३ २ ३२३ १ २ १ २ ३ १ २

१७३. भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो। यदिन्द्र मृडयासि नः।।

हे अनन्तकर्मा और बहुप्रज्ञ परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! यदि आप हमारा कल्याण करना चाहते हैं तो हमारे लिए अत्यन्त कल्याणदायक, अभीष्ट मोक्षसुख और ज्ञानरूपी धन प्रदान कीजिए।

ऋषिः–बिन्दुः पूतदक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

१७४. अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना।।

हे परमेश्वर! मैंने आपके भक्तिरस को अपने हृदय में निष्पन्न किया है। आपकी कृपा से मेरी सारी इन्द्रियाँ इस भक्तिरस का पान करने लगी हैं। वे विषय-भोगों से विमुख होकर प्रभु-भक्ति की ओर आकृष्ट हुई हैं, परिणामस्वरूप वे अपने-अपने क्षेत्र में राज्य करती प्रतीत हो रही हैं। मेरी वाणी तेरे स्तुतिगान में मग्न है, श्रोत्र तेरे यशोगान श्रवण में लीन हैं, नेत्र सर्वत्र तेरे सौन्दर्य को निहार रहे हैं। मेरे प्राण-अपान भी अब भक्तिरस का पान करने लगे हैं।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–इन्द्रमातरो देवजामयः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

१७५ ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। वन्वानासः सुवीर्यम्।।

परमात्मा की ओर गमन करने-(जाने)-वाली, व्यापक कर्मों को अपने साथ जोड़नेवाली, शोभन जीवन को चाहनेवाली, मानव में देवत्व उत्पन्न करनेवाली दैवी वृत्तियाँ सदा सर्वप्रसिद्ध परमात्मा की उपासना में प्रवृत्त हो जाती हैं—लग जाती हैं।

ऋषिः–गोधाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ १ २

१७६. न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि। मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।।

हे विद्वान् महात्माओ! हम उपासकजन मन, वचन और कर्म से किसी की हिंसा नहीं करते और न ही लोगों में फूट डालते हैं, न किसी को व्यामोह या प्रलोभनों में फँसाते हैं, अपितु हम तो वेदमन्त्रों में निर्दिष्ट उपदेशों के अनुसार आचरण करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–दध्यङ्ङाथर्वणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३१ २३ १२ ३२ ३१ २३१२

१७७. दोषो आगाद् बृहद् गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण। स्तुहि देवं सवितारम्।।

(क) सहस्रों सूर्यों के समान देदीप्यमान प्रकाशस्वरूप परमात्मा की ओर जानेवाले! अत्यन्त स्थिर चित्तवृत्तिवाले ज्ञानी उपासक! देखो, यह रात्रि आ गई। इस रात्रि में ऐसा साम गाओ–परमात्मा की ऐसी भक्ति और उपासना करो कि जीवन की सफलता निकटस्थ हो जाए। अनेक रात्रियाँ व्यर्थ बीत चुकी हैं, वैसे ही यह रात्रि भी व्यर्थ न बीत जाए।

(ख) अन्धकार दूर हुआ, प्रातःकाल हो गया। इस प्रभातवेला में परमानन्दस्वरूप, सर्वोत्पादक, सुप्रेरक, सुखैश्वर्यप्रद परमात्मा की स्तुति करो, उसके दिव्य गुणों को जीवन में धारण करने के लिए उत्कट अभिलाषा जागरित करो।

ऋषिः–प्रस्कण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २र३क २र ३ २ ३ २ ३१ ३ २

१७८. एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत्।।

देखो, श्रेष्ठों में श्रेष्ठ, जिससे श्रेष्ठ कोई नहीं ऐसी यह उषा–प्रभातवेला आ गई। यह अत्यन्त प्रिय–सुहावनी वेला है, यह प्रकाशस्वरूप परमात्मा की ओर से प्रकाशित होती हुई अन्धकार को नष्ट कर देती है! हे प्राणापानो! इस प्रभातवेला में मैं आपकी भी जीभरकर प्रशंसा करता हूँ। प्रातः-सायंवेला ध्यान, साधना, योगाभ्यास के लिए सर्वोत्तम समय है। इस समय प्राणसाधना करने से प्रकाश पर पड़ा आवरण दूर होकर प्रभु-दर्शन का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३१२ ३ १ २र ३१२ ३१ २र

१७९. इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव।।

किसी शक्ति से भी पराजित न होनेवाला परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सबको परास्त कर देनेवाली तथा ज्ञानप्रकाश से प्रदीप्त स्वशक्तियों से स्थितप्रज्ञ, ध्यानशील उपासक की ९९ पापमयी वृत्तियों को नष्ट कर देता है।

[पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और एक मन–मनसहित ये ग्यारह इन्द्रियाँ हैं। सात्त्विक, राजसिक और तामसिक भेद से तीन, फिर उत्तम, मध्यम और अधम भेद से तीन, अर्थात् उत्तम सात्त्विक, मध्यम सात्त्विक, अधम सात्त्विक आदि मिलाकर नौ भेद हुए। ११×९=९९ कुल भेद हुए]

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२उ ३ १ ३ १ २ ३१२ ३१ २३१ २र

१८०. इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आ, टुक मेरे हृदय-मन्दिर में झाँक!- अपना दर्श दिखा! सारे यम (अहिंसा, सत्य आदि) और नियमों (शौच, सन्तोष आदि) के पालन से अज्ञानरूप अन्धकार से रहित मेरे निष्पाप, वासनाशून्य हृदय को देखकर आप मुझपर हर्षित–कृपालु हों। प्रभो! मैं यह प्रार्थना इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि आप शक्ति से महान् हैं और अभीष्ट साधक है। आपके दर्शनरूप मेरे अभीष्ट को भी सिद्ध कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

१८१. आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि। महान्महीभिरूतिभिः।।

हे पापवृत्र-विनाशक परमैश्वर्यशाली प्रभो! आप स्वरूपतः, गुणों से, योग्यता से, काल की दृष्टि से, अधिकार की दृष्टि से सर्वमहान् हैं। आप सर्वथा हमारे हैं। हम कब से आपकी बाट जोह रहे हैं। प्रभो! कृपा करो। अब तो हमारे हृदय-मन्दिर में आओ, परन्तु साधारण रूप में नहीं, अपनी महान् रक्षण शक्तियों के साथ आओ।

ऋषिः–वत्सः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३२उ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १२

१८२. ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी।।

उस परमेश्वर का सूर्य के समान प्रसिद्ध तेज सर्वत्र चमक रहा है जिससे वह परमैश्वर्यशाली परमेश्वर द्युलोक और पृथिवीलोक दोनों को चर्म के समान सब ओर से ढक रहा है—व्याप्त कर रहा है

[परमात्मा का प्रकाश उपासक की दृष्टि में तब चमकता हुआ प्रतीत होता है, जब उसे यह अनुभव होता है कि पृथिवी और आकाश में जो कुछ है, वह सब उसी से आच्छादित और सुरक्षित है तथा वह परमात्मा अपने भक्तों की ढाल की भाँति सर्वत्र रक्षा करता है चाहे वे द्युलोक में हों या भूलोक पर।]

ऋषिः–शुनः शेपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३१२ ३ १२ ३ १२ ३२ २ ३ १ २

१८३. अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे।।

हे परमेश्वर! आप सुख-निधान हैं। मैं (उपासक) तो बस आप का ही हूँ। मैंने अपने-आपको आपके प्रति अर्पित कर दिया है, इसलिए समस्त ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करनेवाले आप मेरे हृदय-मन्दिर में उसी प्रकार आते हैं जिस प्रकार प्रेम-मग्न होकर कबूतर कबूतरी के पास जाता है। मैं आपका हूँ, इसीलिए आप मेरे और मेरे जैसे अन्य उपासकों के प्रार्थना-वचनों को सुनते हो।

ऋषिः–वातायन उलः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ ३२ २ ३ १२

१८४. वात आ वातु भेषजंशम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूँषि तारिषत्।।

सर्वत्र गमनशील—सर्वव्यापक परमात्मा हमारे हृदय में मनोवाञ्छित फल और परमानन्द प्राप्त करानेवाले अपने अमृतस्वरूप को सञ्चारित करे और हमारे जीवनों को दीर्घ बनाए—लम्बा करे।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–कण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २

१८५. यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा। न किः स दभ्यते जनः।।

परमेश्वर की पापनिवारक शक्ति, मैत्री भावना और पक्षपात छोड़कर न्याय करने की शक्ति—ये तीनों शक्तियाँ जिस प्रकृष्ट ज्ञानवाले उपासक की रक्षा करती हैं, वह उपासक आसुरी वृत्तियों से कभी दबाया नहीं जा सकता।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-वत्सः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २

१८६. गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया। वरिवस्या महोनाम्।।

हे मानव ! तू अपने कल्याणार्थ उत्तम ज्ञानेन्द्रियों की इच्छा से युक्त हो—अपनी ज्ञानेन्द्रियों को उत्तम बना। तू उत्तम कर्मेन्द्रियों की इच्छा से युक्त हो, अर्थात् अपनी कर्मेन्द्रियों को भी उत्तम बनाने में यत्नशील हो। तू उत्तम शरीर-रथ की इच्छा से युक्त हो-तू सदाचरण और संयम द्वारा अपने शरीर को स्वस्थ बना। ऐसा बनकर तू प्रभु से प्रार्थना कर—हे श्रेष्ठों में श्रेष्ठ-इष्टदेव परमात्मन् ! आपने हमें पूर्वजन्मों में जिस प्रकार ये सभी साधन दिये थे, इस जन्म में भी इसी प्रकार प्रदान करके हमें अपनी परिचर्या = उपासना में लगा और पुनः मोक्षानन्द का भोग करा।

ऋषिः-वत्सः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

१८७. इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम्। एनामृतस्य पिप्युषीः।।

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन् ! ज्ञानप्रकाश से परिपूर्ण ये आपकी वेदवाणियाँ हमारे मलों-अज्ञान-अन्धकार को दूर करके हमारे अन्दर ज्ञान दीप्ति भरती हैं। ये वेदवाणियाँ अध्यात्मयज्ञ—उपासना की निरन्तर वृद्धि करनेवाली हैं। जितना-जितना हम वेद का स्वाध्याय करते हैं, उतनी-उतनी ही हमारी उपासना भी बढ़ती जाती है।

ऋषिः-श्रुतकक्षः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २

१८८. अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत। यत् सोमेसोम आभुवः।।

अग्नि, इन्द्र आदि अनेक नामों से पुकारे जानेवाले तथा सबको नमाने = झुकानेवाले हे परमेश्वर ! सबके द्वारा स्तुत्य = गुणगान करने योग्य परमात्मन् ! आप स्तुति की इच्छा से युक्त बुद्धि = धारणावाले, निरन्तर आपकी उपासना करनेवाले, श्रद्धा-भक्ति-समन्वित सौम्य उपासक में कभी-न-कभी तो प्रकट होंगे ही, क्योंकि सच्चे और विनम्र उपासकों को दर्शन देना आपका स्वभाव है।

ऋषिः-मधुच्छन्दाः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२

१८९. पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः।।

(क) भौतिक, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, सामाजिक, नाना प्रकार के बलों से बलवाली-अर्थात् नाना प्रकार के बलों का ज्ञान प्रदान करनेवाली वेदवाणी हमें पवित्र करनेवाली है। वेद के स्वाध्याय से पाप-वासनाएँ धुल जाती हैं। ज्ञान और क्रियाशीलता की सम्पत्तिवाली यह वेदवाणी हमारे जीवनयज्ञ को चमका दे। ज्ञानपूर्वक कर्म करते हुए हम यशस्वी बनकर संसार में चमकें।

(ख) हे परमेश्वर ! हमारी वाणी ज्ञानोपदेश द्वारा सबको पवित्र बनाए। वह बलवती ऐसी हो कि उसे सत्य कहने में कहीं से, किसी से भी भय न हो। वह उत्कृष्ट कर्मों में और आपके नाम-जप में लगी रहे।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २र ३ २उ ३ १२ २ ३ २ ३ १ २

१९०. क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्। स नो वसून्या भरात्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्म-बन्धन में बँधे हुए मनुष्यों में कोई विरला मुमुक्षु ही परमैश्वर्यशाली परमात्मा को भक्तिरस के समर्पण से अपने ऊपर प्रसन्न कर सकता है—उसका कृपापात्र बन सकता है। कृपालु बनकर वह परमेश्वर हम सब मनुष्यों-उपासकों को नाना प्रकार के भोगसाधन और सम्पत्तियाँ प्रदान करता है।

ऋषिः–इरिम्बिठिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २उ ३ १ २ ३ १ २
१९१. आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप आइए, हमें दर्शन दीजिए। हमने आपके लिए भक्तिरस तैयार किया है, आप इसे स्वीकार कीजिए और हमारे उस हृदय-मन्दिर में विराजिए जिसमें से वासनाओं को उखाड़कर फेंक दिया गया है और जो कुशा घास के समान पवित्र है।

ऋषिः–वारुणिः सत्यधृतिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१९२. महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपके तीनों रूपों की महारक्षा हमें प्राप्त हो। आपके मित्र रूप द्वारा हमें ज्ञानप्रकाश प्राप्त हो आपके अर्यमा=न्यायकारी रूप द्वारा सुख प्रदान करनेवाले निवास मिलें और आपके वरुण=पापनिवारणरूप द्वारा कभी पराभूत न होने का सामर्थ्य प्राप्त हो।

ऋषिः–वत्सः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ १ २
१९३. त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम्।।

हे सबको निवास देनेवाले! परमैश्वर्यशालिन्! जगन्निर्मातः! मनुष्यों को शुभ कर्मों में प्रेरित करनेवाले प्रभो! आप उपमा से रहित हैं। आप अनुपम हैं। आपके समान कोई नहीं है। हम आप जैसे अनुपम परमात्मा के अनन्य उपासक बने रहें, सदा आपकी शरण में बने रहें।

।।यहाँ द्वितीय प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ तृतीयः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–प्रगाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १२ ३ १ २र १२ ३ १ २
१९४. उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि।।

हे आनन्दवर्षक! अभेद्य शक्तियों के स्वामिन्! हमारे द्वारा निष्पादित भक्तिरस आपको सुप्रसन्न करें–आपको हमपर कृपालु बनाएँ। आप हमें आराधनारूपी धन प्रदान कीजिए और हमारी नास्तिकता की भावनाओं को नष्ट कीजिए।

ऋषिः–विश्वमित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३२उ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २र
१९५. गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः।।

वेदवाणियों द्वारा स्तवन करने योग्य प्रभो! आप हमारे द्वारा निष्पादित भक्तिरस को स्वीकार कीजिए। हम आपको भक्तिरस की धाराओं से सींचते हैं–अपने हृदय में निष्पादित भक्तिरस को आपके प्रति समर्पित करते हैं। हे परमैश्वर्यशालिन्! आपका दिया हुआ पवित्र यश हमें प्राप्त हो, अर्थात् आपकी कृपा से हमारा जीवन यशोमय बने।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २र ३ २ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
१९६. सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवो वृतः शूर इन्द्रः।।

हे उपासको! परमैश्वर्यशाली परमेश्वर आपको सदा अपनी ओर आकृष्ट करता है। वह अनुपम परमात्मा महापुरुषों को हमारे पास लाता हुआ सदा हमारी सहायता करता है, परन्तु कितने दुर्भाग्य की बात है कि हमने वासनाओं को काट डालनेवाले परमैश्वर्यशाली, दिव्यगुणों के निधान परमेश्वर का वरण नहीं किया।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २उ ३ १ २
१९७. आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपको दयार्द्र कर देनेवाले मेरे भक्तिरस आपमें ऐसे प्रविष्ट हो जाएँ जैसे नदियाँ समुद्र में प्रविष्ट हो जाती हैं। भेद इतना है कि नदियाँ समुद्र में जाकर खारी हो जाती हैं, परन्तु मेरे द्वारा समर्पित उपासनारस आपको आर्द्र बना देते हैं। हे प्रभो! आप सर्वमहान् हैं, दया के सागर हैं। आपसे बढ़कर कोई शक्ति नहीं है, कोई शक्ति आपको लाँघ नहीं सकती।

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
१९८. इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सामगान करनेवाले सामवेदी उपासक बृहत् सामों के द्वारा परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का ही गान करते हैं–अध्यात्मवित् प्रभु-महिमा का अनुभव कर उसे हृदय में स्मरण करते हैं और वाणी द्वारा उसकी स्तुति करते हैं ऋङ्मन्त्रों के ज्ञाता विद्वान् अथवा पदार्थों के गुणविवेचन में लगे हुए वैज्ञानिक ऋङ्मन्त्रों द्वारा परमेश्वर की स्तुति करते हैं। वैज्ञानिक प्रत्येक पदार्थ की रचना में उस रचयिता की कारीगरी देखकर उसके प्रति नतमस्तक हो जाते हैं। यजुरूप वाणियाँ भी उसी ऐश्वर्यशाली परमात्मा की प्रशंसा करती हैं। समाजशास्त्री प्राणिमात्र के प्रति दयार्द्र होकर उस प्रभु की महिमा का गुणगान करता है।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१९९. इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम्।।

परमैश्वर्यशाली परमात्मा हमें उसकी ओर जाने और प्राप्त करने के लिए महाविद्वान् आचार्य=गुरु को और ज्ञानरूप सम्पत्ति को प्राप्त कराए। वह शक्ति का भण्डार हमें भी सदाचार, संयम, ब्रह्मचर्य का बल दे जिससे हम उसे पा सकें।

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र २उ ३ १ २र
२००. इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः।।

हे प्रिय उपासक! वह शत्रुविनाशक परमात्मा बड़े-से-बड़े भय को दूर कर देता है, दूर ही नहीं करता, उसे सर्वथा नष्ट कर देता है। वह कूटस्थ=नित्य, स्थिर और सर्वद्रष्टा है। सर्वद्रष्टा होने के कारण उपासकों के दुर्गुणों और विघ्नकर्ताओं को देखता है और उन्हें हटा देता है।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १ २
२०१. इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। गावो वत्सं न धेनवः।।

हे स्तुतियों से सम्भजनीय परमात्मन्! जैसे दुधारू गौएँ वियोग न सहती हुई अपने बछड़े की ओर दौड़कर जाती हैं, वैसे ही हमारी वाणियाँ प्रत्येक ज्ञानयज्ञ में, प्रत्येक भक्तियज्ञ में तेरी ओर दौड़ती हैं–तेरी महिमा के गीत गाती हैं।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
२०२. इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये।।

हम उपासक सर्वसमर्थ और सर्वैश्वर्यशाली, न केवल ऐश्वर्यशाली अपितु पोषणकर्ता परमात्मा को अपना मित्र, स्नेही, विघ्न-बाधाओं से त्राण करनेवाला बनाने के लिए, संसार में सु-अस्तित्व–रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय–की प्राप्ति के लिए, उत्तम जीवन-अभ्युदय और मोक्ष-सुख की प्राप्ति के लिए पुकारते हैं–उसकी स्तुति-प्रार्थना और उपासना करते हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २र २ ३ २उ ३ २
२०३. न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्। न क्येवं यथा त्वम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे पाप और अन्धकार-नाशक परमात्मन्! आपसे उत्कृष्ट कुछ भी, कोई भी नहीं है। आपसे सूक्ष्म भी कुछ नहीं है–आप सूक्ष्म-से-सूक्ष्म हैं। हे परमैश्वर्यशालिन्! आपसे महान् भी कोई नहीं है–स्वरूप, गुण, योग्यता, अधिकार आदि सभी दृष्टियों से आप महान् से भी महान् हैं। इतना ही नहीं कि आपसे बड़ा कोई नहीं है, सच बात तो यह है कि आपके समान भी कोई नहीं है। आप तो बस आप ही हैं–अनुपम हैं।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः–त्रिशोकः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
२०४. तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समानमु प्र शंसिषम्।।

मैं (उपासक) उस प्रभु का कीर्तिगान करता हूँ जो सब जनों अर्थात् मानवमात्र को भवसागर से पार उतारनेवाले हैं, जो प्रभु-प्राप्ति के मार्ग के पथिक और जितेन्द्रिय उपासकों के रक्षक हैं तथा जीवों को उन्नति-पथ पर बढ़ने के लिए उत्साहित करनेवाले हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
२०५. असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। सजोषा वृषभं पतिम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! अन्य भक्तों, उपासकों के समान मैंने भी आपकी स्तुति = गुणगान किया है। आप सब सुखों के वर्षक, सबकी इच्छाओं के पूरक और सबके रक्षक हैं। आपके प्रति किये गये मेरे ये स्तुतिगान–मेरी प्रार्थनाएँ आपको मुझे प्राप्त कराती हैं। इन स्तुतिगानों से आपके प्रति प्रीति बढ़ाते हुए अन्त में एक दिन मैं आपको पा लेता हूँ।

ऋषिः–वत्सः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
२०६. सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रास्पान्त्यद्रुहः।।

(क) वह मरणधर्मा मनुष्य सचमुच धन्य है, सुमार्गगामी है जिसकी द्वेषादि से रहित विद्वान् लोग, न्यायकारी और दानशील तथा सबके प्रति स्नेही जन रक्षा करते हैं।

(ख) वह मनुष्य धन्य है जिसकी पापवारक, आनन्दप्रद, सर्वस्नेही, द्रोह-भावनाओं से रहित परमात्मा रक्षा करते हैं।

ऋषिः–त्रिशोकः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २र
२०७. यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जो धन दृढ़ शरीरवाले पुरुषों में-योद्धाओं में है, जो धन स्थिरवृत्तिवाले योगी में है, जो धन विचारशील पुरुष में है, वह स्पृहणीय धन मुझे प्राप्त कराइए, अर्थात् दृढ़ शरीरवाले व्यक्ति का स्वास्थ्यरूपी धन, स्थिर मनोवृत्तिवाले का 'अनासक्तिरूप' धन और विचारशील पुरुष का 'विवेकरूपी' धन मुझे प्राप्त कराइए।

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
२०८. श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम्। आशिषे राधसे महे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो वेद और लोक में प्रसिद्ध, अज्ञानरूपी आवरण और पाप-भावनाओं का नाशक तथा अत्यन्त बलशाली है, हे मनुष्यो! अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए, मोक्षरूपी धन और महत्त्व प्राप्ति के लिए उस परमेश्वर की प्रकृष्ट रूप से उपासना करो।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
२०९. अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः। अरं शक्र परेमणि।।

काम आदि शत्रुओं के संहारक हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! मोक्षधन की प्राप्ति के लिए हम ज्ञान, सामर्थ्य, बल आदि में अनुपम आपकी शरण में आएँ–आपमें ही अनुरक्त हों। हे सर्वशक्तिमन् प्रभो! हम सदा उत्कृष्ट मार्ग पर ही चलें।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
२१०. धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हममें जो आपका ध्यान करनेवाले योगी हैं, जो दानशील और भक्त हैं, जो प्रशस्त इन्द्रियोंवाले संयमी पुरुष हैं, जो स्वव्रत से विचलित न होनेवाले हैं और जो स्तोत्रोंवाले=प्रभु-महिमा के स्तोत्र गानेवाले उपासक हैं, आप प्रातःकाल ध्यानवेला में उनपर अनुग्रह किया करें–प्रीतिपूर्वक उनके वचनों को सुनकर उन्हें अपना प्रेमपात्र बनाया करें।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २र ३ १ २
२११. अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जितेन्द्रिय उपासक! तू कर्मों की वृद्धि के द्वारा–निरन्तर क्रियाशीलता के द्वारा न छूटनेवाले पाप और अहंकाररूपी वृत्र को, बन्धन के प्रधान कारण राग को उखाड़ फेंकता है और स्पर्धा करनेवाली, जीवन-उन्नति में बाधक–सब बाधक वृत्तियों–आसुरी दुर्वृत्तियों को जीत लेता है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २
२१२. इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः। तेषां मत्स्व प्रभूवसो।।

हे सबके आश्रयदाता! अनन्त सम्पत्तिशालिन्! पाप-वासनाओं और राग-द्वेष आदि को दूर कर हमने अपने हृदय-मन्दिर में जो भक्तिरस उत्पन्न किये हैं और जो भक्तिरस भविष्य में उत्पन्न किये जाएँगे, आप उन सबको स्वीकार करो और हमपर प्रसन्न=कृपालु होओ–अपनी कृपादृष्टि का वरदहस्त हमपर रक्खो।

ऋषिः–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
२१३. तुभ्यं सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय।।

हे प्रकाशधन के स्वामिन्! तेजस्वी परमात्मन्! आपके लिए उपासनारस तैयार किये गये हैं और हृदय की सभी वासनाओं को उखाड़कर कुशा घास के समान निर्मल हृदय-आसन को आपके स्वागत के लिए बिछाया है। हे परमैश्वर्यशालिन्! हम कबसे आपकी बाट जोह रहे हैं, अब तो अपने भक्तों, उपासकों पर कृपा कर उन्हें सर्वविध सुखी कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तृतीया: दशतिः

ऋषिः–शुनः शेपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२१४. आ व इन्द्रं कृविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम्। मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः।।

हे उपासको! आओ, हम तुम सब मिलकर अपने अमृत अन्नभोग-मोक्ष को चाहते हुए आश्चर्यपूर्ण कर्मों को करनेवाले और महाज्ञानी, सर्वतो महान्, प्रभूत दानी परमात्मा को अपने भक्तिरसों से सींच दें–तृप्त कर दें, उसी प्रकार जैसे खोदी हुई खत्ती नामक शुष्क कूप को उसमें से पुनः अन्न प्राप्त करने के लिए अन्न से भर देते हैं।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२१५. अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया। इषा सहस्रवाजया।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमारे उपासनारसों से सींचे जाने के कारण हमपर कृपालु होकर आप हमारे निकट आइए; हमारे हृदय-मन्दिरों में प्रकट होकर हमें अपने दर्शन दीजिए। हे प्रभो! आप इस इच्छा से हमें दर्शन दीजिए कि आपने हमें सैकड़ों और सहस्रों प्रकार के अन्न, बल, ज्ञान और प्रेरणाएँ प्रदान करनी हैं।

ऋषिः–त्रिशोकः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२१६. आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद् वि मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे।।

पाप और अज्ञान का नाशक परमात्मा उपासक के हृदय में साक्षात् हुआ ज्ञानरूप वज्र को धारण करता है और उपासक से पूछता है—कौन-कौन उपद्रव करनेवाले हैं और कौन-कौन भक्तों की हिंसा करनेवाले हैं। परमात्मा अपने ज्ञानरूपी वज्र से उपासक के सभी काम-क्रोध आदि उपद्रवकारी दुर्गुणों और हिंसक मनुष्यों को नष्ट कर देता है।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२१७. बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये। साधः कृण्वन्तमवसे।।

जो परमात्मा मनुष्यमात्र के द्वारा स्तुत्य है, जो सृष्टि-निर्माण और जीवों की पालनारूपी भुजाओं से युक्त है, जो कर्मानुसार फल प्रदान करनेवाला है, उस परमात्मा को हम अपने रक्षण के लिए बारम्बार पुकारते हैं—उसकी स्तुति-प्रार्थना, उपासना करते हैं।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२१८. ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः।।

(क) वरणीय एवं सब कष्टों का निवारण करनेवाला, सबका स्नेहभाजन और सबसे स्नेह करनेवाला, शत्रुओं को परे भगाकर आनन्दप्रदाता, भक्तों पर समानरूप से प्रीति करनेवाला परमेश्वर हमारे हार्दिक भावों को जानता हुआ हम सबको धर्मयुक्त सरल मार्ग से ले-चले।

(ख) समझदारी से अपने-आपको व्रतों में बाँधना, प्राणिमात्र से स्नेह करना, दान देना–इन दिव्य गुणों के साथ समानरूप से प्रीति करने पर ये हमारे कल्याण के साधक होते हैं और जीवन-यात्रा में हमें सरल, न्याय और धर्मयुक्त मार्ग से ले-चलते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-ब्रह्मातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
२१९. दूरादिहेव यत्सतोऽरुणप्सुरशिश्वितत्। वि भानुं विश्वथातनत्।।

जैसे दूर विद्यमान आरोचमान उषा का प्रकाश, रंग-रूप इस पृथिवी पर चमकता है, उसी प्रकार हे परमेश्वर! ऊषा के समान प्रकाशमान आपका प्रकाश जब उपासक के हृदय में चमक उठता है, तब आप उपासक के ऋतम्भरा प्रज्ञारूपी सूर्य को सब प्रकार से, सब ओर विशेष रूप से फैला देते हैं, उपासक को वेदज्ञान को धारण करनेवाली बुद्धि प्रदान करते हैं।

ऋषिः-विश्वामित्रो जमदग्निर्वा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र २ ३ १ २
२२०. आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू।।

प्राणिमात्र से स्नेह करनेवाला तथा पापों और अज्ञान-आवरक (परदे) का नाशक परमेश्वर हम उपासकों की ज्ञानेन्द्रियों को ज्ञानदीप्तियों, स्नेह और नैर्मल्य=पवित्रता से सींच दे और रञ्जनात्मक मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार स्थानों को मधुर प्रेमरस से सींच दे। हे मित्र और वरुण रूपवाले परमेश्वर! आप उपासकों के व्रतों, संकल्पों और प्रज्ञानों को उत्तम बना दो।

ऋषिः-प्रस्कण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
२२१. उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे।।

अध्यात्म-यज्ञों में जल की भाँति शान्ति और सूर्य की भाँति प्रकाश देनेवाली वेदवाणियों का उच्चारण करनेवाले स्तोता=उपासकजन अपनी-अपनी दिशाओं=दशाओं, अवस्थाओं का विस्तार करते हैं, अपने जीवन-मार्ग का निश्चय करते हैं, फिर जैसे शिशु घुटनों के बल चलते हैं, वैसे ही ये उपासक भी अपने-आपको पूर्णरूपेण परमात्मा को समर्पण कर—अपने जीवनों को बालकों के समान नम्र व विनीत बनाकर परमात्मा की ओर चलते हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ १ २ ३ २
२२२. इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पांसुले।।

सर्वत्र व्यापक परमेश्वर इस संसार में विशेष गति करता है। उसने पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक तीनों स्थानों को अपनी शक्ति से व्याप्त किया हुआ है। उसका आश्चर्यजनक स्वरूप कण-कण में छिपा हुआ है। वह सबकी दृष्टि में नहीं आता। उसके अन्तर्निहित स्वरूप को योगिजन अपने आत्मा में देखते हैं।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
२२३. अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपेरय। अस्य रातौ सुतं पिब।।

हे उपासक! परमात्मा के स्वरूप का साक्षात्कार करने के लिए तू क्रोध, शोक, दुःख व निराशा के बीज

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बोनेवाले व्यक्ति को त्याग दे, उनकी संगति मत कर। सदा उत्तम प्रेरणा देनेवाले व्यक्ति के समीप पहुँच, उनकी शरण में रह। परमेश्वर की देनों की वृष्टि होने पर तू आनन्द, शक्ति और ज्ञान का पान कर।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २र ३ १ २

२२४. कद् प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिध्यस्य वर्धनम्।।

प्रकृष्ट ज्ञानवाले, गुण, योग्यता, अधिकार आदि सभी दृष्टियों से सर्वतो महान्, प्रकाशकों के प्रकाशक, आनन्दप्रद परमेश्वर के लिए कुछ भी—सामान्य-सा भी स्तुतिवचन कहा जाए तो वह वचन निश्चय ही उपासक के सुखों का विस्तार करनेवाला होता है और वह वचन निश्चय ही इस उपासक की वृद्धि अर्थात् इसकी मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक समुन्नति का कारण होता है।

ऋषिः-मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ २ ३ १ २

२२५. उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्।।

जो उपासक श्रद्धापूर्वक शुद्ध और स्थिर मन से परमेश्वर की स्तुति नहीं करता, उसके द्वारा उच्चारित स्तुतिपरक सूक्तों पर सर्वव्यापक परमात्मा भी ध्यान नहीं देता, ऐसे व्यक्ति द्वारा गाये गये सामगान को भी परमात्मा नहीं सुनता। परमात्मा पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त श्रद्धा-भक्ति से की गई प्रार्थनाओं को ही सुनता है। वह नास्तिक की दम्भमय, लोभ या प्रदर्शन की भावना से की गई प्रार्थना पर ध्यान नहीं देता।

ऋषिः-विश्वामित्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २

२२६. इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः। हरिवान्त्सुतानां सखा।।

इन्द्रियों का अधिष्ठाता जीवात्मा प्राकृतिक पदार्थों के भीतर परमेश्वर के माहात्म्य का दर्शन करानेवाली ऋचाओं—स्तोत्रों के गान से उत्कृष्ट आनन्द का अनुभव करता है। यह उपासक प्रभु-स्तवन से ज्ञान, बल व शक्ति का स्वामी बनता है, त्यागशील भी बनता है। इसके आत्मा में ज्ञान, भुजाओं में बल और मन में त्यागभावना होती है। यह औरों के दुःखों को दूर करनेवाला होता है और प्राणिमात्र का मित्र होता है।

ऋषिः-मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

२२७. आ याह्युप नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः। महाँइव युवजानिः।।

हे परमेश्वर! हमारे द्वारा दिव्य गुणों से अलंकृत हमारे जीवन-यज्ञ को उत्कृष्ट गति देने के लिए और अधिक सुन्दर, दिव्य, भव्य और यशस्वी बनाने के लिए हमारे हृदय-मन्दिर में पधारिए। हमसे कोई भूल भी हुई हो तो क्रोध मत कीजिए। जैसे पति अपनी युवती पत्नी पर क्रोध नहीं करता, अपराध करने पर भी उसके पास जाता ही है, ऐसे ही आप भी अपराधी होने पर भी हमारे पास आइए।

ऋषिः-कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २

२२८. कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः। दीर्घं सुतं वाताप्याय।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सबके प्राणाधार! सबमें बसने और सबको बसानेवाले परमेश्वर! कमनीय=कामना करने योग्य आपके लिए ये स्तोत्र=स्तुति-वचन समर्पित हैं। आपकी आनन्दरस बहानेवाली धाराएँ कब तक रुकी रहेंगी? हे सर्वव्यापक प्रभो! आप अपनी आनन्दधाराओं को प्रवाहित कीजिए और मेरे जीवन-यज्ञ को सरस कीजिए।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ १ २र
२२९. ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु। तवेदं सख्यमस्तृतम्।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! तू ब्रह्मवेत्ता तथा साधना-सिद्ध गुरु से उपदिष्ट योगांगों के अनुसार परमात्मा के सर्वोत्तम 'ओ३म्' नाम का जप करते हुए उपासना के आनन्दरस का पान कर। हे शिष्य! ज्ञान-प्राप्ति के लिए गुरु के साथ तेरा यह सम्बन्ध–तेरा मित्रभाव अविच्छिन्न हो।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
२३०. वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः। त्वं नो जिन्व सोमपाः।।

वेदवाणियों से स्तुति करने योग्य हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हम आपके और केवल आपके उपासक हैं। हम पाषाण आदि जड़पूजक और मनुष्यपूजक नहीं हैं। हम आपका ही स्तवन करनेवाले हैं। हे भक्तिरस को स्वीकार करनेवाले प्रभो! आप अपने कृपाकटाक्ष से हमें तृप्त और सन्तुष्ट कीजिए।

ऋषिः–विश्वामित्रो गाथिनोऽभीपाद उदलो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
२३१. एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः। सत्राजिदुग्र पौंस्यम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! दुष्टों के साथ होनेवाले युद्धों और काम-क्रोधादि वासनाओं के साथ होनेवाले देवासुर-संग्रामों, जीवन-संघर्षों में विजय-प्राप्ति के लिए तथा किसी भी दुष्ट संग में फँसे हुए मनुष्यों के संसर्ग से बच जाने और उन्हें भी बचा लेने के लिए आप हमारे शरीर में, आत्मा में बल का आधान कीजिए। सबको वश में करनेवाले तेजस्वी परमात्मन्! अनिष्ट तत्त्वों पर विजय पाने के लिए पौरुष भी प्रदान कीजिए।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
२३२. एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः।।

हे जीवात्मन्! तू काम-क्रोधादि शत्रुओं के साथ युद्ध करना चाहता है, अतः तू वीर है। तू बुराइयों का संहार करनेवाला शूरवीर है। तू स्थिर मनोवृत्तिवाला=स्थितप्रज्ञ है–कोई भी प्रलोभन तुझे डिगा नहीं सकता। तेरा मन प्रशंसनीय है।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२३३. अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सब बुराइयों का संहार करनेवाले हे प्रभो ! हम आपके प्रति यौवन काल में ही पुनः-पुनः नमते हैं, आपके प्रति अपने को वैसे ही समर्पित करते हैं, जैसे बिना दुही नवप्रसूता गाय—जिसका यौवन अभी आरम्भ हुआ है, दूध देने के लिए झुक जाती है या रम्भाती हुई अपने बछड़े की ओर जाती है। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन् ! आप इस जड़ और चेतन जगत् के स्वामी हैं। आप हमें भी इन्द्रियों का स्वामी=जितेन्द्रिय बनाकर स्वर्ग=सुखविशेष—मोक्ष का दर्शन कराते हैं—मोक्ष प्राप्त कराते हैं।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २र ३ १ २र ३ १ २
२३४. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन् ! हम तेरे स्तोता=उपासक मोक्ष-प्राप्ति के लिए तुझे, केवल तुझे ही पुकारते हैं, तेरा ही स्मरण और तेरा ही ध्यान करते हैं। अपने-आपको आगे और आगे ले-चलनेवाले हम ज्ञान को आवृत करने-(ढकने)-वाले काम-क्रोधादि शत्रुओं के प्रबल होने पर भी सज्जनों के रक्षक और पालक आपको ही पुकारते हैं। दुःखों की पराकाष्ठा होने पर और सारे प्रयत्न करके थक जाने पर भी भक्तजन आपको ही पुकारते हैं।

ऋषिः–बालखिल्याः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
२३५. अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति।।

हे उपासाको ! तुम यथार्थज्ञान के लिए साधना में सफलता प्राप्त करानेवाले, मोक्षरूपी ऐश्वर्य के धारक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को प्रकृष्टरूप से अर्चित करो—जब-जब कार्यों से अवकाश मिले तब-तब प्रभु की उपासना करो। वह परमात्मा बहुविध धनवाला और अनन्त धनवाला है। वह उपासकों के लिए सहस्रों प्रकार से धन देता है।

ऋषिः–नोधाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
२३६. तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः।
३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे।।

हे उपासको ! हम दर्शनीय—अतिसुन्दर और अद्भुत, काम-क्रोधादि निन्दनीय भावनाओं को अभिभूत करने=दबानेवाले, निवास के लिए पर्याप्त अन्न से तृप्त करनेवाले, उस परमैश्वर्यशाली, सब शत्रुओं का संहार करनेवाले परमेश्वर की वेदवाणियों से स्तुति करते हैं, प्रेमपूर्वक उसका स्मरण करते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे दिनभर जंगल में रहती हुई गौएँ गोष्ठ में आने पर अपने बच्चों के लिए रम्भाती हैं।

ऋषिः–कलिःप्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२३७. तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये।
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे उपासको! विघ्न-बाधाओं द्वारा सताये जाने पर अपनी आत्मरक्षा के लिए समस्त बलों से युक्त, उत्तम धनों व रत्नों के दाता और भरण-पोषण करनेवाले परोपकारी परमात्मा को भक्तिरस के निष्पन्न हो जाने पर हिंसा-शून्य जीवन-यज्ञ में हार्दिक भावना से गुणगान करते हुए बारम्बार पुकारो, उसका स्मरण और उसी की उपासना करो।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२३८. तरणिरित् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम्।।

संसार-सागर को तैरने का इच्छुक तीव्रसंवेगी=अत्यन्त आकुल और व्याकुल.योगी ही योगानुसार उपासना द्वारा मोक्षानन्द का सेवन करता है, अतः हे साधको! आओ, हम सब अनेक नामों द्वारा और सबके द्वारा पुकारे जानेवाले परमात्मा को वेदवाणी द्वारा, स्तुति-वचनों से अपनी ओर झुकाएँ—कृपादृष्टिवाला बनाएँ, जिस प्रकार कोई शिल्पी=बढ़ई उत्तम लकड़ीवाली नेमि को झुकाता है। ज्ञानपूर्वक कर्मों में लगे रहनेवाले हम प्रभुकृपा के पात्र बनते हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२३९. पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः।
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ऽस्माँ अवन्तु ते धियः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप उपासकों द्वारा निष्पादित मधुर उपासनारस को स्वीकार करके हम उपासकों को तृप्त और आनन्दित कीजिए। प्रभो! आप हमारे बन्धु हैं। आप हमें बोध प्रदान कीजिए। हमें इसलिए बोध प्रदान कीजिए कि हम आपके साथ रहने में, आपकी संगति, आपके सन्दर्शन में रहने में हर्ष का अनुभव करें और हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक उन्नति हो। आपकी दी हुई बुद्धियाँ—बोधधाराएँ हमारा रक्षण करें—हमें संसार-समुद्र में डूबने से बचाएँ।

ऋषिः-भर्गः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२४०. त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! मुझे धन नहीं चाहिए। आप धन धन-कामियों को बाँट दें। मैं गौ-कामी और अश्व-कामी भी नहीं हूँ। आप गौएँ उन्हें दे दो जिन्हें गौओं की कामना है और घोड़े उन्हें प्रदान कर दें जिन्हें घोड़ों की चाहना है। परमपूजनीय धनवाले! मैं तो आपको और केवल आपको चाहता हूँ। अपने सेवक के प्रति तो आप ही आइए, मेरे हृदय-मन्दिर में अपना दर्शन दीजिए और अपनी आनन्द-धाराओं की वृष्टि करके मुझे सराबोर कर दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-वसिष्ठः। देवता-मरुतः। छन्दः-बृहती। स्वरः-मध्यमः।

२४१. न हि वश्चरमं च न वसिष्ठः परिमंसते।
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः।।

हे उपासको! सबमें बसनेवाला और सबको बसानेवाला परमेश्वर निचली कोटि के—सबसे पिछड़े हुए साधक का भी त्याग नहीं करता, उसे भी अपनाता ही है। हे मनुष्यो! सर्वसाधारण उपासको! प्राणसाधको! तुममें जो भी परमरस के अभिलाषी हैं, आज वे सब आकर तथा योगसाधना द्वारा समाहित चित्त होकर आनन्दरस का डटकर पान करें।

ऋषिः-प्रगाथः काण्वः। देवता-इन्द्रः। छन्दः-बृहती। स्वरः-मध्यमः।

२४२. मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत।।

हे उपासक मित्रो! तुम परमेश्वर से भिन्न और किसी की स्तुति, प्रार्थना, उपासना मत करो। पाषाण आदि जड़ पदार्थों की पूजा करके अपना हिंसन मत करो—अपना विनाश मत करो। सर्वमनोरथपूरक परमात्मा की ही स्तुति करो। तुम सब मिलकर उपासना-यज्ञ में बारम्बार और लगातार प्राकृतिक पदार्थों के अन्दर प्रभु के माहात्म्य का दर्शन करानेवाली ऋचाओं का गान करो।

अथ द्वितीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः-आंगिरसः पुरुहन्मा। देवता-इन्द्रः। छन्दः-बृहती। स्वरः-मध्यमः।

२४३. न किष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा।।

जो मनुष्य यज्ञों=परोपकार आदि श्रेष्ठकर्मों के अनुष्ठान से अपने-आपको सबके द्वारा प्रशंसित, ज्ञान-सम्पन्न, अत्यन्त देदीप्यमान व सब मलिनताओं को दूर करनेवाला, अपने तेज से किसी से पराजित न होनेवाला, विपत्तियों को धैर्य से सहन करनेवाले राजा के समान और कर्मशीलता द्वारा अपने को सदा उन्नति के मार्ग पर बढ़नेवाला बना लेता है, ऐसे मनुष्य को न तो संसार की कोई शक्ति दबा सकती है और न कोई शक्ति उसका नाश ही कर सकती है।

ऋषिः-मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च। देवता-इन्द्रः। छन्दः-बृहतीः। स्वरः-मध्यमः।

२४४. य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः।
सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विह्रुतं पुनः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सबमें बसनेवाला और सबको अपने अन्दर बसानेवाला, परमैश्वर्यशाली परमात्मा ग्रीवा-अस्थि = हँसली के पूरा-पूरा टूट जाने से पूर्व, अर्थात् यदि गला ही न कट गया हो तो बिना चिपकानेवाले द्रव्य के ही जोड़ों को फिर से जोड़ देनेवाला है। जो कटे अंगों को पुनः यथास्थान जोड़ देनेवाला है, वह परमात्मा ही उपासना करने योग्य है।

ऋषिः–मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२४५. आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये।।

साधक की **हरयः** = विषयों की ओर ले-जानेवाली चित्तवृत्तियाँ जब परमात्मा से मेल करनेवाली हो जाती हैं, तब वे प्रकाशवाली हो जाती हैं। इनके प्रकाशमान होने से शरीर भी ज्योतिर्मय हो जाता है। इस ज्योतिर्मय शरीर-रथ में युक्त सहस्रों और लाखों चित्तवृत्तियाँ हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! उपासनारस को स्वीकार करने के लिए तुझे यहाँ—साधक के शुद्ध, पवित्र हृदय-मन्दिर में ले-आवें।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२४६. आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः।
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप मोर-पक्षी के सदृश कमनीय अपने आनन्द-बिन्दुओं के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में आइए। हमारे जीवन को पाशों से जकड़ लेनेवाले विषय, दुर्गुण, दुर्व्यसन आपको हमारे समीप पहुँचने से न रोकें। धनुर्धारी के समान आप उन विषयों—दुर्गुण, दुर्व्यसन आदि का अतिक्रमण कर हमें प्राप्त होओ। जैसे धनुर्धारी धनुष के द्वारा दुष्ट प्राणियों का वध कर देता है उसी प्रकार आप भी हमारे दुर्गुण और दुर्व्यसनों को नष्ट कर हमें प्राप्त होओ।

ऋषिः–गौतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२४७. त्वमंग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः।।

हे प्राणप्यारे! महा बलशाली परमेश्वर! आप स्वयं प्रकाशमान और प्रकाश देनेवाले हैं। आप बल और प्रकाश प्रदान करके मुझ मरणधर्मा परन्तु अमर होने के इच्छुक उपासक को प्रशंसा का पात्र बनाइए। हे परमपूजित धनवाले! आपसे भिन्न दूसरा कोई भी सुख और आनन्द देनेवाला नहीं है, अतः हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! मैं आपके प्रति स्तुति-वचनों का उच्चारण करता हूँ—आपकी महिमा के गीत गाता हूँ।

ऋषिः–नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२४८. त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत् पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमेश्वर! आप महायशस्वी हैं। आप जीव को सद्‌गुण सञ्चय करने की प्रेरणा देनेवाले और उसे सरल मार्ग पर चलानेवाले हैं। आप समस्त बलों के भण्डार हैं। आप अकेले ही उपासक के काम-क्रोध, राग-द्वेष आदि पाप-वृत्रों का हनन करते हैं। ये वृत्र संख्या में बहुत होने पर भी आपका साम्मुख्य = मुक़ाबिला नहीं कर सकते। आप बिना किसी से प्रेरणा पाये—स्वभावतः सब प्रजाओं का धारण और पोषण करते हैं।

ऋषिः–मेध्यातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ २ ३१२ ३ १ २ ३क २र ३ २
२४९. इन्द्रमिद् देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये।।

देवत्व प्राप्ति के लिए—उत्कृष्ट ज्ञानी बनने के लिए हम ज्ञानरूप परमैश्वर्यवाले परमेश्वर को पुकारते हैं। हिंसा की भावनाओं से शून्य अध्यात्म-यज्ञों की सफलता के निमित्त हम राग-द्वेषादि आसुर भावनाओं के संहारक प्रभु का स्मरण करते हैं। मिलकर भक्ति करनेवाले, विजय के इच्छुक हम उपासक देवासुर-संग्राम में शक्तिपुञ्ज परमेश्वर का आह्वान करते हैं और धन-सम्पत्ति की प्राप्ति और उसके दान के लिए भी परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को पुकारते हैं।

ऋषिः–मेध्यातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
२५०. इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभिस्तोमैरनूषत।।

सबके अन्दर बसने और सबको अपने अन्दर बसानेवाले परमात्मन्! मेरी जो भी स्तुति-वाणियाँ हैं, वे सब आपका ही बखान—गुणगान करती हैं। अग्नि के समान तेजस्वी, शरीर, मन और आत्मा से शुद्ध, पवित्र और मेधावी उपासक स्तुति-गानों द्वारा आपका ही स्तवन करते हैं।

ऋषिः–मेध्यातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
२५१. उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते।
३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव।।

स्तुति के पुञ्जरूप उपासक सदा अत्यन्त मधुर वाणियों का ही उच्चारण करते हैं। संघर्षों में विजय पानेवाले, क्रोध न करनेवाले, आध्यात्मिक धन के धनी, दीन-दुखियों में धन बाँटनेवाले, शरणागतों के रक्षक, मोक्ष की इच्छा करते हुए ये उपासक प्रसन्नता का जीवन बिताते हैं और अभीष्ट स्थानों की ओर जानेवाले रथों के समान अपनी जीवन-यात्रा के पथ पर बड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ते जाते हैं।

ऋषिः–देवातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २र
२५२. यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम्।
३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब।।

जैसे उद्योगशील हिरन प्यास से व्याकुल होकर सुदूर मरुभूमि में पहुँचता है, परन्तु जितना-जितना वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दौड़ लगाता है जल दूर और दूर दीखने लगता है। मृगमरीचिका में जल कहाँ? इसी प्रकार जीव भी आनन्द की प्यास बुझाने के लिए धन और प्रकृति की ओर भागता है, परन्तु उसे आनन्द प्राप्त नहीं होता। ऐसे उपासक को प्रभु कहते है-तू शीघ्र मेरी मित्रता में आ जा, मित्रता में ही क्या मेरे प्रति अपना समर्पण कर दे। परिणामस्वरूप तुझे आनन्दरस भी प्राप्त होगा और तू योगक्षेम की चिन्ता से भी मुक्त हो जाएगा। तू बुद्धिमानों में गिने जानेवाला बन। मेरे साथ मेल कर और जी भरकर आनन्दरस का पान कर।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः-भर्गः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
२५३. शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि।।

हे सब उत्तम शक्तियों और कर्मों के स्वामिन्! हे अशुभ वृत्तियों का संहार करनेवाले प्रभो! परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमने अनुभव कर लिया है कि आप सब रक्षण-साधनों से रक्षा करने में सशक्त और सर्वथा समर्थ हैं। अब हम धन के पीछे नहीं दौड़ेंगे। अब तो हम आपका ही अनुगमन करेंगे—आपके दर्शाये हुए मार्ग पर चलेंगे। आप यशस्वी हैं। आपका अनुगमन कर हम भी यशस्वी बन जाएँगे। आप निवास के लिए आवश्यक धन-सम्पत्ति प्राप्त करानेवाले हैं, अतः आपका अनुयायी बनकर मैं भूखा नहीं मरूँगा।

ऋषिः-रेभः काश्यपः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २
२५४. या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वां असुरेभ्यः।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप सुखों के भण्डार हैं। आपने अपने ही प्राण-पोषण में तत्पर असुरों से जिन शम-दम आदि आध्यात्मिक सम्पत्तियों का अपहरण कर लिया है, इनसे हे ऐश्वर्यशालिन्! अपने उपासकों को बढ़ाइए—उन्हें सुखी कीजिए और वासनाओं को उखाड़ फेंकनेवाले, निर्मल हृदय—देववृत्तिवालों को भी बढ़ाइए—इन्हें भी आनन्दित कीजिए।

ऋषिः-जमदग्निः। **देवता**-आदित्याः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
२५५. प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो।
३ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
वरूथ्ये३वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत।।

(क) हे सत्य के धनी उपासक! तू सबके साथ स्नेह करनेवाले परमात्मा के प्रति हृदयग्राही, वेदोक्त स्तुतिवचनों का जी भरकर गान किया कर। न्यायकारी और अन्तर्यामी, आश्रयों में सर्वश्रेष्ठ आश्रयरूप, हृदय में बसनेवाले, वरण करने योग्य, राजाओं में महाराज परमेश्वर के लिए हे उपासको! तुम सब मिलकर स्तुतिगान किया करो।

(ख) हे सत्य के धनी भक्तो! उपासको! तुम अपने मित्र के लिए, घर में आये अतिथियों के लिए, घर के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लोगों के लिए, श्रेष्ठ भक्तों के लिए और अन्य जो महापुरुष हों उन सबके लिए मधुर वचनों का उच्चारण किया करो जिससे सब प्रसन्न हों।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२५६. अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! श्रेष्ठों में श्रेष्ठ आपको लक्ष्य करके आपके सभी उपासक आपका दर्शनामृत पान करने के लिए विविध स्तुति-वचनों से आपका गुणगान करते हैं। कर्मशील=कर्मयोगी, सम्यक् दृष्टि से सम्पन्न और मेधावी लोग भी निरन्तर आपकी ही स्तुति करते हैं। ज्ञानी लोग भी आप पुरातन पुरुष का ही गुणगान करते हैं।

ऋषिः-नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२५७. प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत।
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा।।

हे प्राणों की साधना करनेवाले उपासको! सर्वमहान्, सर्वशक्तिमान्, परमैश्वर्यशाली परमात्मा के लिए तुम सामगान गाओ और ब्रह्म=अपनी सबसे बड़ी शक्ति मन को उसके प्रति समर्पित कर दो, क्योंकि वह सैकड़ों! प्रज्ञानों और सैकड़ों कर्मोंवाला, विघ्नों=पाप-वृत्रों को नष्ट करनेवाला सैकड़ों पर्ववाले ज्ञान-वज्र द्वारा काम-क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष आदि सब पाप-वासनाओं को कुचल डालता है।

ऋषिः-नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२५८. बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि।।

हे प्राणसाधको! तुम परमैश्वर्यशाली, आनन्दप्रद परमेश्वर के लिए जी भरकर गान करो। यह गायन तुम्हारी वृद्धि का कारण है। यह पाप-वासनाओं का अतिशय विनाशक है। इस गान से नियमितता—युक्त आहार-विहार, सोना-जागना, युक्त-चेष्टा के द्वारा विद्वान् लोग सदा जागरणशील, अमरज्योति परमात्मा को अपने आत्मा में-हृदय-मन्दिर में प्रकट करते हैं।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२५९. इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप हमारे जीवनों में ज्ञान, कर्म और संकल्पशक्ति को सर्वथा भर दीजिए, ठीक उसी प्रकार जैसे पिता पुत्रों को धन और विद्या आदि देता है। हे प्रजाओं द्वारा पुकारे जानेवाले

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रभो! जीवन-यात्रा के कण्टकाकीर्ण मार्ग में आप हमें शिक्षा दो और उस शिक्षा के अनुसार चलने का सामर्थ्य भी। आपके कृपाकटाक्ष से हम जीते-जी आपकी ज्योति को प्राप्त करें—ब्रह्म-साक्षात्कार करें।

ऋषिः-रेभः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२६०. मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्ये।
१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परावृणक्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमारा-अपने उपासकों का त्याग मत कर। अपने आनन्दामृत की मस्ती से मस्त बनाने के लिए आप हमारे हृदय-मन्दिर में विराजिए। प्रभो! आप ही एकमात्र हमारी रक्षा-शरण हैं, आप ही हमारे एकमात्र प्राप्त करने योग्य मित्र हैं, आप ही हमारे प्राप्त करने योग्य लक्ष्य हैं, अतः हे शरणागतवत्सल! आप हमारा त्याग मत कीजिए।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
२६१. वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः।
३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते।।

हे पापनाशक परमेश्वर! हमने आपके निमित्त भक्तिरस का निष्पादन किया है। जैसे जल समुद्र की ओर बहते हैं वैसे ही हम भक्तिरस की तरंग में आपकी ही ओर बह रहे हैं। जिसमें से वासनाओं को उखाड़ फेंका गया है, ऐसे हृदय-आसन को आपके स्वागत के लिए बिछाया हुआ है। प्रभो! परम पवित्र आपके सहस्रधार आनन्द-स्रोतों के अन्दर स्नान करते हुए हम स्तोता आपके आस-पास बैठे हुए हैं—आपसे दूर नहीं जाते, आपसे विमुख नहीं होते।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
२६२. यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! सुसंगठित प्रजाओं में जो ओज होता है, उत्पादक श्रमवाले कृषकों में जो धन और बल होता है तथा अन्नमय आदि पाँच कोशों में और पाँच ज्ञानेन्द्रियों में जो ज्योति है, मननशील, सदाचारी मनुष्यों में जो यश और सदाचार है—वह सब हमें प्राप्त कराइए और धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षरूपी सभी पुरुषार्थों को भी हमें प्राप्त कराइए।

तृतीया दशतिः

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
२६३. सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता।
२ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परम तेजस्विन्! सचमुच आप ही सब सुखों के वर्षक और सर्वकामनाओं के पूरक हैं। सब कामनाओं और कामना करनेवालों के आप केन्द्र हैं—आश्रय हैं। आप ही हमारे—हम उपासकों के रक्षक हैं। 'आप ही सुखवर्षक और कामनापूरक हैं'—ऐसा वेद में आपके सम्बन्ध में सुना जाता है। दूर-से-दूर प्रदेशों में और निकट-से-निकट स्थानों में आप ही सुखों के वर्षक और मनोरथों के पूर्णकर्ता सुने जाते हैं, अतः हम आपको छोड़कर और किसकी शरण में जाएँ।

ऋषिः–रेभः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३१ २
२६४. यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन्।
१ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति।।

हे सर्वशक्तिमन्! पापों को नष्ट करनेवाले प्रभो! क्योंकि आप दूर-से-दूर देश में भी विद्यमान हैं—सम्पूर्ण प्रकृति में ओत-प्रोत हैं और समीप-से-समीप जीवात्मा के भीतर भी विद्यमान हैं, अतः स्वप्रकाशस्वरूप! परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! यह उपासक भक्तिरस की भेंट लेकर आपके स्वरूप पर प्रकाश डालनेवाली वेदवाणियों के द्वारा आपको अपने हृदय-सदन में प्रकट करता है।

ऋषिः–वत्सः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
२६५. अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम्।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा।।

हे उपासक मित्रो! तुम्हारे कल्याण के लिए मैं भक्तिरस की तरंगों से तरंगित होकर, उल्लास में भरकर वेद की वाणियों द्वारा परमेश्वर का गुणगान करता हूँ। मैं उस परमेश्वर का गुणगान करता हूँ जोकि वीर=महापराक्रमी, सर्वप्रेरक और आन्तरिक तथा बाह्य शत्रुओं को कम्पित करके दूर भगानेवाले हैं, महाज्ञानी, वेदों के उपदेष्टा और सर्वज्ञ हैं, ज्ञान-प्राप्त करानेवालों में सर्वोत्तम हैं और सर्वशक्तिमान् हैं। जैसे वेद-वाणी में उपदेश दिया गया है उसी प्रकार तुम भी सर्वप्रसिद्ध, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का जी भरकर, दिल खोलकर गान किया करो।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
२६६. इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये।
३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप हमें वात, पित्त, और कफ इन तीन धातुओं की साम्य-अवस्थावाला नीरोग, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, स्थूल-शरीररूपी घर प्रदान कीजिए। हमारी इन्द्रियों, मन व बुद्धि की उत्तम स्थिति के लिए आप हमें तीन सुरक्षाएँ प्राप्त कराइए। हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञान-प्राप्ति में, कर्मेन्द्रियाँ उत्तम कर्मों में लगी रहें, मन शिवसंकल्पमय बने और बुद्धि विवेकमयी हो। हे इन्द्र! मेरे लिए और मुझ जैसे अन्य आध्यात्मिक यज्ञ करनेवालों के लिए भी ज्योतिर्मय मोक्ष प्रदान कीजिए। अपने कृपा-पात्रों के लिए पाप-वासनाओं और मृत्युरूपी चमकते हुए वज्र को दूर कीजिए। अपने कृपा-पात्रों के लिए ज्ञानरूप वज्र को धारण कीजिए, जिससे इनके काम-क्रोधादि शत्रुओं का संहार हो जाए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-नृमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२६७. श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत।
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिम।।

जैसे सूर्य की रश्मियाँ सूर्य के साथ रहकर सूर्य का उपभोग करती हैं, ऐसे ही तुम सब उपासक परमेश्वर के साथ अनन्यभाव से रहकर परमेश्वर का उपभोग—अनुभव करो—उसके आनन्दरस का पान करो। सब उत्पन्न हुए अर्थात् इस समय वर्तमान और भविष्य में उत्पन्न हानेवाले प्राणी—मनुष्य परमेश्वर द्वारा प्रदत्त भौतिक ऐश्वर्यों और परमानन्दरूप मोक्ष का भोग करें। अपनी सरलता, निश्छलता, श्रद्धा-भक्ति और आत्मतेज से हम भजनीय, परमैश्वर्यशाली परमात्मा को अपने हृदय में धारण करें—उसका साक्षात् अनुभव करें।

ऋषिः-पुरुहन्मा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२६८. न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः।
एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते।।

केवल जीने को ही अभीष्ट धन माननेवाले, भोगों के पीछे मरनेवाले नास्तिक मनुष्य को ज्ञान और आनन्दरूपी धन कभी नहीं मिल सकता। जो परमात्मा की ओर गति करनेवाला और परमात्मा में प्रवेश करनेवाला होकर परमात्मा के साथ युक्त हो जाता है, उसे परमात्मा करुणा और वात्सल्य से, ज्योति और स्नेह से युक्त कर देता है। परमैश्वर्यशाली परमात्मा उसके ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप घोड़ों को ठीक मार्ग पर ले-जाता है। परमेश्वर के आश्रय से सीधा मार्ग और इष्टफल प्राप्त होता है, अन्यथा मनुष्य मार्ग-भ्रष्ट हो जाता है।

ऋषिः-नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२६९. आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम।।

सब सभाओं में, आनन्द-उत्सवों में और देवासुर-संग्रामों में आह्वान करने योग्य परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का ही पूजन करो—उसी का गुणगान करो। स्तुति के अनुसार फल देनेवाले इन्द्र! [जिस रूप में भक्त परमेश्वर के गुणों का स्मरण करते हैं, उसी रूप में अपने जीवन में गुणों को धारण करते हैं।] पाप और अज्ञानरूपी वृत्रों को नष्ट करनेवाले प्रभो! आप अद्भुत शक्तिशाली हैं, अतः हमारे काम-क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष आदि पाप-वृत्रों को नष्ट करके हमारे उपासना-रस के निष्पादन स्थान अन्तःकरण—मन,बुद्धि, चित्त, अहंकार को अपने आनन्दरस से आप्लावित, सराबोर और सुवासित कर दो।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२७०. तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम्।
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि न किष्ट्वा गोषु वृण्वते।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! सबसे निम्न श्रेणी का वसु=धन-रुपया, पैसा, सम्पत्ति आपका ही है, मध्यम वसु=उत्तम स्वास्थ्य को भी आप ही परिपुष्ट करते हो और सर्वोत्कृष्ट ज्ञानरूपी वसु के भी सचमुच आप ही राजा हैं—उसे भी आप ही चमकाते हैं। आप सब प्रकार के धन के स्वामी हैं, परन्तु आश्चर्य यह है कि इन्द्रिय-भोगों में फँसे हुए व्यक्ति आपका वरण नहीं करते। ठीक भी है, इन्द्रियों के विषयों में रमण करनेवाला कोई भी आपका वरण नहीं कर सकता, क्योंकि आप इन्द्रियों के विषय हैं ही नहीं—इन्द्रियों से आपका दर्शन नहीं हो सकता।

ऋषिः–मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२७१. क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः।
अलर्षि युध्म खजकृत् पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः।।

काम-क्रोध और लोभरूपी पाप-गढ़ों को तोड़नेवाले परमेश्वर! आप कहाँ चले गये? इस समय कहाँ हैं? आपका मन तो सभी उपासकों की रक्षा में लगा रहता है। देवासुर-संग्राम में असुरों के साथ युद्ध करनेवाले हे प्रभो! दुरात्माओं के नाशक! आप आइए, मेरे हृदय-मन्दिर में पधारिए। आपके स्तोत्रों के गान से अपना त्राण करनेवाले उपासक आपका गुणगान करते हैं, आपकी महिमा के गीत गाते हैं।

ऋषिः–कलिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहतीः। **स्वरः**–मध्यमः।

२७२. वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम्।
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते।।

हम इस जीवन में आज और कल—सदा ज्ञानरूप वज्रधारी परमात्मा का गुणगान करते हुए उसकी महिमा को बढ़ाते हैं। उस प्रभु की प्राप्ति के लिए आज ही अपने हृदय में निष्पन्न किये गये प्रेम और भक्तिरस को समर्पित करते हैं तथा श्रवण चतुष्टय—श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार द्वारा उसे ध्याते हैं, उसकी आराधना, उपासना करते हैं।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–पुरुहन्मा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२७३. यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे।।

जो परमेश्वर सब पुरुषों का राजा है, सूर्य-चन्द्र और नक्षत्ररूपी रथों द्वारा मानो गमन कर रहा है, जिसकी गति को कोई नहीं रोक सकता, युद्ध करनेवाली सब सेनाओं को परे हटानेवाला, सब मनुष्यों को तारनेवाला, सबसे महान् और काम-क्रोध आदि पाप-वृत्रों का नाशक है, मैं उसी की स्तुति करता हूँ, उसी की महिमा के गीत गाता हूँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-भर्गः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२७४. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि।।

हे शत्रुओं का विद्रावण करनेवाले परमात्मन्! जहाँ कहीं से हमें भय प्राप्त हो—वहाँ-वहाँ से हमें निर्भय कीजिए। हे अनन्त ऐश्वर्यवाले प्रभो! हम आपके ही हैं, आप शक्तिशाली हैं, समर्थ हैं, अतः हमारी रक्षा के लिए द्वेष की भावनाओं को कुचल दीजिए और हिंसा की वृत्तियों तथा पाप-भावनाओं को नष्ट कर दीजिए।

ऋषिः-इरिम्बिठिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२७५. वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम्।
द्रप्सः पुरां भेत्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा।।

हमारे शरीररूपी घरों के स्वामिन्! आप हमारे जीवन-भवनों के दृढ़ आधारस्तम्भ हो। निरभिमान, विनम्र, श्रद्धा-भक्ति-समन्वित उपासकों के कन्धों के रक्षक हो—उनपर आपके वरदहस्त की छाया सदा बनी रहती है, इस प्रकार आप उन्हें पापों से बचाते हैं। आप अपने उपासकों को आनन्दरस पिलानेवाले हैं। जीव के सनातन काल से चलते आनेवाले शरीररूप नगरों का भेदन करनेवाले हैं, शरीरों को नष्ट कर उन्हें मोक्ष प्रदान करनेवाले हैं। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप मननशील ध्यानियों, मितभाषियों—कम बोलेनेवालें के सखा हैं।

ऋषिः-जमदग्निः। **देवता**-सूर्यः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२७६. बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि।
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि।।

हे सूर्य=चराचर के आत्मा परमात्मन्! आप महान् हैं, सचमुच महान् से भी महान् हैं। हे अखण्ड सुख-सम्पत्ति=मुक्ति के स्वामिन्! आप सचमुच महान् हैं। महादानी होने के कारण आप महान् हैं। सत्स्वरूप, सर्वव्यापक आपकी महिमा महान् है। स्तुति करने योग्यों में सर्वश्रेष्ठ-स्तुत्यतम! प्रकाशकों के प्रकाशक, दिव्य गुणों के पुञ्ज! आप अपनी महिमा से महान् हैं।

ऋषिः-देवातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२७७. अश्वी रथी सुरूप इद् गोमां यदिन्द्र ते सखा।
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर्याति सभामुप।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जब उपासक आपका मित्र हो जाता है, तब वह उत्तम कर्मेन्द्रियों-वाला—व्यसन और रोगों से मुक्त होकर स्वस्थ हो जाता है, वह उत्तम शरीररूप रथवाला, उत्तम रूपवाला-कान्तिमान् और शान्तात्मा हो जाता है। इसकी ज्ञानेन्द्रियाँ भी प्रशस्त हो जाती हैं। वह ऐसे जीवन से समवेत होता है जो सदा क्रियाशील होता है और अपने आह्लादक गुणों से ब्रह्म के समान प्रकाश को प्राप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करता है—ब्रह्म के समान प्रकाश को प्राप्त कर ब्रह्म जैसा ही हो जाता है।

ऋषिः-पुरुहन्मा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २र ३ २ ३ १ २र ३ २
२७८. यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमिरुत स्युः।
१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! यदि आपके इस एक द्युलोक जैसे ही सैकड़ों द्युलोक, सैकड़ों भूमियाँ हों और साथ ही सहस्रों सूर्य हों तो भी वे सब आपको व्याप्त नहीं कर सकते, क्योंकि आपका विस्तार अनन्त है। हे वज्रिन्! सारे ब्रह्माण्ड के नियामक और व्यवस्थाक! यह प्रकट हुआ सारा जगत् और द्युलोक तथा पृथिवीलोक भी आपको अपने में नहीं समा सकते। आसीम को ससीम अपने में कैसे व्याप सकते हैं?

ऋषिः-देवातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ ३ २उ ३ २ ३क २र ३ २ ३ १ २
२७९. यदिन्द्र प्रागपागुदग्न्यग्वा हूयसे नृभिः।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! स्व-आत्मा को उन्नति की ओर ले-जानेवाले उपासकों द्वारा पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में—सर्वत्र आप ही पुकारे जाते हो, आपकी ही स्तुति की जाती है, परन्तु आप उस दिशा में ही तो नहीं रहते। आप तो सब दिशाओं में व्याप्त हैं, सर्वत्र व्याप्त होकर सबका पालन-पोषण कर रहे हैं, सबको सुप्रेरणा दे रहे हैं। सब दोषों को दूर करनेवाले प्रभो! जीवन धारण करने के लिए मनुष्य आपको अपने निकट—हृदय-मन्दिर में प्रकट करते हैं।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २र ३ १ २र
२८०. कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति।
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति।।

सबको बसानेवाले परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! स्मरण करने योग्य आपको कौन मनुष्य अपने अनुकूल बनाता है? हे परमपूजित धनवाले! आपको वही उपासना-रसवाला उपासक अपने अनुकूल बनाता है जो अपने उपासना-रस को आपके प्रति समर्पित कर देता है। प्रभो! आपके प्रति की गई श्रद्धा मनुष्य को उस प्रकाश में रखती है, जो उसे सब उलझनों के पार पहुँचा देता है।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-इन्द्राग्नी। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
२८१. इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः।
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ ३ १ २
हित्वा शिरो जिह्वया रारपच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत्।।

हे ऐश्वर्यशाली और प्रकाशस्वरूप प्रभो! बिना पैरोंवाली यह श्रद्धा पैरोंवाली प्रजाओं से पूर्व ही उपासक के हृदय में आ विराजती है—उदित हो जाती है। पैरोंवाले सर्वसाधारण अभी सो रहे होते हैं, उस समय यह श्रद्धा मनुष्य के हृदय में प्रकट हो जाती है। इस श्रद्धा का सिर नहीं है, फिर भी यह उपासक की जिह्वा से बारम्बार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आपका नाम रटाती है और उपासक के जीवन में यह दिन-रात के तीस-के-तीस मुहूर्त आगे और आगे बढ़ती है—उपासक की उन्नति का कारण बनती है।

ऋषिः-बालखिल्याः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२८२. इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः।
आ शंतम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः॥

हे परमैश्वर्यशाली प्रभो! आप हमारे अत्यन्त निकट—हमारे हृदय-मन्दिर में आइए—अपने दर्शन दीजिए। आपकी रक्षण-शक्तियाँ अनन्त हैं, परन्तु मेरे उद्धार के लिए तो अल्प-सी शक्ति ही पर्याप्त है, अतः अपनी परिमित रक्षा-शक्ति के साथ मेरे निकट पधारिए। हे अत्यन्त शान्त! कल्याणतम! सर्वोत्तम बन्धो! आप आइए और मुझे सद्विचारोंवाली तथा कल्याणकारिणी इच्छाओं से युक्त कीजिए।

पञ्चमी दशतिः।

ऋषिः-नृमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२८३. इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम्।
आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम्॥

हे उपासको! इस प्रलोभनपूर्ण संसार में अपनी रक्षा के लिए उस प्रभु की शरण में आओ जोकि जरारहित है, सबको प्रकृष्ट प्रेरणाएँ देनेवाला है, स्वयं किसी से प्रेरणा नहीं लेता, सर्वव्यापक और शीघ्रकारी है, सदाजयशील है, दान देनेवाला तथा स्वार्थशून्य है, सर्वोत्तम रथी है, हिंसारहित है—न हिंसित होता है, न हिंसा करता है, शक्ति को बढ़ानेवाला है, तमो-निवारक और ज्ञानवर्धक है।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२८४. मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन्।
आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि॥

हे पूजनीय परमात्मन्! मेधावीजन आपको हमसे दूर न ले-जाएँ, अपितु सदुपदेश द्वारा आपके सान्निध्य में पहुँचा दें। हमारी अज्ञानता के कारण आप हमसे दूर हो तो भी हमारे उपासना-मन्दिर—हृदय में आइए—अपना साक्षात् दर्शन दीजिए और यहाँ ही उपस्थित रहते हुए हमारी प्रार्थना को सुनिए।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२८५. सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे।
पचता पक्तिरवसे कृणुध्वमित् पृणन्नित् पृणते मयः॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे उपासको ! उपासना-रस को स्वीकार करनेवाले, पाप-वासनाओं के प्रति वज्रधारी परमैश्वर्यशाली परमात्मा के लिए उपासना-रस का निष्पादन करो। परिपक्व करने योग्य चित्तवृत्तियों को अभ्यास-वैराग्य द्वारा साधो, उन्हें निरुद्ध करो। अपनी रक्षा के लिए परमेश्वर को अपना सहायक बना लो। वह सबकी पालना करता है और दीन-दुखियों की पालना करनेवाले व्यक्ति के लिए सुख देता है, उसका कल्याण करता है।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २
२८६. यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे।।

हे प्रभो ! काम-क्रोध आदि के साथ निरन्तर चलनेवाले देवासुर-संग्रामों में, जीवन-संघर्षों में आप हमारी वृद्धि--उन्नति का कारण बनें। हे सहस्रों = अनन्त प्रज्ञानों से युक्त ! अत्यन्त बलशाली, उत्तमता व उत्तमजनों के रक्षक ! आपकी कृपा से मेरा मस्तिष्क ज्ञान से भरपूर हो, मेरी भुजाओं में शक्ति हो और मेरा मन सात्त्विक भावनाओंवाला हो। इसके लिए हम परमैश्वर्यशाली आपको पुकारते हैं जो आप सूक्ष्म द्रष्टा हैं, हमारे गुप्त-से-गुप्त दोषों को भी जानते हैं और उन्हें नष्ट करते हैं।

ऋषिः-पुरुच्छेपः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-बृहती। स्वरः-मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ १ २
२८७. शचीभिर्नः शचीवसू दिवानक्तं दिशस्यतम्।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ २
मा वां रातिरुप दसत् कदा चनास्मद्रातिः कदा चन।।

(क) ज्ञान-ज्योति देनेवाली प्रज्ञा और आनन्दरस देनेवाले कर्म से हमें बसानेवाले हे परमात्मन् ! आप अपने प्रज्ञानों और कर्मों से हमारे दिन को ज्ञान-ज्योति से और रात्रि को आनन्दरस से सींच दो। हमारे लिए आपकी ज्ञान-ज्योति और आनन्दरस का दान कभी क्षीण न हो और हमारा उपासना-रसदान आपके लिए कभी क्षीण न हो। आप हमें आनन्द और ज्योति प्रदान करें और हम अपने हृदय का भक्तिरस आपको समर्पित करें।

(ख) हे प्रज्ञा और कर्म के धनी स्त्री-पुरुषो ! आप अपने प्रज्ञानों और कर्मों से दिन-रात हमें समृद्ध और सम्पन्न करो। तुम दोनों की दान देने की क्रिया कभी क्षीण या नष्ट न हो, अर्थात् तुम सदा दान देते रहो। प्रभु कहते हैं कि मेरे द्वारा दिया हुआ दान तुम्हारे द्वारा चलता रहे, कभी बन्द न हो।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-वरुणः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२८८. यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
आदिद् वन्देत वरुणं विपा गिरा धर्तारं विव्रतानाम्।।

जन्म-मरण के चक्र में पड़ा हुआ संसारी मनुष्य परमात्मा का स्तोता बनकर कभी भी—दुःख में हो या सुख में हो, सम्पत्ति में हो या विपत्ति में सुख-शान्ति के वर्षक परमात्मा की स्तुति किया करे। स्तुति के पश्चात् दुःख, अज्ञान तथा पाप-निवारक और उपासक के जीवन को श्रेष्ठ बनानेवाले, वरण करने योग्य परमेश्वर की बुद्धिमत्ता से—कण-कण में प्रभु की महिमा का अनुभव करते हुए और वेदवाणी के द्वारा वन्दना करे। वह परमेश्वर अहिंसा, सत्य आदि विविध व्रतों को धारण करनेवाले उपासकों का धारण करनेवाला है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-मेध्यातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२८९. पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे।
यः सम्मिश्लो हर्योर्यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः।।

परम पवित्र—'अपापविद्ध' परमात्मा की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करनेवाले हे जीवात्मन्! तू परमात्मा के संग से प्राप्त होनेवाले आनन्दरस के निमित्त अपनी इन्द्रियों की रक्षा कर, उन्हें अनुचित भोगों में मत जाने दे। परमात्मा के आनन्द में मग्न होकर तू उसकी महिमा के गीत गा जो हम सबको मिलानेवाले, एक करनेवाले हैं, जो कान्ति-सम्पन्न—सुन्दर-ही-सुन्दर हैं, सबके स्वामी हैं, ज्योतिर्मय हैं, परमैश्वर्यवाले हैं, न्याय के लिए वज्रधारी हैं और हित-रमणीय ज्ञान प्रदान करनेवाले हैं।

ऋषिः-भर्गः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२९०. उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः।
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत्।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर हमारे आभ्यन्तर—मानस और इस प्रत्यक्ष उच्चारण किये हुए—दोनों प्रकार के वचनों को सुने। अथवा वह अन्तःस्थित परमात्मा हमारे स्तुति और प्रार्थनारूप—दोनों प्रकार के वचनों को सुने और सुनकर वह प्रशस्त ऐश्वर्यवाला, अत्यन्त बलशाली परमात्मा अपनी करुणामयी बुद्धि से हमारे भक्तिरस को स्वीकार करने के लिए हमारे हृदय-मन्दिर में आये।

ऋषिः-मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२९१. महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ।।

(क) हे आनन्दघन! न्यायरूपी वज्रधारी! अनन्त सम्पत्ति के स्वामिन्! मैंने आपको प्राप्त कर लिया है। अब बड़े भारी मूल्य के लिए भी आपको नहीं त्यागा जा सकता। न सहस्र के बदले में, न दस सहस्र के बदले में और न असंख्य धन के बदले में आपको त्यागा जा सकता है।

(ख) जब जीव सांसारिक प्रलोभनों में न फँसकर उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ रहा होता है तो इस जीव के लिए परमेश्वर अद्रिवः = न विदारण करनेवाले होते हैं, परन्तु जब यह परमात्मा को भूलकर प्रकृति की उपासना में लग जाता है तो परमात्मा इसके लिए वज्रिवः = वज्रधारी बन जाते हैं। प्रभु-भक्त कहता है—प्रभो! आप महान् धनराशि के लिए भी मुझसे छोड़े नहीं जाते हो। आमोद-प्रमोद के जीवन के लिए भी मैं आपका त्याग नहीं कर सकता। फूले-फले, पुत्र-पौत्रोंवाले परिवार के साथ संयुक्त रहने के लिए भी मैं आपको नहीं छोड़ सकता। पूरे सौ वर्ष के जीवन के लिए भी मैं आपका त्याग नहीं कर सकता। प्रभो! आप तो अनन्त धन के स्वामी हैं। आप मिले तो सारे ऐश्वर्य तो स्वयं ही मिल जाएँगे।

ऋषिः-मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२९२. वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः।
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! आप मेरे पिता से अधिक श्रेष्ठ हैं तथा उनसे अधिक उत्तम निवास देनेवाले हैं और पालन न करनेवाले भाई से भी आप अधिक श्रेष्ठ हैं। मेरे लिए मेरी माता और आप—दोनों बराबर हैं। आप दोनों मेरे भोजन-छादन की व्यवस्था करते हैं और मेरे कष्टों को दूर करते हैं। हे मेरे हृदयवासी परमेश्वर ! मैं आपकी शरण में हूँ, क्योंकि आप मुझे निवास के लिए—जीवन-यात्रा की सम्पूर्ति के लिए आवश्यक धन देते हो और अध्यात्मिक मार्ग में मुझे सिद्धि—सफलता प्रदान करते हो।

।।यहाँ तीसरा प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ चतुर्थः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
२९३. इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः।
१ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ।।

(क) धारणा-ध्यानादि योग-अंगों के अनुष्ठान से ये उपासना-रस परमैश्वर्यशाली परमात्मा के लिए निष्पन्न किये गये हैं। आसुरी भावों के प्रति वज्रधारी हे प्रभो! हमारी प्रसन्नता और रक्षा के लिए आप इन उपासना-रसों की ओर आइए—इन्हें स्वीकार कीजिए। प्रभो! अपने प्रसाद और अनुकम्पारूपी अश्वों के साथ आप हमारे हृदय-मन्दिर में आइए।

(ख) जीव कहता है—प्रभो! परमैश्वर्यशाली आपकी प्राप्ति के लिए ये सोम=वीर्यकण निष्पादित किये गये हैं। ये सोमकण धारणशक्ति से युक्त हैं। ये शरीर के स्वास्थ्य. मन के प्रसाद और बुद्धि की निर्मलता के कारण बनते हैं। प्रभु कहते हैं—हे जीव! तू सोमकणों को इसलिए धारण कर कि ये तेरे हर्ष का कारण होंगे। हे वज्रहस्त=क्रियाशीलतारूती वज्रधारिन्! तू क्रियाशीलता के द्वारा इनकी रक्षा कर। इनकी रक्षा के लिए तू अपने इन्द्रियरूप घोड़ों से अपने शरीररूप घर में आ, अर्थात् इन्द्रियों का संयम कर इन्हें विषयों में जाने से रोक।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२९४. इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! ये सोम=शरीर में निर्मित होनेवाले वीर्यकण तेरे उल्लास के लिए हैं। इन सोमकणों के रक्षण से शरीर में तेरा निवास उत्तम होगा, तू स्वस्थ और ज्ञानी बनेगा। ये तुझे प्रभु का स्तवन करनेवाला बनाएँगे। हे जीव! तू इस मधुरतम वस्तु सोम का पान कर—इसे अपने शरीर में ही खपा। हमारे द्वारा प्रदत्त इन वेदवाणियों को सुन और इन वाणियों को सुनता हुआ—इनका मनन और चिन्तन करता हुआ अपने-आपको प्रभु के अर्पण करनेवाला बन।

ऋषिः–मेधातिथिमेध्यातिथी. विश्वामित्र इत्येके। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
२९५. आ त्वा३ऽद्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम्।
१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिषमुरुधारामरंकृतम्।।

हे प्रभो! वेदरूप परमैश्वर्यवाले आपसे मैं आज वेदवाणी की भिक्षा माँगता हूँ। उस वेदवाणी की जोकि ज्ञानरूप दुग्ध प्रदान करती है, वेद का अध्ययन करनेवाले का रक्षण करती है. काम आदि वासनाओं को कम्पित

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करनेवाली है—श्रुति का व्यसन हो जाने पर अन्य व्यसनों का अवकाश कहाँ? यह ज्ञान-दुग्ध का पान कराके पालन करनेवाली है। यह सुगमता से दोहन करने योग्य है, अर्थात् इसका समझना कठिन नहीं है। यह विलक्षण है। यह निरन्तर प्रेरणा देनेवाली है। यह विशाल धारण-शक्तिवाली होती हुई हमारे जीवन को सुन्दर बनाती है और हमारे जीवनों को सद्‌गुणों से अलंकृत करती है।

ऋषिः-नोधाः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२९६. न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः।
यच्छिक्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदा मिनाति ते।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! ऊँची-ऊँची पर्वत-मालाएँ, बीहड़ वन और न हटने-हटाने योग्य सीमा प्रदेश आपके मार्ग में रुकावट नहीं बन सकते। मेरे जैसे उपासक को आप जो अध्यात्म धन=ज्ञान-सम्पत्ति देते हैं, आपके उस दान को संसार की कोई भी शक्ति न रोक सकती है और न नष्ट कर सकती है। 'आप छप्पर फाड़कर देते हैं।'

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२९७. क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः।।

जो परमात्मा सर्वव्यापक है उसे चक्षु आदि इन्द्रियों से कौन देख सकता है और कौन जान सकता है? उपासक के भक्तिरस से प्रसन्न होकर—कृपालु होकर वह अपने सामर्थ्य से जीव की अविद्या की नगरियों का विदारण करके, उसकी अविद्या की गाँठों को खोलकर उसे मुक्ति प्रदान कर देता है। भक्तिरस के निष्पन्न हो जाने पर उपासक और परमेश्वर साथ-साथ आनन्दरस और भक्तिरस का पान=स्वीकार करते हैं—ऐसे परमेश्वर को कौन जान सकता है? परमात्मा का सामर्थ्य क्या है—इसे भी ठीक-ठीक कौन जान सकता है?

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२९८. यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि।
अस्माकमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! क्योंकि आप शासक हैं, शिक्षक हैं, मुझे यथार्थ आचरण की शिक्षा देनेवाले हैं, अतः अपने आन्तरिक सदुपदेश से यम-नियम आदि व्रतों के विरुद्ध आचरण करनेवाले पापकर्म, पाप-संकल्प और आसुरी भावों को मेरे हृदय से सर्वथा निकाल दें। पाप के लवलेश से शून्य ऐश्वर्यवाले प्रभो! हमारी अत्यन्त वाञ्छनीय, जीवनके लिए कल्याणकर ज्ञान की किरण को हमारे बसने योग्य हृदय-गृह में खूब बढ़ाइए।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-बहवः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

२९९. त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः।
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमेश्वर! वेदवाणी हमारे जीवन का निर्माण करनेवाली हो। हमारा जीवन वेदमय हो। ब्रह्मणस्पतिः=बुद्धि हमारे लिए परा-तृप्ति की जनयित्री हो। ज्ञानोपार्जन में हमें रस आने लगे। पुत्रों और भाइयों से हमें अदीनता हो—हमें उनके सामने कभी हाथ न फैलाना पड़े। रक्षा करनेवाला हमारा अटल वचन हमारी सदा रक्षा करे, हमें असत्य आदि में गिरने से बचाए।

ऋषिः–बालखिल्याः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३००. कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते।।

(क) सब असुरों का संहार करनेवाले प्रभो! आप व्रत-पालकों की कभी भी हिंसा नहीं करते हैं। आप आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक को प्राप्त होते हैं। हे प्रशस्त धनवाले परमात्मन्! दानशील आपका दान आत्मसमर्पक के समीप और समीप आता जाता है। आपका यह दान बारम्बार और बहुत मात्रा में उसे मिलता रहता है।

(ख) हे इन्द्र! आप हिंसक नहीं है। आप दानशील को प्राप्त होते हैं। जितना-जितना मनुष्य दानशील बनता है, सचमुच उतनी ही समीपता से हे ऐश्वर्यशालिन्! आप उसे प्राप्त होते हैं फिर दान का पुतला बनकर तो यह तुझ देव के साथ संयुक्त हो जाता है—तुझे पा लेता है।

ऋषिः–मेध्यातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३०१. युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः।
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि।।

आसुरी भावों को समूल नष्ट करनेवाले, हे शत्रु-विनाशक परमेश्वर! आप दूर-दूर विषयों में विचरनेवाले हमारे ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप घोड़ों को विषयों से हटाकर हमारे शरीर-रथ में जोत दीजिए। पापशून्य प्रभो! परम तेजस्वी आप हमारे भक्तिरस को स्वीकार करने के लिए अपने महान् प्रकाशों—तेज, ओज, बल, पराक्रम के साथ साक्षात् रूप में हमारे हृदय-मन्दिर में आइए।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३०२. त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः।
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि।।

पाप-वृत्रों के प्रति वज्रधारी हे परमेश्वर! विषयों में न रमनेवाले और आपको अपने अन्दर स्थापित करनेवाले उपासकजन कल=पूर्वकाल में और आज भी आपका ही गुणगान करते रहे हैं। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप मुझ स्तुतिकर्ता की स्तुतियों को इसी जीवन में मुझे साक्षात् दर्शन देते हुए सुनिए और किसी शुभ दिन मेरे हृदय-सदन में आ जाइए—अपना दर्शन दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वितीया दशतिः

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-उषाः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३०३. प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः।
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी॥

सूनरी=उषा=आध्यात्मिक प्रकाश, ज्योतिष्मती प्रज्ञा प्रत्येक ध्यानशील योगाभ्यासी को अपने जीवन में प्रकट होती हुई अनुभूत होती है। इस उषा के प्रकट होने पर उपासक का आलस्य, प्रमाद और संसार-मोह नष्ट हो जाता है। यह मस्तिष्क में प्रकट होती है। महान् महिमावाली यह ज्योतिष्मती प्रज्ञा अपने प्रकाश से अज्ञान-अन्धकार को दूर कर देती है और अलौकिक प्रकाश प्रदान करती है।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३०४. इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः॥

ब्रह्मतेज को धारण करने के अभिलाषी और मोक्ष की कामना करनेवाले हम उपासक हे प्राणापानो! आपको पुकारते हैं, अर्थात् प्राणों की साधना करते हैं। हे प्रज्ञा और शक्तिरूप धनोंवाले प्राणापानो! अपनी रक्षा के लिए—शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ और बौद्धिक दृष्टि से तीव्र बुद्धि होने के लिए हम आपका आह्वान करते हैं—आपकी साधना करते हैं, जीवन में प्राणापान का अभ्यास करते हैं, क्योंकि ये प्राणापान मेरे अन्दर प्रवेश करनेवाले काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि प्रत्येक शत्रु का नाश करते हैं।

ऋषिः-पौर आत्रेयः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३०५. कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः।
घ्नता वामश्नया क्षपमाणोंऽशुनेत्थमु आद्वन्यथा॥

हे प्राणापानो! भोगों के पीछे मरनेवाला पृथिवी पर ऐसा कौन व्यक्ति है जो आपकी महिमा और गौरव को जान सकता है? जीवन को चमका देनेवाले प्राणापानो! आप दोनों को दीप्त करने—प्राणायाम का नियमित अभ्यास करनेवाला साधक आपकी सब दोषों को नष्ट करनेवाली व्याप्ति से शरीर के रोगों को, मन के दोषों को और बुद्धि की मन्दता को नष्ट करता हुआ ज्ञान की किरणों से उसी प्रकार चमकता है, जैसे कोई स्वस्थ व्यक्ति चमकता है, साथ ही वह विलक्षण आध्यात्मिक उन्नति से भी सम्पन्न बन जाता है। प्राणापान का अभ्यासी अभ्युदय और निःश्रेयस—दोनों को प्राप्त करता है।

ऋषिः-प्रस्कण्वः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३०६. अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु।
तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे प्राणपानो! मोक्ष-प्राप्ति के निमित्त आप दोनों का अत्यन्त मधुरतम सारभूत सोम निष्पन्न किया गया है।[यह सोम प्राणापान का इसलिए है कि इन्हीं की साधना से इसकी सुरक्षा होती है।]इस सोम=वीर्य-रक्षण=ब्रह्मचर्य-पालन का उद्देश्य है—ब्रह्म में विचरण—मोक्ष की प्राप्ति। हे प्राणापानो! इस सोम का इस प्रकार पान करो—शरीर में खपाओ कि यह अदृश्य रूप से अन्दर ही अन्दर व्याप्त हो जाए। हे अश्विनीदेवो! आपके प्रति अपना समर्पण करनेवाले को—प्राण-साधना को अपने जीवन का अनिवार्य अंग बनानेवाले को—प्राण में अपान और अपान में प्राण की आहूति देनेवाले को आप शरीर की नीरोगता, मन की निर्मलता, और बुद्धि की तीव्रता आदि रमणीय धन प्राप्त कराते हो।

ऋषिः–मेधातिथिमेध्यातिथी। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
३०७. आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या।
१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत्।।

हे परमेश्वर! मैं सदा भक्तिरस से सनी हुई, आग्रहपूर्ण प्रार्थना-वाणियों से आपसे नाना प्रकार की याचना करता हूँ। प्रभो! उपासना-यज्ञों में बार-बार आपसे माँगते हुए मैं आपको क्रुद्ध न करूँ, परन्तु 'परमात्मा क्रुद्ध हो जाएगा'—इस आशंका से अपने स्वामी से कौन याचना नहीं करता? सब करते ही हैं, क्योंकि आप ही सबका भरण-पोषण करनेवाले हैं और आप ही अन्वेषणीय तथा प्राप्त करने योग्य हैं।

ऋषिः–देवातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
३०८. अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति।
१ २ ३१ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २
उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा।।

जीवात्मा अपने को ही उद्बोधन देते हुए कहता है— अहिंसात्मक उपासना-यज्ञ के रचनेवाले उपासक! तू काम-क्रोध आदि की भावनाओं को परे भगा दे और साधना द्वारा आनन्दरस की धारा बहा दे, क्योंकि आज तो इन्द्रियों का अधिष्ठाता यह जीव परमात्मा के आनन्द-रस का पान करना चाहता है। आनन्द-रस के पान का इच्छुक यह जीव शक्तिशाली ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियरूप घोड़ों को अपने शरीर-रथ में जोतता है और सब विघ्न-बाधाओं, सब वृत्रों, पाप-वासनाओं, अज्ञान-अन्धकारों को दूर करता हुआ अपने घर—ब्रह्मलोक में पहुँच जाता है।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ २ ३२उ ३ २ ३ २ ३ १ २
३०९. अभीषतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पुरूवसुर्हि मघवन् बभूविथ भरेभरे च हव्यः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप मेरे बड़े भाई हैं। सदाचारी और सन्मार्गगामी मैं आपका छोटा भाई हूँ। आप परमात्मा हैं, मैं आत्मा हूँ। आप इन्द्र हैं, मैं उपेन्द्र हूँ। आप मुझे अभीष्ट मोक्षरूपी धन प्रदान कीजिए। हे प्रशंसनीय धनवाले! आप महाधनी हैं। आपके भण्डार में किसी वस्तु की कमी नहीं हैं, अतः प्रत्येक भरण-पोषक के अवसर पर, प्रत्येक जीवन-संर्घष में, प्रत्येक निर्बलता मे, शक्ति के ह्रास में शक्ति—प्राप्ति के लिए, अपनी जीवन-बैटरी को पुनः भरने, रिचार्ज (Recharge) करने के लिए मैं आपको पुकारता हूँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ ६ ३ १ २ ३ १ २र
३१०. यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जितने ज्ञान, धन, ऐश्वर्य के आप स्वामी हैं यदि मैं भी उतने ऐश्वर्य का स्वामी बन जाऊँ तो यह निश्चित है कि मैं वह सारा ऐश्वर्य स्तोता को दे डालता, उस ऐश्वर्य से उसका धारण-पोषण करता। हे समस्त ऐश्वर्यों के देनेवाले! मैं पाप के लिए और पापीजनों के लिए कभी न देता। प्रभो! आप पापी को मत दो परन्तु अपने धर्मात्मा उपासक को तो विविध ऐश्वर्यों से भरपूर कर दो।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
३११. त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप देवासुर-संग्रामों में स्पर्धापूर्वक संग्राम करनेवाली सब काम आदि वृत्तियों को, आसुरी भावों को पराभूत करते हैं। आप सब अशुभों के विनाशक हैं और शुभ गुणों के विकासक हैं। आप आत्मा पर घेरा डालनेवाली कुवासनाओं को नष्ट करनेवाले हैं। प्रभो! आप हमारी हिंसक-वृत्तियों को नष्ट कर दीजिए।

ऋषिः–नोधाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २र ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
३१२. प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षित।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप द्युलोक के स्थानों अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि में विद्यमान होकर और उन्हें अतिक्रान्त करके उनसे भी बहुत दूर तक वर्तमान हैं। ऐसे सर्वव्यापक आपको अन्तरिक्ष और पृथिवीलोक व्याप्त नहीं कर सकते। यह सारा ब्रह्माण्ड तो आपके एक अंश में पड़ा हुआ है। आप सारे ब्रह्माण्ड का अतिक्रमण करके उसका वहन करते हैं, उसे नियम और व्यवस्था में रखते हुए उसका पालन और पोषण करते हैं।

तृतीया दशतिः

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २
३१३. असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा न स्तोममन्धसो मदेषु।।

हमने इन्द्रियों को सत्पथगामी बनानेवाला दिव्य भक्तिरस निष्पन्न किया है। परमैश्वर्यशाली परमेश्वर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

इस भक्तिरस के साथ स्वभाव से ही संयुक्त होता है। हृदय में अभिव्याप्त हे हृदय-वासिन्! हम श्रेष्ठ कर्मों द्वारा, भक्ति द्वारा आपको अपने हृदय में उद्बुद्ध करते हैं आपकी कृपा के लिए आपको अपनी ओर उन्मुख करते हैं। भक्तिरस के आनन्द में मग्न होकर गाये जाते हुए हमारे स्तुति-वचनों को आप सुनिए और हमारा कल्याण कीजिए।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३१४. योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि।
असो यथा नोऽविता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः॥

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप द्वारा प्रदत्त मृन्मय गृह (मिट्टी के घर) में आपके बैठने के लिए हृदयरूपी आसन तैयार किया है। दुर्गुण, दुर्व्यसन और वासनाओं को निकालकर आपके बैठने के लिए इसे शुद्ध, पवित्र बना दिया है। विषयों में न रमनेवाले, अपने को सदा उन्नति-मार्ग पर ले-चलनेवाले मनुष्यों द्वारा बार-बार पुकारे जानेवाले प्रभो! आप हमारे उन निर्मल हृदयों में पधारिए—अपना दर्शन दीजिए जिससे आप हमारे रक्षक बन जाएँ और हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक हर प्रकार की वृद्धि करनेवाले हों। प्रभो! हमारे योगक्षेम के लिए हमें निवास के लिए आवश्यक सब वस्तुएँ प्रदान कीजिए और अपने आनन्दरस से हमारे जीवन को परितृप्त तथा उल्लासमय बनाइए।

ऋषिः-गातुः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३१५. अदर्दरुत् समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाँ अरम्णाः।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद्दानवान् हन्॥

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप उपासक के मस्तिष्क को खोल देते हैं, जिससे इसके जीवन में ज्ञान-प्रवाह फूट पड़ते हैं, जो दानव वृत्तियों को नष्ट कर देते हैं। आप इन्द्रियों को लौकिक विषयों से विमुक्त कर देते हो और उपासक को बुरी तरह जकड़नेवाले विषयरूप समुद्रों—जल-प्रवाहों को बन्द कर देते हो। आप दीर्घकाल से सिञ्चित कर्मराशि को उखाड़ फेंकते हो, महान् पर्वों = ग्रन्थियोंवाली अविद्या को भी उखाड़ फेंकते हो। इस प्रकार जन्म-मरण के चक्र को सदा के लिए बन्द करके मोक्ष प्रदान कर देते हो।

ऋषिः-पृथुर्वैन्यः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३१६. सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्तुविनृम्ण वाजम्।
आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्याम त्वोताः॥

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हम उपासना-रस निष्पन्न करने के उद्देश्य से आपकी स्तुति करते हैं। हे शक्तिमन् प्रभो! हम मोक्ष-प्राप्ति की इच्छा से आपकी स्तुति करते हैं। आप हमें वह अमूल्य ज्ञान-धन प्रदान कीजिए, जिसकी हममें न्यूनता है अथवा हमें वह भद्र = कल्याण प्रदान कीजिए, जिसे आप चाहते हैं। प्रभो! आपसे सुरक्षित होकर हम अपनी शारीरिक और आत्मिक शक्तियों द्वारा बाह्य और आन्तरिक शत्रुओं का पराभव कर सकें।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–सप्तगुः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३१७. जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम्।
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिंदाः।।

सब सम्पत्तियों के स्वामिन्! परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! निवास के लिए आवश्यक लौकिक और आत्मिक सम्पत्ति चाहते हुए हम आपके उत्साहवर्धक और दानशील वरदहस्त का आश्रय लेते हैं। हे विक्रमशील! काम-क्रोध आदि आसुर वृत्तियों को शीर्ण करनेवाले प्रभो! हम आपको पृथिवियों, वेदवाणियों और इन्द्रियों के स्वामी के रूप में जानते हैं। आप हमें अलौकिक, आनन्दवर्षक धन प्रदान कीजिए

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३१८. इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः।
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः।।

दैवी और आसुरी वृत्तियों के संग्राम में मुमुक्षुजन परमात्मा को पुकारते हैं। जब ये मुमुक्षु उन काम-क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष आदि शत्रुओं से पार होने के निश्चयवाली बुद्धियों को अपने में युक्त करते हैं, अर्थात् इनपर विजय पाने का निश्चय कर लेते हैं तब भी वे अपनी सहायतार्थ परमेश्वर को पुकारते हैं। वे प्रभु शूर हैं—इन वासनाओं को शीर्ण करनेवाले हैं। वे ही शक्ति प्रदान कर विजय प्राप्त करानेवाले हैं और यशस्वीजनों को चाहनेवाले हैं। प्रभो! आप हमें उपासक-जनों के संघ का भागी बनाइए, हम उपासकों के सत्संग में रहें।

ऋषिः–गौरिवीतिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३१९. वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्या३स्मान्निधयेव बद्धान्।।

गतिशील, उत्तम प्रकार से अपना पालन और पूरण करनेवाले, परमात्मा की संगति के प्रेमी, दिव्य दृष्टि-सम्पन्न उपासक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के समीप बैठते हैं और उससे याचना करते हुए कहते हैं—हे प्रभो! हमारे अज्ञान-अन्धकार के परदे को परे हटा दीजिए। हमारे नेत्रों को ज्ञान के प्रकाश से पूर्ण कीजिए और पक्षियों की भाँति संसार-जाल में बँधे हुए हमें मुक्त कर दीजिए।

ऋषिः–वेनो भार्गवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३२०. नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम्।।

दुःखरहित मोक्षलोक में उत्तम प्रकार से मुक्तात्माओं का पालन और पूरण करनेवाले, जीवात्मा के समीप उपस्थित तुझ ऐश्वर्यशाली परमात्मा की हृदय से कामना करते हुए हम उपासक आपका दर्शन—साक्षात्कार करें। उस परमात्मा का साक्षात्कार करें जोकि ज्ञान प्राप्त करानेवाले हैं, वरणीय हैं, आनन्द प्राप्त करानेवाले हैं, यम-नियमों के पालक उपासक के हृदय-सदन में रहनेवाले हैं,शक्ति देनेवाले हैं और सबका भरण-पोषण करनेवाले हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषि:-बृहस्पतिर्नकुलो वा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
३२१. ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
२ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ज्ञानस्वरूप परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में प्रथम उत्पन्न होनेवाले ब्रह्माण्ड=सौरमण्डल को प्रकट किया। उसी परमेश्वर ने सीमा की साधन दिशाओं को और पृथिवी, चन्द्रमा आदि लोकों को पृथक्-पृथक् व्यक्त—प्रकट किया—रचा। अन्तरिक्ष में उत्पन्न हुए विविध स्थानों में स्थित नक्षत्रगणों को, जो इस ब्रह्म की उपमा रूप हैं, भी प्रकट किया। उसी ब्रह्म ने स्थूल और सूक्ष्म जगत् की ज्योति अर्थात् प्रकृति को भी विवृत=प्रकट किया। ऐसे शक्तिशाली परमात्मा की उपासना करनी चाहिए।

ऋषि:-सुहोत्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३२२. अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचांस्यस्मै स्थविराय तक्षुः।।

उपासक लोग उस परमपूजनीय, वीर=शत्रुओं को कम्पित करनेवाले, अत्यन्त बलशाली, शीघ्रकारी, ज्ञानस्वरूप, दुष्टों के लिए वज्रधारी, स्थिर, कूटस्थ, निर्विकार परमात्मा के लिए अपूर्व रचना-कौशल वाले— सर्वश्रेष्ठ शब्दों से जितना अधिक-से-अधिक सम्भव है उतना, ब्रह्म का प्रतिपादन करनेवाले, अत्यन्त मधुर स्तुति-वचनों को घड़-घड़कर तैयार करते हैं।

चतुर्थी दशतिः

ऋषि:-द्युतानः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
३२३. अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदीयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः।
२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नीहितिं नृमणा अधद्राः।।

विषय-वासनारूपी समुद्र में डूबा हुआ व्यक्ति ज्ञान की धाराओंवाली नदी से दूर ही रहता है। यह विषय-प्रलोभनों में इधर-उधर भटकता ही रहता है, क्योंकि यह सहस्रों वासनाओं से आकृष्ट होता रहता है। कभी विवेक जाग्रत् होने पर जब मनुष्य विषय-वासनाओं से ऊपर उठने का संकल्प लेता है तो अपने ज्ञान और सामर्थ्य के अनुसार पुरुषार्थी बननेवाले इस व्यक्ति को शत्रु-संहारक परमेश्वर वासनाओं के आक्रमण से बचा देते हैं। जीव के प्रयत्न करने पर, नर बनकर कर्म करनेवालों पर कृपा-दृष्टि करनेवाले प्रभु मनुष्य का वध कर देनेवाली इन पाप-वासनाओं को दूर भगा देते हैं।

ऋषि:-द्युतानः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
३२४. वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे जीवात्मन्! पहले सारी इन्द्रियाँ तेरी मित्र थीं, अतः अशुभ मार्गों में नहीं जाती थीं, परन्तु पाप= दुराचाररूपी सर्प ने ऐसी फुँकार मारी कि वे सब परे भागती हुई तुझे छोड़ गईं—शत्रुपक्ष में जा मिलीं। यदि तुझे अपना कल्याण अभीष्ट है तो हे इन्द्रियों के अधिष्ठता जीवात्मन्! तू आज ही=अतिशीघ्र प्राणों के साथ मित्रता कर—प्राणसाधना कर तभी तू संघर्ष करती हुई सभी पाप-वासनाओं पर विजय प्राप्त करेगा।

ऋषिः–बृहदुक्थः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
३२५. विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार।
३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २र
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान।।

चन्द्रमा के समान सुन्दर शिशु, कुछ बड़ा होने पर नाना प्रकार की चेष्टाएँ करनेवाला, फिर पूर्ण युवक बनने पर अनेक व्यक्तियों की उत्कण्ठा का केन्द्र। [उठती हुई जवानीवाला व्यक्ति सबके आकर्षण का केन्द्र बन जाता है], ऐसे सुन्दर युवक को भी बुढ़ापा निगल जाता है। हे मनुष्यो! जीवन और मृत्यु के रहस्य को जानने के लिए तुम परमात्मा के कलाशिल्प को देखो! उसकी महती शक्ति से जो कल अच्छी प्रकार जी रहा था, श्वास ले रहा था, वह आज मर गया। जो कल मरा था वह आज फिर श्वास लेने लगा [पुनर्जन्म लेकर]।

ऋषिः–द्युतानः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
३२६. त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र।
३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ १२ ३ १२
गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः।।

हे शत्रु-संहारक परमेश्वर! यह सत्य है कि जब आप उपासक के हृदय में प्रकट हो जाते हो, तब जिन सात दुर्गुणों—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मद और मात्सर्य—का कोई भी मारनेवाला नहीं था आप इनके शत्रु=निहन्ता बन जाते हो, अपने भक्त के सभी शत्रुओं का शातन=संहार कर देते हो। हे प्रभो! गूढ़ प्रकृति के गर्भ में छिपे हुए द्युलोक से लेकर पृथिवीलोक तक—सभी लोक-लोकान्तरों को आपने ही प्रकट किया है। सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् आपके नियम और व्यवस्था में रहनेवाले लोक-लोकान्तरों को आपने ही रमणीयता प्रदान की है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २
३२७. मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभं स्थिरप्स्नुम्।
३ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्युरिन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपको चाहनेवाला मैं आपकी स्तुति=गुणगान करता हूँ। कैसे हैं आप? अपने भक्तों को धृति-क्षमा आदि लक्षणयुक्त धर्म के साथ निरन्तर जोड़नेवाले, दुष्टों के लिए वज्रधारी, श्रेष्ठों के लिए रक्षासाधन-सम्पन्न, क्रोध आदि दुर्गुणों को भून डालनेवाले, बहुदानी, सर्वपूज्य, आनन्दामृत की वृष्टि करनेवाले, कामनाओं के पूरक, अत्यन्त बलशाली, सदा एकरस रहनेवाले, नित्य, अचल, प्रकाशस्वरूप, विघ्न-बाधाओं को नष्ट करनेवाले और पवित्र हैं। आप सबके स्वामी हैं और सबको संसार-सागर से पार उतारनेवाले हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिपदा विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३२८. प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः॥

हे उपासको! तुम अपने उत्कर्ष के लिए, संसार में महान् बनने के लिए परमपूजनीय, सर्वतो महान्, प्रकृष्ट ज्ञानवान्, सर्वज्ञ परमेश्वर के लिए अपने हृदय की सम्पूर्ण श्रद्धा–भक्ति उँडेल दो–समर्पित कर दो। प्रकृष्ट ज्ञान-प्राप्ति के लिए कल्याणी मति का सम्पादन करो। जीवन में सदा उत्तम सोचो, उत्तम विचारो, शिवसंकल्प ही करो। हे प्रजापालक! मनुष्यों की कामनाओं के पूरक प्रभो! आप अपनी मानवी प्रजा पर दया करो, इनकी रक्षा करो।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३२९. शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानि॥

हृदय में निरन्तर होनेवाले देवासुर-संग्राम में विजय-प्राप्ति के लिए हम उपासक शत्रुनाशक, उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का आह्वान करते हैं जो आनन्दस्वरूप, सब प्रकार की सम्पत्तियों के स्वामी, ज्ञान के भण्डार, सर्वश्रेष्ठ और महान् नेता, भक्तों की प्रार्थना सुननेवाले, दुष्टों को दण्ड देनेवाले, संग्रामों में हमारी = भक्तों की रक्षार्थ पापी तथा पाप-भावनाओं का हनन करनेवाले और सभी प्रकार के धनों के विजेता हैं–सभी प्रकार के धन उसी के अधीन हैं।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३३०. उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ।
आ यो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि॥

हे परमात्मा में बसनेवाले उपासक! तू ज्ञान, यश और श्री की प्राप्ति के लिए वेदमन्त्रों का उच्च स्वर से उच्चारण कर। यज्ञों में उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की उपासना कर, जो अपने महान् सामर्थ्य से सारे लोक-लोकान्तरों का, सारे ब्रह्माण्ड का विस्तार करता है–सबकी रचना करता है और जो मुझ जैसे क्रियाशील उपासक के वचनों को ध्यानपूर्वक सुनता है।

ऋषिः–गोरिवीतिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३३१. चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात्।
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु॥

सर्वव्यापक परमेश्वर का सृष्टि-चक्र अर्थात् जीवन-मरण और जीवों को उनके कर्मों का फल प्रदानरूप चक्र प्रजाओं में सुचारु रूप से चल रहा है। इस सृष्टि-चक्र के द्वारा परमेश्वर इस प्रजासमूह के लिए मधुर जल

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

की धाराएँ प्रवाहित कर देता है। पृथिवी पर प्रवाहित की गई इन जल-धाराओं से वह गौओं में दूध का और ओषधियों में रस का आधान करता है।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–अरिष्टनेमिस्ताक्ष्यः। **देवता**–ताक्ष्यः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ २ ३१ २ ३१२ ३१२ ३२३ १२
३३२. त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम्।
१ २ ३१२३ २ ३ २३ १ २३ १ २
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये ताक्ष्यमिहा हुवेम।।

हम सब उपासक एक-साथ मिलकर इस जीवन में अपने कल्याण के लिए उस सुप्रसिद्ध परमेश्वर को उत्कट प्रेम और श्रद्धा-भक्ति से पुकारते हैं, जो परमेश्वर ज्ञान, बल और अन्नों का स्वामी, विद्वानों से पूजित, अत्यन्त सहनशील, ग्रह-नक्षत्र और शरीररूप रथों का सञ्चालक, अबाधित संकल्पवाला, सबको सुमार्ग में चलानेवाला, दुःखों का वज्र के समान नाश करनेवाला, आसुरी भावों पर विजयशील सबका पालनकर्ता, शीघ्रकारी, अत्यन्त वेगवान् और सर्वव्यापक है।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २ ३१ २ ३ २३२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
३३३. त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
३ २उ ३ १ २ ३१ २र ३ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः।।

वासनाओं के साथ होनेवाले प्रत्येक संग्राम में और उपासना आदि शुभ अवसरों पर मैं परमेश्वर का आह्वान करता हूँ। मैं काम-क्रोध आदि शत्रुओं का विदारण करके अनिष्टों से बचानेवाले, सब शुभसंकल्पों को पूर्ण करके तृप्त करनेवाले, सुगमता से बुलाये जानेवाले, पराक्रमशाली, दुष्टों का संहार करनेवाले, सर्वसमर्थ और सबके द्वारा पुकारे जाने योग्य परमेश्वर को अपनी रक्षा और सहायता के लिए पुकारता हूँ। ज्ञान धन-सम्पन्न परमात्मा हमारे मनोभाव–प्रार्थना को स्वीकार करे, साथ ही हममें दान की वृत्ति भी उत्पन्न करे [हु दाने]।

ऋषिः–वसुकृद् वासुक्रो विमदो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २
३३४. यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यां३ विव्रतानाम्।
१ २र ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२ ३ १ २र
प्र श्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधा भुवद्वि सेनाभिर्भयमानो वि राधसा।।

हम सब उपासक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की उपासना करते हैं, उसके प्रति अपना सर्वस्व समर्पित करते हैं। जो परमात्मा रक्षा करने में कुशल, विविध कर्म करनेवाली इन्द्रियों के रथ–शरीर-रथ का सञ्चालक है, वह सूर्य की किरणों द्वारा रोगों को निवृत्त करता है। वह द्युलोक में सूर्य-चन्द्र और नक्षत्र आदि का धारण-पोषण करनेवाला है। वह अपनी नाना प्रकार की शक्तियों द्वारा दुष्टों के धन का अपहरण करके पापी जनों में भय उत्पन्न करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३३५. सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम्।
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः।।

पापियों-दुराचारियों का संहार करनेवाले, पापों को बुरी तरह कुचल डालनेवाले, सन्मार्ग में चलानेवाले, सर्वमहान्, अनन्त–जिसका कोई पारावार नहीं, सुखवर्धक, अतिशोभन शक्तिरूप वज्रधारी परमेश्वर की हम स्तुति करते हैं, उसका यशोगान गाते हैं। वह परमात्मा पाप-वासनाओं और अज्ञान का नाशक है, अपने उपासक को मोक्षसुख और सर्वसाधारण जनों को अन्न, बल और शक्ति देनेवाला है। वह सर्वधन-सम्पन्न और धनों का दाता है तथा कार्यों का सुसाधक है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३३६. यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा।
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्राभी ष्याम वृषमणस्त्वोताः।।

जो मनुष्य क्रोध में भरकर मारने की इच्छा से हमपर प्रहार करता है, उद्यत = उठी हुई तलवारों से युक्त हुआ अथवा धन, बल या ज्ञान के गर्व से अभिमानी बना हुआ अथवा हिंसक वृत्तिवाला बना हुआ हमपर आक्रमण करता है, हमारी जड़ों को काटता है तो हे शत्रु-संहारक परमेश्वर! आप उस-उसको क्षीण कर दें, नष्ट कर दें। हे प्रभो! आपके द्वारा सुरक्षित हम भी युद्ध के द्वारा, शक्ति के द्वारा, उत्साहभरे मन से उस-उस शत्रु को नष्ट करनेवाले हों।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३३७. यं वृत्रेषु क्षितय स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते।
यं शूरसातौ यमपामुपज्मन् यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः।।

पाप और विघ्न-बाधारूपी शत्रुओं के साथ युद्ध करते हुए मनुष्य जिसे अपनी सहायता के लिए पुकारते हैं, योगाभ्यासरत योगियों में तीव्रसंवेगी = अत्यन्त आकुल और व्याकुल योगी जिसका आह्वान करते हैं, संग्रामों में विजय की कामना करते हुए शूरवीर योद्धा जिसे बुलाते हैं, जलों और जलों द्वारा उत्पन्न होनेवाली उपज = फसल के लिए किसान लोग जिससे प्रार्थना करते हैं, मेधावी जन ज्ञान-प्राप्ति के लिए जिसकी स्तुति करते हैं–हे मनुष्यो! वह इन्द्र है, सर्वैश्वर्यशाली परमेश्वर है।

ऋषिः–विश्मामित्रः। **देवता**–इन्द्रापर्वतौ। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३३८. इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः।
वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता।।

हे परमैश्वर्यसम्पन्न और सर्वपालक परमेश्वर! आप संसाररूपी महान् रथ के द्वारा हमें प्रिय = खाने में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रुचिपूर्ण और सात्त्विक अन्न प्राप्त कराइए। हमें उत्तम वीर सन्तान दीजिए। हमारे शरीरों में ऐसी शक्ति और नीरोगता दीजिए कि हम वीर सन्तानों को जन्म देनेवाले बनें। ऐश्वर्य और पालकत्व शक्ति के भण्डार प्रभो! नाना प्रकार के भक्ति और ज्ञान-यज्ञों में आप हमारी श्रद्धा-प्रेमरूपी भावभरी भक्ति-भेंटों को स्वीकार कीजिए। हमारे प्रार्थना-वचनों और श्रद्धा से प्रसन्न होकर हमें सब प्रकार से बढ़ाइए।

ऋषिः-रेणुः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२ ३ १ २
३३९. इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रैरयत् सगरस्य बुध्नात्।
१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम्।।

जैसे धुरे के द्वारा रथ के दो पहियों को थामा जाता है, उसी प्रकार जिसने अपनी शक्तियों द्वारा पृथिवी और द्युलोक को सब ओर से थामा हुआ है, उस परमैश्वर्यशाली, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के लिए उपासक ब्रह्ममुहूर्त में निरन्तर स्तुति और प्रार्थना करता है तथा प्रार्थना के साथ उसकी पूर्ति के लिए मनोयोग से कर्म भी करता है।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २
३४०. आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरू चिदर्णवां जगम्याः।
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अस्मिन् क्षये प्रतरां दीद्यानः।।

हे परमात्मन्! समान धर्मवाले उपासकजन मित्रभाव से जब आपको प्राप्त कर लेते हैं, तब वे मित्रभाव, पितृभाव आदि रूपों से आपको भजते हैं—आपकी उपासना करते हैं। आपकी उपासना से आनन्द-सागर आपमें डुबकियाँ लगाते हुए वे परिपूर्ण मनोरथ हो जाते हैं। हे प्रभो! पिता जैसे अपने नाति को गोद में लेकर उसे अपनी सम्पत्ति सौंप देता है, इसी प्रकार आप भी मुझ नाती को अपनी गोद में लेकर अपना आनन्दामृत पिला दो। हे विधातः! मेरे हृदय में अत्यन्त प्रकाशित होते हुए मुझे अपना लो।

ऋषिः-गोतमः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

२ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
३४१. को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून् य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात्।।

कौन तेजस्वी और कर्मशील पुरुष आज कठिनता से हटाई जा सकनेवाली इन्द्रियों को कुमार्ग से हटाकर वेदमार्ग के धुरे में जोड़ता है? कौन वीर रूप आदि विषयों में जानेवाली इन इन्द्रियों के मुख में लगाम देकर इन्हें सुखदायी बनाता है? जो वीर जीवन में इनकी शुभ प्रवृत्ति का लाभ उठाता है, वही संसार में वास्तविक जीवन धारण करता है, उसी का जीवन सफल है, अन्य व्यक्ति तो मृतवत् ही हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ द्वितीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३४२. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे।।

हे सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् परमात्मन्! सामगान करनेवाले गायक सामगानों द्वारा आपकी प्रशंसा करते हैं—आपके गौरव का गान करते हैं और वासनाओं से अपनी रक्षा करते हैं। ऋग्वेदी विद्वान्, वैज्ञानिकगण कण-कण में आपकी महिमा को देखते हुए अर्चना करने योग्य आपकी ही उपासना करते हैं और यज्ञों के करनेवाले ब्रह्मादि ऋत्विज् जगत्-सृष्टा आपकी आज्ञा का पालन करके आपको अपने वंशधर—प्रथम पुरुष के समान उच्चकोटि पर मानते हैं—आपको सर्वोच्च घोषित करते हैं।

ऋषिः–जेता माधुच्छन्दसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३४३. इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम्।।

ऋग्यजुः सामरूप समस्त वेदवाणियाँ आकाश के समान सर्वव्यापक, रथियों में महारथी—रथियों=जीवों के सर्वोत्तम सारथि, अन्न, बल, ज्ञान के स्वामी, सज्जनों के पालक और रक्षक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की महिमा का गान करती हैं।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३४४. इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्।
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! मेरे द्वारा निष्पन्न इस सर्वश्रेष्ठ, अभौतिक, हर्षकर उपासना-रस को स्वीकार कीजिए। सत्यप्रिय मेरे हृदय में उत्पन्न हुई उपासना-रस की धाराएँ आपके प्रति बह निकली हैं।

ऋषिः–अत्रिः। **देवता** इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३४५. यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः। राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हे आश्चर्यस्वरूप! हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! इस जीवन में आपसे दान में प्राप्तव्य जो धन मुझे अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, वह धन, सिद्धि—योग की विभूतियाँ, मोक्षैश्वर्य मुझे प्रदान कीजिए। हे वसुओं—धनों को प्राप्त करानेवाले प्रभो! जैसे कोई दानी दोनों हाथों से भर-भरकर दान देता है, ऐसे ही आप भी उदारतापूर्वक हमें दान दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–तिरश्चीः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३४६. श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति। सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जो आपकी उपासना करता है, उस अन्तर्मुख यात्रा करनेवाले, ध्यानशील योगी की पुकार को, निवेदन को आप सुनिए। हे प्रभो! आप महान् कृपालु हैं, अतः हमारे जीवन को उस धन से पूर्ण कीजिए जो धन हमें शक्तिशाली बनाता है और प्रशस्त ज्ञानेन्द्रियोंवाला–संयमी बनाता है।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३४७. असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि।
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः।।

हे सर्वश्रेष्ठ बलयुक्त परमेश्वर! मेरे दुर्व्यसनों को कुचल डालनेवाले प्रभो! हमने उपासना-रस निष्पन्न किया है। आप इसे स्वीकार करने के लिए हमारे हृदय-मन्दिर में आइए। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमारा यह उपासना-रस और इन्द्रियों का अधिष्ठाता मन आपके साथ इस प्रकार सम्बद्ध हो जाए जैसे सूर्य अपनी किरणों के द्वारा पृथिवीलोक के साथ सम्बद्ध हो जाता है।

ऋषिः–काण्वो नीपातिथिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३४८. एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम्। दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप अपनी दुःखों का हरण करनेवाली और सुख प्राप्त करानेवाली शक्तिधाराओं के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में आइए– अपना साक्षात् दर्शन दीजिए। आपकी उपासना के रसीले बिन्दुओं और परा तथा अपरा विद्या के ज्ञान-कणों का संग्रह करनेवाले उपासक की शोभन स्तुतियों को, प्रार्थना-वचनों को आप ध्यानपूर्वक सुनिए। हे प्रकाशधनवाले और जीवों को प्रकाश में बसानेवाले परमात्मन्! आप मोक्षधाम का शासन करनेवाले हैं, अतः आप मुझे भी मोक्षधाम में पहुँचा दीजिए।

ऋषिः–तिरश्चीः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३४९. आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः। अभि त्वा समनूषत गावो वत्सं न धेनवः।।

हे वेदवाणियों के द्वारा वन्दनीय प्रभो! योग-साधनाओं में, उपासना-प्रसंगों में हमारे द्वारा उच्चारित वेदवाणियाँ वेगवान् रथारोहियों के समान आपकी ओर प्रवाहित हो रही हैं। जैसे अश्वारोही गन्तव्य स्थान पर पहुँचकर शान्त होता है, ऐसे ही हमारी प्रार्थनाएँ आपको पाकर ही शान्त होती हैं। जैसे दूध पिलानेवाली गौएँ अपने बछड़े को दूध पिलाने के लिए स्नेहवश उसके प्रति झुक जाती हैं, उसी प्रकार हमारे द्वारा उच्चारित वेदवाणियाँ आपकी ही स्तुति करती हैं।

ऋषिः–तिरश्चीः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३५०. एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना। शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु।।

हे उपासको! शीघ्र आओ। हम सब मिलकर पापरहित, शुद्धस्वरूप, शुभ गुणवाले, परमैश्वर्यशाली

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परमेश्वर की पवित्र सामगानों—कल्याणभरे वचनों से तथा असत्य आदि दोषों से रहित, धर्मयुक्त, प्रशंसनीय वाणियों से, जिनसे परमेश्वर की महिमा बढ़ती है, अपने भक्तों की सर्वविध उन्नति करनेवाले परमेश्वर की स्तुति करें। प्रभु-उपासक को चाहिए कि अपने शरीर, मन, बुद्धि—इन सबको पवित्र बनाकर सबके लिए शुभ इच्छाओंवाला होता हुआ, सदा प्रसन्न मनवाला होता हुआ विचरे।

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३५१. यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः।
सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः।।

जो सबसे उत्तम सम्पत्तियों और ऐश्वर्यों का स्वामी है, वह परमेश्वर आपको [उपासकों को] धन प्रदान करे—योग विभूतियाँ और मोक्षैश्वर्य प्रदान करे। जो सर्वाधिक कान्ति-सम्पन्न है, यशों का यशःपति है, वह कान्ति-प्रदान द्वारा तुम्हें कान्ति-सम्पन्न और यश-प्रदान द्वारा यश-सम्पन्न बनाए। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमने उपासना-रस निष्पन्न किया है, यह आपके लिए समर्पित है। हे अमृतरस के स्वामिन्! यह उपासना-रस आपको प्रसन्न करे—आपको हमारे प्रति कृपालु बनाए।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३५२. प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर। अरंगमाय जग्मयेऽपश्चाद्दध्वने नरः।।

उपासक के उपासना-रस को पान करने—स्वीकार करने का इच्छुक, उपासक की वृद्धि चाहनेवाले, सर्वज्ञ, सर्वसमर्थ, सर्वव्यापक, सदा अग्रगामी, सबको आगे ले-जानेवाले, सबके नेता—परमेश्वर के लिए हे उपासक! तू अपना सर्वस्व समर्पित कर दे। हे नर-नारियो! तुममें से भी प्रत्येक व्यक्ति इस परमेश्वर के लिए अपना तन, मन, धन—सर्वस्व समर्पित कर दो।

ऋषिः–वामदेवः शाकपूतो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३५३. आ नो वयोवयःशयं महान्तं गह्वरेष्ठां महान्तं पूर्विनेष्ठाम्। उग्रं वचो अपावधीः।।

हे उपासको! अत्यन्त कान्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वमहान्, हृदय-गुफा में स्थित, पूर्वकाल में उत्पन्न होनेवाले मनुष्यों का भी सन्मार्ग प्रापक—सन्मार्ग में ले-चलनेवाले परमात्मा को जानो। क्या इन गुणों से युक्त जीव हो सकता है? कभी नहीं, क्योंकि वह परमात्मा महान्, व्यापक और विभु है। ऐसे परमात्मा को जानकर 'मैं दीन हूँ, हीन हूँ, पापी हूँ', ऐसे भयंकर वचनों को मार भगाओ। अथवा सबके हृदय में परमात्मा का आवास जानकर किसी के प्रति भी कठोर वचन मत बोलो, कठोर वचनों को तो मार ही भगाओ।

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३५४. आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि। तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम्।।

हे अत्यन्त बलशालिन्! जैसे रथ का स्वामी अपनी रक्षा और सुख-प्राप्ति के लिए अपने रथ को पुनः-पुनः आवर्तित करता है—फेरता है, चलाता है, लौटाता है, उसी प्रकार हम उपासक अपनी रक्षा और आनन्द-प्राप्ति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

के लिए अत्यन्त शक्तिशाली और कर्मशील, कष्टों को दूर करनेवाले और सज्जनों के स्वामी परमैश्वर्यशाली आप को अपनी ओर आवर्तित करते हैं—आपकी शरण लेते हैं।

ऋषिः–प्रगाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ २ ३ १ २ ३१ २र २ ३ २ ३ १२ ३ २ ३२३ १ २ ३ २
३५५. स पूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिरानजे। यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे।।

वह परमेश्वर ज्ञानियों, प्रशंसनियों, बलवानों, धनवानों आदि संसार की महाशक्तियों में सर्वश्रेष्ठ है। कमनीय—कामना करने—चाहने योग्य प्रिय पात्रों में सर्वश्रेष्ठ वह शुभकर्मों और दृढ़ संकल्पों से उपासक के हृदय में प्रकट होता है। विद्वानों के मध्य में मननशील आचार्य—गुरु परमात्मा की उपासना—श्रवण, मनन, निदिध्यासंन, शुभ कर्म, प्राण-साधना आदि को उस परमात्मा की प्राप्ति का द्वार बताते हैं।

ऋषिः–श्यावाश्व आत्रेयः। **देवता**–मरुतः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३१२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
३५६. यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा। पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते।।

शीघ्रगामिनी तथा शक्तिशालिनी कर्मेन्द्रियाँ और ज्ञान-ज्योति से चमकती हुई ज्ञानेन्द्रियाँ यदि शरीररूप रथ में जुती हुई हों तो ये उपासक को निश्चय ही जीवन-लक्ष्य—प्रभु-प्राप्ति की ओर ले-चलती हैं। इस प्रकार जीवन-लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते हुए ये उपासक जीवन में मस्ती देनेवाले आनन्दरस का पान करते हुए यशस्वी कर्मों को करते हैं तथा ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, सदाचार आदि धनों को प्राप्त करते हैं।

ऋषिः–शंयुः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
३५७. त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम्। इन्द्रं विश्वासाहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम्।।

हे उपासको! तुम सब उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की ही स्तुति करो, उसी की महिमा के गीत गाओ, जो परमेश्वर उपासक को मृत्यु के थपेड़ों से बचाता है, धर्ममार्ग में स्थित लोगों की हिंसा नहीं करता, ज्ञान और बल का स्वामी है, काम-क्रोध आदि सब शत्रुओं को परास्त करनेवाला और विघ्न-बाधाओं को दूर करनेवाला है, सबको आगे ले-जानेवाला और संसार का नायक है, अत्यन्त हितवक्ता [जीवों के हृदय में सदा सुप्रेरणा देनेवाला], सर्वज्ञ और सब धनों का स्वामी है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–दधिक्रावा अग्निः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
३५८. दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सुरभि नो मुखा करत् प्र न आयूँषि तारिषत्।।

मैंने जगत्कर्त्ता और जगदुद्धारक, विजयशील, सर्वव्यापक और महाबलशाली परमेश्वर की स्तुति की है और करूँगा। वह परमेश्वर हमारे मुख-नेत्र आदि सभी ज्ञानेन्द्रियों को प्रतिभायुक्त, कार्यसक्षम, बलवान् तथा माधुर्ययुक्त बना दे और हमारे जीवनों को तार दे, कृतार्थ कर दे, सुजीवन बना दे और दीर्घायु प्रदान करे।

ऋषिः–जेता माधुच्छन्दसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २र २ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २
३५९. पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत। इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर उपासना द्वारा—धारणा, ध्यान, समाधि, द्वारा उपासक के हृदय में प्रकट होता है। वह परमात्मा शरीर, इन्द्रिय और प्राणों का भेदन करके मोक्ष प्रदान करता है। शक्ति की दृष्टि से वह सदा युवा है—कभी वृद्ध नहीं होता। वह सदा अखण्डैकरस है, सर्वसमर्थ है, वेदकाव्य का कवि है, महाविद्वान् और सर्वज्ञ उपदेष्टा है, अनन्त बल से सम्पन्न है-अपरिमित ओजवाला है, संसार को उत्पन्न और धारण करनेवाला है, वह दुष्टों के लिए दण्डधारी और सबके द्वारा स्तुति करने योग्य है।

तृतीया दशतिः

ऋषिः-प्रियमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २   ३२   ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २   ३ १   २ ३ १ २   ३ २ ३   १ २
३६०. प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे। धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति।।

हे उपासको! सब वीर (वि+ईर—आगे बढ़ने के इच्छुक) जिसकी उपासना करते हैं अथवा जिसकी उपासना करने से वीर बन जाते हैं, उस चन्द्रमा के समान आह्लाद—आनन्द प्रदान करनेवाले परमात्मा की मस्त होकर मन, वचन, और कर्म से खूब ही उपासना करो। इसका फल क्या होगा? वह परमात्मा अपनी संगति—प्राप्ति और पवित्र ज्ञान प्राप्त कराने के लिए उपासकों को कर्मशक्तिवाली धारणावती बुद्धि से सुभूषित कर देता है।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३ १ २   ३ २ ३ २ ३ २   ३ २ ३ १ २   २ ३ २   ३ १ २ ३ २ ३ १   २र ३ १ २
३६१. कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति।। ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य।।

(क) मुक्तात्मा और सदा प्रकाशमान परमात्मा—दोनों के समस्त व्रतों=नियमों और यज्ञों=लोकहित के लिए किये जानेवाले कार्यों का सूक्ष्म विवेचन करके धीर=ज्ञानी पुरुष, इन दोनों के सम्बन्ध में कहते हैं कि ये दोनों सयुज=एक ही श्रेणी में स्थित हैं।

[मुक्तात्मा सृष्टि-रचना आदि कार्य नहीं कर सकता, इसका शेष सब ऐश्वर्य परमात्मा के बराबर ही होता है]।

(ख) स्वर्गीय आनन्द को प्राप्त हुए ध्यानशील उपासक पूर्णरूप से निश्चय करके जिन 'दो तत्त्वों' के सम्बन्ध में यह कहते हैं कि ये 'दो तत्त्व' सर्वद्रष्टा परमात्मा के सदा साथ रहते हैं और सारा ब्रह्माण्ड भी इन 'दो तत्त्वों' पर स्थित है। वे दो तत्त्व हैं व्रत और यज्ञ।

[परमात्मा व्रतपति है, उसी के नियम सें सारा संसार गति कर रहा है। परमात्मा यज्ञमय है, यह सारा संसार भी यज्ञ पर टिका हुआ है, अतः मनुष्य को भी व्रतनिष्ठ और यज्ञशील होना चाहिए]।

ऋषिः-प्रियमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३   १ २   ३ १ २   ३ १ २   १ २   ३ २ ३ २उ   ३ २   ३क २र
३६२. अर्चत प्रार्चत नरः प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्ण्वर्चत।।

हे मनुष्यो! तुम परमेश्वर की अर्चना=उपासना किया करो। अश्रद्धा और अनमने मन से नहीं अपितु उत्कट प्रेम से, श्रद्धा-भक्ति से अर्चना किया करो। परमात्मा की संगति के प्रेमियो! परमेश्वर की ही उपासना किया करो, उसके स्थान पर लक्कड़, पत्थर और जड़मूर्तियों की पूजा मत करो। तुम्हारे छोटे-छोटे पुत्र और पुत्रियाँ भी परमेश्वर की अर्चना किया करें। सर्वकामनापूरक तथा शुभगुणपूरक और न्यूनताओं को दूर करनेवाले एवं काम-क्रोध आदि पाप-भावनाओं को भस्म करनेवाले परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वारा अर्चना किया करो।

ऋषिः-माधुच्छन्दसः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३६३. उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिःषिधे। शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत् सख्येषु च।।

हे उपासको! शुभगुण-प्रदाता और आसुर वृत्तियों के संहारक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए प्रशंसा योग्य स्तुति-वचन कहने चाहिएँ, क्योंकि ये स्तुति-वचन हमें विषय-वासनाओं से बचाकर हमारी शारीरिक शक्ति का, मनःप्रसाद से मानस निर्मलता का और मस्तिष्क को दीप्त बनाकर हमारा वर्धन करते हैं। हमें प्रभु के प्रति स्तुति-वचन इसलिए भी कहने चाहिएँ, जिससे शक्तिशाली परमेश्वर हमारे पुत्रों और मित्रों में विशेष प्रेरणाएँ दें, अथवा वह शक्तिशाली परमेश्वर हमारे द्वारा निष्पन्न उपासना-रसों में और मैत्री भावों में अत्यन्त प्रसन्न हों-कृपालु हों और हमें प्रेमपूर्वक अपनाएँ।

ऋषिः-प्रियमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
३६४. विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः। एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम्।।

मैं अपनी रक्षा और कामनापूर्ति के लिए उस परमेश्वर का आह्वान करता हूँ, जो परमेश्वर सारे संसार के-विश्व ब्रह्माण्ड के नेता हैं, न झुकनेवाले—न दबनेवाले बल के स्वामी हैं, सभी मनुष्यों के पालक हैं और हमारे शरीररूपी रथों के रक्षक और सञ्चालक हैं।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
३६५. स घा यस्ते दिवो नरो धिया मर्तस्य शमतः।
३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
ऊती स बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति।।

जो मनुष्य दिव्य गुणयुक्त शान्तस्वरूप परमेश्वर का धारणा-ध्यान द्वारा सखा=मित्र बन जाता है, वह मनुष्य प्रभु-रक्षा में रहता हुआ परमधाम=मोक्ष-मार्ग की बड़ी-बड़ी विघ्न-बाधारूपी नदी को तर जाता है, पार उतर जाता है, उसी प्रकार जैसेकि वह पापरूपी नदी को तर जाता है।

ऋषिः-अत्रिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
३६६. विभोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो।
१ २ ३ १ २
अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र मंहय।।

हे अनन्तकर्मा और अनन्त प्रज्ञानोंवाले परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपकी धन-सम्पत्ति सर्वत्र फैली हुई है। आपके फैले हुए उस धन की दानराशि भी बहुत बड़ी है और सर्वत्र फैली हुई है, अतः हे विश्वदृष्टः! उत्तम दान से रक्षा करनेवाले प्रभो! आप हमें हमारे जीवन को चमकानेवाला ज्ञानरूप धन प्रदान कीजिए। हमें सत्य, दया, दाक्षिण्य, दृढ़संकल्प और पौरुषरूपी वह ऐश्वर्य दीजिए जिससे हमारा जीवन यशस्वी बन जाए।

ऋषिः-प्रस्कण्वः। **देवता**-उषाः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २र ३ १ २
३६७. वयश्चित्ते पतत्त्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि। उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रकाश से जगमगाती हुई हे उषा! जब तू द्युलोक के प्रान्त भागों से आकर चारों ओर फैल जाती है, तब तेरे व्यापार के अनन्तर—तेरी प्रवृत्ति=तेरे आगमन के पश्चात् आकाश में उड़नेवाले पक्षी, मनुष्य और पशु—सभी प्राणिजगत् अपने-अपने कार्यों का आरम्भ करते हैं।

ऋषिः–आप्त्यस्त्रितः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
३६८. अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः। कद्व ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः।।

हे चमकीले ग्रह-नक्षत्र और तारागणो! जो तुम चमकते हुए द्युलोक के मध्य-मध्य में यत्र-तत्र सर्वत्र विद्यमान हो—मैं तुमसे पूछता हूँ, मुझे बताओ कि वह कौन-सी शक्ति है जो तुममें नियमित रूप से कार्य कर रही है? वह कौन-सी अमर ज्योति है जो तुम्हें अमर-सा बना रही है और वह कौन-सी शाश्वत शक्ति है जिसके प्रति तुमने अपनी आहुति समर्पित की हुई है।

[रात्रि में तारेभरे आकाश की ओर दृष्टि जाने पर मनुष्य के मन में इस प्रकार के प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है]।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–ऋक्सामौ। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २र ३ २ ३ १ २
३६९. ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते। वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः।।

हम उपासकगण ऋग्वेद और सामवेद को अपने जीवन के साथ संगत करते हैं, जीवन का अभिन्न अंग बनाते हैं, इनका स्वाध्याय करते हैं। ये ऋग्वेद और सामवेद सभाओं और ज्ञान-गोष्ठियों में सुशोभित होते हैं, अर्थात् वेदप्रमाण के समक्ष सभी अपना मस्तक झुकाते हैं। ये दोनों विद्वानों में यज्ञों=देवपूजा, सत्संग, दान आदि उत्तम कर्मों को प्रवाहित करते हैं।

[हम अपने जीवन में ऋच्=ज्ञान और साम=शान्ति दोनों का मेल करते हैं—इस रूप में भी अर्थ संगत है]।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–रेभः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३७०. विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम्।।

उत्तम कोटि के सभी मुनष्य एक-साथ मिलकर ऐसी दृढ़ धारणा बनाते हैं, ऐसा मानते हैं और निश्चय करते हैं कि परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ही काम-क्रोध आदि सब शत्रुओं का संहारक है, फिर उन शत्रुओं पर अधिकार पाने के लिए, अपने शुभ संकल्पों को पूर्ण करने के लिए तथा अपनी आत्मिक शोभा के लिए परमेश्वर को अपने हृदय-सदन में प्रकट करते हैं। उस परमेश्वर को हृदय-मन्दिर में प्रकट करते हैं जो निर्मल, वासना-शून्य हृदय में स्थित रहता है, जो काम आदि शत्रुओं को कुचल डालता है, अत्यन्त उग्र=तेजस्वी है, ओजस्वी है, हमारी वृद्धि और उन्नति का हेतु है और इस संसार-सागर से पार उतारने के लिए शक्तिशाली और सुदृढ़ बेड़े के समान है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–सुवेदाः शैलूषिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३७१. श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन् यद् दस्युं नर्यं विवेरपः।
उभे यत्त्वा रोदसी धावतामनु भ्यसात्ते शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः।।

हे ओजस्वी परमात्मन्! मैं आपके सर्वश्रेष्ठ, दुष्टसंहारक तेज के प्रति श्रद्धा से नत होता हूँ। मैं उस समय भी आपके प्रति श्रद्धामय हो जाता हूँ जब नर-नारियों में बसनेवाले काम-क्रोधरूपी दस्यु का आप हनन करते हैं और उपासक के लिए नया कर्तव्य-मार्ग खोल देते हैं। द्युलोक और पृथिवीलोक दोनों भयभीत होकर आपके अनुशासन में दौड़ रहे हैं—अपनी-अपनी परिधि में गति कर रहे हैं। अत्यन्त विस्तृत अन्तरिक्ष भी आपके बल से भयभीत होकर काँप उठता है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३७२. समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद् भूरतिथिर्जनानाम्।
स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषं तं वर्त्तनीरनु वावृत एक इत्।।

हे मनुष्यो! तुम सब बालक के समान सरल स्वभाव और अपने पूर्ण बल=सामर्थ्य से प्रकाशमय द्युलोक के पति, मोक्षधाम के स्वामी, आनन्द के रक्षक और दायक परमात्मा को सम्यक् प्रकार से प्राप्त करो। वह परमेश्वर जोकि अकेला ही सब मनुष्यों में व्यापक और अतिथि के समान पूज्य है, वही लोगों द्वारा सतत जानने योग्य है। वह सनातन है। वह एक ही है। वह क्षण-क्षण में नवीन प्रतीत होनेवाला है। वह उपासकों के काम-क्रोध आदि शत्रुओं को पराजित करनेवाला है। ज्ञान, कर्म, भक्ति आदि सभी मार्ग उस परमेश्वर की ओर ही जा रहे हैं।

ऋषिः–सव्य आंगिरसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३७३. इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत् क्षोणीरिव प्रति तद्धर्य नो वचः।।

हे परमैश्वर्यशाली प्रभो! ये सब उपासक आपके ही हैं। हे अनेक नामों से स्तुत्य देव! हम सब उपासक भी आपके ही हैं। हे महाधनी! हम सब वे हैं जो आपका आश्रय लेकर संसार में विचरण करते हैं। हे स्तुतियों से वन्दनीय भगवन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई हमारे प्रार्थना-वचनों का विषय नहीं है—हम आपके अतिरिक्त अन्य किसी की स्तुति=गुणगान नहीं करते। जैसे पृथिवी पदार्थों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है—खेंच लेती है, इसी प्रकार आप हमारी प्रार्थना को सुनें और हमारी कामनाओं को पूर्ण करें।

[यहाँ भू-आकर्षण का सिद्धान्त स्पष्टरूप से लक्षित हो रहा है।]

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३७४. चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्या३मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत।
वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणं दिवेदिवे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

हमारा वर्धन करनेवाली सभी वेदवाणियाँ प्रभु का स्तवन करती हैं, उसकी महिमा के गीत गाती हैं। सभी वेदवाणियाँ उस प्रभु का प्रतिपादन करती हैं जो प्रभु सब मनुष्यों का धारण, पालन-पोषण करनेवाले हैं, प्रशस्तधनवाले हैं, प्रशंसनीय हैं, अपने गुणों में सबसे बढ़े-चढ़े हैं और अपने उपासकों को बढ़ानेवाले हैं, अनेक नामों से पुकारने योग्य हैं, मरणधर्मरहित, अजर-अमर हैं और प्रतिदिन दोषवर्जित स्तुतियों से स्तुत किये जाते हैं।

ऋषिः–कृष्ण आंगिरसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ १ २ ३१२ ३१२ ३२ ३१ २ ३१२
३७५. अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत।
१ २ ३ १२३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३१२ ३१२
परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये।।

मोक्ष-सुख की कामनावाली हे परमात्मा की उपासक प्रजाओ! तुम सब परस्पर मिलकर परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को चाहते हुए उसकी ओर चलो और अपनी सर्वविध रक्षा के लिए उसकी स्तुतियाँ किया करो। जैसे पत्नियाँ पति का आलिंगन करती हैं, उसी प्रकार तुम परमेश्वर का आलिंगन किया करो उसके साथ संगत हुआ करो, उसकी अमृतमयी गोद में बैठा करो और जैसे निर्धन याचक शुद्ध चरित्रवाले, ऐश्वर्य-सम्पन्न मनुष्य के पास जाते हैं, ऐसे ही तुम भी अपनी रक्षा के लिए परमेश्वर के पास जाओ—उसका आश्रय लो।

ऋषिः–सव्य आंगिरसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३२उ ३१ २ ३२३ २३१ २ ३१२ ३ १ २ ३२
३७६. अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम्।
२ ३ २ ३ २ ३१२ ३ १२ ३१ २र ३ १ २र
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत।।

हे मनुष्यो! तुम सब उस प्रभु की ओर चलो। उसकी शरण में आओ जो प्रभु आनन्द स की वर्षा करनेवाले हैं, अनेक नामों से और अनेक प्रकार से पुकारे जानेवाले हैं, ऋचाओं=स्तुतियों से अर्चनीय व पूजनीय हैं, भोग और निवास के लिए आवश्यक धनों के भण्डार हैं, काम-क्रोध आदि शत्रुओं के संहारक हैं। तुम उस प्रभु की शरण में जाओ जिसके मनुष्य-हितकारी कार्य सूर्य की किरणों के समान सर्वत्र विद्यमान हैं, जो सबके पालन-पोषण के लिए महादानी हैं और सबकी तृप्ति करनेवाले हैं। ऐसे प्रभु को वेदवाणियों से—प्रार्थना-वचनों से प्रसन्न करो—अपने पर कृपालु बनाओ और सब प्रकार से उसकी अर्चना=पूजा, उपासना किया करो।

२ **ऋषिः**–सव्य आंगिरसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

२उ ३१ २ ३१ २ ३१ २र ३१२ ३ १ २र
३७७. त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभुवः साकमीरते।
२ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३१ २ ३१२ ३ १ २
अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमिन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः।।

हे मनुष्यो! उस आनन्दवर्षक, मोक्ष-सुख प्राप्त करानेवाले परमात्मा की महिमा के गीत गाओ, उसकी उपासना करो जिसकी सैकड़ों कल्याण-विभूतियाँ एक-साथ उपासक के अन्दर प्राप्त होती है। प्रभु ज्ञान, धन, कर्म-सामर्थ्य आदि कितनी ही विभूतियाँ प्रदान करते हैं। हमारी जीवन-यात्रा की पूर्ति के लिए वे प्रभु सतत गतिशील घोड़े के समान है। उनका आश्रय लिया और यात्रा पूरी हुई। जीव के शरीर-रथ की रक्षा के लिए वे पुकार सुनते ही वेग से आनेवाले हैं। मैं अपने काम-क्रोध आदि दुर्गुणों को छोड़कर उत्तम स्तुतियों के द्वारा

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपनी रक्षा के लिए परमैश्वर्यशाली परमात्मा को अपनी ओर आकर्षित करता हूँ—बुलाता हूँ और मैं स्वयं परमात्मा की ओर मुड़ता हूँ—अपनी चित्तवृत्तियों को परमात्मा में जोड़ता हूँ।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-द्यावापृथिवी। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३७८. घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा।।

वरणीय सर्वश्रेष्ठ परमात्मा ने अपने धारण-सामर्थ्य द्वारा द्युलोक और पृथिवीलोक को थामा हुआ है—धारण किया हुआ है, उस द्युलोक और भूलोक को धारण किया हुआ है जो तेज धर्मवाले और रेतधर्मवाले हैं—द्युमण्डल जल को नीचे प्रेरित करता है और भूमण्डल अन्न आदि उत्पन्न करता है। ये दोनों सब लोकों के—उत्पन्न पदार्थों के, जड़-चेतनों के आश्रय हैं—सबके आच्छादक और अत्यन्त विस्तृत हैं, रसीले पदार्थों अन्न और जल के दाता हैं, सुन्दर रूपवाले और हरयावल से युक्त हैं, बड़े शक्ति-सम्पन्न हैं और जरारहित हैं—जब तक सृष्टि है तब तक रहनेवाले हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-महापंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

३७९. उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव। महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम्।
देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप द्युलोक और भूलोक दोनों को सब ओर से पूर्णरूप से अपनी ज्योति से भरकर अन्धकार को नष्ट कर रहे हो, ठीक उसी प्रकार जैसे उषा इन लोकों में पूर्ण होकर अन्धकार को नष्ट करती है। आदरणीयों में सबसे अधिक आदरणीय, महाशक्तियों में सर्वोपरि महाशक्ति, मनुष्यों के सम्राट् आपको दिव्य गुणोंवाली तथा ज्ञान का विकास करनेवाली सात्त्विक चित्तवृत्तियाँ उपासक के हृदय-मन्दिर में प्रकट करती हैं। कल्याण प्राप्त करानेवाली और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करनेवाली सात्त्विक चित्तवृत्तियाँ आपको उपासक के हृदय में अवश्य प्रकट करती हैं।

ऋषिः-कुत्सः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३८०. प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना।
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि।।

हे उपासको! तुम परमानन्दस्वरूप परमेश्वर के प्रति मस्ती में भरकर प्रसन्नताकारक प्रार्थना-वचन गाया करो। उस प्रभु की अर्चना करो जो परमेश्वर काम-क्रोध आदि भावों को जन्म देनेवाली पापमयी अशुभवृत्तियों को ज्ञान के द्वारा नष्ट कर देता है। अपनी रक्षा के इच्छुक हम उपासक आनन्दवर्षक, कामनापूरक, ओज के प्रेरक, रक्षा करने में कुशल, ज्ञानस्वरूप और प्राणप्रद परमात्मा को उसकी मित्रता में रहने के लिए पुकारते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–नारदः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३८१. इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम्। विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः।।

हे परमेश्वर! उपासना-रस के निष्पन्न हो जाने पर आप उपासकों के मस्तिष्क में ज्ञान को, हृदय में संकल्प को और हाथों में कर्म को प्रशंसनीय, निर्मल और पवित्र बना देते हो। मैं शारीरिक और आत्मिक बल की प्राप्ति के लिए आपकी शरण में आता हूँ, क्योंकि आप सर्वमहान् हैं, गुणों की खान हैं।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३८२. तमु अभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम्। इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत।।

हे मनुष्यो! उस सर्वमहान् परमैश्वर्यशाली प्रभु का मस्ती में भरकर खूब गान करो जो प्रभु बहुत प्रकार से स्तुति करने योग्य और अनेक नामों से पुकारने योग्य हैं। उस बलस्वरूप, सर्वतो महान् परमेश्वर की वेदवाणियों से अर्चना करो और उसे अपने हृदय-मन्दिर में बैठाओ।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३८३. तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम्। उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम्।।

हे ओजस्वी परमात्मदेव! हम आपके उस अर्चनीय स्वरूप का गान करते हैं जोकि सबपर सुखों की वर्षा करनेवाला है, हमारे साथ लगी हुई काम-क्रोध आदि दुर्वृत्तियों का पराभव करनेवाला है, लोक-लोकान्तरों को बनानेवाला है, हमारे जीवन-संसार को सुन्दर बनानेवाला है और दुःखीजनों का आश्रय है।

ऋषिः–पर्वतः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३८४. यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये। यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जो अमृतरूप आनन्द सर्वव्यापक आपमें है, जो आनन्द अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्य–इन तीन गुणों का वर्धन करनेवाले साधक के जीवन में है, परमेश्वर को प्राप्त करनेवाले योगी में जो आनन्द है, प्राणों की साधना करनेवाले अभ्यासियों में जो आनन्द है, चन्द्रमा के समान आह्लादक उन आनन्दों से आप ही सबको आनन्दित करते हैं।

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३८५. एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः। एवा हि वीर स्तवते सदावृधः।।

अपने जीवन को हिंसाशून्य एवं यज्ञरूप बनानेवाले उपासक! तू मधु से भी अधिक मद=आनन्द, मस्ती और उल्लास का अनुभव करानेवाले आनन्दरस का अपने जीवन में सिञ्चन कर। ऐसा करने से तू वीर=पराक्रमी बनेगा (वी+ईर्) और अपने जीवन में से सब वासनाओं को कम्पित करके भगानेवाला होगा, दूसरों को प्रेरणा देनेवाला होगा, सदा वर्धन करनेवाला होगा–जीवन में तू सदा उन्नत-ही-उन्नत होता जाएग। ऐसा व्यक्ति ही सर्वत्र प्रशंसा का पात्र बनता है, उसी की सर्वत्र स्तुति होती है–गुणगान होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-विश्वमना वैयश्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३८६. ऐन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु। प्र राधांसि चोदयते महित्वना।।

हे उपासको ! तुम परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए श्रद्धा-भक्ति से भरपूर, अत्यन्त रसीले उपासना- रस को समर्पित करो। वह परमेश्वर श्रद्धा और प्रेम से समर्पित उपासना-रस को अवश्य स्वीकार करता है, फिर अपनी स्वाभाविक उदारता से उपासकों को लौकिक और पारलौकिक सभी प्रकार की धन-सम्पत्तियाँ—सभी प्रकार की सफलताएँ प्रदान करता है।

ऋषिः-विश्वमना वैयश्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३८७. एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखाय स्तोम्यं नरम्। कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत्।।

हे उपासक मित्रो ! आओ, शीघ्र आओ। हम स्तुति के योग्य, अत्यन्त प्रशंसनीय, अपने भक्तों, उपासकों को सन्मार्ग की ओर ले-जानेवाले परमैश्वर्यशाली प्रभु की स्तुति करें, उसकी महिमा का वर्णन करें, उसके गुणों के गीत गाएँ जो परमात्मा अकेला ही भक्तिरहित और सदाचारहीन मनुष्यों को दबा देता है।

ऋषिः-नृमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३८८. इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्। ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे।।

हे उपासको ! तुम सब मिलकर हमारी न्यूनताओं को दूर करके विशेष तृप्ति देनेवाले, सर्वज्ञ, सबसे बड़े, सर्वव्यापक, ब्रह्माण्ड के रचनेवाले, पूर्ण विद्वान्—वेदज्ञान का उपदेश देनेवाले, मनुष्यों द्वारा स्तुति करने योग्य परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए बृहत्साम का गान करो।

ऋषिः-गोतमः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३८९. य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे। ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अंग।।

जो अकेला ही समर्पण करनेवाले मरणधर्मा मनुष्य के लिए नाना प्रकार के लौकिक और आध्यात्मिक धन भरपूर मात्रा में प्राप्त कराता है, हे प्यारे ! वही परमैश्वर्यशाली परमेश्वर है। वह सब धनों और सब मनुष्यों का स्वामी है। उसकी गति अबाध है। वह किसी से रोका नहीं जा सकता। वह शत्रुओं का पराभव करनेवाला है, अतः वह दृष्टि से ओझल करने योग्य नहीं है—वह सदा स्मरण रखने योग्य है।

ऋषिः-विश्वमना वैयश्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३९०. सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे। स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे।।

सबके प्रति मित्रता की भावना रखनेवाले उपासको ! हम सब मिलकर वज्रधारी—अत्यन्त ओजस्वी, विघ्न-बाधाओं, दुष्टों और आसुरी भावों का पराभव करनेवाले, सर्वश्रेष्ठ नेता—सबको आगे और आगे ले-चलनेवाले परमैश्वर्यशाली और शक्ति-सम्पन्न परमात्मा के लिए अपने मन को अर्पित करते हैं और ब्रह्म-प्रतिपादक वेदमन्त्रों का गान करते हैं। हम प्रभु के यथार्थ स्वरूप का वर्णन करते हुए पूज्य भावना से उसकी स्तुति करते हैं, केवल उसी की महिमा के गीत गाते हैं।

यहाँ चौथा प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ पञ्चमः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः-प्रगाथः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २र
३९१. गृणे तदिन्द्र ते शव उपमां देवतातये। यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! मैं आपके उस बल की प्रशंसा करता हूँ जो बल सबके लिए उपमा रूप है। मैं आपके उस आकर्षक बल, प्रभावित करनेवाले बल का मान करता हूँ जो मुझे आपके समीप लाता है। मैं इसलिए आपकी स्तुति करता हूँ, जिससे मुझमें दिव्य गुणों और दिव्य भावनाओं का विस्तार हो सके। हे प्रज्ञा, वाणी और शक्ति के रक्षक और स्वामिन्! क्योंकि आप अपने पराक्रम से ज्ञान का आवरण करनेवाले काम-क्रोध आदि पाप-वृत्रों का हनन करते हैं, इसलिए मैं आपकी स्तुति करता हूँ।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
३९२. यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन्! अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपके आनन्दरस के उल्लास, प्रसन्नता और मस्ती में भरकर प्रकाश के मार्ग में आनेवाले विघ्नों को नष्ट करनेवाला यह सौम्यस्वरूप, साधनाशील योगी शान्ति का आवरण करनेवाले ईर्ष्या-असुर का संहार करने के लिए तथा आपको पाने के लिए कटिबद्ध हुआ है। प्रभो !आप इसे अपनी शरण में लें, इसे स्वीकार करें—अपनाएँ।

ऋषिः-नृमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
३९३. एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य। गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः।।

हे परमप्रिय! प्राणों के प्राण। हे सत्यस्वरूप! हे सबको विजय करनेवाले, भक्तों के भय या भयजनक कारणों के विजेता! कभी और किसी प्रकार न छिपनेवाले, अपने सामर्थ्य से सर्वत्र प्रकट हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप पर्वत के समान अचल तथा दृढ़ और सब ओर से महाविस्तारवाले हैं। आप द्युलोक के पति हैं, मोक्ष के स्वामी हैं। कृपया हमारे हृदय-मन्दिर में आइए—हमें अपना दर्शन दीजिए।

ऋषिः-पर्वतः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ २ ३ १ २
३९४. य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति। येना हंसि न्या३त्रिणं तमीमहे।।

हे महाबलशाली परमेश्वर! आप उपासना-रस के रसयिता हैं। उपासना-रस को स्वीकार करनेवाले हैं। आप स्वयं आनन्दस्वरूप हैं, अपने भक्तों को अपने आनन्दामृत से तृप्त करनेवाले और उन्हें चेतानेवाले हैं। जिस आनन्दमय स्वभाव से आप हमें खा जानेवाले काम, क्रोध, लोभ, मोहरूप दैत्यों को नष्ट कर डालते हैं, हम आपसे उसी आनन्दामृत की भिक्षा माँगते हैं। प्रभो! आप हमें अपने आनन्दरस से आप्लावित—सराबोर कर दो, अच्छी प्रकार सींच दो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–इरिम्बिठिः। **देवता**–आदित्याः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
३९५. तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे। आदित्यासः समहसः कृणोतन।।

हे तेजस्वी, वीतराग, अदीन भगवद्भक्तो! आदित्य कोटि के विद्वानो! आप हमारे, हमारे पुत्रों और पौत्रों के उत्तम जीवन के लिए सौ वर्ष और उससे भी अधिक दीर्घ आयु प्रदान कीजिए, दीघार्यु प्राप्ति के रहस्य बताइए। ऐसी दीर्घायु के रहस्य बताइए जो अविद्या-अन्धकार से रहित और ज्ञान-प्रकाश से देदीप्यमान हो।

ऋषिः–विश्वमनाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३९६. वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम्। अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव।।

आसुरी भावनाओं का पराभव करनेवाले हे परमेश्वर! उपासक के जींवन में आनेवाली बड़ी भारी आपित्तयों–कष्टदायक काम-क्रोध आदि आन्तरिक बाधाओं का परिहार करना आप ही जानते हैं। जैसे सूर्य प्रतिदिन चारों ओर से आक्रमण करनेवाले रोगकृमियों को नष्ट कर संसार को शुद्ध बनाता है, उसी प्रकार आप उपासक की दुर्भावनाओं, दुष्ट चित्तवृत्तियों को हटाकर उसे शुद्ध करते रहते हैं।

ऋषिः–इरिम्बिठिः। **देवता**–आदित्याः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३९७. अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम्। आदित्यासो युयोतना नो अंहसः।।

हे परमात्मतेज-रश्मियो! हे प्राण-रश्मियो! उच्चकोटि के विद्वानो! भगवद्भक्तो! आप रोगों को हमसे दूर कीजिए। हिंसा-वृत्ति, ईर्ष्या-द्वेष की भावनाओं, तोड़-फोड़ की प्रवृत्तियों, हमारा शोषण करनेवाले शोक, त्रुटियों और दुराचारों को हमसे दूर कीजिए। दुष्ट मतिवाले, दुष्ट चिन्तक मनुष्य को, दुर्बुद्धि, दुर्मति, दुष्ट संकल्प को हमसे दूर कीजिए। हमें पाप और कुटिलता से बचाइए।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिपदा विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
३९८. पिबा सोममिन्द्र मदन्तु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः। सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा।।

हे इन्द्रियों को वश में रखनेवाले जीवात्मन्! तू मनुष्यों के हृदय में स्थित होकर प्रेरणा देनेवाले परमेश्वर द्वारा धर्ममेघ समाधि में चुवाये गये (वर्षाये गये, निचोड़े गये) आनन्दरस का पान कर। यह सोम तुझे आनन्दित कर तेरे जीवन को मदमस्त बना दे। यह सोम जीवात्मा के मन और बुद्धि को सुनियन्त्रित करता है, उन्हें सुमार्ग से भटक कर असत् चिन्तन की ओर नहीं जाने देता और सोम का पान करके यह उपासक अश्व के समान शक्तिशाली हो जाता है।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
३९९. अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि। युधेदापित्वमिच्छसे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप अनादिकाल से–सदा से शत्रुरहित–अजातशत्रु हैं। आप नेता से भी रहित हैं। आप सबके नेता हैं, आपका कोई नेता नहीं है। आप माता-पिता, बन्धु-बान्धवों से भी रहित हैं। आप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सनातन हैं—पुराण पुरुष हैं। आपकी ओर गति करनेवाले, योग द्वारा आपकी ओर चलनेवाले, आसुरी वृत्तियों, दुष्ट चित्तवृत्तियों को युद्ध द्वारा कुचल डालनेवाले उपासक को ही आप चाहते हैं, अपनाते हैं, उसे ही प्राप्त होते हैं।

ऋषिः-सोभरिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

४००. यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे। सखाय इन्द्रमूतये।।

प्राणिमात्र को मित्र-दृष्टि से देखनेवाले उपासको! जो परमेश्वर हमारे लिए पूर्वकाल से अमुक-अमुक, एक-दूसरे से भिन्न, उत्तमोत्तम शरीर और भोग्य वस्तुएँ प्राप्त कराता रहा है, मैं आपके ज्ञान के लिए और अपनी रक्षा के लिए उस परमेश्वर की स्तुति=उसके गुणों का गान करता हूँ।

ऋषिः-सोभरिः। **देवता**-मरुतः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

४०१. आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः। दृढा चिद्यमयिष्णवः।।

हे विद्वानो! आओ, प्रभु-उपासना में सम्मिलित होओ। प्रभु की उपासना से विमुख होकर दुःखी मत होओ। प्रभु से विमुख होना ही दुःखों का कारण है। हे शम-दम आदि दिव्य गुणों में स्थित साथियो! उपासना-मार्ग से दूर मत हटो। उपासना को अपने जीवन का अंग बनाओ। सदा उत्तम ज्ञान से युक्त और उत्साह से सम्पन्न बनो! दृढ़ संकल्पवाले बनकर यम-नियमों का पालन करो और इस प्रकार अपने को नियन्त्रण में रखो।

ऋषिः-सोभरिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

४०२. आ याह्ययमिन्दवेऽश्वपते गोपत उर्वरापते। सोमं सोमपते पिब।।

हे कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों के स्वामिन्! नव-नव उन्मेषिणी बुद्धि—ऋतम्भरा प्रज्ञा के स्वामिन्! हे ज्ञान के स्वामिन्! तू परम रसीले, चन्द्रमा के समान शीतल प्रकाशवाले परमेश्वर की ओर आ—प्रभु-उपासना में जुट जा। तू परमात्मा के आनन्दरस का पान कर। यह सोम तुझे आनन्दित कर देगा—तुझे मदमस्त बना देगा।

ऋषिः-सोभरिः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

४०३. त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि। संस्थे जनस्य गोमतः।।

हे कामनापूरक, आनन्दरस की वर्षा करनेवाले प्रभो! आपसे युक्त होकर, आपको अपना साथी बनाकर ही हम उपासक विद्या अथवा धन के अभिमान में चूर जो लोग अपने घर में बैठकर हमारा अपमान करते हैं, उनका और फुँकार मारते हुए कामरूपी शत्रु का प्रतिवाद कर सकते हैं, उन्हें करारा उत्तर दे सकते हैं, उनका मुक़ाबिला करने के लिए उन्हें युद्ध में ललकार सकते हैं। इस शक्ति की प्राप्ति के लिए हम वेदज्ञान के स्वामी और जगत्पिता आपके बैठने के स्थान—हृदय में आपका ध्यान करते हैं।

ऋषिः-सोभरिः। **देवता**-मरुतः। **छन्दः**-ककुबुष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

४०४. गावश्चिद् घा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः। रिहते ककुभो मिथः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे प्रभो! हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञानपूर्वक कर्म करनेवाली और उत्साह से पूर्ण हों। समान-जाति के कारण–'मनुष्यत्व के कारण सब मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं'–ऐसा अनुभव करके हम परस्पर ईर्ष्या-द्वेष और घृणा न करें। सबमें एकत्व अनुभव करके शोक और मोह से ऊपर उठ जाएँ। सब दिशाओं में रहनेवाले लोग परस्पर मिल-जुलकर रहें। सभी एक-दूसरे को प्रेम की दृष्टि से देखें।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

४०५. त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनासहम्॥

हे सर्वशक्ति-सम्पन्न परमेश्वर! आप हमें आध्यात्मिक बल–दूसरों को प्रभावित करनेवाला बल प्रदान कीजिए। हे अनन्तकर्मा प्रभो! आप हमें पौरुष, ज्ञान और भक्तिरूप धन तथा संयम और सदाचार का यश प्राप्त कराइए। हे सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ प्रभो! हमें ऐसा विक्रान्त, निर्भय, निर्दोष और निर्मल हृदय दीजिए कि दुष्टों की सभी शक्तियाँ हमसे टकराकर चूर-चूर हो जाएँ और कामादि विकारों का आक्रमण भी व्यर्थ हो जाए। हमें वीर सन्तान दीजिए, जो काम-क्रोध आदि की सेनाओं का पराभव कर सकें।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

४०६. अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे। उदेव ग्मन्त उदभिः॥

हे वेदवाणियों से स्तुत्य परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! ओजस्वी, यशस्वी और शत्रुविजेता बनकर हमारे हृदय में आपको पाने और मोक्ष प्राप्त करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई है, अतः अब हम आपको चाहते हैं और आपके साथ मेल करते हैं। जैसे जल चाहनेवाला मनुष्य जल के पास जाता है अथवा जैसे जल जलों के साथ एक-रस होकर मिल जाते हैं, उसी प्रकार हम आपके पास आते हैं और आपसे संसृष्ट होते हैं–संगत होते हैं, आपसे मेल करते हैं।

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

४०७. सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे। अभि त्वामिन्द्र नोनुमः॥

जैसे पक्षी, भ्रमर और मधुमक्खियाँ पके हुए स्वादिष्ट फलों और पुष्प-रस पर आकर बैठ जाते हैं और अपनी-अपनी बोली बोलते हैं–पक्षी चहचहाते हैं, भ्रमर गुञ्जार करते हैं, मधुमक्खियाँ भिनभिनाती हैं, उसी प्रकार हे परमैश्वर्यशाली प्रभो! हम वेदवाणियों से निनादित अथवा प्रभु-नाम की ध्वनि से पूरित आपके नाम का उच्चारण और नयनाभिराम (देखने में अति सुन्दर), मनोरम–हृदय को उल्लसित करनेवाले, विशिष्ट नदीवाले स्थान पर आपके आश्रय में बैठे हुए बारम्बार आपको नमस्कार करते हैं।

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

४०८. वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः। वज्रिञ्चित्रं हवामहे॥

हे अपूर्व! श्रेष्ठों में श्रेष्ठ! अनुपम प्रभो! हे वज्रधारी परमेश्वर! दर्शनीय, अनुपम, आश्चर्यरूप आपको हम अपने हृदय में धारण करते हुए अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं। हम उसी प्रकार आपका आह्वान करते हैं, जैसे कोई निर्बल मनुष्य अपने से बलवान् किसी व्यक्ति को अपनी सहायतार्थ बुलाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तृतीया दशतिः

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
४०९. स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः।
१ २र ३ १ २ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम्।

यह सत्य है कि साधना द्वारा निर्मल बनी हुई इन्द्रियाँ सर्वव्यापक प्रभु के स्वादु आनन्दरस का पान करती हैं, परन्तु इस आनन्दरस का आस्वादन वे ही इन्द्रियाँ करती हैं जो सदा आत्मा के साथ मिलकर विचरती हैं, शक्तिशालिनी हैं, उल्लासमयी हैं, जो ज्ञान और क्रियाशीलता के कारण शोभा=चमकवाली हैं, जो योगरूपी ऐश्वर्य से युक्त हैं। ये इन्द्रियाँ इन गुणों से मण्डित तभी होंगी जब मनुष्य अपने पर शासन कर पाएगा, अपना आत्म-नियन्त्रण कर पाएगा।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २उ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४१०. इत्था हि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्धनम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३१२ ३ १ २
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्।।

जब इन्द्रियाँ प्रभु के आनन्दरस का पान करती हैं तब यह साधक सचमुच सोम=सौम्य, विनीत बनता है और निश्चय ही इसका जीवन उल्लासमय=मस्तीभरा होता है। यह अपने ज्ञान का वर्धन करके ज्ञानी बनता है। इस त्रिविध शक्ति से सम्पन्न महाबलशालिन्! आसुरी वृत्तियों के प्रति वज्रधारी आत्मन्! तू अपने स्वाभाविक ओज द्वारा अपने शरीर से कुटिलता, हिंसा, पापविचार और पापाचार को मार भगा और प्रभु की अर्चना करता हुआ आत्मराज्य की प्राप्ति को अपना लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ता चल।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ १,२ ३ १ २र
४११. इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः।
२र ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्।।

पाप-वृत्रों का हनन करनेवाला परमैश्वर्यशाली परमात्मा मुमुक्षुओं द्वारा अथवा नर-नारियों द्वारा आनन्द-प्राप्ति के लिए और आत्मबल प्राप्ति के लिए उपासना द्वारा स्व-आत्मा में बढ़ाया जाता है–प्रदीप्त किया जाता है, अधिकाधिक साक्षात् किया जाता है। बड़े महायुद्धों में और छोटी-छोटी लड़ाइयों में, देवासुर-संग्रामों में और जीवन-संघर्षों में हम रक्षा करनेवाले उस सर्वव्यापक परमेश्वर को ही पुकारते हैं। वह सब संग्रामों में हमारी विशेषरूप से रक्षा करे।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३क २र
४१२. इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन्वीर्यम्।
२र ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २र ३२ ३१२ ३ १ २
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव त्यन्माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम्।।

हे शत्रुविदारक, इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मन्! दृढ़-संकल्प और व्रतोंवाले! आसुरी भावनाओं के प्रति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वज्रधारिन्! यह तेरा ही सर्वोपरि—किसी से न दबाया जा सकनेवाला, न जीता जा सकनेवाला बल है जिससे तूने उस मायावी, छली-कपटी, 'काम' रूप मृग को अपने ज्ञान से=विवेक-बुद्धि से मार डाला। काम-विनाश के पश्चात् अब तू परमेश्वर की अर्चना करता हुआ आत्मराज्य-प्राप्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ता चल।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः

२ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
४१३. प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते।
१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र नृम्णं ते शवो हनो वृत्रं जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम्॥

हे शक्ति-सम्पन्न जीवात्मन्! काम-क्रोध आदि शत्रुओं के प्रति तू उत्साह से आगे बढ़। अपने शत्रुओं का मुक़ाबिला करने के लिए उनकी ओर बढ़ चल और इन शत्रुओं को कुचल डाल। तू अपने को दीन-हीन मत समझ। तेरा वज्रप्रहार किसी के द्वारा रोका नहीं जा सकता। तेरा बल सब विघ्न-बाधाओं को झुका देनेवाला है। इसलिए उठ! पापरूपी वृत्र और अज्ञान का नाश कर तथा अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर और परमात्मा की उपासना करता हुआ तू आत्मराज्य को प्राप्त कर।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४१४. यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः॥

जब उपासक के जीवन में देवासुर-संग्राम उठ खड़े होते हैं—जब राग और उसका त्याग— इन राग-त्याग में युद्ध होता है, तब असुरों का पराभव करनेवाले स्थिरचित्त उपासक को हे परमेश्वर! आप आध्यात्मिक सम्पत्ति, नाना प्रकार का सौभाग्य, प्रसादकर गुण— धैर्य, शान्ति, सौम्यता, गाम्भीर्य प्रदान करते हैं। प्रभो! जीवन में विजय-प्राप्ति के लिए आप अभिमान से सर्वथा रहित ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप अश्वों को मेरे शरीर-रथ में युक्त कर दीजिए। हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप असुरों का हनन कर देते हैं और देवों को वसु में—सर्वोत्तम स्थिति—मोक्ष में धारण करते हैं। प्रभो! हम उपासकों को तो अपने वास=शरण, मोक्ष में ही स्थापित कीजिए।

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४१५. अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३क २र ३ १ २
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जब आप अभिमान से सर्वथा रहित ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप अश्वों को उपासक के शरीर-रथ में जोड़ देते हैं, तब आपके प्रिय भक्त आपके अमृतभोग को भोगते हैं, अत्यन्त प्रसन्न होते हैं, आनन्दमय जीवन बिताते हैं और वासनाओं को कम्पित करके परे भगा देते हैं। अपना पालन और पूरण करनेवाले ये मेधावी जन आत्मप्रकाश से देदीप्यमान हो जाते हैं। अपनी कमियों को दूर करते हुए और अपने दुःखों को छोड़ते हुए अत्यन्त प्रशंसनीय, नित्यनूतन स्तुति-वचनों से आपकी स्तुति करते हैं—आपकी महिमा का गान करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ ३ २उ ३ १२३ १२
४१६. उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथा इव।
३ १ २ ३१२ ३ २३ २३१२३ २उ ३क २र ३ १ २
कदा नः सूनृतावतः कर इदर्थयास इद्योजा न्विन्द्र ते हरी॥

हे प्रभो! आप हमारे अत्यन्त समीप– हमारे हृदय-मन्दिर में ही विराजमान हैं, अतः हमारे प्रार्थना-वचनों को ध्यानपूर्वक सुनिए। हमारी प्रार्थना है कि मघवन्=पापशून्य, परमपूजित धनवाले प्रभो! हम ऐसे-वैसे जीवनवाले न हों। हम व्यर्थ-से, दूसरों पर भाररूप, अशक्तजीवनवाले न होकर दिव्य जीवनवाले बनें। प्रभो! आप हमारी वाणियों को प्रिय, सत्य और दुःखी को सान्त्वना देनेवाली कब बनाएँगे? कृपा करो कि मैं सदा सत्य, प्रिय और हितकर वाणी ही बोलूँ। इस सबके लिए हे परमैश्वर्यशाली प्रभो!आप अपनी=आपके द्वारा प्रदत्त ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप अश्वों को हमारे शरीररूप रथ में जोड़ दीजिए।

ऋषिः–त्रितः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ १२ ३ २ १ २र ३१ २ ३ २
४१७. चन्द्रमा अप्स्वा३ऽन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
१ २ ३१ २ ३ १२ ३ १ २
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी॥

सबको आह्लाद प्रदान करनेवाला वह परमात्मा सबके प्राणों में रमा हुआ है, सबका पालन-पोषण और धारण करनेवाला वह प्रभु सबके मस्तिष्क में भी पूर्णरूप से ओत-प्रोत है, परन्तु भौतिक धन के चक्र में फँसे हुए मनुष्य ज्ञान-ज्योति से दीप्त आपके पद को–मोक्षपद को नहीं पा सकते, परन्तु हे द्युलोक और भूलोक-वासियो! मेरा संकल्प सुनो–मुझे तो तत्त्वदर्शी महानुभावों द्वारा अभीष्ट मोक्षपद ही चाहिए। मैं लौकिक ऐश्वर्य की कामनावाला नहीं हूँ।

ऋषिः–अवस्युः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३१२ ३ २ ३ १२ ३ १२
४१८. प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम्।
३ १ २ ३२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १२
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम्॥

हे ब्रह्म-प्राप्ति के अभिलाषी प्राणायाम-साधक स्त्री-पुरुषो! प्रभु-स्तवन करनेवाला कोई तत्त्वद्रष्टा ज्ञानी ही इस अत्यन्त प्रिय, सुखवर्षी, कामनापूरक, लौकिक और पारलौकिक ऐश्वर्य प्राप्त करानेवाले शरीररूपी रथ को प्राण-अपान की साधना द्वारा स्वास्थ्य और सौन्दर्य से समलंकृत करता है। तुम दोनों भी प्राण-साधना करते हुए मधुररूप बन जाओ, सबके प्रिय बन जाओ। वाणी से सत्य, प्रिय, हितकर बोलो, हाथों से शुभकर्म करो, पैरों से शुभ मार्ग पर गमन करो, कानों से भद्र सुनों, आँखों से प्राणिमात्र को प्रेममयी दृष्टि से निहारो। हे स्त्री-पुरुषो! मेरे इस उपदेश को सुनो और इसपर आचरण करो।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–वसुश्रुतः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १२
४१९. आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हम उपासक आपके प्रकाशमान और कभी जीर्ण न होनेवाले स्वरूप को अपने हृदय-मन्दिर में प्रदीप्त करते हैं, आपका साक्षात् दर्शन करते हैं। आपकी जो अत्यन्त प्रशंसनीय दीप्ति द्युमण्डल में—अमृत मोक्षधाम में देदीप्यमान हो रही है, हे आनन्दप्रद देव! उस मोक्षधाम के अमृतभोग को=मोक्ष के दिव्य आनन्द को उपासकों के हृदय में सींच दे और हमें भक्तिरूपी धन, ज्ञान तथा यश प्रदान कर।

ऋषिः–विमदः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २र ३ १ २
४२०. अग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
शीरं पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं विवक्षसे॥

हे परमेश्वर! हम उपासक अपने काम-क्रोध आदि दोषों को दूर करके आपका वरण करते हैं, आपकी शरण में जाते हैं। कैसे प्रभु की शरण में जाते हैं? जो प्रभु अग्नि के समान तेजस्वी हैं, उपासक के सब दोषों को दूर करनेवाले और महादानी हैं। वे सारे ब्रह्माण्ड में और सबके हृदय में निवास करनेवाले हैं और पवित्र करनेवाली ज्ञान-दीप्ति से युक्त हैं— प्रभो! आनन्दस्वरूप और आनन्द प्रदान करनेवाले आपके लिए भक्ति, ज्ञान, सदाचार आदि उत्कृष्ट कर्मों में कुशा-घास के समान निर्मल हृदय-आसन बिछा हुआ है। आप आइए, अपना दर्शन दीजिए। हम आपको पुकार रहे हैं, क्योंकि आप महान् हैं।

ऋषिः–सत्यश्रवाः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४२१. महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥

हे दोषों को दहन करनेवाली आध्यात्मिक उषः! (उपासक में प्रकट हुई प्रभु की प्रथम झलक) तू दिव्य प्रकाशवाली है। जैसे तू अनादिकाल से उपासकों को बोधयुक्त करती रही है, ठीक उसी प्रकार आज हमें भी बड़ी भारी आध्यात्मिक सम्पत्ति=भक्ति और ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए जगा दे—बोधयुक्त कर दे। विश्व-प्रेम और सदा एकरस रहनेवाले सत्य का सन्देश देनेवाली तथा सौभाग्य से प्रकट हुई अत्यन्त प्रिय आध्यात्मिक उषः! तू सत्य-ज्ञान और यश-प्राप्ति के लिए तथा संसार का ताना-बाना बुनते हुए प्रकाशस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए हमें बोधयुक्त कर।

ऋषिः–विमदः। **देवता**–सोमः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
४२२. भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
अथा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणा गावो न यवसे विवक्षसे॥

हे परमेश्वर! आप हमारे मन को शिवसंकल्पयुक्त, उत्साही और कर्मशील=कर्मसंकल्पवाला बनाइए। हम उपासक आपकी मित्रता में आनन्द का अनुभव करें। आप हमारे अज्ञान के परदे को नष्ट न कर दें। प्रभो! अपनी भक्ति की मस्ती में आप हमें भी उसी प्रकार आनन्दित करें जैसे गौएँ हरी-हरी घास में चरती हुई रमण करती हैं। प्रभो! आप सर्वतो महान् हैं, अतः आपकी मित्रता सदा आनन्द देनेवाली ही है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–गोतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३१ २ ३२ ३१ २र ३ १२
४२३. क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृते शवः।
३ २ ३ १ २३२३२ ३१ २र ३ १ २३१२ ३२
श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवान् दधे हस्तयोर्वज्रमायसम्।।

हे परमेश्वर! आप सृष्टि-उत्पत्ति, पालन और संहाररूप कर्मों और प्रज्ञा=ज्ञान की दृष्टि से सर्वमहान् हैं। दुष्टों के लिए आप भयंकर है। आत्म-समर्पण करनेवाले उपासक में आप ज्ञानरूप बल का विस्तार करते हैं–उसे सब प्रकार से बढ़ाते हैं। आप महाविद्वान्–वेदरूपी काव्य के निर्माता और उपदेशक हैं। आप करुणाशील और वात्सल्यमय हैं, सर्वव्यापक हैं, उपासक के कल्याण के लिए सदा उसके समीप रहनेवाले हैं और अपने हाथों में तेजस्वी वज्र=रक्षा-साधन को धारण करनेवाले हैं।

[परमात्मा शरीररहित है, रक्षानिमित्त हाथों की कल्पना की गई है।]

ऋषिः–गौतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २र ३ २३१२ ३१२
४२४. स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम्।
१ २र ३२ ३१२ ३ १२ ३ २३क २र ३ १२
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्रा चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! वह उपासक निश्चय ही उस शरीररूपी रथ का अधिष्ठता=स्वामी बन जाता है जो प्रभु-प्राप्ति के लिए दिये गये शरीररूप पात्र को पूर्णरूप से नीरोग रखता है और इसमें सम्यक् प्रकार रहना जानता है– इस शरीर से ज्ञानार्जन करता है, शुभ कर्म करता है, लोकहित करता है। ऐसे उपासक के लिए यह शरीररूपी रथ जिसमें ज्ञानेन्द्रियरूप अश्व=घोड़े जुते हुए हैं, सुखों का वर्षक बन जाता है, उपासक के सभी मनोरथों को पूर्ण कर देता है। इस सारे तत्त्व को समझकर हे शक्तिशाली जीव! तू अपने ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप अश्वों को अपने शरीररूपी रथ में जोत, अर्थात् तू आलस्य और प्रमादरहित होकर ज्ञान-प्राप्ति में लगा रह और कर्मशील बन।

ऋषिः–वसुश्रुतः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ १ २र ३ २उ ३२ ३ १ २र ३१२
४२५. अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः।
२ ३१२ ३२उ ३ १ २ ३२३ १२ ३२ ३ १ २
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

मैं उस सर्वव्यापक परमात्मा की उपासना करता हूँ जो सबमें बसा हुआ है और सबको बसानेवाला है, सबका निवास-दाता है। मैं उस प्रभु की अर्चना करता हूँ जिस गृहरूप– सबके आश्रयभूत परमात्मा के प्रति वेदवाणियों का गान किया जाता है। मैं उस परमात्मा की पूजा करता हूँ जिसमें अपनी वृत्ति लगाये हुए और संसार-सागर से पार पहुँचे हुए मुक्त जीव भी अपना गृह=निवास-स्थान मानकर वहाँ पहुँचते हैं। हे अग्निस्वरूप परमेश्वर! आप हम उपासकों को प्रेरणा दीजिए कि हम आपके सच्चे भक्त बनें। हमें ज्ञान धन प्रदान कीजिए और संसार में यशस्वी बनाइए।

ऋषिः–अंहोमुग्वामदेव्यः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–उपरिष्टाद् बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२उ ३ १ २३१ २र ३ १ २
४२६. न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्।
३१२ ३ १२३२ ३१ २र३ १२३ २ ३ १२
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे दिव्यगुणयुक्त उपासको! जिस मरणधर्मा उपासक को अर्यमा=काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नियन्ता, मित्रः=दयालु, त्राणकर्ता, वरुणः=पापनाशक, वरणीय परमेश्वर की ये तीन शक्तियाँ समानभाव से—एक-साथ ईर्ष्या-द्वेष आदि दुरितों और शत्रुओं से बचाती हुई मोक्षधाम में ले-जाती हैं, उसे न तो कोई पाप और कुटिलता व्याप्ती है और न कोई दुराचार स्पर्श करता है।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–धिष्ण्याः ऐश्वरयोऽग्नयः। **देवता**–पवमानः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
४२७. परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय।।

हे शान्त उपासना-रस! तू अत्यन्त मधुर है, रसीला है। तू सांसारिक बन्धनों को त्यागकर परमैश्वर्यशाली, परम स्निग्ध, सर्वस्नेही, दयालु, सबके पोषक और भजनीय=वन्दनीय, ऐश्वर्य धर्म-यश-श्री-ज्ञान और वैराग्य—षडैश्वर्यों से सम्पन्न भगवान् की ओर प्रवाहित हो।

ऋषिः–त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**–पवमानः। **छन्दः**–त्रिपदा अनुष्टुप्पिपीलिकामध्या। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
४२८. पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः। द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे।।

हे मेरे उपासना-रस! तू मोक्षानन्द-प्राप्ति के लिए शीघ्रता से परमैश्वर्यशाली परमात्मा के प्रति प्रवाहित हो जा। हे सोम! तू मेरे ज्ञान पर परदा डालनेवाले काम-क्रोध आदि शत्रुओं को पूर्णरूप से कुचल डाल। ईर्ष्या-द्वेष आदि को तैर-जाने के लिए तू हमें प्राप्त होता है और हमें देव, ऋषि तथा पितृऋणों से अनृण होने (छुटकारा पाने) की प्रेरणा देता है।

ऋषिः–धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्नयः। **देवता**–पवामानः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
४२९. पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम।।

हे मेरे उपासना-रस! सर्वमहान् परमात्मा को प्राप्त करने के कारण तू महान् है। तू उपासक के हृदय को द्रवित कर देने-(पिघला देने)-वाला है, अतः तू समुद्ररूप मेरे हृदय में उमड़। तू हमारे जीवनों में दिव्य गुणों को जन्म देनेवाला और उन्हें विषयों में जाने से बचानेवाला है, अतः तू हमारी समस्त इन्द्रियों को और हमारे जीवनों को पवित्र कर दे।

ऋषिः–धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्नयः। **देवता**–पवमानः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
४३०. पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय।।

हे मेरे उपासना-रस! तू मेरे जीवन को शुद्ध और पवित्र बना। महान्-ज्ञान अथवा परमेश्वररूप धन की प्राप्ति के लिए तू हमारे जीवन में प्रवाहित हो। जैसे सधा हुआ बलवान् अश्व धन-प्राप्ति का कारण बनता है, उसी प्रकार मोक्षरूपी धन की प्राप्ति के लिए यह उपासना-रस हमारे जीवनों में निरन्तर प्रवाहित रहे।

ऋषिः–धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्नयः **देवता**–पवमानः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
४३१. इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्नेहपूर्ण उपासना-रस मेरे जीवन को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनाए। यह उपासना-रस रमणीय, हृदय को आनन्दप्रदान करनेवाला और रुचिकर है, अतः हमारे जीवन को भी सुन्दर बनाता है। नदी-सरोवरों के तटों पर शान्त, एकान्त स्थान में की गई उपासना से अत्यधिक आनन्द प्राप्त होता है। यह उपासना-रस जीवन में कवित्व शक्ति जागरित करता है। यह मनुष्य को क्रान्तदर्शी एवं तत्त्वद्रष्टा बनाता है और अन्त में प्रभु की प्राप्ति कराता है।

ऋषिः–त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**–पवमानः। **छन्दः**–त्रिपदा अनुष्टुप्पिपीलिकमध्या। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४३२. अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये। वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे।।

हे मेरे उपासना-रस! हृदय में तेरे निष्पन्न हो जाने के पश्चात् हम एक अद्भुत आनन्द और हर्ष का अनुभव करते हैं और सर्वमहान् परमात्मा के राज्य–मोक्ष में विचरण करने लगते हैं। हृदयों और जीवनों को पवित्र करनेवाले हे उपासना-रस! तू हमें शक्ति, बल, वेग और ज्ञान देने के लिए हमारे अंग-अंग में गति कर–प्रवाहित हो।

ऋषिः--वसिष्ठ **देवता**–मरुतः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३क २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
४३३. क ईं व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः।।

संसार में ऐसे कौन स्त्री-पुरुष हैं जो छल-कपट से रहित और सत्य व्यवहारवाले हैं? ऐसे कौन मनुष्य हैं जो परमात्मारूपी या पृथिवीरूपी एक ही घर में ऐसे प्रेमपूर्वक रहते हैं जैसे पक्षी अपने घोंसलों में प्रेमपूर्वक रहते हैं? ऐसे कितने जन हैं जो संसार के सभी प्राणियों को पापहारी परमेश्वर की सन्तान समझते हैं और जिनकी इन्द्रियाँ और मन सुनियन्त्रित और उत्तम हैं। ऐसे नर-नारी, ऐसे स्त्री और पुरुष संसार में दुर्लभ हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पदपङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३१ २३ १२ ३ १ २ ३ १२
४३४. अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम्। ऋध्यामा त ओहैः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आज हम सर्वप्रसिद्ध आपको अपने हृदय-मन्दिर में धारण करते हैं। हम उस प्रभु को हृदय में धारण करते हैं जो अश्व=घोड़े की भाँति सारे विश्व ब्रह्माण्ड का वहन करनेवाले=खेंचनेवाले हैं, यज्ञ के समान सुख देनेवाले हैं। हम हृदय को छूनेवाले, मन से जानने योग्य परमात्मा को उपासक तक पहुँचनेवाले स्तुति-मन्त्रों से हृदय में धारण करते हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–वाजिनां स्तुतिः। **छन्दः**–पुरउष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ १२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
४३५. आविर्मर्या आ वाजं वाजिनो अग्मं देवस्य सवितुः सवम्। स्वर्गाँ अर्वन्तो जयत।।

मनुष्यों के हितसाधक, ज्ञान और भक्तिरूप धनवाले उपासक सर्वोत्पादक और सर्वप्रेरक परमेश्वर के ज्ञान और सान्निध्य को अपने हृदय में प्रकट करते हैं। हे उपासको! तुम काम आदि शत्रुओं का संहार करते हुए और परमात्मा का ध्यान करते हुए मोक्षरूप परमानन्द को प्राप्त करो।

ऋषिः–धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्नयः। **देवता**–पवमानः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३१२३ २
४३६. पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महाँ अवीनामनुपूर्व्यः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे उपासना-रस ! तू हमारे जीवनों को पवित्र बना दे। तू हृदय और मस्तिष्क में प्रकाश उत्पन्न करता है। तू हमारे लिए सच्चा धन है। तू यशस्वी है, क्योंकि तेरे प्रताप से कितने ही जन भव-सागर से तर जाते हैं। तू सुधा = अमृत = मोक्षानन्द का देनेवाला है। तेरी रसधारा अत्यन्त श्रेष्ठ है। तेरी परम्परा सुन्दर है, क्योंकि श्रेष्ठ व्यक्ति ही इसमें आते हैं। तू महान् है, क्योंकि तेरे धारण से हृदय की तुच्छता और संकुचितता दूर होकर उपासक विशाल हृदय बनते हैं। रक्षा करनेवाली शक्तियों में तू अपूर्व शक्ति है, अतः तू हमारी रक्षा कर।

द्वितीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २३ २ ३ १२ ३१२
४३७. विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर यं त्वा शविष्ठमीमहे।।

हे सब ओर से दान देनेवाले परमेश्वर ! हम जिस अभीष्ट को तुझ धनवान् से माँगते है, उसे हमें प्रदान कीजिए। आप सब प्रकार के दानों द्वारा हमें भर दीजिए–हमारे शरीरों को नीरोगता से, इन्द्रियों को शक्ति से, मन को विशालता से और मस्तिष्क को ज्ञान से भर दीजिए।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १२ ३२ ३२
४३८. एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे।।

यह महादानी परमेश्वर ब्रह्मा है–सबसे बड़ा है और अपने सखा जीव को सब प्रकार से बढ़ानेवाला है। यह ऋतु-ऋतु में अर्थात् सदा पुकारने, स्मरण और उपासना करने योग्य है। यह 'इन्द्र' नाम से वेदों में प्रसिद्ध है। यह सब असुरों और आसुर वृत्तियों का संहार करनेवाला है, सर्वशक्तिमान् और परमैश्वर्यशाली है। ऐसे गुणों के भण्डार परमेश्वर की मैं स्तुति करता हूँ–उसकी महिमा के गीत गाता हूँ।

ऋषिः–अवस्युः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ १ २ ३१२ ३१ २र ३ १२३ २ ३१ २
४३९. ब्रह्माण इन्द्र महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ।।

असुरों के संहारक परमैश्वर्यशाली प्रभु की महिमा के गीत गाते हुए ब्रह्मज्ञानी वेद-मन्त्रों से उस प्रभु को बढ़ाते हैं–उसके गुणों का बढ़-बढ़कर गान करते हैं और नास्तिको में भी उसकी महिमा को दृढ़ करते हैं। ज्ञानी प्रभु की महिमा का गुणगान इसलिए करते हैं जिससे सर्प के समान कुटिल हिंसा की वृत्तियों का हनन हो सके और इस प्रकार जीवन के शुद्ध और पवित्र हो जाने पर मोक्ष प्राप्त हो जाए।

ऋषिः–अवस्युः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
४४०. अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुस्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्।।

हे सबके द्वारा पुकारे जानेवाले ! सबको पूरण करनेवाले ! परोपकारी और आत्म-दर्शन के अभिलाषी मनुष्य तुझ सर्वव्यापक परमात्मा के लिए अपने रमण-स्थान हृदय को श्रद्धा-सम्पन्न बनाते हैं। विद्या से प्रदीप्त पुरुष आपको अहि = कुटिल वृत्तियों के विनाश के लिए अपना प्रकाशमान अस्त्र बनाते हैं–सर्प-संहारार्थ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अस्त्ररूप में कल्पित करते हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३२ ३१ २३२३ १ २र ३१२ ३ १ २ ३ २
४४१. शं पदं मघं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम्।।

सुख-शान्ति, मोक्षपद, ब्रह्मदर्शन–ये सब मन, इन्द्रिय आदि और आत्मा को प्रभु में समर्पित करनेवाले को ही प्राप्त होते हैं। आत्मैश्वर्य और ब्रह्मैश्वर्य इनके अभिलाषी को ही प्राप्त होते हैं, जिनको इनकी कामना नहीं है, उन्हें ये कैसे प्राप्त हो सकते हैं? अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि व्रतों से रहित, कर्महीन, आलसी, प्रमादी अपनी कामनाओं, अभिलाषाओं को प्राप्त नहीं कर सकता। ब्रह्म = परमेश्वर को तो वह छू भी नहीं सकता–उसके पास भी नहीं फटक सकता।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४४२. सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः।।

आत्म-साधकों की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ सदा पवित्र,निर्मल और निर्दोष होती हैं। उनकी आँखें शुभ दर्शन से, कान शुभ श्रवण से, हाथ दान से और पैर सुमार्ग-गमन से पवित्र होते हैं। समस्त संसार को ज्ञान और आनन्द-रस का पान कराके सबको धारण करनेवाले विद्वान् लोग सदा पाप से रहित होते हैं।

ऋषिः–संवर्तः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
४४३. आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः।।

हे प्रभो! आप मेरी उपासना (अनन्य भक्ति–तन्मयता से प्रभु-सम्भजन–एकाग्रचित्त से प्रभु का ध्यान) के द्वारा मुझे प्राप्त होओ–मेरे हृदय-मन्दिर में दर्शन दो। आपकी इस उपासना से मेरी आँखें लौकिक रूप की ओर न भागकर सर्वत्र आपके दिव्य सौन्दर्य का दर्शन करती हैं, कान अश्लील गानों के सुनने के स्थान पर आपकी महिमा के गीतों का श्रवण करते हैं। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियाँ भी सुमार्ग-गामिनी बनती हैं। दिन की तो बात ही क्या जब रात्रि में भी ये इन्द्रियाँ मार्ग-भ्रष्ट नहीं होती तब हमारी उपासना सच्ची उपासना बन जाती है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४४४. उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! माधुर्ययुक्त देवों = इन्द्रियों के प्रियलोक–शरीर में निवास करते हुए हम मोक्षरूपी ऐश्वर्य को प्राप्त कर सकें, अतः हम उपासक आपका ध्यान करते हैं और आपको जीवन में धारण करते हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ २ ३१२ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २र
४४५. अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः।।

शोभन मन्त्रों द्वारा अर्चना करनेवाले और सात्त्विक अन्न का सेवन करनेवाले प्राणायाम के अभ्यासी उपासक सर्वोत्तम उपास्यदेव अर्चनीय परमेश्वर की अर्चना = उपासना करते हैं। वह परमैश्वर्यशाली परमात्मा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो सदा अजर-अमर, सबमें ओत-प्रोत, अशुभ को दूर करनेवाला और शुभ को प्राप्त करानेवाला प्रसिद्ध है, इन उपासकों के आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक सब दुःखों और कष्टों का वारण=निवारण कर देता है तथा उन्हें अपने साथ संयुक्त कर लेता है—मोक्ष प्रदान कर देता है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। छन्दः–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

४४६. प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते।।

हे मुमुक्षुओ=मोक्ष के अभिलाषी उपासको! ज्ञानी लोग जिस परमेश्वर की उपासना करते हैं, तुम भी उसी काम-क्रोधादि पाप-वृत्रों के अतिशय नाशक, सर्वप्रकार से परिपूर्ण और अत्यन्त मेधावी परमैश्वर्यशाली परमात्मा के लिए सामगान गाओ—गान करने योग्य भजन, कीर्तन आदि का भली प्रकार गान करो।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। छन्दः–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १२

४४७. अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाड् न सुमद्रथः।।

ज्ञानवान्, प्रकाशस्वरूप, सर्वज्ञ परमात्मा हम उपासकों के हृदय-मन्दिर में चेतता है—साक्षात् होता है और हम उपासकों को बोध प्रदान करता है। जैसे भौतिक अग्नि आहुतियों का वहन करती है, उसी प्रकार स्वयं रमणशील परमेश्वर हमारे शरीररूप रथों का वहन करने लगा है अर्थात् वह हमें सुप्रेरणाएँ देने लगा है।

ऋषिः–बन्धुः। **देवता**–अग्निः। छन्दः–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र

४४८. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप ही हमारे अत्यन्त समीपस्थ मित्र हैं। आप कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ते। आप ही हमारे सच्चे रक्षक हैं। आप न केवल रक्षक हैं अपितु हमारा कल्याण करनेवाले भी हैं। आप सबसे अधिक वरण करने योग्य और हमारे हृदयरूप गृह में निवास करनेवाले हैं। आप हमारे कवच हैं और आप ही हमारे सर्वोत्तम धन हैं। आप ही हमारे भजन करने योग्य हैं। मैं सदा आपकी ही उपासना करूँ, अन्य किसी की नहीं, ऐसी कृपा कीजिए।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। छन्दः–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

४४९. भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम्।।

सूर्य के समान दर्शनीय ज्ञानस्वरूप परमात्मा आत्मा में साक्षात् करने योग्य है। अथवा प्रकाश-पुञ्ज प्रभु देदीप्यमान सूर्य की भाँति हमें ज्ञान का प्रकाश देनेवाला है। प्रभु-उपासना से उपासक का मस्तिष्करूप द्युलोक ज्ञान से प्रकाशित हो जाता है। वह आश्चर्यरूप परमेश्वर महान् आत्माओं=मुमुक्षुओं को मोक्षरूप रत्न प्रदान करता है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। छन्दः–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २

४५०. विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन् यदि वेह नूनम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

समस्त ब्रह्माण्ड को थामनेवाले हे परमेश्वर! आप सत्तारूप से सदा विद्यमान रहते हैं। जैसेकि आप पूर्वकाल में सारे जगत् को थामते रहे हैं, वैसे ही आज भी—वर्तमान काल में भी इस जगत् को थाम रहे हैं। हमारे जीवन में प्रविष्ट हो जानेवाली पाप-वासनाओं के संहारक! सबके उत्कृष्ट पूजापात्र! हमारी तो बस यही प्रार्थना है कि आप हमारे न चाहते हुए भी हमारे जीवन में प्रविष्ट हो जानेवाली पाप-भावनाओं को रोक दीजिए। इनका वारण=निवारण कर दीजिए।

ऋषिः–संवर्त्तः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २३ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
४५१. उषा अप स्वसुष्टमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता।।

जैसे प्रातःकाल की उषा अपनी बहिन रात्रि के अन्धकार को दूर भगा देती है और अपने मार्ग पर आगे बढ़ती जाती है, इसलिए इसका जन्म उत्तम है, धन्य है, वैसे ही हृदय-मन्दिर में प्रकट हुई कमनीय परमात्म-ज्योति उपासक के अविद्या-अन्धकार को नष्ट कर देती है और आत्मा के परम गन्तव्य-ब्रह्म-मार्ग को प्रकाशित कर देती है, ऐसी परमात्म-ज्योति का जन्म=प्रकट होना उत्तम है।

ऋषिः–भुवन आप्त्यः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–द्विपदा पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २
४५२. इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः।।

अब—तत्त्वज्ञान हो जाने पर हम इन सब भोग्य वस्तुओं को सुख-प्राप्ति के लिए साधन बनाएँ—ये हमारे साध्य न बन जाएँ। हमारा साध्य तो परमैश्वर्यशाली परमात्मा, मोक्ष और सब दिव्यगुण हैं। जीवन में विवेक-वैराग्य, शम-दम आदि दिव्य गुणों का सञ्चय करते हुए हम प्रभु को प्राप्त कर सकते हैं, अतः शरीर, इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—इन साधनों का सदुपयोग करते हुए हम सब दिव्य गुणों को प्राप्त करें और प्रभुरूप साध्य को सिद्ध करें।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३२३ ३ १ २ ३ १२
४५३. वि स्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जैसे विविध नदी और नद—जलधाराएँ अपने-अपने मार्ग से पृथिवी को सींचती हैं, उसी प्रकार आपसे दान की धाराएँ प्रवाहित होकर हमें प्राप्त हों।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४५४. अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः।।

परमेश्वर के गुणगान से हम देवों=मुमुक्षुओं के लिए हितकर ज्ञान को प्राप्त करें, क्योंकि ज्ञान से ही मुक्ति प्राप्त होती है। हम सदा आनन्दित रहें, हमारा जीवन उल्लासमय हो। हम शुद्ध-पवित्र जीवनवाले होकर सौ वर्ष तक जीवित रहें। हम पुष्ट प्राणोंवाले हों—दम-खम के साथ जीएँ और उत्तम धर्मवीर सन्तानों को प्राप्त करें।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–द्विपदा त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४५५. ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सबका मित्र, वरणीय, सर्वश्रेष्ठ और पापों का वारण=निवारण करनेवाला परमात्मा संसार के समस्त सुख-भोगों को अपने आर्द्र आनन्दरस से सींच दे। हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हमारे लिए परिपुष्ट अन्न, प्रभूत धन और सबसे अधिक वाञ्छनीय मोक्ष-सुख को प्राप्त कराइए।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–एकपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १२
४५६. इन्द्रो विश्वस्य राजति।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सारे संसार का–विश्वब्रह्माण्ड का राजा है, शासक, नियामक और व्यवस्थापक है। उसी के शासन से अग्नि, वायु, सूर्य आदि सब देव अपना कार्य कर रहे हैं। उसी परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए।

तृतीया दशतिः

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अष्टिः। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
४५७. त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत् सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशम्।
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३२ ३१ २र ३ २ ३ २ ३ २ २र ३ १ २र
स ईं ममाद महि कर्म कतवे महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम्।।

प्रातः, मध्याह्न और सायं–तीनों आह्वानों के समय पर प्रभु की उपासना करनेवाला, अत्यन्त बलशाली उपासक सर्वव्यापक परमात्मा की कृपा से उत्पन्न हुए, कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों को पवित्र करनेवाले सोम=आध्यामिक भक्तिरस के आनन्द का अपनी शक्ति के अनुसार पान करता है और तृप्ति का अनुभव करता है। इस आनन्दरस का पान करके यह उपासक निश्चय ही हर्षित और प्रसन्न होता है, इसके जीवन में एक मस्ती और उल्लास होता है। यह बड़े-बड़े कर्म करने के लिए सन्नद्ध हो जाता है। यह इस महान् और सर्वव्यापक प्रभु को प्राप्त हो जाता है। यह सोम-पान करनेवाला देव=विद्वान् बनकर परमात्मादेव को प्राप्त करता है। यह सत्यः=मन को निर्मल बनाकर परमात्मा के साथ मेल करता है और इन्द्रः=शक्तिशाली बनकर शक्ति के पुञ्ज इन्द्र को प्राप्त करता है।

ऋषिः–गौरांगिरसः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–जगतीः। **स्वरः**–निषादः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
४५८. अयं सहस्रमानवो दृशः कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्म।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः।।

सर्वत्रव्यापक, प्रकाशस्वरूप परमात्मा सब मनुष्यों का स्वामी है, कवियों=क्रान्तदर्शियों, विद्वानों का दर्शनीय है। वह ज्ञानस्वरूप है। वह ज्योतिस्वरूप है। वह विविध जगत् का धारक है तथा धर्म का विधानकर्ता है। वह करोड़ों सूर्यों के समान तेजस्वी है। सबके हृदय में सरणशील परमात्मा जीवों को आध्यात्मिक उषा=अज्ञान को भस्म करनेवाली उत्तम बुद्धि प्रदान करता है। इस अज्ञान-दाहक बुद्धि को प्राप्त करके उपासक निष्पाप हो जाते हैं। ये विचारशील, हृदय में परमात्मा को प्राप्त करनेवाले, ब्रह्मज्ञान-सम्पन्न और विद्यायुक्त हो जाते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-परुच्छेपः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अत्यष्टिः। **स्वरः**-गान्धारः।

४५९. एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पतिरस्ता राजेव सत्पतिः।
हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः सुतेष्वा पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप हमारे समीप आइए—हमारे हृदय-मन्दिर में प्रत्यक्ष दर्शन दीजिए। जैसे कोई यज्ञप्रेमी सुदूर देश से आकर यज्ञों में उपस्थित होता है, उसी प्रकार आप हमारे उपासना-यज्ञों में प्रकट होओ। आप समस्त प्रजा के सच्चे पालक और रक्षक हैं। आप पापों और कष्टों को दूर करनेवाले हैं। जैसे सज्जनों का पालक राजा प्रजा को प्राप्त होता है—प्रजा के पास जाता है, उसी प्रकार आप हमें प्राप्त हों। उपासना-रस निष्पन्न हो जाने पर उपासना-रस की भेंट करनेवाले हम उपासक आपको पुकारते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे पुत्र पिता का आह्वान करते हैं। हम ज्ञान और बल की प्राप्ति के लिए आपको पुकारते हैं— आपका स्मरण करते हैं। हम महादानी आपको मोक्षपद की प्राप्ति के लिए भी पुकारते हैं।

ऋषिः-रेभः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-जगती **स्वरः**-निषादः।

४६०. तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं श्रवांसि भूरि।
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्त राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री।।

मैं उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को श्रद्धापूर्ण हृदय से बार-बार पुकारता हूँ जो ऐश्वर्यों का स्वामी है, अत्यन्त तेजस्वी,उदात्त और नियमों में उग्र है, सत्यस्वरूप है, अनन्त धन और यश का धारणकर्ता है। वह अजेय है—विरोधी शक्तियों द्वारा झुकाया नहीं जा सकता। वह परमेश्वर महादानी है। वही एकमात्र पूजनीय और संगति करने योग्य है। स्तुतियों द्वारा वह उपासकों को लौकिक और आध्यात्मिक सम्पत्तियाँ प्रदान करने के लिए प्रवृत्त होता है। वह वज्रधारी=पापवारक परमेश्वर हमारी सब प्रकार की सम्पत्तियों और यशों को सुपथ द्वारा प्रापणीय करे।

ऋषिः-परुच्छेपः। **देवता**-विश्वे देवाः। **छन्दः**-अत्यष्टिः। **स्वरः**-गान्धारः।

४६१. अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु त्यच्छर्द्धो दिव्यं वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे।
यद्ध क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे।
अध प्र नूनमुप यन्ति धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः।।

हे परमात्मन्! अब तक जो कुछ हुआ सो हुआ परन्तु अब आप मेरे प्रार्थना-वचनों को सुनिए। मैं ज्ञानपूर्वक, ध्यान और धारणओं द्वारा प्रकाशस्वरूप आपको सदा अपने सम्मुख रखता हूँ—आपको अपने जीवन का आदर्श बनाता हूँ। हम सब उपासक आपके अलौकिक बल का वरण करते हैं। हममें दिव्य बल और दिव्य गुणों का अवतरण हो। हम अपने जीवन में आसुर भावनाओं की संहारक-शक्ति और कर्मशीलता का वरण करते हैं। हमारा जीवन प्रकाशमय और कर्मठ हो। जब उपासक इन्द्रियों, मन और बुद्धि को नाभा=केन्द्र में—नाभि में, हृदय में, आज्ञाचक्र में रोककर सदा नवीन और स्तुत्य, सूर्य के समान प्रकाशमान परमेश्वर की प्राप्ति के लिए धारणा और ध्यान आदि कर्मों का उपायरूप में अवलम्बन=आश्रय लेते हैं, तब निश्चय ही ये धारणा आदि कर्म उसे शीघ्रता से परमेश्वर के समीप ले-जाते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसेकि ये धारणा आदि कर्म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपासक को दिव्य गुणों के समीप ले-जाते हैं।

ऋषिः-एवयामरुत्। **देवता**-मरुतः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ ५ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४६२. प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।
१ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे।।

जीवन-लक्ष्य–परमेश्वर-प्राप्ति की ओर-बढ़नेवाले मनुष्यो! तुम्हारी वेदवाणियों से प्रकट हुई अर्थात् ज्ञानमूलक बुद्धियाँ प्रकर्षरूप से परमेश्वर की खोज में चलें जो परमेश्वर सर्वमहान् है, सर्वव्यापक और प्राणों का स्वामी है। तुम्हारी मतियाँ उस प्रभु की ओर प्रयाण करें जो बलस्वरूप है, उस परमात्मा की ओर गमन करें जो यज्ञशील है–सृष्टि का रचयिता और सञ्चालक है, सुखों का आदिस्रोत है, उत्तम भोजनदाता है, उत्तम आभूषणों=वेदज्ञान का दाता है, अत्यन्त गतिस्वरूप और वृद्धि प्रदाता है, हमारे अभीष्टों को कल्याणमय और सुखदायी बनानेवाला है, पाप-वासनाओं को कँपा देनेवाले व्रतोंवाला है और शक्तिस्वरूप है।

[परमेश्वर के इन गुणों को जीवन में धारण करते हुए हम भी महान् बनें, उदार बनें, प्राणशक्ति से सम्पन्न हों, बलवान् बनें, प्रगतिशील हों, सबके मंगल की कामनावाले बनें, काम-क्रोध आदि आन्तरिक और समाज के शत्रुओं के संहारक बनें तथा शक्ति के पुञ्ज बनें।]

ऋषिः-आनानतः पारुच्छेपिः। **देवता**-पवमानः। **छन्दः**-अत्यष्टिः। **स्वरः**-गान्धारः।

३ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
४६३. अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः।।

योगसाधनों से सम्पन्न उपासक मनोहारिणी परमेश्वरीय दीप्ति द्वारा अपने को पवित्र करता हुआ सब प्रकार की द्वेष-भावनाओं से ऊपर उठने के पश्चात् एक विद्वान् व्यक्ति की भाँति मेल व प्रेम की वृत्तियों से संसार में चलता है–सबके साथ प्रेम करता है, सूर्य के समान सबको ज्ञान-प्रकाश देने लगता है। जब उपासक की पृष्ठवंश की सुषुम्णा नाड़ी में प्रकाशधारा चमकने लगती है, तब यह अपने को और अधिक पवित्र करता हुआ क्रोध आदि दुर्गुणों को अलग करके और अधिक चमक उठता है, फिर यह औरों के दुःखों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। हे उपासक! तू सात छन्दों से युक्त ऋचामय वेदों द्वारा परमेश्वर के समग्र रूपों–दयालु, न्यायकारी, अजन्मा, अनादि, अनुपम आदि को जान लेता है।

ऋषिः-नकुलः। **देवता**-सविता। **छन्दः**-अतिशक्वरी। **स्वरः**-पञ्चमः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
४६४. अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम्।
३ २उ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत् सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः।।

मैं उस देवाधिदेव परमेश्वर की श्रद्धा-भक्ति से अर्चना करता हूँ जो द्युलोक और पृथिवीलोक को उत्पन्न करनेवाले हैं, जिनका प्रत्येक कर्म बुद्धिमत्तापूर्ण है, जो हृदयस्थ होकर सदा सत्य की प्रेरणा देनेवाले हैं, जो रत्नो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और ज्ञान आदि गुणों के धारक हैं, सब प्रकार से प्रियरूप हैं और ज्ञान के पुञ्ज हैं। मैं उस प्रभु की अर्चना करता हूँ जिसकी दीप्ति सर्वोच्च और अपरिमेय है—नापी नहीं जा सकती, जिसका अमित प्रकाश अन्तःकरण में और सारे संसार में चमकता है। वे हितरमणीय हाथोंवाले हैं—उनका वरदहस्त सबके सिर पर है। वे सुकर्मा और शोभन प्रज्ञावाले हैं वे अपनी करुणा और सामर्थ्य से जीवों को मोक्ष प्रदान करते हैं।

ऋषिः–परुच्छेपः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अत्यष्टिः। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
४६५. अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्।
२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः।।

मैं सर्वश्रेष्ठ प्रकाशस्वरूप, परमात्मा का मनन-चिन्तन और अर्चन करता हूँ। कैसे हैं वे प्रभु? सब-कुछ देनेवाले और जगत् का प्रलय करनेवाले हैं, अभ्युदय—निवास के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं और निःश्रेयस—मोक्षरूपी सम्पत्ति को देनेवाले हैं, जीवात्मा में साहस=आत्मिक बल के प्रेरक हैं, सब पदार्थों के ज्ञाता—सर्वज्ञ हैं, वेदों के प्रकाशक हैं। जैसे विद्या प्राप्त करके मेधावी सत्कार के योग्य होता है, वैसे ही सर्वज्ञ परमात्मा तो महान् सत्करणीय हैं। मैं उस प्रभु का मनन करता हूँ जो दिव्य गुणविशिष्ट परमेश्वर ऊपर—आकाश में चमकते हुए नक्षत्रों में पहुँची हुई अपनी सामर्थ्य के कारण स्वध्वर=संसार-यज्ञ का रचयिता कहा जाता है। वह आहुति में डाले गये पिघले घी की चमकती हुई ज्योति की विशेष चमक के समान अपने प्रताप और तेज के साथ स्वयं प्रकाशित हो रहा है।

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अतिशक्वरीः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
४६६. तव त्यन्नर्यं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम्।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
यो देवस्य शवसा प्रारिणा असु रिणन्नपः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
भुवो विश्वमभ्यदेवमोजसा विदेदूर्जं शतक्रतुर्विदेदिषम्।।

समस्त संसार को नचानेवाले अथवा अपनी इच्छा के अनुकूल चलानेवाले प्रभो! आपका वह नर-हितकारी सर्वश्रेष्ठ कर्म है जोकि आपने सृष्टि के आरम्भ में वेदज्ञान दिया है। आप द्वारा प्रदत्त यह वेदज्ञान प्रवचन करने योग्य है। आपने द्युलोक में सूर्य-चन्द्र और नक्षत्रों की रचना यथापूर्व की है—आपका यह कर्म भी प्रवचन करने योग्य है। हे शक्ति के पुञ्ज इन्द्र! आप अपने बल से जीवों के विषय-चिन्तक मन को मारकर उन्हें उपासनारूप पवित्र कर्म में लगाते हैं—आपका यह कर्म भी प्रशंसनीय है। प्रभो! आप अपने ओज द्वारा सब आसुरी भावनाओं का पराभव करते हैं—उन्हें दबा देते हैं। आप सैकड़ों कर्मों और प्रज्ञानोंवाले हैं, अतः हमें बल और ज्ञान प्राप्त कराइए और मोक्षसुख भी प्रदान कीजिए

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ पवमानपर्व

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः-अमहीयुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

४६७. उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः।।

हे सोम! जीवात्मा में तेरे आनन्दरस का जन्म=प्रकटीकरण बहुत उच्च कोटि का है। यह क्षणभर में उपासक के सारे दोषों को नष्ट कर देता है। यह शान्ति प्रदान करता है और महान् यश प्राप्त करता है। यद्यपि यह आनन्द विद्वानों के लिए, है, परन्तु साधारण जन भी उसका अनुभव करते हैं।

ऋषिः-मधुच्छन्दाः। **देवता**-पावमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

४६८. स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः।।

हे सोम=परमेश्वर की आध्यात्मिक आनन्दधारा! तू अपनी अत्यन्त मधुर्यवाली और उल्लासमयी—मस्त बनानेवाली धारा से हमारे जीवन को दोषों से रहित करके बाहर से शुद्ध और अन्दर से पवित्र तथा निर्मल बना दे। हे सोम! तू जीवात्मा की रक्षा के लिए प्रकट किया गया है। सोम=परमात्मा के आनन्दरस का पान करके मनुष्य स्वस्थ, नीरोग और निर्भय बन जाता है।

ऋषिः-भृगुर्वारुणिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

४६९. वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा।।

हे आनन्दरस! तू उपासकों की कामनाओं की पूर्ति करता हुआ अपनी अविच्छिन्न (निरन्तर बहनेवाली) धारा से हमारे शरीर के अंग-प्रत्यंग में प्रवाहित हो। तू प्राणसाधना करनेवाले उपासक के लिए आनन्द को प्रवाहित कर। तू अपने ओज=प्रताप, बल, शक्ति से सब दिव्य गुणों और सुख-शान्ति को धारण कराता हुआ हमारे जीवनों में प्रवाहित हो।

ऋषिः-अमहीयुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

४७०. यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावीरघशंसहा।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आपके आनन्दरस के पान से उत्पन्न जो वरणीय, सर्वश्रेष्ठ मद=आध्यात्मिक आह्लाद, मस्ती, उल्लास है, उसके साथ तू हमारे जीवनों में प्रवाहित हो जा और हमारे जीवनों को पवित्र बना दे। आनन्दरस-पान की यह मस्ती हमें सब दिव्य गुणों की ओर ले-जानेवाली है और अन्त में आप तक पहुँचाती है। यह मस्ती, यह उल्लास पाप की प्रशंसा करने की भावना का हनन कर देती है।

ऋषिः-त्रितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

४७१. तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्।।

आनन्दरस के पान का इच्छुक उपासक जब 'अ, उ, म्' (ओम्)—इन तीन वाणियों का उच्च स्वर से उच्चारण करता है, तब दुःखों का हरण करनेवाले मनोहारी प्रभु आश्वासन जनक मधुर ध्वनि करते हुए—शुभ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्म करने की प्रेरणा और अशुभ कर्म करने का निषेध करते हुए हृदय-मन्दिर में प्रकट होते हैं। अब इसके जीवन में ज्ञान-दुग्ध का पान करानेवाली वेदवाणीरूपी गौएँ शब्द करती हैं–उपदेश देती हैं–तू ज्ञानी बन, ज्ञानपूर्वक उत्तम कर्म कर और इन कर्मों को प्रभु को समर्पित करता हुआ सच्चा उपासक–प्रभुभक्त बन।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
४७२. इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्।।

हे परम रसीले आनन्दस्वरूप परमात्मन् ! आप जितेन्द्रिय और प्राण-साधना करनेवाले मुझ उपासक के जीवन में प्रवाहित होओ और मेरे जीवन को पवित्र बना दो, जिससे मैं अर्चनीय = पूजनीय आपकी अमृतमय गोद में बैठ सकूँ।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ ३ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ २उ ३ १ २
४७३. असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः। श्येनो न योनिमासदत्।।

उपासना के फलस्वरूप उपासक के जीवन में परमात्मा की आध्यात्मिक ज्योति प्रकट हो गई है। यह ज्योति उपासक को आनन्द, हर्ष और उल्लास प्रदान करती है। यह उसके जीवन को मस्त बना देती है। इस ज्योति से उपासक कर्मों में दक्ष = कुशल बनता है। यह उन्नति के पर्वत-शिखर पर स्थित होता है और जैसे श्येन (बाज़) पक्षी अपने आश्रय पर आ बैठता है, वैसे ही यह उपासक परमेश्वर की अमृतमयी गोद में जा बैठता है।

ऋषिः–दृढच्युत आगस्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४७०. पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः।।

रोगों, मलों और पापों का हरण करनेवाले सोम = आनन्दरस ! परमात्मन् ! आप मेरे जीवन में प्रवाहित हो जाओ और मुझे मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्र बना दो। हे सोम ! आप मेरी दक्षता को सिद्ध करनेवाले हैं। मुझे उत्साही, चतुर और कार्यकुशल बनानेवाले हैं। आप जीवन्मुक्तों के लिए पेय = पान करने योग्य हैं अथवा यह सोम जीवन में दिव्य गुणों के विकास और आसुर वृत्तियों के आक्रमण से रक्षण के लिए है। यह प्राण-साधक के लिए हितकर है। यह जीवन को क्रियाशील = कर्मठ बनाता है। यह आनन्ददायक है, जीवन को उल्लासमय और मस्ती से भरपूर करता है।

ऋषिः–काश्यपोऽसितः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ ३ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
४७५. परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि।।

परमात्मा का आनन्दरस पवित्र हृदय में क्षरित = प्रवाहित होता है। जीवन में प्रवाहित हुआ यह सोम शरीर में प्राणशक्ति को खूब बढ़ाता है और उपासक को उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा देता है। यह उपासकों को सारे अभीष्ट पदार्थों को प्राप्त कराता है–उनकी सब कामनाओं को पूर्ण कर देता है।

ऋषिः–काश्यपोऽसितः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३क २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
४७६. परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतुः।।

क्रान्तद्रर्शी, सर्वज्ञ परमात्मा उपासकों को मेधावी, ज्ञानी और क्रियाशील बनाता है–उन्हें प्रज्ञाशक्ति और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

क्रियाशक्ति प्रदान करता है। वह परमेश्वर द्युलोक और पृथिवी लोक में सर्वत्र समाया हुआ है—सर्वव्यापक है। उत्साह के साथ मोक्षधाम की ओर उड़ान भरनेवाले प्रिय जीवों को वह प्राप्त होता है।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः-श्यावाश्वः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
४७७. प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्। सुता विदथे अक्रमुः।।

आनन्द, उल्लास, उत्साह और मस्ती की वर्षा करनेवाले आनन्दरस हम पाप-शून्य ऐश्वर्यवाले उपासकों के यश का कारण बनें। हम उत्साहपूर्वक सुपथ से धन कमाएँ। उस धन में से दान करके सुयश के भागी बनें। हमारे जीवन में निष्पन्न हुए ये आनन्दरस हमें मोक्ष में पहुँचाते हैं—मोक्ष प्राप्त कराते हैं।

ऋषिः-त्रितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १२ १ २ ३ १ २
४७८. प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषा इव।।

परमेश्वर के आनन्दरस की धाराएँ हमें अत्यन्त सूक्ष्म-दृष्टा, ज्ञानी बनाती हैं। हमारे जीवनों को उत्साह की तरंगों से उद्वेलित करके हमें कर्मशील बनाती हैं। जैसे महावेगशाली मरुद्गण जलभरे बादलों को आगे-आगे धकेलते हैं उसी प्रकार ये आनन्दधाराएँ सम्भजन (एकाग्रचित्त ध्यान) और उपासनाओं द्वारा मोक्षधाम में ले-जाती हैं—आनन्दरस की धाराएँ उपासकों को ज्ञानी और कर्मशील बनाकर अन्त में मोक्ष प्राप्त कराती हैं।

ऋषिः-अमहीयुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
४७९. पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि।।

हे परम रसीले परमेश्वर! आप हमारे जीवनों में प्रवाहित होकर हमारे जीवनों को पवित्र बना दो, हमारे जीवनों को सुजीवन बना दो। आप सुखों के वर्षक और सब कामनाओं के पूरक हैं। हमारे हृदय में प्रकट हुए आप हमें इस जन्म में जीवन्मुक्त और मानव-समाज में यशस्वी बना दो, हमारी सब द्वेष-भावनाओं को भी हमसे दूर कर दो।

ऋषिः-भृगुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १२
४८०. वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम्।।

हमारे जीवनों में प्रवाहित होकर हमारे जीवन को पवित्र बनानेवाले हे परमेश्वर! आप सुखवर्षक और सब मनोरथों के पूरक हैं। आप अपने तेज से तेजस्वी और अपने प्रकाश से प्रकाशमान हैं। आप मोक्ष-मार्ग को दर्शानेवाले—प्राप्त करानेवाले हैं। ऐसे आपको हम पुकारते हैं—आपका स्मरण और आपकी उपासना करते हैं। आपकी कृपा से हम जीवन में सर्वविध सुख—कल्याण का दर्शन करें।

ऋषिः-कश्यपः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १२
४८१. इन्दुः पविष्ट चतेनः प्रियः कवीनां मतिः। सृजदश्वं रथीरिव।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चन्द्रमा के समान शान्तिदायक परमात्मा हमारे जीवनों में प्रवाहित होकर हमें बाहर और भीतर से शुद्ध और पवित्र बना देता है। वह जीवन में चेतना उत्पन्न करता है। वह सबसे प्रेम करता है और सबके लिए प्राणों से प्यारा है। वह क्रान्तदर्शियों = मेधावी उपासकों का स्तुत्य है। वह मन को उपासना के लिए तैयार कर देता है, जैसे सारथि यात्रा के लिए अश्व को तैयार करता है।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
४८२. असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः।।

हम उपासकों के हृदयों में आनन्दरस की धाराएँ निष्पन्न हो गई हैं—फूट पड़ी हैं। ये आनन्दरस-धाराएँ शरीर को बलिष्ठ बनाती हैं, मन को पवित्र और मस्तिष्क को ज्ञान से दीप्त करती हैं। उपासक इन आनन्दधाराओं को ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा से, परमात्मा की शीघ्र प्राप्ति की इच्छा से और उपासना-मार्ग में आनेवाले कष्टों के सहन कर सकने की इच्छा से अपने हृदय-मन्दिर में उत्पन्न करते हैं। ये आनन्दधाराएँ मस्तिष्क में ज्ञान, हृदय में धर्मवीरता = दिव्य गुण और शरीर में शक्तिप्रदान करती हैं।

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
४८३. पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा।।

हे देव! दिव्य गुणयुक्त उपासक! तू मनसा, वाचा, कर्मणा अपने जीवन को बाहर-भीतर से निरन्तर शुद्ध-पवित्र रख। उपासना से उत्पन्न हुई तेरी मस्ती, तेरा उल्लासमय जीवन तुझे परमात्मा की प्राप्ति करानेवाला हो। तू अपने स्वभाव और धारणशक्तियों से अनन्त बलशाली और सर्वव्यापक परमात्मा में स्थित हो।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ १ २ ३ २ ३ २
४८४. पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्।।

जीवन में प्रवाहित होनेवाला और जीवन को पवित्र करनेवाला आनन्दरस सब लोगों का कल्याण करनेवाली महाज्योति परमेश्वर को हमारे हृदय में उसी प्रकार प्रकट कर देता है, जैसे अन्तरिक्षलोक में आश्चर्यजनक विद्युत् उत्पन्न होती है।

ऋषिः–काश्यपोऽसितः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ २
४८५. परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया।।

चन्द्रमा के समान आह्लाददायक आनन्दरस जब मधुर धाररूप में शरीर के अंग-प्रत्यंग में सर्वत्र प्रवाहित हो जाता है तब यह योग-मार्ग में प्रकट होनेवाली दिव्य-ध्वनियों को जागरित कर देता है और परमेश्वर द्वारा उपदिष्ट, मनुष्य की सर्वविध वृद्धि = उन्नति की कारणभूत वेदवाणी के गानों द्वारा जीवन में हर्ष, उल्लास और मस्ती भर देता है।

ऋषिः–काश्यपोऽसितः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २
४८६. परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः। कारुं बिभ्रत्पुरुस्पृहम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्दरस की धाराएँ मेरे जीवन में चारों ओर प्रवाहित हो गई हैं। ये धाराएँ जीवन में कवित्व शक्ति और तत्त्वदृष्टि उत्पन्न करती हैं। ये मेरे हृदय-सरोवर को दिव्य, उदात्त, उच्च भावना-तरंगों से तरंगित करती हैं और इन आनन्दरसधाराओं से पूर्ण मैं स्पृहा (चाहने) योग्य संसार के रचयिता परमेश्वर को अपने हृदय में धारण करता हूँ।

।। यहाँ पाँचवाँ प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ षष्ठः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—अमहीयुः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३र ३२३२३ १२ ३ १ २र १२३ १ २
४८७. उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः।।

जीवन का उत्तम विकास करनेवाले, कर्मों को शीघ्रता से करनेवाले, दिव्य गुणयुक्त, चरित्रवान् विद्वान् अपनी श्रद्धा-भक्ति-समन्वित उपासना द्वारा सांसारिक दुःखों के नाशक, काम आदि शत्रुओं को कुचल डालनेवाले, वेदवाणियों द्वारा स्तुत्य, जीवन को अत्यन्त परिमार्जित—दिव्य, उत्तम बनानेवाले इन्दुम् = चन्द्रमा के समान आह्लाददायक परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त करते हैं।

ऋषिः—बृहन्मतिः आंगिरसः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३ १२ ३२उ ३ २ ३ १२ ३ २३ १२ ३१२
४८८. पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः।।

सारे संसार को देखनेवाला (to look after)—सबकी सुध लेनेवाला, दिव्य प्रेरणाओं द्वारा उपासकों के जीवन को पवित्र करनेवाला परमेश्वर काम-क्रोध आदि शत्रुओं का पराभव कर सबसे ऊँचा—महान् होकर विराजता है। विद्वान् लोग उपासकों के जीवन को सद्गुणों से पूरित करनेवाले उस परमेश्वर को ध्यान-धारणाओं द्वारा अपने हृदय-मन्दिर में प्रदीप्त करते हैं—प्रकाशित करते हैं।

ऋषिः—जमदग्निः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २
४८९. आविशन्कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। इन्दुरिन्द्राय धीयते।।

योगाभ्यास द्वारा उत्पन्न हुआ प्रभु-उपासना का आनन्दरस हृदयरूपी घट में प्रवेश करता हुआ सम्पूर्ण शोभाओं—उत्तमताओं—धृति, क्षमा, दम आदि दिव्य गुणों को प्राप्त कराता है, परन्तु प्राप्त तभी कराता है जब यह आनन्दरस परमेश्वर के प्रति समर्पित किया जाता है।

ऋषिः—प्रभुवसुः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ २ १ २ ३ १ २
४९०. असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः। कार्ष्मन् वाजी न्यक्रमीत्।।

प्रभु-उपासना का आनन्दरस हृदय की पवित्रता के निमित्त उत्पन्न किया जाता है। इस सोम के उत्पन्न होने पर हृदय में ईर्ष्या-द्वेष आदि कलुषित भावनाएँ उत्पन्न नहीं होतीं, मन निर्मल बना रहता है। यह सोम मस्तिष्क को तेजस्वी और शरीर को सुदृढ़ बनाने के लिए उत्पन्न किया जाता है। जैसे रथ में जुड़ा हुआ उत्तम घोड़ा कठिन मार्ग को भी वेग से पार कर जाता है, उसी प्रकार यह आनन्दरस जीवन में गति और वेग प्रदान करता हुआ मनुष्य को उसके लक्ष्य-स्थान पर पहुँचाता है—निश्चय ही उसे ब्रह्म की प्राप्ति करा देता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-मेध्यातिथिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२उ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १ २

४९१. प्र यद् गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः। घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्।

जैसे सूर्य-किरणें भरण-पोषण करनेवाली, प्रकाशमान और गतिशील हैं, वे जब उग्र रूप में आक्रमण करती हैं तब पृथिवी के अन्धकार को नष्ट कर देती हैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक आनन्दरस की धाराएँ जब शरीर में गतिशील होती हैं तब वे चित्त के तामसिक आवरण को हटा देती हैं, आत्मबल का पोषण करती हैं, जीवन को प्रकाशमान बनाती हैं और अन्त में परमात्मा तक पहुँचा देती हैं।

ऋषिः-निध्रुविः काश्यपः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २

४९२. अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः। नुदस्वादेवयुं जनम्।।

हे परम रसीले प्रभो ! आप संहार करने योग्य काम-क्रोध, लोभ आदि वृत्तियों को नष्ट करते हुए प्रवाहित होत हैं और उपासकों के जीवनों को पवित्र करते हैं। आप उत्तम कर्मसंकल्पों और यज्ञिय भावनाओं को प्राप्त कराते हैं। इस प्रकार आप हमारे जीवन में आनन्द और उल्लास को प्रकट करते हैं। हे सोम ! आप नास्तिक और दिव्य गुणों को न चाहनेवाले मनुष्य को ऐसी प्रेरणा करो कि वह भोगों से ऊपर उठकर आत्मा की ओर झुकाववाला हो जाए।

ऋषिः-निध्रुविः काश्यपः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २

४९३. अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः।।

हे परम रसीले प्रभो ! आप हमारे जीवन में उस धारारूप से प्रवाहि हों और हमें बाहर भीतर से शुद्ध-पवित्र बना दें, जिस धारा से आपने द्युलोक में सूर्य को चमकाया है। आप अपने उपासकों को मानव हितकारी कर्मों में प्रेरित करते हैं। आपके भक्तों को मानव हितकारी कार्यों के करने में ही आनन्द और प्रसन्नता प्राप्त होती है।

ऋषिः-अमहीयुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २

४९४. स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे। वव्रिवांसं महीरपः।।

हे आनन्दरस के दिव्य स्रोत परमेश्वर ! आप मेरे जीवन में प्रवाहित हो जाएँ और मुझे सर्वथा पवित्र बना दें। आप मुझे काम-क्रोधादि वासनाओं का शिकार होने से बचा दें। आप इन्द्रियों के अधिष्ठाता इस जीव को अपनी दिव्य शक्ति का एक कण प्रदान कर दो जिससे यह ज्ञान पर परदा डालनेवाले, कामरूपी वृत्र को नष्ट कर सके। आपकी दिव्य शक्ति का अंश प्राप्त उसी को होता है जो प्रशंसनीय कर्मों को ही करता है और जीवन में महान् व्रतों के अनुष्ठान का व्रत लेता है। आपकी दिव्य शक्ति की प्राप्ति के लिए हम भी कर्मशील और व्रतशील बनें।

ऋषिः-अमहीयुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र

४९५. अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव।।

हे परम रसीले प्रभो ! आप अपनी व्याप्ति द्वारा मेरे शरीर के अंग-प्रत्यंग में पूर्णरूप में प्रवाहित हो जाओ। आपका यह स्रवण-प्रवाह जीवन में एक अवर्णनीय उल्लास उत्पन्न करता है, जिससे उपासक मस्ती में झूम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उठता है। आप अत्यन्त चञ्चल पाँच ज्ञानेन्द्रिय तथा अन्तःकरण चतुष्टय—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार—इन नौ की चञ्चलता को नष्ट कर देते हो। इन्द्रियों की चञ्चलता के नाश से ये शान्त हो जाती हैं—यही परमगति है।

ऋषिः—उचथ्यः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २
४९६. परि द्युक्षं सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा। स्वानो अर्ष पवित्र आ।।

हे परम रसीले प्रभो! निरन्तर आपका ध्यान करनेवाले उपासक को आप सब प्रकार की आध्यात्मिक सम्पत्ति प्राप्त कराइए। उसे वह शक्ति प्राप्त कराइए जो उसमें शारीरिक बल का भरण करनेवाली और प्रकाश में निवास करानेवाली हो, अर्थात् उपासक का शरीर पहलवान के समान हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ हो तथा उसमें ऋषि की आत्मा हो। हृदय में प्रदीप्त करने योग्य प्रभो! आप मेरे पवित्र हृदय-मन्दिर में आइए—अपना दर्शन दीजिए।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—मेधातिथिः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २र ३२ १ २र
४९७. अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान् मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण दिद्युते।।

सोमस्वरूप परमात्मा सुखों का वर्षक है और मलिनताओं को दूर करके शरीर को शक्ति-सम्पन्न तथा मन को निर्मल बनाता है। वह हृदय को उपासनावृत्ति से परिपूर्ण करके साधक को उदार बनाता है। वह दर्शनीय है—साक्षात् करने योग्य है और मित्र के समान हितोपदेश करनेवाला है। ऐसे परमात्मा के साथ मेल करके यह जीवात्मा भी चमक उठता है—ओजस्वी और तेजस्वी बन जाता है।

ऋषिः—भृगुः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १२
४९८. आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हम आपके मोक्ष-सुख प्राप्त करानेवाले, विघ्न-बाधाओं को परे भगानेवाले और अन्त में संसार-सागर से पार ले-जानेवाले, सर्वविध रक्षा करनेवाले, सबके द्वारा अत्यन्त काम्य—चाहने योग्य बल को—इस जीवन में सब प्रकार से वरण करते हैं—पूर्णरूप से अपनाते हैं।

ऋषिः—उचथ्यः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
४९९. अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे।।

हिंसारहित उपासना-यज्ञ के रचानेवाले हे उपासक! तूने भगवद्भक्तों के साथ मिलकर जिस आध्यात्मिक आनन्दरस को अपने पवित्र जीवन में उत्पन्न किया है, उसे हमारे पास ला अर्थात् हमें भी उस रस-पान का भागी बना। अपने आत्मा के पानार्थ तू आनन्दधारा को अपने जीवन में प्रवाहित कर।

ऋषिः—अवत्सारः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ १ २
५००. तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत् स मन्दी धावति।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह उपासक संसार में आनेवाली विघ्न-बाधाओं एवं पाप-नद से तर जाता है और आनन्दित हो जाता है जिसमें परमात्मा की उपासना से उत्पन्न हुई आनन्दरस की धाराएँ प्रवाहित हो जाती हैं। यह सत्य है कि उपासक विघ्न-बाधाओं और पाप-नद से तर जाता है। वह आनन्दित हो जाता है और उपासना-मार्ग पर आगे और आगे बढ़ चलता है।

ऋषिः-निध्रुविः काश्यपः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

५०१. आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम्। अस्मे श्रवांसि धारय।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप हमें वह सांसारिक सम्पत्ति प्रदान कीजिए जो जीवन को उल्लासमय और शक्ति-सम्पन्न बनानेवाली है। प्रसन्नता और शक्ति प्राप्त कराके हे सोम!आप हममें दिव्य श्रवण आदि योग-विभूतियाँ प्राप्त कराइए। हमें ज्ञान प्रदान कीजिए और संसार में हमें यशस्वी बनाइए।

ऋषिः-असितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

५०२. अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः। रुचे जनन्त सूर्यम्।।

(क) प्राचीन उपासकगण प्रभु-उपासना द्वारा अनुक्रम से योग की नई-नई सीढ़ियों पर पग बढ़ाते रहे हैं और आन्तरिक प्रकाश की प्राप्ति के लिए वे आध्यात्मिक सूर्य को उत्पन्न=प्रकट कर लेते हैं।

(ख) मनुष्य अनुकरण प्रिय होता है। वे आगे बढ़ने के लिए, उन्नति करने के लिए नया पग उठाते हैं। यदि उन्हें मार्ग नहीं सूझता, यदि मार्ग में अन्धकार दिखाई देता है, तब वे प्रकाश के लिए अपनी रुचि के अनुसार नया सूर्य बना लेते हैं।

ऋषिः-भृगुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

५०३. अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन् योनौ वनेष्वा।।

अध्यात्म आनन्दरस में डुबकी लगानेवाले हे उपासक! तू साधना के लिए निर्जन वनों में बैठकर और संसार की योनिरूप जगदम्बा की अमृतमयी गोद में बैठकर अत्युज्ज्वल ज्योति को प्राप्त करके सम्पूर्ण राष्ट्रों को—द्वीप-द्वीपान्तरों को प्रभु के गुण-कीर्तन से गुँजाता हुआ सर्वत्र भ्रमण कर।

ऋषिः-कश्यपो मारीचः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

५०४. वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दधिषे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप सुखों के वर्षक और कामनाओं के पूरक हैं। आप ज्योतिर्मय हैं, अतः उपासकों के जीवनों को भी प्रकाशमय बनानेवाले हैं। हे दिव्य गुणयुक्त परमेश्वर! आप अपने उपासकों को बलशाली बनानेवाले हैं, उपदेशामृत की वर्षा करना यह आपका व्रत है, सबको नियम में चलाना यह भी आपका व्रत है। सुखों की वृष्टि करते हुए आप संसार में धर्मों—जीवों के कर्तव्य-कर्मों की स्थापना करते हैं।

ऋषिः-कश्यपो मारीचः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

५०५. इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः। इन्दो रुचाभि गा इहि।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परम रसीले शान्तस्वरूप परमात्मन्! मन को वश में करनेवाले मेधावी उपासकों द्वारा प्राप्त होने योग्य होते हुए आप उपासक की अभीष्ट सिद्धि के लिए तथा परम सुख की प्राप्ति के लिए धारारूप में प्रवाहित हो जाइए। अपने रुचिकर धाराप्रवाह द्वारा आप उपासक की इन्द्रियों में भी व्याप्त हो जाइए अर्थात् उपासक की प्रत्येक इन्द्रिय को भक्तिरस में सराबोर कर दीजिए—सींच दीजिए।

ऋषिः–असितः। **देवता**–पवमानः सोम। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

५०६. मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः। अव्या वारेभिरस्मयुः।।

हे परम रसीले परमेश्वर! आप सुखवर्षक, कामनापूरक और उपासकों के जीवनों को शक्तिशाली बनानेवाले हैं, आप उपासकों को दिव्य गुणों के साथ जोड़नेवाले हैं। आप आनन्दमयी धारारूप में हमारे जीवन में प्रवाहित होओ और हमारे जीवनों को पवित्र बना दो। आप अपने रक्षणों द्वारा विघ्न-बाधाओं, बुराइयों तथा रोग-निवारण करनेवाली शक्तियों के साथ हमें प्राप्त होओ।

ऋषिः–कविः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

५०७. अया सोम सुकृत्यया महान्त्सन्नभ्यवर्धथाः। मन्दान इद् वृषायसे।।

हे आनन्दप्रद, शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप सर्वतो महान् हैं, अतः हमारी उपासना से और उत्तम योग-क्रियाओं द्वारा हमें बढ़ाइए—समुन्नत कीजिए। हमारे द्वारा अर्चित होकर आप सुखवर्षक मेघ के समान आनन्द-वृष्टि की झड़ी लगा दीजिए।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

५०८. अयं वि चर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत्।।

यह सर्वद्रष्टा, आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला शान्तस्वरूप परमेश्वर अन्तर्हित हुआ जीवमात्र का हितकारी है, उपासकों के जीवनों को पवित्र करनेवाला है। यह सर्वव्यापक प्रभु जीवों को चेतना प्रदान करता है—उन्हें अविद्या-अन्धकार से, मोहमयी निद्रा से चेताता है और प्राप्त करने योग्य अध्यात्म बल को प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

ऋषिः–अयास्य आंगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

५०९. प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि। अभि देवाँ अयास्यः।।

हे परम रसीले शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमें महान् ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अथवा हमारी महान् वृद्धि के लिए जल-तरंगों के समान आनन्दधारा की तरंगों को धारण करते हुए प्रवाहित हो रहे हो। आप उपासकों को बिना प्रयास के—स्वभावतः दिव्य गुणों की ओर ले-जाते हैं—दिव्य गुण प्राप्त कराते हैं।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

५१०. अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्।।

सौम्य स्वभाव उपासक काम-क्रोधादि शत्रुओं का संहार करता हुआ, अदान-भावनाओं को दूर भगाता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हुआ, परमेश्वर में मन न लगानेवाले—प्रभु-उपासना से विमुख मनुष्यों को उस आचरण से पृथक् करता हुआ—उन्हें प्रभु-उपासना में लगाता हुआ और स्वयं परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त करता हुआ उसके ऋण से अनृण हो जाता है—छूट जाता है।

तृतीया दशतिः

ऋषिः–भरद्वाजः कश्यपो गोतमोऽत्रिर्विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठः*। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
५११. पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः।।

हे परम रसीले परमात्मन् ! आप उपासकों के जीवनों को पवित्र करते हुए तथा उनके प्राणों की रक्षा करते हुए अविच्छिन्न धाराप्रवाह में प्राप्त होते हो। आप नाना प्रकार के रत्नों और रमणीय भोगों को धारण करनेवाले हैं। अध्यात्म-यज्ञों में आप सदा विराजमान रहते हैं। आप अत्यन्त कमनीय हैं—सबके द्वारा चाहने योग्य हैं, आनन्दप्रद हैं। आप सबका हित साधनेवाले और अति मनोहर हैं। आप जीवों को ऊर्ध्व गति प्राप्त करानेवाले और आनन्द के स्रोत हैं।

ऋषिः–भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ १ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ २
५१२. परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः।
३ १ २र ३ २ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वा३न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः।।२।।

हे उपासको ! तुम अपने हृदय में उत्पन्न किये हुए आनन्दरस को अन्य सबके जीवनों में सींच दो। यह आनन्दरस उपासना-यज्ञ की सर्वोत्तम हवि है—प्रभु को समर्पित करने के लिए सर्वोत्तम हवि है। यह आनन्दरस बाह्य और आभ्यन्तर कर्मों में बसा हुआ होकर नर-नारियों का—मनुष्यमात्र का हितकर होता है। परम पूजित योग-साधनों के द्वारा यह सोम=आध्यात्मिक आनन्दरस हृदय में उत्पन्न किया जाता है।

ऋषिः–भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ १ २र ३ १ २र ३ १ २
५१३. आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया।
२ ३ २ ३ २ ३क २र ३ २ ३ २ ३ १ २
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे।।

तप, ब्रह्मचर्य, विद्या और श्रद्धापूर्वक सेवित योगसाधनों के द्वारा तथा दोष-निवारक साधनों— यम-नियमों का अनुष्ठान करके शान्तिस्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार किया जाता है। वह परमात्मा त्रिविध दुःखों को दूर करनेवाला है। वह द्युलोक और पृथिवीलोक में उसी प्रकार प्रविष्ट हो रहा है जैसे उत्पन्न होनेवाला प्राणी शरीररूपी पुरी में प्रविष्ट होता है। वह परमेश्वर वननीय—सेवनीय हृदय को अपना निवास बनाकर जीवात्मा के दोषों, बुराइयों को दूर करके शुभ गुणों को प्राप्त कराता है।

* इस सम्पूर्ण दशति का ऋषि यही है। अगले मन्त्रों पर हम केवल 'भरद्वाजः कश्यपो०' इतना ही संकेत करेंगे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषि:–भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५१४. प्र सोम देवतीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा।
३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम्।।

हे परम रसीले, शान्तस्वरूप परमात्मन्! मुमुक्षुओं की तृप्ति के लिए आप आनन्द से उसी प्रकार पूर्ण हैं, जैसे सुमद्र जल से पूर्ण होता है। आनन्दस्वरूप आपके आनन्दरस का पान करके यह उपासक आनन्दी, मस्त, उल्लासमय और उन्मत्त-सा हो जाता है। यह मोह-निद्रा से जागरित होकर आपको पाने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है और मधु-स्रावी [मधु चुवाने–टपकानेवाले] आनन्दमयकोश की ओर गति करता है, चलता है। अब इसकी यात्रा बहिर्मुखी न होकर अन्तर्मुखी हो जाती है।

ऋषि:–भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
५१५. सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्।
१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया।।५।।

शान्तस्वरूप, परम रसीला परमात्मा अध्यात्म-यज्ञ–उपासना करनेवाले साधकों द्वारा चित्त का रक्षण करनेवाली योग-स्थलियों–योगभूमियों के प्रवाहों द्वारा हृदय-मन्दिर में साक्षात् किया जाता है। जैसे अश्वारोही तीव्रगामिनी घोड़ी के द्वारा तीव्र गति से यात्रा करता है, उसी प्रकार तीव्र संवेग द्वारा–प्रभु प्राप्ति की आकुलता और व्याकुलता द्वारा उपासक प्रभु-प्राप्ति के लक्ष्य की ओर अधिक तीव्रता से बढ़ता है। निश्चय ही आनन्दमयी धारा के द्वारा उपासक परमेश्वर की ओर अधिक वेग से बढ़ता है और ध्यान-धारणाओं द्वारा उसे प्राप्त कर लेता है।

ऋषि:–भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५१६. त्वाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ ३ १ २
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामवपरिधीँरति ताँ इहि।।

हे शान्तस्वरूप, परम रसीले, आनन्दस्वरूप परमात्मन्! मैं आपकी मित्रता के लिए दिन-प्रतिदिन आपके 'ओम्' नाम का जप करता हूँ और आपके गुणों का कीर्तन करता हूँ। मेरा भरण-पोषण करनेवाले परमात्मदेव! प्रतिदिन काम-क्रोध आदि बहुत-सी वासनाएँ मुझे आ दबाती हैं, उनसे आप मेरी रक्षा कीजिए। प्रभो! धन, प्रमाद, विलास आदि की परिधियों–घेरों में फँसे हुए मनुष्यों को उन घेरों से मुक्त कराइए, पार कराइए।

ऋषि:–भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २र
५१७. मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि।
३ २ ३ १ २ ३ १ १ ३ २ ३ १ २ ३क २र
रयिं पिशंगं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि।।

बिना हाथों के शोभन सृष्टिरचनारूप हस्त-कौशलवाले हे प्रभो! आप निर्मल हृदय-आकाश में प्राप्त होते हुए अपनी प्रेरणामयी वाणी को प्रेरित करते हैं। हे पवित्र करनेवाले प्रभो! आप उस ज्ञानरूप सम्पत्ति को प्राप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कराते हैं जो हमें सब प्रकार से पाप-शून्य बनाती है, जो ज्ञान का अगाध भण्डार है, अनन्त है, अति कमनीय है। यह हममें महती स्पृहा उत्पन्न करके हमारे जीवन-लक्ष्य को ऊँचा उठानेवाली है।

ऋषिः-भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

५१८. अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्।
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः॥८॥

मन को वश में करनेवाले—जितेन्द्रिय, उल्लासमय जीवनवाले—प्रसन्नचेता, सारे समाज में उल्लास का सञ्चार करनेवाले, सोम की रक्षा के द्वारा स्वयं सोम=शक्ति के पुञ्ज बने हुए भक्तजन अपने निर्मल हृदयाकाश में परमात्मा का ध्यान करते हुए उन्मत्त बना देनेवाले, मस्त कर देनेवाले आनन्द का अनुभव करते हैं।

ऋषिः-भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

५१९. पुनानः सोम जागृविरव्या वारैः परि प्रियः।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तम मध्वा यज्ञं मिमिक्ष णः॥९॥

हे आनन्दरस में सराबोर उपासक! प्रभु-उपासना द्वारा अपने को पवित्र करता हुआ तू अन्यों को भी पवित्र कर तथा प्रभु-उपासना में सदा जागरूक रह—उपासना में कभी आलस्य-प्रमाद मत कर। तू ईर्ष्या-द्वेष के निवारण से सबका प्रिय बना है। तू मेधावी बन गया है। इस उपासक से मनुष्य प्रार्थना करते हैं—हे प्राणविद्या-वेत्ताओं में सर्वश्रेष्ठ! अब तू हमारे जीवन-यज्ञ को मधुररस से सींच दें—हमें भी माधुर्ययुक्त बना दे।

ऋषिः-भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

५२०. इन्द्राय पवते मदः सोमासो मरुत्वते सुतः।
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः॥

शान्तस्वरूप, आनन्दमय परमात्मा जितेन्द्रिय उपासक के जीवन में प्रवाहित होता है। यह सोमस्वरूप प्रभु प्राणों की साधना करनेवाले योगियों के द्वारा हृदय-मन्दिर में साक्षात् किया जाता है। यह सोमस्वरूप परमात्मा उपासकों को सहस्रों प्रकार से धारण करनेवाला है। यह उपासक की सभी शक्तियों का विकास करता है। यह रक्षा करने योग्य अपने भक्त को अतिशयेन प्राप्त होता है। गतिशील साधक—उपासक उस सोमरूप परमेश्वर को प्राप्त करते हैं।

ऋषिः-भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

५२१. पवस्व वाजसातमोऽभि विश्वानि वार्या।
त्वं समुद्रः प्रथमे विधर्मन् देवेभ्यः सोम मत्सरः॥

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप शक्ति प्राप्त करानेवालों में सर्वश्रेष्ठ हैं। वारण करने—हटाने योग्य सब

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विघ्न-बाधाओं को दूर करके और हमारे जीवनों में प्रवाहित होकर आप हमें वरणीय सब श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए ले-चलिए। सर्वश्रेष्ठ-अत्यन्त निर्मल, शरीर के विविध अंगों का धारण-पोषण करनेवाले हृदय में आप समुद्र के रूप में उमड़े हुए हैं। देवों के लिए—दैवी सम्पत्तिवाले उपासकों के लिए आप आनन्द का सरोवर हैं—आनन्दरस बहानेवाले हैं, आनन्दरस प्रदाता हैं।

ऋषिः–भरद्वाजः कश्यपो०। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
५२२. पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च।।

हमारी प्राणशक्ति के बढ़ानेवाला और मुमुक्षुजनों का अतिप्रिय, हर्षप्रद—जीवन में उल्लास—मस्ती का सञ्चार करनेवाला, आनन्दरस की धारा के रूप में प्रवाहित होता हुआ परमात्मा निरन्तर चलनेवाले ध्यान-धारणा द्वारा पवित्र हृदय-मन्दिर में प्रकट होता है। वह सोमस्वरूप परमात्मा इन्द्रियों को नव-नवोन्मेषशालिनी बुद्धि और शान्ति प्राप्त कराता है।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–उशना काव्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
५२३. प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्व न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति।।

हे उपासक! अब तू तीव्र संवेगों से उपासना-पथ पर आगे बढ़। तू आनन्दमयकोश में स्थित हो जा। मुमुक्षुजनों द्वारा अन्तः-बाह्य—दोनों प्रकार से पवित्र होता हुआ तू शक्ति और ज्ञान प्राप्त कर। जैसे अश्वसेवक वेगवान् अश्व को लगामों द्वारा गन्तव्य लक्ष्य की ओर ले-जाते हैं, उसी प्रकार योगाभ्यासी साधकजन तुझ तीव्र संवेगी को यम-नियमों की भट्टी में पवित्र करते हुए स्तुति-प्रार्थना की वाणियों द्वारा हृदय-आकाश की ओर अथवा बृहद् ब्रह्म में ले-जाते हैं।

ऋषिः–वृषगणो वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३
५२४. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र ३ १ २
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन्।।

प्रजा-सुख की कामनावाला आनन्दप्रद परमेश्वर वेदरूपी काव्य का उपदेश करता हुआ वसु, रुद्र और आदित्य, इन्द्र और प्रजापति—इन तेंतीस देवों—सृष्टि के सभी दिव्य पदार्थों की उत्पत्ति का विशेष रूप से वर्णन करता है। उपासक भी वेद-काव्य का स्वाध्याय और प्रवचन करता हुआ सृष्टि-उत्पत्ति के रहस्यों का विवेचन करता है। महान् व्रतोंवाला महान् कर्मों और विशाल प्रज्ञा से युक्त, पवित्र—सच्चरित्र मनुष्यों का बन्धु, अपने शुद्ध तेज से उपासकों को अपने साथ बाँधनेवाला, स्वयं पवित्र तथा दूसरों को पवित्र करनेवाला, दिव्य भोग प्रदाता और कल्याण का उपदेश करता हुआ वह परमेश्वर उपासक को अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराता है—अपना दर्शन देता है और ज्ञान के रहस्यों को प्राप्त कराता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–पराशरः शाक्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५२५. तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः।।

अग्नि के समान ज्ञान-ज्योति से देदीप्यमान उपासक ज्ञान, कर्म और उपासना का वर्णन करनेवाली तीन प्रकार की वैदिक वाणियों अर्थात् ऋग्यजुः और साम का उपदेश करता है–प्रवचन करता है। यह ऋत को धारण करनेवाली और मन को प्रेरणा देनेवाली वेदवाणी का तथा विद्या, मति और बुद्धि का भी मनुष्यमात्र में प्रचार और प्रसार करता है। जैसे गौएँ अपने स्वामी की शरण में पहुँच जाती हैं, उसी प्रकार प्रभु-प्राप्ति की प्रबल इच्छावाले मननशील उपासक परस्पर रहस्य ज्ञान को पूछते हुए सौम्यस्वरूप परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं।

ऋषिः–वसिष्ठो मैत्रावरुणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५२६. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम्।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता।।

सर्वव्यापक परमेश्वर की प्रेरणा से और क्रियाशीलता के द्वारा अपने जीवन को बाहर से शुद्ध और अन्दर से पवित्र बनाता हुआ मनुष्य देव बन जाता है। यह देव दिव्य गुणों के द्वारा सर्वप्रसिद्ध आनन्दमय प्रभु के साथ संगत होता है–मेल करता है। प्रेरणा को प्राप्त हुआ यह उपासक प्रभु का गुणगान करता हुआ, उसके 'ओम्' नाम का उच्चारण करता हुआ परम पवित्र परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है। जैसे गोस्वामी पशु रखने के कारण दूध-घृत आदि से पूर्ण घरों में प्रवेश करता है, उसी प्रकार यज्ञशेष का खानेवाला, उपासना-यज्ञ में आत्मसमर्पण करनेवाला उपासक अपनी इच्छा से जब चाहे परमात्मा के साथ संगत हो जाता है।

ऋषिः–प्रतर्दनो दैवोदासिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५२७. सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णुः।।

सोमरस=प्रभु-उपासना का आनन्दरस जीवन में प्रविष्ट होकर जीवन को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बना देता है। यह सोमरस बुद्धि को, मनन शक्तियों को उत्पन्न करता है। यह दिव्यता को जन्म देनेवाला–उत्पन्न करनेवाला है। इस सोमपान से उपासक का जीवन प्रकाशमय हो जाता है। यह सोमपान हमारे अन्दर विस्तार को उत्पन्न करता है–इसके पान से मनुष्य संकुचित मनोवृत्तिवाला न रहकर उदार बन जाता है। सोमपान जीवन में अग्नि=उत्साह को उत्पन्न करता है, यह उपासक को सूर्य के समान गतिशील बनाता है। यह जीवन में 'इन्द्र' तत्त्व का विकास करता है। इन्द्र असुर-संहारक है। उपासक भी विघ्नरूप आसुर वृत्तियों का संहार करनेवाला बन जाता है और अन्त में यह सोमपान उपासक के जीवन में 'विष्णु' तत्त्व को–धारणशक्ति को उत्पन्न करनेवाला है। सोमपान करनेवाला मनुष्य परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व का धारण करनेवाला बन जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वसिष्ठो मैत्रावरुणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५२८. अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि॥

वेदवाणियाँ पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि उस प्रभु की ओर चलो जो शरीर, मन व बुद्धि तीनों का आधार है; सुख तथा सुख-साधनों की वर्षा करनेवाला है, कामनाओं का पूरक है; आयुप्रदाता और ज्ञाननिधि है; हृदयस्थरूप से वेदवाणियों का ज्ञान प्राप्त करानेवाला है—जब जीव पाप करने लगता है तब प्रभु उसे ज्ञान प्रदान कर दुष्कर्मों से रोकते हैं। वह प्रभु वरण करने योग्य, समुद्र के समान दया से द्रवणशील, रमणीय वस्तुओं और आनन्दरूप महारत्न को धारण करनेवाला और भक्तों को अभिलषित पदार्थों को प्रदान करनेवाला है।

ऋषिः–पराशरः शाक्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५२९. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत् सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः॥

शरणागत-रक्षण और दुष्ट-दमन आदि मर्यादाओंवाला, भौतिक आधार से शून्य [खम्भों से रहित] विस्तृत अन्तरिक्ष में प्रजाओं को उत्पन्न करनेवाला, सब लोकों का रक्षक परमात्मा सबको लाँघकर विद्यमान है, अर्थात् वह सर्वश्रेष्ठ है—संसार में कोई उसकी समता नहीं रखता। वह परमात्मा महाशक्तिशाली है और उपासकों को शक्ति प्रदान करता है। वह सर्वकामनाओं का पूरक है। वह पवित्र हृदय में प्रकट होता है। अविनाशी, महान् रक्षा-कर्म में संलग्न, महाशान्तिवाला वह परमेश्वर सदा विजय प्राप्त कराता है।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५३०. कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन्वनस्य जठरे पुनानः।
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो मतिं जनयत स्वधाभिः॥

प्रत्याहार-साधना-सम्पन्न उपासक योगसाधनों के द्वारा नया जन्म प्राप्त करता हुआ, आशा और कामना की लताओं को उखाड़कर मन के वन में आसन जमाकर अपने-आपको शुद्ध और पवित्र करता हुआ प्रभु का आह्वान करता है—प्रभु को पुकारता है। भक्तों द्वारा वश में किया गया परमेश्वर उन्हें सब प्रकार की अविद्या से दूर करनेवाले ज्ञान का उपदेश करता है। हे उपासको! तुम भी उस परमात्मा के लिए स्वात्मसमर्पणपूर्वक श्रद्धा उत्पन्न करो।

ऋषिः–उशना काव्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५३१. एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात्॥

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मन्! वह शान्तस्वरूप परमात्मा समीप-से-समीप और दूर-से-दूर वर्तमान है। वह अत्यन्त रसमय है। उसे प्राप्त करके तेरा जीवन भी आनन्दमय बन जाएगा। वह सुखों का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वर्षक और मनोरथों का पूरक है। वह शक्तिशाली पुरुष के पवित्र हृदय में परिपूर्णरूप से व्याप्त है। वे प्रभु उपासकों को आनन्दमय जीवन प्राप्त कराते हैं, पूरे सौ वर्ष का जीवन प्रदान करते हैं और आशा से भी अधिक धन देते हैं। प्रत्येक कोश में शक्ति प्रदान करनेवाला वह परमेश्वर वासनाओं से शून्य पवित्र हृदय में सदा विराजमान रहे।

ऋषिः–प्रतर्दनो दैवोदासिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५३२. पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये।
अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमारे जीवनों में प्रवाहित होकर हमारे जीवनों को पवित्र कीजिए। आप रसमय हैं, हमारे जीवनों को भी माधुर्ययुक्त बना दीजिए। आप सत्यनिष्ठ हैं, मुझे भी सत्यवादी बना दीजिए। आप कर्म-बन्धनों के छेत्ता हैं, मेरे कर्म-बन्धनों को भी काट दीजिए। आप द्वारा रक्षणीय ब्रह्माण्ड में आप अधिकाधिक सुख-सामग्री प्रदान कर रहे हैं। हे प्रभो! आप हमारे निर्मल मनवाले और दीप्त मस्तिष्कवाले शरीर में अवतरित होओ—इस शरीर को अपना निवास बनाओ, क्योंकि आप तृप्तिदायक हैं, आनन्द का स्रोत हैं और जीवात्मा के रक्षक हैं।

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः–प्रतर्दनः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५३३. प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना।
भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते।।

उपासकों को चाहता हुआ सेनापति परमेश्वर उपासकों के काम-क्रोध आदि सब शत्रुओं का संहार करनेवाला है। उपासकों के देवासुर-संग्राम में जब परमात्मा शरीररूप रथियों अर्थात् आत्माओं का नेता बनता है, तब इस प्रभु की उपासक-सेना हर्षित हो उठती है। उपासना-मार्ग पर आगे बढ़ते हुए अपने उपासक मित्रों के द्वारा मोक्ष-प्राप्ति के लिए की गई इन्द्रियों के अधिष्ठाता जितेन्द्रिय जीवात्मा की पुकारों को पूर्ण करता हुआ शान्तस्वरूप परमात्मा उनके क्षणभंगुर शरीररूपी वस्त्रों का हरण कर लेता है, अर्थात् उन्हें मोक्ष प्रदान कर देता है।

ऋषिः–पराशरः शक्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

५३४. प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन् वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम्।
पवमान पवसे धाम गोनां जनयन्त्सूर्यमपिन्वो अर्कैः।।

हे उपासक! जब तू पार्थिव भोगों के घेरे और ज्ञान के विघ्नभूत काम को लाँघ जाता है और इस प्रकार पवित्र हो जाता है, तब तेरे चित्त में आनन्दरसमयी धाराएँ प्रवाहित हो जाती हैं। उस समय यह उपासक प्रार्थना करता है—हे पवित्र करनेवाले प्रभो! आप मेरी इन्द्रियों में तेज प्रदान कर मुझे तेजस्वी बनाते हैं। आप ही मेरे जीवन में और मेरे मस्तिष्करूप द्युलोक में आध्यात्मिक ज्ञानसूर्य को प्रकट करते हैं और स्तुति-मन्त्रों से मेरे हृदय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

में भक्ति की भावनाओं को भरते हैं।

ऋषिः–इन्द्रप्रमितिर्वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३क २र ३ १ २र ३ १ २र
५३५. प्र गायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं हिनोत महते धनाय।
३१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
स्वादुः पवतामति वारमव्यमा सीदतु कलशं देव इन्दुः।।

हे उपासको! तुम उठते-बैठते, सोते-जागते सदा प्रभु के गुण-कर्मों का खूब गान किया करो, उसकी भली-भाँति अर्चना–उपासना किया करो। मोक्षरूपी महाधन की प्राप्ति के लिए शान्तस्वरूप परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना करो। पार्थिव भोगों के घेरे को अतिक्रमण किया हुआ आनन्दरसमय परमात्मा तुम्हें प्राप्त हो और चन्द्रमा के समान शीतल आनन्दप्रद परमेश्वर तुम्हारे हृदय-कलशों में आ विराजे।

ऋषिः–वसिष्ठो मैत्रावरुणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २
५३६. प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिषन्नयासीत्।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः।।

हे उपासको! तुम्हारे जीवनों को गति देता हुआ और तुम्हें योग-मार्ग पर आगे बढ़ाता हुआ द्युलोक और पृथिवीलोक का उत्पादक परमेश्वर तुम्हारे शरीरों में गति, प्राणों में शक्ति, मन में त्याग और बुद्धि में ज्ञान प्रदान करता हुआ रमणीय सूर्य के समान तुम्हें प्राप्त होता है। वह परमात्मा उपासक के योगाभ्यासरूप आयुधों–अस्त्र-शस्त्रों को, जिनसे काम-क्रोध आदि आसुरी भावों का विनाश होता है, तीक्ष्ण करता हुआ और अपने दया तथा प्रसादरूपी हाथों में सब प्रकार की आध्यात्मिक सम्पत्तियों को लिये हुए योग-पथ पर आरूढ़ प्रत्येक जीवात्मा को प्राप्त होता है।

ऋषिः–मृडीको वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
५३७. तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्मं द्युक्षोरनीके।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम्।।

जब प्रभु-प्राप्ति की कामनावाला मनस्वी उपासक वेदवाणी को अपनाता है, जब वह महापुरुष के धर्म–क्षुद्रता को त्याग कर उदारता को अपनाता है और दिव्यता में निवास करनेवालों के अग्रभाग में अपने को खड़ा करता है अर्थात् अत्यन्त दिव्य जीवनवाला बनता है, तब प्रबल कामना करती हुई इस उपासक की इन्द्रियाँ हृदय-कलश में उस वरणीय और सर्वश्रेष्ठ, प्रीतिपूर्वक सेवन करने योग्य, रक्षक, चन्द्रमा के समान शीतल प्रकाशवाले परम रसीले परमात्मा को प्राप्त कर लेती हैं।

ऋषिः–नोधा गौतमः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
५३८. साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी।।

सुख-दुःख, हानि-लाभ, जीवन-मरण आदि द्वन्द्वों से ऊपर उठे हुए धीर पुरुष की पाँच ज्ञानेन्द्रियों और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पाँच कर्मेन्द्रियों की दस शक्तियाँ=वृत्तियाँ एक साथ रहकर अपने ज्ञान और कर्मों को प्रभु के प्रति समर्पित करती हैं। ये शक्तियाँ=वृत्तियाँ उपासक को शुद्ध और पवित्र बनाती हैं। धीर पुरुष की वृत्तियाँ आत्मा की ओर चलनेवाली होती हैं। ये प्रणवरूपी धनुष की सहायता से उसका त्राण करती हैं, साथ ही ये उसे विशेष प्रेरणा देनेवाली होती हैं। इन प्रेरणाओं को प्राप्त कर उपासक औरों के दुःख का हरण करनेवाला हो जाता है। यह दीन-दुखियों की सेवा के लिए चारों ओर दौड़ता है। यह ज्ञान के सूर्य का प्रकाशक होता है—सामान्य जनों के अविद्या-अन्धकार को दूर करता है। इस प्रकार यह मनुष्यों के हृदय में बैठता है—सब इसे हृदय से चाहते हैं, सब इसका आदर करते हैं। यह सतत् गतिशील घोड़े के समान होता है। अपने सुख की चिन्ता न करके यह लोकहित में प्रवृत्त होता है। लोकहित में लगा हुआ यह थकता नहीं, क्योंकि यह शक्ति का पुञ्ज बन गया है।

ऋषिः–कण्वो घौरः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
५३९. अधि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः।
३ १ २ ३ १ २ ३' १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
अपो वृणानः पवते कवीयान् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म।।

शुभ कर्म और प्रज्ञाएँ इस शक्तिशाली धीर पुरुष में निवास करने के लिए स्पर्धा-सी करती हैं—होड लगाती हैं। सब प्रज्ञाएँ—गुण शक्तिशाली धीर पुरुष में निवास के लिए उसी प्रकार लालायित होती हैं, जैसे प्रजाएँ सूर्य के प्रकाश के लिए लालायित होती हैं। यह शक्तिशाली धीरवीर कर्मों का वरण करता है—सदा कर्मशील होता है और कर्मशीलता के द्वारा अपने को पवित्र बनाता है। यह अत्यधिक क्रान्तदर्शी होता है और काम-क्रोध आदि शत्रुओं के विनाश के लिए ज्ञान को बाड़े के समान बनाता है। जैसे बाड़े में बन्द करके पशुओं को वश में कर लेते हैं, उसी प्रकार ये ज्ञानरूपी बाड़े में काम-क्रोध आदि को वशीभूत कर लेते हैं।

ऋषिः–मन्युर्वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
५४०. इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा।।

पृथिवी पर सुख-सामग्री की बाढ़ लानेवाला, चन्द्रमा के समान शीतल, परम रसीला, अत्यन्त बलवान्, शान्तस्वरूप परमात्मा जितेन्द्रिय उपासक के निमित्त आनन्द-प्राप्ति के लिए सहनशक्ति और बाधक विघ्न-बाधाओं को परास्त करनेवाला बल प्राप्त कराता हुआ आनन्दधारा में उपासक की ओर गति करता है—उसे प्राप्त होता है। जीवात्मा को प्राप्त होकर वह परमेश्वर इसकी सब राक्षसी वृत्तियों को नष्ट कर देता है, इसकी अदानशीलता—कंजूसी की भावना को कुचल डालता है, नाना प्रकार के बलों का स्वामी परमेश्वर उपासक को आध्यात्मिक विभूतियाँ प्रदान करता है।

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५४१. अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व।
३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात्।।

हे परम रसीले, चन्द्रमा के समान शीतल परमात्मन्! आप धारारूप में बहनेवाले आध्यात्मिक धनों को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपासक के प्रति प्रवाहित कीजिए और मांस से निर्मित चार खानोंवाले हृदय-सरोवर में शीघ्रता से प्राप्त हो जाइए। प्रभो! आप महान् भी हैं और अत्यन्त संगमनीय भी हैं। आपकी गति—पदार्थों को गति देने की शक्ति प्रबल वायुवेग के समान है। मोक्ष-प्राप्ति के लिए महामेधावी उपासक सबको आगे ले-जानेवाले आपको धारण करते हैं।

ऋषिः–पराशरः शाक्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २
५४२. महत्तत् सोमो महिषश्चकारापां यद् गर्भोऽवृणीत देवान्।
१ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ १ २
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः

महामहिम शान्तस्वरूप तथा जगदुत्पादक परमेश्वर ने वह महान्कार्य किया है कि समष्टि जगत् को व्यक्त कर दिया। वह मुमुक्षुजनों को वरता—अपनाता है। आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले परमात्मा ने उपासक जीवात्मा में बल और शक्ति स्थापित की है और दीप्तिमान् परमात्मा ने सूर्यपिण्ड में ज्योति का आधान किया है।

ऋषिः–कश्यपो मारीचः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
५४३. असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा मनीषा।
२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति वह्निं सदनेष्वच्छ।।

जैसे युद्ध में सेनापति नियुक्त किया जाता है, उसी प्रकार शरीररूपी रथ में चलनेवाले अध्यात्म संग्राम में उस परमात्मा को सेनापति बनाया जाता है जोकि सृष्टि के आरम्भ में वेदज्ञान प्रदान करता है, जो निराकार होने के कारण बुद्धि द्वारा ही विचारा जा सकता है। वह सूक्ष्म बुद्धि और मन के द्वारा आत्मा से ही जाना जाता है—वह चर्मचक्षुओं का विषय नहीं है। वह अत्यन्त विस्तृत बुद्धि व ज्ञान ही है—ज्ञान की चरम सीमा है। उस परमात्मा को सेनापति बनाने पर उपासक की दस इन्द्रियाँ विषयों की ओर न जाकर आत्मतत्त्व की ओर चलने लगती हैं और वे हमें मेरुपर्वत के सर्वोच्च शिखर सहस्रदल-कमल में पहुँचाती हैं, जहाँ आत्मा प्रभु का दर्शन—साक्षात्कार करता है। ये इन्द्रियाँ हमें शुद्ध और पवित्र बनाती हैं। इस प्रकार जीवन को शुद्ध बनाकर ये इन्द्रियाँ मोक्ष में ले-जानेवाले परमात्मा को हृदय-मन्दिरों में प्राप्त कराती हैं।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
५४४. अपामिवेदूर्मयस्तर्त्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चाच विशन्त्युशतीरुशन्तम्।।

प्रभु को सेनापति बना लेने पर जल की तरंगों के समान उपासक की ध्यानवृत्तियाँ—प्रज्ञाएँ सब विघ्न-बाधाओं की हिंसा करती हुई अथवा शीघ्रतापूर्वक कार्य करती हुई उपासक को निश्चय से प्राप्तव्य शान्तस्वरूप परमात्मा की ओर प्रेरित करती हैं। प्रभु-दर्शन के अभिलाषी उपासक प्रभु के प्रति नत-मस्तक होते हैं, उसकी ओर चल देते हैं और इस मार्ग पर आगे बढ़ते हुए उसमें प्रविष्ट हो जाते हैं। उपासक प्रभु तक पहुँचते तभी हैं जब प्रभु-प्राप्ति की प्रबल कामनावाले होते हैं। ये उस परमेश्वर को प्राप्त करते हैं जो अपने प्रिय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मित्र जीव का सदा कल्याण चाहते हैं।

[जीव का प्रभु में विलय नहीं होता, पुत्र का माता के साथ मिलन के समान मेल होता है।]

द्वितीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–आन्धीगुः श्यावाश्विः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गन्धारः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५४५. पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम्।।

हे उपासक मित्रो! आप सब सर्वदा विजयी–संग्राम से पूर्व ही जिसकी विजय हो जाती है, आध्यायनीय–आराधना करने योग्य शान्तस्वरूप परमात्मा की प्रसन्नता के लिए उत्पन्न किये गये भक्तिरस में बाधा पहुँचनेवाले कुत्ते के समान 'भों-भों' करनेवाले, हृदय में प्रेम और भक्ति से शून्य, वाणी से भक्ति के गीत गानेवाले, वाचाल, छद्मवेशी मनुष्य को, अत्यन्त लोभवाली वृत्ति को, दीर्घजिह्वावाले कुत्ते की वृत्ति को नष्ट कर दो।

[कुत्ता जिह्वा की लोलुपता का प्रतीक है, वह वान्ताशी है–अपनी क़ै को भी चाट जाता है।]

ऋषिः–नहुषो मानवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ २ ३ २ उ ३ १ २ ३ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २
५४६. अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति। पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे।।

मोक्षदाता, शान्तस्वरूप परमात्मा उपासक के जीवन को पवित्र करता हुआ उसके हृदय-मन्दिर में प्रकट होता है। यह परमात्मा सबकी पुष्टि करनेवाला है, भोगरूप धन-प्रदाता और भजनीय–उपासनीय है। वह सारे संसार का स्वामी है। वही द्युलोक और भूलोक दोनों को प्रकट करता है।

ऋषिः–ययातिर्नाहुषः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५४७. सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः।।

अत्यन्त मधुर–रसीले, तृप्तिदायक, प्रशान्त भक्तिरस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के प्रति समर्पण करने के लिए उत्पन्न किये गये हैं। पवित्र हृदय में प्रकट होकर ये परमेश्वर के प्रति प्रवाहित हुए हैं। हे उपासको! आपको उल्लास और मस्ती देनेवाले ये भक्तिरस आपकी इन्द्रियों को भी प्राप्त हों और उन्हें तृप्त एवं मस्त बना दें।

ऋषिः–मनुः सांवरणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २
५४८. सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः। मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः।।

ज्ञान-प्रदीप्त–तेजस्वी, जीवन-मार्ग को जाननेवाले धर्मज्ञ, प्राणिमात्र के मित्र, पवित्र आचरणवाले,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

निर्दोष—पाप कर्मों से पृथक्, पवित्र विचारवाले—उत्तम ध्यानशील, स्वयंप्रकाश ब्रह्म को प्राप्त करने-वाले—ब्रह्मनिष्ठ सौम्य भक्तजन सामान्य जनों के कल्याण के लिए—अपने दर्शन से सबको कृतार्थ करने और सबको सदाचार में स्थापित करने के लिए सर्वत्र विचरण करते हैं।

ऋषिः–ऋजिष्वाम्बरीषौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
५४९. अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम्। इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभ्वासहम्।।

हे शक्तिशालिन्! जितेन्द्रिय पुरुष! तू उस परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयत्न कर, उसकी ओर चल, उसे अपने जीवन का लक्ष्य बना जो हम जीवों के लिए बल, शक्ति, तेज और ज्ञान देनेवाला है, भौतिक और आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्रदान करनेवाला है, बहुतों द्वारा कामना करने योग्य, अनन्त जीवों का भरण-पोषण करनेवाला, महायशस्वी—अपार कीर्तिवाला और बड़े-से-बड़ों का पराभव करनेवाला है।

ऋषिः–रेभसूनू काश्यपौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
५५०. अभि नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः।।

जैसे माताएँ उत्पन्न हुए पुत्र को प्रथम आयु में—बाल्यकाल में स्नेहवश चूमती है, वैसे ही इन्द्रियों के स्वामी आत्मा के प्रिय, अत्यन्त कमनीय—चाहने योग्य, शान्तस्वरूप परमात्मा की ओर, उससे द्रोह न करके प्रेम करनेवाले उपासकजन अभिगमन करते हैं, उसके प्रति आकर्षित होते हैं।

ऋषिः–रेभसूनू काश्यपौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५५१. आ हर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौंस्यम्।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
शुक्रा वि यन्त्यसुराय निर्णिजे विपामग्रे महीयुवः।।

मेधावियों में अग्रगण्य, महती मोक्षपदवी को चाहनेवाले मुमुक्षुजन कामना करने योग्य—जीव से चाहने योग्य, उपासकों के काम-क्रोध आदि शत्रुओं का धर्षण करनेवाले प्रभु की प्राप्ति के लिए अत्यन्त प्रभावशाली प्रणव='ओ३म्' रूपी धनुष को-अच्छी प्रकार तानते हैं। अपने को शुद्ध-पवित्र और शक्तिशाली बनानेवाले ये उपासक शुद्ध, पवित्र, अपापविद्ध (पापशून्य), प्राणशक्ति और प्रज्ञा के प्रदाता परमेश्वर की प्राप्ति के लिए विशेष प्रार्थनाएँ करते हैं।

ऋषिः–ऋजिष्वाम्बरीषौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
५५२. परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण।
२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
यो देवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति।।

उपासकजन राजस और तामस चित्तवृत्तियों और वासनाओं के वारण=निवारण के द्वारा उस कामना करने योग्य, दुःखों का हरण करनेवाले और सबका भरण-पोषण करनेवाले परमेश्वर को अपने ज्ञान का विषय बनाते हैं—प्रभु का चिन्तन और मनन करते हैं। वह परमेश्वर अपने आनन्द के साथ सब उपासकों को और सब

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इन्द्रियों को प्राप्त होता है।

ऋषिः-प्रजापतिर्वाच्यो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २ १ १ २ ३ २ ३ १ २र
५५३. प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः। अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः।।

जो मनुष्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अन्नों को उत्पन्न करनेवाले परमेश्वर के लिए उसके द्वारा उपदिष्ट स्तुति-वचनों का उच्चारण नहीं करना चाहता अपितु नास्तिकभाव से परमेश्वर का निरादर करता है, ऐसे आराधनाहीन, कृतघ्न और नास्तिक को तथा कुत्ते के समान लोभी, कामी और स्वजातिद्रोही व्यक्ति को अपनी संगति से वैसे ही दूर रखो जैसे योग-साधना से परिपक्व उपासक हिंसापूर्ण यज्ञों को त्याग देते हैं।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः-कविर्भार्गवः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
५५४. अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते।
१ २र ३ २ ३२उ ३ २ ३ १ २ ३ २
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विश्वञ्चमरुहद् विचक्षणः।।

संसार के तत्त्वों—पदार्थों को विविध दृष्टिकोणों से देखनेवाला महान् उपासक सदा आनन्दमग्न होकर परमात्मा के प्रिय नामों को लक्ष्य बनाकर परमात्मा की ओर चलता है और अपने जीवन को पवित्र बनाता है। यह कौन-से नामों के द्वारा प्रभु की उपासना करता है? सबके द्वारा प्राप्तव्य और पुकारने योग्य परमात्मा जिन नामों से अधिक-से-अधिक बढ़ता है, अर्थात् जिन ओम्, अग्नि, वायु, आदित्य, ब्रह्म, इन्द्र आदि नामों में परमेश्वर की भूरि-भूरि महिमा वर्णित हैं, इन नामों के अर्थभावन से अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित करके यह शरीररूपी रथ पर आरूढ़ हुआ है, शरीर का स्वामी बना है। परिणामस्वरूप यह शरीर-रथ अत्यन्त प्रकाशमय बन गया है। इसकी छत के समान मस्तिष्क रूप द्युलोक में ज्ञानसूर्य का उदय हो गया है। यह रथ अत्यन्त विशाल है। इसका हृदय अथवा मन विशाल और विशालतर हो गया है। यह रथ विविध दृष्टिकोणों से प्रशंसनीय है। इसका एक-एक अंग सुन्दर बना है, अतः सबने इसकी सराहना की है।

ऋषिः-कविर्भार्गवः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
५५५. अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र स्वानासो बृहद् देवेषु हरयः।
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
वि चिदश्नाना इषयो अरातयोऽर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः।।

हम क्रान्तदर्शी उपासकों के इन्दवः=वीर्यकण अनुत्तेजित हुए-हुए, संयम में रखे हुए शान्त और निरुद्ध होकर ऊपर की ओर गति करनेवाले हों—हम उपासक ऊर्ध्वरेता बनें। विषयों की ओर भागनेवाली हमारी प्रबल इन्द्रियाँ दिव्य गुणों में स्वयं खूब गतिशील हों। हमारी प्रत्येक इन्द्रिय शुभकार्य में ही प्रवृत्त हो। हमारी नाना-प्रकार की इच्छाएँ और कामनाएँ जो हमें दान नहीं देने देती, अतएव हमारी शत्रु हैं, वे भोगरहित हो जाएँ, हमें दुःख देनेवाली एषणाएँ समाप्त हो जाएँ। वासनाओं को समाप्त करके हमारे सब साथी उपासक इन्द्रियों के स्वामी अर्थात् जितेन्द्रिय बनें। हमारी शुभ इच्छाएँ सफल हों। हम सबकी बुद्धियाँ पदार्थों को बाँटकर सेवन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करनेवाली हों।

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १२ ३ १२
५५६. एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टमः।
३ २ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ १ ३ १ २ ३ १२
अभ्यृ३तस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धेनवः।।

(क) यह उपासक सर्वोत्कृष्ट आनन्दमयकोश में रहता हुआ अत्यन्त माधुर्यवाला बन जाता है। यह प्राणिमात्र के कल्याण के लिए सदा प्रभु से प्रार्थना करता है और दुष्टों के संहार के लिए परमेश्वर का अस्त्र बन जाता है। यह कर्मरूपी बीज बोनेवालों में सर्वश्रेष्ठ है। इसके द्वारा बोये गये पुण्यरूपी बीज सुखरूपी फलों को उत्पन्न करनेवाले हैं अथवा इन्द्रियों के अधिष्ठाता जितेन्द्रिय पुरुष का शरीर वज्र के समान हो जाता है। इसका शरीर सब शरीरों में सुन्दरतम हो जाता है। इस उपासक की उपदेश-वाणियाँ सर्वत्र पहुँचती हैं। इसकी उपदेश-वाणियाँ सत्यमय होती हैं—यह असत्य नहीं बोलता। इसकी वाणी लोगों के दुःखी हृदयों को सान्त्वना देनेवाली होती हैं, घावों को भरनेवाली होती हैं, हताशों को उत्साहित करनेवाली और अज्ञानियों को ज्ञान-दान देनेवाली होती हैं तथा मनुष्यों की वृद्धि का कारण बनकर उन्हें तृप्त करनेवाली होती हैं।

(ख) यह अत्यन्त रसीला, आनन्दमय परमेश्वर हृदयकोश में स्थित हुआ मनुष्यों को उपदेश देता है। यह उपासक आत्मा को पाप से रोकनेवाला वज्र=प्रकृष्ट बल है, अविद्या-ग्रन्थि के छेदन करनेवालों में सर्वश्रेष्ठ छेदन करनेवाला है। इस अमृतस्वरूप परमात्मा की सरलता से दुहने योग्य , तेज चुवानेवाली आनन्दधाराएँ चारों ओर से जीवत्मा को उसी प्रकार प्राप्त होती हैं जैसे दुधारू गौएँ रम्भाती हुई गोस्वामी या बछड़ों के पास पहुँचती हैं।

ऋषिः–ऋषिगणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
५५७. प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम्।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ . २
मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयाम्ना पथा।।

परम रसीला परमात्मा इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा के पाप-वासनाओं से शून्य, निर्मल हृदय में अवश्य प्राप्त होता है। यह प्रभु का मित्र अपने मित्र परमेश्वर के साथ किये प्रतिज्ञा-वचनों को नहीं तोड़ता, वचनभंग नहीं करता—परमात्मा के साथ की हुई प्रतिज्ञाओं का पालन करता है। जैसे गृहस्थ पुरुष युवती पत्नी, पुत्रियों और बहनों के साथ प्रेम और मर्यादित नम्रता से चलता है, उसी प्रकार सौम्य और विनीत जीवात्मा इस शरीररूपी कलश में सैकड़ों नियन्त्रणोंवाले मार्ग से चलता है। ये दृढ़ नियन्त्रण—संयमरूपी बन्धन ही इसके बन्धनों के छेदन का कारण बनता है।

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३१ २ ३१२ ३ २ ३१ २
५५८. धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।
१ २ ३२उ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा।।

मोक्षलोक का धारक परमात्मा उपासक के जीवन को पवित्र करता है और आनन्दधारारूप में प्रवाहित

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

होता हुआ उसे हृदय-मन्दिर में प्राप्त होता है। वह अविद्या-ग्रन्थि का छेदनकर्ता, आनन्दमय और मुमुक्षुओं का प्राण है—प्राणप्रिय है। उपासना-मार्ग में आगे बढ़नेवाले मनुष्य से सदा प्रसन्न करने योग्य है। वह सृष्टि का उत्पन्नकर्ता और जीवात्मा के त्रिविध क्लेशों का हर्ता है। बलों की दृष्टि से वह विद्युत् के सदृश है और प्राणियों की नस-नाड़ियों में अनायास बलों को प्रकट करता है।

ऋषिः–ऋषिगणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
५५९. वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः।
३ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः॥

सर्वद्रष्टा परमेश्वर अर्चना=उपासना करनेवालों पर सर्वविध सुखों की वृष्टि करता है, उनकी कामनाओं को पूर्ण करता है और उनके जीवनों को शुद्ध तथा पवित्र बनाता है। शान्तस्वरूप परमात्मा अह्नाम् (अ+हन्) जिसका नष्ट करना कठिन है, उस अभिमान का, उषसाम्= अन्दर ही अन्दर सन्तप्त करनेवाली वासनाओं का तथा दिवः=लोभ के कारण उत्पन्न हुई द्यूतवृत्ति का हनन कर उनसे उपासक को तार देता है। वह मनुष्यों का प्राणप्रिय है, उन्हें जीवन-रस प्रदाता है। वह घट-घट में उपदेश करता है। स्तुतियों द्वारा जीवात्मा के हृदय में प्रकट होता है।

ऋषिः–रेणुर्वैश्वामित्रः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५६०. त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि।
३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २३ १ २र
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत॥

सात छन्दोंवाली वेदवाणियाँ उपासक के उत्कृष्ट मूर्धारूप द्युलोक को आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक तीन प्रकार के सत्य=यथार्थ और वासनाओं को शीर्ण करनेवाले ज्ञान से पूर्ण करती हैं। ज्ञान के चार अन्य साधन हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार—इनके शोधन व पोषण के लिए उपासक उत्तम कर्म करता है और सदाचरण से, ठीक समय और ठीक स्थान पर कार्य करने से जीवन में निरन्तर आगे बढ़ता है, उन्नति करता है, फूलता-फलता है।

ऋषिः–वेनो भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ १र ३ १ २ ३ २
५६१. इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः॥

हे शान्तस्वरूप, परम रसीले परमात्मन्! आप इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा के लिए साक्षात् होकर आनन्दरसधारारूप में प्रवाहित हो जाइए। राक्षसी भावों और राक्षणी कर्मों के साथ सब रोग और रोगकृमि हमारे जीवनों से दूर हो जाएँ—काम-क्रोध आदि मानस और शारीरिक रोग—सभी दूर हो जाएँ। दुविधा में पड़े संशय वृत्तिवाले लोग—अन्दर कुछ और बाहर कुछ—ऐसे छलीजन आपके आध्यात्मिक आनन्दरस की मस्ती नहीं पाते, अतः आप के आनन्दरस का पान करने के लिए हम दुविधा त्यागें, मायावी और छली न बनें। हमारे इस जीवन में ज्ञानदीप्ति करनेवाले भक्तिरस हमें सच्चा धन अर्थात् प्रभु-दर्शन और मोक्ष प्राप्त कराएँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वसुर्भारद्वाजः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

५६२. असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्॥

क्रोधशून्य–जीवमात्र के साथ प्रेम करनेवाला, जीवों की अविद्या और क्लेशों का हरण करनेवाला, कामनाओं को पूर्ण करनेवाला, सुखवर्षक शान्तस्वरूप परमात्मा निर्मल हृदय में प्रकट हो गया है। यह परमेश्वर चन्द्रमा के समान दर्शनीय है। दर्शन देकर वेदवाणियों का साक्षात् रूप में उपदेश करता है। हे प्रभो ! आप उपासक को पवित्र करते हुए, अनादि काल से चले आये–नष्ट न होनेवाले उपासक के अविद्यारूपी घेरे को लाँघकर उसे प्राप्त हो जाते हो। जैस बाज़-पक्षी अपने घोंसले में आ बैठता है, वैसे ही आप स्नेहपूर्ण तथा प्रकाशमय हृदय-गृह में आ विराजते हैं।

ऋषिः–वत्सप्रीः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

५६३. प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः।
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे॥

जैसे गौएँ दूध पिलाने के लिए अपने बछड़ों की ओर जाती हैं अथवा मोक्षरूपी दूध पिलानेवाली वेदवाणियाँ मुमुक्षुओं की ओर जाती हैं, उसी प्रकार मधुर ज्ञानवाले, ब्रह्मज्ञानी, सौम्य गुणयुक्त योगी प्रकाशस्वरूप परमात्मा की ओर गमन करते हैं उसका आनन्दरस पान करने के लिए। ध्यान द्वारा हृदय-आकाश में स्थित, वेदवचनों का अनुसरण करनेवाले, सूर्य की किरणों के समान प्रकाशमान होकर वे ब्रह्म-ऊधस् (रसाधार ब्रह्म) से स्रवित हुए विशुद्ध आनन्दरस को धारण करते हैं और उसका पान करते हैं।

ऋषिः–अत्रिर्भौमः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगतीः। **स्वरः**–निषादः।

५६४. अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते।
सिन्धोरुऽछ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते।

स्वर्ण की भाँति विशुद्ध=मलरहित हुए उपासक प्रशस्तकर्म और प्रज्ञानवाले परमात्मा का मनन करते हैं, निदिध्यासन करते हैं, उसका साक्षात्कार करते हैं, आत्मसमर्पण द्वारा उसे अभिमुख करते हैं और आत्मभाव से उसके आनन्दरस का आस्वाद लेते हैं। हृदय-समुद्र की रसभरी उमंगों और तरंगों में सहसा प्रकट होते हुए अमृतरस सींचनेवाले सर्वद्रष्टा प्रभु को उपासक अपने प्राणों और श्रद्धा-भावों में ग्रहण करते हैं।

ऋषिः–पवित्र आंगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

५६५. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद् वहन्तः सं तदाशत॥

हे ज्ञानस्वरूप प्रभो ! आपका शुद्ध, पवित्र और निर्मल ज्ञानप्रकाश सर्वत्र–चहुँ दिशाओं में–सारे संसार में फैल रहा है। सर्वशक्तिमान् आप सबके, जीवमात्र के शरीरों में भी व्याप्त हो रहे हैं, परन्तु शम-दम, ब्रह्मचर्य

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आदि तप से हीन, असयमी पुरुष, कच्चा—यम-नियम आदि की भट्टी में न तपा हुआ मनुष्य आपके आनन्दरस का पान नहीं कर सकता। तपोमय जीवनवाले, योगाभ्यासी साधक ही ज्ञान को धारण करते हुए आपके आनन्दामृत का सम्यक् प्रकार भोग=पान करते हैं।

तृतीया दशतिः

ऋषिः–अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२
५६६. इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः। श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः।।

इन्द्रियों को विषयों से हटानेवाले और उपासकों को शक्तिशाली बनानेवाले, आत्मिक शान्ति प्रदान करनेवाले, हमारे परम कल्याण के लिए हृदय में आविर्भूत=निष्पन्न हुए ये परम रसीले भक्तिरस सर्वकामनाओं—मनोरथों को पूर्ण करनेवाले, आनन्दरस की वर्षा करनेवाले परमेश्वर की ओर चलें—प्रभु को प्राप्त हों।

ऋषिः–चक्षुर्मानवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२
५६७. प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव। द्युमन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम्।।

हे सौम्य गुण-सम्पन्न उपासक! तू सदा जागरणशील—आलस्य और प्रमादरहित रहता हुआ प्रभु-प्राप्ति के लिए आगे बढ़। हे परम रसीले परमेश्वर! आप जीवात्मा के लिए परिस्रवित होओ और सुख—आनन्द—मोक्ष प्राप्त करानेवाले तथा काम आदि अन्तःशत्रुओं का शोषण करनेवाले प्रकाशमय—तेजस्वी बल को हममें भर दो।

ऋषिः–पर्वतनारदौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
५६८. सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत। शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये।।

मिलकर योगाभ्यास करनेवाले हे साधक मित्रो! आओ, मिलकर बैठो। अपने जीवनों में परमात्मा के आनन्दरस को क्षरण करने के लिए परमात्मा का स्तुतिगान करो—उसके गुण गाओ। उसका गुणगान करते हुए अपने जीवनों को उन गुणों से समलंकृत करो। जैसे माता-पिता शोभा के लिए बालक को सजाते हैं, वैसे ही सबके भीतर शयन करनेवाले आत्मा को, शोभा के लिए श्रेष्ठकर्मों—दान, दया, मधुर भाषण आदि से सुशोभित करो।

ऋषिः–पर्वतानारदौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५६९. तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत। शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः।।

हे उपासक मित्रो! अपने आनन्द, उल्लास और मस्तीभरे जीवन के लिए उस निरन्तर पवित्र करनेवाले परमेश्वर का गुणगान करो। जैसे नाना प्रकार के अन्नों से बालक को तृप्त और प्रसन्न करते हैं, उसी प्रकार लोकहित के कार्यों द्वारा और प्रभु की अर्चनाओं द्वारा प्रभु को अपनी ओर आकर्षित करो तथा प्रभु के आनन्दरस का आस्वादन करो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–त्रित आप्त्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः

३ २र ३१ २ ३ २ ३२ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २३१ २ ३ २

५७०. प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्। विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता।।

प्रभु-प्राप्ति का अभिलाषी उपासक शिशु=अपनी बुद्धि को सूक्ष्म बनाने का प्रयत्न करता है, क्योंकि वह परमात्मा सूक्ष्म बुद्धिवालों को ही प्राप्त होता है। यह परमपूजित वेदवाणियों को अपने जीवन में भरनेवाला–धारण करनेवाला होता है। यह निरन्तर वेद का स्वाध्याय करता है, परिणामस्वरूप यह सत्य की ज्योति को प्राप्त करनेवाला बनता है। ज्ञानी और सत्यवादी बनकर यह उपासक सबका प्रिय बन जाता है। वेद के स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् अब यह अपने जीवन में कर्म और उपासना का विस्तार करनेवाला होता है।

ऋषिः–मनुराप्सवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३१ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २

५७१. पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा। आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः।।

हे परम रसीले! आनन्द-सागर प्रभो! आप अपने बल से मस्त कर देनेवाली आनन्दधाराओं के साथ मुमुक्षुओं के लिए उनके जीवन में धारारूप में प्रवाहित हो जाइए। अत्यन्त रसीले आप हमारे हृदयरूपी घट में भी विराजमान हो जाओ।

ऋषिः–अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र ३ १ २

५७२. सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति। अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्।।

प्रभु-प्राप्ति का इच्छुक सोम=शान्त, विनम्र और शक्तिशाली बनता हुआ, यम-नियमों के अनुष्ठान द्वारा अपने जीवन को सदा पवित्र करता हुआ, अपने हृदय को उत्साह की उमंगों और तरंगों से परिपूर्ण करता हुआ पार्थिव भोगों के घेरे को अथवा ज्ञान पर परदा डालनेवाली काम-क्रोध-लोभ की वासनाओं को नष्ट कर देता है। वासनाओं को नष्ट करके यह ज्ञान के शिखर पर पहुँचता है। ज्ञान के शिखर पर आरूढ़ होकर यह औरों को भी पवित्र बनाने के लिए इन ज्ञान-वाणियों का खूब ही उपदेश करता है।

ऋषिः–द्वित आप्त्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ २ ३ १ २

५७३. प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते। भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते।।

हमारे जीवनों को शुद्ध और पवित्र करनेवाले, जगत् के विधाता, परम रसीले और शान्तस्वरूप परमात्मा के लिए हम उपासकों द्वारा प्रशंसनीय स्तुति-प्रार्थना-वचन उच्चारित किये जाते हैं कि–हे प्रभो! स्तुति-वचनों द्वारा प्रीतिपूर्वक आपकी सेवा–उपासना करनेवाले उपासक के लिए आप भृति के रूप में समुचित फल प्रदान कीजिए–हमारे जीवनों में आध्यात्मिक पुष्टि और तुष्टि भर दीजिए।

ऋषिः–पर्वतनारदौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३१ २ १ २ ३ २ ३२३ १२

५७४. गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव। शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय।।

हे शोभन बलवाले! परम रसीले, चन्द्रसम शीतल और आह्लादक परमेश्वर! साक्षात् हुए आप हम उपासकों को जैसे गौएँ दूध देती हैं वैसे आत्मिक ज्ञान और जैसे अश्व=घोडे वेगशाली होते हैं, वैसे योग-मार्ग में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

संवेग=आकुलता और व्याकुलता प्राप्त कराइए। आप हमारी इन्द्रियों में पवित्र, दीप्त, वरणीय आनन्दरस को भर दीजिए। आप हमारी इन्द्रियों को पवित्र बनाइए, इन्हें चमका दीजिए और आनन्दरस से भरपूर कर दीजिए।

ऋषिः–पर्वतनारदौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २ ३ १ २
५७५. अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत। गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि।।

हे परमेश्वर! हमारे कल्याण के लिए लौकिक और आध्यात्मिक धन प्राप्त करानेवाली आपकी वेदवाणियाँ सब दृष्टिकोणों से विविधरूपों में आपकी स्तुति कर रही हैं। वेदवाणियों द्वारा आपके वरणीय स्वरूप को हम अपने जीवन में बसाते हैं—आपके रंग में अपने को रंगते हैं।

ऋषिः–अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३२उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३२३ १ २
५७६. पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या। अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः।।

कामना करने और प्राप्त करने योग्य, त्रिविध तापों=दुःखों को हरनेवाला परमेश्वर कुटिलताओं को परे हटाकर संसार-सागर से पार ले-जाता है। वह उपासकों को प्राप्त होता है और उनके जीवनों को पवित्र कर देता है। हे प्रभो! आप हम स्तोताओं को धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर, शूरवीर, होने का यश प्राप्त कराइए।

ऋषिः–द्वित आप्त्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२उ ३ १ २ ३ १ २
५७७. परि कोशं मधुश्चुतं सोमः पुनानो अर्षति। अभि वाणीर्ऋषीणां सप्ता नूषत।।

परम रसीला, शान्तस्वरूप परमात्मा उपासकों के जीवनों को पवित्र करता हुआ आनन्दरसरूप मधु के क्षरण=स्रवणस्थान हृदय अथवा आनन्दमयकोश की ओर गति करता है अर्थात् हृदय में प्राप्त होता है। मन्त्रद्रष्टा ऋषियों की गायत्री आदि सात छन्दों से युक्त वाणियाँ प्रभु का स्तवन=गुणगान करती हैं। [ऋषि अपनी वाणी में स्तुति न करके सात छन्दों से युक्त वेदवाणियों से प्रभु-स्तुति करते हैं।]

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–गौरवीतिः शाक्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५७८. पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः। महि द्युक्षतमो मदः।।

हे परम रसीले, शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव के लिए प्रवाहित होओ और उसके जीवन को शुद्ध तथा पवित्र बना दो। प्रभो! आप अत्यन्त मधुरस्वरूप हैं, जीवात्मा को प्रज्ञा, संकल्पशक्ति और कर्मशक्ति प्रदान करने में सर्वश्रेष्ठ हैं। आप हर्षप्रद हैं—मस्ती देनेवाले हैं, महान् और पूजनीय हैं, अत्यन्त प्रकाशमान=ज्योतिस्वरूप और आनन्दमय हैं, अतः अपने कृपाकटाक्ष से हमें भी ऐसा ही बना दीजिए।

ऋषिः–ऊर्ध्वसद्मा आंगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २
५७९. अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्। वि कोशं मध्यमं युव।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपासकों की कामनाओं को पूर्ण करनेवाले और उन्हें सदा शुभ प्रेरणाएँ देनेवाले स्वामिन्! आप मुझे प्रकाश की ओर ले-चलिए। मैं अधिकाधिक ज्ञान-ज्योति को प्राप्त करूँ। मुझे जीवन में महान् यश प्राप्त कराइए—देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में मेरी कीर्ति हो। हे दिव्य गुण-सम्पन्न प्रभो! देवों के देव! महादेव! आप, अपने को आपके साथ जोड़ने की कामनावाले मेरे उत्तम, मध्यम और अधम बन्धनों को काट दीजिए, क्योंकि बन्धनों से मुक्त होकर ही तो आपके साथ मेरा मेल हो सकेगा। प्रभो! इतनी कृपा और कीजिए कि मेरे मध्यमकोश=मनोमयकोश को खोल दीजिए। मन की साधना से ही तो आपके दर्शन हो सकेंगे।

ऋषिः–ऋजिश्वा भरद्वाजः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २

५८०. आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम्।।

हे उपासको! अब तो आप सर्वव्यापक, स्तुति के योग्य, उत्तम कर्मों की प्रेरणा देनेवाले, ज्ञान-ज्योति प्राप्त करने की प्रेरणा देनेवाले, वननीय—कमनीय मोक्ष की प्राप्ति करानेवाले, संविभाग=बाँटकर खाने की भावना उत्पन्न करनेवाले और करुणार्द्र रसवाले—अपनी करुणा से भक्त के हृदय को भी करुणार्द्र बनानेवाले परमेश्वर को अपने हृदय में प्रकट करो, हृदय में उसका चिन्तन और मनन करो। अपनी आत्मा को उसके चिन्तन से सींच लो। आपकी नस-नस में, रक्त की एक-एक बूँद में प्रभु रम जाए—समा जाए।

ऋषिः–कृतयशा आंगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २

५८१. एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवोदुहम्। विश्वा वसूनि बिभ्रतम्।।

वासना-शून्य हृदय में निवास करनेवाले उस ब्रह्माण्डवासी—निकट-से-निकट और दूर-से-दूर वर्तमान, आनन्दरस की वर्षा करनेवाले, कामनाओं को पूर्ण करनेवाले और शक्ति प्रदाता, द्युलोक को प्रकाश से और मस्तिष्क को ज्ञान से पूर्ण करनेवाले, सब लौकिक और पारलौकिक धनों को धारण करनेवाले परमात्मा का हम उत्कट श्रद्धा और भक्ति से अपने हृदय-मन्दिर में साक्षात् करें।

ऋषिः–ऋणञ्चयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–यवमध्या गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २ ३ २

५८२. स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्। सोमो यः सुक्षितीनाम्।।

वह परम रसीला, शान्तस्वरूप परमेश्वर हृदय में साक्षात् किया जाता है जोकि निवास के लिए आवश्यक सब सांसारिक और आध्यात्मिक सम्पत्तियों का, वेदवाणियों का और निवास के योग्य उत्तमोत्तम भूमियों का प्राप्त करानेवाला है।

ऋषिः–शक्तिर्वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

२ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २

५८३. त्वं ह्यां३ग दैव्यं पवमान जनिमानि द्युमत्तमः। अमृतत्वाय घोषयन्।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और जीवन को पवित्र बनानेवाले परमप्रिय परमात्मन्! आप ही अतिशय ज्ञानप्रकाशवाले हैं। आप दिव्यजनों—मुमुक्षुओं को योगाभ्यास, उपासना, विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व आदि साधनों से ही मोक्ष मिलने का उपदेश किया करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–उरुरांगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (कुकुबुष्णिक्)। **स्वरः**–ऋषभः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
५८४. एष स्य धारया सुतोऽव्या वारेभिः पवते मदिन्तमः। क्रीडन्नूर्मिरपामिव।।

वह यह हृदयवासी और ब्रह्माण्डनिवासी अर्थात् निकट-से-निकट और दूर-से-दूर वर्तमान परमात्मा हृदय-मन्दिर में प्रकट किया जाता है। वह आनन्दधारारूप से प्रवाहित होता है और उपासक के जीवन को पवित्र बना देता है। वह विघ्न-बाधाओं और रुकावटों से हमें पार ले-जाता है। वह उल्लास और आनन्द देनेवाला है। वह परमेश्वर जल की लहरों के समान क्रीड़ा-सी करते हुए इस संसार का निर्माण कर देता है।

ऋषिः–उरुरांगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः

२ ३२ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
५८५. य उस्रिया अपि या अन्तरश्मनि निर्गा अकृन्तदोजसा।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ ३ १ २ ३ १ २
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज। ओ३म् वर्मीव धृष्णवा रुज।।

वह परमात्मा अपने पराक्रम द्वारा उषाकाल की रश्मियों को सूर्य से काट निकालता है और फैले हुए मेघ-स्थित जल को मेघों से काट गिराता है। वह पार्थिव और सौर-मण्डल को हमारे सम्मुख फैलाता है। हे पापधर्षक! वह आप हमारे इन्द्रियगत और मनोगत विकार-समूहों को वैसे ही नष्ट कर दीजिए जैसे कवचधारी सेनापति शत्रुओं का विनाश करता है।

आरण्यपर्व

तृतीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५८६. इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पुपुरि श्रवः।
१ २र ३ १ २ ३ १ २र
यद्दिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र पप्राः।।

हे परमैश्वर्यशालिन्! ज्ञानरूपी वज्रधारिन् प्रभो! आप हमें सर्वश्रेष्ठ, तेजस्वी और आत्मबल-सम्पन्न बनानेवाला, दोषों को दूर करके जीवन को शुभ गुणों से पूर्ण करनेवाला, मनोरथों का पूरक, शान्तिप्रद ज्ञान, बल और ऐश्वर्य प्रदान कीजिए जिससे हम काम-क्रोध आदि शत्रुओं का संहार कर सकें। भक्तों का, दीन-दुखियों का अविलम्ब उद्धार करनेवाले प्रभो! आप द्यु और पृथिवी दोनों लोकों को पूर्ण कर रहे हैं, अतः हमारे जीवन में भी यश, बल और ज्ञान का आधान कीजिए। हम जिसे धारण करना चाहते हैं उस ज्ञान को हमारे हृदय-मन्दिर में भर दो—अपने वेदज्ञान को हमारे जीवनों में प्रकाशित कर दो।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५८७. इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधिक्षमा विश्वरूपं यदस्य।
१ २ ३ २ ३ १ २ २उ ३ १ २ ३ २
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतं चिदर्वाक्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह परमैश्वर्यशाली परमात्मा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का और सभी मनुष्यों का शासक है। वह परमात्मा गतिशील—पशु-पक्षी, कीट-पतंग का भोगदाता, मनुष्यों का कर्मफलदाता और मोक्षप्रदाता स्वामी है। इस पृथिवी पर अनेक रूपोंवाली जो भी धन-सम्पदा है, वह सब परमात्मा की ही है। अपनी सम्पदा के उस भण्डार से प्रभु आत्मसमर्पक को नाना प्रकार के धन प्रदान करता है। प्रभु द्वारा प्रदत्त धन निवास के साधन जुटाने के लिए पर्याप्त होता है, उत्तम साधनों से कमाया जाता है और जीवन-संघर्षों में सफलता प्रदान करता है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३क २र १ २ ३ १ २ ३ २
५८८. यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जने वनं स्वः। इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत्।।

(क) जिस ज्योतिर्मय परमैश्वर्यशाली परमात्मा का सर्वत्र फैला हुआ यह रमणीय महा ब्रह्माण्ड है, वही परमात्मा आत्मसमर्पक मुमुक्षुजन को संसारिक सुख और मोक्ष-सुख प्रदान करता है।

(ख) ज्योतिर्मय ब्रह्म का ज्ञान सर्वत्र फैला हुआ है। परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का यह ज्ञान सेवन करने योग्य है—दैवी वचन होने से उपादेय है। यह प्रकाशमय और सुख देनेवाला है। यह अत्यन्त रमणीय और मनुष्यों की सर्वतोमुखी वृद्धि का कारण है। हाँ, यह ज्ञान मिलता उसी को है जो व्यक्ति प्रभु के प्रति अपना समर्पण कर देता है।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–वरुणः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
५८९. उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
१ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
अथादित्य व्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम।।

हे वरण करने योग्य और जीवों को वरण करनेवाले परमेश्वर! आप हमसे पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणारूपी उत्तम पाश को मोक्ष का आदर्श सामने रखकर छुड़ा दो, शराब, मांस, जुआ, व्यभिचार आदि अधम पाश को घृणा दिलाकर छुड़ा दो और ईर्ष्या, राग-द्वेष, काम-क्रोध आदि मध्यम पाश को अशान्ति का कारण समझाकर छुड़ा दो। हे आदित्यसम अविद्या-अन्धकार के निवारक प्रभो! पाश-मुक्ति के पश्चात् आप द्वारा दर्शाये वैदिक व्रतों में रहते हुए हम पापरहित होकर चिरस्थायी मोक्ष अथवा अखण्डैकरस आपकी प्राप्ति के योग्य हो जाएँ।

[उत्तम पाश—अविवेककृत बन्धन, सात्त्विक बन्धन, यज्ञादि कर्मरूप बन्धन। मध्यम पाश—वासनाकृत बन्धन, राजस बन्धन, दान-पुण्य आदिरूप बन्धन। अधम पाश—भोगकृत बन्धन, तामस बन्धन, पापाचरण आदिरूप बन्धन।]

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
५९०. त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः।।

हे परम रसीले! शान्तस्वरूप परमात्मन्! अपने ज्ञान से उपासकों को पवित्र करनेवाले आपकी सहायता से हम काम-क्रोध आदि के साथ चलनेवाले देवासुर-संग्राम में सदा सफलता—विजय प्राप्त करनेवाले हों। हम जीवन में श्रेष्ठ कर्मों का ही आचरण करनेवाले हों। हमारी उस विजय को और सत्कर्म अनुष्ठान को हमारे मित्र,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आचार्य, पृथिवीवासी समग्र प्रजाएँ, दयार्द्र मनुष्य, पृथिवी के समान सहनशील और क्षमाशील माताएँ और ज्ञानप्रकाश प्रदाता पितृवर्ग प्रवृद्ध करें—बढाएँ, प्रशंसित करें।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–एकपदा जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ १ २र ३ २उ३ २
५९१. इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम्।।

(क) देवासुर-संग्राम में विजय-प्राप्ति के अभिलाषी उपासको! अपनी विजय के निमित्त सुखवर्षी, कामनापूरक मुझ परमेश्वर को ही अपना एकमात्र सहायक बनाओ।

(ख) हे प्रभो! मुझ उपासक को अद्वितीय शक्तिशाली, मानव-समाज पर सुखों की वृष्टि करनेवाला—लोकोपकारक और कामनाओं का पूरक बना दीजिए।

(ग) हे सर्वदेवो! आप ऐसी कृपा करो कि मैं शक्तिशाली, सुखवर्षक, कामनापूरक परमात्मस्वरूप—परमात्मा जैसा बन जाऊँ, आप्तकाम हो जाऊँ।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
५९२. स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्रव।।

मोक्षरूपी महाधन प्राप्त करानेवाले हे प्रभो! आप, स्वार्थ-भावना से ऊपर उठकर लोक-हित के कर्म करनेवाले, योग-यज्ञ का अनुष्ठान करनेवाले, अपवर्ग-प्राप्ति के लिए अपने आपको समर्पित कर देनेवाले, अपने जीवन में केवल आपका ही वरण करनेवाले, पाप कर्मों से अपने को बचानेवाले, अपने-आपको यम-नियमों के बन्धन में बाँधनेवाले, प्राणापान की साधना करनेवाले मुझ इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा के लिए आनन्दरसधार के रूप में प्रवाहित हो जाइए।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ १ २ १ २
५९३. एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हम मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी इन लौकिक धनों और जीवन को प्रकाशमय बनानेवाले, अदीनता, आत्मजागृति, स्वाभिमान, दृढ़संकल्प, नम्रता, श्रद्धा-भक्ति आदि आध्यात्मिक धन का सेवन करते हुए और इसे दीन-दुखियों, सहायता के अभिलाषियों में बाँटते हुए तुझ स्वामी को चाहते हैं—आपकी उपासना करते हैं।

ऋषिः–आत्मा। **देवता**–अन्नम्। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१२ ३ १ २
५९४. अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम।

२ ३ १२ ३ २उ ३१२ ३ २उ ३१२३१२
यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमद्मि।।

मैं [परमेश्वर] वेदज्ञान का सर्गारम्भ में सर्वप्रथम प्रकाशक हूँ। सूर्य-चन्द्र, अग्नि, वायु आदि देवों=दिव्य पदार्थों का सर्वप्रथम जन्मदाता हूँ। उपासकों को मोक्ष प्रदान करनेवाला हूँ। जो उपासक मेरे प्रति आत्म-समर्पण करता है वही अपनी रक्षा करता है, मुझे आलिंगित करता है, मुझे प्राप्त करता है और मेरे आनन्दरस का आस्वाद लेता है। ऐसे उपासक का मैं आध्यात्मिक अन्न बन जाता हूँ। वह मेरा ही सेवन करता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है, मेरा ही उपासक बनता है। जो मुझे त्यागकर प्राकृतिक अन्न का सेवन करता है, खाता है, उसे मैं भी खा जाता हूँ—नष्ट कर देता हूँ।

द्वितीया दशतिः

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३१ २ ३ २ ३ १२ १२ ३ २३ १२
५९५. त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च। परुष्णीषु रुशत् पयः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपने कुटिल स्वभाववाली तमोगुणप्रधान, कृष्ण=मलिन स्वभाववाली रजोगुण प्रधान और शुद्ध स्वभाव=सत्त्वप्रधान प्रजाओं में—मनुष्यमात्र में देदीप्यमान, वृद्धि करनेवाले—जीवन को उन्नत करनेवाले ज्ञान को स्थापित किया है। हम भी तमोगुणी, रजोगुणी और सत्त्वगुणी—सभी प्रजाओं में ज्ञान का प्रचार करें।

ऋषिः–पवित्रः। **देवता**–पवमानः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१२ ३२३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २
५९६. अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभेति भुवनेषु वाजयुः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः।।

सूर्यादि जड़ देवों की उत्पत्ति और देवों=विद्वानों के जन्म से पूर्व विद्यमान, कामनापूरक, ज्ञानरस से सींचनेवाला, अपनी आनन्दरस-धाराओं से उपासकों के हृदयों को आर्द्र बनाता हुआ परमेश्वर उपासक के हृदय-मन्दिर में प्रकाशित होता है। वह उपासकों में ज्ञान-ज्योतियों को चमकाता है। शरीर में, पञ्चकोशों में, 'भूः' आदि लोकों में शक्ति प्रदान करता है। परमेश्वर द्वारा दी गई प्रज्ञा द्वारा योगिजन तथा अन्य विद्वान् उत्कृष्ट ज्ञानी बन जाते हैं। विद्वान् गुरुजन और पालन-पोषण करनेवाले पितृजन उस परमात्मा की स्तुति करते हुए उसे अपने हृदय-मन्दिर में धारण करते हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
५९७. इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर उपासकों की प्रार्थना सुनते ही ज्योति और स्नेह, कारुण्य और वात्सल्य—दोनों गुणों और शक्तियों का उपासक में पूर्णरूप से मेल करा देते हैं। शत्रुओं का संहारक परमात्मा परम तेजस्वी, व्यापक, रक्षासाधन-सम्पन्न, आसुरी भावों पर वज्र-प्रहार करनेवाला, सुशोभन, प्रकाशस्वरूप, प्राणिमात्र का हितकारी और अत्यन्त रमणीय—आनन्दमय हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
५९८. इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः।।

हे शत्रुओं का संहार करनेवाले परमेश्वर! अत्यन्त प्रचण्ड और तेजस्वी आप अपनी अत्यन्त तीव्र, शत्रुधर्षक रक्षण-शक्तियों द्वारा राग और वैराग्य में, इन्द्रियों और विषयों में होनेवाले युद्धों में और जीवन में काम-क्रोध आदि के साथ सहस्रों बार होनेवाले संग्रामों में हमारी रक्षा करें।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–प्रथः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१२ ३ १ २ ३१२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
५९९. प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो हविर्यत्।
३ १ २र ३२ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णो रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः।।

प्राण-संयमी योगी अपनी प्राण-साधना से उत्कृष्ट शरीररूप रथ को और अधिक रमणीय रूप प्राप्त कराता है। प्रथः=इसके लिए वह अपने हृदय को विशाल बनाता है। जिसके जीवन में विस्तार होता है, वही रमणीयता को प्राप्त होता है। इसके जीवन में एकांगी विस्तार न होकर सप्रथः=शरीर, मन और बुद्धि– तीनों का विस्तार होता है। वेदवाणी के अधिष्ठाता परमेश्वर का नाम उसकी जिह्वा पर होता है। यह हवि का भी हवि–अत्यन्त त्यागशील बनता है। काम-क्रोधादि से आक्रान्त न होनेवाला वसिष्ठ=वसनेवालों में श्रेष्ठ इस रमणीय रूप को धातुः=ब्रह्मा– सृष्टि को उत्पन्न करके ज्ञान का विस्तार करनेवाले, सर्वप्रेरक और सर्वव्यापक परमेश्वर से प्राप्त करता है।

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–वायुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ २
६००. नियुत्वान् वायवा गह्ययं शुक्रो अयामि ते। गन्तासि सुन्वतो गृहम्।।

परमात्मा जीव से कहता है– हे आत्मन्! तू प्रशस्त इन्द्रियोंवाला बनकर मेरे (परमेश्वर के) समीप आ। शुद्धस्वरूप मैं भी तुझे प्राप्त होता हूँ। जीव प्रभु की ओर गति करता है और परमात्मा जीव को अपनाता है। अब जीव प्रभु से प्रार्थना करता है– हे प्रभो! आप उपासना करनेवाले मुझ यज्ञशील भक्त के हृदय-सदन में पधारो।

ऋषिः–नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र
६०१. यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय। तत् पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम्।।

हे अनादे! ऐश्वर्यशाली प्रभो! जब आप पापरूपी वृत्र के विनाश के लिए प्रकट होते हैं– हृदय में साक्षात् होते हैं तब हमें ज्ञात होता है कि आपने ही पृथिवी का विस्तार किया है और आपने ही द्युलोक को थामा हुआ है।

तृतीया दशतिः

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–प्रजापतिः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
६०२. मयि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत्पयः। परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु।।

परम व्योम में व्यापक, सब प्राणियों का पालक, पोषक और धारक परमात्मा मुझ उपासक में आत्मबल, मानस उत्कर्ष और यज्ञ का सार– त्यागभाव, श्रेष्ठ कर्म, इन्द्रियसंयम, मधुर वाणी आदि को इस प्रकार दृढ़ करे जैसे वह द्युलोक में सूर्य आदि तेजस्वी तारे, सितारे और नक्षत्रों को धारण करता है।

ऋषिः–गौतमः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र ३ १ २
६०३. सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परम रसीले ! शान्तस्वरूप प्रभो ! अभिमानी का मान मर्दन करनेवाले आपके ज्ञानरस की धाराएँ मोक्ष के लिए प्रयत्नशील साधक– योगी को प्राप्त हों, शुद्ध सात्त्विक अन्न भी प्राप्त हों और पोषक पदार्थ भी प्राप्त हों। इन सबके द्वारा इसके मस्तिष्क में यशदायिनी उत्तम प्रवृत्तियों को धारण करो।

ऋषिः–गौतमः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २

६०४. त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः।

१ २र ३ २ १ २ ३ १ २र ३ १ २र

त्वमातनोरुर्वा३न्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ॥

हे सर्वजगदुत्पादक ! परम रसीले प्रभो ! आपने इन सब दृश्यमान, दोषों का दहन करके बल और शक्ति प्रदान करनेवाली जौ, चावल आदि ओषधियों को उत्पन्न किया है। आपने ही नदियों और समुद्रों के रूप में जल-धाराओं को बहाया है। आपने ही निर्वाह के साधनभूत गौ आदि पशुओं और निवास की साधनभूत विस्तृत वसुन्धरा=भूमि की रचना की है। आपने ही विशाल अन्तरिक्ष को फैलाया है और आपने ही सूर्य-चन्द्र आदि प्रकाशमान पिण्डों के द्वारा अन्धकार को दूर किया है। ऐसे आप सचमुच उपासना करने के योग्य हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २

६०५. अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

मैं ज्ञानप्रकाशस्वरूप, सबके अग्रणी परमात्मा की स्तुति और प्रार्थना करता हूँ। कैसे परमात्मा की ? जो हमारे समक्ष आदर्शरूप में स्थित हैं, जो आगे-से-आगे हमारा हिंत करनेवाले हैं, जो सृष्टि-यज्ञ के प्रकाशक हैं, जीवन-यज्ञ के सञ्चालन के लिए भोग और अन्त में मोक्ष प्रदाता हैं, वेदज्ञान प्रदान करके मनुष्य के कर्तव्य कर्मों के प्रकाशक–उपदेष्टा हैं, प्रत्येक ऋतु में नाना प्रकार के पदार्थों के दाता हैं, प्रत्येक ऋतु में जीव के द्वारा उपासना करने योग्य हैं, जीवों को सत्कर्म करने का उपदेश करनेवाले हैं और अनेक रमणीय पदार्थों के धारण करनेवाले तथा प्रदान करनेवाले हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३२उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र

६०६. ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां त्रिः सप्त परमं नाम जानन्।

१ २ ३ २ ३क २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २

ता जानतीरभ्यनूषत क्षा आविर्भुवन्नरुणीर्यशसा गावः॥

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! आपके उपासक वेदवाणियों में वर्णित आपके प्रमुख नाम 'ओम्' का मनन करते हैं। वेदों के गायत्री आदि इक्कीस छन्द 'ओम्' नाम को परमेश्वर का परम नाम जनाते–बतलाते हैं। पृथिवी-निवासी प्रजाएँ 'ओम्' नाम को ही मुख्य नाम जानती हुई 'ओम्' जप के द्वारा आप की साक्षात् स्तुतियाँ करती हैं। इस प्रकार स्तुति करनेवाली वे मानव प्रजाएँ अपने यश द्वारा सूर्य की किरणों के समान सुशोभित, तेजस्वी और प्रसिद्ध हो जाती हैं।

इक्कीस छन्द ये हैं–

[गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्तिः, त्रिष्टुप्, और जगती। अतिजगति, शक्वरी, अतिशक्वरी, अष्टि, अत्यष्टि धृति और अतिधृति। कृति, प्रकृति, आकृति, विकृति संकृति, अभिकृति और उत्कृति।]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३क २र
६०७. समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यस्पृणन्ति।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसमपान्नपातमुप यन्त्यापः।।

वृद्धि-क्षयरहित–एकरस समुद्र को भरनेवाली अनेक नदियाँ समुद्र की ओर चलती हैं उनमें से कुछ तो समुद्र में जा मिलती हैं और कुछ बीच में ही रह जाती हैं। इसी प्रकार कुछ वरली शुद्ध-पवित्र आप्त प्रजाएँ ही उस शुद्ध-पवित्र, अपापविद्ध, प्रकाशमान, आप्तजनों को मार्ग-भ्रष्ट न होने देनेवाले परमात्मा को प्राप्त होती हैं। शेष मलिन, अपवित्र, नास्तिक प्रजाएँ मध्य में ही रह जाती हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–रात्रिः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
६०८. आ प्रागाद् भद्रा युवतिरह्नः केतून्त्समीर्त्सति।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभूद् भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्री।।

उपासकों को आनन्द देनेवाली परमात्मा की श्री– आश्रय देनेवाली छाया पूर्णरूप से आ गई है– हमें प्राप्त हो गई है। यह 'शरण' हमारे लिए सुखदायिनी और कल्याणकारिणी है। यह हमें दुःख-बन्धन से दूर करने और मोक्ष प्राप्त करानेवाली है। यह ज्ञानरूप दिन के प्रकाशों को सम्यक् रूप से प्रेरित करती है। यह कल्याणरूपा उपासकों को ही नहीं मनुष्यमात्र को पूर्ण आश्रय देनेवाली है।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–वैश्वानरः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६०९. प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्र नो वचो विदथा जातवेदसे।
३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोम इव पवते चारुरग्नये।।

हे अध्यात्म गुरो! ज्ञानयज्ञों में, सब पदार्थों और सब जीवों में व्याप्त–सर्वव्यापक, कामनापूरक और सुखवर्षी, क्रोधशून्य, शान्त और परम स्नेही परमात्मा के दिव्य तेज और बल का आप शीघ्र प्रवचन कीजिए। वेदों के प्रकाशक, सब जगत् को जाननेवाले, सब मनुष्यों का हित करनेवाले, स्तुति के योग्य, सबको आगे ले-चलनेवाले परमात्मा के लिए हमारी स्तुति और पवित्र, मधुर उपासना-रस प्रवाहित हो रहे हैं। प्रभो! आप इन्हें स्वीकार कीजिए।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
६१०. विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञमुभे रोदसी अपां नपाच्च मन्म।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम।।

सब विद्वान् और वेदप्रवक्ता ऋषिजन मेरे यज्ञ=श्रेष्ठतम कर्मों के सम्बन्ध में ही सुनें। मैं जीवन में कोई अशुभ, पापकर्म न करूँ। सर्वसाधारण स्त्री और पुरुष तथा प्रजाओं का पतन न होने देनेवाला परमेश्वर मेरे मननीय स्तुति-वचनों को, ज्ञान के वचनों को ही सुने। हे विश्वेदेवो! मैं आपका भक्त बनकर निन्दनीय वचनों को न बोलूँ और आपके प्रतिकूल आचरण न करूँ। आपसे प्राप्त होनेवाले सुखों के निमित्त आपके समीप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रहकर—आपके सत्संग और सान्निध्य में रहकर हम सदा हर्षित हों।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–लिंगोक्ताः। **छन्दः**–महापङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ २ ३ १ २ ३
६११. यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती। यशो भगस्य विन्दतु
१ २ २ १ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यशो मा प्रतिमुच्यताम्। यशस्व्या३स्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम्।।

मेरे माता-पिता मेरे यश का कारण बनें, ज्ञान-ज्योति से चमकता हुआ मेरा मस्तिष्क और वज्र के समान दृढ़ मेरा शरीर—ये दोनों मेरे यश का कारण बनें। मेरे शिष्य और मेरे गुरु मेरे यश का कारण बनें। ऐश्वर्य-धर्म-यश-श्री-ज्ञान और वैराग्य का यश मुझे प्राप्त हो—इस छह प्रकार के भग = ऐश्वर्य को प्राप्त करके मैं अपने जीवन को यशस्वी बनाऊँ—भगवान् [भग + वान्] ही बन जाऊँ। मुझे सर्वत्र यश ही यश प्राप्त हो। मैं इस मानव समाज का यशस्वी प्रवक्ता—उत्कृष्ट प्रवचनकर्ता बन जाऊँ।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ २ ३क२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
६१२. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री।
२३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम्।।

अब मैं परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के पराक्रमपूर्ण कर्मों का प्रवचन करता हूँ। वह वज्रधारी—आसुरी भावों पर वज्रप्रहार करनेवाला, उपासकों को बन्धन से छुड़ानेवाला जिन प्रमुख कर्मों को करता है वे ये हैं—वह उपासकों के कुटिलतारूपी शत्रु को मार डालता है, कामवासनाओं को नष्ट कर देता है, पाँच पर्वोंवाली अविद्या और उसके दुष्परिणामों के प्रवाह को छिन्न-भिन्न कर देता है तथा तृप्तिकारक, ज्ञानज्योति से पूर्ण वेदों के ज्ञानामृत स्रोतों को बहा देता है।

[अविद्या के पाँच पर्व हैं—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। इसके परिणाम हैं—जाति, आयु और भोग।]

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–आत्मा। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
६१३. अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन्।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिधातुरर्को रजसो विमानोऽजस्रं ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम्।।

कोई योग-साधक अपना आत्म-परिचय देते हुआ कहता है—तेजस्वी मैं जन्म से ही—स्वभाव से ही सर्वज्ञ = धर्म, अर्थ और काम के रहस्यों को जाननेवाला हूँ। मेरी आँखों में सबके लिए स्नेह है। मैं प्राणिमात्र को स्नेह की दृष्टि से देखता हूँ। मेरे मुख में अमृत है—मेरी वाणी में संजीविनी शक्ति है। मैं सबके साथ मीठा बोलता हूँ, मैं किसी के साथ कटु और कड़वा नहीं बोलता। सत्संकल्प, सत्साधन और सत्समारम्भ—ये तीन मेरा निर्माण करनेवाले हैं। मैं पूजनीयों का आदर-सत्कार करनेवाला हूँ अथवा साधना में सिद्ध बनकर—मैं पूजनीय बन गया हूँ। मैं अपने संकल्प के अनुकूल अपने संसार का निर्माता हूँ—लोक के पीछे चलनेवाला नहीं हूँ। मैं अविनाशी हूँ। मैं सबको प्रकाश प्रदान करनेवाला हूँ। अब मैं अपने को दे डालनेवाला—लोकोपकार में जीवन अर्पण करनेवाला हो गया हूँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ २ ३ १ २र ३ २र ३ १ २र ३ १ २
६१४. पात्यग्निर्विपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्यस्य।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः॥

सर्वज्ञ, अग्रनायक परमेश्वर पक्षी की भाँति निरन्तर गमनशील आत्मा के अगले पद–जन्मान्तर देह की रक्षा करता है, जीवात्मा के कर्मानुसार उसका अगला शरीर सुरक्षित रखता है। सर्वमहान् प्राप्तव्य और पुकारने योग्य परमेश्वर सूर्य के समान क्रियाशील, जीवन्मुक्त आत्मा के सेवन करने योग्य मोक्ष की रक्षा करता है। प्रकाशस्वरूप परमात्मा नाभि=बन्धन में आनेवाले–अर्थात् जन्मधारण करनेवाले सात ऋषियों (दो नेत्र, दो कान, दो नासिका-छिद्र और एक मुख) के शिरोभूत जीवात्मा की रक्षा करता है। सर्वगत, सबको प्राप्त परमेश्वर अपने अन्दर दिव्यता को धारण करनेवाले उपासकों के अभ्युदयरूप सांसारिक सुख की रक्षा करता है।

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
६१५. भ्राजन्त्यग्ने समिधान दीदिवो जिह्वा चरत्यन्तरासनि।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
स त्वं नो अग्ने पयसा वसुविद्रयिं वर्चो दृशेऽदाः॥

हे सम्यक् प्रकाशमान और अन्यों को प्रकाशित करनेवाले अग्रनायक परमेश्वर! निरन्तर आपके नाम-स्मरण से तेजस्विनी बनी हुई जिह्वा मुख में गतिशील होती है अर्थात् जिह्वा से मैं सदा आपके नामों का उच्चारण करता हूँ। हे सर्वोन्नति साधक परमेश्वर! आप निवास के लिए आवश्यक सभी धनों को प्राप्त करानेवाले हैं। आप हमें रयि=धन और उत्तम स्वास्थ्य तथा प्राणशक्ति और तेजस्विता प्रदान कीजिए जिससे हम आपका दर्शन कर सकें।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–ऋतुः। **छन्दः**–पङ्क्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः

३ १ २र ३ १ २र
६१६. वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र १ १ २र
वर्षाण्यनु शरदो हमेन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः॥

(क) हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! प्राणायाम की साधना से मेरे प्राण बार-बार आप में रमण करनेवाले हों, स्तुति=आपके गुणगान द्वारा मेरी वाणी आप में रमण करनेवाली हो, संसार में फैले आपके सौन्दर्य को देख-देखकर और आपकी महिमा के पाठ पढ़-पढ़कर मेरी आँखे बार-बार आपमें रमण करनेवाली हों, चिन्तन और मनन द्वारा मन बार-बार आपमें रमण करनेवाला हो, मेरा प्रतिष्ठान=नाभि के नीचे का अंग आसन और सदाचरण द्वारा बार-बार आपमें रमण करनेवाला हो।

(ख) प्रभु-नामस्मरण से प्रसन्न हुआ व्यक्ति कह उठता हैं–प्रभो! आपके द्वारा निर्मित वसन्त ऋतु कैसी मनोहारी एवं रमणीय है। वसन्त ऋतु में सर्वत्र एक अलौकिक शोभा छा जाती है। ग्रीष्म ऋतु भी निश्चय ही रमणीय है। प्रचण्ड गर्मी के पश्चात् रिम-झिम बरसती हुई वर्षा की बूँदें किसका मन नहीं मोह लेतीं। वर्षा के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पश्चात् शरद्, हेमन्त और शिशिर—ये तीन ऋतुएँ भी सचमुच अत्यन्त रमणीय हैं।

[प्रभु की बनाई सब ऋतुएँ रमणीय हैं, अतः उपासना के लिए सभी ऋतुएँ उपयोगी हैं। ऋतुओं की निन्दा न करके किसी भी ऋतु में प्रभु की उपासना आरम्भ कर देनी चाहिए।]

ऋषिः—नारायणः। **देवता**—पुरुषः। **छन्दः**—अनुष्टुप्। **स्वरः**—गान्धारः।

६१७. सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशांगुलम्।।

ब्रह्माण्डरूपी पुरी में वास करनेवाला परमात्मा अनन्त सिरोंवाला अर्थात् सर्वज्ञ है। सभी प्राणियों के सिर उसी परमात्मा में रक्खे हुए हैं। वह अनन्त नेत्रोंवाला—सर्वद्रष्टा है। वह अनन्त पैरोंवाला अर्थात सर्वव्यापक है। प्राणिमात्र की आँखें और पैर उसी परमात्मा में समाये हुए हैं। वह परमेश्वर इस सारे ब्रह्माण्ड को अन्दर-बाहर सब ओर से घेरकर और इस दशाङ्गुल (पाँच सूक्ष्मभूत और पाँच स्थूलभूत) ब्रह्माण्ड को लाँघकर उसके बाहर भी निवास करता है और सबके हृदय (दशाङ्गुल) में भी विराजमान है। यहीं जीव को परमात्मा का दर्शन होता है।

ऋषिः—नारायणः। **देवता**—पुरुषः। **छन्दः**—अनुष्टुप्। **स्वरः**—गान्धारः।

६१८. त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
तथा विष्वङ् व्यक्रामदशनानशने अभि।।

ब्रह्माण्डरूपी पुरी में निवास करनेवाले परमात्मा का तीन चौथाई भाग अर्थात् बहुत बड़ा भाग संसार से पृथक् हुआ प्रकाशित हो रहा है उस परमेश्वर का एक चौथाई भाग=अत्यन्त अल्प भाग इस संसार में बार-बार उत्पत्ति-प्रलय के चक्र से प्रकट होता रहता है। वही परमात्मा अपने सामर्थ्य से पदार्थों का भोग करनेवाले चेतन और भोग न करनेवाले जड़—दोनों प्रकार के जगत् में व्याप्त होकर अपना विक्रम—पराक्रम दर्शा रहा है।

[परमात्मा शरीरधारी नहीं है। तीन चौथाई और एक चौथाई—ऐसा विभाग परमात्मा में नहीं हो सकता। केवल समझाने की दृष्टि से ऐसा कहा गया है।]

ऋषिः—नारायणः। **देवता**—पुरुषः। **छन्दः**—अनुष्टुप्। **स्वरः**—गान्धारः।

६१९. पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।
पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

जो उत्पन्न हुआ, जो उत्पन्न होगा और जो यह वर्तमान जगत् है—यह सब पूर्ण पुरुष परमात्मा के अन्दर ही विद्यमान है— उसी के आधार में स्थित है। सब भूत—उत्पन्न हुए सारे पदार्थ और प्राणी इस परमात्मा के एक अंशमात्र में हैं। इस जगत्सृष्टा के सत्, चित्, आनन्दस्वरूप तीन अंश विनाशरहित मोक्षधाम में विद्यमान रहते हैं।

[परमात्मा के विभाजन का तात्पर्य इतना ही है कि यह सारा ब्रह्माण्ड परमात्मा की अपेक्षा बहुत छोटा-सा है। परमात्मा जगत् की अपेक्षा बहुत बड़ा है।]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–नारायणः। **देवता**–पुरुषः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
६२०. तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पूरुषः। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

यह दृश्य और अदृश्य सारा ब्रह्माण्ड उस परमात्मा के महत्त्व का सूचक है। ब्रह्माण्डरूपी पुरी में निवास करनेवाला वह परमेश्वर इस ब्रह्माण्ड से बहुत बड़ा है। वह परमात्मा जीवात्माओं के मोक्ष-सुख का भी स्वामी है और जो अन्न द्वारा बढ़ता है उस शरीर आदि का भी प्रभु ही स्वामी है।

ऋषिः–नारायणः। **देवता**–पुरुषः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
६२१. ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
२ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ २
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।

सर्वप्रसिद्ध परमात्मा ने सर्वप्रथम विशेषरूप से प्रदीप्त अण्डाकार एक गोला उत्पन्न किया। इस विराट्=अण्डाकार गोले का अधिष्ठाता वह सर्वव्यापक परमेश्वर ही था। उत्पन्न हुआ-हुआ वह अण्डाकार गोला अनेक खण्डों में विभक्त हो गया। इस विराट् की उत्पत्ति के पश्चात् परमात्मा ने इस भूमि की और जीवात्माओं के शरीर की रचना की।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–द्यावापृथिवी। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
६२२. मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ ये अप्रथेथाममितमभि योजनम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
द्यावापृथिवी भवतं स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः।।

हे द्युलोक और पृथिवीलोक! मैं तुम दोनों को संसार के सभी प्राणियों का अत्युत्तम प्रकार से पालन और पोषण करनेवाला जानता और मानता हूँ। ये द्युलोक और पृथिवीलोक जो अपरिमित विस्तार से फैले हुए हैं—क्या हमारे लिए ये कभी कम पड़ जाएँगे? कदापि नहीं। ये द्युलोक और पृथिवीलोक हमें सुख देनेवाले हों। ये दोनों हमें भोजन-सामग्री के अभाव में होनेवाले पाप और कष्टों से बचाएँ।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६२३. हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो ते हरितौ हरी। तं त्वा स्तुवन्ति कवयः पुरुषासो वनर्गवः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपके द्वारा रचित यह संसार अत्यन्त मनोहर है। आपके अद्भुत रचना-कौशल को देखकर मन मुग्ध हो जाता है। आपको भक्तों की ओर ले-जानेवाले आपके वात्सल्य और कारुण्य—ये दो गुण भी अत्यन्त मनोहर हैं। क्रान्तदर्शी विद्वान्, पौरुष-सम्पन्न भक्त और अरण्यवासी ऋषि अथवा विरक्त संन्यासी सर्वप्रसिद्ध और अनेक गुणों से युक्त आपकी स्तुति करते हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–आत्मन आशीः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
६२४. यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत। सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा सं सृजामसि।।

सुवर्ण=सोने का जो तेज है, गौओं, सूर्य-रश्मियों और वेदवाणियों का जो तेज है, सत्यस्वरूप परमेश्वर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

का जो तेज है, उससे मैं अपने आपको अलंकृत करूँ। मनुष्य स्वर्ण के समान हितकर हो, गुणों में रमणीय हो और अपने व्रतों में अडिग हो। वह गौओं के समान ज्ञानदुग्ध प्रदान करे, सूर्य के समान तेजस्वी हो और वेदवाणियों के समान यथार्थ ज्ञान का उपदेश करे। वह सत्यस्वरूप ब्रह्म के समान सत्यस्वरूप हो, सदा सत्य बोले, सत्य माने और सत्य ही करे, सत्यव्रतधारी हो।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३क २र ३ १ २
६२५. सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज ईशे ह्यस्य महतो विरप्शिन्।
२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं वृत्रेषु शत्रून्त्सुहना कृधी नः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप हमें अपना वह बल, सहनशक्ति और पराक्रम दीजिए जिससे हम इस मायाजाल—अविद्याजाल का पराभव कर सकें, इससे छूट सकें। हे महापुरुष! हमें क्रियाशक्ति, संकल्पशक्ति और प्रज्ञालोक प्रदान कीजिए, साथ ही भक्तिरूप धन और ज्ञानरूप बल दीजिए और पापों का पराभव करने के लिए हमें सदा वर्धमान बल प्रदान कीजिए तथा हमें काम आदि शत्रुओं का पराभव करनेवाला बनाइए।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-गौः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २
६२६. सहर्षभाः सहवत्सा उदेत विश्वा रूपाणि बिभ्रतीर्द्व्यूध्नीः।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक इमा आपः सुप्रपाणा इह स्त।।

(क) हे इन्द्रियो! तुम ऋषभरूप आत्मा और मनरूपी बछड़े के साथ उत्कर्ष को प्राप्त होओ। तुम बल, पराक्रम, प्रज्ञालोक आदि उत्तम गुणों को धारण करती हुई इहलौकिक सुख और पारलौकिक मोक्षानन्द को प्राप्त करानेवाली बनो। यह जो विशाल मोक्षधाम है, इस मोक्षधाम में भरपूर पान करने योग्य सर्वव्यापक परमेश्वर है जिसके आनन्दरस का पान करने की तुम्हें प्यास लगी है, जिसका पान करना तुम्हारा चरम और परम लक्ष्य है।

(ख) ज्ञान व भक्ति के उत्कर्ष के लिए गोदुग्ध आवश्यक है, अतः उपासक प्रार्थना करता है—हे गौओ! तुम उत्तम साँडों और उत्तम बछड़ों के साथ उदय को प्राप्त होओ। लाल, काले, सफेद आदि अनेक रूपों को धारण करती हुई और सब मनुष्यों को धारण करती हुई दुगने ऊधस् = औड़ीवाली तुम उन्नति को प्राप्त होओ। यह विशाल और विस्तृत पृथिवी तुम्हारे चरने के लिए है [खुले आकाश और शुद्ध वायु में विचरनेवाली गौओं का दूध अधिक उत्तम होता है] तथा पीने के लिए उत्तम जल की व्यवस्था है। तुम सुखपूर्वक इस संसार में निवास करो।

पञ्चमी दशतिः।

ऋषिः-शतं वैखानसाः। **देवता**-अग्निः पवमानः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६२७. अग्न आयूँषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।।

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आप हमें दीर्घ जीवन प्रदान करो और हमारे जीवनों को पवित्र भी बनाओ। आप हमें बल, पराक्रम शक्ति और अन्न प्रदान कीजिए। हमें सुप्रेरणा कीजिए और मोक्ष प्राप्त कराइए। कुत्ते

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

की-सी बुरी प्रवृत्तियों [लोभ, स्वजाति-द्रोह और चापलूसी] को और कुत्ते के समान लोभी, क्रोधी, कामी, स्वजाति-द्रोही, वान्ताशी पुरुषों को हमसे दूर भगाइए।

ऋषिः–विभ्राट् सौर्यः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १२३१२ ३१२
६२८. विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहृतम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति।।

परमात्मा आत्मयाजी को कुटिलता से रहित, छल-कपट से शून्य, सरल, धार्मिक जीवन प्रदान करता है। अकुटिल और निश्छल जीवन से युक्त होकर विशेषरूप से चमकनेवाला, 'शरीर, मन व बुद्धि'–सभी दृष्टिकोणों से महान् बनकर यह परम रसीले परमात्मा के आनन्दरस का पान करता है। वायु के समान शीघ्रगामी वह परमेश्वर स्नेह के कारण प्रजाओं की दुःखों से रक्षा करते हैं, अन्न-जल आदि प्रदान कर उनका भरण–पालन और पोषण करते हैं। इस अनुपम, उदारतापूर्ण कार्य से वे अत्यन्त शोभा पाते हैं–उनका यशोगान होता है।

ऋषिः–कुत्सः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–धैवतः।

३ २ ३२३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
६२९. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।३।।

उपासक देवों का प्राणभूत, सर्वोत्तम बल, एक विचित्र सूर्य–सूर्यों का सूर्य हृदय-आकाश में उदित हुआ है। यह मित्र=सूर्य और प्राण का, वरुण=चन्द्रलोक और अपान का, =अग्नि=अग्नि और वाणी का प्रकाशक है। यह महासूर्य द्युलोक पृथिवीलोक और अन्तरिक्ष में भरपूर हो रहा है–सबको व्याप रहा है। यह सूर्य चेतन और जड़–सबका आत्मा है।

ऋषिः–सार्पराज्ञीः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
६३०. आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

यह स्तुतिगान करनेवाला जिज्ञासु योग की अगली-अगली भूमियों की ओर कदम बढ़ाता जाता है तथा माता और पितारूप प्रभु की ओर–जो प्रकाशमय और आनन्दस्वरूप है–प्रयाण करता हुआ उसकी अमृतमय गोद में [**यस्य छायाऽमृतम्**] स्थित हो जाता है।

ऋषिः–सार्पराज्ञीः। **देवला**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ २र ३ १ २र
६३१. अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्।।

अविनाशी परमेश्वर की दीप्ति उपासक के अन्तःकरण में व्याप्त हो रही है। प्रभु की यह दीप्ति उपासक में प्राण और अपान क्रिया को सुचारुरूप से गति देती है। प्राणशक्ति शरीर में बल सञ्चार करती है और अपानशक्ति सब दोषों को दूर करनेवाली होती है। वह सबमें व्याप्त, सर्वतो महान् और परमपूज्य परमेश्वर द्युलोक और अन्य लोकों का भी प्रकाशक है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–सार्पराज्ञीः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
६३२. त्रिंशद्धाम वि राजति वाक् पतंगाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः।।

वे परमेश्वर भक्त के हृदय में तीसों घड़ी विराजमान रहते हैं। भक्त सर्वव्यापक परमात्मा के लिए स्तुतियाँ समर्पित करता है अर्थात् सोते-जागते, खाते-पीते, उठते-बैठते सदा प्रभु का नाम-स्मरण करता है। इस नाम-स्मरण के परिणामस्वरूप इसका हृदय परमात्मा का निवास-स्थान बन जाता है। अहो! इस जप और परमात्मा के हृदय-सदन में विराजमान होने के कारण इस उपासक का जीवन सचमुच प्रकाशमय हो जाता है।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
६३३. अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः। सूराय विश्वचक्षसे।।

जैसे सूर्य के उदय होने पर रात्रियों के सहित सारे ग्रह-नक्षत्र, तारे-सितारे छिप जाते हैं, उसी प्रकार विश्व-द्रष्टा परमेश्वर के हृदय-मन्दिर में उदय– साक्षात् होने पर जीवन को नष्ट करनेवाले काम-क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि चोर-भाव, आसुरी वृत्तियाँ और अविद्या-अज्ञानरूपी रात्रियाँ विलीन हो जाती हैं।

ऋषिः-प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**-सूर्यः। **छन्दः**-गायत्रीः। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
६३४. अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा।।

सर्वव्यापक परमात्मा के प्रज्ञापक—संकेतित करनेवाले सर्वत्र व्याप्त गुण (नियम-व्यवस्था तथा समाधि में निहार, धूम, अर्क=सूर्य, अनिल, अनल=अग्नि, खद्योत=जुगनु, विद्युत्, स्फटिक, शशि=चन्द्रमा) मननशील और योगाभ्यास द्वारा अपनी शक्तियों का विकास करनेवालों को ज्ञान-चक्षुओं से दिखाई पड़ते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे जाज्वल्यमान अग्नियाँ सर्वसाधारण को दिखाई देती हैं।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
६३५. तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम्।।

हे सूर्यों के सूर्य! सर्वव्यापक परमात्मन्! आप त्रिविध तापों से तप्त प्राणियों को भव-सागर से पार उतारनेवाले हैं, मुमुक्षुओं को जन्म-मरण आदि दुःखों से तारनेवाले हैं। आप विश्वद्रष्टा हैं और सबके द्वारा दर्शनीय हैं। आप सबको देख रहे हैं और सब आपको देखना चाहते हैं। आप सूर्य-चन्द्र आदि बाह्य ज्योतियों और प्रज्ञालोक आदि आन्तरिक ज्योतियों के प्रकट करनेवाले हैं। सब प्रकाश करनेवाले पदार्थों को आप ही प्रकाशित कर रहे हैं।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २उ ३क २र ३ २
६३६. प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्। प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे।।

प्रभु-प्राप्ति के लिए उत्सुक उपासक दिव्य गुण-सम्पन्न विद्वानों से मेल करता हुआ अपने जीवन को दिव्य गुणों—दैवी सम्पत्ति से आलोकित करता है। मानुष-प्रजाओं—दयालु जनों की ओर जाता हुआ दया, प्रेम, सहानुभूति आदि गुणों से अपने जीवन को उन्नत बनाता है। संसार के सभी प्राणियों की ओर जानेवाला यह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपने सुख का ध्यान न करके सभी के दुःखों को दूर करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार जीवन में दिव्यता का अवतरण, दयालुता और मानवमात्र का हितसाधन ये ऐसे गुण हैं जो उपासक को ज्योतिर्मय और आनन्दस्वरूप परमात्मा के दर्शन के योग्य बनाते हैं।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १२ १२ ३ १ २
६३७. येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु। त्वं वरुण पश्यसि।।

हे पवित्रकारक! जीवनों के शोधक! भक्तों से वरण करने योग्य और भक्तों को वरण करनेवाले परमात्मन्! आप जिस कृपादृष्टि से प्राणियों को धारण करते हुए उनका ध्यान रखते हैं– पालन-पोषण करते हैं, उसी कृपाकटाक्ष से आप हम उपासकों को भी निहारें हमारा भी पालन-पोषण करें और हमें अपना दर्शन दें।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
६३८. उद् द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः। पश्यञ्जमानि सूर्य।।

हे सूर्यों के सूर्य! चराचर जगत् के आत्मा–परमात्मन्! आप द्युलोक, अन्तरिक्षलोक और पृथिवीलोक का निर्माण और दिन-रात का विभाग करते हुए तथा संसार के सभी जीवों की रक्षा करते हुए उत्कृष्ट रूप से सुशोभित हो रहे हो।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र १ ३ १२
६३९. अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्र्यः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः।

सर्वप्रेरक और चराचर जगत् के आत्मा–परमात्मा ने पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि–इन सात साधक शक्तियों को जीवात्मा के शरीर-रथ में नियुक्त किया है। ये शक्तियाँ इस रमणीय शरीर-रथ को गिरने नहीं देतीं, अपितु इसे पाप-कर्मों में पतित होने से बचाती हैं। इन सातों शक्तियों–इन्द्रिय-अश्वों=घोड़ों को पवित्र और आत्मोन्मुख रखने पर जीव परमेश्वर को प्राप्त करता है।

ऋषिः–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
६४०. सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य। शोचिष्केशं विचक्षण।

हे आनन्दप्रद! विविध जगत् के द्रष्टा हे ज्ञानस्वरूप! हे सूर्य!हे चराचर जगत् के आत्मा–परमात्मन्! पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि–आत्म-साधना द्वारा संयत किये गये और पवित्र बनाये गये–ये सात मनोहर अश्व तेजस्वरूप आपको जीवात्मा के हितरमणीय हृदय-मन्दिर में पहुँचाते हैं–आपका साक्षात्कार कराते हैं।

।।यहाँ छठा प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ महानाम्न्यार्चिकः

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराट्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २   ३ २   ३ १र २र   ३ १ २   १ २   ३ १   २

६४१. विदा मघवन् विदा गातुमनुशंसिषो दिशः। शिक्षा शचीनां पते पूर्वीणां पुरूवसो।।

हे परमपूजितधन–मोक्षैश्वर्यवाले परमात्मन्! आप सब-कुछ जानते हैं, अतः हमें जीवन का मार्ग दिखाइए–हमें गन्तव्य प्राप्त कराइए, लक्ष्य तक पहुँचने के लिए दिशा का निर्देश कीजिए। हे पालक और पूरक शक्तियों के स्वामिन्! हे शाश्वत प्रज्ञाओं–वेदवाणियों के स्वामिन्! सबके भीतर बसनेवाले और सर्वधन-सम्पन्न प्रभो! आप हमें अपने समान सशक्त बनाइए। आप हमें वेद का ज्ञान और नाना प्रकार का धन प्रदान कीजिए।

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजयतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराट्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २उ   ३ १ २ ३   २   २   १ २   ३ १ २३ १ २   ३ १ २   ३ २

६४२. आभिष्ट्वमभिष्टिभिः स्वा३ऽर्न्नांशुः। प्रचतेन प्रचेतयेन्द्रद्युम्नाय न इषे।।

जीवन-यात्रा के चार पड़ाव हैं–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इन पड़ावों में विद्यापठन, प्रजापालन, विद्यादान-पढ़ाना और प्रचार–इन चार पगों को रखना होता है। परमेश्वर कहते हैं–हे इन्द्र=जीवात्मन्! तू मार्ग के इन आक्रमणों से सूर्य-किरणों के समान चमक उठेगा–इतनी तेरी चमक होगी, अतः हे प्रकृष्ट चेतना वाले जीव! तू चेत, होश में आ, सावधान हो जा। तुझे संसार में ज्ञान-ज्योति और मोक्ष-प्राप्ति के लिए भेजा गया है, केवल अन्न=भोग-विलास, मौज-मस्ती और पशुओं की भाँति 'आहार, निन्द्रा, भय, मैथुन' के लिए तेरा जीवन नहीं है।

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराट्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २उ   ३ २ ३ १   २र

६४३. एवा हि शक्रो राये वाजाय वज्रियः।

१ २   ३   २ ३ १ २   ३ २ ३   १   २ ३   २ ३   १ २

शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जस आ याहि पिब मत्स्व।।

हे प्रभो! आप हमारे एव=अव=रक्षक बनो, क्योंकि आप हमारी रक्षा करने में समर्थ और शक्तिशाली हैं। पापमयी प्रवृत्ति के प्रति वज्रधारी इन्द्र! आप हमें धन और अन्न प्रदान कीजिए–हमें मोक्षैश्वर्य और संसार-यात्रा के लिए नाना प्रकार के भोग-पदार्थ प्रदान कीजिए। हे अत्यन्त बलशालिन्! ओजस्वी परमात्मन्! आप हमें समर्थ बनाइए। हे सबसे महान्, पूज्य एवं दानशील! दुष्टों का संहार करनेवाले परमेश्वर! आप हमें भी महान्, पूज्य और दानशील बनाइए। आप हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकट होओ, हमारी भक्ति को स्वीकार करो और हमपर प्रसन्न–कृपालु होओ।

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराट्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २   ३ २   ३ २ ३ २ ३   १ २ ३   २ ३ २ ३   १ २

६४४. विदा राये सुवीर्यं भवो वाजानां पतिर्वशाँ अनु।

१ २   ३   २   ३ १   २र ३   १ २

मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे यः शविष्ठः शूराणाम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! धन की प्राप्ति और रक्षा के लिए आप हमें प्रचण्ड पराक्रम प्रदान कीजिए। आप सब धनों, अन्नों, बलों और शक्तियों के स्वामी हैं, पदार्थमात्र को वश में रखनेवाले हैं। हे अत्यन्त दानशील, दुष्टों का दमन करनेवाले प्रभो! आप हमें बल-प्राप्ति, शक्ति-संरक्षण, धन-उपार्जन और दान-प्रदान में समर्थ बनाइए, क्योंकि आप शूरवीरों में अत्यन्त शूरवीर हैं—महाबलवान् हैं।

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराट्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २र ३ १ २ ३ २उ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ र २र
६४५. यो मंहिष्ठो मघोनामंशुर्न शोचिः। चिकित्वो अभि नो नयेन्द्रो विदे तमु स्तुहि।।

जो आप धनवानों में महादानी हैं, सूर्य के समान देदीप्यमान हैं, हे ज्ञान-सम्पन्न परमगुरो परमेश्वर! वे ही आप अपनी प्राप्ति के लिए हमें अपनी ओर चलाइए, हमें अपनी ओर उन्मुख कीजिए। हे उपासक! वे परमैश्वर्यशाली हैं, इसलिए तू परमैश्वर्यवान् की ही स्तुति किया कर—उसी के गुण गाया कर।

ऋषिः–इन्द्रोवा प्रजयतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराट्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६४६. ईशे हि शक्रस्तमूतये हवामहे जेतारमपराजितम्।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
स नः स्वर्षदति द्विषः क्रतुश्च्छन्द ऋतं बृहत्।।

सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ही सारे ब्रह्माण्ड का ईश है, शासक और स्वामी है। उस विजयशील, कभी भी पराजित न होनेवाले परमेश्वर को हम अपनी रक्षा के लिए पुकारते हैं। वह कर्मशील और ज्ञान-सम्पन्न, सबका रक्षक, सत्यस्वरूप और सर्वतो महान् परमेश्वर हमारे काम-क्रोध आदि शत्रुओं को बुरी तरह कुचल डाले या दूर भगा दे और हमारी सब द्वेष-भावनाओं को छुड़ाकर हमें सुख प्रदान करे।

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराट्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६४७. इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे जेतारमपराजितम्।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
स नः स्वर्षदति द्विषः स नः स्वर्षदति द्विषः।।

हम लौकिक धन और मोक्षैश्वर्य की प्राप्ति के लिए सदा विजयशील, किसी के भी द्वारा पराजित न होनेवाले परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का आह्वान करते हैं। वह परमेश्वर हमारे अन्तःबाह्य शत्रुओं को बुरी तरह कुचल देता या दूर भगा देता है। वह हमारी द्वेष-भावनाओं को छुड़ाकर हमें सुख प्रदान करता है।

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराट्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
६४८. पूर्वस्य यत्ते अद्रिवोंशुर्मदाय। सुम्न आ धेहि नो वसो पूर्तिः शविष्ठ शस्यते।

३ २ उ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
वशी ही शक्रो नूनं तन्नव्यं संन्यसे।।

हे ओजस्वी परमात्मन्! पुरातन—सदा से ही विद्यमान आपका जो आनन्दरस है, वह हर्ष और मस्ती देनेवाला है। हे हृदयवासिन्! आप हमें सुख में स्थापित कीजिए—हमें सुख प्रदान कीजिए। हे अतिशय बलशालिन्! कामना पूर्ण करनेवाला प्रशंसित होता है। आप भी उपासकों की सभी शुभ कामनाओं, मनोरथों के पूरक हैं, अतः अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। आप सर्वशक्तिमान् हैं और निश्चय ही सारे ब्रह्माण्ड को वश में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रखनेवाले हैं, अतः स्तुति के योग्य आपके प्रति मैं अपने-आपको समर्पित करता हूँ और आपको अपने हृदय-मन्दिर में धारण करता हूँ।

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–इन्द्रः।

३ १ २र ३ १ ३ ३ २ २ ३ २ उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
६४९. प्रभो जनस्य वृत्रहन्त्समर्येषु ब्रवावहै। शूरो यो गोषु गच्छति सखा सुशेवो अद्वयुः।।

(क) सब मनुष्यों के स्वामी हे प्रभो! हे शत्रु-संहारक परमात्मन्! भले लोगों में, श्रेष्ठ पुरुषों के समूह में स्त्री-पुरुष, गुरु-शिष्य आपकी स्तुति करते हैं–आपके सम्बन्ध में प्रवचन करते हैं–आप शूरवीर हैं-आप पराक्रमशाली और शत्रु-संहारक हैं। आप सब भुवनों में व्यापक हो रहे हैं, सबके परम स्नेही मित्र हैं, सबको उत्तम सुख देनेवाले हैं और अद्वितीय हैं–आपके समान कोई नहीं है।

(ख) हे सर्वसमर्थ परमात्मन्! मनुष्यों की वासनाओं के विनाशक प्रभो! आप ऐसी कृपा कीजिए कि पति-पत्नी–हम दोनों अर्येषु=स्वामियों–जितेन्द्रियों में गिने जाएँ। हम उच्चकोटि के जितेन्द्रिय बनें। शूरवीर वही है जो इन्द्रियों पर नियन्त्रण करता है–उन्हें अपने वश में रखता है। यह वीर सभी के साथ स्नेह करनेवाला होता है। यह उत्तम और सुख देनेवाले कर्मों को ही करता है और इसके जीवन में द्वैध नहीं होता–इसके मन, वचन और कर्म में एकता होती है।

ऋषिः–इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा। **देवता**–लिंगोक्ताः।

३ २ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
६५०. एवाह्येऽ३ऽ३ऽ३व। एवा ह्यग्ने। एवा हीन्द्र। एवा हि पूषन्। एवा हि देवाः।।

(क) हे वृत्रहन्–शत्रु-संहारक प्रभो! निश्चय से आप ही 'सखा, सुशेवः और अद्वयुः' हैं। निश्चय से हे अग्ने=प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप ही 'सखा सुशेव और अद्वयुः' हैं। सचमुच हे इन्द्र! परमैश्वर्यशालिन्! आप ही 'सखा, सुशेवः और अद्वयुः' हैं। हे पूषन्! सबका पोषण करनेवाले! आप ही वस्तुतः 'सखा, सुशेवः और अद्वयुः' हैं। देवा=नाना दिव्य गुणोंवाले प्रभो! आप ही सखा=सबके परम स्नेही मित्र, सुशेवः=सबको उत्तम सुख देनेवाले और अद्वयुः=अद्वितीय हैं।

(ख) उपासक कहता है–मैं तो ऐसा ही बनूँगा–'सखा, सुशेवः और अद्वयुः'। प्रभु कहते हैं-ऐसा तो तुझे बनना ही चाहिए। ब्रह्मचर्याश्रम में स्थित होने से तू 'अग्नि' नामवाला है। इस आश्रम में तू यही निश्चय कर कि मैं 'सखा, सुशेव और अद्वयुः' बनूँगा। गृहस्थ में तू इन्द्र=इन्द्रियों का अधिष्ठाता बना है, वहाँ भी ऐसा ही बनना। तृतीय आश्रम में पूषन् और चतुर्थाश्रम में देव बनकर भी तूने ऐसा हीं बनना। सभी आश्रमों में तेरा लक्ष्य 'सखा, सुशेवः और अद्वयुः' बनना ही होना चाहिए।

।।इति महानाम्न्यार्चिकः समाप्तः।।

सामवेदभाष्ये पूर्वाचिकः समाप्तः

।।परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्दकृत सामवेद के पूर्वार्चिक का भगवती-भाष्य सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सामवेदभाष्यम्

उत्तरार्चिकः

अथ प्रथमः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त–१

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २ ३१ २र

६५१. उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ इयक्षते।।

हे मुमुक्षुजनो! तुम सब दिव्य गुणों और दिव्य सुखों को जीवन में संगत करानेवाले परम रसीले, आनन्दरसरूप में प्रवाहित होनेवाले इष्टदेव परमात्मा का आत्मभाव से स्तवन करो, उसका गुणगान करो, उसकी उपासना करो।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वर**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३२ ३ १ २ ३ २

६५२. अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! तुझे चाहनेवाले स्थिर चित्तवाले योगिजन आनन्दप्रद, प्रकाशकों के प्रकाशक, कमनीय आपकी प्राप्ति के लिए अपने दिव्य आत्मभाव को आपके आनन्दरस के साथ मिला देते हैं, आपके प्रति आत्म-समर्पण कर देते हैं और तब अपनी आत्मा में आपका साक्षात्कार करते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २उ ३ १ २र ३ १ २र १ २ ३ १ २

६५३. स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः।।

(क) हे सर्वत्र राजमान–प्रकाशमान परमात्मन्! आप आनन्दधारारूप में प्रवाहित होते हुए हमें प्राप्त होओ तथा हमारे जीवनों को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बना दो। असंयम में प्रवृत्त न होने के कारण हम उपासकों की ज्ञानेन्द्रियाँ शान्त हों, व्यभिचार में प्रवृत्त न होने के कारण हमारी जननेन्द्रिय में शान्ति हो, चञ्चलता न होने के कारण हमारे मन में शान्ति हो। हमारे रस, रक्त और प्राणों में शान्ति हो–वे रोग, दोष और उद्वेग से रहित हों।

(ख) हे विश्व ब्रह्माण्ड के शासक! आप हमें पवित्र कीजिए। हमारे जीवन के पवित्र होने पर हमारी प्रार्थना होगी–हमारी गौओं के लिए कल्याण हो, हमारे जनों का मंगल हो, हमारे घोड़ों के लिए कल्याण हो और ओषधियों से हमें शान्ति प्राप्त हो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—२

ऋषिः–कश्यपो मारीचः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २र
६५४. दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा। सोमः शुक्रा गवाशिरः।।

सब प्रकार से परमेश्वर के गुणों का वर्णन करनेवाली स्तुतिरूप आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा आनन्दधारा रूप में प्रवाहित होनेवाला परमात्मा अपनी देदीप्यमान कान्ति से उपासक की ज्ञानेन्द्रियों के साथ संगत होता हुआ—मेल करता हुआ उसके पवित्र अन्तःकरण में शुभ्ररूप में साक्षात् होता है।

ऋषिः–कश्यपो मारीचः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क २र १ २ ३ १ २
६५५. हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत्। सीदन्तो वनुषो यथा।।

अन्न, धन, बल, ज्ञानादि-सम्पन्न परमात्मा स्तुति करनेवाले उपासकों द्वारा उपासित किया हुआ उन्हें अन्न, धन, बल, ज्ञान आदि प्रदान करता हुआ ऐसे प्राप्त होता है, जैसे योद्धा लोग युद्ध में प्रवेश करते हैं।

ऋषिः–कश्यपो मारीचः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
६५६. ऋधक् सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे। पवस्व सूर्यो दृशे।।

हे क्रान्तदर्शिन्! हे सर्वज्ञ, शान्तस्वरूप, रसीले परमात्मन्! आप हमारे सु-अस्तित्व—कल्याण के लिए प्रतिदिन स्वप्रकाश से हमारे साथ संगत होते हैं—मेल करते हैं और सब प्रकार से हमारी वृद्धि करते हैं। हम आपका दशन कर सकें, अतः आप सूर्य के समान हमारे हृदय-मन्दिर में उदित हों—हमें साक्षात् दर्शन दें।

सूक्त—३

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६५७. पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत। अर्वन्तो न श्रवस्यवः।।

हे क्रान्तदर्शिन्! वेदकाव्य के निर्माता! मोक्षैश्वर्य के स्वामिन्! आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाली तथा पवित्र करनेवाली आपकी आनन्दरसमयी धाराएँ उपासकों के अन्तःकरणों में प्रवाहित होने लगी हैं किसलिए?, उनकी काम-क्रोध आदि वासनाओं को नष्ट करने के लिए और उनके जीवन को ज्ञानप्रकाश से द्योतित करने—चमकाने के लिए।

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
६५८. अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये। अवावशन्त धीतयः।।

निरन्तर परमात्मा को ही चाहनेवाले ध्यानी—योगिजन, अविनाशी, वरण करने योग्य, वासनाओं के विनाशक परमात्मा में वर्तमान मधु-स्रावी=चुवाने—टपकानेवाले कोश को अपनी ओर प्रवाहित कर लेते हैं अर्थात् परमात्मा के आनन्दरस का पान करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-शतं वैखानसाः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

६५९. अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा।।

आर्द्रभावनावाली उपासक आत्माएँ आनन्दरस के भण्डार, सत्य के उद्गम-स्थान, पूर्णपुरुष परमात्मा को सम्यक् रूप से प्राप्त होते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे नव प्रसूतिका (नयी ब्याही हुई) गौएँ बछड़े के प्रति उत्सुक होकर अपने आश्रयरूप घर को प्राप्त होती हैं।

सूक्त-४

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

६६०. अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।।

हे ज्ञानयुक्त जीव ! संन्यासिन् ! हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे अविद्या-अन्धकार को दूर करने के लिए और हमें धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का उपदेश देने के लिए हमारे मध्य में—सांसारिक जनों में आइए। हमने अपने हृदय-आसन आपके स्वागत के लिए बिछा रखे हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे जीवनों के सञ्चालक बनकर हमारे हृदयों में रम जाओ—हमारे श्रद्धा-पात्र बन जाओ।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

६६१. तं त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य।।

हमारे शरीर और शरीर के […] के रसरूप हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! सर्वव्यापक और सर्वप्रसिद्ध आपको हम उपासक प्राणों से—[…]भ्यास और आत्मतेज से, पवित्र, अन्तःकरण से और धारणा, ध्यान, समाधि से बढ़ाते हैं, अ[…]:करण में आपकी अधिकाधिक अभिव्यक्ति करते हैं। हे युवतम ! राग-द्वेष आदि म[…] ! आप हमारे हृदय में अपनी पूर्ण आभा—ज्योति, प्रकाश के साथ चमकिए […]ीजिए।

[…] **स्वरः**-षड्जः।

६६२. स नः […] सुवीर्यम्।।

हे ज्योति[…]पद को भली-भाँति प्राप्त कराते हैं जो सबसे महान्, सब[…]

[…]त्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

६६३. आ […]तम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू।।

हे शोभन प्रज्ञा[…] के समान संसार में सुकर्म करने के लिए प्रेरित करनेवाले और अपान के समान मोक्ष में अ[…] करनवाले आप हमारी हृदय-गुहा को अपने तेजोमय दर्शन और स्नेह तथा दीप्ति से सिक्त कर दी[…] अपने आनन्दामृत से हमारी इन्द्रियों को भी सींच दीजिए—तृप्त कर दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—२

ऋषिः–कश्यपो मारीचः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २र

६५४. दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा। सोमः शुक्रा गवाशिरः।।

सब प्रकार से परमेश्वर के गुणों का वर्णन करनेवाली स्तुतिरूप आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा आनन्दधारा रूप में प्रवाहित होनेवाला परमात्मा अपनी देदीप्यमान कान्ति से उपासक की ज्ञानेन्द्रियों के साथ संगत होता हुआ—मेल करता हुआ उसके पवित्र अन्तःकरण में शुभ्ररूप में साक्षात् होता है।

ऋषिः–कश्यपो मारीचः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क २र १ २ ३ १ २

६५५. हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत्। सीदन्तो वनुषो यथा।।

अन्न, धन, बल, ज्ञानादि-सम्पन्न परमात्मा स्तुति करनेवाले उपासकों द्वारा उपासित किया हुआ उन्हें अन्न, धन, बल, ज्ञान आदि प्रदान करता हुआ ऐसे प्राप्त होता है, जैसे योद्धा लोग युद्ध में प्रवेश करते हैं।

ऋषिः–कश्यपो मारीचः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २

६५६. ऋधक् सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे। पवस्व सूर्यो दृशे।।

हे क्रान्तदर्शिन्! हे सर्वज्ञ, शान्तस्वरूप, [illegible] —कल्याण के लिए प्रतिदिन स्वप्रकाश से हमारे साथ संगत होते हैं [illegible] वृद्धि करते हैं। हम आपका दर्शन कर सकें, अतः आप सूर्य के सम [illegible] साक्षात् दर्शन दें।

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–प [illegible] ड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २

६५७. पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा [illegible]

हे क्रान्तदर्शिन्! वेदकाव्य के निर्माता! म [illegible] त होनेवाली तथा पवित्र करनेवाली आपकी आनन्दरसमयी धाराएँ [illegible] गी हैं किसलिए?, उनकी काम-क्रोध आदि वासनाओं को नष्ट क [illegible] प्रकाश से द्योतित करने—चमकाने के लिए।

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–प [illegible] ज्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३१२३ १२

६५८. अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे [illegible] अवावशन्त धीतयः।।

निरन्तर परमात्मा को ही चाहनेवाले ध्यानी—योगिजन, अविनाशी, वरण करने योग्य, वासनाओं के विनाशक परमात्मा में वर्तमान मधु-स्रावी=चुवाने—टपकानेवाले कोश को अपनी ओर प्रवाहित कर लेते हैं अर्थात् परमात्मा के आनन्दरस का पान करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३२उ ३ २ ३ २ ३ २ ३१२ १२ ३ २ ३ २ ३ २
६५९. अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा।।

आर्द्रभावनावाली उपासक आत्माएँ आनन्दरस के भण्डार, सत्य के उद्गम-स्थान, पूर्णपुरुष परमात्मा को सम्यक् रूप से प्राप्त होते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे नव प्रसूतिका (नयी ब्याही हुई) गौएँ बछड़े के प्रति उत्सुक होकर अपने आश्रयरूप घर को प्राप्त होती हैं।

सूक्त–४

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३१ ३ ३ १ २ १ २र ३ १ २
६६०. अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।।

हे ज्ञानयुक्त जीव ! संन्यासिन् ! हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे अविद्या-अन्धकार को दूर करने के लिए और हमें धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का उपदेश देने के लिए हमारे मध्य में–सांसारिक जनों में आइए। हमने अपने हृदय-आसन आपके स्वागत के लिए बिछा रखे हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे जीवनों के सञ्चालक बनकर हमारे हृदयों में रम जाओ–हमारे श्रद्धा-पात्र बन जाओ।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६६१. तं त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य।।

हमारे शरीर और शरीर के अंगों के रसरूप हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! सर्वव्यापक और सर्वप्रसिद्ध आपको हम उपासक प्राणों से–प्राणायाम के अभ्यास और आत्मतेज से, पवित्र, अन्तःकरण से और धारणा, ध्यान, समाधि से बढ़ाते हैं, अर्थात् अपने पवित्र अन्तःकरण में आपकी अधिकाधिक अभिव्यक्ति करते हैं। हे युवतम ! राग-द्वेष आदि मलों को दूर करनेवालों में सर्वोत्तम ! आप हमारे हृदय में अपनी पूर्ण आभा–ज्योति, प्रकाश के साथ चमकिए और हमारे जीवनों को भी चमका दीजिए।

ऋषिः–भरद्वाजः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६६२. स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवासति। बृहदग्ने सुवीर्यम्।।

हे ज्योतिर्मय, आनन्दप्रद परमात्मदेव ! आप हमें उस मोक्षपद को भली-भाँति प्राप्त कराते हैं जो सबसे महान्, सबसे श्रेष्ठ और अत्यन्त प्रशंसनीय धन है।

सूक्त–५

ऋषिः–विश्वामित्रो जमदग्निर्वा। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३१ २र २ ३ १ २
६६३. आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू।।

हे शोभन प्रज्ञालोकवाले परमेश्वर ! प्राण के समान संसार में सुकर्म करने के लिए प्रेरित करनेवाले और अपान के समान मोक्ष में अपनी ओर आकृष्ट करनवाले आप हमारी हृदय-गुहा को अपने तेजोमय दर्शन और स्नेह तथा दीप्ति से सिक्त कर दीजिए और अपने आनन्दामृत से हमारी इन्द्रियों को भी सींच दीजिए–तृप्त कर दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–विश्वामित्रो जमदग्निर्वा। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
६६४. उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः। द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता।।

हे अत्यन्त प्रशंसनीय, स्तुतिशील उपासक को अन्न, बल और ज्ञान द्वारा बढ़ानेवाले, पवित्र कर्म करनेवाले मित्रावरुणा=प्राणापानरूप परमात्मन्! आप अपनी महान् महिमा से हमारी दीर्घकाल से निरन्तर की जा रही स्तुतियों के द्वारा हमारे आत्मबल को प्रकाशित कर रहे हो।

ऋषिः–विश्वामित्रो जमदग्निर्वा। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३१२ ३ १२३१२ ३१ २र
६६५. गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पातं सोमभृतावृधा।।

हे सुकर्म में प्रेरक और मोक्षार्थ अपनी ओर आकृष्ट करनेवाले परमात्मन्! वैराग्यवान् उपासक के द्वारा स्तुत किये जाते हुए आप उपासक के सत्य से पूर्ण हृदय-गुहा में निवास करते हो। उपासक को सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ानेवाले प्राण और अपानस्वरूप परमात्मन्! आप हमारे उपासना-रस को स्वीकार करो और संसार-सागर से हमारा उद्धार करो।

सूक्त–६

ऋषिः–इरिम्बिठिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २उ ३ १ २ ३ १ २
६६६. आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप आइए, हमारे हृदय-मन्दिर में अपने दर्शन दीजिए, टुक अपनी छवि दिखाइए। आपके आतिथ्य के लिए हमने उपासना-रस तैयार किया है। आप इसे स्वीकार करके हमें कृतार्थ कीजिए। हमने काम-क्रोध आदि वासनाओं से शून्य अपने हृदय-आसन को आपके स्वागत के लिए बिछा रखा है। आप आइए और इस हृदय-आसन पर बैठिए–इसे अलंकृत कीजिए।

ऋषिः–इरिम्बिठिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २. ३ १ २ २ ३ १ २
६६७. आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना। उप ब्रह्माणि नः शृणु।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! तुझ ब्रह्म के साथ मेल करानेवाली मन और इन्द्रियाँ ज्ञानरश्मियों से दीप्त होकर आपको हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकट करनेवाली हों। हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकट होकर आप हमारे मनोभावों और कामनाओं को ध्यानपूर्वक सुनिए और उन्हें पूर्ण कीजिए।

ऋषिः–इरिम्बिठिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६६८. ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं सोमपामिन्द्र सोमिनः। सुतावन्तो हवामहे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! उपासना-रस को समर्पित करनेवाले, ब्रह्म-प्रतिपादक वेदों का स्वाध्याय करनेवाले, पुत्र-पुत्रियोंसहित हम उपासक योगविधि–धारणा, ध्यान, समाधि के द्वारा आपका आह्वान करते हैं–आपको पुकारते हैं। आप आइए और अपने दर्शनों से हमें कृतार्थ कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—७

ऋषिः–विश्वामित्रो गाथिनः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३२उ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
६६९. इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता।।

हे परमैश्वर्यवान्—प्राणस्वरूप और प्रकाशमान उदानस्वरूप परमेश्वर! ध्यान-धारणाओं और स्तुतियों से चाहे हुए आप हमारे शुद्ध, पवित्र, निर्मल—वरणीय हृदय-मन्दिर में आओ, हमें प्राप्त होओ। हमने आपके लिए उपासना-रस तैयार किया हुआ है, आप इसे स्वीकार कर हमें कृतार्थ कीजिए।

ऋषिः–विश्वामित्रो गाथिनः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २ ३ २
६७०. इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः। अया पातमिमं सुतम्।।

हे परमैश्वर्यवान् प्राणस्वरूप और प्रकाशमान उदानस्वरूप परमेश्वर! मुझ स्तोता का चेतन आत्मा में होनेवाला आत्म-समर्पणरूपी यज्ञ निरन्तर चलता रहता है। यह द्रव्ययज्ञ की भाँति जड़ नहीं है, अपितु चेतन है। यह स्तोता को सदा सावधान और जागरूक रखता है। आपकी भावभरी स्तुति=गुणगान और अष्टांग-योग द्वारा निष्पादित हमारे उपासना-रस को आप स्वीकार करें और हमपर कृपालु हों।

ऋषिः–विश्वामित्रो गाथिनः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २
६७१. इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे। ता सोमस्येह तृम्पताम्।।

मेधावी ऋषिजनों के रक्षक परमैश्वर्यवान् प्राणस्वरूप और प्रकाशमान उदानस्वरूप परमात्मा का मैं अपने उपासना-यज्ञ में श्रद्धा और प्रेम से वरण करता हूँ। वरण किया हुआ वह परमात्मा हमें इस संसार में ऐश्वर्य और ज्ञान से तृप्त करे।

सूक्त—८

ऋषिः–अमहीयुरांगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ उ ३ २ ३ १ २
६७२. उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद् भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः।।

(क) हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप अविद्या-अज्ञान से सर्वथा पृथक् और सदा ज्ञान में स्थित हैं। हम सांसारिक जन श्रेष्ठ सुख प्रदान करनेवाले आपके आश्रय को और श्रवण करने योग्य आपके महान् ज्ञान को प्राप्त करते हैं।

(ख) हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! मोक्ष-प्राप्ति का इच्छुक मैं पार्थिव शरीर को धारण करके इसे नीरोग और स्वस्थ बनाये रखने के लिए आपके द्वारा उत्पन्न नाना प्रकार के सात्त्विक अन्नों का सेवन करता हूँ। इन अन्नों के सेवन से अत्युत्कृष्ट सुख को और महनीय कीर्ति को प्राप्त करता हूँ।

ऋषिः–अमहीयुरांगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
६७३. स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परि स्रव।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप धन प्राप्त करानेवाले हैं। आप हम उपासकों को, धन प्राप्त कराइए—प्रभूत धन दीजिए, परन्तु आप धन प्राप्त कराइए इन्द्रियों के अधिष्ठाता संयमी पुरुष को, जिससे वह भोग-विलास में धन का दुरुपयोग न करे। आप धन दीजिए यज्ञशील के लिए, जिससे वह धन का यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों में ही विनियोग करे। आप धन प्रदान कीजिए प्रकृष्ट ज्ञानी के लिए, जिससे वह धन का ज्ञान के प्रचार में उपयोग कर सके। इनको धन इसलिए दीजिए कि ये मनुष्यों की सेवा—लोकोपकार कर सकें।

ऋषिः–अमहीयुरांगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ १ २ १ २
६७४. एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! सबके स्वामी आप मनुष्यों के लिए उपयोगी और हितकारी सब धनों को प्राप्त कराते हैं। प्रभो! आप द्वारा प्राप्त इन धनों को हम स्वयं भोगते हुए और दूसरों—दीन-दुखियों को बाँटते हुए, दान करते हुए सदा आपकी उपासना करते रहें।

सूक्त—९

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
६७५. पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः।।

हे सौम्य गुणयुक्त जीवात्मन्! तू ध्यान-धारणाओं द्वारा अथवा वेदोपदिष्ट दया, दान, सत्यादि के द्वारा तथा यज्ञ=परोपकार आदि शुभ कर्मों को करता हुआ अपने जीवन में आगे बढ़ता है—उन्नति करता है। तू सब ओर से नाना प्रकार के सोना, चाँदी, मुक्ता, मूँगा आदि लौकिक धन और ज्ञान-वैराग्य आदि आत्मिक धनों को धारण करता है। इन रत्नों के धारण से तेरा शरीर भी चमक उठता है। अन्त में तू सत्यस्वरूप ब्रह्म की अमृतमय गोद में आसीन हो जाता है। अब तू स्वयं भी आनन्द का निर्झर (स्रोत=निर्झर, चश्मा) बन जाता है और दूसरों के लिए भी उल्लास का कारण बनता है। तू स्वयं उच्च स्थान प्राप्त करता है और दूसरों को भी उच्च स्थान प्राप्त कराता है। तू देव=दिव्य गुणों से युक्त तथा सदा विजयशील रहता है। तू सर्वमनोरम और ज्योतिर्मय बनता है। इस ज्ञान-ज्योति के कारण तेरा मस्तिष्क दीप्त हो जाता है।

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
६७६. दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत्।
३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षसि नृभिर्धौतो विचक्षणः।।

हे सौम्य गुणयुक्त जीवात्मन्! तू अलौकिक, अत्यन्त मधुर और तृप्तिदायक आनन्द-अमृत के स्रोत परमेश्वर का दोहन करता हुआ—परमात्मा को अपने में पूरण करता हुआ शाश्वत मोक्षपद को प्राप्त करता है। शारीरिक, आत्मिक और मानसिक बलयुक्त, मुमुक्षुओं द्वारा शुद्ध-पवित्र किया हुआ, विशिष्ट दृष्टि-सम्पन्न उपासक उस जिज्ञास्य—अन्वेष्टव्य और सर्वाधार परमेश्वर को प्राप्त करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१०

ऋषिः—उशनाः काव्यः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

१ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २र
६७७. प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष।
२ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति।।

(क) हे परम रसीले शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप आनन्दरसधारा में प्रवाहित होते हुए मेरे हृदय-मन्दिर में विराजमान हो जाओ। मुमुक्षुजनों द्वारा ध्यान-समाधि द्वारा प्राप्त करने योग्य होते हुए आप हमें आत्मबल और मोक्षैश्वर्य प्रदान कीजिए। जैसे शक्तिशाली घोड़े को लगामों द्वारा गन्तव्य स्थान पर ले-जाते हैं, उसी प्रकार हम अपने जीवन को यम-नियम आदि से पवित्र बनाते हुए अत्यन्त बलशाली, सर्वव्यापक आपको अपनी उपासना-शक्तियों से अपने शुद्ध, पवित्र, वासनाओं से शून्य हृदय-मन्दिर की ओर प्रेरित करते हैं—हृदय-मन्दिर में आपका साक्षात् दर्शन करते हैं।

(ख) हे उपासक! तू शीघ्रता कर और ज्ञान के अक्षय कोष वेद के पास बैठ—वेद का स्वाध्याय कर और वेदोपदेश का पालन कर। सत्पुरुषों के द्वारा पवित्र किया हुआ तू मोक्ष की ओर गति कर—मोक्ष को अपने जीवन का लक्ष्य बना। जैसे शक्तिशाली अश्व को लगामों द्वारा लक्ष्य-स्थान पर ले-जाते हैं उसी प्रकार सत्पुरुष तेरे शरीर को शुद्ध, मन को पवित्र और आत्मा को निर्मल बनाते हुए, यम-नियमों के बन्धन द्वारा तुझे परम ब्रह्म परमेश्वर की ओर ले-जाते हैं।

ऋषिः—उशनाः काव्यः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

३ १ २ ३१ २र ३ २ ३ २ ३ १२
६७८. स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजना रक्षमाणः।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः।।

परम रसीला, आनन्दप्रद परमात्मदेव जीव के काम-क्रोध आदि दुर्गुणों के विनाशार्थ आयुधवाला-(हथियारवाला) जीवों के पापों, पापवासनाओं और दुर्व्यसनों का हनन करनेवाला तथा बल और शक्तियों की रक्षा करनेवाला है। वह सूर्य आदि देवों का रक्षक और उनका निर्माण करनेवाला है। वह दिव्य गुणों का उत्पादक और विकासक है। वह अत्यन्त पराक्रमशाली है। उसने द्युलोक को थामा हुआ है और पृथिवी को धारण कर रहा है। ऐसा परमेश्वर सर्वगत है। वह मनुष्यों के आत्माओं में प्राप्त होता है और उनके जीवनों को पवित्र करता है।

ऋषिः—उशनाः काव्यः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ १ २
६७९. ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २र २ ३ २ ३ १ २
स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यां३ गुह्यं नाम गोनाम्।।

वह परमेश्वर सर्वद्रष्टा, महामेधावी, मनुष्यों को उन्नति के पथ पर ले-जानेवाला, अत्यन्त प्रकाशमान, धैर्यशाली, अपने वेदरूपी काव्य से और कौशलपूर्ण सृष्टि-रचना से सबका हित करनेवाला है। वह ज्ञानस्वरूप परमेश्वर वेदवाणियों के गुप्त रहस्यों को खोलकर जनाता है, जोकि इनमें साररूप में—बीजरूप में निहित हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—११

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

३ १ २ ३ १२ ३ १२
६८०. अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १२
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः।।

हे अनन्त शक्तियों के स्वामी परमात्मन् ! हम आपकी खूब ही स्तुति करते हैं—आपके गुणों का बारम्बार गान करते हैं; नव यौवनवाली, न दुही हुई गौओं के समान हम यौवनकाल में ही आपके स्तोता बनते हैं। प्रभो ! आप इस चेतन जगत् के स्वामी हैं और हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन् ! आप ही इस जड़ जगत् के स्वामी हैं तथा उपासकों को मोक्ष प्राप्त कराते हैं।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २र ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र
६८१. न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे।।

हे पापशून्य परमेश्वर ! आप जैसा शरणागतवत्सल = शरणदाता द्युलोक में अथवा पृथिवीलोक में न तो कोई उत्पन्न हुआ है और न ही होगा, यह ध्रुव सत्य है—(प्रभु सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ होने के कारण अद्वितीय हैं)। हे परमैश्वर्यशाली प्रभो ! हम उपासक सर्वव्यापक आपको चाहते हुए, मोक्ष की अभिलाषा करते हुए और सद्विद्या = वेदज्ञान-प्राप्ति की इच्छावाले होते हुए आपको पुकार रहे हैं। आप हमारी पुकार को सुनिए और हमारी इच्छा की पूर्ति कीजिए।

सूक्त—१२

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३२ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
६८२. कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

अद्भुत गुण-कर्म-स्वभाववाला, उत्तम ज्ञान-प्रदाता, पूज्य, सदा हमारी वृद्धि करनेवाला, परम पवित्र वह परमेश्वर हमें किस प्रकार से मिलेगा ? हम ऐसा क्या करें जिससे वह प्रसन्न हो ? यह विरह-व्याकुल उपासक का प्रश्न है। इसका उत्तर है—वह परमात्मा प्राणिमात्र को सुख-प्रदान करनेवाले व्यवहार से, सबके प्रति मधुरवाणी का उच्चारण करने और सदा शुभ कर्म—पुण्यकर्म करने से प्राप्त होता है।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २ ३ १२
६८३. कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु।।

हे उपासको ! वह परमेश्वर आनन्दमय और सत्यस्वरूप है तथा प्रसन्नता और हर्षदायक पदार्थों का प्रभूत दान करनेवाला है—महादानी है। वह प्राकृतिक और आध्यात्मिक अन्नों से तृप्त करनेवाला है। वह उपासक के दृढ़ बन्धनों, अविद्यारूपी गाँठो और उत्तम, मध्यम तथा अधम पाशों को तोड़-मरोड़कर उन्हें मोक्ष प्रदान करनेवाला है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ १ २ ३१ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २
६८४. अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतये।।

हे परमेश्वर! आप स्तुति करनेवाले अपने उपासक मित्रों की सब प्रकार से रक्षा करते हैं–आप उनके कवच बन जाते हैं। आप माता, पिता, मित्र, बन्धु, गुरु आदि रूप से सैकड़ों प्रकार से हमारी रक्षा करते हैं।

सूक्त–१३

ऋषिः–नोधा गौतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ २३ १ २ ३ १ २र
६८५. तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः।
३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे।।

हे उपासको! हम उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की वेदवाणियों से स्तुति करते है, जो परमेश्वर तुम्हारे और हमारे त्रिविध तापों को भस्म करनेवाला, नाना प्रकार की सम्पत्तियों और अन्नों से तृप्त एवं प्रसन्न करनेवाला है। हम परमेश्वर का उसी प्रकार प्रेमपूर्वक स्मरण करते हैं जैसेकि अपने जाने योग्य गोष्ठ आदि स्थानों में गौएँ अपने बछड़ों का स्मरण करती हैं। जैसे गौएँ बछड़ों के प्रति नत हो जाती है, वैसे ही हम परमेश्वर के प्रति आत्म-समर्पण करते हैं और वेदवाणियों द्वारा उसका स्तवन करते हैं।

ऋषिः–नोधा गौतमः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
६८६. द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम्।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे।।

हे परमेश्वर! आप अविद्या का क्षय करनेवाले और प्रकाशमय हैं, सर्वोत्तम दाता हैं, नाना प्रकार की शक्तियां से युक्त हैं, काल के समान सर्वभक्षक वा मेघ के समान सर्वरक्षक अथवा पर्वत के समान हमारे पालक और पोषक हैं, वेदवाणी के आश्रय वा सबके आश्रय अथवा सब प्रकार के ऐश्वर्यवाले हैं, बलस्वरूप हैं, अनन्त शक्तिवाले हैं अथवा सौ वर्ष तक का आयुष्य देनेवाले हैं, बलवानों से बलवान् और आनन्द का स्रोत हैं, महान् ज्ञानवान् और पृथिवी-धारक हैं–इन सभी गुणों की प्राप्ति के लिए हम शीघ्र ही आपकी आराधना करें, इन गुणों की प्राप्ति के लिए आपसे ही प्रार्थना और याचना करें।

सूक्त–१४

ऋषिः–कलिः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
६८७. तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये।
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
बृहद् गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम्।।

हे उपासको! तुम जीवन में विघ्न-बाधाओं के उपस्थित होने पर और संसार की विषय-ज्वालाओं में जलने पर आत्मरक्षा के लिए उपासना-यज्ञों में भक्तिरस के निष्पन्न हो जाने पर सर्वज्ञान-सम्पन्न और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान-प्रदाता, सबका पालन-पोषण और कल्याण करनेवाले परम समर्थ परमेश्वर को सम्पूर्ण शक्तियों के साथ, हार्दिक भावनाओं से उसका गुणगान करते हुए उसे पुकारो।

ऋषिः-कलिः प्रागाथः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

२उ ३ १ २र ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
६८८. न यं दुधा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदेषु शिप्रमन्धसः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३क २र
य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम्।।

उस ज्ञानस्वरूप, शान्त, रुद्ररूप और सर्वत्र परिपूर्ण, अत्यन्त प्रशंसनीय और सर्वरक्षक परमेश्वर को दुर्धर, अत्याचारी और सम्पत्तियों में तृप्त धनी नहीं वरते तथा अज्ञान से उत्पन्न हुए आनन्दाभास में मस्त एवं शक्ति के नशे में चूर हठी और मूढ़ व्यक्ति भी परमेश्वर को स्वीकार नहीं करते। वह परमेश्वर आदरपूर्वक स्तुति करनेवाले, भक्तिरस के रसिक और उपासना करनेवाले के लिए सब-कुछ देनेवाले हैं।

सूक्त—१५

ऋषिः-मधुच्छन्दाः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
६८९. स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अपनी अत्यन्त रसीली और अत्यन्त मधुर, हर्षदायक आनन्दधाराओं के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में प्रविष्ट होओ और हमारे जीवनों को पवित्र बना दो। हृदय में प्रकट हुए आप जीवात्मा की, उपासक की सब आसुर वृत्तियों—काम-क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष आदि दुर्भावनाओं से रक्षा करो।

ऋषिः-मधुच्छन्दाः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
६९०. रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्।।

काम-क्रोध, लोभ-मोह आदि राक्षसी भावों का विनाशक, सारे विश्व को देखनेवाला—सारे संसार के, प्राणियों की सार-सँभाल, [to look after — to take care of] करनेवाला परमेश्वर अत्यन्त निर्मल मनवाले सोना, चाँदी, रत्न आदि के लोभ से अलुब्ध मनवाले उपासक के हृदयरूप सह-स्थान जहाँ जीवात्मा और परमात्मा दोनों साथ बैठते हैं। में स्थित होता है, विराजता है।

ऋषिः-मधुच्छन्दाः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
६९१. वरिवोधातमो भुवो मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः। पर्षि राधो मघोनाम्।।

हे परमेश्वर! पृथिवी पर जितने दान-दाता हैं, आप उनमें सर्वश्रेष्ठ हैं। आप गुणों में भी महानतम—सर्वश्रेष्ठ हैं। आप पाप-वृत्रों का नाश करनेवाले हैं। आप वासनारूप असुरों को नष्ट करनेवाले जितेन्द्रिय उपासकों को जीवन में सब प्रकार की सफलता प्राप्त कराइए और अन्त में मोक्ष भी प्रदान कीजिए।

सूक्त—१६

ऋषिः-गौरवीतिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-काकुभः प्रगाथः (ककुप्)। **स्वरः**-ऋषभः।

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ १ २ ३ १ २ ३ १२
६९२. पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः। महि द्युक्षतमो मदः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परम रसीले शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अत्यन्त माधुर्यपूर्ण हैं। आप अत्यन्त ज्ञानी और क्रियाशील हैं। आप आनन्दस्वरूप हैं, महान् हैं, पूजनीय हैं। आप अत्यन्त प्रकाशमान और आनन्द प्रदाता हैं। आप जितेन्द्रिय पुरुष के हृदय-मन्दिर में प्रकाशित होओ और उसके जीवन को शुद्ध तथा पवित्र बना दो।

ऋषिः-गौरवीतिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
६९३. अस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीत्वा स्वर्विदः।
२ ३ १ २ ३क २र ३ २उ ३ २ ३ १२
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः।।

उपासना द्वारा तुझ शान्तस्वरूप परमात्मा के आनन्दरस का पान करके यह धर्म के समान कान्तिवाला उपासक साक्षात धर्म की भाँति आचरण करता है, अर्थात् धर्म का मूर्तिमान् स्वरूप प्रतीत होता है। सुख प्राप्त करानेवाले आपके आनन्दरस का पान करके अथवा दिव्य गुणों और दैवी सम्पत्ति का धारण करनेवाला यह उपासक प्रकृष्ट ज्ञानवाला बन जाता है—अत्यन्त ज्ञानी बन जाता है। आपके रस का आस्वादक उपासक सब भौतिक सम्पदाओं को त्याग देता है और सुखों की वर्षा करनेवाले, सर्वमनोरथ पूरक आपकी ओर गमन करता है, जैसे घोडा संग्राम की ओर गमन करता है।

सूक्त—१७

ऋषिः-अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
६९४. इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः। श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः।।

ये शरीर में उत्पन्न हुए सोम=वीर्य-कण उपासक को परमेश्वर की ओर ले-चलते हैं। '**नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः**'—अब्रह्मचारी उस परमात्मा को नहीं पा सकता। ये सोमकण दुःखों का हरण करनेवाले और सुख प्रदान करनेवाले हैं। सोम रक्षण से शरीर नीरोग और मस्तिष्क ज्ञानदीप्त बनता है। ये सोम सुख-प्राप्ति के निमित्त उत्पन्न होते हैं। सुख के निमित्त उत्पन्न हुए ये बिन्दु स्वर्ग-सुख का लाभ करानेवाले हैं—मोक्षानन्द में पहुँचानेवाले हैं।

ऋषिः-अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३ १ २र ३ १ २र ३ २ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २
६९५. अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः। सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे।।

अब वीर्य-रक्षा=ब्रह्मचर्य पालन से साक्षात् किये हुए परमेश्वर का वर्णन करते हैं—यह सम्भजनीय=उपासना करने योग्य, साक्षात् किया हुआ परमेश्वर उपासक आत्मा के भरण-पोषण के लिए आनन्दधारारूप में प्रवाहित होता हुआ उसके हृदय-मन्दिर में प्रकट होता है और उसके जीवन को पवित्र बनाता है। हृदय में विराजमान हुआ यह परमेश्वर मन और इन्द्रियों के विजेता उपासक को ज्ञान-प्राप्ति के लिए सदा चेताता रहता है—सावधान करता रहता है।

ऋषिः-अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३ २उ ३ २३ २ ३ २ ३२ १ २ ३ १२ ३ १२ ३ २
६९६. अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णाति सानसिम्। वज्रं च वृषणं भरत् समप्सुजित्।।

जब उपासक आनन्दरस की मस्तियों में, हर्ष और उल्लासों में मस्त हो जाता है, तब परमैश्वर्यशाली,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शत्रुसंहारक परमेश्वर उपासक के अविद्यारूपी ग्राह=मगरमच्छ से इसे मुक्त कर देता है, उस अविद्यारूपी अथवा अपने बन्धन में जकड़नेवाले संसाररूपी ग्राह से जोकि स्वर्ण के सदृश अपनी चमक-दमक से उपासक को लुभाता है। इस ग्राह का वध करने के लिए काम-क्रोध आदि शत्रुओं का संहारक, बन्धन में डालनेवाले कर्मों का नाशक परमेश्वर शक्तिशाली वज्र धारण करता है।

सूक्त—१८

ऋषि:-अन्धीगुः श्यावाश्विः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-आनुष्टुभः प्रगाथः (अनुष्टुप्)। **स्वरः**-गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
६९७. पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम्॥

हे उपासकमित्रो ! तुम लोग अज्ञान पर पूर्ण विजय पाने के लिए और आनन्ददायक विज्ञान बल की प्राप्ति के लिए दीर्घ जिह्वावाले—दिनभर चरनेवाले, परस्पर लड़नेवाले, दूसरों की चापलूसी करनेवाले, वान्ताशी=कै करके चाट लेनेवाले कुत्ते की वृत्ति का, विषय-भोग और लोभ की वृत्ति का त्याग करो।

ऋषि:-अन्धीगुः श्यावाश्विः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-आनुष्टुभः प्रगाथः (गायत्री)। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २र
६९८. यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः। इन्दुरश्वो न कृत्व्यः॥

जो परम रसीला आनन्दरस पवित्र हृदय में निष्पादित होकर जीवन को पवित्र करनेवाली धारा के रूप में शरीर, मन और इन्द्रियों में वेग से प्रवाहित होता है, वह आनन्दरस उपासक के अभीष्ट को सिद्ध करता है, ठीक उसी प्रकार जैसे अश्व अश्वारोही के कार्य को सिद्ध करता है।

ऋषि:-अन्धीगुः श्यावाश्विः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-आनुष्टुभः प्रगाथः (गायत्री)। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
६९९. तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया। यज्ञाय सन्त्वद्रयः॥

विषयों में न रमनेवाले, अपने-आपको आगे ले-चलनेवाले उपासकजन सब विषयों में प्रवेश करनेवाली बुद्धि से, अर्थात् व्यापक ज्ञान और कर्मों की सहायता से काम-क्रोध आदि बुराइयों को बुरी तरह जला डालनेवाले उस शान्तस्वरूप परमात्मा को प्राप्त करें और उपासना-यज्ञ की सफलता के लिए पर्वत के समान दृढ़ संकल्पवाले बनें, स्थिर मति बनें।

सूक्त—१९

ऋषि:-कविर्भार्गवः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २उ ३ २ ३ १ २
७००. अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते।
१ २र ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विश्वञ्चमरुहद्विचक्षणः॥

प्राकृतिक और आध्यात्मिक अन्नों द्वारा हित करनेवाला वह महान् प्रभु जिन उपासकों के हृदय-मन्दिरों में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अधिकाधिक स्पष्टरूप में प्रकट हो जाता है, उनके लिए परम रसीले आनन्दरसों को प्रवाहित कर देता है, अथवा अपने प्रिय नामों के रहस्यमय अर्थों को प्रकट कर देता है। वह ब्रह्म जो सारे संसार का द्रष्टा है, अपनी किरणों को सर्वत्र फैलानेवाले, अत्यन्त विशाल सूर्य के रथ पर सवार होता है, अर्थात् वह सूर्य का भी नियन्ता है।

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र
७०१. ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यां३ नाम तृतीयमधि रोचनं दिवः।।

सत्यवादी सदा सत्य बोलता है और सत्कर्म ही करता है, अतः वह किसी से दबता नहीं, किसी की खुशामद नहीं करता। सत्यवादी पुत्र अपने माता-पिता के अप्रसिद्ध नाम को प्रसिद्ध कर देता है और परमेश्वररूप माता-पिता का सच्चा पुत्र बनकर अपने जीवन में छिपी हुई विनीतता को प्रकाशित—प्रकट करता है, जोकि उसका तीसरा गुण है।

[पहला गुण 'प्रिय, मधुर बोलना है', दूसरा गुण 'किसी से न दबना है', और तीसरा गुण 'विनीतता है'। यह विनीतता ज्ञान का सर्वोत्तम आभूषण है।]

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
७०२. अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्येमाणः कोश आ हिरण्यये।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अभी ऋतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजसि।।

ज्ञान-ज्योति से देदीप्यमान शान्तस्वरूप परमेश्वर उपासकों द्वारा नियमपूर्वक उपासित किया जाता हुआ शनैः-शनैः हिरण्ययकोश में—पवित्र हृदय में प्रवेश करता है—नियमित अभ्यास और वैराग्य द्वारा उसका साक्षात्कार होता है। सत्य के अभिलाषी उपासक उसकी स्तुति करते हैं। जिस हृदय में से पापों और काम-क्रोध आदि दोषों को निकाल दिया गया है, जिसकी सब कामनाएँ और वासनाएँ दग्ध हो गई हैं और जो सबके लिए सुख-शान्ति की कामना करता है—ऐसे पवित्र हृदय में तीनों लोकों का स्वामी परमात्मा विशेषरूप से विराजता है।

सूक्त—२०

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७०३. यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे।
१ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम्।।

हे उपासको! प्रकाशस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए और जीवन में उत्साह, बल, चातुर्य, प्रगति और वृद्धि के लिए, परमात्मा की योग्यतम प्रजा बनने के लिए प्रत्येक उपासना-यज्ञ में—प्रत्येक शुभकर्म में सम्मिलित होकर हम प्रजाजन वेद की नानाविध स्तुतियों के द्वारा अमर—अविनाशी, सर्वज्ञ, वेद-प्रकाशक परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं—बार-बार प्रशंसा करते हैं, जैसेकि हम अपने प्रिय मित्र की खूब ही प्रशंसा किया करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
७०४. ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
भुवद्वाजेष्वविता भुवद् वृध उत त्राता तनूनाम्।।

हे उपासक! तू उत्साह और शक्ति को न गिरने देनेवाले प्रकाशस्वरूप परमात्मा को अपनी ओर प्रेरित कर। वह परमेश्वर हमें चाहनेवाला—अपनानेवाला है, अतः हम भोग और दान-योग्य उत्तम वस्तुओं के देनेवाले और अपने आनन्दामृत का पान करानेवाले परमेश्वर के प्रति आत्मसमर्पण कर दें। जीवन-संघर्षों में वे परमेश्वर ही हमारे रक्षक होते हैं। वे हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक—सर्वविध वृद्धि करते हैं। वे ही हमारी आत्मा के रक्षक और उत्कर्षक हैं।

सूक्त—२१

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७०५. एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः।।

(क) हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप आइए—मेरे हृदय-मन्दिर में प्रकट हो जाइए। मैं कब से आपकी बाट जोह रहा हूँ। अब तो अपना दर्शन देकर मुझे कृतार्थ कर दीजिए। हे प्रभो! आपकी अमृतमय छत्र-छाया में रहता हुआ मैं सामान्य व्यवहार की वाणियों को भी सदा सत्यरूप में ही बोलूँ—मैं सत्यनिष्ठ बनूँ, कभी असत्य न बोलूँ। ऐसे दृढ़ सत्यवादी उपासकों द्वारा आपकी महिमा उसी प्रकार बढ़ती है, जैसे सत्पुत्र से पिता की कीर्ति-पताका चहुँ ओर फैल जाती है।

(ख) हे अग्नि के समान तेजस्वी उपासक! तू इधर आ, योगमार्ग पर आरूढ़ हो। मैं तुझे सत्य वेदवाणियों का सम्यक् उपदेश करता हूँ। इन वेदवाणियों के अनुसार योगानुष्ठान से तू उपासना के रस-बिन्दुओं से जीवन में प्रगति—उन्नति कर।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३क २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
७०६. यत्र क्वच ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्। तत्र योनिं कृणवसे।।

(क) हे परमगुरो परमात्मन्! जिस किसी सदाचारी, शान्त, समाहित उपासक में आपका मन लग जाता है— जिसपर आपकी कृपा हो जाती है, उसमें आप लोकोत्तर आत्मिक बल और उत्साह भर देते हैं। इतना ही नहीं उसके हृदय को आप अपना निवास-स्थान बना लेते हैं, उसके हृदय में बस जाते हैं—रम जाते हैं।

(ख) प्रभु जीव से कहते है—हे जीव! प्रयाणकाल में—संसार छोड़ते समय जहाँ कहीं भी तेरा मन होता है, जो भावना तेरे मन में प्रबल होती है उसी के अनुसार तू अगला जन्म बना लेता है और उस-उस जीवन में उन्नति के लिए उत्कृष्ट बल और उत्साह धारण करता है।

ऋषिः-भरद्वाजः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२र ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २
७०७. न हि ते पूर्तमक्षिपद् भुवन्नेमानां पते। अथा दुवो वनवसे।।

अपूर्ण=अल्पज्ञ जीवों के रक्षक हे परमात्मन्! आपका नाना प्रकार की सम्पदाओं से भरा भण्डार कभी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

क्षीण--खाली नहीं होता—वह तो सदा भरा ही रहता है। हे प्रभो ! हम कब से झोली फैलाये हुए हैं। अब तो आप हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार कीजिए और हम अल्पज्ञ, अनेक प्रकार की न्यूनताओंवाले जीवों को उचित सम्पत्ति प्राप्त कराइए।

सूक्त—२२

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (ककुप्)। **स्वरः**–ऋषभः।

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
७०८. वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः। वज्रिञ्चित्रं हवामहे।।

हे अपूर्व्य=सर्वदा, सर्वथा, परिपूर्ण, सदा से विद्यमान, अनादि परमेश्वर ! आपके प्रति भक्ति की भेंट लाते हुए, एक दृढ़ शक्तिशाली पुरुष के समान अपने-आपको दया, दाक्षिण्य, शम-दम आदि उत्तम गुणों से अलंकृत करते हुए, आपसे अपनी रक्षा चाहते हैं। हे दुःखनिवारक और ओजस्वी परमात्मन् ! अद्भुत गुण- कर्म-स्वभाववाले प्रभो ! क्या हम उपासक कभी आपको पुकारेंगे? क्या हमारे जीवन में वह सुप्रभात आएगा जब हम सद्गुणों से सुभूषित होकर आपका स्मरण करेंगे?

ऋषिः–सोभरिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
७०९. उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत्।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
त्वामिध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम्।।

हे परमेश्वर ! हम प्रत्येक कर्म में अपनी रक्षा के लिए आपके समीप उपस्थित होते हैं, आपका स्मरण करते हैं। जो काम-क्रोध आदि दुर्गुण हमारा धर्षण करते हैं—हमें आ दबाते हैं उन्हें युवा=बुराइयों से पृथक् करनेवाले और अत्यन्त तेजस्वी आप पैरों तले रौंद देते हैं। आपसे शक्ति पाकर हम भी उन्हें कुचल डालते हैं। हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! आपके सखा—आप जैसा बनने के इच्छुक हम उपासक उचित संविभाग करनेवाले और उपासनीय आपको ही अपना रक्षक स्वीकार करते हैं।

सूक्त-२३

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

२ ३क २र ३ १२ ३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७१०. अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे। उदेव ग्मन्त उदभिः।

हे वेदवाणियों से स्तुति करने योग्य परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! अब हममें सचमुच आपको पाने की, आपके साथ संगत होने की कामना जाग्रत् हुई है। हम अत्यन्त उत्कण्ठापूर्वक आपको चाहते हैं और आपको प्राप्त होते हैं। हम आपके साथ संगत होते हैं। जैसे जल जलों के साथ मिल जाते हैं, उसी प्रकार हम भी अपने-आपको आपके साथ एक कर देते हैं।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७११. वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि। वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे।।

सब वेदवाणियों से वर्णनीय हे परमेश्वर ! काम-क्रोध आदि सब वासनाओं को नष्ट करनेवाले हे प्रभो !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपासकों को वासनाओं से पृथक् रखने के कारण मेरे स्तुति-वचन आपकी महिमा के गीत गाते हैं। मैं सदा आपके स्तुति-वचनों का उच्चारण इसलिए करता हूँ कि मैं वासनाओं के आक्रमण से बचा रहूँ। हे वासनाओं से विदीर्ण न होनेवाले! परम आदरणीय देव! आप अपने उपासकों को प्रतिदिन आगे ही आगे ले-चलते हैं। प्रभो! आप मेरे जीवन के कवच बनकर मुझे भी पाप-वासनाओं से सुरक्षित रखते हुए उन्नत कीजिए।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पुरउष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७१२. युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे वचोयुजा। इन्द्रवाहा स्वर्विदा।।

उपासकों के अभीष्टों को सिद्ध करनेवाले और उन्हें उत्तम प्रेरणा देनेवाले परमेश्वर के स्तुतिगान और नाम-स्मरण द्वारा उपासक अपने विशाल और बहुमूल्य शरीर-रथ में प्रबल योग-साधना के लिए ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप घोड़ों को योगविधि से युक्त करते हैं। कैसे घोड़ों को जोड़ते हैं? उन घोड़ों को जोकि वेदवाणी का ज्ञान प्राप्त करनेवाले और उनके अनुसार आचरण करनेवाले हैं, जो परमैश्वर्यशाली प्रभु की ओर ले-चलनेवाले हैं और मोक्ष प्राप्त करानेवाले हैं।

प्रथमः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त–१

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–आनुष्टुभः प्रगाथः (अनुष्टुप्)। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
७१३. पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत। विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम्।।

हे उपासको! तुम सब, ज्ञान का प्रकाश देकर अविद्या-अन्धकार से सब प्रकार से रक्षा करनेवाले, सब मानियों के मान का मर्दन, गर्व का खर्व (नाश) करनेवाले, सबको परास्त करनेवाले, अनन्त कर्म करने में समर्थ और अनन्त प्रज्ञाओं में युक्त, मनुष्यों की अभिलाषाओं को पूर्ण करनेवाले, महान् आनन्द देनेवाले, परमपूज्य, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का निरन्तर गुणगान किया करो।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ २ ३ १ २
७१४. पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्या३ सनश्रुतम्। इन्द्र इति ब्रवीतन।।

जिसे राजा और रंक, विद्वान् और मूर्ख, आबाल-वृद्ध, नर-नारी सभी अपनी रक्षार्थ पुकारते हैं, सभी जिसकी स्तुति=गुणगान करते हैं, वेद की ऋचाओं से जो एक ही गेय=गाने योग्य है, सनातन काल से प्रसिद्ध है अथवा उचित संविभाग के कारण प्रसिद्ध है– हे मनुष्यो! तुम उसी को इन्द्र नाम से स्मरण करो, उसी को इन्द्र कहो और समझो।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७१५. इन्द्र इन्नो महोनां दाता वाजानां नृतुः। महाँ अभिज्ञ्वा यमत्।।

परमैश्वर्यशाली परमात्मा ही हमारे लिए बहुमूल्य और तेजस्वी ज्ञान, बल, अन्न और शक्तियाँ प्रदान करनेवाले हैं। वह परमात्मा ही सबको नचानेवाले हैं–सबको शुभकर्मों में प्रेरित करनेवाले हैं। वे सर्वमहान्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हैं—अत्यन्त उदार हैं। वे सर्वज्ञ हैं अथवा कर्मफल-भोग में परतन्त्र होने के कारण सभी उसके समक्ष घुटने टेकते हैं। वे परमात्मा ही हम सबपर शासन करते हैं।

सूक्त—२

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

७१६. प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने।।

हे उपासकमित्रो! तुम सब मिलकर, ज्ञानेन्द्रियरूप और कर्मेन्द्रियरूप अश्वों को अपनी और आकृष्ट करके उन्हें अपने में स्थिर करनेवाले, उपासना-रस को स्वीकार करनेवाले, ज्ञानस्वरूप, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए आनन्ददायक सामगान गाया करो।

[इन्द्रियाँ वस्तुतः परमेश्वर में ही समाहित होंगी, सांसारिक वस्तुओं से तो वे कुछ ही देर में ऊब जाती हैं।]

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

७१७. शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः। चकृमा सत्यराधसे।।

जिस प्रकार मुमुक्षुजन परमोत्तम दान देनेवाले, जीवों के बन्धनों को काटकर उनके जीवन को पवित्र बनानेवाले, सत्यस्वरूप और मोक्षैश्वर्यवाले परमात्मा के लिए अत्युत्तम प्रशंसा-वचनों का उच्चारण करते हैं, उसी प्रकार हम भी उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते सदा परमेश्वर का गुणगान करते हैं, उसे कभी नहीं भूलते।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

७१८. त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो। त्वं हिरण्ययुर्वसो।।

हे परमैश्वर्यशाली प्रभो! आप हमारे लिए मोक्ष को चाहनेवाले हों—हमें मोक्ष के साथ जोड़ें- मोक्ष प्रदान करें। हे शक्ति के पुञ्ज! आप हमें शक्ति के साथ जोड़नेवाले हैं और आप हमें मनोबल प्रदान करनेवाले हैं। हे अनन्त प्रज्ञानोंवाले प्रभो! आप वेद-वाणी के साथ हमारा सम्बन्ध जोड़नेवाले हैं। हे सबको आश्रय देनेवाले भगवन्! आप हमारे लिए दीर्घायु चाहनेवाले हैं और आप हमारे लिए हित-रमणीय सब गुणों को चाहनेवाले हैं।

सूक्त—३

ऋषिः–मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

७१९. वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हम सब सखा=आप जैसे ही बनने के इच्छुक आपका ही गुणगान करते हैं। हे प्रभो! हम उपासक आपको और केवल आपको ही चाहते हैं। आपकी प्राप्ति बस, यही हमारे जीवन का लक्ष्य है, यही हमारी उत्कट अभिलाषा है, यही हमारे जीवन का प्रयोजन है। ज्ञान-कणों के अभिलाषी मेधावी लोग भी वैदिक सूक्तों द्वारा आपकी ही स्तुति करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २३१ २र ३ २ ३२३ १२ २उ ३ १२
७२०. न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमैश्चिकेत।।

हे वज्रधारी, सबपर शासन करनेवाले परमेश्वर! मैं आपके सिवाय–आपको छोड़कर, आपसे भिन्न अन्य किसी की स्तुति = गुणगान निश्चय ही नहीं करता। हे प्रभो! कार्य के प्रारम्भ में–कार्य आरम्भ करते समय मैं वैदिक मन्त्रों द्वारा आपकी ही स्तुति करता हूँ। आपको ही अपना इष्टदेव जानकर आपकी और केवल आपकी ही स्तुति करता हूँ।

ऋषिः–मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र १ २ ३ २ ३ १ २
७२१. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः।।

दिव्य गुणों से युक्त परमैश्वर्यशाली परमात्मा और देवकोटि के उपासकजन उपासनारस-निष्पादक–उपासना करनेवाले उपासक को चाहते हैं, अपनाते हैं, असावधान, सोये रहनेवाले नास्तिक को नहीं चाहते, उससे स्नेह नहीं करते। सदा जागरूक, आलस्य और प्रमादरहित कर्मशील उपासक उत्कृष्ट आनन्द–ब्रह्मानन्द को प्राप्त होते हैं।

सूक्त–४

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७२२. इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः।अर्कमर्चन्तु कारवः।।

हम उपासकों की वाणियाँ ज्ञानरूप परमैश्वर्यवाले और अवर्णनीय आनन्द प्रदान करनेवाले परमेश्वर की खूब ही स्तुति करें। कलापूर्ण ढंग से कर्म करनेवाले जन ही संसार के उत्पादक और सब ऐश्वर्यों के अधिष्ठाता पूजनीय परमेश्वर की वास्तविक पूजा करते हैं

[परमात्मा की सच्ची पूजा और उपासना यही है कि प्रत्येक कार्य को कुशलतापूर्वक किया जाए। आसक्तिरहित होकर कुशलता से कर्मों को करना ही तो योग है।)

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
७२३. यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः।इन्द्रं सुते हवामहे।।

जिस ऐश्वर्यशाली परमात्मा में संसार की सब शोभाएँ और सम्पदाएँ निहित हैं, जिस परमेश्वर के आश्रय में 'भूः, भुवः' आदि सात लोक गति कर रहे हैं, वासनाओं का विनाश करनेवाले सात छन्दों से युक्त मन्त्र जिसमें रमण करते हैं, जिसको लक्ष्य बनाकर इकट्ठे हुए-हुए सभ्यजन अपनी रक्षार्थ स्तुति-प्रार्थना करते हैं, हम उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को अपनी उन्नति = अभ्युदय और निःश्रेयस–लौकिक और पारलौकिक कल्याण के लिए पुकारते हैं।

ऋषिः–श्रुतकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २
७२४. त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिव्य उपासक, मुमुक्षुजन तीन योगभूमियों—धारणा, ध्यान और समाधि में चेतन, सर्वव्यापक परमात्मा का विस्तार करते हैं, अर्थात् उसकी उपासना करते हैं। हम उपासकों की स्तुति-वाणियाँ भी उसी परमेश्वर का बढ़-चढ़कर वर्णन करें उसी का गुणगान करें, उसी की महिमा के गीत गाएँ।

सूक्त—५

ऋषिः—इरिम्बिठिः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १२ ३१२ १२३ २उ ३ १ २
७२५. अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! यह विनीत उपासक सर्वभाव से आपके प्रति समर्पित है। आपके इस उपासक ने हृदय की वासनाओं को उखाड़कर उसे अत्यन्त निर्मल बना लिया है। प्रभो !आप इस पवित्र हृदय में आइए, अवश्य अपने दर्शन दीजिए। इस उपासक के लिए द्रवित—दया से द्रवीभूत हो जाइए और अपने इस भक्त की सब प्रकार से रक्षा कीजिए।

ऋषिः—इरिम्बिठिः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३१ २र ३२ १२ ३ १ २
७२६. शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे।।

हे वेदवाणी के स्वामिन्! प्रज्ञा और शक्ति के कारण पूजनीय प्रभो! यह उपासना-रस आपके रमण के लिए—हमारे निर्मल हृदय में आपका रमण हो, दर्शन हो इसलिए निष्पादित किया गया है। पाप और आसुरी वृत्तियों का खण्ड-खण्ड करनेवाले हे परमात्मन्! आप उपासकों द्वारा पाप और आसुरी वृत्तियों से युद्ध करने के लिए प्रकृष्ट रूप से पुकारे जाते हो।

ऋषिः—इरिम्बिठिः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ १२ ३ १ २ २र ३ १ २र
७२७. यस्ते शृंगवृषो णपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः। न्यस्मिन् दध्र आ मनः।।

जो शान्तस्वरूप परमात्मा तुझ उपासक को धर्म के शिखर से न गिरने देनेवाला है, जो तुझे प्रकर्षरूप से पतन से बचानेवाला तेरा रक्षक है और जो डाह—ईर्ष्यादि दोषों से तेरी रक्षा करनेवाला है। हे उपासक! पूर्वकाल के सभी विद्वानों, महापुरुषों ने उसी में मन लगाया था, उसी की उपासना—अर्चना की थी, तु भी उसी परमात्मा में मन लगा।

सूक्त—६

ऋषिः—कुसीदी काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र
७२८. आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन।।

हे ज्ञानरूप परमैश्वर्यवाले परमेश्वर! आप महान् ज्ञानवाले हैं। आपका ज्ञान अनन्त और पूजनीय है। आप हमें शब्दमय उत्तम ज्ञान प्रदान करनेवाली वेद-ज्ञानरूपी सम्पत्ति को अवश्य प्राप्त कराइए। यह ज्ञान हमें इसलिए प्राप्त कराइए कि हम कुशलता से सब कर्मों को कर सकें। हमारी सर्वविध उन्नति के लिए भी हमें इस ज्ञान को प्राप्त कराइए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–कुसीदी काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३१२ ३१२ ३ १ २र
७२९. विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुविमघम्। तुविमात्रमवोभिः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपके विविध रक्षणों और कृपाभावों से हम निश्चयपूर्वक जानते हैं कि आप बहुत प्रकार के कर्म करनेवाले हैं, अत्यन्त बलवान् हैं। आप महादानी हैं—जीवों को विविध प्रकार के जीवन-साधन प्रदान करनेवाले हैं, महान् प्रेरक हैं—जीवों को दुष्कर्म न करने और शुभ कर्म करने की सदा प्रेरणा करते रहते हैं। आप अनन्त ऐश्वर्यवाले और अनन्त सामर्थ्ययुक्त हैं। आप महा परिमाणवाले—सर्वव्यापक और अनन्त ज्ञानवाले हैं।

ऋषिः–कुसीदी काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३१ २उ ३ १ २ ३२उ ३ १ २
७३०. न हि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम्। भीमं न गां वारयन्ते।।

काम-क्रोध आदि शत्रुओं का विनाश करनेवाले हे महा पराक्रमी परमेश्वर! जीवों को श्रेय देने की इच्छावाले अथवा जीवों को कर्मफल देने की इच्छावाले अथवा धनादि ऐश्वर्य देने की इच्छावाले आपको निश्चय ही न तो देव रोक सकते हैं और न ही मनुष्य हटा पाते हैं, जिस प्रकार भयंकर साँड को कोई नहीं रोक सकता।

सूक्त—७

ऋषिः–त्रिशोकः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७३१. अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुहि मदम्।।

हे सर्वमनोरथ-पूरक तथा आनन्दवर्षक परमेश्वर! इस उत्पन्न जगत् में मैं प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व आपकी ओर निहारता हूँ, आपकी स्वीकृति मिलने पर ही किसी कार्य को करता हूँ। मैं परमानन्द=मोक्ष-प्राप्ति के लिए अपने हृदय-सदन में निष्पादित उपासना-रस को आपके प्रति समर्पित करता हूँ। आप इसे स्वीकार करके मुझे तृप्त करें और जीवन को अपने आनन्दरस से आप्लावित—सराबोर कर दें, सींच दें।

ऋषिः–त्रिशोकः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २३ १ २ १ २ ३ १ २
७३२. मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः।।

हे उपासक! प्रकृति में फँसे हुए, अहंकार से भरे हुए मूढ=मूर्ख लोग, नाना प्रकार के भोगों की कामना करनेवाले भोजनभट्ट और शिश्नोदर परायण=भोग-विलासी, दुराचारी लोग, धर्म तथा ईश्वर का उपहास उड़ानेवाले, बकवादी, उच्छृंखलजन तुझे न दबा लें। तू इनके संसर्ग में मत बैठ। परमेश्वर और ज्ञान से द्वेष करनेवालों का तो तू तनिक-सा भी संग मत कर, इनसे सदा बचा कर।

ऋषिः–त्रिशोकः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
७३३. इह त्वा गोपरीणसं महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! अपनी इन्द्रियों का पालन और पूरण करनेवाले तुझे इस जीवन में महान्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सिद्धि और सफलता, प्रचुर सम्पदाओं—धनैश्वर्यों की प्राप्ति और अन्त में मोक्ष-प्राप्ति के लिए अन्य साधक सदा सचेत और सावधान करें तथा सुरक्षित सोम-कण तुझे आनन्दित करें। मोक्ष-प्राप्ति के लिए एक शुभ्र—निर्मल मनवाले साधक की भाँति तू ज्ञान का पान कर।

[ज्ञान से ही मुक्ति सम्भव है-**ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।**]

सूक्त—८

ऋषिः–मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३१२ १ २ ३ १ २
७३४. इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन् ररिमा ते।।

इस शरीर में उत्तम ढंग से निवास करनेवाले जीव! मैं तुझे अन्तःकरण में प्रकट होनेवाला योगज ज्ञान प्रदान करता हूँ जिसमें अन्धकार का लेश भी नहीं है। तू इस ज्ञान का यथेष्ट पान कर। हृदयंगम किया हुआ यह ज्ञान तेरा पालन और पूरण करेगा। इतना ही नहीं यह तेरे जीवन को सद्गुणों से सुभूषित कर देगा। हे निर्भीक योगिन्! तुझे ज्ञानरूपी सर्वोत्तम उपहार प्रदान करते हैं।

ऋषिः–मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३२ ३२उ ३ २ ३ २ ३ १ ३ २ ३ २ ३ २ ३१२
७३५. नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या वारैः परिपूतः। अश्वो न निक्तो नदीषु।।

यह आत्मा अपने को आगे ले-चलने की भावना से ओत-प्रोत, क्रियाशील मुमुक्षुजनों के द्वारा शुद्ध किया जाता है। क्रियाशीलता आत्मिक शुद्धि का प्रमुख साधन है। अकर्मण्यता आई और मलों का आवरण चढ़ना आरम्भ हुआ। अपने को व्यापक—विशाल मनोवृत्ति का बनानेवाले-'**वसुधैव कुटुम्बकम्**' सारे संसार को अपना कुटुम्ब समझनेवाले इस आत्मा को उन्नत व समृद्ध बनाते हैं। दयालुओं, महात्माओं की दोष-निवारक शक्तियों द्वारा यह शरीर, मन, वाणी, आत्मा सभी दृष्टिकोणों से पवित्र किया जाता है। जैसे घोड़ा नदी में स्नान करके शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार यह क्रियाशील, व्यापक मनोवृत्तिवाला और दयालु उपासक परमात्मा की आनन्दधाराओं में स्नान करके पवित्र हो जाता है।

ऋषिः–मेधातिथिप्रियमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २३ २३ १२ ३१२ ३१२ १२ ३१ २३१२
७३६. तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः। इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे।।

हे प्रभो! आपके भक्त, उपासक अपनी आत्मा को अभद्र से पृथक् करके भद्र से सम्पृक्त करते (जोड़ते) हैं और ज्ञान से—नाना प्रकार की विद्याओं से अलंकृत करके इसे मधुर बनाते हैं। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपका सेवन करते हुए—आपकी स्तुति, प्रार्थना-उपासना करते हुए हम उपासक अपने निर्मल हृदय में आपका आह्वान करते हैं।

सूक्त—९

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३१ २र ३ १ २ २ ३ २ १ २
७३७. इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते। पिबा त्वा३स्य गिर्वणः।।

सिद्धि और सफलताओं के स्वामी हे जीवात्मन्! यह सोम=वीर्यशक्ति निश्चय ही तुझे ओजस्वी और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तेजस्वी बनाने के लिए रस, रक्त, मांस, मेद, मज्जा, अस्थि, शुक्र—इस अनुक्रम से तेरे शरीर में उत्पन्न की गई है। वेदवाणी से प्रभु का सम्भजन करनेवाले उपासक ! तू इसका पान कर—इसे अपने शरीर में ही खपा। इसकी सुरक्षा ही तुझे संसार में सफल बनाएगी और तेरे जीवन में निरन्तर चलनेवाला प्रभु नाम-स्मरण तेरे मन को पापों में जाने से बचाएगा।

ऋषिः-विश्वामित्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३   १ २   ३ १   २र   ३ १   २र   ३क २र   १   २

७३८. यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम्। स त्वा ममत्तु सोम्य।।

हे शान्त एवं विनीत उपासक ! जो उपासना-रस तेरे दृढ़ संकल्प के द्वारा तेरे हृदय-सदन में निष्पन्न हुआ है, उसके निष्पन्न=प्रकट हो जाने पर तू उसे परमपिता परमात्मा के लिए समर्पित कर दे, परिणामस्वरूप वह परमैश्वर्यशाली परमेश्वर तुझे मदमस्त बना दे।

[तेरे जीवन में एक मस्ती आ जाए। पर्वत के समान कष्ट आने पर भी तू प्रसन्न रहे, निराशा और दुःख तुझे अभिभूत न करें।]

ऋषिः-विश्वामित्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २   ३ २उ   ३   १ २ ३   १ २   २ ३ १ २ ३ १ २

७३९. प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः। प्र बाहू शूर राधसा।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! आपके कृपा-कटाक्ष से यह उपासक आपके दोनों पार्श्वों में विद्यमान अभ्युदय और निःश्रेयस—संसार-सुख और मोक्षानन्द को प्राप्त करे। आपके वेद-ज्ञान से यह अपने मस्तिष्क को प्रकृष्टरूप से भरता है। हे विघ्न-बाधाओं को शीर्ण करनेवाले जीवात्मन् ! तू अपनी दोनों भुजाओं को प्रकृष्ट सफलता से—कर्म और विजय से सम्पन्न कर ले।

सूक्त—१०

ऋषिः-मधुच्छन्दाः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२उ   ३   १   २ ३ १ २ ३ १   २र   १ २ ३   १ २

७४०. आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखाय स्तोमवाहसः।।

स्तुतिगानों के द्वारा परमात्मा का आह्वान करनेवाले हे उपासकमित्रो ! आप चारों ओर से अवश्य आइए। आप सब इकट्ठे होकर श्रद्धा-भक्तिपूर्वक चारों ओर बैठ जाइए और परमेश्वर को लक्ष्य करके उसका खूब गुणगान करो। किस लिए? अपने संसाररूपी बन्धनों को शिथिल करने के लिए, बन्धन के बीजों का नाश करने के लिए और ब्रह्म को जानकर उसकी ओर चलने और उसे प्राप्त करने के लिए।

ऋषिः-मधुच्छन्दाः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २   ३ १   २र ३ १ २   २ ३   २ ३   १ २   ३ २

७४१. पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते।।

हे समान शील-स्वभाववाले उपासकमित्रो ! हृदय-सदन में उपासना-रस के निष्पन्न—प्रकट हो जाने पर तुम सब मिलकर शम, दम, क्षमा, दया, सुशीलता, सरलता आदि सब वरणीय गुणों के स्वामी और काम-क्रोध, राग-द्वेष आदि विघ्नों को नष्ट करनेवाले सर्वश्रेष्ठ, परमज्ञानी परमेश्वर का प्रकृष्ट गान किया करो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–मधुच्छन्दाः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २३ १ २३ २ ३१ २र २३ १२ ३१ २र
७४२. स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरन्ध्या। गमद् वाजेभिरा स नः।।

वह सर्वप्रसिद्ध परमेश्वर निश्चय ही हमारी योग-साधनाओं में हमारा सहायक होता है। वही परमेश्वर लौकिक धन और अलौकिक सम्पत्तियाँ—योग विभूतियाँ प्रदान करने में समर्थ है। वही परमात्मा अपनी प्राप्ति के लिए भी साधन है। वह बल, शक्ति, अन्न, विज्ञान, यश प्रदान करने के लिए हमारे पास आये, हमें प्राप्त हो।

सूक्त–११

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३१ २३ १ २ १ २ ३ १२३१२
७४३. योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये।।

प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ के अवसर पर, प्रत्येक शुभकर्म के अवसर पर और योगाभ्यास की भिन्न-भिन्न भूमियों में तथा प्रत्येक जीवन-संघर्ष के अवसर पर—काम-क्रोध-लोभ आदि के साथ होनेवाले संघर्ष में, विज्ञान, बल, शक्ति, अन्न और यश-प्राप्ति के निमत्त हम अत्यन्त बलशाली, जीवन को प्रगतिशील और सद्गुणों से समृद्ध करनेवाले परमेश्वर का आह्वान करते हैं, उसका स्मरण करते हैं, उसी से प्रार्थना और याचना करते हैं। परमेश्वर के सखाभूत हम उपासक अपनी रक्षा के लिए परम शक्तिशाली, शत्रुओं और विघ्न-बाधाओं का विदारण करनेवाले परमेश्वर को पुकारते हैं।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २ ३ २ ३ २
७४४. अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम्। यं ते पूर्वं पिता हुवे।।

अपने सनातन घर अर्थात् परमात्मा की अमृतमयी गोद—मोक्षपद-प्राप्ति को अपना जीवन-लक्ष्य बनाकर मैं बहुतों—सबके प्रतिपालक—सब मुक्तात्माओं को अपने आनन्दामृत से तृप्त करनेवाले, सारे ब्रह्माण्ड के स्वामी परमेश्वर को पुकारता हूँ। हे उपासक! तू भी उस परमेश्वर को पुकार जिसे तुझसे पहले तेरे पिता ने पुकारा था। वह परमेश्वर प्राचीन और अर्वाचीन सभी ऋषियों से पुकारने योग्य है, तू भी उसी को पुकार।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७४५. आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम्।।

वह परमेश्वर अवश्य आता है—अपना दर्शन देता है। यदि वह हमारी प्रार्थनाओं को सुन लेता है—स्वीकार कर लेता है तो वह सहस्रों रक्षा-साधनों और सहस्रों शक्तियों के साथ उपस्थित हो जाता है।

सूक्त–१२

ऋषिः–नारदः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
७४६. इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम्। विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः।।

(क) हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हृदय-मन्दिर में उपासना-रस के निष्पन्न=प्रकट हो जाने पर आप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रज्ञानवान्, संकल्पशील और कर्मशील उपासक को प्रशंसनीय और निर्मल बना देते हो। हे प्रभो ! मैं वृद्धि के कारणभूत आत्मबल की प्राप्ति के लिए आपकी शरण में आता हूँ, क्योंकि आप निश्चय ही महान् हैं।

(ख) हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जितेन्द्रिय पुरुष ! भक्ति-यज्ञ के आरम्भ होने पर तू यशस्वी और बलस्वरूप परमात्मा को प्राप्त करने के लिए अपनी आत्मा को स्तुत्य ज्ञान से पवित्र बना। वह परमात्मा महान् है, उसे प्राप्त करके तू भी महान् हो जाता है—महत्त्व को प्राप्त कर लेता है।

ऋषिः—नारदः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—उष्णिक्। **स्वरः**—ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
७४७. स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः। सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित्।।

वह परमेश्वर विस्तृत आकाश में व्यापक है तथापि वह सद्गुणयुक्त मनुष्यों के हृदय-सदन में भी निवास करता है। वह उपासकों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों की वृद्धि करनेवाला है। वह शरणागत उपासकों को संसार-सागर से पार ले-जानेवाला है। वह सर्वाधिक यशस्वी है। वह उपासकों के हृदय में प्रविष्ट समस्त कुवासनाओं और कुविकारों का विजेता—नाशक है। ऐसे परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

ऋषिः—नारदः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—उष्णिक्। **स्वरः**—ऋषभः।

१ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
७४८. तमु हुवे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम्। भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे।।

मोक्षानन्द की प्राप्ति के लिए और सांसारिक दृष्टि से भरण-पोषण के लिए अथवा काम-क्रोध आदि शत्रुओं के साथ होनेवाले देवासुर-संग्राम में विजय-प्राप्ति के लिए मैं शत्रुओं के बल के शोषक और उनका विदारण करनेवाले सर्वप्रसिद्ध इन्द्र का आह्वान करता हूँ। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन् ! हमारे सुख के निमित्त और हमारी सर्वप्रकार की वृद्धि—जीवन-विकास के लिए आप हमारे अत्यन्त समीपवर्ती सखा—सहायक बन जाइए।

सूक्त—१३

ऋषिः—वसिष्ठः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
७४९. एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्।।

मैं विनयपूर्ण आत्म-समर्पण और उपासना द्वारा मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए उस परमेश्वर को पुकारता हूँ जोकि प्रकाशस्वरूप हैं, सर्वविध बलों के रक्षक हैं, सबको तृप्ति देनेवाले हैं, ज्ञानस्वरूप हैं, अनासक्त हैं—काम-भोगरहित हैं, दीनोद्धारक हैं, शरीर में प्रविष्ट हो जानेवाले काम-क्रोध आदि के नाशक हैं और अजर, अमर, अविनाशी हैं।

ऋषिः—वसिष्ठः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथ (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
७५०. स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा सारे संसार का पालन करनेवाले तेज से युक्त है। वह सम्पूर्ण विश्व का पालक-पोषक है। वह श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पुकारे जानें पर द्रवित हो जाता है—कृपालु हो जाता है और उपासक के हृदय-मन्दिर में प्रकट हो जाता है। वह अत्यन्त ज्ञानी है, परमपूज्य है। वह शान्तिप्रद है। वह नाना प्रकार के रत्नों का दाता है और मनुष्य के दारिद्रय का नाश कर उन्हें सफलता प्रदान करता है। ऐसे परमात्मा की ही उपासना करो।

सूक्त—१४

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ १ २ ३ २ ३२
७५१. प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः।
१२ ३१ २ ३ १२३ २३ १ २ ३१२
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी।।

सूर्य की पुत्री अर्थात् उषा उदित होती हुई निश्चय ही सब मनुष्यों के द्वारा देखी जाती है। यह शरीर-धारियों के आलस्य और प्रमाद को दूर करते हुए आती है। रात्रि में जीवन-क्रिया समाप्त-सी हो जाती है, उषा के प्रकट होते ही जीवन-यात्रा फिर आरम्भ हो जाती है। यह महनीय उषा प्रकट होकर अन्धकार को दूर भगा देती है और चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश कर देती है।

[उषा के आने पर उपासक शय्या त्यागकर, ब्रह्म के ध्यान में लीन होकर अपने दोषों को दूर करते हैं और ध्यान-जन्य तेज को प्राप्त करते हैं।]

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २र ३ २
७५२. उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत्।
१ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि।।

उषा के साथ ही, उषा के पीछे-पीछे उदय होता हुआ सूर्य अपनी किरणों को ब्रह्माण्ड में फेंकता है—फैलाता है और उदित होनेवाले नक्षत्र-मण्डल को भी सूर्य ही अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है। हे उषा ! तेरे और सूर्य के उदित होने पर ही हम उपासना से संगत हों।

[उषाकाल से आरम्भ करके सूर्योदय तक उपासना चलनी चाहिए।]

सूक्त—१५

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७५३. इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना।
३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः।।

हे परमेश्वर ! प्रज्ञा और सम्पत्तिशालिता—ये दो आपके स्वरूप हैं। मोक्ष के अभिलाषी उपासकजन आपके दोनों रूपों का आह्वान करते हैं। आपके दोनों रूप सूर्यकिरणों के सदृश अज्ञान-अन्धकार और दारिद्रय को नष्ट करनेवाले हैं तथा प्राणापान के समान शारीरिक नीरोगता और बुद्धि की तीव्रता प्रदान करनेवाले हैं। मैं उपासक भी अपनी रक्षा के लिए आपके दोनों रूपों का आह्वान करता हूँ। आप अपने दोनों रूपों से प्रत्येक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपासक के हृदय में प्रकट होते हो।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७५४. युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु।।

हे प्रज्ञा और सम्पत्तिशालिता रूपोंवाले परमेश्वर! आप अपने इन दोनों रूपों से हमें नाना प्रकार के प्राकृतिक और आध्यात्मिक भोजन प्रदान करते हैं। आपके ये दोनों रूप मनुष्यों के नायक है, उन्हें जीवन में आगे ले-चलनेवाले और प्रिय एवं सत्य-वक्ता को प्रेरणा देते हैं। आप सहृदय हैं। आपके दोनों रूप हमारे शरीर-रथ को नियम में रखते हैं। प्रभो! आप अपने दोनों रूपों में प्रत्यक्ष होकर हमें अपना मधुर दर्शन-रस पिलाओ।

सूक्त–१६

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
७५५. अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम्।।

सर्वगुण-सम्पन्न विद्वान् सबके हृदय में स्थित परमात्मा की शाश्वत अमर ज्योति को और साथ ही तत्त्वज्ञान प्राप्त करानेवाले वेद को अपने में दुहता है जोकि निर्मल और निर्भ्रान्त है, हमारा सब प्रकार से वर्धन करनेवाला है और विज्ञान के द्वारा प्राप्य अभ्युदय की साधनभूत सहस्रों प्रकार की सुख-सामग्री प्राप्त करानेवाला है।

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २र
७५६. अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति। सप्त प्रवत आ दिवम्।।

(क) वह ज्ञानस्वरूप परमात्मा सूर्य के समान साक्षात् प्रकाशमान है। वह उपासक के प्रार्थना-वचनों को सुनता है। जो श्रद्धा-भक्तिपूर्वक भगवान् की आराधना करता है, परमेश्वर अवश्य ही उसका कल्याण करता है। वह सात प्रकार के मुनष्यों को मोक्षलोक में ले-जाता है। वे सात मनुष्य हैं–अहिंसक, दानशील, दयालु, सत्यवादी, संयमी, सदाचारी और विनीत।

(ख) यह उपासक कुछ-कुछ सूर्य के समान दिखाई देने लगा है। इसके मस्तिष्करूप द्युलोक में ब्रह्मविद्या का सूर्य और विज्ञानों के नक्षत्र चमकने लगे हैं, क्योंकि यह निरन्तर ज्ञान प्राप्ति की ओर दौड़ रहा है–ज्ञानार्जन में लगा हुआ है। इस ज्ञान-प्राप्ति का फल यह है कि यह सात ऊँचाइयों को प्राप्त करता है–योग की सात भूमिकाओं पर आरूढ़ होता है और अन्त में प्रकाशमय लोक=मोक्ष को प्राप्त कर लेता

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानःसोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २र
७५७. अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि। सोमो देवो न सूर्यः।।

यह शान्तस्वरूप, दिव्य गुण-कर्म-विशिष्ट परमात्मा सब श्रद्धालु मनुष्यों को पवित्र करता हुआ सारे लोक-लोकान्तरों को गति देने के लिए उनपर अधिष्ठाता के रूप में विद्यमान है। किस प्रकार? सूर्य के समान। जैसे सूर्य अनेक लोकों पर अधिष्ठाता के रूप में विद्यमान है और सारे लोकों को पवित्र करता है, उसी प्रकार।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–१७

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३२ ३२३ १२ ३२ ३१२ ३२ १२ ३१२
७५८. एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः। हरिः पवित्रे अर्षति।।

यह प्रकाशकों का प्रकाशक आनन्दमय परमेश्वर उपासकों के पूर्वजन्मों के पवित्र संस्कारों के कारण दिव्य गुण-कर्म-स्वभाववाले उपासकों द्वारा अपने हृदयों में प्रकट किया जाता है। दुःखों का हरण करनेवाला परमेश्वर पवित्र हृदय-सदन की ओर तीव्रता से जाता है अर्थात् पवित्र हृदयवालों को शीघ्र ही परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३२ ३२३ १२ ३२ ३२३१२ ३१ २र
७५९. एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि। कविर्विप्रेण वावृधे।।

यह प्रकाशस्वरूप परमेश्वर सनातन वेद का प्रकाशक और निर्माता होने के कारण कवि है। दिव्य कोटि के उपासकों द्वारा हृदय-सदन में उसका साक्षात्कार किया जाता है। वह विप्र=मेधावी लोगों द्वारा बढ़ाया जाता है–प्रचारित किया जाता है।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३१ २र ३२३ १२ १२३१ २
७६०. दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यसे। क्रन्दं देवाँ अजीजनः।।

वृद्धि के कारणभूत सनातन वेदज्ञान से दुहा जाता हुआ शान्तस्वरूप परमात्मा वासनाओं से शून्य निर्मल हृदय में निश्चय ही परिषिक्त किया जाता है, बैठाया जाता है। हृदय में आसीन होकर उपदेश देता हुआ परमात्मा उपासक के अन्दर दिव्य गुणों को उत्पन्न करता है। अथवा 'ओ३म्' का जप और प्रभु-नामों का स्मरण करते हुए यह उपासक अपने जीवन में दिव्य गुणों और योग की विभूतियों को उत्पन्न करता है।

सूक्त-१८

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३१२ ३२३१ २३ १२ १२ ३२ ३२
७६१. उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रवे। पवमान विदा रयिम्।।

हे आनन्दधारा के रूप में प्रवाहित होनेवाले परमात्मन्! आप मेरे विरोध में खड़े होनेवाले काम-क्रोध आदि शत्रुओं को ऐसा पाठ पढ़ाइए कि ये फिर कभी मेरे विरोध में खड़े न हों और मुझे इन दोषों के प्रति आन्तरिक भाव से समझा– मुझे इनके प्रति घृणा करा। इन काम-क्रोध आदि शत्रुओं के प्रति मेरे अन्दर भय बिठा–ये किस प्रकार जीवन को नष्ट कर डालते हैं, यह भय दिला। मेरे जीवन को पवित्र बनाता हुआ मुझे मोक्षरूपी धन का लाभ करा–मोक्ष प्रदान कर।

ऋषिः–अमहीयुरांगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३२३२३ १२ ३१ २र १२३१ २
७६२. उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भंगं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः।।

मुमुक्षु उपासकजन भावभरी–श्रद्धा-भक्ति से की गई स्तुतियों द्वारा दिव्य गुणों से समलंकृत, शीघ्रकारी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और सर्वव्यापक, पाप-नाशक और अन्तः-बाह्य शत्रुओं के संहारक, आत्मा को संस्कृत करनेवाले, परम रसीले, आनन्द-प्रद परमात्मा का हृदय-मन्दिर में साक्षात्कार करते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र

७६३. उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ इयक्षते।।

हे धर्मपरायण मुमुक्षुजनो ! हमारे जीवनों को पवित्र बनानेवाले, दिव्य गुणों, दिव्य सुखों, दिव्य विभूतियों को प्राप्त करानेवाले—परमहितैषी, पार्थिव भोगों से अलिप्त, विषय-वासनाओं से अबद्ध, परम-रसीले, चन्द्रसम शीतल परमात्मा के लिए आत्मभाव—से श्रद्धा-भक्ति में विभोर होकर गान करो—उसका स्तवन और उसकी उपासना करो।

सूक्त—१९

ऋषिः–त्रित आप्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २

७६४. प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषा इव।।

(क) मेधावी विद्वान्—भक्तिरस रसिकजन उपासकों को उपासना-यज्ञ में उसी प्रकार ले-जाते हैं, जैसे नदी अथवा समुद्र की लहरें जलगत पदार्थों को तट की ओर ले-जाती हैं और जैसे सिद्ध पुरुष दिव्य प्रकाश को प्राप्त करके उसे अन्य मनुष्यों को प्राप्त कराया करते हैं।

(ख) अत्यन्त विनीत, सूक्ष्मदर्शी और उत्साह के पुन्ज—इन तीन गुणों से विभूषित साधक मनुष्यों को कर्मों की ओर ले-चलते हैं—उन्हें कर्मशीलता का उपदेश देते हैं और उन्हें ज्ञान प्राप्त कराते हैं। ज्ञान और कर्मशीलता का प्रचार करते हुए ये पूजनीय देवों=महामानवों के समान हो जाते हैं।

ऋषिः–त्रित आप्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २

७६५. अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया। वाजं गोमन्तमक्षरन्।।

(क) महातेजस्वी और शान्तस्वरूप परमात्मा वेदवाणियों द्वारा की जानेवाली स्तुतियों से मोक्षानन्द को उपासकों के हृदय-पात्र में धारारूप में टपकाता है।

(ख) भरण-पोषण करनेवाले अत्यन्त सात्त्विक उपासना-रस जल की धारा की भाँति उपासकों के हृदय-कलशों की ओर प्रवाहित हो गये हैं और इन्होंने उनमें वेदोपदिष्ट ज्ञान और शारीरिक बल प्रवाहित कर दिया है।

ऋषिः–त्रित आप्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २

७६६. सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमा अर्षन्तु विष्णवे।।

(क) आचार्यों के द्वारा उपदिष्ट और शास्त्रों के द्वारा सुशिक्षित सौम्य उपासको ! तुम सर्वव्यापक विष्णु, परमैश्वर्यशाली इन्द्र, महाबलवान् और उपासक के दोषों के हिंसक वायु, सबको चाहनेवाले और सबके द्वारा चाहनेयोग्य वरुण तथा प्राणों के प्रेरक मरुत् नामक परमात्मा को ज्ञान, ध्यान आदि से प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(ख) उपासित हुआ शान्तस्वरूप परमात्मा उपासक की वाणी, मन, प्राण, आत्मतेज और शारीरिक बल की वृद्धि के लिए प्राप्त हो अर्थात् उपासक की इन सभी शक्तियों की यथोचित उन्नति करे।

सूक्त—२०

ऋषिः-भरद्वाजादयः सप्तर्षयः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ ३१ २ ३ २३१ २३ १२
७६७. प्र सोम देव वीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा।
३ १ २र ३ १ २र ३२ ३ १ २ ३ १ २
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम्।।

हे विनीत—सौम्य स्वभाव जीव! जैसे नदियाँ जल से बढ़ती हैं, वैसे ही तू ज्ञान की किरणों से अपनी वृद्धि कर—अत्यन्त ज्ञानी बन। तू सदा मदमस्त-सा बना रह, परन्तु आलस्य-प्रमादरहित होकर सदा जागता रह। तू सदा आनन्दरस का क्षरण करनेवाले आनन्दमयकोश की ओर चलनेवाला बन।

ऋषिः-भरद्वाजादयः सप्तर्षयः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)।
स्वरः-पञ्चमः।

१ २३१ २र ३ १२ ३२ ३१ २र
७६८. आ हर्यतो अर्जुनो अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः।
१ २ ३ २३ २ ३ १२ ३१ २र
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः।।

अत्यन्त कमनीय—चाहने योग्य, जीवन में प्राप्त करने योग्य, शुद्ध, पवित्र, अपापविद्ध, परमप्रिय, सूर्य के समान तेजस्वी परमात्मा हृदय-प्रदेश में आ जाता है—प्राप्त होता है। निष्काम कर्म करनेवाले योगाभ्यासी उसे अवश्य प्राप्त करते हैं, अनुभव करते हैं। वह परमात्मा शरीररूपी रथ में रहने योग्य हैं, इसका सुसञ्चालन करने के लिए। जैसे कर्मशील पुरुषार्थी व्यक्ति किसी नदी को पार करने के लिए अपनी भुजाओं का सहारा लेता है, उसी प्रकार उपासक संसार-नदी को पार करने के लिए दया और वात्सल्यरूपी हाथोंवाले परमेश्वर का सहारा लेते हैं।

सूक्त—२१

ऋषिः-श्यावाश्वः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३१२ ३ २ ३१२
७६९. प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्। सुता विदथे अक्रमुः।।

भक्तों द्वारा उपासित आनन्दामृत की वर्षा करनेवाला परमेश्वर हम अध्यात्म-यज्ञ करनेवाले उपासकों के यश के लिए हों—परमेश्वर इस जीवन में हमें सर्वविध यश प्राप्त कराए, हमारा जीवन व्यर्थ-सा न होकर यशस्वी हो और अन्त में वह परमेश्वर हमें मोक्ष प्राप्त कराए।

ऋषिः-श्यावाश्वः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३१ २र ३ २ २ ३ १ २र
७७०. आर्दीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम्। अत्यो न गोभिरज्यते।।

अब निश्चय से अपने दोषों की हिंसा करनेवाला यह परमहंस=उपासक अपने ज्ञान के अनुसार सर्वव्यापक परमेश्वर के श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार के लिए प्रयत्नशील होता है। वह निरन्तर क्रियाशील परमेश्वर इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। वह परमेश्वर स्तुतियों के द्वारा हृदय में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साक्षात् किया जाता है।

ऋषिः–श्यावाश्वः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
७७१. आर्दी त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये।।

अब तो काम-क्रोध और लोभ से ऊपर उठे हुए मेधावी उपासक की प्रभु से मेल करानेवाली स्तुतियाँ और दोषों को दूर करनेवाली वृत्तियाँ तथा एकाग्र की हुई चित्तवृत्तियाँ उस अत्यन्त मनोहर और दुःखों को दूर करनेवाले प्रभु को प्राप्त कराती हैं। इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा के लिए आनन्दरस पूर्ण परमात्मा के आनन्दरस का पान कराने के लिए उपासकों को चाहिए कि श्रद्धा-भक्ति और आस्तिक-भावनाओं से परमेश्वर की उपासना करें।

सूक्त–२२

ऋषिः–अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १२ २ ३ १
७७२. अया पवस्व देवयू रेभन् पवित्रं पर्येषि विश्वतः। मधोर्धारा असृक्षत।।

(क) हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! मुमुक्षुओं को चाहनेवाले, उनका हित करनेवाले आप हमारी उपासना से हमें प्राप्त हों। आप हम उपासकों के पवित्र हृदय में पाप से दूर रहने और पुण्य–शुभ कर्म करने का उपदेश देते हुए सब प्रकार से प्राप्त होओ और हमारे अन्तःकरण में आनन्दरस की धाराएँ प्रवाहित कर दो।

(ख) हे शान्तस्वरूप उपासक ! तू गतिशीलता–निरन्तर क्रियाशीलता के द्वारा अपने जीवन को पवित्र बना। तू दिव्य गुणों की कामनावाला बन। तू दिव्य पुरुषों का सत्संग कर। तू प्रभु के स्तोत्रों का उच्चारण कर, सब ओर से ज्ञान प्राप्त कर और ज्ञान प्राप्त करके माधुर्य से भरी वाणियों का ही सदा उच्चारण किया कर।

ऋषिः–अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
७७३. पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या। अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः।।

शान्तस्वरूप परमात्मा अति सुन्दर है, मनोहर है और कामना करने योग्य है। वह अपने पावन वेगों से उपासक के हृदय की कुटिल और मलिन भावनाओं को दूर करके निर्मल हृदय में प्रतिष्ठित होता है। हे प्रभो ! आप श्रद्धा-भक्ति से आपकी उपासना करनेवाले उपासकों को पराक्रम और भक्तों द्वारा प्राप्त करने योग्य यश प्राप्त कराइए।

ऋषिः–प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ १ २र
७७४. प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः। अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः।।

अपना परिपाक करनेवाले हे तपस्वियो ! जीवन में सफलता की विघ्नभूत लोभवृत्ति को मार भगाओ परन्तु यज्ञीय भावनाओं को जीवन से पृथक् मत होने दो। अपने अन्दर यज्ञीय भावना–विद्वानों का सत्कार, बराबरवालों से मेल और छोटों से प्रेम–का विकास करो। हे मरणधर्मा मनुष्यो ! ध्यान करने योग्य परमात्मा को आत्मा में प्रकट करने–हृदय में साक्षात् करने के लिए किसी नास्तिक का वचन रुचिकर नहीं होता–प्रभु-प्रेमी नास्तिक के वचन को सुनना भी नहीं चाहता।

।। यहाँ प्रथम प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ द्वितीयः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त–१

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २३ १ २र ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
७७५. पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः। अभि विश्वानि काव्या।।

हे सर्वज्ञान-सम्पन्न प्रभो ! आप हमारे अग्रनायक होकर अपने प्रशंसनीय रक्षा-साधनों द्वारा हमारी वाणियों को पवित्र कीजिए–वाणी से हम हितकर, प्रिय और मधुर ही बोलें, कटु और कड़वा नहीं। आप हमारे समस्त आचरणों–व्यवहारों को भी पवित्र कर दीजिए।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २३१२ ३२ ३ १ २र ३१२ १२
७७६. त्वं समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच इरयन्। पवस्व विश्वचर्षणे।।

हे सर्वद्रष्टा ! समस्त प्रजाओं के स्वामी परमात्मन् ! आप सर्वाग्रणी शक्ति हैं, आप अग्रनायक और सदा से विद्यमान हैं। आप सर्वश्रेष्ठ हैं, अतः आप हमसे सबको आनन्द देनेवाले कर्मों को कराते हुए और वेदवाणियों को हृदय में प्रेरित करते हुए हमें प्राप्त होओ।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
७७७. तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे। तुभ्यं धावन्ति धेनवः।।

हे क्रान्तदर्शिन् ! शान्तस्वरूप परमात्मन् ! ये सारे लोक-लोकान्तर आपकी महिमा को दर्शाने के लिए वर्तमान हैं, नियम और व्यवस्था में ठहरे हुए सारे भुवन अपने नियामक और व्यवस्थापक की महिमा का गान कर रहे हैं। सभी वेद-वाणियाँ भी आपकी महिमा का वर्णन करने के लिए प्रवृत्त हो रही हैं, आपकी महिमा के गीत गा रही हैं।

सूक्त–२

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३२ ३ १ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
७७८. पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि।।

हे परम रसीले परमात्मन् ! आप ध्यान-धारणा द्वारा हृदय में प्रकट किये गये हैं। आप आनन्दरस से हमारे हृदय को तृप्त कीजिए। प्रभो ! हमें जन-समुदाय में यशस्वी बनाइए और हमारी सब द्वेष-भावनाओं को तथा काम-क्रोध आदि सब प्रकार के शत्रुओं को नष्ट कर दीजिए।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ २
७७९. यस्य ते सख्ये वयं सासह्याम पृतन्यतः। तवेन्दो द्युम्न उत्तमे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परम रसीले परमात्मन् ! हम सदा आपकी सर्वोत्कृष्ट ज्ञान-ज्योति और यश में स्थित रहें। आपकी मित्रता में रहते हुए हम उपासक हमारे साथ संघर्ष करते हुए—हमपर आक्रमण करते हुए काम-क्रोध आदि की सेना का सर्वथा पराभव कर देते हैं।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

७८०. या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे। रक्षा समस्य नो निदः।।

हे आनन्दधारा में प्रवाहित होनेवाले परमेश्वर ! आपके जो काम-क्रोध आदि शत्रुओं और दुष्ट, दुराचारी, अन्यायियों के नाशक भयंकर और तीक्ष्ण ज्ञानरूपी अस्त्र-शस्त्र हैं, उनके द्वारा हमें सब निन्दक शत्रुओं से और लोक-निन्दा से बचाइए।

सूक्त—३

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षडज्ः।

७८१. वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दध्रिषे।।

हे परम रसीले परमात्मन् ! आप उपासकों की सब कामनाओं को पूर्ण करनेवाले और ज्योतिर्मय हैं, अतः हमारे जीवनों को भी ज्योतिर्मय बना दीजिए। हे दिव्य गुणयुक्त परमेश्वर ! आप हमें शक्तिशाली और पराक्रमपूर्ण कर्म करनेवाला बना दीजिए। आप हमारी प्रवृत्ति को धर्मप्रवण [धर्म की ओर झुकाववाली] बनाते हुए हमारे जीवनों को धर्मों का धारक=कर्तव्यों का पालक बना दीजिए।

[संक्षेप में आप हमारे जीवनों को प्रकाशमय, कर्मशील और धर्ममय बना दीजिए।]

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

७८२. वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा सुतः। स त्वं वृषन् वृषेदसि।।

हे सुखवर्षक परमेश्वर ! सुखवर्षक आपका बल भी सुखवर्षा के लिए ही है अथवा अत्यन्त शक्तिशाली आपका बल धर्म की प्रेरणा देनेवाला है। आपकी उपासना मेरी सब कामनाओं को पूर्ण करनेवाली है, मुझे शक्तिशाली और धार्मिक बनानेवाली है। हृदय में प्रकट किये हुए आप मेरी सब कामनाओं—मनोरथों को पूर्ण कर देते हो। हे प्रभो ! आप निश्चय ही सुखवर्षक, धर्मप्रवर्तक और शक्तिवर्धक हो।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

७८३. अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः। वि नो राये दुरो वृधि।।

हे परमैश्वर्यशाली, परम रसीले, शान्तस्वरूप परमात्मन् ! जैसे अश्व=घोड़ा रथ-चक्र को गति देता है, उसी प्रकार आप संसार-चक्र को गति प्रदान करते हैं। आप वृषा हैं—उपासकों की सभी कामनाओं को पूर्ण करते हैं। हे प्रभो ! कृपा कीजिए, हमें उत्तम ज्ञानेन्द्रियाँ प्राप्त कराइए—हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ आपका प्रत्यक्ष करें। हमें उत्तम कर्मेन्द्रियाँ और उत्तम मन प्राप्त कराइए। हमारी कर्मेन्द्रियाँ उत्तम कर्म करें और मन आपका चिन्तन-मनन करे। हे प्रभो ! मोक्षैश्वर्य को प्राप्त करने के लिए आप द्वारों को खोल दीजिए—मोक्ष-प्राप्ति में बाधक राग-द्वेष, अज्ञान आदि को हटा दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सक्त—४

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
७८४. वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम्।।

हे आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और जीवन को पवित्र करनेवाले परमात्मन्! आप चमकते हुए सूर्य के द्वारा भी सुखों की वर्षा कर रहे हैं, अतः हम सदा अत्यन्त तेजस्वी और सुख-शान्ति के मार्ग-दर्शक आपको ही बुलाते हैं—आपको ही पुकारते हैं, आपका ही ध्यान, चिन्तन और मनन करते हैं।

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
७८५. यदद्भिः परिषिच्यसे मर्मृज्यमान आयुभिः। द्रोणे सधस्थमश्नुषे।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! जब आप उपासकों के द्वारा श्रद्धा-भक्ति से अपनाये जाते हैं अथवा प्रेम-वारि (जल) से सींचे जाते हैं, तब आपका स्वरूप विशुद्ध रूप में प्रकट होता है और आप हृदयरूप गृह में, जो आत्मा और परमात्मा के रहने का स्थान है, निवास करते हैं।

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७८६. आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध। इहो ष्विन्दवा गहि।।

काम-क्रोध आदि दोषों, विघ्न-बाधाओं और दुष्ट पुरुषों को नष्ट करने के लिए ज्ञान और गुणरूप उत्तम अस्त्र-शस्त्रोंवाले हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! स्तुति किये जाते हुए अत्यन्त प्रकाशमान आप हमें श्रेष्ठ बल प्राप्त कराओ और हमारे इन शुद्ध, पवित्र, निर्मल हृदयों में अवश्य ही प्रकट होओ और अति सुगमता से प्रकट होओ।

सूक्त—५

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
७८७. पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वमा वृणीमहे।।

हे परम रसीले परमात्मन्! पवित्र जीवन और पवित्र हृदयवाले उपासक को अपने आनन्दरस से सींचते हुए और आनन्दधारा में प्राप्त होते हुए आपके मित्रभाव का हम सर्वथा वरण करते हैं, पूर्णरूप से आपको अपनाते हैं, आपको अपना मित्र बनाते हैं।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
७८८. ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया। तेभिर्नः सोम मृडय।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आपकी जो आनन्द-तरंगें धाराप्रवाहरूप में पवित्र हृदय में प्रवाहित होती हैं, अथवा आपकी जो ज्ञान-किरणें वेदवाणी के द्वारा हृदय-आकाश में प्रस्फुटित होती हैं, उन आनन्द-तरंगों और प्रकाश-किरणों के द्वारा आप हमें सुखी कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-अमहीयुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
७८९. स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम्। ईशानः सोम विश्वतः।।

हे सर्वप्रेरक, सर्वज्ञान-सम्पन्न, शान्तस्वरूप प्रभो ! आप हमारे जीवनों को पवित्र बनाते हुए हमें आध्यात्मिक विभूतियाँ और मोक्षरूपी ऐश्वर्य प्राप्त कराइए तथा हमें वह प्रेरणा दीजिए जो हमें धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर और यशस्वी बनानेवाली हो। प्रभो ! कृपा कीजिए, क्योंकि आप विश्व के स्वामी हैं।

सूक्त—६

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
७९०. अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।।

काम-क्रोध आदि दुर्गुणों के नाशक, पापियों को दण्ड देनेवाले, सब सुखों के दाता, सारे संसार के रहस्यों और सब मनुष्यों के आचार और विचारों को जाननेवाले, संसाररूपी यज्ञ = सृष्टि-चक्र के निर्माता, विधाता और सञ्चालक, प्रकाशस्वरूप परमेश्वर का हम वरण करते हैं, उसे अपनाते हैं, उसकी स्तुति और उपासना करते हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३२
७९१. अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्। हव्यवाहं पुरुप्रियम्।।

हम प्रकाशस्वरूप और सबको आगे ले-चलनेवाले परमेश्वर को, केवल और केवल उसी परमेश्वर को सब कालों में हवियों = प्रेम, श्रद्धा, भक्ति और योगाभ्यास द्वारा तथा आराधना के साधनभूत मन्त्रों से पुकारते हैं। हम उस प्रभु की आराधना और उपासना करते हैं जो सब प्रजाओं का पालन-पोषण करनेवाले हैं, उपासकों को हव्य पदार्थों को प्राप्त करानेवाले हैं और उपासक की श्रद्धा-प्रेमभरी भेंट को स्वीकार करनेवाले हैं, सबके पालक और पूरक हैं, सबको तृप्त करनेवाले हैं, सबके प्रिय हैं और सबसे चाहने योग्य हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
७९२. अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे। असि होता न ईड्यः।।

हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन् ! छिन्नप्रजा-सम्बन्ध—पूर्ण ब्रह्मचारी या संन्यासी के लिए अथवा जिसने काम, क्रोध, लोभ आदि वासनाओं का वर्जन किया है और उन्हें उखाड़कर हृदय को निर्मल बनाया है, ऐसे पुरुष के लिए निर्मल हृदय में प्रकट होते हुए आप उसे इसी जीवन में दिव्य गुणों और दिव्य शक्तियों के दाता हैं और आप ही पूजनीय एवं उपासनीय हैं।

सूक्त—७

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-मित्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
७९३. मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये। या जाता पूतदक्षसा।।

हम उपासक आध्यात्मिक आनन्दरस का पान करने के लिए मित्रस्वरूप—सबसे स्नेह करनेवाले और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वरुण—सबके द्वारा वरणीय तथा सबको वरण करनेवाले पाप-निवारक परमेश्वर का आह्वान करते हैं। उसे पुकारते हैं। परमात्मा के ये दोनों रूप उपासक की शक्तियों को पवित्र करनेवाले, उन्हें प्रभावित तथा उनकी वृद्धि करनेवाले प्रसिद्ध हुए हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-मित्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २र
७९४. ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती। ता मित्रावरुणा हुवे।।

परमेश्वर के जो मित्र और वरुण स्वरूप हैं वे यथार्थ ज्ञान के द्वारा, सत्य ज्ञान के द्वारा यथार्थ और सत्यज्ञान के वर्द्धक हैं, यथार्थ ज्ञान-ज्योति के स्वामी हैं, सत्य ज्योति = वेदज्ञान के प्रकाशक हैं। मैं परमेश्वर के उन दोनों रूपों का स्मरण करता हूँ।

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-मित्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
७९५. वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः।।

सबको वरण करनेवाला और सबके द्वारा वरणीय तथा सबके साथ स्नेह करनेवाला और सबके द्वारा स्नेह किया जानेवाला परमेश्वर अपने सब रक्षण-साधनों के द्वारा हमारा रक्षक होने में पूर्ण समर्थ है। परमेश्वर के ये दोनों रूप हमें उत्तम धनोंवाला और उत्तम सिद्धियों—योग-विभूतियोंवाला बनाएँ।

सूक्त—८

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
७९६. इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत।।

वैराग्यवान् उपासक वैराग्यपूर्ण गानों द्वारा सर्वमहान् परमेश्वर की स्तुति करते हैं। अर्चना करनेवाले—सर्वस्व समर्पण करनेवाले अपने समर्पणभाव से परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की उपासना करते हैं और साधारण जन अपनी हाव-भावभरी विनम्र वाणियों से परमात्मा की स्तुति करते हैं—उसका गुणगान करते हैं।

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३२उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
७९७. इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः।।

इन्द्रियों का अधिष्ठाता जितेन्द्रिय उपासक निश्चय ही अपने ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप घोड़ों को सदा साथ-साथ रखता है—उन्हें सुमार्ग से भटकने नहीं देता। यह उन्हें सदा उत्तम कार्यों में ही लगाये रखता है और इन इन्द्रिय-अश्वों को वेदवाणी के अनुसार ही कर्मों में नियुक्त करता है। इस प्रकार वेदानुकूल आचरण करनेवाला यह जितेन्द्रिय उपासक शरीर की दृष्टि से वज्र के समान शरीरवाला और मस्तिष्क की दृष्टि से ज्योतिर्मय मस्तिष्कवाला होता है।

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३१ २
७९८. इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः।।

हे शत्रु-संहारक परमात्मन्! आप काम-क्रोध, लोभ आदि वासनाओं के साथ होनेवाले संग्रामों में हमारी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रक्षा कीजिए और बड़े-बड़े संग्रामों में—दैवी और आसुरी वृत्तियों में होनेवाले संग्रामों में भी हमारी रक्षा कीजिए। परम तेजस्वी आप अपने तेजस्वी रक्षा-साधनों से हमारी रक्षा कीजिए।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ २उ ३ १ २
७९९. इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत्।।

सर्वशक्तिमान् और परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ने बहुत काल तक और बहुत दूर तक देखने के लिए, विस्तृत प्रकाश के लिए सूर्य को द्युलोक में स्थापित कर दिया है और उसी की किरणों से मेघ को जल-वर्षण के लिए प्रेरित करता रहता है।

सूक्त—९

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
८००. इन्द्रे अग्ना नमो बृहत् सुवृक्तिमेरयामहे। धिया धेना अवस्यवः।।

शक्ति के पुञ्ज और प्रकाशस्वरूप परमात्मा के निमित्त हम आत्म-स्नेह और अनुराग से बारम्बार नमस्कार की भेंट उपस्थित करते हैं। प्रभु की शक्ति और प्रकाश की प्राप्ति के लिए हम विषयों का वर्जन—परित्याग करते हैं और अपने जीवनों को पवित्र बनाते हैं। अपनी रक्षा की कामनावाले हम ध्यान और धारणाओं के द्वारा वेदवाणी को अपने में प्रेरित करते हैं—वेद का स्वाध्याय करके अपने जीवनों को उसके अनुसार ढालते हैं।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
८०१. ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्रास ऊतये। सबाधो वाजसातये।।

इन्द्र=महा शक्तिशाली और अग्नि=प्रकाशस्वरूप परमेश्वर की स्फूर्ति से कार्य करनेवाले—आलस्य और प्रमाद से रहित व्यक्ति ही उपासना करते हैं। सचमुच विशेषरूप से अपना पूरण करनेवाले—अपने दोषों को दूर करके जीवन में गुणों का आधान करनेवाले उपासक ही अपनी सर्वविध रक्षा के लिए प्रभु की स्तुति, प्रभु का गुणगान करते हैं और समय-समय पर यज्ञ करनेवाले यज्ञशील लोग शक्ति और ज्ञान की प्राप्ति के लिए आपकी ही उपासना करते हैं।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २३ १२ ३ १ २ ३ १२
८०२. ता वां गीर्भिर्विपन्युवः प्रयस्वन्तो हवामहे। मेधसाता सनिष्यवः।।

मेधावी, श्रद्धालु, उद्योगशील=पुरुषार्थी—आलस्य और प्रमादशून्य, यज्ञशील, निःश्रेयसरूप धन को प्राप्त करने की इच्छावाले हम लोग आनन्द-प्राप्ति के लिए शक्ति और प्रकाश के पुञ्ज शक्तिशाली और प्रकाशस्वरूप परमेश्वर का स्मरण करते हैं, विनम्र स्तुति-वचनों से उसे पुकारते हैं।

सूक्त—१०

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १२ ३ १ २
८०३. वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप आनन्द के सरोवर हैं, सुखों की वृष्टि करनेवाले और क़ामनाओं के पूरक हैं। निश्चय ही प्राणों की साधना करनेवाले के हृदय-मन्दिर में आप प्रकट होते हैं। आप अपनी आनन्दधारा में प्रवाहित होते हुए हमें पवित्र कीजिए। आप अपने ओज और प्रताप से उपासकों में दिव्य गुणों और सुखों को धारण करते हुए इन्हें आनन्दित बना दीजिए।

ऋषि:–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १२३ २ १२ ३१२ ३१ २र ३१२
८०४. तं त्वा धर्त्तारमोण्यो३ः पवमान स्वर्दृशम्। हिन्वे वाजेषु वाजिनम्।।

आनन्दधारा में प्रवाहित होते हुए हृदय-मन्दिर में प्रकट होनवाले और जीवन को पवित्र बनानेवाले हे परमात्मन्! आप द्युलोक और भूलोक को धारण करनेवाले, सुख का मार्ग दर्शानेवाले, सूर्य के समान देदीप्यमान, ज्ञानवान् और महाबलशाली हैं, उस आपको मैं आध्यात्मिक बलों तथा मोक्ष की प्राप्ति के निमित्त प्राप्त करूँ—अपने हृदय-मन्दिर में आपकी ज्योति को प्रकट करूँ।

ऋषि:–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३२उ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
८०५. अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया। युजं वाजेषु चोदय।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप सदा जागरूक और उपासकों के दुःखों, कष्ट-क्लेशों का हरण करनेवाले हैं तथा सर्वदोष निवारक हैं। आप मुझ उपासक के क्रियामय जीवन से, स्तुतिरूप वाणियों से आनन्दरसमयी धारा में प्रवाहित होते हुए मेरे हृदय-मन्दिर में प्रकट होओ—अपने साक्षात् दर्शन दो और इस उपासक को पारलौकिक मोक्ष आदि धन के संग्रह के लिए प्रेरित करो।

सूक्त—११

ऋषि:–उपमन्युर्वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१२ ३२३२
८०६. वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् गा नदयन्नेषि पृथिवीमुत द्याम्।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३२२
इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ प्रचोदयन्नर्षसि वाचमेमाम्।।

सुखवर्षी और कामनापूरक परमेश्वर सृष्टि के आदि में वेदवाणियों का साक्षात् उपदेश करता है। परमात्मा से वेदज्ञान प्राप्त करके उपासक, ऋषि, वेद का अध्येता द्युलोक और पृथिवीलोक को गुँजाता हुआ सर्वत्र विचरता है। जैसे वृष्टि करनेवाले मेघ की गर्जना प्रिय लगती है, उसी प्रकार परमेश्वर के हित-वचन भी प्रिय होते हैं। [वेदवाणी ही परमेश्वर के हित-वचन हैं]। उन वचनों, उस वेदवाणी को हम सब सुनें। सच्चा उपासक न केवल इस वेदवाणी को सुनता ही है, अपितु प्रभु द्वारा दी गई वेदवाणी को आजौ = मनुष्यमात्र में प्रेरित करता हुआ—सबको उपदेश देता हुआ सर्वत्र भ्रमण करता है, भूमण्डल में इसका प्रचार करता है।

ऋषि:–उपमन्युर्वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २ ३ १२३ १२ ३१२ ३ १२ ३२
८०७. रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम्।
१२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ १ २
पवमान सन्तनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः।।

हे सौम्य स्वभाव, विनीत उपासक! मधुरवचन बोलनेवाला, प्रभु-उपासना से रसीला बना हुआ,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वेदवाणीरूपी गौ के दूध से अपने को तृप्त करता हुआ और अन्यों को सींचता हुआ तू माधुर्य से पूर्ण जीवन के लिए शान्ति देनेवाली ज्ञान की किरणों और प्रकाश को मनुष्यमात्र के हृदय में प्रेरित करता हुआ, सर्वत्र फैलाता हुआ भूमण्डल में विचरण करता है—घूम-घूमकर सर्वत्र वेद-प्रचार करता है। अपने जीवन को पवित्र बनानेवाले उपासक! तू दैवी सम्पत्ति को, दिव्य गुणों को अपने जीवन में धारण करता हुआ, करुणार्द्र हृदयवाला—मैत्री, करुणा, मुदित, उपेक्षा आदि गुणों को अपने जीवन में धारण करता हुआ परमैश्वर्यशाली परमात्मा की प्राप्ति के लिए गति करता है—प्रभु प्राप्ति के लिए यत्नशील होता है।

ऋषिः–उपमन्युर्वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ ५ २र ३१ २ ३५२ ३ २
८०८. एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन् वधस्नुम्।
२ ३ २३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः॥

(क) हे सौम्य गुणयुक्त, विनीत उपासक! गतिशील होता हुआ तू अपने जीवन को पवित्र बना। सदा प्रसन्न रहता हुआ तू दूसरों को भी प्रसन्न और हर्षित कर। तू मगरमच्छ की भाँति घातक काम-क्रोध आदि दुर्व्यसनरूप ग्राह को निर्बल बना दे, अर्थात् जीवन का घात करनेवाले दुर्गुण और दुर्व्यसनों को काट डाल। तू अपने अंग-प्रत्यंग में जाज्वल्यमान तेज को धारण करता हुआ तथा उपासनारस से अपने-आपको को सींचता हुआ हम साधारण जनों को वेदवाणी का ज्ञानामृत पिलाते हुए सर्वत्र विचर।

(ख) हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप सर्वव्यापक और आनन्दमय हैं! आप उपासकों के कल्याण के लिए उनके जीवन का वध करनेवाले—जीवन को नष्ट करनेवाले काम-क्रोध आदि को निर्बल बनाते हुए उनके हृदय-मन्दिर में प्रकट होओ। जाज्वल्यमान, तेजस्वी रूप को धारण करनेवाले आप हमारे सत्य, सदाचार आदि से, हमारी साधना से हमपर कृपालु होकर हमें तेजस्वी बनाने के लिए भी हमें प्राप्त होओ।

सूक्त—१२

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २र ३ १ २र ३ १ २
८०९. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्ववर्तः॥

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हम कर्मयोगी उपासक शक्ति की प्राप्ति के लिए, जीवन में त्यागभावना के विकास के लिए और ज्ञान की प्राप्ति के निमित्त आपको ही पुकारते हैं। ज्ञान पर परदा डालनेवाले काम-क्रोध आदि शत्रुओं के प्रबल होने पर भी हम आपको ही पुकारते हैं। नर बनकर कर्म करनेवाले, स्वयं आगे बढ़नेवाले और अन्यों को आगे बढ़ानेवाले, मन से प्रार्थना, ध्यान और चिन्तन करनेवाले परमपुरुषार्थी हम संसार की अथवा बन्धनों की सीमाओं को पार करने के निमित्त आपको पुकारते हैं।

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८१०. स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः।
१ २र ३क २र ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे॥

हे अदभुत गुण-कर्म-स्वभावाले! ज्ञानप्रदाता परमेश्वर! न्यायरूपी वज्रधारिन्! अविनाशी तथा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आदरणीय प्रभो! काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कुचल डालनेवाले, साधकों को प्राप्त होनेवाले, महिमाशाली, तेजस्वरूप, सदा स्तुति किये जानेवाले आप हमें इस शरीररूपी रथ को वहन करनेवाले अत्युत्तम ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप घोड़े प्रदान कीजिए। हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जिस प्रकार आप विजय की कामनावाले पुरुष के लिए बल, शक्ति, अन्न और ज्ञानप्रदान करते हैं, उसी प्रकार उन्हें शरीररूपी रथ के लिए उत्तम इन्द्रियाँ और बलिष्ठ मन प्राप्त कराइए।

सूक्त—१३

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
८११. अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यो जरितृभ्यो मघवा पुरुवसुः सहस्रेणेव शिक्षति।।

हे उपासको! तुम सब यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिए जब-जब कार्यों से अवकाश मिले तब-तब चित्तवृत्तियों को इधर-उधर से हटाकर जीवन में सर्वविध सफलता प्राप्त करानेवाले परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की खूब अर्चना करो। वे परमेश्वर धन के स्वामी हैं—हमारे पालन और पूरण के लिए पर्याप्त धन देनेवाले हैं। वे अपने स्तोताओं के लिए सहस्रों प्रकार से धन देनेवाले हैं और सहस्रों मन्त्रों द्वारा नाना प्रकार की शिक्षाएँ दे रहे हैं।

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
८१२. शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः।।

जैसे पराक्रमी सेनापति शत्रुओं की सैकड़ों सेनाओं की ओर गमन करता है और अपनी धर्षण शक्ति—शत्रुओं को कुचल डालने की शक्ति से उन्हें मार डालता है, उसी प्रकार परमेश्वर अपनी धर्षण शक्ति से आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक के काम-क्रोध आदि पाप-वृत्रों को—ज्ञान पर परदा डालनेवाले शत्रुओं को नष्ट कर देता है। जैसे पर्वत या मेघ से जल प्रवाहित होकर भूमि को सींचते हैं, वैसे ही पालन करनेवाले परमात्मा के नाना प्रकार के दान उपासक को तृप्त करते हैं।

सूक्त—१४

ऋषिः—नृमेधः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

२ ३ १ २र ३ १ २
८१३. त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः।
५ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जितेन्द्रिय जीवात्मन्! तू पुनः अपने घर—ब्रह्मलोक की ओर लौट। तू इस जीवन में वेद-ज्ञान को धारण करनेवाले ज्ञानियों से ज्ञान का श्रवण कर। हे वज्रधारिन्! काम-क्रोध आदि अशुभ वृत्तियों के प्रति वज्रधारिन्! आलस्य प्रमादरहित उपासक! तुझे आज और कल—सब कालों में पालन-पोषण करनेवाले और आसुर वृत्तियों के आक्रमण से बचानेवाले नर=विषयों में न फँसकर स्वयं आगे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बढ़नेवाले और सबको आगे ले-चलनेवाले ज्ञानी लोग ज्ञान-जल का पान कराएँ।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
८१४. मत्स्वा सुशिप्रिन् हरिवस्तमीमहे त्वया भूषन्ति वेधसः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्य सुतेष्विन्द्र गिर्वणः।।

हे शोभन गतिवाले, सब दोषों के हरण की शक्ति से सम्पन्न, वेदवाणियों से उपासनीय प्रभो ! आप हमारी स्तुतियों से प्रसन्न होकर हमपर अनुग्रह=कृपा कीजिए। हम सर्वव्यापक और सर्वप्रसिद्ध आपको ही चाहते हैं, आपसे ही याचना करते हैं। आपके सहारे और आपके कृपा-कटाक्ष से मेधावी उपासक ऐश्वर्यवान् हो जाते हैं और अपने जीवनों को शुभ गुणों से अलंकृत करते हैं। हे स्तुत्य प्रभो ! हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! आपके यश ही उपमा देने योग्य हैं। आपके यश आपके पुत्रों=उपासकों को भी प्राप्त हों।

सूक्त–१५

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २
८१५. यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावीरघशंसहा।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! आपका जो सबके द्वारा वरणीय, प्रार्थनीय और सम्भजनीय निरतिशय आनन्द है, वह मोक्षपद प्राप्त करानेवाला है और देव सदा उसी की कामना करते हैं। आपका वह आनन्दस्वरूप काम-क्रोध-लोभ आदि पापों का हनन करनेवाला है। आप अपने उस अत्यन्त स्पृहणीय, ध्यान करने योग्य तेजस्वरूप के साथ उपासक के हृदय-मन्दिर में प्राप्त होओ।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३१२ ३२ ३ २ ३१२ ३१ २ १ २ ३ १ २
८१६. जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे। गोषातिरश्वसा असि।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर ! आप शत्रुरूप पाप-वासनाओं का, ज्ञान के आच्छादक अज्ञान का नाश करनेवाले हैं। आप प्रतिदिन शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक बल के देनेवाले हैं। आप सर्वविद्याओं के दाता हैं। आप अविद्या का नाश करनेवाले हैं। आप उत्तम ज्ञानेन्द्रियों के दाता हैं और बलशाली मन के भी प्रदाता हैं।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ २
८१७. सम्मिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर्न धेनुभिः। सीदञ्छ्येनो न योनिमा।।

(क) हे शान्तस्वरूप प्रभो ! अब तो आप सम्यक् प्रकार से उच्चारित किये गये प्रार्थना-वचनों से हमारे साथ मिल जाएँ–हमें प्राप्त हो जाएँ। आप प्रशस्त रूप=सौन्दर्यवाले हैं, आप सुन्दर गतिवाले हैं, सबको सुमार्ग में चलानेवाले हैं, सर्वव्यापक हैं। आप हमारे निर्मल हृदय में आकर विराजमान हो जाइए।

(ख) हे मनुष्य ! अब तो तू सुगमता से उपस्थान के योग्य वेदवाणियों के साथ युक्त हो जा–वेद को जीवन का अंग बना, वेद का स्वाध्याय कर। वेद के स्वाध्याय से तू प्रशस्त रूपवाला और क्रोध से शून्य बन। तू शोभन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गतिवाला होकर अपने हृदय-गृह में विराजमान हो अर्थात् प्रभु की उपासना कर और यज्ञादि उत्तम कर्म करनेवाला बन।

सूक्त—१६

ऋषिः–नहुषो मानवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
८१८. अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे।।

यह शान्तस्वरूप परमात्मा द्युलोक और पृथिवीलोक दोनों को रचता—प्रकट करता है। यह सम्पूर्ण पृथिवी का, महाविश्व का रक्षक और स्वामी है। यह परमेश्वर सबका पालक और पोषक है, परमैश्वर्यशाली है, भजनीय—उपासनीय है, मोक्ष-प्रदाता है। यह उपासक को पवित्र बनाता हुआ उसके हृदय-मन्दिर में प्रकट होता है।

ऋषिः–नहुषो मानवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
८१९. समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः।
१ २ ३ १ २र ३ १ २
सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आपके प्रिय और पापों को कुचल डालनेवाले उपासक हर्ष, उल्लास, आनन्द-प्राप्ति और आत्म-तृप्ति के लिए निश्चय से सदा आपका स्तवन करते हैं। उपासना-रस से आप्लावित, सौम्य स्वभाव, चन्द्रमा के समान शान्त परन्तु अत्यन्त शक्तिशाली, अपने जीवन को पवित्र करते हुए औरों को भी पवित्र बनानेवाले ये उपासक औरों के लिए भी मार्ग-दर्शक होते हैं।

ऋषिः–नहुषो मानवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २र ३ १ २र ३ १२ ३ १ २
८२०. य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम्।
१ २र ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहे।।३।।

आनन्दधारा में प्रवाहित होनेवाले और उपासकों को पवित्र करनेवाले हे परमात्मान्! आपका ओज प्रदान करनेवाला जो सुप्रसिद्ध आनन्दरस और उत्कृष्ट ज्ञान है, उसे हमें प्राप्त कराइए। आप हमें वह आनन्दरस और ज्ञान प्राप्त कराइए जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, निषाद—पाँचों प्रकार के मनुष्यों का हित करनेवाला है। आप हमें वह आनन्दरस और ज्ञान प्राप्त कराइए जिससे हम मोक्षपद को प्राप्त कर सकें।

सूक्त—१७

ऋषिः–सिकतानिवावरी। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
८२१. वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सर्वद्रष्टा, शान्तस्वरूप परमात्मा अर्चना करनेवाले उपासकों की कामनाओं का पूरक है और उनपर सुखों की वृष्टि करनेवाला है। वह उपासकों को पवित्र करता है। वह दिनों का, उषा-वेलाओं का और सूर्य का प्रकाशक है। वह परमेश्वर शरीर को बाँधनेवाली नाड़ियों में जीवन-रस प्रदान करता है। वह शरीरधारियों को पुकार-पुकार कर धर्म का उपदेश करता है और ब्रह्मज्ञानी जीवात्माओं के हृदय में प्रविष्ट होता है—साक्षात् होता है।

ऋषिः–सिकतानिवावरी। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

८२२. मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशाँ असिष्यदत्।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्॥

सर्वाग्रणी, क्रान्तदर्शी—सर्वज्ञ परमेश्वर वेद-काव्य के द्वारा उपदेश करता हुआ उपासकों को पवित्र करता है। मननशील, मुमुक्षु उपासकों द्वारा संयम-विधि से—योगाभ्यास से साधा गया वह परमात्मा उनके अन्नमय आदि पाँचों कोशों में आनन्दरसरूप में पूर्णरूप से प्रस्रवित—प्रवाहित हो जाता है। अब यह उपासक काम-क्रोध-लोभ-तीनों को तैर जानेवाले यश को उत्पन्न करता है—यह काम-क्रोध-लोभ तीनों से ऊपर उठ जाता है। यह माधुर्य को टपकानेवाले होता है, सदा मधुर बोलता है, कटु और कड़वा नहीं बोलता तथा परमैश्वर्यशाली परमात्मा की मित्रता के लिए अपनी प्राणशक्ति और क्रियाशीलता को बढ़ाता है।

ऋषिः–पृष्णयोऽजाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

८२३. अयं पुनान उषसो अरोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत्।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः॥

जीवमात्र को पवित्र करते हुए उस परमेश्वर ने उषाओं को चमकाया है, नदियों को जलों से पूर्ण करके यह परमेश्वर लोकोपकार करता है। यह शान्तस्वरूप परमेश्वर आनन्दरस का सरोवर है। यह परमात्मा उपासक के इक्कीस तत्त्वों—पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और शब्दादि उनके पाँच विषय, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और भाषण आदि उनके पाँच विषय और एक मन—इनको अपनी चैतन्य ज्योति से पूर्ण करता हुआ पहले उपासकों के हृदय-तोष के लिए ब्रह्म-आनन्द प्रदान करता है और अन्त में मनोरम मोक्षपद प्रदान करता है।

सूक्त—१८

ऋषिः–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

८२४. एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः॥

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर !आप निश्चय ही प्राणसाधना करनेवाले उपासकों को चाहते हैं—उनसे प्रेम करते हैं। आप पराक्रमशाली और सर्वत्र गतिशील हैं। आप कूटस्थ, अविचल और एकरस हैं। आपका मनन=ज्ञान प्रशंसनीय है और हमारा मन आपकी आराधना करनेवाला है।

ऋषिः–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

८२५. एवा रातिस्तुविमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः। अधा चिदिन्द्र नः सचा॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(क) हे अनन्त ऐश्वर्यवाले परमात्मन् ! आपके दान विपुल हैं। आप स्वास्थ्य, समृद्धि आदि लौकिक और मोक्ष आदि पारलौकिक धनों के धारक हैं। आप अपने दया, दान, क्षमा, औदार्य, वात्सल्य आदि धारण-पोषण करनेवाले सद्‌गुणों से सबके लिए दातव्य वस्तु दिया ही करते हैं। प्रभो ! अब तो आप मेरे भी सहायक बनें और मुझे मेरे अभीष्ट पदार्थ और अन्त में अपनी प्राप्तिरूप दान प्रदान करें।

(ख) हे महाधनी परमेश्वर ! प्रजाओं का भरण-पोषण करनेवाले सब धनिकों द्वारा जो सम्पत्ति धारण की हुई है वह सब निश्चय से आपकी दी हुई है। हे परमेश्वर ! आप ही हमारे मित्र बने हुए हो और हमारी सर्वविध सहायता कर रहे हो।

ऋषिः–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

८२६. मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते। मत्स्वा सुतस्य गोमतः।।

हे उपासक ! तू उत्तम चतुर्वेदवेत्ता के समान ज्ञानी बनकर भी कभी आलसी मत होना, अपितु निरालस्य होकर सदा ज्ञान की प्राप्ति में ही लगे रहना। तप, संयम आदि द्वारा बलों की प्राप्ति में भी तू कभी आलसी मत बनना। उत्तम ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियोंवाला तू यज्ञ का=श्रेष्ठतम कर्मों का आनन्द ले।

सूक्त–१९

ऋषिः–जेता माधुच्छन्दसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

८२७. इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम्।।

समस्त वेदवाणियाँ परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की महिमा का गान करती हैं। वह परमेश्वर समुद्र के समान गम्भीर और विस्तारवाले हैं। रथी जो जीव हैं वे प्रभु उनके भी रथीतम–सर्वोत्तम सारथि हैं। वे ब्रह्माण्डरूपी रथ के भी सारथि हैं। वे बल, शक्ति और ज्ञान के स्वामी हैं। वे सज्जनों के पालक-पोषक और रक्षक हैं।

ऋषिः–जेता माधुच्छन्दसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

८२८. सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्र नोनुमो जेतारमपराजितम्।।

हे निखिल बलों के स्वामिन् ! हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! सर्वशक्तिमान् आपकी मित्रता में हम भी बलशाली–आत्मबल से युक्त होते हुए कदापि, किसी से भी भयभीत न हों, अपितु आपके समान ही निर्भय, निश्चिन्त और सदा मस्त रहें। आप सब शत्रुओं का पराभव करनेवाले हैं और स्वयं किसी से भी कहीं भी, कभी भी पराजित न होनेवाले हैं। ऐसे आपकी हम श्रद्धा-भक्ति के साथ बारम्बार आराधना–उपासना करते हैं।

ऋषिः–जेता माधुच्छन्दसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

८२९. पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः।
यदा वाजस्य गोमत स्तोतृभ्यो मंहते मघम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के विपुल दान और नाना प्रकार के संरक्षण अनादि काल से चल रहे हैं। उनका कहीं भी, कभी भी क्षय नहीं होता। जब वह परमेश्वर इस समय भी उत्तम मनवाले और प्रशस्त इन्द्रियवाले उपासक को सदाचार, सद्विद्या, रूप, बल और धन प्रदान करता है तब कौन कह सकता है कि उसके दान आदि क्षीण हो गये हैं?

द्वितीयः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १२ १ २ ३ १ २र

८३०. एत असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः। विश्वान्यभि सौभगा।।

ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्यरूप सब प्रकार के सौभाग्यों की प्राप्ति के लिए आशुगामी, प्रतिभा-सम्पन्न, ब्रह्मचर्य आदि उत्तम ऐश्वर्यवाले, कान्तिमान् चन्द्रमा के समान शान्त उपासकों के द्वारा अन्तर्निहित परमात्मा शुद्ध, पवित्र, निर्मल हृदय में प्रकट—साक्षात् किया जाता है।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३२ ३२ ३ १ २ ३ १२ १ २ ३ २ ३ १२

८३१. विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः। त्मना कृण्वन्तो अर्वतः।

चन्द्रमा के समान शीतल उपासकों ने अपने सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को नष्ट करते हुए अपनी सन्तानों के लिए भी जीवन-मार्गों को अत्यन्त सुगम—सरल बना दिया है और निन्दित व्यक्तियों को भी अपनी आत्मिक शक्ति द्वारा आत्मबल से सम्पन्न, ज्ञानी और यशस्वी बना दिया है।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २३क २र ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २

८३२. कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्। इडामस्मभ्यं संयतम्।।

(क) चन्द्रमा के समान शीतल उपासक नवीन स्तोताओं के लिए आध्यात्मिक धन प्रदान करते हैं, परमेश्वर की उत्तम स्तुतियाँ करते हैं, प्रजाजनों के लिए वेदवाणी का ज्ञान देते हैं, उनके जीवन में श्रद्धा तथा संयम-शक्ति—संयम की भावना का विकास करते हैं।

(ख) सुरक्षित हुए सोम-कण ज्ञानेन्द्रियों को शक्ति-सम्पन्न बनाते हैं, मन को उत्तम स्तुतिकरनेवाला—प्रभु की ओर झुकाववाला बनाते हैं, मस्तिष्क को वेद-वाणियों के प्रकाश से परिपूर्ण और जीवन को संयमी बनाते हैं।

सूक्त—२

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

८३३. राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे।।

सबको पवित्र करनेवाला और आनन्दधारा में प्राप्त हानेवाला, विश्व ब्रह्माण्ड में विराजमान और अपने प्रकाश से सर्वत्र देदीप्यमान परमात्मा मननशील उपासक से मनन-क्रियाओं = ध्यान-धारणाओं के द्वारा प्राप्त किया ज़ाता है। वह परमेश्वर उपासक के पवित्र हृदय में प्रकट होता है—साक्षात् होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
८३४. आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर। सुष्वाणो देववीतये।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! उपासना के द्वारा साक्षात् हुए आप हमें सहनशक्ति, विघ्नों को दूर करने और काम-क्रोध आदि शत्रुओं के मर्दन का सामर्थ्य, प्रगतिशीलता–आगे बढ़ने का–सदाचार-प्रवृत्तिरूप सामर्थ्य और ज्ञान-निरूपण सामर्थ्य–आपको जानने का सामर्थ्य प्रदान कीजिए जिससे हमें आत्मतेज और दिव्य गुणों की प्राप्ति हो सके।

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
८३५. आ न इन्दो शातग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम्। वहा भगत्तिमूतये।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप हमारे लिए अनेक विद्याओं का ज्ञान, ज्ञानेन्द्रियों का पोषण और कर्मेन्द्रियों की उत्तम शक्ति प्राप्त कराइए, जिससे हमारी सर्वप्रकार की रक्षा हो सके।

सूक्त–३

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ १ २
८३६. तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सदस्थेषु महो दिवः। चारुं सुकृत्ययेमहे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आध्यात्मिक ऐश्वर्यों और बलों को, तेज को, ज्ञान के प्रकाश को और सब शुभों को धारण करनेवाले, सर्वत्र व्यापक आपकी हम उपासक शुभ कर्मों–यम-नियम आदि के अनुष्ठान द्वारा अपने हृदय-मन्दिर में उपासना करते हैं।

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ २क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
८३७. संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम्। शतं पुरो रुरुक्षणिम्।।

धर्षणशील-काम-क्रोध आदि शत्रुओं को नष्ट करनेवाले, बड़े-बड़े व्रतों=कर्मोंवाले, अत्यन्त प्रशंसनीय, आनन्दप्रद और देहरूप असंख्य नगरियों को नष्ट करके उपासक आत्माओं को मोक्ष में आरुढ़ करनेवाले शान्तस्वरूप परमात्मा की हम उपासक-शुभ-कर्मों–यम-नियम आदि के अनुष्ठान द्वारा हृदय-मन्दिर में उपासना करते हैं।

[परमात्मा की सच्ची उपासना यही है कि उपासक भी प्रभु-जैसा बने अर्थात् वह भी काम-क्रोध आदि शत्रुओं को निर्मूल करे, महान् कर्मोंवाला बने, उसका जीवन प्रशंसनीय हो, वह दूसरों के उल्लास का कारण बने और शरीर-बन्धनों को तोड़कर मोक्ष प्राप्त करे।]

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
८३८. अतस्त्वा रयिरभ्ययद्राजानं सुक्रतो दिवः। सुपर्णो अव्यथी भरत्।।

हे सुकर्मा और उत्तम प्रज्ञान-सम्पन्न परमात्मन्! आप द्युलोक को प्रकाशित करनेवाले और सारे ब्रह्माण्ड को नियम और व्यवस्था में रखनेवाले हैं। मोक्षरूपी ऐश्वर्य भी आपके ही अधीन है। आप प्रजाओं के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुपालक हैं, उपासकों को व्यथाओं से–दुःखों से छुड़ानेवाले हैं, सबका भरण-पोषण करते हैं, इसलिए हम शुभ-कर्मों के अनुष्ठान द्वारा हृदय-मन्दिर में आपकी उपासना करते हैं, आपको चाहते हैं, आपकी शरण में आते हैं।

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
८३९. अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे। अभिष्टिकृद्विचर्षणिः।।

हे सुकर्मा और प्रज्ञान-सम्पन्न प्रभो ! आप हमारी सभी इन्द्रियों को सुप्रेरणाएँ प्रदान करते हैं अथवा आप उपासकों को सत्य-सदाचाररूप धन प्रदान करते हैं। आप महा महिमा को प्राप्त हैं–महान् यशवाले हैं। आप हमारे मनोरथों को पूर्ण करनेवाले हैं और सब प्राणियों पर विशेष कृपादृष्टि रखनेवाले हैं, अतः हम आपकी उपासना करते हैं–आपकी शरण में आते हैं।

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
८४०. विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम्। गोपामृतस्य विर्भरत्।।

प्रभु-दर्शन के लिए आतुर उपासक सब प्रजाजनों को कल्याण-मार्ग दर्शाने के लिए, सबको सुख-प्राप्ति के मार्ग पर चलाने के लिए परमेश्वर को अपने हृदय में धारण करता है, उस परमेश्वर को जो सबके लिए सामान्य रूप से प्राप्य है–प्राणिमात्र में ही क्या भूतमात्र में सर्वत्र समरूप से रम रहा है, सबमें ओत-प्रोत है, जो प्रकाश की ओर ले-जानेवाला है और सब लोकों को गति देनेवाला है तथा सत्य और यज्ञों का रक्षक है।

सूक्त–४

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
८४१. इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः। इन्दो रुचाभि गा इहि।।

हे उपासक ! मनःसंयमी उपासकों द्वारा दम्भ-दर्प आदि क्लेशों से रहित किया गया अथवा मल, विक्षेप और आवरण से रहित किया गया तू अभीष्ट मोक्ष की प्राप्ति के लिए उपासना-रस की धारा द्वारा परमेश्वर की ओर पग बढ़ा। हे सौम्य! तू तेजस्वी बनने के लिए वेदवाणी की ओर चल, वेद का स्वाध्याय किया कर।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
८४२. पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः। हरे सृजान आशिरम्।।

वेदवाणियों द्वारा स्तुति करने योग्य हे परमेश्वर ! हमें पवित्र करते हुए आप हमें ज्ञान और मोक्षरूप धन प्रदान कीजिए, अपने उपासक भक्तों के लिए बल और प्राणशक्ति प्रदान कीजिए। हे सब कष्ट और क्लेशों को दूर करनेवाले प्रभो ! आप हमें अपनी शरण में लेकर ज्ञानरूपी दुग्ध और आनन्दामृत प्रदान कीजिए।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
८४३. पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्। द्युतानो वाजिभिर्हितः।।

(क) हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! स्तुति करनेवाले उपासकों द्वारा ध्याये हुए आप उपासकों को तेजस्वी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और पवित्र बनाते हुए दिव्य गुणों और मोक्ष-प्राप्ति के लिए उनके निर्मल हृदय में प्राप्त होओ।

(ख) हे उपासक! परमदेव की प्राप्ति के लिए तू अपने जीवन को पवित्र करता हुआ परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के शुद्ध, अपापविद्ध स्वरूप को जान—उसे प्राप्त कर और ज्ञानी उपासकों की कृपा से तेजस्वी बनकर प्राणिमात्र का हितकारी बन।

सूक्त-५

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३ २ ३१२ ३ १ २ ३ २ ३क २र
८४४. अग्निाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा। हव्यवाड् जुह्वास्यः।।

जीवात्मारूपी अग्नि के द्वारा आत्म-समर्पण करने से सर्वप्रकाशक परमात्मा जीवात्मा में प्रकाशित हो जाता है। आत्मा में प्रकाशित होनेवाला वह परमेश्वर कविः=क्रान्तदर्शी है, सर्वज्ञ है, वेदरूपी काव्य का उपदेष्टा है, ब्रह्माण्ड का स्वामी है, सदा युवा—अखण्ड-एकरस है, दान और भोग योग्य पदार्थों को प्राप्त करानेवाला है और सबके मुखों में भक्ष्य पदार्थों की आहुतियाँ देनेवाला है।

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
८४५. यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति। तस्य स्म प्राविता भव।।

हे प्रकाशस्वरूप, आनन्दप्रद परमेश्वर! अपने मन का स्वामी—अपनी चित्त-वृत्तियों को निरुद्ध करनेवाला जो उपासक दुर्व्यसनों को भस्म करनेवाले, सबको सु-प्रेरणा देनेवाले आपकी उपासना करता है, आप निश्चय ही उसके प्रबल रक्षक बन जाते हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
८४६. यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति। तस्मै पावक मृडय।।

हे पतित-पावन परमात्मन्! चित्तवृत्तियों का निरोध करनेवाला जो उपासक दिव्य गुणों और मोक्ष-प्राप्ति के लिए प्रकाशस्वरूप आपकी उपासना करता है और आपकी प्रसन्नता के लिए दान देता है, सत्य, अहिंसा, सदाचार आदि सद्धर्मों का पालन करता है, आप उसे सुखी कीजिए, उसे मोक्ष प्रदान कीजिए।

सूक्त-६

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-मित्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
८४७. मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीं साधन्ता।।

मैं [उपासक] पवित्र बलवाले, काम-क्रोध आदि शत्रुओं के नाशक, उपासकों के द्वारा वरणीय और भक्तों को वरण करनेवाले, सब जीवों के साथ स्नेह करनेवाले परमात्मा को वैसा ही बनने के लिए स्मरण करता हूँ अर्थात् सबके साथ स्नेह करने के लिए, सबके द्वारा वरणीय बनने और दुष्टों का संहारक बनने के लिए परमेश्वर का स्मरण करता हूँ। कैसे परमात्मा का स्मरण करता हूँ? उस परमात्मा का जोकि दीप्ति-सम्पन्न है—परम तेजस्वी है और बुद्धि-प्रदाता है।

(ख) मैं पवित्र बलवाले प्राणवायु का आह्वान करता हूँ और हिंसक तत्त्वों को खा जानेवाले अपान को भी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पुकारता हूँ अर्थात् जीवन में प्राण और अपान की साधना करता हूँ। यह प्राणापान की साधना हमारे कर्मों में निर्मलता और बुद्धि की सूक्ष्मता तथा तीव्रता को सिद्ध करती है।

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-मित्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २   १ २ ३ १ २

८४८. ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा। क्रतुं बृहन्तमाशाथे।।

मित्र और वरुणरूप—सबसे स्नेह करनेवाला और सबके द्वारा वरणीय परमेश्वर सत्य का आचरण करने वाले—सत्यवादी, सत्यमानी, सत्यकारी मनुष्यों का वर्धन करनेवाला, मनुष्यों को सत्य की प्रेरणा देनेवाला, अपने सत्य स्वरूप से महान् महिमावाला, पुण्य कर्म करनेवाले, उपासना करनेवाले जीवों में विशेषरूप से व्याप्त है।

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-मित्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र   ३ १ २ ३ १ २   १ २   ३ १ २

८४९. कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया। दक्षं दधाते अपसम्।।

सबसे स्नेह करनेवाला और सबके द्वारा वरणीय परमेश्वर हम उपासकों में उत्साह—आत्मबल और कर्मशक्ति धारण करता है। क्रान्तदर्शी—सर्वज्ञ और वेदज्ञान का उपदेष्टा, सर्वव्यापक परमेश्वर अनेक रूपों में प्रकट होता है।

[सूर्य और चन्द्रमा की ज्योति में, पक्षियों की चहक में, पुष्पों की महक में सर्वत्र प्रभु की विभूति ही तो प्रकट हो रही है।]

सूक्त-७

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-मरुत इन्द्रश्च। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १   २र   ३ १   २र   ३ १ २ ३ १ २

८५०. इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा। मन्दू समानवर्चसा।।

स्वयं किसी भी प्रकार के भय से रहित और उपासकों को भयरहित करनेवाले, ऐश्वर्यशाली परमात्मा के साथ उपासना के द्वारा संगत होते हुए—मेल करते हुए जीवन्मुक्त उपासक निश्चय ही उस जैसे—परमात्मा जैसे ही दिखाई देते हैं, क्योंकि परमात्मा और जीवात्मा दोनों समान तेजवाले और आनन्दमय हैं। परमात्मा तो आनन्दमय और तेजस्वी है ही, परमात्मा की उपासना से जीव भी तेजस्वी और आनन्दी हो जाता है।

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-मरुत इन्द्रश्च। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र   ३ २उ ३ १ २   ३ १ २ ३ २   १ २ ३   १ २   ३ १ २

८५१. आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे। दधाना नाम यज्ञियम्।।

परमात्मा के साथ मेल करके और परमात्मा जैसे बनकर उपासक परमात्मा को अपनी आत्मा में धारण करते हैं और निश्चय ही उपासना करने के योग्य परमात्मा के सर्वोत्कृष्ट और सर्वोत्तम 'ओ३म्' नाम का जप, चिन्तन, मनन करते हुए पुनः गर्भ में आने की स्थिति को कम्पित करके अपने से दूर भगा देते हैं अर्थात् मुक्त हो जाते हैं, बहुत लम्बे समय तक—इकत्तीस नील, दस खरब, चालीस अरब वर्ष तक जन्म नहीं लेते।

ऋषिः-मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**-मरुत इन्द्रश्च। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २   ३ २ ३ १ २   ३ १ २   १ २   ३ २ ३   १ २

८५२. वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः। अविन्द उस्रिया अनु।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

काम-क्रोध आदि वासनारूप शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करनेवाले हे जीव! तूने हृदयरूपी गुफा में निवास करनेवाली अत्यन्त प्रबल वासनाओं को तथा अविद्या-अज्ञान को सर्वथा भग्न कर दिया है, परमेश्वर को प्राप्त करानेवाली ज्ञानाग्नियों से भस्म कर दिया है—ज्ञानरूपी तलवार से छिन्न-भिन्न कर दिया हैं। अब ज्ञान-रश्मियों को प्राप्त करने के पश्चात् यह उपासक परमात्मा को प्राप्त करता है और अन्त में मोक्ष का भागी बनता है।

सूक्त-८

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २र
८५३. ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम्। इन्द्राग्नी न मर्धतः।।

मैं [उपासक] इन्द्र और अग्नि—दोनों नामों से पुकारे जानेवाले परमैश्वर्यशाली और प्रकाशस्वरूप परमात्मा का आह्वान करता हूँ, जिसके द्वारा सर्वप्रथम रचे गये इस संसार की—विश्वब्रह्माण्ड की सभी सुधीजन स्तुति करते हैं। उभय गुणविशिष्ट—ऐश्वर्यशाली और प्रकाशमय–दोनों गुणोंवाला परमेश्वर किसी की हिंसा नहीं करता, प्रत्युत रक्षण ही करता है।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
८५४. उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे। ता नो मृडात ईदृशे।।

दुर्जनों के लिए भयंकर वह इन्द्र=परमैश्वर्यशाली और अग्नि=प्रकाशस्वरूप परमेश्वर दुष्टों को मार डालता है। आपत्तिकाल में, दुःख और कष्ट आ पड़ने पर वही हमारी रक्षा करता है और हमें सुखी बनाता है, अतः हम अपनी रक्षा और सहायता के लिए उसका आह्वान करते हैं, उसे पुकारते हैं, उसका स्मरण करते हैं।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ १ २
८५५. हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती। हथो विश्वा अप द्विषः।।

(क) सर्वश्रेष्ठ और सज्जनों के रक्षक! हमारे जीवनों को उत्कृष्ट बनानेवाले इन्द्र और अग्निरूप परमात्मन्! आप हमारे ज्ञान की आवरणभूत वासनाओं को नष्ट करनेवाले हैं, हमारे विनाशक कर्मों को नष्ट करते हैं और सकल विरोधियों और द्वेष-भावनाओं को नष्ट करते हैं।

(ख) हे उपासकों के रक्षक, परमैश्वर्यशालिन् और प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप उपासक के प्रति शत्रुओं के अन्दर होनेवाली हिंसावृत्ति, कर्मविनाशक प्रवृत्ति और द्वेष की भावनाओं को दूर भगा दो—परे हटा दो और उपासक के हृदय में किसी के प्रति भी शत्रु जैसी वैरवृत्ति, दास जैसी हानि करने की प्रवृत्ति और द्वेष-भावनाओं को उठने ही न दो।

सूक्त–९

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
८५६. अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शान्त स्वभाववाले, ज्ञानवान् तथा क्रियाशील, चित्त की वृत्तियों का निरोध करनेवाले, उल्लासमय जीवनवाले, मानव-समाज पर आनन्द की वृष्टि करनेवाले योगिजन परमेश्वर के मोक्षधामरूप परमपद में तृप्त करनेवाले आनन्द को प्राप्त करते हैं।

ऋषिः-सप्तर्षयः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
८५७. तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत्।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३२ ३ २ ३२
अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत्।।

आनन्दप्रद, उपासकों के जीवनों को पवित्र करनेवाला, शान्तस्वरूप, सर्वत्र विराजमान तेज से देदीप्यमान, महान्, अमृतरूप परमेश्वर अपनी ज्योति-तरंगों से उपासकों के हृदय-मन्दिर में प्राप्त होता है। प्राण और अपान के समान सबका हितकारक बनकर वह उपासक को सर्वश्रेष्ठ-जीवन के चरमलक्ष्य मोक्ष की ओर प्रेरित करने के लिए साक्षात् होता है।

ऋषिः-सप्तर्षयः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-द्विपदा विराट्। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३क २र
८५८. नृभिर्येमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्र्यः।।

सदाचार-सम्पन्न मनुष्यों—मुमुक्षुओं के द्वारा यम-नियम आदि योगांगों के द्वारा साधना में लाया गया, उपासित किया गया, अत्यन्त कमनीय—चाहने योग्य, सर्वद्रष्टा, प्रजाओं पर विशेष कृपा करनेवाला—सबकी देखभाल—सब का पालन-पोषण करनेवाला, सबको नियम और व्यवस्था में रखनेवाला, सर्वत्र प्रकाशमान, आनन्दप्रद परमात्मा हृदय-मन्दिर में साक्षात् किया जाता है।

सूक्त—१०

ऋषिः-पराशरः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २
८५९. तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः।।

शाश्वत आनन्द प्राप्त करानेवाला शान्तस्वरूप परमेश्वर लोक-कल्याण के लिए ऋग्यजुः और सामरूप तीन वाणियों को अथवा परा, पश्यन्ती और मध्यमारूप वाणियों को प्रेरित करता है और सत्य तथा ज्ञान को धारण करनेवाली, मन को नियन्त्रण में रखनेवाली ऋतम्भरा प्रज्ञा को उपासक के मस्तिष्क में प्रकट करता है। जैसे वेद-वाणियाँ परमेश्वर की अर्चना करती हैं और जैसे विद्या वाचस्पति को प्राप्त होती है, उसी प्रकार परमात्मा की कामना करनेवाले मेधावीजन शान्तस्वरूप परमात्मा को पाने के लिए शान्त, एकान्त स्थान में साधना करते हैं।

ऋषिः-पराशरः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
८६०. सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
सोमः सुत ऋच्यते पूयमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रभु-प्राप्ति की तीव्र इच्छावाले, सोमपान करनेवाले, प्रभु का स्तवन करनेवाले स्तोता=उपासक शान्तस्वरूप परमात्मा को प्राप्त होते हैं। हमारे जीवनों को पवित्र करता हुआ और हृदय-मन्दिर में साक्षात् हुआ वह शान्तस्वरूप परमात्मा वेदवाणियों द्वारा स्तुत किया जाता है। बाल्य, यौवन और वार्धक्य—तीनों कालों में स्तवन करनेवाले स्तोता के अथवा काम-क्रोध और लोभ—तीनों को समाप्त कर देनेवाले स्तोता के स्तुति के साधनभूत मन्त्र शान्तस्वरूप परमेश्वर में संगत होते हैं, अर्थात् स्तोता=उपासक मन्त्रों के द्वारा सदा प्रभु-स्तवन करता है।

ऋषिः-पराशरः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
८६१. एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्रमा विश बृहता मदेन वर्धया वाचं जनया पुरन्धिम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! सर्वभाव से हमारे हृदयों में सिक्त होते हुए आप हमें प्राप्त होओ और हमारे जीवनों को पवित्र करते हुए हमें इहलौकिक और पारलौकिक सुख प्राप्त कराओ। आप अपने महान् आनन्द के साथ इन्द्रियों के अधिष्ठाता हम जीवों में प्रविष्ट होओ। हमारे हृदय में प्रविष्ट होकर आप हमारी वक्तृत्व शक्ति और वेदज्ञान को बढ़ाइए तथा हमें अत्यन्त बुद्धिमान् बनाइए।

सूक्त—११

ऋषिः-पुरुहन्मा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २र ३ २ ३ १ २र ३ २
८६२यद् द्याव इन्द्र ते शतंशतं भूमीरुत स्युः।
१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! यदि आपके सम्मुख आपके इस द्युलोक जैसे सैकड़ों द्युलोक हों और सैकड़ों ही पृथिवियाँ हों और सहस्रों ही सूर्य हों तो भी ये सब मिलकर भी आपके गुण-कर्म की, आपके प्रकाश की, आपकी असीमता की समता नहीं कर सकते। अपनी स्वाभाविक क्रियाशीलता से चमकनेवाले तेजस्वी प्रभो ! वैखरी वाणी की तो बात ही क्या है, माध्यमिक वाणी भी आपका वर्णन नहीं कर सकती और विश्व के उत्तर और दक्षिण दोनों गोलार्द्ध भी सर्वप्रसिद्ध आपको व्याप्त नहीं कर सकते। ऐसे सर्वमहान् आपकी हम उपासना करें।

ऋषिः-पुरुहन्मा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १२
८६३. आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
अस्माँ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः।।

हे महाबलशालिन् ! सुखवर्षक परमात्मन् ! आप अपने बड़प्पन और सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाले बल से सारे विश्व में व्याप्त हो रहे हो। हे सर्वैश्वर्यसम्पन्न प्रभो ! पापों के निवारक ओजस्वी परमात्मन् ! आप अपनी विलक्षण रक्षण-शक्तियों के द्वारा विद्युत्-पतन (बिजली गिरना) आदि दैवी आपत्तियों से हमें बचाइए और इन्द्रियों से युक्त इस गतिशील देह में हमारा पालन कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१२

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बृहती। **स्वरः**—मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
८६४. वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः।
३ १२ ३१२ ३ १२ ३ १२
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते।।

हे पाप-तापविनाशक परमेश्वर! आपके उपासक हम अपने हृदयों में विमल भक्तिरस को सींचते हुए और ज्ञानामृत का आस्वाद लेते हुए आपका ही ध्यान करते हैं। जैसे प्रवाहों का जल समुद्र की ओर ही जाता है वैसे ही हम उपासना करनेवाले उपासकों के मन, बुद्धि आदि उपासना-रस और ज्ञानामृत के विमल प्रवाहों में स्नान करते हुए आपकी ओर जाते हैं, आपकी ही उपासना करते हैं।

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बृहती। **स्वरः**—मध्यमः।

१२ ३२उ ३ १ २ ३ २ ३ १२
८६५. स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः।
३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
कदा सुतं तृषाण ओक आ गमदिन्द्र स्वब्दीव वंसगः।।

सबको बसानेवाले और सबके अन्दर बसनेवाले प्रभो! उपासना-रस के निष्पन्न हो जाने पर और चित्त के सांसारिक वासनाओं से शून्य हो जाने पर वैदिक सूक्तों द्वारा स्तुति करनेवाले मुमुक्षुजन आपकी स्तुति = गुणगान करते हैं और प्रार्थना करते हैं—हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपके दर्शन के पिपासु उपासक के हृदय-मन्दिर में आप कब आएँगे—कब अपने दर्शन से कृतार्थ करेंगे? प्रभु कहते हैं—उत्तम आयुष्य के वर्षोंवाला अर्थात् जीवन के एक-एक वर्ष को यज्ञीय बनाकर—शतक्रतु-सा बनकर और सदा सम्भजन = उपासना करनेवाला बनकर तू हृदय में प्रकट होनेवाले मुझ परमेश्वर को प्राप्त होगा।

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बृहती। **स्वरः**—मध्यमः।

१ २ ३ २ ३१ २र ३ १२
८६६. कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्रिणम्।
३ १ २ ३ १ २र
पिशंगरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे।।

हे पापों का धर्षण करनेवाले परमेश्वर! आप हमारे पापों = पाप-वासनाओं को नष्ट कर दीजिए। आप पापों के सहस्रों बलों—बढ़-चढ़कर उपासकों को दबानेवाले वासना-बलों को छिन्न-भिन्न कर दीजिए। हे परमपूजित धनवाले प्रभो! विश्व-द्रष्टा परमेश्वर! हम आपसे मेधावी विद्वानों द्वारा चाही गई उत्तम ज्ञानरश्मियोंवाली विद्या की और वासनाओं को पीस डालनेवाले ज्ञान की याचना करते हैं।

सूक्त—१३

ऋषिः—वसिष्ठः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

३२ ३१ २ ३ २ ३ १२ ३ २
८६७. तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३१२
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वासनाओं से ऊपर उठ जानेवाला साधक ही ज्ञानी बनता है, शक्ति का पुञ्ज बनता है और त्यागशील होता है। यह साधक पालक और पूरक बुद्धि से युक्त होकर ही ज्ञान, शक्ति और त्याग का सेवन कर पाता है। यह वासनाओं से ऊपर उठा हुआ साधक अनेक नामों से पुकारे जानेवाले परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को वेदवाणियों के द्वारा हम सबके प्रति और अपने प्रति झुकाववाला बनाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे बढ़ई उत्तम नेमिवाली लकड़ी को झुकाता है।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
८६८. न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तं रयिर्नशत्।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २र ३ २
सुशक्तिरिन्मघवन् तुभ्यंमावते देष्णं यत्पार्ये दिवि।।

भौतिक या आध्यात्मिक धन-दाता की मिथ्या स्तुति अथवा निन्दा कभी नहीं करनी चाहिए। अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अपनी आत्मा के विरुद्ध किसी की स्तुति मत करो अथवा दानियों की स्तुति करना अच्छा नहीं है, वह उनकी स्तुति नहीं अपितु निन्दा है। स्तुति तो धनिकों को धन देनेवाले परमेश्वर की ही करनी चाहिए। दूसरों की हिंसा करनेवाले को धन प्राप्त नहीं होता और धन-मद से गर्वित होकर अत्याचार करनेवाले को मोक्ष प्राप्त नहीं होता। हे परमपूजित धनवाले परमेश्वर! उत्तम शक्तियों को प्राप्त करके मैं उन शक्तियों का प्रयोग आपकी कृपा-प्राप्ति के लिए ही करूँ। मेरे सदृश अहिंसक, नम्र उपासक के लिए आप वह धन प्रदान कीजिए जोकि भव-सागर से भी परे आपके दिव्य स्वरूप में विद्यमान है, अर्थात् मुझे मोक्षरूप धन प्रदान कीजिए।

सूक्त–१४

ऋषिः-त्रितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३१२ १ २ ३ १ २
८६९. तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! सत्संग में सद्विचार आदि द्वारा हृदय में आपका प्रादुर्भाव होने पर ऋग्यजुः और सामरूप तीन वाणियाँ अथवा पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी–ये तीन वाणियाँ आपकी स्तुति के लिए उच्चरित होती हैं। जब परमेश्वर को प्रसन्न–कृपालु बनानेवाली मेरी वाणियाँ मुखरित हो उठती हैं, तब पाप-सन्ताप हरणशील, अत्यन्त मनोहारी परमात्मा मधुर ध्वनि से उपदेश करता हुआ–विधि-आत्मक कर्मों का उपदेश और निषेधात्मक कर्मों को न करने का सन्देश देता हुआ हृदय-मन्दिर में प्रकट हो जाता है।

ऋषिः-त्रितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ २र
८७०. अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः। मर्जयन्तीर्दिवः शिशुम्।।

ऋग्, यजुः और सामरूपी तीन प्रकार की वेदवाणियाँ ज्ञान को तीव्र करनेवाले परमात्मा की स्तुति करती हैं। ये वाणियाँ ब्रह्म=परमेश्वर का प्रतिपादन करनेवाली और परम ब्रह्म को प्राप्त करानेवाली हैं। ये वेदवाणियाँ अर्थ-गौरव के कारण अत्यन्त महिमावाली हैं। ये सत्यज्ञान की जनयित्री–प्रकट करनेवाली हैं–समस्त सत्यविद्याओं का मूल हैं तथा जीवनों को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनानेवाली हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-त्रितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ १ २ ३ १ २
८७१. रायः समुद्राँश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणः।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप हमारे लिए सब ओर से, चारों दिशाओं से ज्ञान, सत्य, शील और चरित्र आदि रूप धन प्राप्त कराइए अथवा आप हमें सब प्रकार से धन के चार समुद्ररूप चार वेदों को प्राप्त कराइए। चार वेद धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप चार रत्नों के समुद्र ही हैं अथवा ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान इन चार सम्पत्तियों के अक्षय भण्डार हैं और सहस्रों ऋचाओं से युक्त हैं।

सूक्त—१५

ऋषिः-ययातिर्नाहुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
८७२. सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
३ १२ ३ १ २ ३ १२
पवित्रवन्तो अक्षरं देवान् गच्छन्तु वो मदाः।।

हृदय में साक्षात् किया हुआ, परम रसीला, तृप्तिदायक, शान्तस्वरूप परमात्मा उपासक-आत्मा के पवित्र हृदय में प्रकट होकर आनन्दधारा के रूप में प्राप्त हो रहा है। उस परमेश्वर का आनन्दप्रवाह इन्द्रियों को भी प्राप्त हो, जिससे इन्द्रियाँ विषयों की ओर न जाकर प्रभु की ओर गमनशील हों।

[मन्त्र में 'सुतासः' आदि परमात्मा के बहुवचनान्त विशेषण आदरार्थ हैं। अन्यत्र भी ऐसा ही समझें।]

ऋषिः-ययातिर्नाहुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
८७३. इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन्।
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसः।।

'परम रसीला परमात्मा आत्मा के लिए आनन्दधारा के रूप में प्रवाहित होता है'—ऐसा विद्वान् जन कहते हैं। 'वेदवाणियों का स्वामी परमात्मा यज्ञों में वेदवाणियों द्वारा पूजित होता है। वही सारे संसार का महाबली अधीश्वर है—शासनकर्त्ता, नियामक और व्यवस्थापक है'—यह भी देव कोटि के उपासकों ने कहा है।

ऋषिः-ययातिर्नाहुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३१ २ ३१ २ ३ २
८७४. सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमींखयः।
२ ३ १ २ ३ २र ३ १ २
सोमस्पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे।।

सदा मुस्कराकर बोलनेवाला और यज्ञमय जीवनवाला उपासक अपने जीवन को पवित्र बनाता हुआ दिन-प्रतिदिन परमेश्वर की ओर बढ़ता है और उसे पा भी लेता है, क्योंकि यह उपासना-रस से क्लिन्न=सराबोर रहता है और सदा सत्य बोलता है, कभी भी असत्य नहीं बोलता। सच्चा उपासक धर्मधन का रक्षक बनता है और परमात्मा का सच्चा सखा=मित्र बन जाता है।

सूक्त—१६

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–पवित्रः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ १ २   ३ १ २   ३ १   २र ३   १२   ३   १ २

८७५. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।

१ २   ३ २उ   ३ १   २   ३ २ ३ १   २र ३   १   २र

अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदाशत।।

हे अमृत आनन्द के स्वामिन्! परमेश्वर! उपासक को पवित्र करनेवाला आपका आनन्दरस उपासक के जीवन में व्याप्त हो रहा है। अत्यन्त प्रभावकारी हुआ वह उपासक के अंग-अंग में पूर्णरूपेण व्याप्त हो रहा है। सब शरीर में व्याप्त होने पर भी जो असंयत देहवाला है, जो अजितेन्द्रिय है, जिसने यम-नियम आदि के पालन द्वारा अपने-आपको तपाया नहीं है, जो कच्चा है, मानस रोगी है, वह आपके आनन्दरस का आस्वादन नहीं कर सकता। जितेन्द्रिय=संयमी उपासक ही आपको हृदय में धारण करते हुए आपके आनन्दामृत का पान करते हैं।

[चक्रांकित इस मन्त्र से अपने शरीर को दग्ध करते हैं। यह तो मूर्खता ही है। वेद व्यर्थ की बातों का उपदेश नहीं देते। बाह्य आचरण से मानसिक शुद्धि नहीं हो सकती और मानस शुद्धि के बिना परमेश्वर की प्राप्ति भी नहीं हो सकती।]

ऋषिः–पवित्रः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २   ३ २ ३   १ २   ३ २ ३ १ २   ३   १   २ ३क २र

८७६. तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेऽर्चन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।

१ २   ३ १ २ ३ १ २   ३ २   ३ १   २र   ३   १ २

अवन्त्यस्य पवितारमाशवो दिवः पृष्ठमधि रोहन्ति तेजसा।।

काम-क्रोध आदि महाशत्रुओं और दुष्टों को सन्तप्त करनेवाले परमेश्वर का परम पवित्र और उपासक को पवित्र करनेवाला स्वरूप, तेज, ज्ञान, प्रकाश अमृतधाम=मोक्ष में, द्युलोक में और और सदाचार-सम्पन्न मनुष्य में—सर्वत्र फैला हुआ है। इस प्रकाश का अपने अन्दर विस्तार करनेवाले प्रभु की अर्चना करते हुए उसी में विशेषरूप से स्थिर हो जाते हैं। इस उपासक के शीघ्रता से कर्मों में व्याप्त होनेवाले इन्द्रियरूप अश्व पवित्र करनेवाले परमेश्वर की ओर गमन करते हैं—इसकी इन्द्रियाँ पवित्रकर्ता प्रभु की ओर जानेवाली होती हैं अथवा शीघ्रता से कर्म करनेवाले उपासक पवित्र करनेवाले परमात्मा का आलिंगन करते हैं और तेज से सम्पन्न होकर द्युलोक की पीठ पर अर्थात् मोक्षधाम में आरोहण करते हैं।

ऋषिः–पवित्रः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २   ३२ ३   १ २   ३२   ३ १   २   ३ १ २   ३२

८७७. अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः।

३   १ २   ३ १ २ ३ १ २   ३ २ ३ २ ३ १ २

मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः।।

परमात्मा उषाकाल में भक्तों के हृदय में प्रकाशित होता है। सब आस्तिक प्रातःकाल ही उसका ध्यान करते हैं। वह परमात्मा सबसे पूर्व विद्यमान था—सूर्य आदि लोकों के निर्माण से पूर्व और देवों—ऋषियों की उत्पत्ति से पूर्व भी वह था। वह कामनाओं का पूरक है। वह वेदज्ञान का उच्चारण करता है—सृष्टि के आदि में वेदज्ञान प्रदान करता है। भक्तों को ज्ञान देने की इच्छावाला होकर सर्वत्र व्याप्त है अथवा सारे लोक-लोकान्तरों को शक्ति से पूर्ण कर रहा है। उसी की प्रज्ञा से योगिजन प्रज्ञावाले बनाते हैं अथवा उसकी प्रज्ञा से—ज्ञान से, प्रेरणा से बड़े-बड़े ठग भी बहुत कुछ बन जाते हैं, उनका जीवन ही पलट जाता है। मनुष्यों के नेता राजा और गुरु तथा विशेष ज्ञानी और सन्तानों के पालक पिता आदि परमेश्वर को अपने हृदय-मन्दिर में धारण करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१७

ऋषिः—सोभरिः काण्वः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। **स्वरः**—ऋषभः।

१ २र ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

८७८. प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये।।

आत्मसमर्पणभाव से परमेश्वर की स्तुति=गुणगान करनेवाले उपासको! तुम अतिशय दानशील, मोक्षरूपी आनन्द को धारण करनेवाले, महतोमहीयान्—सबसे बड़े, शुभ्र ज्योतिस्वरूपवाले, सबको आगे ले-जानेवाले, प्रकाशस्वरूप परमेश्वर के लिए खूब सामगान किया करो—मस्ती में भरकर उसका गुणगान किया करो।

ऋषिः—सोभरिः काण्वः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

८७९. आ वंसते मघवा वीरवद्यशः समिद्धो द्युम्न्याहुतः।

३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २

कुविन्नो अस्य सुमतिर्भवीयस्यच्छा वाजेभिरागमत्।।

परमपूजित धनवाला, ज्ञान ज्योतिवाला, परम यशस्वी, तेज से प्रदीप्त और उपासना द्वारा, आत्मसमर्पण द्वारा हृदय-मन्दिर में प्रकाशित हुआ, संसार के समस्त पदार्थों को जीव-हित के लिए देनेवाला वह परमात्मा आत्मबल से युक्त यश प्रदान करता है। यश-प्राप्ति के लिए मनुष्य ईमानदारी से धन कमाये, जितेन्द्रियता से तेजस्वी बने, ज्ञानी और त्यागी बने। इस परमेश्वर की कल्याणकारिणी, शोभन मति, भव्य उपदेश, अनुग्रह-बुद्धि हमें बारम्बार प्राप्त हो। वह परमेश्वर अपने ज्ञान, बल, शक्ति, अन्न—अमृत-अन्नभोग—इन सबके साथ उपासकों को भली-भाँति प्राप्त हो।

सूक्त—१८

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—उष्णिक्। **स्वरः**—ऋषभः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

८८०. तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम्। उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम्।।

रक्षा के सभी साधनों से सम्पन्न, निग्रह-अनुग्रह करने में समर्थ हे परमेश्वर! हम आपके उस निर्मल, प्रशान्त, शाश्वत आनन्द की प्रशंसा करते हैं जो आनन्द हमारे सभी मनोरथों को पूर्ण करके हमें तृप्त करता है, काम-क्रोध आदि के साथ होनेवाले संग्रामों में हमारे शत्रुओं का पराभव करता है, जो भक्तों—उपासकों पर अनुग्रह करनेवाला है और विवेकशील उत्तम मनुष्यों द्वारा तथा दुःखीजनों द्वारा आश्रय करने योग्य होता है।

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—उष्णिक्। **स्वरः**—ऋषभः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २

८८१. येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ। मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप जिस आनन्दप्रद स्वरूप से, जिस तेज से गतिशील और पुरुषार्थी मनुष्य के लिए तथा मननशील मनुष्य के लिए ज्ञान-ज्योतियाँ देकर उसे ज्योतिष्मान् बनाते हो, इन मननशील उपासकों द्वारा स्तुत किये जाते हुए आप उसी तेज के साथ इस आचारवान् और मननशील उपासक के वासनाशून्य निर्मल हृदय-मन्दिर में विराजमान होते हो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

२ २ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १२ ३ १ २ ३ १ २
८८२. तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा। वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे।।

यतः आप मननशील उपासक को ज्योतिष्मान् बनाते हो और उसके हृदय में विराजमान होते हो अतः=इसलिए वैदिक सूक्तों के द्वारा स्तुति करनेवाले स्तोता उपासकजन पूर्वकाल की भाँति आज भी निरन्तर आपकी स्तुति=गुणगान करते हैं—कि 'आप ही ज्योति प्राप्त कराके ज्योतिष्मान् बनाते हो, अतः हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप मन के द्वारा पालित होनेवाली कामनाओं पर अर्थात् मन में रहनेवाली कामनाओं पर विजय प्राप्त कराइए, उन्हें असत् से सत् की ओर प्रेरित कीजिए।' और अपने उपासक मित्रों से कहते हैं—'सबके मनोरथों को पूर्ण करनेवाला परमेश्वर जिन कर्मों के करने से प्रसन्न होता है, कृपालु बनता है, तुम्हें प्रतिदिन उन्हीं वैदिक कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए, अवैदिक कर्मों का नहीं।'

सूक्त—१९

ऋषिः-तिरश्चीः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
८८३. श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जो आपकी उपासना करता है, उस प्राणसाधना करनेवाले, प्रशस्त इन्द्रियोंवाले अर्थात् संयमी, अन्तर्ध्यान करनेवाले उपासक की प्रार्थनाओं को आप सुनिए और अपने आनन्दरस द्वारा उसे आनन्द-ऐश्वर्य से सींच दीजिए, क्योंकि आप महान् कृपालु हैं।

ऋषिः-तिरश्चीः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २र
८८४. यस्त इन्द्र नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत्।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जो उपासक आपके लिए सदा नवीन—अपूर्व, विनम्र, अत्यन्त स्तुत्य, उत्तमोत्तम कर्मों में प्रेरित करनेवाली, आनन्ददायक, सत्यात्मक स्तुति वाणी का उच्चारण करता है, आप उसे चेतनायुक्त निर्मल मन और सत्य से परिपूर्ण प्रज्ञा=बुद्धि प्रदान करते हैं।

ऋषिः-तिरश्चीः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
८८५. तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थानि वावृधुः। पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे।।

हम उपासक उस परमैश्वर्यशाली परमात्मा का ही स्तवन करते हैं जिस परमेश्वर का समस्त वेदवाणियाँ और स्तोत्र बढ़-चढ़कर वर्णन करते हैं। प्रभु-स्तवन करते हुए हम उसके अनेक प्रकार के पौरुष—सृष्टि उत्पत्ति आदि कार्यों को मानते हुए—उनमें श्रद्धा रखते हुए उसकी उपासना करते हैं अथवा उसके पराक्रमपूर्ण गुण-कर्मों को—सत्य, दया, वात्सल्य, परोपकार आदि को जीवन में धारण करते हुए काम-क्रोध-लोभ आदि शत्रुओं को पराजित करके जीवन में विजयशील बनते हैं।

।।यहाँ द्वितीय प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ तृतीयः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः–अकृष्टा माषाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

२ ३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १२३१२
८८६. प्र त आश्विनीः पवमान धेनवो दिव्या असृग्रन् पयसा धरीमणि।
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१२
प्रान्तरिक्षात् स्थाविरीस्ते असृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और उपासकों को पवित्र करनेवाले प्रभो! आपकी जो सनातन और सत्य विद्याओं की प्रकाशक, ज्ञानदुग्ध पिलानेवाली, आपके द्वारा प्रदत्त अलौकिक वेदवाणियाँ हैं वे अपने ज्ञान-दुग्ध के साथ शरीर-धारक हृदय में प्रकट होती हैं। हे ऋषियों द्वारा सम्भजन—उपासना करने योग्य परमेश्वर! जो ऋषि अपनी आत्मा को शर=बाण बनाकर आपको वेधते=अपने जीवन का लक्ष्य बनाते हैं और आपका अन्वेषण करते हैं वे ऋषि अपने हृदयान्तरिक्ष में सदा स्थिर रहनेवाली—अविनाशी वेदवाणियों का साक्षात्कार कर लेते हैं।

ऋषिः–अकृष्टा माषाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२
८८७. उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः।
१ २ ३ २३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योनौ कलशेषु सीदति।।

(क) ध्रुव सत्तावाले, एकरस वर्त्तमान, आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले परमात्मा की व्यापनशील ज्ञान-रश्मियाँ सर्वत्र प्राप्त हो रही हैं। जब दुःखहारी, परम मनोहर परमात्मा पवित्र—निर्मल हृदय में खोजा—ढूँढा जाता है, तब वहीं प्राप्त होता है। हृदय में बैठनेवाला वह जगदीश्वर आत्मा और परमात्मा के मिलन-स्थान हृदय में और उसके समस्त कला-स्थानों—मन और इन्द्रियों में बस जाता है। उसका हृदय में ध्यान, मन में मनन, श्रोत्रों से श्रवण, नेत्रों से सर्वत्र उसके सौंदर्य का दर्शन और वाणी से उसका स्तवन होता रहता है।

(ख) अपने जीवन को पवित्र बनानेवाले जीव के दोनों ओर ऋत और सत्य की लगामें होती हैं। भौतिक जीवन में यह सूर्य और चन्द्रमा की भाँति प्रत्येक कार्य को ठीक समय पर करता है और आध्यात्मिक जीवन में सत्य का पालन करता है। ऋत और सत्य की लगामों से इसका जीवन-रथ सत्य के मार्ग से विचलित नहीं होता। इस प्रकार धर्म-मार्ग पर दृढ़ रहते हुए इसके जीवन में चारों ओर प्रकाश-ही-प्रकाश हो जाता है। जब पवित्र हृदय में वासनाओं का हरण करनेवाले प्रभु का साक्षात् किया जाता है तब वासनाओं का विनाश करनेवाला परमेश्वर जीवों में—जीवों के मन और इन्द्रियों नें विराजमान हो जाता है और अपने हृदय की वासनाओं का उन्मूलन करके प्रभु के समीप बैठनेवाला यह जीव ब्रह्माण्ड को उत्पन्न=व्यक्त, प्रकट करनेवाले प्रभु में स्थित हो जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–अकृष्टा माषाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

२ ३ १ २ ३ १२ ३१२ ३१ २र ३१२
८८८. विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोष्टे सतः परि यन्ति केतवः।
३ १ २ ३ १२ ३ २३१ २३ १२
व्यानशी पवसे सोम धर्मणा पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि।।

हे सर्वद्रष्टा प्रभो ! समस्त ब्रह्माण्ड का पालन-पोषण करनेवाले परमेश्वर ! सर्वशक्तमान् और निर्विकार आपके प्रज्ञान सब लोक-लोकान्तरो में व्याप्त होते हैं—आपकी महती प्रज्ञा सब लोक-लोकान्तरों को प्रकाशित करती है। हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! आप अपनी धारणशक्ति से सर्वत्र व्यापक होते हुए सबको पवित्र करते हैं। आप समस्त लोकों के स्वामी बनकर सर्वत्र देदीप्यमान हो रहे हैं।

सूक्त–२

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २र ३२ १ २ ३२ ३२
८८९. पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्।।

(क) आनन्दधारा में प्रवाहित होनेवाले और जीवन को पवित्र करनेवाले परमेश्वर ने हृदय में वाणी को उत्पन्न किया यह परम आश्चर्य ही है। उसी परमेश्वर ने जगत् के उपकारक सूर्य को बनाया है, जो बिना तेल और बिना बत्ती के सतत जल रहा है—यह भी आश्चर्यकारक है अथवा उसी ने वेदरूपी ज्ञान का प्रकाश किया है—यह भी विचित्र ही है।

(ख) उपासक के जीवन को पवित्र करनेवाले परमेश्वर ने जैसे द्युलोक में फैले हुए अद्भुत नक्षत्र-मण्डलों को प्रकट किया है, उसी प्रकार अपने उपासकों के हृदयों में सर्वहितकारिणी निज महाज्योति को भी प्रकट कर दिया है।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २उ ३ १ २
८९०. पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः। वि वारमव्यमर्षति।।

आनन्दधारा में प्रवाहित होनेवाले और उपासक के जीवन को पवित्र करनेवाले हे परमेश्वर ! आपकी प्राप्ति का आनन्द जीवन को मस्त बना देनेवाला है। हे तेज से देदीप्यमान प्रभो ! सारे संसार को नियम और व्यस्था में चलानेवाले परमात्मन् ! आपकी प्राप्ति का आनन्द सब प्रकार के उपद्रवों और दुःखों से रहित है। आपका यह आनन्दरस वासनाओं का उन्मूलन करनेवालों, आपके द्वारा वरण किये जानेवालों और अपनी सुरक्षा करनेवालों में उत्तम पुरुषों को विशेषरूप से प्राप्त होता है।

[सत्यवादी, दुराचार से पृथक्—सदाचार-सम्पन्न, शान्त, समाहित, जितेन्द्रिय पुरुष पर परमात्मा की कृपा होती है और प्रभु का आनन्दरस भी उसे ही प्राप्त होता है।]

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ २ ३क २र ३ २
८९१. पवमानस्य ते रसो दक्षो वि राजति द्युमान्। ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे।।

आनन्दधारारूपमें प्राप्त होनेवाले और उपासक को पवित्र करनेवाले तुझ परमात्मा की प्राप्ति का आनन्द जीव की सर्वविध उन्नति का कारण है। यह रस महान् दीप्तिमान्—ज्योतिवाला होकर उपासक के अन्दर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रकाशित होता है। प्रभु-प्राप्ति से जहाँ उपासक की सर्वांगीण उन्नति होती है, वहाँ उसे ज्ञान-ज्योति भी प्राप्त होती है। यह ज्योति सर्वोपरि सुख का दर्शन कराने के लिए होती है अथवा यह प्रकाश—ज्ञान सारे ब्रह्माण्ड का ज्ञान और आनन्दमय परमेश्वर का दर्शन कराने के लिए होता है।

सूक्त—३

ऋषि:-मेध्यातिथिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२उ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ २उ ३ १ २
८९२. प्र यद् गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः। घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्।।

सृष्टि के आरम्भ में परमेश्वर द्वारा प्रदत्त वेदरूपी वाणियाँ प्रकाशरूप होने के कारण निर्भ्रान्त हैं और सब सत्यविद्याओं का प्रकाश करनेवाली हैं। ये ज्ञान-प्रदान द्वारा सब मनुष्यों का धारण और पोषण करती हैं और परमेश्वर को प्राप्त कराती हैं। ये सर्वत्र गमनशील होकर—सब वर्णों और सब आश्रमों को प्राप्त होकर जीवों के तमोगुणरूप आवरण को—अज्ञान को दूर करती हैं। इन्हीं वेदवाणियों के द्वारा परमेश्वर सुशोभित हो रहा है।

ऋषि:-मेध्यातिथिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र ३ २ ३ १ २ ३ २
८९३. सुवितस्य वनामहेऽति सेतुं दुराय्यम्। साह्याम दस्युमव्रतम्।।

अपनी सुगति के लिए हम [उपासक] सर्वत्र प्राप्त परमेश्वर के उस आश्रय को चाहते हैं जो बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है, परन्तु सारे दुःखों को निवृत्त—समाप्त करनेवाला है। उस प्रभु के आश्रय को हम इसलिए चाहते हैं कि हम शम-दम आदि व्रतहीन मनुष्यों का, हमारे ज्ञान, भक्ति आदि साधनों को क्षीण करनेवाले काम क्रोधदि अन्तः शत्रुओं का और दया, दान, सदाचार आदि से रहित, राष्ट्र के गौरव आदि को नष्ट करनेवाले बाह्य शत्रुओं का पराभव कर सकें। हम उस परमेश्वर का आश्रय इसलिए चाहते हैं कि हमें व्रतहीन करनेवाले—शिव संकल्प से गिरानेवाले, आत्मबल को क्षीण करनेवाले अज्ञानरूप शत्रु को अथवा कामरूप शत्रु को अथवा पाप-वासना को नष्ट कर सकें।

ऋषि:-मेध्यातिथिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
८९४. शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः। चरन्ति विद्युतो दिवि।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और उपासकों के जीवन को पवित्र करनेवाले तथा काम आदि शत्रुओं का शोषण करनेवाले बल से सम्पन्न परमेश्वर के शब्द धर्ममेघ समाधि में होनेवाली आनन्दवर्षा के शब्दों के समान सुनाई पड़ते हैं अर्थात् भक्तजनों को प्रत्येक कार्य के आरम्भ में हृदयाकाश में उठनेवाले शब्द सुनाई पड़ते हैं कि ऐसा करो और ऐसा मत करो। इन उपासकों के मस्तिष्क में विशेष दीप्तियाँ प्रकट हो जाती हैं—इनकी बुद्धि अत्यन्त सूक्ष्म व तीव्र हो जाती है।

ऋषि:-मेध्यातिथिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
८९५. आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत्। अश्ववत् सोम वीरवत्।।

(क) परमैश्वर्य आदि के द्वारा सर्वत्र दीप्त हे परमेश्वर! आप कृपा करके हमें सस्य-श्यामला विस्तृत भूमि प्रदान करें। हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमें प्रशस्त गौओं और उत्तम घोड़ों से युक्त स्वर्ण, रजत,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मणि-मुक्ता आदि सहित धन, शुभ गुण-कर्मों से अलंकृत पुत्र-पौत्र आदि और सरस अन्न प्राप्त कराइए।

[केवल प्रार्थना से कुछ प्राप्त नहीं होगा। प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ भी आवश्यक है।]

(ख) हे परम रसीले, शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमारी महती एषणा—इच्छा को—मोक्ष-प्राप्ति की प्रबल कामना को भली-भाँति पूर्ण कीजिए। यही इच्छा प्रशस्त गौवोंवाली, अश्वों=घोड़ोंवाली, पुत्रोंवाली और धन-सम्पत्तिवाली एषणा है। इस एक—मोक्ष-इच्छा के पूर्ण होने पर सभी लौकिक एषणाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

(ग) हे परम रसीले और शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमें प्रशस्त इन्द्रियोंवाला, स्वर्ण, रजत, मणि-मुक्ता आदि सम्पत्तियों से युक्त, प्रबल मनों से युक्त और वीर सन्तानों से युक्त बनाकर अन्त में हमारे महाभीष्ट मोक्षपद को हमें प्राप्त कराइए।

ऋषिः—मेध्यातिथिः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २र ३२उ ३ २ ३ १ २

८९६. पवस्व विश्वचर्षण आ मही रोदसी पृण। उषाः सूर्यो न रश्मिभिः।।

हे सर्वद्रष्टा और सबका पालन-पोषण करनेवाले परमेश्वर! आप आनन्दधारारूप में प्रवाहित होते हुए मुझ उपासक के हृदय-मन्दिर में आइए—अपना साक्षात् दर्शन दीजिए और मेरे जीवन को पवित्र बना दीजिए। जैसे सूर्य अपनी प्रकाशधाराओं से उषाकालों को भर देता है; इसी प्रकार आप मेरे जीवन के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दोनों पार्श्वों—महान् भूलोक और द्युलोक को सुख-सामग्री से भर दीजिए। आप मेरे शरीर और मस्तिष्क को प्रकाश से भर दीजिए। मेरा शरीर स्वास्थ्य के प्रकाश से चमके और मेरा मस्तिष्क ज्ञान के प्रकाश से भरपूर हो। आप मेरे इहलौकिक और पारलौकिक—भोग-पार्श्व और अपवर्ग-पार्श्व को अपनी आनन्दधाराओं से भरपूर कर दो।

ऋषिः—मेध्यातिथिः। देवता—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३२ ३ १२ ३ १२ १२ ३१२ ३ १२

८९७. परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः। सरा रसेव विष्टपम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अपनी शान्तिप्रद आनन्दरसमयी धारा से सब ओर से बहते हुए-से हमें उसी प्रकार प्राप्त होओ जैसे नदी अपने प्रवेश-स्थान समुद्र की ओर बहती चली जाती है अथवा आप अपने आनन्दरस के प्रवाह द्वारा हमें सब प्रकार के ताप-सन्ताप से पृथक् कर दीजिए, जैसे नदी, नदी पर रहनेवालों को तृष्णा (प्यास) के ताप-सन्ताप से रहित कर देती है।

सूक्त—४

ऋषिः—बृहन्मतिः। देवता—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३ १ २ ३ १२ ३२ ३ १ २ १२ ३२उ ३ १२

८९८. आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना। यत्रा देवा इति ब्रुवन्।।

(क) 'हे महामते परमेश्वर! आप अपने प्रिय तेजों समेत उस उपासक के हृदय-मन्दिर में शीघ्र प्राप्त हो जाते हैं, जिस उपासक में दिव्य गुण निवास करते हैं'—ऐसा आपने वेदों द्वारा उद्घोष किया है।

(ख) हे विशाल बुद्धिवाले उपासक! तू अपने तेज से कार्यों को शीघ्रता से करनेवाला बनकर चारों ओर गति करनेवाला—जानेवाला परिव्राजक बन। तू ऐसा जीवन यापन कर कि संसारवाले तेरे सम्बन्ध में ऐसा कह उठें कि **देवाः**='अरे, ये तो देवलोग हैं।'

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–बृहन्मतिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

८९९. परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः। वृष्टिं दिवः परि स्रव।।

(क) हे परमात्मन्! आप उपासकों के असंस्कृत हृदय को अपने आगमन से सुशोभित करते हुए और उनकी इच्छाओं को सफल=पूर्ण करते हुए अपने अमृतधाम से अपने आनन्दरस को धारारूप में टपका दो।

(ख) विशाल बुद्धिवाला उपासक चारों ओर परिक्रमा करता हुआ अशिक्षित और असभ्य लोगों को शिक्षित और सभ्य बनाए। यह लोगों के जीवन को सुसंस्कृत और दिव्य गुणों से अलंकृत कर दे। इस उद्देश्य से यह लोगों को दिव्य प्रेरणाएँ देता है। हे महामते! तू मस्तिष्करूप द्युलोक से ज्ञान की वृष्टि कर।

ऋषिः–बृहन्मतिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९००. अय स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ। सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत्।।

आनन्द-अमृत की वर्षा करनेवाला यह परमात्मा वह है जो अपनी आनन्दमयी धारा से उपासक के पवित्र हृदय में प्रकट होता है और हृदय-सरोवर की उपासना-रसमयी लहरों में अपने दिव्यस्वरूप से आनन्दरस बहा देता है।

ऋषिः–बृहन्मतिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९०१. सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा। विचक्षाणो विरोचयन्।।

उपासकों की प्रत्येक चेष्टा का निरीक्षण करता हुआ, स्वयं ज्ञान-ज्योति से चमकता हुआ और उपासक को चमकाता हुआ परमेश्वर ज्योति प्रदान करने के लिए उपासकों के निर्मल हृदय में शीघ्रता से प्रकट हो जाता है।

ऋषिः–बृहन्मतिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९०२. आविवासन् परावतो अथो अर्वावतः सुतः। इन्द्राय सिच्यते मधु।।

जब परमेश्वर हृदय में प्रकट हो जाता है तब प्रतीत होने लगता है कि वह परमेश्वर ही दूर के और समीप के सब लोक-लोकान्तरों को पूर्णरूप से बसा रहा है—सबको नियमित और व्यवस्थित कर रहा है, सबको सुख-सामग्री से भरपूर कर रहा है। इसी परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए मधुर उपासना-रस सींचा जाता है।

ऋषिः–बृहन्मतिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९०३. समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये।।

शम-दम आदि से युक्त, सदाचार सम्पन्न उपासक-जन दुःखों को नष्ट करनेवाले, अत्यन्त मनोहर, आनन्दरस पूर्ण—परम रसीले परमेश्वर की स्तुति करते हैं। अपनी इन्द्रियों की शक्ति के विकास के लिए और वासनाओं के आक्रमण से रक्षा के लिए ये उपासक अपनी अखण्ड साधना के द्वारा परमेश्वर को प्राप्त कर लेते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त-५

ऋषि:-भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
९०४. हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम्। महामिन्दुं महीयुवः।।

(क) बहिनें जैसे भाइयों को और पत्नियाँ जैसे पतियों को अपनी-अपनी ओर प्रेरित करती हैं, इसी प्रकार महाशक्ति परमेश्वर को चाहनेवाले और विशुद्ध ज्ञान-ज्योतिवाले उपासक सूर्य के समान तेजस्वी परन्तु चन्द्रमा के समान शीतल परमेश्वर को प्राप्त कर लेते हैं।

(ख) पुरुषार्थी मनुष्य अपने जीवन-लक्ष्य को पा लेता है। जैसे अपने घर की ओर, जिसका उन्हें निर्माण करना है, जानेवाली दुहिताएँ पति को प्राप्त करती हैं, इसी प्रकार आत्मा की ओर गति करनेवाली क्रियाशील प्रजाएँ ब्रह्माण्ड के पति को प्राप्त कर लेती हैं और महत्ता के अभिलाषी भी आनन्दरस पूर्ण परम रसीले महतोमहीयान् परमेश्वर को प्राप्त कर लेते हैं।

ऋषि:-भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २
९०५. पवमान रुचारुचा देव देवेभ्यः सुतः। विश्वा वसून्या विश।।

धारारूप में प्रवाहित होनेवाले और उपासकों के जीवन को पवित्र करनेवाले हे आनन्दप्रद परमात्मन्! मुमुक्षुजनों के अन्दर साक्षात् होनेवाले आप अपनी दीप्तियों द्वारा अथवा अपनी अमृतरसधारा से मुझ उपासक के समस्त वास-स्थानों—हृदय, मन और इन्द्रियों में समाविष्ट हो जाओ। हृदय में आपका ध्यान हो, मन से आपका मनन हो और इन्द्रियों से आपका श्रवण, दर्शन और वर्णन=गुणगान हो।

ऋषि:-भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
९०६. आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः। इषे पवस्व संयतम्।।

धारारूप में प्रवाहित होनेवाले और उपासकों के जीवनों को पवित्र करनेवाले हे परमात्मन्! मुमुक्षजनों के प्रति उनके अभीष्ट—मोक्ष-प्राप्ति के लिए आप उन्हें उत्तम स्तुति, दानशीलता, प्रार्थना और सेवा-भावना, संयमशीलता तथा पुरुषार्थ-भावना प्राप्त कराइए।

सूक्त-६

ऋषि:-सुतम्भर आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
९०७. जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्वि भाति भरतेभ्यः शुचिः।।

उत्पन्न हुए जड़-चेतन संसार का रक्षक, सामान्यरूप से सब प्राणियों का और विशेषरूप से भक्तजनों का रक्षक, जागरणशील—सदा प्रबुद्ध, प्रशंसनीय बलवाला—संसार के सञ्चालन और दुष्टों को दण्ड देने का बल रखनेवाला, सर्वत्र गमनशील और सबको आगे और आगे ले-चलनेवाला परमेश्वर स्तुत्य कल्याण के लिए—जीवों की शुभ गति के लिए हृदय-मन्दिर में प्रकट होता है। वह द्रवित—कृपालु होकर भक्तों को दर्शन देता है। वह महान् तेज से सर्वत्र प्रदीप्त हुआ, आत्मोद्धार के लिए तत्पर, स्व-पर कल्याण के अभिलाषी, संयम, सत्य, सन्तोष आदि सद्गुणों को धारण करनेवाले उपासकों के समक्ष अपने आपको प्रकट कर देता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषि:-सुतम्भर आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २र
९०८. त्वामग्ने अंगिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमंगिरः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! प्रत्येक सम्भजन—स्तुति, प्रार्थना, उपासना में जिसका आश्रय लिया जाता है उस आपको अंगिरस=प्राणायाम के अभ्यासी, संयमी, तपस्वी, अंग-अंग में रसवाले, आपके सच्चे पुत्र हृदय-गुफा में विद्यमान आपको खोज लेते हैं—आपको प्राप्त कर लेते हैं। आप देहरूपी अधर-अरणि और ओमूरूपी उत्तर अरणि से मथे जाने पर प्रकट होते हैं। आप महान् बल से युक्त हैं। हे अंग-अंग के रसरूप! संयमी और तपस्वी जन आपको सहस् का पुत्र=अत्यन्त बलशाली, साहस का पुतला और बल का पुञ्ज कहते हैं।

ऋषि:-सुतम्भर आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३ १ २ ३१ २३२ ३१२ ३ १ २र ३ १ २र
९०९. यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समिन्धते।
१ २ ३ २ ३२३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन् नि होता यजथाय सुक्रतुः।।

मुमुक्षु उपासकजन अध्यात्मयज्ञ के प्रज्ञापक—प्रकाशक, सर्वश्रेष्ठ, सृष्टि के उत्पन्न होने से पूर्व परमाणुओं को धारण करनेवाले प्रकाशस्वरूप परमेश्वर को त्रिषधस्थ=इडा, पिंगला और सुषुम्णा नामक तीन नाड़ियों के सहस्थान—इकट्ठे होने के स्थान आज्ञाचक्र में सम्यक् प्रदीप्त करते हैं अथवा मूर्धा में ध्यान के लिए, जिह्वा में पवित्र 'ओम्' नाम के जप के लिए और हृदय में उपासना के लिए स्थापित करते हैं। सत्कर्म करनेवाला आस्तिक सज्जन ज्ञान-यज्ञ की सिद्धि के लिए अपने आत्मा, मन, इन्द्रियों तथा स्वस्थ शरीर के साथ अपने हृदय-आकाश में प्रतिष्ठित हो जाता है अर्थात् आत्मा में प्रभु-प्रेम, मन में एकाग्रता, इन्द्रियों में अचञ्चलता और शरीर में नीरोगता एवं रमणीयता स्थापित करता है। यही ज्ञान-यज्ञ की सिद्धि है।

सूक्त—७

ऋषि:-गृत्समदः। **देवता**-मित्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३१ २र २उ ३ १ २ ३ १२
९१०. अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा। ममेदिह श्रुतं हवम्।।

हे परम स्निग्ध और वरणीय परमात्मन्! मेरे [उपासक के] जीवन में सत्य और यज्ञ=श्रेष्ठकर्मों के वर्धक और इन दोनों धर्मों—गुणों से युक्त प्रभो! आपके लिए यह उपासना-रस तैयार किया गया है, आप इसे स्वीकार कीजिए और मेरे आह्वान को, मेरी पुकार को सुनिए—मुझे भी सबका स्नेही और सबके द्वारा वरणीय बना दो। मैं जीवन में सत्य का आचरण करूँ और सदा श्रेष्ठ कर्म ही करूँ।

ऋषि:-गृत्समदः। **देवता**-मित्रावरुणौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
९११. राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे। सहस्रस्थूण आशाते।।

किसी के साथ द्रोह न करनेवाले अपितु सबके साथ स्नेह करनेवाले, सर्वत्र प्रकाशमान परमात्मन्! आप भक्तों को सहस्रों प्रकार से आश्रय प्रदान करते हैं और भक्तों के चञ्चलतारहित निर्मल हृदय में अथवा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सहस्र-दल-कमल—सहस्रारचक्र में आसीन होते हैं। आप मुझे भी सहारा दो कि मैं अपने हृदय को निर्मल बनाकर आपको वहाँ बैठा सकूँ।

ऋषिः—गृत्समदः। **देवता**—मित्रावरुणौ। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३१ २ ३ १२ ३ १ २र ३१२ १२३१ २

९१२. ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती। सचेते अनवह्वरम्।।

वह विश्वब्रह्माण्ड का सम्राट् सर्वत्र प्रकाश फैलानेवाला है—सब लोक-लोकान्तरों को प्रकाशित करता है, अखण्ड सुखसम्पत्ति = मोक्ष का स्वामी है, अविनाशी है, दानशील है—भोग और अपवर्ग प्रदान करता है। वह उन लोगों पर कृपा करता है—उन्हें अपनाता है जिनका हृदय शुद्ध, पावत्र, निर्मल और कुटिलता से रहित है। दुर्जन, दुष्ट-हृदय और क्रूर मनुष्यों के साथ परमात्मा कोई सम्बन्ध नहीं रखता।

सूक्त—८

ऋषिः—गोतमो राहूगणः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १२३१ २र ३१२ ३१ २र

९१३. इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव।।

अपने गुण-कर्म-स्वभाव से चलायमान न होनेवाला और किसी से हिंसत न होनेवाला परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ध्यानशील उपासक की पाप-वासनाओं, पाप-विचारों, काम-क्रोध आदि शत्रुओं को भून डालनेवाले अपने ज्ञान-प्रकाश से नष्ट कर देता है और पाँच ज्ञानेन्द्रियों तथा मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार—इन नौ में उत्पन्न होनेवाली वासनाओं को भी नष्ट कर देता है।

[पाँच ज्ञानेन्द्रियों में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ग्रहण—ये वासनाएँ हैं और मन में संकल्प, बुद्धि में निश्चय, चित्त में स्मरण और अहंकार में ममता—ये संसार को लक्ष्य करके होती है।]

ऋषिः—गोतमो राहूगणः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३ १ २र ३ २उ ३ १२३ १२ १२ ३१२

९१४. इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्। तद्विदच्छर्यणावति।।

गतिशील संसार के शिर = आधार परमैश्वर्यशाली परमात्मा को चाहता हुआ उपासक यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि—पर्ववाले योगांगों में पहुँचा हुआ उसे ओमूरूपी धनुष के द्वारा प्राप्त करता है। साधक ओमूरूपी धनुष पर अपने आत्मारूपी शर को चढ़ाकर ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

[शर का अर्थ है बाण का लोह फलक, शर्य का अर्थ है फलकसहित बाण, शर्यणा का अर्थ है बाण को फेंकने के लिए झुकी हुई डोरी, इस प्रकार शर्यणावत् का अर्थ हुआ डोरी से युक्त धनुष।]

ऋषिः—गोतमो राहूगणः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २३क २र ३ २ ३१२ ३२

९१५. अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे।।

इस चन्द्रमा = मन के घर = हृदय में ही इन्द्रियों का अन्तर्हित होना और संसार-शिल्पी परमेश्वर के नमस्कार करने योग्य स्वरूप का भी हृदय में ही अन्तर्हित होना योगियों ने माना है— योगिजनों की यह मान्यता सत्य ही है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

[इन्द्रियाँ ध्यान द्वारा हृदय में अन्तर्हित होती हैं और परमात्मा भी इसी में निवास करता है, अर्थात् इन्द्रियों और मन को हृदय में अन्तर्हित कर जब उसी हृदय में विराजमान परमात्मा का ध्यान ओम् के जप द्वारा किया जाता है, तब परमेश्वर का दर्शन होता है और इन्द्रिय-विजय भी हो जाता है।]

सूक्त—९

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ ३ १ २ ३ २ ३ १२
९१६. इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः। अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि।।

हे परमैश्वर्यशालिन् और प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! दोनों धर्मोंवाले तुझ परमात्मा के लिए इस मननशील उपासक की यह श्रेष्ठ स्तुति अथवा उसका पालन और पूरण करनेवाली स्तुति बादल से वृष्टि के समान निरन्तर प्रकट हो रही है, आप इसे स्वीकार कीजिए।

[मेघ से होनेवाली वृष्टि सन्ताप को दूर करती है, शान्ति प्रदान करती है और नाना प्रकार के बीजों के विकास का कारण बनती है, इसी प्रकार मननशील उपासक के द्वारा की गई प्रभु-स्तुति उसके जीवन के सन्ताप को दूर करती है, शान्ति प्राप्त कराती है और उसके जीवन में विद्यमान सद्गुणों का विकास करती है।]

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३२उ ३ १ २ ३ १२३ १२ ३ १ २ ३ १२
९१७. शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः। ईशाना पिप्यतं धियः।।

हे परमैश्वर्यशालिन् और प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप स्तुति करनेवाले की पुकार को सुनो और इन स्तुति-वाणियों को स्वीकार करो। हे विश्वब्रह्माण्ड के स्वामिन्! आप हमारी बुद्धियों का, कर्मों का, प्राणशक्तियों का और वाणियों का वर्धन करो। बुद्धियों को तीव्र बनाओ, कर्मों को प्रशस्त—उत्तम बनाओ, प्राणशक्ति को बढ़ाओ और वाणियों को माधुर्ययुक्त बनाओ।

[जरिता वह स्तुतिकर्ता है जो अपनी आयु को स्तोतव्य के गुणों को अपने जीवन में ढालने में ही जीर्ण कर देता है।]

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १२ ३१ २ ३ १ २र १ २ ३२
९१८. मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये। मा नो रीरधतं निदे।।

हे परमैश्र्यशालिन् और प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हमारे जीवन को आगे और आगे ले-चलनेवाले हमारे जीवन-नेतः! आप हमें मानस-पाप करने के लिए पाप के वश में न करें अर्थात् हम पाप करने के लिए विवश न हो जाएँ। आप हमें हिंसा करने के लिए, शारीरिक पाप करने के लिए पाप के वश में न करें और आप हमें निन्दा के लिए अर्थात् वाणी-विषयक पाप के वश में न करें। प्रभो! कृपा करो कि हम शारीरिक, वाचिक और मानसिक पापों से दूर रहें।

सूक्त—१०

ऋषिः–दृढच्युत आगस्त्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३ १२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १२
९१९. पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सकल दोष, दुर्गुण और दुःख नाशक परमेश्वर! आप आत्मिक बल दाता हैं, जीवन में उल्लास और मस्ती देनेवाले भी आप ही हैं। आप जीवन्मुक्तों के लिए, प्राण-साधना करनेवाले योगियों के लिए और जन सामान्य—साधारण मनुष्यों के लिए आनन्दधारा के रूप में प्राप्त होओ, जिससे ये सभी परमानन्द=मोक्ष की प्राप्ति कर सकें।

ऋषिः—दृढच्युत आगस्त्यः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३१ २ ३ १ २ ३२उ ३ २ ३२ १२ ३ १ २
९२०. सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः। पवमानो अदाभ्यः।।

सुखवर्षक और मनोरथपूरक, क्रान्तदर्शी, वेदरूपी काव्य का उपदेष्टा—कवियों का कवि, सर्वप्रिय, आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला, किसी से न दबने और किसी से हिंसित न होनेवाला परमात्मा मुमुक्षुजनों द्वारा उपासित और प्रार्थित होकर उनके पवित्र हृदय में सुशोभित होता है।

ऋषिः—दृढच्युत आगस्त्यः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१२ ३ २ ३ २ २उ ३ १ २ १२ ३ १ २र
९२१. पवमान धिया हितो३ऽभि योनिं कनिक्रदत्। धर्मणा वायुमारुहः।।

हे आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले परमात्मन्! आप ध्यान-धारणाओं द्वारा हृदयगुहा में स्थापित किये जाते हो। आप हृदय-सदन में आसीन होकर निरन्तर कल्याण-प्रवचन करते रहते हैं— ऐसो करो, ऐसा न करो— निरन्तर इस प्रकार विधि-निषेध का उपदेश करते रहते हैं। आप अपनी धारक-पोषक शक्ति द्वारा इस कर्मशील आत्मा को उन्नति-पथ पर आरूढ कीजिए— इसे मोक्ष-मार्ग की ओर प्रेरित कीजिए।

सूक्त—११

ऋषिः—सप्तर्षयः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
९२२. तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३२उ ३ १ २
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधींरति ताँ इहि।।

हे परम रसीले शान्तस्वरूप परमात्मन्! मैं प्रतिदिन आपकी मित्रता में रमण करता हूँ— आनन्दित और मस्त होता हूँ। हे सबका भरण-पोषण करनेवाले देव! काम-क्रोध आदि अनेक वासनाएँ मुझे प्रतिदिन आ घेरती हैं और मुझे दबा लेती हैं, आप उनसे मेरी रक्षा कीजिए। प्रभो! जिन भोग-विलास, आलस्य-प्रमाद, धन-यश आदि के घेरों में हम फँस गये हैं आप हमें उन परिधियों से पार कराइए, हमें घेरनेवाली उन परिधियों को नष्ट कर दीजिए।

ऋषिः—सप्तर्षयः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
९२३. तवाहं नक्तमुत सोम ते दिवा दुहानो बभ्र ऊधनि।
३ १ २र ३ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २
धृणा तपन्तमति सूर्यं परः शकुनाइव पप्तिम।।

सबका भरण-पोषण करनेवाले शान्तस्वरूप परमात्मन्! मैं रात्रि और दिन में—सायं और प्रातः आपके ऊधसृस्वरूप में विद्यमान आनन्दरसरूपी दूध का दोहन करता हूँ—प्रातः सायं सन्ध्योपासना द्वारा आपके विमल

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्दरस का पान करता हूँ। दीप्ति के द्वारा अत्यन्त प्रकाशमान परम सूर्य, प्राणिमात्र के आश्रय आपको मानो मैं उड़कर पहुँच गया हूँ, ठीक उसी प्रकार जैसे पक्षी उड़कर अपने घोंसले में पहुँच जाते हैं।

सूक्त–१२

ऋषिः–बृहन्मतिः। देवता–पवमानः सोमः। छन्दः–गायत्री। स्वरः–षड्जः।

३ १ २३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

९२४. पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः।।

सर्वद्रष्टा और सबका पालन-पोषण करनेवाला शान्तस्वरूप परमेश्वर उपासक के जीवन को पवित्र करता हुआ उसकी काम-क्रोध आदि समस्त पाप-भावनाओं को कुचल डालता है। उपासकजन ध्यान-धारणाओं के द्वारा कामनापूरक परमेश्वर की पूजा करते हैं–उसे अपने हृदय में प्रकट करके अपने जीवनों को अलंकृत करते हैं।

ऋषिः–बृहन्मतिः। देवता–पवमानः सोमः। छन्दः–गायत्री। स्वरः–षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र

९२५. आ योनिमरुणो रुहद् गमदिन्द्रो वृषा सुतम्। ध्रुवे सदसि सीदतु।।

उदय होते हुए सूर्य के समान अत्यन्त दीप्तिमान् परमैश्वर्यशाली परमेश्वर उपासक के हृदय सदन में आ बैठता है–प्रकट हो जाता है। सर्वकामनाओं का पूरक परमेश्वर उपासक के हृदय को विमल बनाकर उसे अपना पुत्र ही बना लेते हैं और उपासक के पवित्र हृदय-मन्दिर में निरन्तर विराजमान रहते हैं।

ऋषिः–बृहन्मतिः। देवता–पवमानः सोमः। छन्दः–गायत्री। स्वरः–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २

९२६. नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणम्।।

हे परम रसीले शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हम भक्तों–उपासकों को स्तुति के योग्य–अत्यन्त प्रशंसनीय, सहस्रों मनुष्यों का भरण-पोषण करनेवाला धन और विद्या, सदाचाररूप धन और मोक्षरूपी महाधन भी सब ओर से शीघ्र ही प्राप्त कराएँ। हम जहाँ कहीं भी जाएँ और जिस स्थान पर भी रहें, हमें ऐसा संग प्राप्त हो कि हमारा ज्ञान और सदाचार निरन्तर बढ़ता ही रहे।

सूक्त–१३

ऋषिः–वसिष्ठः। देवता–इन्द्रः। छन्दः–विराडनुष्टुप्। स्वरः–गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

९२७. पिबा सोममिन्द्र मदन्तु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः। सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा।।

मनुष्यों में व्यापनशील–सब मनुष्यों के हृदयों में विराजमान हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप इस भक्तिरस का पान कीजिए–स्वीकार कीजिए, जिसे आपके स्तोता उपासक ने आपके लिए तैयार किया है–अपने हृदय से चुवाया है। आपके द्वारा पान किया गया, स्वीकार किया गया यह उपासना-रस आपको प्रसन्न करे–आपको हमपर कृपालु बनाए। यह रस रस-निचोड़नेवाले के मन और बुद्धि के द्वारा अत्यन्त नियन्त्रित रक्खा गया है। कैसे नियन्त्रित रक्खा गया है? घोड़े के समान। जैसे सुनियन्त्रित अश्व अश्वारोही को सुख देता है, ऐसे ही मन और बुद्धि के द्वारा सुनियन्त्रित किया हुआ उपासना-रस उपासक के सुख और उत्कर्ष के लिए होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-विराडनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २र

९२८. यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि। स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु।।

(क) हे सबके हृदय में विराजमान प्रभो! मोक्षरूपी महाधनवाले परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जो हर्षदायक और तृप्तिकर उपासना-रस आपके साथ युक्त होने का सुन्दर साधन है, जिस उपासना-रस को स्वीकार करके आप उपासक की काम-क्रोध आदि पाप-वासनाओं को नष्ट कर देते हैं वह उपासना-रस आपको उपासकों के प्रति प्रसन्न करे—आपको उनके प्रति कृपालु बनाए।

(ख) अहर्निश परमात्मा में आत्मा को अर्पित रखनेवाले जीव=उपासक! तुम्हारे जो अत्यन्त सुन्दर, आनन्ददाता उपास्य देव हैं, उसी की कृपा से तुम अपने पापों, दोषों और दुर्बलताओं को दूर करते हो। परमैश्वर्यरूप महाधनवाले, इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! परमेश्वर तुम्हें सदा आनन्दी बनाए।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-विराडनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

९२९. बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्।

३ १ २र ३ १ २

इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व।।

(क) हे परमपूजित धनवाले परमेश्वर! मेरी इस स्तुतिरूप वाणी को सर्वज्ञ होने के कारण आप भली-भाँति जान लीजिए, जिसे [वसिष्ठ=अहर्निश परमेश्वर में बसनेवाला उपासक] बोलता है। प्रभो! उपासना-यज्ञ में मेरे हृदय से निकले हुए प्रणव=ओम्-जप को, वैदिक स्तुतियों को आप प्रेमपूर्वक स्वीकार कीजिए।

(ख) प्रभु जीव से कहते हैं— हे यज्ञमय जीवनवाले जीवात्मन्! तू मेरी इस वेदवाणी को भली-भाँति समझ। यह वाणी वह है, जिस प्रशंसा-परक वाणी का वसिष्ठ=उत्तम जीवन बितानेवाला कोई उपासक तेरे कल्याण के लिए उपदेश करता है। इस वेदवाणी के द्वारा तू अपने हृदय में प्रीतिपूर्वक मुझ ब्रह्म की उपासना कर।

सूक्त—१४

ऋषिः-रेभः काश्यपः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अतिजगती। **स्वरः**-निषादः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

९३०. विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम्।।

उत्तम कोटि के सभी मनुष्य एक साथ मिलकर उत्तम कर्म और संकल्पों में स्थिरता के लिए परमैश्वर्यशाली परमात्मा को अपना कवच बनाते हैं और अपनी आत्मा को सुशोभित करने के लिए हृदय में प्रभु को प्रकट करते हैं। कैसे प्रभु को प्रकट करते हैं? उस प्रभु को जो दुराचारियों के लिए असह्य हैं, काम-क्रोध आदि विकारों को नष्ट करनेवाले हैं, प्रचण्ड शक्तिवाले हैं, अत्यन्त ओजस्वी हैं, जीवों को संसार-सागर से पार उतारनेवाले हैं और महाबलवान् हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–रेभः काश्यपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उपरिष्टाद् बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
९३१. नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरे।
३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः।।

ज्ञानी एवं ऋषिजन सुन्दर गतिवाले–धर्म-मार्ग में प्रवृत्त, किसी से वैर न करनेवाले, द्रुत गति से योग-मार्ग में आगे बढ़नेवाले–तीव्र संवेगी योगी– ये सब सारे ब्रह्माण्ड के नेता, सुखवर्षक, कामनापूरक परमेश्वर का दर्शन पाने के लिए उसे नमस्कार करते हैं–उसके प्रति आत्मसमर्पण करते हैं और उच्च एवं स्नेहमय स्वर से उसकी स्तुति-प्रार्थना करते हैं। कानों से सदा स्तुति-मन्त्रों को सुननेवाले व्यक्ति भी परमात्मा की ओर ही झुकते हैं–उसी की उपासना करते हैं, उसी के गीत गाते हैं।

ऋषिः–रेभः काश्यपः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उपरिष्टाद् बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
९३२. समु रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये।
२र ३ १ २ ३ २ ३१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
स्वःपतिर्यदी वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः।।

स्तुति करनेवाले उपासकजन प्रभु के आध्यात्मिक आनन्दरस का पाने करने के लिए परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की एक साथ मिलकर सम्यक् उपासना करते हैं। इस सोमपान–आनन्दरस-पान से यह उपासक भी सुख का स्वामी बन जाता है–जीवन में सर्वविध सुख से पूर्ण हो जाता है। यह सोमपान जीवन में वृद्धि–शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति के लिए होता है। यह उपासक अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि व्रतों को धारण करनेवाला होता है और व्रतों द्वारा अपनी रक्षा करता हुआ ओजस्वी बन जाता है।

सूक्त–१५

ऋषिः–पुरुहन्मा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
९३३. यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे।।

मैं उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की स्तुति करता हूँ, उसका गुणगान करता हूँ जो सब मनुष्यों का राजा है, शरीररूप रथों द्वारा प्राप्त किया जाता है, जिसकी गति को कोई रोक नहीं सकता, जो सब मनुष्यों को संसार-सागर से पार उतारनेवाला है, पापों=पाप-वासनाओं का निवारक है और समस्त दोषों को नष्ट करनेवाला है। वह सबसे बड़ा है–वह सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व भी वर्तमान था।

ऋषिः–पुरुहन्मा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
९३४. इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्त्तरि।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
हस्तेन वज्रः प्रति धायि दर्शतो महान् देवो न सूर्यः।।

अपने पापों और दोषों को जड़मूल से नष्ट करनेवाले उपासक! तू अपनी रक्षा के लिए असुरों का संहार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करनेवाले परमेश्वर से ही प्रार्थना कर—जिस विश्वब्रह्माण्ड को धारण करनेवाले परमेश्वर में दो प्रकार के गुण हैं—करुणा और दण्ड—श्रेष्ठों पर अनुग्रह करना और दुष्टों को दण्ड देना। उस दर्शनीय और महतोमहीयान् परमेश्वर ने अपने हाथ में न्यायरूपी वज्र धारण किया हुआ है। वह सूर्य के समान प्रकाशमान है। सूर्य अन्धकार को दूर करके ज्योति फैलाता है, परमात्मा भी उपासक की वासनाओं को नष्ट करता है और उन्हें ज्ञान-ज्योति तथा शान्ति प्रदान करता है

सूक्त—१६

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३क २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
९३५. परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतुः।।

सर्वज्ञ, कविक्रतुः = कर्मकुशल कवि (A poet in deed) क्रान्तदर्शी परमेश्वर द्युलोक और पृथिवीलोक में सर्वत्र व्याप्त है। मोक्ष की ओर उड़ान भरनेवाले ज्ञान और कर्मरूपी पंखों से युक्त प्रिय पक्षियो = साधको ! वह परमेश्वर अपने हृदय में उपासना-रस का निष्पादन करनेवाले, उत्साही और कर्मशील मनुष्यों को प्राप्त होता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३२३२३ १२३२३१ २ ३२३१ २३१२
९३६. स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्। महान्मही ऋतावृधा।।

(क) सर्वप्रेरक, अत्यन्त पवित्र—अपापविद्ध, सर्वप्रसिद्ध, सर्वतोमहान्, सर्वोत्पादक वह परमेश्वर सत्य का प्रसारक और ज्ञान को बढ़ानेवाला है। वह उत्पन्न हुए विशाल द्युलोक और पृथिवीलोक को अपने प्रकाश से प्रकाशमान कर रहा है।

(ख) जैसे पवित्र = सदाचारी, सद्गुणों से प्रसिद्ध पुत्र पहले से ही प्रसिद्ध, सत्य और वेदज्ञान के प्रसारक तथा गुणों से महान् अपने माता-पिता को और अधिक चमका देता है, उन्हें अपने व्यवहार से और अधिक यशस्वी बना देता है, वैसे ही महतोमहीयान्, गुणों से प्रसिद्ध परमेश्वर उपासक के शरीर और मस्तिष्क दोनों को चमका देता है—इसका शरीर स्वास्थ्य के सौन्दर्य से और मस्तिष्क बुद्धि की तीव्रता से चमक उठता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२३ १२३ १२ ३१२३ १ २ ३१२ ३क २र ३ १२
९३७. प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहः। वीत्यर्ष पनिष्टये।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! आप भक्तों द्वारा प्रीतिपूर्वक उपासित होकर उन्हें प्राप्त होओ। किसलिए? उपासकों के दुर्गुणों का पूर्ण क्षय करके उन्हें मोक्ष प्राप्त कराने के लिए, छल-छिद्र से रहित स्तुत्य व्यवहारमय जीवन प्रदान करने के लिए, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों का विकास करने के लिए, द्रोह = वैरभावना से ऊपर उठाने के लिए, जीवन में उत्कृष्ट गति देने के लिए और उनकी कीर्ति को बढ़ाने के लिए।

सूक्त—१७

ऋषिः–शक्तिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। **स्वरः**–ऋषभः।

२ १ २३१२ ३१२ ३१२ ३ १२३१२
९३८. त्वं ह्यां३ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः। अमृतत्वाय घोषयन्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्दधारा में प्रबाहित होनेबाले और उपासकों के जीवनों को पवित्र करनेवाले परम प्रिय परमेश्वर! **आप अत्यन्त प्रकाशमान हैं और मुमुक्षुओं को मोक्ष-प्राप्ति के लिए** शम-दम आदि साधनों का वेद द्वारा उपदेश **करते हैं।**

ऋषिः-उरुः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

२ १२ ३ १ २ ३ २उ ३ १२ ३ २
९३९. येन नवग्वा दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्याशत।।

जिस शान्तस्वरूप परमात्मा की कृपा से नवीन ध्यान-अभ्यासी मल, विक्षेप और आवरणरूपी परदे को हटाकर आपका दर्शन कर लेते हैं, जिस परमेश्वर के कृपाकटाक्ष से योगविद्या-सम्पन्न उपासक मोक्ष को प्राप्त करते हैं, अथवा आपका साक्षात्कार करते हैं, जिस प्रभु की कृपा से वे जीवन्मुक्तों के आनन्द में और अविनाशी आपके आनन्द में निवास करते हैं, उसी परमात्मा की कृपा से वे उपासक यश, धन और अन्न आदि प्राप्त करते हैं।

सूक्त—१८

ऋषिः-अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र १ २
९४०. सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति। अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्।।

मनन और निदिध्यासन में आया हुआ शान्तस्वरूप परमेश्वर अपनी आनन्दमयी तरंगों से रक्षा करने और स्वीकार करने योग्य आत्मा को प्राप्त होता है और उसके जीवन को पवित्र बना देता है। वेदवाणियों का मुख्य प्रतिपाद्य परमात्मा उपासकों को पवित्र करता हुआ उन्हें बारम्बार अपने समीप बुलाता है।

ऋषिः-अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
९४१. धीभिर्मृजन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तमत्यविम्। अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन्।।

मेधावी उपासक शरीर-बन्धन से रहित, ज्ञान में रमण करनेवाले, मोक्षरूपी धन को धारण करनेवाले शान्तस्वरूप परमात्मा का धारणा-ध्यान आदि योग-क्रियाओं के द्वारा साक्षात् करते हैं। स्तुति, प्रार्थना और उपासना—तीनों को अपनानेवाले उपासक की ओर सब ज्ञान स्वाभाविक रूप से गमन करते हैं।

ऋषिः-अग्निश्चाक्षुषः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१२ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ ३ १ २र ३ १ २
९४२. असर्जि कलशाँ अभि मीढ्वान्त्सप्तिर्न वाजयुः। पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत्।।

सुखों की वर्षा करनेवाला, उपासकों की घोड़े के समान शक्ति प्रदान करनेवाला शान्तस्वरूप परमेश्वर उपासकों के कल-कल शब्द करनेवाले हृदयों में प्रकट हो गया है। वह उपासकों को पवित्र करता हुआ और उनमें दैवी वाणी को प्रकट करता हुआ आनन्दधारा के रूप में प्रवाहित होता है।

सूक्त—१९

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-प्रतर्दनो दैवोदासिः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-त्रिष्टुप्। स्वरः-धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

९४३. सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र

जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः।।

शान्तस्वरूप परमात्मा आनन्दधारारूप में उपासकों को प्राप्त होता है। वह उपासकों में मतियों=बुद्धियों का उत्पादक है। वह द्युलोक को उत्पन्न करता है। वह पृथिवीलोक को प्रकट करता है। वह अग्नि का उत्पादक है। वह सूर्य का जनयिता है, वह विद्युत् का उत्पादक है और यज्ञकर्मों—परोपकार आदि श्रेष्ठ कर्मों का प्रेरक है।

ऋषिः-प्रतर्दनो दैवोदासिः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-त्रिष्टुप्। स्वरः-धैवतः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

९४४. ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।।

परमेश्वर विद्वानों में ब्रह्मा—ज्ञानवृद्ध, चारों वेदों का ज्ञाता और प्रकाशक है, कवियों में वह सर्वोत्तम कवि है, मेधावीजनों में—वेदज्ञाता ऋषियों में वह परम ऋषि है, आत्म-अन्वेषण करनेवालों का परमपूज्य है, ज्ञान गुणवालों में महान् ज्ञाता, संसाररूपी वृक्ष अथवा पापरूपी जंगलों को काटने में कुल्हाड़े के समान है— ऐसा शान्तस्वरूप परमेश्वर अन्तर्नाद करता हुआ उपासक के पवित्र हृदय में प्राप्त होता है।

ऋषिः-प्रतर्दनो दैवोदासिः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-त्रिष्टुप्। स्वरः-धैवतः।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २

९४५. प्रावीविपद् वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिर स्तोमान् पवमानो मनीषाः।

३ १ २र ३२ ३ १ २ ३ १। २ ३ १ २र १ २

अन्तः पश्यन् वृजनेमावराण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन्।।

जैसे समुद्र अथवा नदी तरंगों को प्रेरित करते हैं, उसी प्रकार आनन्दधारारूप में प्रवाहित होनेवाला और उपासकों को पवित्र करनेवाला परमेश्वर वाचः=ऋग्-रूपी वाणियों को, गिरः=गद्यरूपी यजुर्वेद की वाणियों को, स्तोमान्=स्तुतिरूप सामवेद की वाणियों को और मनीषाः= नैतिक उपदेशों से पूर्ण अथर्ववेद की वाणियों को प्रेरित करता है। सुखों का वर्षक, कामनाओं का पूरक परमेश्वर उपासक की इन्द्रियों में रहनेवाले निकृष्ट पापों को जानता हुआ जीवों के कल्याणार्थ उनके हृदयों में स्थित होता है।

सूक्त—२०

ऋषिः-प्रयोगो भार्गव अग्निर्वा पावको बार्हस्पत्यः, गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वानयतरः।
देवता-अग्निः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ २ १ २ ३ १ २

९४६. अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते।।

हे उपासको ! तुम उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को प्राप्त करने का प्रयत्न करो जो प्रकाशस्वरूप है, हिंसारहित उपासना यज्ञों का अथवा अहिंसा, सत्य आदि सत्कर्मों का रक्षक और बढ़ानेवाला है तथा अत्यन्त कमनीय है। उस परमात्मा को अपने-आपको न गिरने देने के लिए, पाप-पंक में न फँसने के लिए और आत्मबल प्राप्त करने के लिए प्राप्त करो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-पूर्ववत्। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३२३ १ २ ३ २उ ३ १ २
९४७. अयं यथा न आभुवत् त्वष्टा रूपेव तक्ष्या। अस्य क्रत्वा यशस्वतः।।

जैसे एक शिल्पी [बढ़ई] लकड़ी में अनेक प्रकार के रूपों का निर्माण करता है, उसी प्रकार संसार को रचनेवाला परमेश्वर जीवों को और संसार को जैसा चाहे वैसा रूप प्रदान करता है—जीवों के शरीरों और जगत् के पदार्थों को नाना रूपों में घड़ता है। उस प्रकाशस्वरूप, सारे संसार के नेता और सञ्चालक परमात्मा के यथार्थ ज्ञान से हम यशस्वी बनते हैं।

ऋषिः-पूर्ववत्। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ १ २ २उ ३ १ २
९४८. अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते। आ वाजैरुप नो गमत्।।

विद्वानों में—मुमुक्षुओं में जो श्री=शोभा, धन; सौन्दर्य है प्रकाशस्वरूप परमात्मा उनका ईश है—स्वामी है। वह परमेश्वर सब ऐश्वर्यों और शक्तियों के साथ हमें प्राप्त हो।

सूक्त—२१

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
९४९. इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्।
३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! तू निरन्तर योगाभ्यास से हृदय में निष्पन्न प्रभु के आनन्दरस का पान कर। यह आनन्दरस सबसे उत्कृष्ट है। यह अमरता प्रदान करनेवाला और जीवन को उल्लासमय बनानेवाला है। ये निर्मल आनन्दधाराएँ तुझे मोक्ष में पहुँचा देती हैं।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ २३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
९५०. न किष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे।
२ ३ २ २ ३ २ ३ २ ३ २
न किष्ट्वानु मज्मना न किः स्वश्च आनशे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपसे बढ़कर शरीर-रथों का स्वामी और कोई नहीं है, क्योंकि आप ही ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप दोनों प्रकार के इन्द्रियाश्वों को प्रदान करते हैं। बल की दृष्टि से भी आपके समान कोई नहीं है। कोई अत्यन्त वेग से दौड़नेवाला भी आपके साथ नहीं चल सकता, क्योंकि आप सर्वव्यापक हो—सर्वत्र पहले ही पहुँचे हुए हो।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
९५१. इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे मनुष्यो! तुम सब निश्चय से परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की ही अर्चना—उपासना करो और प्रभु के गुणों का वर्णन करनेवाले वैदिक सूक्तों का उच्चारण करो तथा सबके प्रति सदा प्रशंसनीय वचन ही बोलो। हे पुत्रो—उपासको! तुम धर्मशील बनो और सब प्रकार से उस परमेश्वर को प्रसन्न करो—अपने प्रति कृपालु बनाओ जो सबका आदिगुरु और बलस्वरूप है। उसी को नमस्कार करो।

सूक्त—२२

ऋषिः–भृगुः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
९५२. इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिह।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २
पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारुर्मदाय।।

(क) उपासकों के काम-क्रोध आदि शत्रुओं के संहारक, हरि=स्तुति और उपासना के द्वारा उपासकों को प्राप्त होनेवाले हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप हमपर कृपालु बनिए, हमें अपनाइए और हमें जीवन में आगे बढ़ाइए—अपना सान्निध्य प्राप्त कराइए और हमारे हृदय-मन्दिरों में प्रकट हो जाइए। मेधावी उपासकों को आनन्द प्रदान करने की इच्छा करनेवाले परम सुन्दर हे परमेश्वर! आप हमारे द्वारा हृदय में निष्पन्न किये हुए उपासना-रस को स्वीकार कीजिए।

(ख) हे जितेन्द्रिय पुरुष! तू प्रीतिपूर्वक परमेश्वर की उपासना कर, अपने-आपको प्रभु के सान्निध्य में ले-चल। काम-क्रोध आदि शत्रुओं की हिंसा करनेवाला, इन्द्रियरूप घोड़ों को हाँकनेवाला तू प्रभु की ओर चलनेवाला हो। तू हृदय में निष्पन्न हुए प्रभु के आनन्दरस का पान कर। तेरा सारा व्यवहार मेधावी मनुष्य के समान हो। तू माधुर्य की कामनावाला हो और क्रियामय जीवनवाला बनकर तेरा सारा जीवन सुन्दर-ही-सुन्दर हो। ऐसा बनने पर तेरा सारा जीवन उल्लासमय बना रहेगा।

ऋषिः–भृगुः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
९५३. इन्द्र जठरं नव्यं न पृणस्व मधोर्दिवो न।
३ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्य सुतस्य स्वा३र्नोप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप अपने नये उपासक को अपने दर्शनामृत से तृप्त कर दो। जैसे द्युलोक से मधुर जल पिपासुओं को तृप्त करते हैं, ऐसे ही आप इस उपासक की भूखी आत्मा को अपने मधुर आनन्दरस से तृप्त कर दो। आपके इस पुत्र की शोभन वाणी जैसे सन्मार्गगामी सज्जनों तक पहुँचती है, वैसे ही इसकी प्रार्थनारूप शोभन वाणियाँ—उत्तम स्तुतियाँ आपके पास भी पहुँचें, अर्थात् यह सदा आपकी स्तुति करनेवाला हो। इसकी वाणी को सुनकर जैसे सज्जन प्रसन्न होते वैसे ही आप भी प्रसन्न हों—इसके प्रति कृपालु बनें।

ऋषिः–भृगुः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३२उ ३ २
९५४. इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न।
३ १ २ ३ २उ २ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
बिभेद वलं भृगुर्न ससाहे शत्रून् मदे सोमस्य।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर उपासक के अज्ञान को अतिशीघ्र वैसे ही दबा देता है जैसे सूर्य उदय होते ही

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अन्धकार को दबा देता है। वह व्यक्ति संयमी के सदृश पाप-वृत्र का हनन करता है और परिपक्व ध्यानशील योगी के समान वह परमेश्वर उपासक के वलम् = आसुर बलों को छिन्न-भिन्न कर डालता है। वह परमेश्वर उपासक के आनन्दमय जीवन के लिए उसके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का पूर्ण पराभव कर देता है।

तृतीयः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः-अकृष्टा माषाः, सिकतानिवावरी, पृश्नयोऽजास्त्रय ऋषिगणाः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
९५५. गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्यविद्रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः।
२ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित्तं त्वा नर उप गिरेम आसते।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप हमें वेदवाणियों और ज्ञानेन्द्रियों को प्राप्त करानेवाले हैं, आप मोक्षपद और निवास के लिए आवश्यक सब धनों को प्राप्त करानेवाले हैं, आप अमृत, ज्योति, यश और हितरमणीय वस्तुओं को प्राप्त करानेवाले हैं, जीवन-तन्तु को अविच्छिन्न रखने के लिए आप शरीरों में वीर्यशक्ति का और प्राणों का आधान करनेवाले हैं और सब लोक-लोकान्तरों में व्याप्त हैं। हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप जीवों को उत्तम प्रेरणाएँ देनेवाले हैं और आपके आश्रय से उपासक वीर बन जाते हैं। आप सर्वज्ञ हैं। ये मुमुक्षुजन वेदवाणियों द्वारा सर्वप्रसिद्ध आपकी ही उपासना करते हैं। प्रभो! आप हमारे हृदयों में प्रकट हो जाइए और हमारे जीवनों को निर्मल बना दीजिए।

ऋषिः-पूर्ववत्। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
९५६. त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्वयं स्याम भुवनेषु जीवसे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप सर्वत्र विद्यमान नर-नारियों के द्रष्टा हैं, उनपर कृपादृष्टि रखते हैं और उनका पालन-पोषण करते हैं। हे आनन्दधारारूप में प्रवाहित होनेवाले और सबको पवित्र करनेवाले, सुखवर्षक और कामनापूरक परमेश्वर! आप उन सारी प्रजाओं को शुद्ध करनेवाले हैं। वे आप हमारे हृदय में प्रकट हों और हमारे लिए निवास के लिए उपयोगी, ज्योति व तेज से युक्त धन प्राप्त कराओ जिससे हम इन लोकों में उत्तम जीवन बिताने में समर्थ हों।

ऋषिः-पूर्ववत्। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
९५७. ईशान इमा भुवनानि ईयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः।
१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तास्ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप सारे लोक-लोकान्तरों का शासन करते हुए इनमें विचर रहे हैं। आप मन को मोह लेनेवाले मनोहर और जीवों का पालन तथा पूरण करनेवाले पदार्थों को लेकर लोकों में व्याप्त हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आपकी उपासना करनेवाली देवियाँ और पुरुष आपके सुन्दर प्रकाश को—आपकी ज्ञान-ज्योति को और आपके आनन्दरस को सर्वत्र फैलाएँ—सबको बाँटें। हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! सब प्रजाएँ आप द्वारा उपदिष्ट अपने-अपने व्रतों=कर्तव्यकर्मों में स्थित रहें।

सूक्त—२

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९५८. पवमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा असृक्षत। सूर्यस्येव न रश्मयः।।

हे सर्वज्ञ परमेश्वर! आपने ज्ञानपर्वूक याथातथ्य सृष्टि-रचना की है और पवित्र करनेवाले आपकी आनन्दरसमयी धाराएँ सर्वत्र प्रवाहित हो रही हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे सूर्य से किरणें प्रकट होती हैं।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९५९. केतुं कृण्वं दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि। समुद्रः सोम पिन्वसे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप ज्ञान के अथाह सागर हैं, अतएव आनन्दरसमय हैं और अपने उपासकों को आनन्दित करते हैं। आप अपने दिव्य स्वरूप—अपने सामर्थ्य से ज्ञान का प्रकाश करते हुए वस्तुओं के विविध स्वरूपों पर प्रकाश डाल रहे हैं और सब प्राणियों को प्राप्त हो रहे हैं। आप सबका पोषण करते हैं, सबको तृप्त करते हैं और सबको उनके अभीष्ट पदार्थ प्रदान करते हैं।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९६०. जज्ञानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि। क्रन्दन् देवो न सूर्यः।।

उदित होते हुए सूर्य के समान ज्ञानप्रकाश से देदीप्यमान, हृदय-मन्दिर में प्रकट होते हुए आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाले और उपासकों को पवित्र करनेवाले हे परमेश्वर! आप प्रजाओं के पालन-पोषण के लिए अथवा उन्हें कर्तव्य कर्मों और धर्म का ज्ञान देने के लिए शब्दों का उच्चारण करते हुए उनके हृदय में वेदवाणी को प्रेरित करते हो।

सूक्त—३

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९६१. प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः। श्रीणाना अप्सु वृञ्जते।।

धारारूप में प्राप्त होता हुआ परम रसीला शान्तस्वरूप परमात्मा उपासक के हृदय में प्रवाहित होता है फिर आत्मा के साथ संयुक्त होकर प्राणों में अपना आनन्दरस उँड़ेल देता है। इस प्रकार उपासक का हृदय, आत्मा और प्राण—ये सब परमात्मा के आनन्दरस से आप्लावित=सराबोर हो जाते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

९६२. अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः। पुनाना इन्द्रमाशत।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रभु के आनन्दरस से सिक्त—सराबोर हुए इन 'पवमान सोम' उपासकों की ओर वेदवाणियाँ स्वभावतः इस प्रकार प्रवाहित होती हैं, जैसे बहते हुए जल स्वभावतः निम्न मार्ग की ओर गति करते हैं। वेदज्ञान के द्वारा अपने जीवनों को पवित्र करते हुए ये पवित्र एवं शान्त उपासक अन्त में परमैश्वर्यशाली परमात्मा को भी प्राप्त कर लेते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ २ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २र
९६३. प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय मादनः। नृभिर्यतो वि नीयसे।।

धारारूप में प्राप्त होनेवाले हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप उपासकों को आनन्द, तृप्ति और मस्ती प्रदान करते हुए इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव की ओर गति करते हैं अर्थात् जितेन्द्रिय पुरुष को प्राप्त होते हैं। मुमुक्षुजन योग-साधनों—यम-नियम आदि अष्टांग-योग द्वारा आत्म-साधना करते हुए आपको अपने हृदय-मन्दिर में धारण करते हैं, आपका साक्षात्कार करते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
९६४. इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिदीयसे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने।।

हे परम रसीले, आनन्दरसपूर्ण परमात्मन्! स्तुतिकर्ता जनों से उपासित हुए आप वासनाओं से शून्य और कामनाओं से रहित निर्मल हृदय में प्राप्त होते हैं। आप उपासक आत्मा को उसके जीवन के चरम और परम लक्ष्य—मोक्षधाम को प्राप्त कराने में पूर्ण समर्थ हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
९६५. त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीधृतिः। सस्निर्यो अनुमाद्यः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप मनुष्यमात्र को उत्साहित करनेवाले, उन्हें प्रसन्न और तृप्त करनेवाले हैं। आप शुद्धस्वरूप और स्तुति के योग्य हैं। आप जीवों को धारण करनेवाले हैं, अतः आप आनन्दधारारूप में हमारे हृदय में प्रवाहित होओ और हमारे जीवनों को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बना दो।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३१ २र
९६६. पवस्व वृत्रहन्तम उक्थेभिरनुमाद्यः। शुचिः पावको अद्भुतः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप काम-क्रोधादि पाप-वासनाओं को नष्ट करनेवाले हैं, प्रशस्त वचनों द्वारा निरन्तर स्तुति करने योग्य हैं। आप स्वयं पवित्र और उपासकों को पवित्र करनेवाले हैं। आप आश्चर्यरूप हैं— विलक्षण हैं, अद्वितीय और अपूर्व हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १२ ३ २
९६७. शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान्। देवावीरघशंसहा।।

(क) उपासना द्वारा हृदय में साक्षात् किया हुआ शान्तस्वरूप परमात्मा स्वयं शुद्ध और पवित्र है— 'अपापविद्ध' है और उपासकों के जीवनों को पवित्र करनेवाला है, उनके दोषों का शोधन करनेवाला है। वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मधुर रसवाला आनन्दरस चुआनेवाला कहा जाता है। वह मुमुक्षुओं का रक्षक और पाप की प्रशंसा करनेवालों का नाशक है।

(ख) स्वयं पवित्र और दूसरों को पवित्र करनेवाला वह कहलाता है जो शान्तस्वभाववाला होता है, मधुरभाषी और मधुर जीवनवाला होता है, जो प्रगतिशील और यज्ञमय जीवनवाला होता है, दिव्य गुणों से सम्पन्न और पाप की प्रशंसा करनेवालों का संहारक होता है— उनकी पाप-प्रशंसक वृत्ति को छुड़ाकर उन्हें पुण्य-प्रशंसक बना देता है।

सूक्त—४

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३ २ ३१ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
९६८. प्र कविर्देववीतयेऽव्या वारेभिरव्यत। साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः।।

क्रान्तदर्शी—सर्वज्ञ, वेदकाव्य का निर्माता और उपदेष्टा परमेश्वर मुमुक्षु उपासकों को पार्थिव शरीर—भौतिक देह के वरणीय अंगों—मन, श्रोत्र, नेत्र, वाणी आदि द्वारा मनन, श्रवण, दर्शन, स्तवन कराके दिव्य गुणों और मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। वह परमेश्वर उपासकों से स्पर्धा करनेवाली सब दुर्भावनाओं और काम-क्रोधादि वासनाओं को दबाकर उन्हें पराभूत करने में समर्थ बना देता है।

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २र ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
९६९. स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति। पवमानः सहस्रिणम्।।

आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाला परमात्मा ही स्तुति करनेवाले उपासकों के लिए ज्ञानरूप धन—विद्या-धन प्राप्त कराता है और सहस्रों प्रकार के धन तथा शक्तियाँ भी प्रदान करता है। स्म=वह अतीत काल में भी भक्तों को यह सब-कुछ प्राप्त कराता रहा है, अभी भी कराता है, भविष्य में भी कराता रहेगा।

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
९७०. परि विश्वानि चेतसा मृज्यते पवसे मती। स नः सोम श्रवो विदः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अपने कृपाकटाक्ष से अपने भक्तों के योग-क्षेम—जीवन-निर्वाह के लिए सब आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करते हैं और ज्ञानदान से उन्हें पवित्र कर देते हैं। आप ही अपने उपासकों को यश प्राप्त कराते हैं।

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३क २र ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ १ २
९७१. अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिं। इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप सत्य, सदाचार आदि आध्यात्मिक विभूतियों से सम्पन्न स्तोताओं के लिए महान् यश और अविनाशी ज्ञान अथवा मोक्षरूपी धन प्राप्त कराइए और उनकी शुभ इच्छाओं तथा कामनाओं को पूर्ण कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
९७२. त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमाविवेशिथ। पुनानो वह्ने अद्भुत।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप राजा के समान उत्तम, सत्य-संकल्प और शोभन कर्म करनेवाले हैं-जैसे राजा प्रजा का हित-चिन्तन और पालन करता हैं, ऐसे ही आप भी करते हैं। आप उपासना करनेवालों में प्रविष्ट होते हैं- उपासकों के हृदय में आपका साक्षात्कार होता है। हे कल्याणमार्ग की ओर ले-चलनेवाले और आश्चर्यरूप परमेश्वर! आप उपासकों के जीवनों को पवित्र एवं निर्मल बना दीजिए।

ऋषिः-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
९७३. स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः। सोमश्चमूषु सीदति।।

कल्याण-मार्ग पर ले-चलकर मोक्ष-मार्ग तक ले-जानेवाला वह प्रभु संसार-सागर में निमग्न जीवों से अप्राप्य है-संसार के भोग-विलासों में फँसे व्यक्ति उस प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकते। वह परमेश्वर मन और बुद्धि की प्रकाशमयी किरणों से ढूँढे जाते हैं। वह शान्तस्वरूप परमात्मा शुभ विचारों का सेवन करनेवाले पवित्र अन्तःकरण-मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार में बैठ जाता है अर्थात् शुभ मन से उसका मनन, बुद्धि से विवेचन, चित्त से स्मरण और अहंकार से उसका भान होता रहता है।

ऋषिः-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
९७४. क्रीडुर्मखो न मंहयुः पवित्रं सोम गच्छसि। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप क्रीड़ा करनेवाले हैं- यह सारा ब्रह्माण्ड आपकी ही तो लीला है-सृष्टि-उत्पत्ति, स्थिति और संहाररूपी क्रीड़ाओं को आप नित्य कर रहे हैं। आप यज्ञ के समान हैं, यज्ञरूप ही हैं, अत्यन्त पूजनीय हैं। आप उपासकों को स्वास्थ्य, नीरोगता और सब आवश्यक वस्तुएँ- अन्न, धन आदि प्रदान करते हैं। आप पवित्र हृदयवाले उपासकों को प्राप्त होते हैं और स्तोताओं को उत्तम सामर्थ्य, शोभन विद्या, बुद्धि, बल आदि प्रदान करते हैं।

सूक्त-५

ऋषिः-अवत्सारः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ १ २ ३ १ २
९७५. यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव। विश्वा च सोम सौभगा।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अज्ञान-अन्धकार को नष्ट करनेवाले अपने स्वभाव को, पाप और द्वेष-भावनाओं को हमसे पृथक् करनेवाले तथा सद्गुणों का पोषण करनेवाले अपने आनन्दस्वरूप को हमारे हृदय में उँडेल दीजिए और सारे सौभाग्यकारक गुणों- ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य को हमें प्राप्त कराइए।

ऋषिः-अवत्सारः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २ ३ १ २
९७६. इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः। नि बर्हिषि प्रिये सदः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परम रसीले परमात्मन्!आप सबके अन्न हैं– सबके द्वारा ध्यान, मनन और चिन्तन करने योग्य हैं। आपके ध्यान से ही सबके अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) पुष्ट होते हैं, इसलिए सब आपका ही स्तवन करते हैं। आप वासनाओं से शून्य हमारे निर्मल हृदय-मन्दिर में निरन्तर विराजमान रहिए।

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
९७७. उत नो गोविदश्ववित् पवस्व सोमान्धसा। मक्षूतमेभिरहभिः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमारी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की गतिविधियों को जाननेवाले हैं, अतः हमारे अज्ञान-अन्धकार को दूर करने के लिए आप आनन्दधारारूप में प्रवाहित होते हुए हमें पवित्र कर दीजिए। हे प्रभो! शीघ्र कृपा कीजिए, शीघ्र आइए, क्योंकि जीवन के दिन अत्यन्त शीघ्रता से बीते जा रहे हैं।

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
९७८. यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभित्य। स पवस्व सहस्रजित्।।

वह परमेश्वर सबको अभिभूत करता है–सबपर विजय प्राप्त करता है, परन्तु उसे कोई अभिभूत नहीं कर सकता–वह किसी से नहीं जीता जा सकता। वह उपासक के काम-क्रोध आदि शत्रुओं को और अकारण हानि पहुँचानेवाले मनुष्यों को मार डालता है। वह सर्वजित्, आनन्दधारा में प्रवाहित होता हुआ हमें प्राप्त हो और हमारे जीवनों को पवित्र कर दे।

सूक्त–६

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३१२ १ २ ३ २ ३ १ २
९७९. यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये। ताभि पवित्रमासदः।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आपकी जो माधुर्य के प्रवाहवाली आनन्दधाराएँ हमारी रक्षा के लिए प्रवाहित हो रही हैं, अपनी उन आनन्दधाराओं के साथ आप भी हमारे वासनाओं से शून्य पवित्र हृदय में आ विराजिए।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ १ ३ २ ३१२ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
९८०. सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो वाराण्यव्यया। सीदन्नृतस्य योनिमा।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अविनाशी और दान, दया, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य आदि गुणों के कारण वरणीय, इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव के हृदय-मन्दिर में आनन्दधारारूप में प्रवाहित हो जाइए। किस लिए? उपासकों को मोक्षपद प्रदान करने के लिए, उनकी सभी-कामनाओं को पूर्ण करने के लिए। आप उपासक के सत्य से परिपूर्ण हृदय-सदन में अवश्य आ विराजिए।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
९८१. त्वं सोम परि स्रव स्वादिष्ठो अंगिरोभ्यः। वरिवोविद् घृतं पयः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अत्यन्त स्वादु रसवाले हैं–परम रसीले हैं और प्राणविद्या के साधकों के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लिए–प्राणायाम के अभ्यासियों के लिए आध्यात्मिक सम्पत्तियाँ– ज्ञान आदि धनों के दाता हैं। आप अपने भक्तों के लिए ज्ञान-प्रकाश का और आनन्दरस का प्रवाह निरन्तर प्रवाहित रखिए।

सूक्त –७

ऋषिः–अरुणो वैतहव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

२ ३ १ २ ३क २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
९८२. तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतोऽग्नेश्चिकित्र उषसामिवेतयः।
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३१ २र ३ १ २
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमासनि।।

जब परमेश्वर प्रलय का संकल्प करके संसार की सब ओषधियों को, जलों को, नाना प्रकार के अन्नों को स्वेच्छा से अपने मुख में समेट लेता है, उस समय प्रकाशमय परमेश्वर की शोभाएँ ऐसे प्रकट होती हैं जैसे वर्षाकालीन मेघ के अन्धकार में बिजलियाँ और रात्रि के अन्धकार में उषाओं के प्रकाश मनोहर प्रतीत होते हैं।

ऋषिः–अरुणो वैतहव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १२
९८३. वातोपजूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद्वितिष्ठसे।
१ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २ १ १२ ३ १२
आ ते यतन्ते रथ्यो३यथा पृथक् शर्द्धांस्यग्ने अजरस्य धक्षतः।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! मनों से चाहे हुए, स्तुति-वाणियों से प्रार्थना किये हुए आप जब संयमी उपासकों की सांसारिक भोग-सामग्री के प्रति रुचि का शीघ्र निराकरण करके उनके हृदय-मन्दिरों में प्रतिष्ठित हो जाते हैं, तब उन लौकिक भोग्य पदार्थों के प्रति भक्तों की आसक्ति को जलानेवाला–दूर करनेवाला आपका वह अविनाशी बल अथवा भक्तों के प्रति आर्द्रभाव विलक्षण ही प्रतीत होता है, ठीक उसी प्रकार जैसे रथ के खेंचनेवाले घोड़े जड़ रथ की अपेक्षा विलक्षण दिखाई पड़ते हैं।

ऋषिः–अरुणो वैतहव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १
९८४. मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारं परिभूतरं मतिम्।
१ २र ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १
त्वामर्भस्य हविषः समानमित् त्वां महो वृणते नान्यं त्वत्।।

हे ज्ञान-प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! सृष्टि-उत्पत्ति के समय वेदों के प्रकाश द्वारा ज्ञान देनेवाले, उपासना-यज्ञों को सिद्ध, सफल, पूर्ण करनेवाले, दानशील, काम-क्रोध आदि शत्रुओं का पराभव करनेवाले, सर्वज्ञ, थोड़ी-सी हाव-भावभरी भेंट को अथवा बहुत बड़ी भेंट को समानरूप से स्वीकार करनेवाले आपका हम उपासक वरण करते हैं। हम आपका ही वरण करते हैं, आपसे भिन्न अन्य किसी को नहीं वरते।

सूक्त –८

ऋषिः–उरुचक्रिरात्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
९८५. पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण । मित्र वंसि वां सुमतिम्।।

हे भक्तों द्वारा वरणीय और भक्तों का वरण करनेवाले, परम स्नेही परमेश्वर! आप अपने इन दोनों रूपों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

से अपने भक्तजनों का अतिशय रक्षण करते हैं– यह बात सर्वप्रसिद्ध है और सत्य ही है। मैं आपकी शोभनमति–अनुग्रह चाहता हूँ। आपकी कृपादृष्टि हो जाएगी तो रक्षण भी हो ही जाएगा।

ऋषिः–उरुचक्रिरात्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २
९८६. ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च। वयं वां मित्रा स्याम।।

हे मित्र और वरुणरूप परमेश्वर! आप संसार में किसी से भी द्रोह=वैर-विरोध नहीं करते, अतः हम सर्वप्रसिद्ध आपसे प्रार्थना करते हैं कि आपके अनुग्रह से हम अपने अभीष्ट मनोरथ को औरं मोक्षधाम को सम्यक् प्रकार से प्राप्त करें और हम आपके श्रद्धालु मित्र बनें।

ऋषिः–उरुचक्रिरात्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२
९८७. पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा। साह्याम दस्यून् तनूभिः।।

हे मित्र औरं वरुण–परम स्नेही और भक्तों को वरनेवाले परमेश्वर! आप अपने रक्षासाधनों से हमारी रक्षा करो, हमें दोषों और दुःखों से बचाओ। उत्तम रूप से त्राण करनेवाले आपके ये दोनों रूप हमारा रक्षण करें। हे प्रभो! आपकी कृपा से हम आपके द्वारा उपदिष्ट नीतियों से काम-क्रोधादि आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं का पराभव करने में समर्थ हों।

सूक्त-९

ऋषिः–कुरुसुतिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २र १ २ ३ २ ३ २
९८८. उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वा शिप्रे अवेपयः। सोममिन्द्र चमूसुतम्।।

इन्द्रियों के अधिष्ठाता, योगैश्वर्य-सम्पन्न हे जीवात्मन्! तू हृदयरूपी भूमि और मस्तिष्करूप द्युलोक में अभ्यास और वैराग्य द्वारा निष्पादित उपासना-रस का पान करके और ओज से सम्पन्न होकर काम-क्रोध आदि शत्रुओं के मुक़ाबिले में खड़ा होता हुआ उनके जबड़ों को कम्पित कर दे, उनकी बत्तीसी बाहर निकाल दे, अर्थात् उन्हें समूल नष्ट कर दे–उन्हें पूर्णतया पराजित कर दे।

ऋषिः–कुरुसुतिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३ १२ ३ १ २र २ ३ १२ ३ १२
९८९. अनु त्वा रोदसी उभे स्पर्धमानमददेताम्। इन्द्र यद्दस्युहाभवः।।

इन्द्रियों के अधिष्ठाता, योगैश्वर्य-सम्पन्न हे जीवात्मन्! जब तू जीवन को नष्ट करनेवाले काम-क्रोध आदि दस्युओं का नाशक बन जाता है, तब काम-क्रोध आदि दस्युओं के साथ स्पर्धा–संघर्ष करके उन्हें पराजित करनेवाले तेरा अवलोकन करके–तेरी शक्तियों को देखकर द्युलोक और भूलोक-निवासी–सभी जन तेरा मान और सम्मान करते हैं।

ऋषिः–कुरुसुतिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२ २ ३ १ २ ३क २र
९९०. वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतावृधम्। इन्द्रात् परितन्वं ममे।।

इन्द्रियों के अधिष्ठाता, योगैश्वर्य-सम्पन्न हे जीवात्मन्! काम-क्रोध आदि शत्रुओं का पराभव करके तू

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यह उद्घोषित कर कि "मैंने आठों दिशाओं में व्याप्त होनेवाली, प्रभु-स्तवन का सृजन करनेवाली अथवा अभिनव या नवीन-नवीन अलंकारों से युक्त, सत्य का वर्धन करनेवाली, अतिसूक्ष्म—जिसमें सब सत्यविद्याएँ बीजरूप में निहित हैं, ऐसी वेदवाणी को परमैश्वर्यशाली परमेश्वर से प्राप्त किया है।"

सूक्त—१०

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**—इन्द्राग्नी। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ १ २र १ २ ३ १
९९१. इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत। पिबतं शम्भुवा सुतम्।।

हे परमैश्वर्यशालिन् और प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! सब स्तुतिकर्ता इन्द्र और अग्निरूप आपकी ही स्तुति=गुणगान करते हैं। आपके ये दोनों रूप शान्ति प्रदान करनेवाले हैं। स्तुतिकर्ताओं द्वारा हृदय-सदन में निष्पन्न किया गया उपासना-रस आपके दोनों रूपों के प्रति भेंट है। आप इसका पान कीजिए— इसे स्वीकार कीजिए।

[परमात्मा रसमय है, पूर्ण तृप्त है, आप्तकाम है। वह न रसपान करता है, न रसपान से उसे कोई लाभ ही है, तथापि जैसे पिता अपने पुत्र को अपनी आज्ञा में स्थित देखकर प्रसन्न होता है, उसी प्रकार परमेश्वर भी अपने जीवरूपी पुत्रों को स्वाज्ञा में स्थिर देखकर प्रसन्न होता है— उनपर कृपालु होता है, यही उसका रसपान है।]

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**—इन्द्राग्नी। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
९९२. या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा। इन्द्राग्नी ताभिरा गतम्।।

मनुष्यों को उन्नति-पथ पर ले-जानेवाले हे परमैश्वर्यशाली और ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आपके ये दोनों स्वरूप अत्यन्त स्पृहणीय—चाहने योग्य हैं। आपकी जो सहस्रों धारण करने योग्य अध्यात्म सम्पदाएँ और ज्ञानप्रकाश-धाराएँ हैं, उन सबके साथ आप आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक के हृदय-मन्दिर में आइए—प्रकट हो जाइए।

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**—इन्द्राग्नी। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ १ २ ३ १ २
९९३. ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये।।

मनुष्यों को उन्नति-पथ पर ले-चलनेवाले हे परमैश्वर्यशाली और ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आप हृदय-मन्दिर में निष्पादित किये गये उपासना-रस का पान करने के लिए— इसे स्वीकार करने के लिए अपनी सम्पूर्ण आध्यात्मिक सम्पदाओं और ज्ञानप्रकाश-धाराओं के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में आइए— अपने दर्शन दीजिए।

सूक्त—११

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ २
९९४. अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन्योनौ वनेष्वा।।

(क) आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अत्यन्त दीप्तिमान् हैं। आप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आचरण करने योग्य उत्तम, गुण-कर्म और स्वभावों के निमित्त उपदेश करने के लिए मस्तिष्क के अवकाशों में प्राप्त होओ और हृदय-सदन में विराजमान होओ।

(ख) हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप अत्यन्त द्युतिमान् हैं—कान्ति-सम्पन्न हैं। आप वनों में अथवा जलों के समीप उपासनारत उपासकों के पञ्चकोशों को भक्ति की तरंगों से तरंगित करते हुए उनके हृदय-मन्दिर में आइए और निरन्तर वहाँ विराजमान हो जाइए।

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
९९५. अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भयः। सोमा अर्षन्तु विष्णवे।।

(क) तेजस्विता के कारण दर्शनीय, शान्त एवं सौम्य उपासक परमैश्वर्य-सम्पन्न तथा प्रकाशस्वरूपवाले, प्राणाधार, वरण करने योग्य तथा पाप-निवारक, उपासकों के मनोरथों को पूर्ण करनेवाले, सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी परमेश्वर को प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

(ख) परम मनोहर और शान्तस्वरूप परमात्मा आत्मा के लिए, मन के लिए, प्राण के लिए, ओज के लिए और श्रोत्र के लिए प्राप्त हो अर्थात् इन सब में शान्ति का प्रवाह प्रवाहित हो जाए।

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
९९६. इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! सहस्रों प्रकार के ऐश्वर्यों को धारण कराते हुए आप हमारी सन्तानों के लिए और हम उपासकों के लिए सब ओर से, सब प्रकार से हमारे अभीष्ट मोक्षपद को प्राप्त कराइए।

सूक्त–१२

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
९९७. सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया।।

शान्तस्वरूप परमात्मा उपासना-यज्ञ करनेवाले उपासकों द्वारा चित्त का रक्षण करनेवाली योगभूमियों के प्रवाहों द्वारा हृदय-मन्दिर में साक्षात् किया जाता है। वह परमेश्वर मनोहर, स्थिर और प्रसन्नता—आनन्द प्रदान करनेवाली धारा के साथ सदाचार-सम्पन्न ज्ञानी मनुष्यों को प्राप्त होता है।

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
९९८. अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
समुद्रं न संवरणान्यग्मन् मन्दी मदाय तोशते।।

विद्वान् एवं शान्त उपासक प्रार्थना-वचनों से जब सबपर कृपा करनेवाले परमात्मा में एकाग्र हो जाता है और उपासना की सारभूत पवित्र वृत्तियों से परमात्मा में ही निवास करने लग जाता है, तब जैसे जल सञ्चित होकर तथा समुद्र में मिलकर समुद्ररूप हो जाते हैं, वैसे ही प्रभु में निवास करनेवाला उपासक आनन्दी बनकर प्रभु के आनन्द का अनुभव करने के लिए काम-क्रोध आदि वासनाओं को नष्ट कर देता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–१३

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३क २र ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २र
९९९. यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु। तन्नः पुनान आ भर।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! जो चयनीय=जीवन या अन्तरात्मा में धारण करनेयोग्य, अत्यन्त प्रशंसनीय, लौकिक और मोक्षरूपी दिव्य धन है, उसे हमारे जीवनों को पवित्र करते हुए हमें प्राप्त कराइए।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २उ ३ १ २
१०००. वृषा पुनान आयूँषि स्तनयन्नधि बर्हिषि। हरिः सन्योनिमासदः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप सुखों के वर्षक और कामनाओं के पूरक हैं। आप हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाले हैं, हमारे वासनाओं से शून्य हृदयों में उत्तेजना, कर्मसंकल्प और उत्साह भरनेवाले हैं। आप पापों और दोषों को दूर करनेवाले हैं—ऐसे आप हमारे हृदय-मन्दिर में आ विराजो।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१००१. युवं हि स्थः स्वः पती इन्द्रश्च सोम गोपती। ईशाना पिप्यतं धियः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आपका सोम=सौम्य और परमैश्वर्यशालीरूप—ये दोनों ही स्वरूप सुख के अगाध भण्डार हैं। जीवन सचमुच स्वर्ग बन जाता है यदि मनुष्य शान्तस्वभाववाला हो और जीवन में प्रभु-स्मरण भी हो। आप वेदवाणियों के स्वामी हैं, मैं भी वेदों का विद्वान् बनूँ। आप परम समर्थ हैं, अतः हमारे ज्ञान और सत्कर्मों का विस्तार करो—हमारा ज्ञान बढ़े और हम सदा सत्कर्म ही करें।

सूक्त–१४

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
१००२. इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः।
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्।।

जीवन में आगे बढ़ने, उन्नति करनेवाले नर-नारियों द्वारा पाप-वृत्रों का नाशक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर आनन्द-प्राप्ति और आत्मबल-वर्धन के लिए उपासना द्वारा स्वात्मा में प्रदीप्त किया जाता है—साक्षात् किया जाता है। हम अपनी रक्षा के लिए काम-क्रोध आदि शत्रुओं के साथ होनेवाले बड़े-बड़े संग्रामों में और वासनाओं के साथ होनेवाले छोटे-मोटे संग्रामों में उस सर्वप्रसिद्ध और सर्वरक्षक परमात्मा को पुकारते हैं। वह परमेश्वर सभी प्रकार के संग्रामों में हमारी रक्षा करे।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ २उ १ २ ३ २
१००३. असि हि वीर सेन्योऽभूरि परादढिः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कम्पित करनेवाले हे परमेश्वर! आप अकेले ही काम-क्रोध आदि की विरोधी सेना को विजय करने में समर्थ हैं। श्रेष्ठजनों के लिए आप बहुत अधिक देनेवाले हैं। छोटे उपासकों को अथवा निर्बल को बढ़ानेवाले भी आप ही हैं। उपासना-रस निष्पन्न करनेवाले उपासकों के लिए अपना बहुत-सा धन देते हो और आपका जो सर्वोत्कृष्ट धन—मोक्षपद है, उसे भी दे देते हो।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-पंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१००४. यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
युंक्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः।।

जब उपासक के मन में देवासुर-संग्राम उठ खड़े होते हैं, तब हे परमेश्वर! आप असुरों का पराभव करनेवाले स्थिरचित्त उपासक के लिए ज्ञानरूपी धन प्रदान करते हैं। हे प्रभो! आप अहंकाररूपी मद को च्युत करनेवाले अपने दया और प्रसादरूपी धर्मों को मुझ उपासक में युक्त कीजिए। हे देव! आप नास्तिकों, असुरों को नष्ट कर देते हो और आस्तिकों, देवों को अपनी शरण में ले-लेते हो। हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप हमें अपनी शरण में ही स्थापित कीजिए।

सूक्त—१५

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-पंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३ ३क २र
१००५. स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः।
१ २र ३ १२ ३२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३१२ ३ १ २
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम्।।

यह सत्य है कि विषय-वासनाओं से पृथक् होकर निर्मल बनी हुई मेरी समस्त इन्द्रियाँ सांसारिक स्वादों से विलक्षण परमात्मा के अत्यन्त मधुर और स्वादु आनन्दरस का पान करती हैं। पान वही इन्द्रियाँ करती हैं जो सुखवर्षक और कामनापूरक परमेश्वर के साथ विचरती हैं—परमेश्वर में ही निवास करती है और सदा तृप्त रहती हैं। हे उपासक! तू आत्मिक राज्य को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर उसे प्राप्त करने का प्रयत्न कर और शोभा को प्राप्त हो—आत्मदीप्ति से चमक।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-पंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१००६. ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः।
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१२ ३ १ २
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम्।

उपासक की निर्मल बनी हुई इन्द्रियाँ ज्ञान-ज्योति से युक्त होकर अब केवल परमेश्वर की ही कामना करती हैं। जितेन्द्रिय पुरुष को प्रसन्न करनेवाली और ज्ञानरूपी दुग्ध का पान करानेवाली ये उपासक के उपासना-रस का परिपाक कर देती हैं। ये काम-क्रोध आदि वासनाओं का अन्त कर देनेवाला ज्ञान-वज्र प्रदान करती हैं। हे उपासक! तू आत्मिक राज्य को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर उसे प्राप्त करने का प्रयत्न कर और परमात्मा के अन्दर बस जा—परमात्मा को अपना आश्रय-स्थान बना ले।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१००७. ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम्।।

उपासक जीवात्मा की निर्मल बनी हुई इन्द्रियाँ ज्ञान-सम्पन्न बनकर नम्रभाव से परमात्मा की, शत्रुओं का पराभव करनेवाली, शक्ति का स्तवन= करती हैं। ये निर्मल इन्द्रियाँ पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति के लिए इस उपासक के नाना प्रकार के व्रतों—श्रेष्ठ कर्मों को प्रगति देती हैं। हे उपासक ! तू आत्मिक राज्य को जीवन का लक्ष्य बनाकर उसे प्राप्त करने का प्रयत्न कर और परमात्मा में बस जा, उसमें रम जा, उसे अपना आश्रय बना ले।

सूक्त—१६

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**– गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ २उ ३ १ २
१००८. असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः। श्येनो न योनिमासदत्।।

उपासक को आनन्द प्रदान करने के लिए एक अध्यात्म-ज्योति प्रकट हो गई है। यह ज्योति उपासक के प्राणों में बल और उत्साहप्रदान करती है। इस ज्योति से यह समस्त इन्द्रियों पर विजय पाकर उनका अधिष्ठाता बन जाता है और जैसे प्रशंसनीय गतिवाला बाज़ पक्षी अपने घोंसले में जा बैठता है, वैसे ही यह उपासक परम माता परमेश्वर की अमृतमयी गोद में जा बैठता है।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**– गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ १ २ ३ २ ३ १ २
१००९. शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धौतं नृभिः सुतम्। स्वदन्ति गावः पयोभिः।।

मुमुक्षुजनों द्वारा हृदय-मन्दिर में निष्पादित—साक्षात् करने योग्य, अत्यन्त प्रकाशमान् आध्यायनीय= ध्यान और चिन्तन-मनन करने योग्य, विद्वान् उपासकों से प्राप्त होने योग्य और उपासकों के जीवनों में दिव्य गुणों को प्रेरित करनेवाले, प्रत्येक शुभकर्म में स्मरण करने योग्य शान्तस्वरूप परमात्मा के आनन्दरस का उपासकजन आन्तरिक साधनों—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से आस्वादन करते हैं।

ऋषिः–जमदग्निः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**– गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१०१०. आदीमश्वं न हेतारमशूशुभन्नमृताय। मधो रसं सधमादे।।

जहाँ परमात्मा के साथ निवास करके आनन्द अनुभव किया जाता है, उस हृदय-प्रदेश में उपासकजन निश्चय ही शान्तस्वरूप परमात्मा के आनन्दरस का पान करते हैं, उस आनन्दरस का जो सबको प्रिय है और सबको अपनी ओर आकर्षित करनेवाला है।

सूक्त—१७

ऋषिः–ऊर्ध्वसद्मा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। **स्वरः**–ऋषभः।

३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २
१०११. अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्। वि कोशं मध्यमं युव।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे कामनापूरक परमात्मन्! आप आपकी ओर चलनेवाले उपासक को मोक्षैश्वर्य प्रदान कीजिए, उसे संसार में यशस्वी बनाइए और उसके मनोमयकोश को खोल दीजिए—हृदय के बन्द कपाटों को उद्घाटित कर दीजिए।

ऋषिः-कृतयशाः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३क २र ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
१०१२. आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः।
३ २ ३ १ २ २ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन् गविष्टये धियः।।

हे श्रेष्ठ बलवाले शान्तस्वरूप परमात्मन्! अभ्यास और वैराग्य द्वारा मन और बुद्धि में प्राप्त हुए आप हमें उपासना-मार्ग का प्रवचन कीजिए। प्रजाओं की रक्षा का भार वहन करनेवाले प्रजारक्षक राजा के समान आप प्रजाओं के रक्षक हैं। जीवों के कल्याण के लिए उनपर अपने आनन्दामृत की वृष्टि कीजिए। सबको प्रसन्नता प्रदान करनेवाले परमात्मन्! जो आपका ध्यान करते हैं और विद्या-विज्ञान चाहते हैं, ऐसे जीवों को आप मोक्ष प्राप्त कराइए।

सूक्त—१८

ऋषिः-त्रितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३ १ २उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१०१३. प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्। विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता।।

स्तुतियों के द्वारा प्रशंसनीय, शिशु के समान शान्तस्वरूप परमात्मा अमृतरूप मोक्ष की दीप्ति को—प्रकाश को उपासकों में प्रेरित करता है। वह परमेश्वर प्रिय और अप्रिय, चेतन और जड़—सबपर स्वामित्व करता है अथवा कर्मफलरूप सुखों और दुःखों पर अधिकार किये हुए है, अतः उसकी स्तुति करनी चाहिए।

ऋषिः-त्रितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
१०१४. उप त्रितस्य पाष्यो३रभक्त यद् गुहा पदम्। यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम्।।

प्राप्त करनेयोग्य जो शान्तस्वरूप परमात्मा हृदयरूप गुहा में छिपा हुआ है, वह काम, क्रोध और लोभ—इन तीनों को तैर जानेवाले अथवा दया, दान और दम=संयम का विस्तार करनेवाले अथवा अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्य—इन तीनों पर प्रभुत्व प्राप्त करनेवाले जीवविशेष के मन और बुद्धि में प्राप्त होता है। प्राप्त करने योग्य वह परमेश्वर सबका प्रिय है और उपासना-यज्ञ के सातों तेजों या तत्त्वों से घिरा रहता है, अर्थात् इनको जीवन में अपनानेवाला उपासक ही उस प्रभु को प्राप्त करता है।

[उपासना-यज्ञ के सात तत्त्व हैं—विषयविरक्ति, नम्रता, समता, क्षमा, दया, उदारता और धैर्य।]

ऋषिः-त्रितः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१०१५. त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद्रयिम्। मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! काम, क्रोध और लोभ को तैर जानेवाले अथवा दया, दान और दम का विस्तार करनेवाले अथवा अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्य— इन तीनों पर प्रभुत्व करनेवाले मुझ भक्त की इन्द्रियों, मन और बुद्धि तीनों—की आप रक्षा कीजिए। मेरी इन्द्रियों में संयम-बल का आधान कीजिए। मेरे मन को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

निर्मल बनाइए और बुद्धि को तीव्र कीजिए। प्रभो ! आप धन तो उन्हें ही प्रदान कीजिए जो सर्वविध दीन-हीन हैं– पिछड़े हुए हैं। उत्तम बुद्धि और संकल्पोंवाला मैं तो आपके साथ मेल करानेवाले, आपको प्राप्त करानेवाले साधनों की याचना करता हूँ।

सूक्त—१९

ऋषिः–रेभसूनू काश्यपौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

१०१६. पवस्व वाजसातये पवित्रे धारया सुतः। इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तरः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! आप काम-क्रोध आदि वासनाओं के साथ संग्राम में विजय प्राप्त कराने के लिए हमें प्राप्त होओ। आप हमारे वासना-शून्य निर्मल हृदय में ध्यान-धारणाओं द्वारा प्रकट होओ। हे प्रभो ! आप आत्मा के लिए, व्यापनशील मन के लिए और सभी इन्द्रियों के लिए अत्यन्त मधुमय होते हो—आप इन्हें अत्यन्त मधुर बना देते हो।

ऋषिः–रेभसूनू काश्यपौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

१०१७. त्वां रिहन्ति धीतयो हरिं पवित्रे अद्रुहः। वत्सं जातं न मातरः पवमान विधर्मणि।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाले हे परमेश्वर ! किसी से द्रोह न करनेवाले ध्यानशील उपासक, दुःखों को हरनेवाले और सुख प्रदान करनेवाले आपकी, वासनाओं से शून्य निर्मल हृदय में पूजा करते है—आपके दर्शन का रसास्वादन करते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे उत्पन्न हुए बच्चे को देखकर माताएँ आनन्दित होती है। ये उपासक प्रभु-अर्चन इसलिए करते हैं कि ये विशिष्ट रूप से अपना धारण कर सकें।

[परमेश्वर की सच्ची पूजा अक्षत, धूप, दीप और नैवेद्य से नहीं होती उसकी, सच्ची पूजा तो पवित्र अन्तःकरण से, परोपकार करने तथा अहिंसा, सत्य आदि के पालन करने से होती है।]

ऋषिः–रेभसूनू काश्यपौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २र ३ १ २र

१०१८. त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे।

१ २ ३ १२ ३ १२ ३ २

प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना।।

महान् एवं प्रशंसनीय कर्मों को करनेवाले प्रभो ! आप द्युलोक और पृथिवीलोक का अत्युत्तमरूप से धारण, पालन और पोषण करते हो। आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और सबको पवित्र करनेवाले हे परमेश्वर ! आप अपनी महान् महिमा से जीवों की कुत्सित गति को, बुरी चालों—व्यवहारों को छुड़ाते हो— दूर करते हो, निकृष्ट जीवन को उत्कृष्ट जीवन बना देते हो।

सूक्त—२०

ऋषिः–मन्युर्वासिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २३ २ ३ १ २

१०१९. इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २

हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बल का स्वामी, ज्ञानवान्, परम रसीला, इन्द्रियों में अपना प्रवाह बहानेवाला, शान्तस्वरूप परमात्मा जितेन्द्रिय जीवात्मा को आनन्दरस प्रदान करने के लिए उसमें आत्मबल को प्रेरित करता हुआ आनन्दधारारूप में प्राप्त होता है। वह परमेश्वर उपासक के काम-क्रोधादि राक्षसों का नाश करता है, उनकी अशान्ति और व्यग्रता को दूर करता है और अधिकारियों को परमानन्दरूप सर्वोच्च धन=मोक्ष प्रदान करता है।

ऋषिः-मन्युर्वासिष्ठः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
१०२०. अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय।।

अब राक्षसों के विनाश और मन की शान्ति के पश्चात् स्तुतिकर्ता उपासक द्वारा ज्ञान और भक्ति से हृदय में साक्षात् किया हुआ परमेश्वर प्रार्थना करनेवाले अथवा आर्तस्वर में पुकारनेवाले जीवों से सम्पर्क करता हुआ और मधुर शब्दों से उपदेश करता हुआ उन्हें प्राप्त होता है। परमात्मा की प्राप्ति से शक्तिशाली बना हुआ जीव परमैश्वर्यशाली, दिव्य गुण-विशिष्ट परमात्मा की मित्रता का सेवन करता हुआ स्वयं भी देव— दिव्य गुण-सम्पन्न बन जाता है। यह अनुपम सुख का अनुभव करता है और आनन्दपूर्वक कालयापन (समय व्यतीत) करता है।

ऋषिः-मन्युर्वासिष्ठः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २
१०२१. अभि व्रतानि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन्।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये।।

परमेश्वर अपने संकल्पित कर्मों—सृष्टि-उत्पत्ति, पालन और संहाररूप कर्मों को यथासमय पूर्ण करता है। उपासकों को पवित्र करता हुआ आनन्दप्रद परमात्मा इन्द्रियों को अपने आनन्दरस से सींच देता है। ज्ञान प्रकाश से प्रकाशित जीवात्मा दश इन्द्रियों को अपने वश में करता हुआ और श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़े हुए सब-कुछ देनेवाले और प्राप्त करनेयोग्य परमात्मा की ओर ही जाता है।

सूक्त—२१

ऋषिः-वसुश्रुत आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-पंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
१०२२. आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीष स्तोतृभ्य आ भर।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आपके दीप्तिमान् और जीर्ण न होनेवाले अजर-अमर स्वरूप को हम उपासक अपने हृदयों में पूर्णतया प्रदीप्त करते हैं, आपके स्वरूप का साक्षात् करते हैं। आपकी जो द्युति—प्रकाश द्युलोक में चमक रही है, वह अत्यन्त स्तुत्य है। वह वृद्धि और ह्रास से रहित है। हे आनन्दप्रद परमेश्वर! आप हम उपासकों को उसी अभीष्ट ज्योति—मोक्ष को प्रदान कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वसुश्रुत आत्रेयः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१०२३. आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य ज्योतिषस्पते।
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यावाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

हे सूर्य-चन्द्रमादि प्रकाशकों के स्वामिन्! प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हम स्तुति-वचनों के साथ अपनी आत्मा को परम पवित्र आपके प्रति समर्पित करते हैं। आप इसे स्वीकार कीजिए। हे आह्लाद देनेवाले! दर्शनीय और दुष्ट विनाशक! सब प्रजाओं के पालक! हमारी आत्म-हवि को स्वीकार करनेवाले परमेश्वर! आप हम स्तुति करनेवाले उपासकों को हमारा अभीष्ट मोक्षपद प्रदान कीजिए।

ऋषिः–वसुश्रुत आत्रेयः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१०२४. ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि।
उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

हे आह्लाद प्रदान करनेवाले! जड़ और चेतन प्रजाओं के पालक परमेश्वर! आप हमारी मन और बुद्धिरूपी दोनों विदारण करनेवाली दर्वियों को अपने ज्ञानरूप मुख में पूर्णरूपेण परिपक्व कर दीजिए— गला दीजिए, जिससे ये नाशक न रहकर कल्याणकारी बन जाएँ। हे बलों के स्वामिन्! ज्ञानयज्ञों में अथवा भक्तियज्ञों में आप हमें हमारे अभीष्टों द्वारा खूब ऊपर तक भर दीजिए, पूर्ण तृप्त कर दीजिए और हम स्तोताओं के लिए सुप्रेरणाएँ तथा अभीष्ट मोक्षसुख प्रदान कीजिए।

सूक्त–२२

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१०२५. इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्। ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे।।

हे उपासको! हमारी कमियों को दूर करके हमारा पालन और पूरण करनेवाले तथा विशेष तृप्ति देनेवाले, सर्वतोमहान्, ब्रह्माण्ड के रचयिता, तत्त्वद्रष्टा और वेदों का प्रकाश करनेवाले, स्तुतिकरने योग्य परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए बृहत् साम का गान करो।

[ये बृहत् सामगान प्रभु के गुणों को हमारे सामने उपस्थित करके हमें भी उन गुणों को धारण करने की प्रेरणा देते हैं।]

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१०२६. त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः। विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप सबको अभिभव=पराभूत, परास्त करनेवाले, सबको दबा लेनेवाले और सबपर अधिकार करनेवाले हैं। आपने जगत् प्रकाशक सूर्य और ज्ञानसूर्य वेद को चमकाया है। आप सारे संसार को रचने—निर्माण करनेवाले हैं, विश्व में एकमात्र उपास्य देव हैं—सबके इष्टदेव हैं और सब देवों के एकमात्र आश्रय हैं। आप सर्वमहान् हैं, परमपूज्य हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-नृमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

३ २ ३ १ २ ३ २ १२ ३२ ३२ ३१ २ ३ १२
१०२७. विभ्राजं ज्योतिषा स्वा३रगच्छो रोचनं दिवः। देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप अपनी ज्ञान-ज्योति से उपासक के हृदय को प्रकाशित करते हुए मोक्षसुख प्राप्त कराते हो और मस्तिष्करूप द्युलोक को भी अपनी ज्ञान-ज्योति से प्रदीप्त करते हो। हे प्रभो! मुमुक्षुजन आपकी मित्रता के लिए अपने जीवनों को संयत बनाते हैं— यम-नियमों से नियन्त्रित करते हैं।

सूक्त—२३

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
१०२८. असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि।
१ २ ३२उ ३ २ ३ २ ३ १ २
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! हे बलशालिन्! काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कुचल डालनेवाले जीवात्मन्! तेरे लिए सोम=वीर्यशक्ति उत्पन्न कर दी गई है। तू इस सोम की रक्षा कर। इस सोम की रक्षा के फलस्वरूप तुझे शक्ति प्राप्त होगी और तेरा हृदय-अन्तरिक्ष ज्ञान की ज्योति से उसी प्रकार उद्‌भासित हो उठेगा जैसे सूर्य प्रकाश से युक्त है।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१०२९. आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी।
३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना।।

वासनाओं को विनष्ट करनेवाले हे जीवात्मन्! तू शरीररूपी रथ पर सम्यक् आरूढ़ हो—इसका अधिष्ठाता बन। इसपर तेरा शासन हो। तेरे ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूपी अश्व इस शरीररूपी रथ में बड़ी समझदारी के साथ जोते जाएँ। अव्यवस्था या असावधानी के कारण ये रथ को ही न तोड़-फोड़ दें। उपदेष्टा आचार्य वेदवाणी के उपदेश द्वारा तेरे मन को उत्तमता से अन्दर की ओर ही गतिवाला बनाएँ— तेरा मन अन्तर्मुखी यात्रावाला हो, यह बाह्य विषयों में भटकनेवाला न हो।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ १ २र ३ १ २
१०३०. इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम्।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
ऋषीणां सुष्टुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम्।।

वासनाओं के साथ होनेवाले संग्राम में पराजित न होनेवाले और काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कुचल डालनेवाले जितेन्द्रिय पुरुष को ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप अश्व निश्चय ही वेद-प्रतिपादित प्रभु की स्तुतियों और मानव—हित में लगे हुओं के लोकसंग्रह-आत्मक यज्ञों के समीप ले-जाते हैं, अर्थात् उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञानप्राप्ति और प्रभु-स्तवन में लगी रही हैं और कर्मेन्द्रियाँ मानवहितकारी श्रेष्ठकर्मों के अनुष्ठान में प्रवृत्त रहती हैं।

।। यहाँ तृतीय प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ चतुर्थः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः—अकृष्टा माषाः, सिकतानिवावरी, प्रश्नयोऽजाश्च। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—जगती। **स्वरः**—निषादः।

१२ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१०३१. ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः।।

परमेश्वर विविध प्रकार के यज्ञों का प्रकाशक है। वह अपने उपासकों को प्रिय और शाश्वत आनन्दरूप मधुररस प्रदान करता है। वह सूर्य-चन्द्र आदि जड़ तथा मनुष्य आदि चेतन देवों के शरीर का निर्माता, रचयिता और रक्षक है। वह सर्वव्यापक, सबमें बसनेवाला और सबको बसानेवाला है। वह अनन्त ऐश्वर्य का स्वामी है। वह द्यावापृथिवी के मध्य में वर्तमान अनन्त रमणीय पदार्थों को प्राणियों के सुख और हित के लिए धारण करता है, सबको उनके अभीष्ट पदार्थ प्रदान करके आनन्दित करता है, सबको तृप्त करके मस्त बनाता है। वह इन्द्र=जीवात्मा का उपासनीय है, आनन्दमय है, रसरूप है, रस-ही-रस है।

ऋषिः—पूर्ववत्। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—जगती। **स्वरः**—निषादः।

३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१०३२. अभिक्रन्दन्कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा।।

अनन्त बलनिधि, प्रमोदपति, वेदवाणी का स्वामी— अथवा असंख्य आनन्दधाराओंवाला विश्वद्रष्टा, पवमान परमेश्वर साक्षात् उपदेश करता हुआ जीवों के समीप आता है। वह हितोपदेशों द्वारा जीवात्माओं के निखिल पाप-तापों का हरण करता है। वह मित्ररूप अपने भक्तों के मन, बुद्धि, नेत्र, श्रोत्र, आदि में एकाग्रता, शान्ति, प्रमोद, ज्ञान आदि के रूप में निवास करता है। वह समग्र कामनाओं का पूरक है। परमात्मा के स्मरण से जिनके हृदय द्रवीभूत हो जाते हैं, परमात्मा द्वारा रक्षणीय ऐसे उपासकों द्वारा वह अन्वेषणीय होता है।

ऋषिः—पूर्ववत्। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—जगती। **स्वरः**—निषादः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
१०३३. अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षस्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छसि।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
अग्रे वाजस्य भजसे महद् धनं स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे।।

हे सोम! शरणागत भक्तों को पवित्र करनेवाले आप भक्ति के पावन जल से आर्द्र हृदयवाले उपासकों के समक्ष उपस्थित हो जाते हो— उन्हें अपने दर्शन से कृतार्थ करते हो। आपकी स्तुति करनेवालों की वाणियों में आप स्तुत्य इष्टदेव के रूप में और नेत्रादि इन्द्रियों में विमल प्रेम आदि के रूप में उपस्थित हो जाते हो। अन्न, धन और बल की कामना करनेवाले भक्तों को आप अन्न, धन, और बल प्रदान करते हो। हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप काम-क्रोध आदि शत्रुओं के संहारक हो। उपासना करनेवाले उपासकों द्वारा आपका साक्षात्कार किया जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त –२

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
१०३४. असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः।।

हे बलशालियो में महाबलवान्, अत्यन्त शुद्ध, पवित्र, अपापविद्ध, सर्वव्यापक, आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले परमेश्वर! आप हमारी इन्द्रियों को साधने की इच्छा से–उन्हें विमल बनाने की इच्छा से, हमारी आयु को दीर्घ बनाने की इच्छा से और हमारे प्राणों के साधने की इच्छा से हम उपासकों को प्राप्त होओ।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३१२ १ २ ३ १ २ १२ ३ १ २ ३ १ २
१०३५. शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः। पवन्ते वारे अव्यये।।

मोक्षपद चाहनेवाले उपासकों द्वारा अभ्यास और वैराग्य की साधना से मन और बुद्धि के पवित्र किये जाने पर अनन्त गुणों से शोभायमान परमात्मा वरणीय और रक्षणीय हृदय में प्राप्त होता है।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३२३ २३ १ २ ३ २ ३ १२ १२ ३ १ २र
१०३६. ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा। पवन्तामान्तरिक्ष्या।।

शान्तस्वरूप परमात्मा आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक के लिए द्युलोक, अन्तरिक्षलोक और पृथिवी-लोक सम्बन्धी सब धन-सम्पत्तियों को प्राप्त कराए, अर्थात् हमारे मस्तिष्क में ज्ञान-धन, हृदय या मन में निर्मलतारूपी धन और शरीर में स्वास्थ्यरूपी धन प्राप्त कराए।

सूक्त–३

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
१०३७. पवस्व देववीरति पवित्रं सोमं रंह्या। इन्द्रमिन्दो वृषा विश।।

(क) हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! मुमुक्षुजनों को प्राप्त होनेवाले आप शीघ्रता से हमारे वासनाशून्य और पवित्र हृदय में प्राप्त होओ। हे परम रसीले! सुखवर्षक और कामनापूरक आप उपासक के आत्मा में प्रविष्ट हो जाओ।

(ख) हे सौम्य स्वभाव जीवात्मन्! दिव्य गुणों को प्राप्त करनेवाला तू क्रियाशीलता के द्वारा सब वासनाओं और सांसारिक मोह-माया का अतिक्रमण करके शीघ्रता से परमेश्वर की ओर गति कर–प्रभु को प्राप्त कर। हे ज्ञान-प्रकाशवाले उपासक! तू शक्तिशाली बनकर अथवा अन्यों पर सुखों की वर्षा करनेवाला होकर परमैश्वर्यशाली परमेश्वर में प्रविष्ट हो जा।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ १ २र ३ १ २
१०३८. आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः। आ योनिं धर्णसिः सदः।।

(क) हे परम रसीले परमात्मन्! आप सुखवर्षक और कामनापूरक हैं। आप अत्यन्त यशस्वी हैं। आपका

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रूप महान् है– सुन्दर और आकर्षक है। आप हमें प्राप्त होओ। आप ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाले हैं। आप हमारे हृदय-सदन में विराजो और इसे सुशोभित करो।

(ख) हे ज्ञानप्रकाश से प्रदीप्त उपासक! तू प्रभु के महनीय स्वरूप का निरन्तर कथन कर– उसके मनोहारीरूप का चिन्तन-मनन और कीर्तन कर। तू शक्तिशाली बन। तू संसार में अधिक-से-अधिक यशस्वी बन। तू लोगों को धारण करनेवाला– उनका सहायक और हित करनेवाला बन और परमपिता परमात्मा की अमृतमयी गोद में जा बैठ।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०३९. अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः। अपो वसिष्ट सुक्रतुः।।

हृदय में निष्पादित– साक्षात् किये हुए जगद्विधाता परमात्मा के ध्यान और धारणा से उपासक प्रीतिकर आनन्दरस का दोहन करता है। उत्तम प्रज्ञान और कर्मोंवाला मनुष्य श्रद्धा में बस जाता है– अत्यन्त श्रद्धालु बन जाता है।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०४०. महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः। यद् गोभिर्वासयिष्यसे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! जब आप वेदवचनरूप सदुपदेशों से जीवों को निवास प्रदान करके उन्हें जिला देते हो, तब वे उपासक सर्वपूज्य आपकी ओर ऐसे दौड़ते हैं जैसे नदियाँ महासागर की ओर दौड़ लगाती हैं।

[इस संसार में ज्ञान और सदाचार आदि से युक्त जीवन ही वास्तविक निवास है। परमेश्वर अपने सदुपदेश से मनुष्यों को सचमुच बसाता है– जिलाता है, उन्हें जीवन प्रदान करता है।]

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०४१. समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः। सोमः पवित्रे अस्मयुः।

सबको सन्तापरहित करनेवाला, आनन्दरस का सागर, जगत् का आश्रय या थामनेवाला, मोक्षधाम और द्युलोक को धारण करनेवाला, उपासकों को चाहनेवाला शान्तस्वरूप परमात्मा सब जीवों में सबसे पवित्र जीव को प्राप्त होता है– उसी के हृदय-सदन में विराजता है।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०४२. अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान् मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण दिद्युते।।

वह परमात्मा सुखवर्षक और कामनापूरक है। वह दुःखों, क्लेशों का हर्ता और जीव की मलिनताओं का नाशक है। वह महान् और पूजनीय है। वह मित्र के समान हितोपदेश करनेवाला और उपासकों को स्नेहमयी दृष्टि से देखनेवाला है। वह उपासकों द्वारा दर्शन करनेयोग्य है। वह सूर्य के समान प्रकाशमान है। परमेश्वर को प्राप्त करके उपासक भी चमक उठता है– सूर्य के समान तेजस्वी बन जाता है।

ऋषिः–मेधातिथिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०४३. गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भसे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परम रसीले परमात्मन्! आपके द्वारा प्रदत्त वेदवाणियाँ अपनी शक्ति और प्रताप से आपको चाहनेवाले उपासकों के जीवनों को शुद्ध और पवित्र बना देती हैं। इन वेदवाणियों द्वारा आप उपासकों को आनन्द प्रदान करने के लिए उनके जीवनों को दिव्य गुणों से सुशोभित कर देते हो।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ २ ३ १ २ ३ २
१०४४. तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे। तव प्रशस्तये महे।।

आनन्दरस की प्राप्ति के लिए—उल्लास और मस्ती भरे जीवन के लिए; काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कुचल डालने के लिए, आपकी स्तुति=प्रशस्ति के लिए (आपकी स्तुति से हमारे जीवनों में भी उन गुणों का आधान होगा ही) और तेजस्विता के लिए—आपके सम्पर्क में आकर तेजस्वी बनने के लिए हम उपासक सर्वप्रसिद्ध और लोक-लोकान्तरों का निर्माण करनेवाले आपके दर्शन की याचना करते हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१०४५. गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत। आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप हमें वेदवाणियों और ज्ञानेन्द्रियों को प्राप्त करानेवाले हैं। आप हमें जीवन्मुक्तों और सज्जनों को प्राप्त करानेवाले हैं— सत्संग से ही आत्मकल्याण होता है। आप हमें कर्मों में व्याप्त होनेवाली पाँच कर्मेन्द्रियाँ प्राप्त कराते हैं और आप ही हमें अन्न, धन, बल, यश, सत्य और सदाचाररूप धन भी प्राप्त कराते हैं, अतः आप पूजा—उपासना के सर्वश्रेष्ठ पात्र हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १२ ३१ २ ३ १ २
१०४६. अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया। पर्जन्यो वृष्टिमाँइव।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप अपने आनन्दरस की धारा से और वेदवाणी के उपदेश से हमें पवित्र करो। आप हमारी इन्द्रियों को पवित्र करो— उन्हें उनके विषयों से दूर रक्खो। जैसे जल देनेवाला मेघ जल बरसाकर सबके कष्टों को दूर करता है और सबको सुखी बनाता है, उसी प्रकार आप भी आनन्दवृष्टि से हमें सुखी और तृप्त करो।

सूक्त —४

ऋषिः-हिरण्यस्तूपः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ १२ ३ १ २
१०४७. सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः। अथा नो वस्यसस्कृधि।।

आनन्दधारा में प्रवाहित होनेवाले और सबको पवित्र करनेवाले हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप हमें बड़प्पन और बुद्धिमत्ता प्राप्त कराइए। हमें प्रशंसनीय कर्म करनेवाला बनाइए। आप हमें कान=श्रवण शक्ति प्रदान कीजिए— हम सुनें बहुत परन्तु बोलें कम। हमारे यश के विघातक काम-क्रोध आदि शत्रुओं पर, विरोधी भावनाओं पर हमें सदा विजयी बनाइए और इस प्रकार हमें उत्कृष्ट जीवनवाला बना दीजिए।

ऋषिः-हिरण्यस्तूपः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ २र १ २ ३ १२ १ २ ३ १ २
१०४८. सना ज्योतिः सना स्वा३र्विश्वा च सोम सौभगा। अथा नो वस्यसस्कृधि।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमें ज्योति=ज्ञान-ज्योति प्रदान करें, अपनी दिव्य ज्योति का दर्शन कराएँ, ब्रह्मतेज प्राप्त कराएँ। आप हमें आत्म-तृप्तिरूपी सुख-विशेष और मोक्ष प्रदान कीजिए और सारे सौभाग्य—ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य प्रदान कीजिए। इस प्रकार आप हमें अभ्युदय और निःश्रेयस—दोनों से सम्पन्न कर दीजिए। जहाँ हमारे ऐहिक जीवन सुख-समृद्धि से सम्पन्न हों वहाँ हम मोक्ष-सुख को भी प्राप्त करनेवाले हों।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०४९. सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमें दक्षम्=मानस शक्ति, योग्यता, आत्मबल, दृढ़ निश्चय, उत्साह, चातुर्य प्राप्त कराइए तथा बुद्धि, प्रकाश और कर्मसंकल्प भी प्रदान कीजिए। हमें प्रत्येक कार्य को योग्यता से करनेवाला बनाइए। हमारा प्रत्येक कार्य सोद्देश्य हो। हम अपने कार्यों को दृढ़ संकल्प से करें और हमारा प्रत्येक कार्य आपके प्रति समर्पित हो। आप हमारे काम-क्रोध आदि शत्रुओं को मार भगाइए और इस प्रकार हमें कल्याणकारी जीवनवाला बना दीजिए।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०५०. पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

जीवन को पवित्र करनेवाले हे उपासको! अपने सोम=वीर्यशक्ति की रक्षा करो और ब्रह्माण्ड के उत्पादक परमेश्वर का दर्शन करने में समर्थ बनो। अथवा ज्ञान द्वारा सबको पवित्र करनेवाले महापुरुषो! परमात्मा के आनन्दरस का आस्वादन करने के लिए आप भक्त जीवों को पवित्र करो। हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! सोमपान के पश्चात् अब आप हमें उत्तम बना दीजिए।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०५१. त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अपने प्रज्ञान से, अपनी प्रेरणा से, अपनी दया, वात्सल्य और औदार्य से और अपनी रक्षणशक्तियों से हमें स्वर्गलोक=मोक्षधाम में पहुँचा दो और हमारे जीवनों को श्रेष्ठ बना दो।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०५२. तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आपके प्रज्ञान और प्रेरणा से तथा आपकी रक्षणशक्तियों से हम चिरकाल तक उदय होते हुए सूर्य को देखते रहें, अर्थात् हम दीर्घजीवी बनें। अथवा आपकी दया, वात्सल्य और औदार्य से हम प्रकाशस्वरूप आपका शीघ्र दर्शन करें। प्रभो! दीर्घ जीवन के लिए और आपके दर्शन के लिए हमें योग्य बना दीजिए।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३क २र ३ १ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २
१०५३. अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! पापों के निवारण में स्वयं आयुधरूप परमेश्वर! आप हमें द्युलोक और भूलोक में फैले हुए धन को अर्थात् ज्ञान और बल को, निःश्रेयस और अभ्युदय को, परा और अपरा विद्याओं को प्राप्त कराइए और इस प्रकार हमारे जीवनों को उन्नत बना दीजिए।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
१०५४. अभ्या३र्षानपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः। अथा नो वस्यसस्कृधि।।

हे अतुल शक्तिशाली परमेश्वर! आप हमें स्थिर मानस-वृत्तियाँ प्राप्त कराइए। काम-क्रोध आदि के साथ होनेवाले संग्रामों में आप ही शत्रुओं का पराभव करनेवाले हैं। काम-क्रोध आदि के साथ होनेवाले संग्रामों में आप अपने भक्तों को च्युत नहीं होने देते, अतः आप अच्युत कहलाते हैं। प्रभो! आप हमें शरण दो।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३१२ ३ १२ ३ १२ १ २ ३ १ २
१०५५. त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि। अथा नो वस्यसस्कृधि।।

आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाले और जीवनों को पवित्र करनेवाले हे परमेश्वर! उपासक ध्यान-धारणा के विशिष्ट स्थान हृदय में यज्ञों=देवपूजा, संगतीकरण और दान आदि द्वारा आपको बढ़ाते हैं– आपका अधिकाधिक साक्षात् करते हैं। प्रभो! अपना दर्शन-लाभ कराके अब तो आप हमें सुखी कर दीजिए।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०५६. रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर। अथा नो वस्यसस्कृधि।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप हमें अद्भुत, ज्ञान का पोषण करनेवाला, सदा स्थिर रहनेवाला, अ+शिव=परमात्मा की ओर ले-जानेवाला, इन्द्रियों को प्रशस्त बनानेवाला, पूर्णायु को प्राप्त करानेवाला और सर्वजनहितकारी धन प्राप्त कराइए और लौकिक धन की प्राप्ति के पश्चात् हमें मोक्षधन से भी संयुक्त कीजिए– मोक्ष भी प्राप्त कराइए और इस प्रकार हमारे जीवनों को कल्याण का भागी बना दीजिए।

सूक्त–५

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र २ ३ २ ३ २
१०५७. तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत्स मन्दी धावति।।

चिन्तन-मनन और ध्यान करने योग्य शान्तस्वरूप परमात्मा की स्तुति करनेवाला स्तोता पाप से तर जाता है और उच्च-अवस्था को प्राप्त होता है। निश्चय ही आनन्द से विभोर हुआ वह उपासक भव-सागर को तैर जाता है और मोक्ष की ओर दौड़ लगाता है।

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २३ १ २ ३ १ २ ३ १२ २ ३ २ ३ १ २
१०५८. उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः। तरत्स मन्दी धावति।।

(क) शान्तस्वरूप परमात्मा की दिव्य आनन्दधारा उपासक को उन्नति-पथ पर ले-चलती है और मरणधर्मा मनुष्य को प्राणों का रक्षण प्राप्त कराती है, अतः परमात्मा की आनन्दधारा का पान करनेवाला

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तुतिकर्ता पाप-नद को पार करता हुआ उत्तम गति पाता है।

(ख) उषाकाल मनुष्यों को सब उत्तम वसुओं-स्वास्थ्य, आशा, उत्साह, धन-सम्पत्ति को प्राप्त कराता है। यह उषाकाल मनुष्यों को दिव्य जीवनवाला बना देता है। इस उषा के रक्षण द्वारा उपासक विघ्न-बाधाओं को पार करता हुआ आनन्दमय जीवनवाला बनकर आगे बढ़ता चलता है और शुद्ध-पवित्र बन जाता है।

ऋषिः-अवत्सारः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ ३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
१०५९. ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे। तरत्स मन्दी धावति।।

जीवन को नष्ट कर देनेवाले और पुरुष को खा जानेवाले शारीरिक और मानसिक सहस्रों भोगों को हम उपासक तिरस्कृत करते हैं। ऐसा करनेवाले आनन्द में विभोर हुए उपासक कष्टों, विघ्न-बाधाओं और संसार-समुद्र को पार करके परब्रह्म परमेश्वर की ओर दौड़ लगाते हैं।

ऋषिः-अवत्सारः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
१०६०. आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे। तरत्स मन्दी धावति।।

जिन शारीरिक और मानसिक भोगों के विस्तार तीन सौ वर्ष की आयु तक चलते हैं और जो भोग सहस्रों की संख्या में विद्यमान हैं, हम उपासक उन सब भोगों का तिरस्कार करते हैं। ऐसा करनेवाले आनन्दी उपासक भव-सागर से पार उतरते हुए ब्रह्म की ओर दौड़ लगाते हैं।

सूक्त—६

ऋषिः-जमदग्निः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १२
१०६१. एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे। मदिन्तमस्य धारया।।

अत्यन्त आनन्दमय परमेश्वर का वेदवाणी से स्तवन करते हुए अत्यन्त सौम्य स्वभाववाले ये उपासक महान् आत्मबल की प्राप्ति के लिए अपने हृदय में शान्तस्वरूप परमेश्वर को प्रकट करते हैं—उसका साक्षात्कार करते हैं।

ऋषिः-जमदग्निः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१०६२. अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि। सनद्वाजः परि स्रव।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! हमारे दोषों को दूर करके मोक्ष प्राप्त कराने के लिए हमारी ज्ञानेन्द्रियों की शक्तियों को पवित्र करते हुए आप हमें प्राप्त होते हैं। हे प्रभो! हमें बल, धन, यश और ज्ञान प्रदान करते हुए आप आनन्दधारारूप में हमारे निर्मल हृदय में— हमारे मन, बुद्धि और आत्मा में प्रवाहित हो जाओ।

ऋषिः-जमदग्निः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ २ १
१०६३. उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः। गृणानो जमदग्निना।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! ज्ञानाग्नि से देदीप्यमान—आत्मसाक्षात्कार करनेवाले सभी उपासक आपकी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तुति = गुणगान करते हैं, इसलिए आप हमें सब विद्याओं से युक्त वेदवाणियों को और सबके द्वारा प्रशंसनीय सभी अभीष्ट कामनाओं और ऐश्वर्यों को अवश्य प्राप्त कराइए।

सूक्त—७

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
१०६४. इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया।
३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २र
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।।

पूजनीय, सर्वज्ञ, वेदों के प्रकाशक परमेश्वर के लिए हम इस स्तोत्र का श्रद्धा, भक्ति, आदर और एकाग्र बुद्धि से वैसे ही सुसंस्कृत पाठ करते हैं जैसे एक बढ़ई प्रेम और तन्मयता से अपने रथ का सुसंस्कृत रूप से निर्माण करता है। उस परमात्मा के सत्संग से हमारी बुद्धि निश्चय ही सुखदायिनी, कल्याणकारिणी और निःश्रेयस साधिका बनेगी। हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आपकी मधुरतम, प्रेमपूर्ण मित्रता में हम अज्ञान, मिथ्या ज्ञान, भय-शोक आदि क्लेशों से पीड़ित नहीं होते।

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १२ ३ २
१०६५. भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम्।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २र
जीवातवे प्रतरां साधया धियोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।।

हे परमेश्वर! प्रति सायं और प्रति प्रातः हम आनन्दस्वरूप आपका चिन्तन और मनन करते हुए आपके ब्रह्म तेज को अपने जीवन में धारण करते हैं और हविरूप में अपने मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार की भेंट आपको समर्पित करते हैं, अतः आप पारमार्थिक जीवन-लाभ के लिए हमारी बुद्धियों को निरन्तर योग-मार्ग में प्रेरित कीजिए। हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आपकी मित्रता में रहते हुए हम कभी हिंसित, पीड़ित और दुखित न हों।

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ १ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१०६६. शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम्।
१ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २र ३ १ २र
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्युऽ३श्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हमें शक्ति दीजिए कि हम सम्यक् प्रकाशमान आपको अपने हृदय में धारण कर सकें। प्रभो! आप हमारी बुद्धि और कर्मों को साधना-मार्ग में लगाइए। देववृत्ति के उपासक आपमें समर्पित की हुई यज्ञशेषरूप अमृत हवि को ही खाते हैं– पञ्चयज्ञ करके बचे हुए भोजन को खानेवाले होते हैं। आप ऐसे सूर्य के समान तेजस्वी विद्वानों को हमें प्राप्त कराइए। हम उन्हीं को चाहते हैं। हे अग्ने! आपकी मित्रता में रहते हुए हम किसी से पीड़ित न हों, पराभूत न हों, दुःखी और हिंसित न हों।

सूक्त—८

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–आदित्यः। **छन्दः**–गयत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१०६७. प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम्। अर्यमणं रिशादसम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूर्य के उदय होने पर अर्थात् प्रातःकाल मैं अनेक नामों से स्मरण किये जानेवाले 'मित्रम्'=परम स्निग्ध—अत्यन्त स्नेही, 'वरुणम्'=सबके द्वारा वरणीय और सबको वरण करनेवाले, 'अर्यमणम्'=अखण्ड सुख सम्पत्ति—मोक्ष के स्वामी, रिशादसम्'=हिंसकों को मार भगानेवाले परमेश्वर की स्तुति करता हूँ।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-आदित्यः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः** षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१०६८. राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे। इयं विप्रा मेधसातये।।

हितकर और रमणीय विद्या तथा सदाचाररूपी धन से युक्त हमारी कल्याणकारिणी मति=बुद्धि अहिंसक बल के लिए हो। हमारी बुद्धि तोड़-फोड़ के कार्यों में न लगकर शान्ति की प्रसारिका हो। हे विद्वानो! यज्ञरूप परमेश्वर की प्राप्ति के लिए भी यही अहिंसक, अकुटिल, सरल, बुद्धि अपेक्षित है।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-आदित्यः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र
१०६९. ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह। इषं स्वश्च धीमहि।।

हे उपासकों से वरणीय और उपासकों को वरण करनेवाले परमात्मन्! हे आनन्दप्रद परमेश्वर! हम तेरे हों—हम तेरे भक्त और तेरे सच्चे पुत्र हों। हम तुझसे कभी अलग न हों। हे परम स्नेही परमात्मन्! हम तेरे हों, तुझसे कभी पृथक् न हों। समदर्शी और आत्मबलशाली विद्वानों के साथ हम आपके द्वारा निर्दिष्ट श्रेयमार्ग पर चलें और जीवन में सफल एवं समृद्ध बनें। विद्वानों के सहयोग से हम ज्ञान, भक्ति, वैराग्य को अपने में धारण करें तथा निर्मल आत्मसुख और मोक्ष को भी धारण करें—प्राप्त करें।

सूक्त—९

ऋषिः-त्रिशोकः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २उ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ १ २ ३ १ २र
१०७०. भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप हमारी समस्त द्वेष-भावनाओं को—द्वेष करनेवाली प्रवृत्तियों को छिन्न-भिन्न कर दीजिए। हमारी उन्नति के मार्ग में बाधक काम-क्रोधादि शत्रुओं को, पाप-प्रवृत्तियों को, मानसिक व्यथाओं को समूल नष्ट कर दीजिए और उपासकों द्वारा स्पृहणीय—वाञ्छनीय आपका दर्शनरूप या साक्षात्काररूप धन हमें प्रदान कीजिए।

ऋषिः-त्रिशोकः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ २ १ २ ३१ २र ३ २ ३ १२ १२ ३१ २र
१०७१. यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति। वसु स्पार्हं तदा भर।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! धारण-पोषण के लिए आवश्यक आपके जिस दान का समस्त संसार—संसार के सभी निवासी, निरन्तर लाभ प्राप्त करता है, आप हमें भी उस बसाने योग्य, अपना और अन्यों का धारण-पोषण करनेवाले स्पृहणीय धन का दान दीजिए।

ऋषिः-त्रिशोकः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३१ २ ३ २र ३ १२ १२ ३१ २र
१०७२. यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जो वसु=धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य दृढ़ शरीरवाले पुरुष में है, जो ऐश्वर्य स्थिर मनोवृत्तिवाले पुरुष के पास है, जो धन विचारशील पुरुष में भर दिया गया है, वही स्पृहणीय—चाहने योग्य धन—स्वास्थ्य, स्थिर मनोवृत्ति और प्रज्ञालोकरूपी धन मुझमें भी भर दीज़िए—मुझे भी प्राप्त कराइए।

सूक्त—१०

ऋषिः–श्यावाश्वः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१०७३. यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्।।

हे बल और ज्ञान के भण्डार परमेश्वर! आपके ये दोनों रूप निश्चय ही मेरे जीवन-यज्ञ के ऋत्विज हैं—आपकी कृपा से मेरा जीवन-यज्ञ सुचारू रूप से चलता है। आप ही बल और कर्मों में मुझे अत्यन्त शुद्ध करनेवाले हैं। आपकी कृपा से मेरा बल किसी का उत्पीड़न नहीं करता और मेरे कर्म किसी को हानि नहीं पहुँचाते। इस प्रकार मुझे पवित्र बल और कर्मोंवाला बनाकर सर्वप्रसिद्ध अपना बोध कराओ— अपना दर्शन दो— अपना साक्षात्कार कराओ।

ऋषिः–श्यावाश्वः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३१ २र १ २ ३ १ २
१०७४. तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्।।

हे बल और ज्ञान के भण्डार प्रभो! आपके ये दोनों रूप काम-क्रोध आदि शत्रुओं का संहार करनेवाले हैं। आपके ये दोनों रूप पवित्र अन्तःकरणवाले उपासकों को ही प्राप्त होते हैं— वे दोनों रूपों में आपका दर्शन करते हैं। दोनों नामों से वाच्य आप पापों का नाश करनेवाले और कभी पराजित न होनेवाले हैं। हे इन्द्र और अग्निपद से पुकारे जानेवाले परमेश्वर! मैं आपका उपासक हूँ, अतः आप मेरी प्रार्थना को सुनिए।

ऋषिः–श्यावाश्वः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३१ २ ३१ २र३ १ २ ३१ २ १ २ ३ १ २
१०७५. इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्।।

हे इन्द्र और अग्नि नामवाले परमात्मन्! स्तुति करनेवाले मुमुक्षुजनों ने अपने हृदय-मन्दिर में आनन्दप्रद उपासना-रस को अत्यन्त प्रेम और श्रद्धा के साथ प्रकट किया है। यह आपके लिए ही है। आप हमारे इस निवेदन को जानो और हमारे उपासनारस को स्वीकार करो— अपने उपासकों को अपनाओ।

सूक्त—११

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २
१०७६. इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्।।

हे परमरसीले परमात्मन्! आप आनन्दरस से परिपूर्ण हैं, अतः आप प्राणों की साधना करनेवाले जितेन्द्रिय उपासक के लिए प्रवाहित हो जाइए, जिससे यह उपासक अर्चनीय—पूजनीय आपकी अमृतमयी गोद में जा बैठे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०७७. तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम्। सं त्वा मृजन्त्यायवः।।

वेदवाणियों के वेत्ता, मेधावीगण सर्वप्रसिद्ध, ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाले और अत्यन्त बलशाली, संसार के रचयिता परमात्मा का साक्षात्कार करते हैं। साधारण मनुष्य भी सर्वप्रसिद्ध आपका ही अन्वेषण करते हैं– आपको ही खोजते हैं। इस प्रकार आप सभी मनुष्यों के द्वारा उपासनीय हैं।

ऋषिः–कश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०७८. रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे। पवमानस्य मरुतः।।

हे क्रान्तदर्शी परमेश्वर! आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले आपके आनन्दरस का पान करें। कौन? **मित्रः** = प्राणिमात्र के साथ और विशेषरूप से आपके साथ स्नेह करनेवाले, **अर्यमा** = काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नियमन करनेवाले, अपने-आपको आपके प्रति समर्पण करनेवाले **वरुण** = आपका वरण करनेवाले, अपने आपको व्रतों–पाशों में बाँधनेवाले, प्रकृष्ट ज्ञानी, अपने जीवन को श्रेष्ठ बनानेवाले, दूसरों के साथ राग-द्वेष छोड़ देनेवाले और मुमुक्षुजन, **मरुतः** = प्राणापान की साधना करनेवाले। हम भी इन गुणों को अपनाकर आपके आनन्दरस का पान करने के अधिकारी बनें।

सूक्त –१२

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१०७९. मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि।
रयिं पिशंगं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि।।

हाथों के बिना ही सृष्टि रचनारूप सुन्दर हस्तकौशलवाले परमेश्वर ! आप उपासक के हृदयरूपी समुद्र में प्राप्त होते हुए अपनी प्रेरणामयी वाणी को प्रेरित करते हो। हे आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले परमेश्वर ! आप हमें अपने पाप-शून्य, अत्यन्त कमनीय–चाहनेयोग्य, प्रभूत आनन्दैश्वर्य को प्राप्त कराइए।

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१०८०. पुनानो वारे पवमानो अव्यये वृषो अचिक्रदद्वने।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि।।

(क) आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! आप स्तुति-वाणियों से साक्षात् होते हुए उपासकजनों के निर्मल हृदय-मन्दिर में प्राप्त होते हो। धारारूप में प्राप्त होते हुए आप उपासकों के जीवनों को पवित्र करनेवाले हो। आप सुखवर्षक और कामनापूरक हो। आप अविनाशी, वरणीय और उपासकों को वरण करनेवाले हो– ऐसे आप सम्भजन–उपासना करनेवालों के आत्मा में प्राप्त होते हो।

(ख) स्वयं अपने को पवित्र करनेवाला और आचार्य द्वारा पवित्र किया जाता हुआ, अपने मनोरथों को स्वयं सिद्ध करता हुआ उपासक अविनाशी, वरणीय, सम्भजनीय परमेश्वर के आनन्द में मग्न होकर उसका स्मरण करता है। हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! सबको पवित्र करनेवाले प्रभो ! स्तुति-वचनों से प्रकट होनेवाले–साक्षात्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दर्शन देनेवाले आप दिव्य उपासकों के संस्कृत–शम-दम और यम-नियम आदि द्वारा परिष्कृत हृदय में प्राप्त होते हो।

सूक्त –१३

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २३ २उ ३ १२ ३२ ३ १ २ १२ ३ १२
१०८१. एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम्। समादित्येभिरख्यत।।

विषयों में प्रेरित करनेवाली दस इन्द्रियाँ विषयों से निवृत्त होकर जब निश्चय से सर्वप्रसिद्ध, पृथिवी और आकाश में फैले हुए समुद्रों के निर्माता परम पिता परमेश्वर का अन्वेषण करती हैं तब शम, दम, योगाभ्यास आदि मुक्ति के साधनों से परमात्मा का हृदय में साक्षात् होता है–दर्शन होता है।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ १ २
१०८२. समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ। सं सूर्यस्य रश्मिभिः।।

आचार-विचार आदि द्वारा पवित्र किया गया उपासक सर्वथा पवित्र, शुद्धस्वरूप परमेश्वर में गतिवाला होता है अर्थात् यह ब्रह्मनिष्ठ होकर गति करता है। परमैश्वर्यशाली और सर्वव्यापक परमात्मा के साथ मेल करके यह परमात्मा जैसा ही बन जाता है और शनैः-शनैः यह सूर्य के समान दिव्य प्रकाशवाला बन जाता है।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २ १२ ३ १ २र
१०८३. स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्। चारुर्मित्रे वरुणे च।।

वह शान्तस्वरूप परमेश्वर हमारे आत्मिक तेज के लिए, मनोविकास के लिए और शारीरिक पुष्टि के लिए मधुमान् होकर हमें प्राप्त हो। वह परमेश्वर हमारे प्राण और अपान के लिए भी अथवा मित्रों और सज्जनों के लिए भी हितकर हो।

सूक्त –१४

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३१ २
१०८४. रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम।।

(क) स्वभावतः आनन्दस्वरूप परमात्मा के आश्रय में रहते हुए–परमात्मा की कृपा और अनुकम्पा से हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ प्रभूत ज्ञान, बल और यशवाली हों। उन इन्द्रियों के द्वारा भक्ति और ज्ञानरूपी अन्नवाले होकर हम जीवन में आनन्दयुक्त हो जाएँ।

(ख) प्रभु के आश्रय में रहते हुए हम प्रभूत अन्न, बल, धन और ज्ञानवाले हों। हम गौओंवाले हों, जिससे हम सन्तानों तथा पारिवारिक जनों के साथ आनन्द लेने योग्य हों। उत्तम अन्नोंवाले (खूब खाने और पचाने की शक्तिवाले) होकर हम ऐसे धन और गौरूपी सम्पत्ति को प्राप्त करें जिनसे संसार के आनन्द का अनुभव कर सकें।

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ ३ २ ३ १ २ ३२ ३१ २ ३ २ ३२उ ३ २ ३क २र
१०८५. आ घ त्वावान् त्मना युक्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः। ऋणोरक्षं न चक्र्योः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(क) हे काम-क्रोध आदि दोषों का धर्षण करनेवाले परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप-जैसे तो सचमुच आप ही हैं— आप अनुपम हैं। स्तुतिकर्ता उपासकों द्वारा प्रार्थना किये जाते हुए आप अपने आत्मस्वरूप से उनके साथ युक्त होकर जैसे रथ का अक्ष = धुरा-दण्ड रथ के पहियों को गति देता है, उसी प्रकार आप हमारे जीवन-रथ को गति देकर इसे मोक्ष-मार्ग पर अग्रसर कर दीजिए।

(ख) शत्रुओं का धर्षण करनेवाले हे परमेश्वर! यह उपासक सचमुच आप-जैसा ही बना है। यह आत्मबल से युक्त हुआ है। यह निरन्तर क्रियाशील है। रथ के पहियों में अक्ष की भाँति यह 'ज्ञान और श्रद्धा-रूप' चक्रों के मध्य में 'कर्म' रूप अक्ष के समान है। इसके सब कर्म ज्ञान और श्रद्धापूर्वक होते हैं। ऐसे व्यक्ति ही आपके सच्चे स्तोता होते हैं। हे प्रभो! इन स्तोताओं के लिए आप काम-क्रोध आदि वासनाओं पर आक्रमण करके उन्हें परे धकेल दें।

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०८६. आ यद् दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम्। ऋणोरक्षं न शचीभिः।।

हे अनन्त कर्मों और प्रज्ञानोंवाले प्रभो! जैसे सत्कर्मों के अनुष्ठान से इन्द्रियाँ मनुष्यों को दुःखों से दूर करती और उन्हें सुख प्राप्त कराती हैं, उसी प्रकार आप अपने स्तोताओं के आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक दुःखों को सर्वथा दूर कर दीजिए तथा उन्हें श्रेय = मोक्षपद प्राप्त कराइए।

सूक्त—१५

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०८७. सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि।।

जैसे गौ का दूध दुहने के लिए ग्वाला सुगमता से दुही जानेवाली गौ की कामना करता है, वैसे ही हम अपने जीवन की रक्षा के लिए, आत्मदर्शन के लिए संसार में उत्तम-उत्तम रूपों और आकृतियों का निर्माण करनेवाले, आत्मा को संस्कृत करनेवाले परमेश्वर को अपने अन्दर धारण करते हैं।

[परमात्मा रूपों का निर्माण करनेवाले हैं। उसके स्मरण और आराधना से हमारा शरीर नीरोग, मन निर्मल और विशाल तथा बुद्धि तीव्र बनकर तीनों ही सुरूप बन जाते हैं।]

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०८८. उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः।।

हे भक्तों के रक्षक परमेश्वर! आप हमारे उपासना-यज्ञों में आइए—अपना दर्शन दीजिए। हमने अपने निर्मल हृदय में उपासना-रस निष्पन्न किया है, आप इसका पान करें—हमारी इस भेंट को स्वीकार करें। अखिल ऐश्वर्यों के स्वामी आपकी प्रसन्नता, आपकी कृपा हमारे लिए निश्चय ही ज्ञानप्रद और हर्षप्रद होगी।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०८९. अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि।।

हे परमात्मन्! आपकी कृपा और अनुग्रह के पश्चात् हम उपासक आपके अत्यन्त समीपी, सुमति-सम्पन्न—जीवन्मुक्त महापुरुषों के संसर्ग से आपके स्वरूप को जानें और आपको प्राप्त करें। हे प्रभो! आप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हमारा त्याग न करें, हमें अपने दर्शनों से वंचित न करें, हमें अवश्य प्राप्त हों।

सूक्त—१६

ऋषिः–मान्धाता यौवनाश्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–महापंक्तिः। **स्वरः**–निषादः।

१०९०. उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव। महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम्।
देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत्।।

जिस प्रकार उषा अपने प्रकाश से सारे संसार में व्याप्त हो जाती है, उसी प्रकार हे परमेश्वर ! आप अपनी ज्योति से द्युलोक और भूलोक में अर्थात् विश्व ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत होकर रहते हैं। आप महान् से भी महान् हैं— सबसे बड़े हैं। आपसे बड़ा कोई नहीं है। आप सम्पूर्ण प्रजाओं के सम्राट् हैं। ऐसे आपका शुद्ध, पवित्र, निर्मल हृदय में ज्ञानमयी उपासना [भक्ति] देवी के द्वारा ही प्रादुर्भाव होता है, अतः वह देवी=द्योतन एवं दानशीला, जनयित्री=मातृरूपा और कल्याणी मानी जाती है।

ऋषिः–पूर्वार्धस्य मान्धाता यौवनाश्वः, उत्तरार्धस्य गोधा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–महापंक्तिः। **स्वरः**–निषादः।

१०९१. दीर्घं ह्यंकुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः। पूर्वेण मघवन् पदा वयामजो यथा यमः।
देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत्।।

जैसे महावत हाथी को वश में रखने के लिए लम्बा अंकुश रखता है, वैसे ही हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप संसार को नियम और व्यवस्था में रखने के लिए प्रचण्ड शक्ति धारण किये हुए है। जिस प्रकार बकरा वृक्षों के पत्तों को खाने के लिए अपने अगले पाँवों द्वारा उसकी शाखाओं को खेंचता है और उसे अपने नियन्त्रण में कर लेता है, उसी प्रकार अजन्मा परमात्मा शाश्वत व्याप्ति से प्रकृति को स्वायत्त करता है तथा दुष्टों का नियमन और सज्जनों का पालन करता है। प्रकाशकों का प्रकाशक, आनन्दप्रद, संसार का निर्माता परमेश्वर ही इस संसार को उत्पन्न=प्रकट करता है, अव्यक्त से व्यक्त दशा में लाता है। संसार का निर्माता वह कल्याणकरी परमेश्वर जीवों को कर्मफल प्रदान करने के लिए संसार की रचना करता है।

ऋषिः–मान्धाता यौवनाश्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–महापंक्ति। **स्वरः**–निषादः।

१०९२. अव स्म दुर्हृणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम्।
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ अभिदासति।
देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत्।।

हे परमेश्वर ! आप सबके प्रति क्रोध करनेवाले, वैमनस्य रखनेवाले, दुष्ट मनुष्य के मिथ्या गर्व को खर्व कर दो—कुचल दो, उसके बल का मर्दन कर दो। जो म्लेच्छ, शत्रु, दुर्जन आपके उपासक हम सरल हृदय भक्तों को दास बनाना चाहता है, हमारे धर्म, गौरव, संस्कृति और सभ्यता का नाश करना चाहता है, उसे आप अपने वज्र-सदृश पैरों में डालकर कुचल दीजिए। प्रकाशकों का प्रकाशक, सृष्टि-उत्पादक परमेश्वर ही इस संसार का सृजनकर्त्ता है, वही कल्याणकारी सृष्टिकर्ता परमेश्वर जीवों को सुख और कर्मफल प्रदान करने के लिए इस संसार को रचता है, अतः वही इसकी सम्यक् व्यवस्था भी करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–१७

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०९३. परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि।।

सबको सदुपदेश करनेवाला, स्वयं प्रकाशमान, वेद के प्रत्येक मन्त्र में वर्णित, शान्तस्वरूप और आनन्दप्रद परमात्मा पवित्र हृदय में आनन्दधारारूप में प्रवाहित होता है–पवित्र हृदय में प्रकट होता है। वह आनन्दप्रद है, अतः सबको आनन्द प्रदान करता है। अथवा वह अर्चना करने योग्यों में सबसे अधिक अर्चनीय है, पूज्यों में पूज्यतम है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०९४. त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः। मदेषु सर्वधा असि।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! आप मेधावी हैं और सबको विशेषरूप से तृप्त करनेवाले हैं। आप क्रान्तदर्शी हैं, सर्वज्ञ हैं, वेदकाव्य के उपदेष्टा हैं। ध्यान एवं उपासना करने योग्य आपका आनन्दरस सर्वोत्कृष्ट है– इससे बढ़कर और कुछ भी प्राप्तव्य नहीं है। हे प्रभो ! आप सबको आनन्द में धारण करनेवाले हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०९५. त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत। मदेषु सर्वधा असि।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! आपके साथ प्रीति करनेवाले देवकोटि के सब उपासक– सारे मुमुक्षु विद्वान् आपमें स्थित अमृतपान का आस्वाद लेते हैं। हे प्रभो ! आप कृपालु होकर अपने उपासकों को सब-कुछ दे देते हो– उनके सभी मनोरथों को पूर्ण कर देते हो।

सूक्त–१८

ऋषिः–ऋणञ्चयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–यवमध्या गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१०९६. स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्। सोमो यः सुक्षितीनाम्।।

जो निवास के लिए आवश्यक वास-साधनों को, जो सांसारिक और आध्यात्मिक धनों को, रमणीय भोगों को, जो विधान का प्रतिपादन करनेवाली वेदवाणियों को और उत्तमोत्तम तथा श्रेष्ठ महात्माओं, योगियों, तपस्वियों को प्राप्त करानेवाला है, उस शान्तस्वरूप, आनन्दप्रद परमेश्वर का हृदय-मन्दिर में साक्षात्कार किया जाता है।

ऋषिः–शक्तिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–सतोबृहती। **स्वरः**–पञ्चमः।

१०९७. यस्य त इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः।
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! आप वह हैं जिसके आनन्दरस का जितेन्द्रिय उपासक पान करता है, जिसके

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्दरस का मुमुक्षुजन और प्राणसाधना करनेवाला योगी पान करता है, आत्मसमर्पण करनेवाला तथा भाग्यशाली आत्मतेजवाला पान करता है। प्रभो! आपके आनन्दरस-पान से हम अपने प्राणापानों को शक्तिशाली बनाते हैं, स्वात्मा को = अपने-आपको भी प्रबल एवं निर्मल बनाते हैं, अपनी सर्वविधि रक्षा करने में समर्थ होते हैं और हृदय को विशाल बना पाते हैं।

सूक्त–१९

ऋषिः–पर्वतनारदौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१०९८. तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत। शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः।।

हे समानधर्मा उपासको! अपने आनन्द और उल्लासभरे जीवन के लिए सर्वप्रसिद्ध, जीवात्मा को सब प्रकार से पवित्र करनेवाले परमात्मा को लक्ष्य बनाकर उसका गुणगान करो, उसकी महिमा के गीत गाओ। जैसे नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजनों द्वारा शिशु को स्वाद दिलाकर उसे तृप्त करते हैं, उसी प्रकार स्तुतियों के द्वारा–प्रभु-गुणगान द्वारा प्रभु-प्राप्ति के आनन्दरस का आस्वादन करो और तृप्त होओ।

ऋषिः–पर्वतनारदौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१०९९. सं वत्स इव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते। देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः।।

जिस प्रकार दुग्धपान करानेवाली माताओं द्वारा पालित, पोषित और वर्धित शिशु कान्तिमान् बनता है, उसी प्रकार इन्द्रियों का संयम करनेवाला, सदा प्रसन्न रहनेवाला, सत्कर्मों और सद्विचारों से सुभूषित परमेश्वरोपासक भी परमेश्वर के मार्ग में चलता हुआ–योग-मार्ग में पग रखता हुआ अलौकिक शक्तियों से कान्तिमय बन जाता है।

ऋषिः–पर्वतनारदौ। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

११००. अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये। अयं देवेभ्यो मधुमत्तरः सुतः।।

यह उपासक दक्ष-प्राप्ति में समर्थ बनता है। यह शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक बल प्राप्त करता है और परमात्मा को प्राप्त करने में समर्थ बनता है। सत्कर्म और सदाचार आदि गुणों से समलंकृत यह उपासक अन्य सब विद्वानों की अपेक्षा परमेश्वर का अतिशय प्रिय पुत्र बनता है– परमात्मा का सच्चा पुत्र बनता है।

सूक्त–२०

ऋषिः–मनुः सांवरणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

११०१. सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः।
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः।।

ज्ञान प्राप्त करानेवालों में सर्वोत्तम, पापों से रहित–निर्मल, निर्दोष, अपापविद्ध; ध्यान–मनन एवं चिन्तन करनेयोग्य, मोक्षसुख को प्राप्त करानेवाला, सबके साथ स्नेह करनेवाला, सबको सुप्रेरणा देनेवाला, परम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रसीला, शान्तस्वरूप परमात्मा हम उपासकों के लिए आनन्दधारा में प्राप्त होता है।

ऋषिः–मनुः सांवरणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
११०२. ते पूतासो विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः।
१ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
सूरासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते।।

(क) वह सर्वप्रसिद्ध शान्तस्वरूप परमात्मा स्वयं पवित्र है और उपासकों को पवित्र करनेवाला है, वह मेधावीजनों को चेतानेवाला महामेधावी है, वह धारणा, ध्यान, समाधि से साक्षात् होनेवाला है, सूर्य के समान दर्शनीय है, सर्वत्र गतिशील–सर्वव्यापक है और स्वतेज में स्थिर है–कभी तेजहीन नहीं होता–ऐसे परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए।

(ख) आनन्दमय प्रभु का दर्शन करनेवाले उपासक पवित्र जीवनवाले होते हैं– वे शरीर, मन और आत्मा से पवित्र होते हैं। वे वाक्प्रयोग-कुशल और मेधावी होते हैं। वे अत्यन्त विनीत होते हैं, सारे संसार का धारण करनेवाले प्रभु का आश्रय लेनेवाले होते हैं। वे सूर्य के समान दर्शनीय और अनुकरणीय होते हैं। वे निश्चल मनोवृत्तिवाले होते हैं और देदीप्यमान परमेश्वर में गतिवाले–प्रभु-उपासना में तल्लीन रहनेवाले होते हैं।

ऋषिः–मनुः सांवरणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
११०३. सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि।
१२३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन् वसुविदः।।

स्तुति-प्रसंगों में–स्तुति करने के अवसरों पर स्तुतिकर्ताओं के द्वारा सम्यक् स्तुत किया हुआ–सम्यक् पुकारा गया, विशेषरूप से चेताने–बोध करानेवाला, सकलैश्वर्य-सम्पन्न परमेश्वर हम उपासकों की अभीष्ट कामनाओं को सब ओर से पूर्ण करते हैं।

सूक्त–२१

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
११०४. अया पवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व।
३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १३ ३ १ २
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात्।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप अपनी प्रवाहित होनेवाली रसधारा से शम-दम आदि आध्यात्मिक धनों को प्रवाहित कीजिए और इन्हें मननीय हृदय-सरोवर में पहुँचा दीजिए। हे महामेधावी परमात्मन्! जिसका मूल वायु के समान हो अर्थात् जिसके मूल में निर्बलता हो, उस मनुष्य को आप बल और वेग प्रदान करो जिससे वह मोक्ष-प्राप्ति में समर्थ हो सके।

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
११०५. उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले परमेश्वर! आप अपनी आनन्दरसमयी धारा द्वारा हममें प्रवाहित हो जाइए और हमारे जीवनों को शुद्ध, पवित्र तथा निर्मल बना दीजिए। श्रवण, मनन, निदिध्यासन करनेयोग्य आप शास्त्र-श्रवण में संलग्न अपने भक्तों पर अधिकाधिक आनन्द-अमृत की वृष्टि करो। हे भक्तों के प्रिय प्रभो! आप हम उपासकों के रमण के लिए, आनन्दपूर्ण जीवन-यापन के लिए साठ सहस्र=अनेक प्रकार के धन—निवास के लिए आवश्यक वस्तुएँ, धन और ज्ञान उसी प्रकार प्रदान कीजिए जैसे वृक्ष पके फलों को नीचे गिरा देते हैं।

ऋषिः-कुत्स आंगिरसः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

२ ३१ २ ३ २३ १२ ३१ २र ३ १२ ३ १२
११०६. महीमे अस्य वृष नाम शूषे मांश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे।
१ २ ३१२ ३२३ २ ३२ ३ २३१ २ ३ २
अस्वापयन् निगुतः स्नेहयच्चापामित्राँ अपाचितो अचेतः॥

सर्वप्रसिद्ध, शान्तस्वरूप परमात्मा के दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हैं—उपासकों के लिए इष्ट=कमनीय पदार्थों का वर्षण और नास्तिकों को झुकाना—दण्ड देना। परमात्मा के ये दोनों धर्म सुख देनेवाले और बल प्रदान करनेवाले हैं। उसके ये दोनों रूप मननीय—स्मरणीय और वध से रक्षा करनेवाले हैं। वह परमेश्वर आन्तरिक भाव से उसका स्मरण करनेवालों को सुख की नींद सुलाता है तथा उनसे स्नेह करता है और उनके काम-क्रोध आदि शत्रुओं को नष्ट कर डालता है। जो धर्म-कर्मरहित हैं, उन दुष्ट लोगों को भी प्रभु अपने भक्तों से दूर करते हैं और नास्तिकों को भी दूर कर देते हैं।

सूक्त—२२

ऋषिः-बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गौपायना लौपायना वा। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-द्विपदाः विराट्। **स्वरः**-पञ्चमः।

२ ३ २ ३ १ २ ३२ ३२ ३ १ २ ३क २र
११०७. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः॥

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप ही हमारे अन्तिकतम—अत्यन्त समीपी=घनिष्ठ मित्र हैं, आप ही हमारे रक्षक हैं। जो अत्यन्त समीप है वही उत्तम प्रकार से रक्षा भी कर सकता है। आप हमारे कवच हैं। आप ही हमारे सर्वोत्तम धन हैं और आप ही सारे संसारवासियों द्वारा वरणीय और उपासना करनेयोग्य हैं। आप कल्याण करनेवाले हैं, अतः हमारा भी कल्याण करें।

ऋषिः-पूर्ववत्। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-द्विपदाः विराट्। **स्वरः**-पञ्चमः।

१२३ १ २र ३ १ २ ३१२ ३१ २
११०८. वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमो रयिं दाः॥

हे परमेश्वर! आप वसु हैं— आप सबमें निवास करते हैं और सारा संसार आपमें बसा हुआ है। आप प्रकाशस्वरूप और सबके अग्रणी हैं। आप 'वसुश्रवाः' हैं—ज्ञानयोगियों के द्वारा रात्रि के शान्त समय में परमानन्दरूप धन के रूप में आपका श्रवण एवं चिन्तन किया जाता है। आप प्रकाशकों के प्रकाशक हैं। आप हमें सम्यक् प्राप्त हों—हम आपकी व्याप्ति का हृदय में अनुभव करनेवाले हों। आप हमें सर्वोत्तम ज्ञान-धन अथवा मोक्षरूपी धन प्रदान कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–पूर्ववत्। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–द्विपदा विराट्। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१११०९. तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः।।

अत्यन्त दीप्तिमान्, पवित्र प्रभो! आप पुत्र, कलत्र=स्त्री, धन आदि इष्ट पदार्थ प्रदान करके सबको रमण करानेवाले—सारे संसार को क्रीड़ा करानेवाले और आनन्द देनेवाले हैं। हम श्रद्धा-भक्ति से प्रसिद्ध दानवीर आपसे अपने सुख और सौभाग्य के लिए तथा मित्रों के सुख और कल्याण के लिए— इहलौकिक और पारलौकिक सुख के लिए प्रर्थना करते हैं।

सूक्त–२३

ऋषिः–भुवनाप्त्यः साधनो वा भौवनः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–द्विपदा त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

१११०. इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः।।

ये विस्तृत लोक-लोकान्तर और इनमें वर्तमान नाना प्रकार की भोग्य वस्तुएँ, सारे लोक-लोकान्तरों का अधिष्ठाता परमैश्वर्यशाली परमेश्वर और सूर्य आदि देव तथा चरित्रवान् सब देव—विद्वान्, महात्मा हमारा शीघ्र ही कल्याण करें।

ऋषिः–भुवनाप्त्यः साधनो वा भौवनः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–द्विपदा त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २

११११. यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह सीषधातु।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर हमारी आत्मा को, हमारे शरीर को और हमारी इन्द्रियों को सूर्य के समान तेजस्वी उपासकों—मुक्ति के अधिकारी—जीवन्मुक्तों के द्वारा सिद्ध कर दे—योगसिद्ध बना दे।

ऋषिः–भुवनाप्त्यः साधनो वा भौवनः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–द्विपदा त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१११२. आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत्।।

दया, दान, दाक्षिण्य आदि शुभ गुणों से युक्त परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सूर्य की किरणों के द्वारा और उनञ्चास वायुओं के द्वारा तथा आदित्य के समान तेजस्वी पुरुषों द्वारा और प्राणायाम के अभ्यासी साधकों के द्वारा हमारे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रोगों को दूर करके हमें सुख प्रदान करे।

सूक्त–२४

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा विराट्। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

१११३. प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते।।

हे मुमुक्षुजनो! तुम सब, बुद्धि और आत्मा पर परदा डालनेवाले पापों के नाशक, महामेधावी उपासकों का पालन और पूरण करनेवाले परमैश्वर्यशाली परमात्मा के लिए गान करने योग्य स्तोत्रों का गान करो, भक्ति-गीतों द्वारा उसे रिझाओ, अपने ऊपर कृपालु बनाओ। तुम उस परमपिता का गुणगान करो जिसकी ज्ञानी लोग भी प्रेमपूर्वक उपासना करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा विराट्। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २र
१११४. अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः।।

प्राणापान की साधना करनेवाले ज्ञानदीप्त और ध्यानशील योगी उपास्य देव परमपूज्य परमेश्वर की अर्चना–उपासना करते हैं। उस परमेश्वर की उपासना करते हैं जो अखण्डैकरस है–जन्म-मृत्यु से रहित है, परमैश्वर्यशाली है, तीनों लोकों में प्रसिद्ध है, सारे ब्रह्माण्ड का धारण और पोषण करता है और भक्तों की उपासना के मार्ग में आनेवाले सब विघ्नों का नाश करता है।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा विराट्। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २र २ ३ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१११५. उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र।।

हे परमेश्वर्यशाली परमेश्वर! पृथिवी आदि सब भूतों के आधार, परमानन्दरसस्वरूप आपके आश्रय में रहते हुए हम सदा आपका ध्यान करते हैं और आपके निर्विकल्प समाधि-जन्य मोक्षसुख के साम्राज्य का उपभोग करते हैं।

चतुर्थः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त–१

ऋषिः–वृषगणो वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१११६. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र ३ १ २
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन्।।

प्रजा के सुख की कामना करनेवाला परमेश्वर अपने वेदरूपी काव्य का, अपने ज्ञानमय तथा कलामय स्वरूप का उपदेश करता हुआ सृष्टि के सभी देवों और दिव्य पदार्थों की उत्पत्ति एवं मोक्ष-प्राप्ति के साधनों का स्पष्टरूप से वर्णन और विवेचना करता है। वह आनन्दप्रद परमेश्वर महिव्रत है=महान् कर्मशक्तिवाला और शिव-संकल्पवाला है। उसका प्रदीप्त तेज और बल काम-क्रोध आदि शत्रुओं का निग्रह करनेवाला है। वह स्वयं पवित्र है और उपासकों के पाप-तापों का नाशक है। वह जीवों को कल्याणकारी उपदेश करता हुआ किसी पवित्र दिन में पवित्र हृदय में आ बैठता है।

[जिस दिन श्रद्धालु मनुष्य में ज्ञान और भक्ति के प्रति रुचि उत्पन्न हो जाती है वही शुभ और उत्तम दिन है।]

ऋषिः–वृषगणो वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ १ २
१११७. प्र हंसासस्तृपला वग्नुमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
अंगोषिणं पवमानं सखायो दुर्मर्षं वाणं प्र वदन्ति साकम्।।

नीर-क्षीर विवेकी हंस के समान सत्यासत्य विवेकी परमहंस, पाप और पाप-वासनाओं का नाश

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करनेवाले, अपने अन्दर की अशान्ति को समाप्त किये हुए—शान्त जीवनवाले—आप्तकाम, सदा वृष = धर्म का चिन्तन करनेवाले—गणों में रहकर उपदेशामृत की वर्षा करनेवाले परमात्मा के उपासकजन राग-द्वेष आदि भय से बचने के लिए और बल-प्राप्ति के लिए सृष्टि के आरम्भ में हृदयस्थरूपेण वेद का ज्ञान देनेवाले, वर्तमान समय में भी अन्तःस्थित होते हुए कर्तव्य-अकर्तव्य की प्रेरणा देनेवाले, सबके शरणभूत परमेश्वर की ओर जाते हैं—उसे प्राप्त करते हैं। ये परमहंस—आप्तकाम और धर्मशील उपासक परस्पर मित्र बनकर और एक-साथ मिलकर उस परमेश्वर का प्रवचन करते हैं जो परमेश्वर सब विज्ञानों का आधार और स्तुति करने योग्य है, जो आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला और सबको पवित्र करनेवाला है जो असह्य तेजवाला और अपने असह्य तेज से बुराइयों को कुचलनेवाला, सब विद्याओं का उपदेश करनेवाला और सबका आश्रयरूप है।

ऋषिः–वृषगणो वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ २उ १ ३ ३ १ २र
१११८. स योजत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीडन्तं मिमते न गावः।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
परीणसं कृणुते तिग्मशृंगो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः॥

परमेश्वर-उपासक जीवात्मा महायशस्वी परमेश्वर की गति = व्यवहार—गुणों को अपने जीवन में जोड़ता—धारण करने का प्रयास करता है। यह उपासक अनुभव करता है कि अनायास संसार की उत्पत्ति, स्थिति और संहाररूप क्रीड़ा करनेवाले परमेश्वर के विस्तार को न तो स्तुति करनेवाले स्तोताओं के शब्द माप सकते हैं और न इन्द्रियाँ ही उसे प्राप्त कर सकती हैं। वही तीक्ष्ण तेजस्वी परमेश्वर बहुविध संसार को रचता है और उसका सबसे अद्भुत कार्य तो यह है कि वह दिन-रात अन्धकार का हरण करता हुआ और पापों का दहन करता हुआ दिखाई देता है अथवा वह अन्धकार नाशक दिन में भी खूब प्रकाश करता है और ऋजु = सरल मार्ग-नायक वह परमेश्वर रात्रि में भी प्रकाशकर्ता के रूप में दिखाई देता है। दिन में सूर्य के रूप में और रात्रि में चन्द्रमा के रूप में वह संसार को आलोकित करता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१११९. प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः। सोमासो राये अक्रमुः॥

उपासनारस के रसिक, सौम्यता की मूर्ति उपासक प्रभु के नाम 'ओम्' और उसके गुणों का उच्चारण करते हुए ज्ञान और यश की कामनावाले होकर गतिशील रथों और घोड़ों के समान मार्ग की विघ्न-बाधाओं को दूर करके ज्ञान और मोक्षरूप ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए आगे और आगे कदम बढ़ाते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
११२०. हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः। भरासः कारिणामिव॥

प्रभु-उपासक आगे और आगे बढ़ते हुए रथों के समान होते हैं। ये उपासक प्रभु से प्रेरित हुए जीवन-मार्ग पर आगे बढ़ चलते हैं। ये सूर्य और चन्द्रमा की किरणों के समान अपने को ज्ञान-विज्ञान की किरणों में स्थापित करते हैं, अपने अज्ञानान्धकार को हटानेवाले ये उपासक अभ्यास और वैराग्य में स्थित होते हैं। ये कलाकारों की भाँति अपने अन्दर उत्तम गुणों को धारण करनेवाले होते हैं। जैसे कलाकार अपने चित्र में विचित्र रंगों को भरते हुए उसे सुन्दर बनाता है उसी प्रकार ये उपासक अपने जीवन-चित्र में विविध गुणों का आधान करके अपने जीवन-चित्र को सुन्दर बनाते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषि:-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

११२१. राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते। यज्ञो न सप्त धातृभिः।।

जैसे राजा लोग उत्तम स्तुतियों द्वारा प्रसन्न होते हैं, जैसे सात ऋत्विजों द्वारा यज्ञ सुसम्पन्न और समुद्बुद्ध होता है अथवा जैसे जीवन-यज्ञ सात ऋषियों द्वारा सुशोभित होता है, उसी प्रकार शान्तस्वरूप परमात्मा स्तुतियों द्वारा हृदय-मन्दिर में प्रकट किया जाता है—आत्मा में साक्षात् किया जाता है।

[सप्त होता हैं—होता, अध्वर्युः, अचित्तपाजा, अग्नीध्रः, उपवक्ता, अभिगराः और उद्गाता। जीवन-यज्ञ के सात ऋषि हैं—दो आँखें, दो कान, दो नासिका-छिद्र और एक मुख।]

ऋषि:-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

११२२. परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया।।

परमात्मा के आनन्दरस से आप्लावित=सराबोर उपासक प्रजाजनों की आनन्दवृद्धि और हर्ष के लिए आनन्दरसमयी मधुर वाणी से वृद्धि और हर्ष की कारणभूत वेदवाणी का उपदेश करते हुए सर्वत्र विचरते हैं—घर-घर में वेद का सन्देश सुनाते हैं।

ऋषि:-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

११२३. आपानासो विवस्वतो जिन्वन्त उषसो भगम्। सूरा अण्वं वि तन्वते।।

(क) परमात्मा के आनन्दरस का डटकर पान करनेवाले विद्वान् लोग सूर्य और उषा के ऐश्वर्य को—सूर्य के तेज और प्राणशक्ति को तथा उषा की शोभा और अन्धकार के दहन करने की शक्ति को अपने अन्दर प्रेरित और धारण करते हुए सूक्ष्म बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों को विस्तृत करते हैं।

(ख) सर्वव्यापक—सबको प्राप्त हुआ शान्तस्वरूप परमात्मा सूर्य में तेज और उषा में शोभारूप ऐश्वर्य प्रदान करता हुआ, उपासना द्वारा साक्षात् हुआ अणु-परिमाणवाले उपासक आत्मा को विशेषरूप से उपकृत करता है।

ऋषि:-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

११२४. अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः। वृष्णो हरस आयवः।।

मुमुक्षुजन, स्तुति करनेवाले स्तुतिकर्ता और गतिशील मनुष्य सुखवर्षक और सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाले परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए अपनी बुद्धि के द्वारों को खोल देते हैं, क्योंकि बुद्धि के विकास से ही प्रभु-दर्शन प्राप्त होता है।

ऋषि:-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

११२५. समीचीनास आशत होतारः सप्तजानयः। पदमेकस्य पिप्रतः।।

सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक उस एक और केवल एक शान्तस्वरूप परमात्मा के मोक्षपद को प्राप्त करते हैं। कौन? योग-साधना में संलग्न योगी, प्रत्येक कार्य को कौशल से करनेवाले, दानशील, यज्ञशेष को खानेवाले, परमात्मा को पुकारनेवाले और सात शक्तियाँ जिसकी पत्नी के समान पालनीय और हित साधनेवाली हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

[सात शक्तियाँ हैं– मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, श्रोत्र, नेत्र और वाणी। मन से परमात्मा का मनन होता है, बुद्धि से विवेचन, चित्त से स्मरण, अहंकार से ममत्व, श्रोत्र से श्रवण, नेत्र से विभूतिदर्शन और वाणी से स्तवन होता है।]

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २र ३ २
११२६. नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुषा सूर्यं दृशे। कवेरपत्यमा दुहे।।

हम सबको अपने साथ बाँधनेवाले, सबको नियम और व्यवस्था में चलानेवाले, विश्व के मध्य=केन्द्ररूप शान्तस्वरूप परमेश्वर को अपने मध्य में–हृदय में धारण करता हूँ। जिससे दिव्यदृष्टि पाकर मैं सारे ब्रह्माण्ड में सरणशील–व्यापक, सूर्यों के सूर्य परमात्मा का दर्शन पा सकूँ–उसका साक्षात्कार कर सकूँ। वेदकाव्य के कवि से मैं पतित न होने का–जीवन में नीचे न गिरने का अथवा मुझे अपना सच्चा पुत्र बना लेने का वर माँगता हूँ।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
११२७. अभि प्रियं दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम्। सूरः पश्यति चक्षसा।।

(क) हिंसारहित उपासना-यज्ञ करनेवाले नेताओं ने कहा है कि प्रकाशमय परमात्मा का तृप्त करनेवाला और कमनीयस्वरूप हृदय-गुहा में निहित=छिपा हुआ है। योग-विद्या का विद्वान् उपासक दिव्यदृष्टि द्वारा परमात्मा के स्वरूप को देखता है–उसका साक्षात्कार करता है।

(ख) कर्मकाण्डी याज्ञिकों ने तृप्ति देनेवाले और पवित्र-हृदय में वास करनेवाले परमात्मा को अज्ञान-गुहा में छिपा दिया है। जैसे-तैसे, उलटा-सीधा यज्ञ करनेवाले कर्मकाण्डी उस प्रभु का दर्शन कभी नहीं पा सकते। उसे तो सूरि=ईश्वर के स्तोता–उपासक लोग ही ज्ञानदृष्टि से देख सकते हैं।

सूक्त–२

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
११२८. असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः। विदाना अस्य योजना।।

योग-धर्म में विद्यमान और योग-मार्ग की विधियों के ज्ञाता, उपासना-रस के रसिक उपासक योग प्रतिपादित सत्य-पथ के द्वारा सुश्रियः=उत्तम शोभाओं–स्वास्थ्य, सौन्दर्य, लौकिक और आध्यात्मिक ऐश्वर्य–योगविभूतियों से सम्पन्न हो जाते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
११२९. प्र धारा मधो अग्रियो महीरपो वि गाहते। हविर्हविःषु वन्द्यः।।

गुणों में सर्वाग्रणी, सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर आनन्दरस की विशाल धाराओं में खुब स्नान कराता है–डुबकियाँ लगवाता है। वह परमेश्वर स्वयं हविरूप है और उपासक की आत्मसमर्पणरूपी हवियाँ अथवा अन्तःकरणरूपी–मन, बुद्धि, चित्त, अहंकाररूपी हवियाँ उसी में होमी जाती हैं अथवा सब हवियों में परमात्मारूपी हवि ही स्तुति के योग्य है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

११३०. प्र युजा वाचो अग्रियो वृषो अचिक्रदद्वने। सद्माभि सत्यो अध्वरः।।

(क) वेदवाणियों का प्रतिपाद्य सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर सत्यस्वरूप और हिंसारहित है। योगयुक्त होकर सम्भजन–उपासना करने पर वह हृदय-गुहा में अभिमुख–प्रत्यक्ष होता है। निश्चय ही वह सुखवर्षक और कामनापूरक है तथा उपासकों का मार्ग-निर्देशन करता है।

(ख) अभीष्ट मनोरथों का पूरक, सत्यस्वरूप और यज्ञरूप, शान्तस्वरूप परमात्मा सृष्टि के आरम्भ में युक्त–आनुपूर्वीरूप मन्त्र–वेदवाणियों को सम्भजन स्थान–ऋषियों के अन्तःकरण में–आत्मा में साक्षात् होकर प्रवचन करता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

११३१. परि यत्काव्या कविर्नृम्णा पुनानो अर्षति। स्वर्वाजी सिषासति।।

क्रान्तदर्शी–मेधावी पुरुष अपने अन्तःकरण चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) को पवित्र करता हुआ जब परमात्मा प्रदत्त वेदकाव्य के रहस्यों को समझने लगता है, तब यह ज्ञानी, शक्तिशाली और क्रियाशील बनता है। अब यह अपने स्वः=सुख को–मोक्षसुख को बाँटना चाहता है, अकेला मुक्त न होकर अन्यों के मोक्ष की भी कामना करता है।

ऋषिः–असितः काश्यपा देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

११३२. पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति। यदीमृण्वन्ति वेधसः।।

ज्ञानी उपासक जब शान्तस्वरूप परमात्मा को अभिमुख कर लेते हैं तब आनन्दधारा में प्राप्त होता हुआ और उपासकों के जीवन को पवित्र करता हुआ परमेश्वर उनके साथ संघर्ष करनेवाले विघ्नों और उनके जीवन में प्रविष्ट हो जानेवाली काम-क्रोध आदि वासनाओं को दबा देता है–नष्ट कर देता है, ठीक उसी प्रकार जैसे एक राजा विद्राही प्रजा के उपद्रवों को दबा देता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

११३३. अव्या वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति। रेभो वनुष्यते मती।।

सबसे प्रेम करनेवाला और सबसे प्रेम किया जानेवाला, दुःखों को हरण करनेवाला परमेश्वर, पार्थिव भोगों से ऊपर उठने पर भक्तों के अन्तःस्थलों–मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार में, हृदय में निवास करता है और स्तुति करनेवाला उपासक ही बुद्धि के द्वारा उस प्रभु को प्राप्त करता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

११३४. स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति। रणा यो अस्य धर्मणा।।

जो उपासक शान्तस्वरूप परमात्मा को प्रसन्न करने में लगा रहता है, वह सर्वव्यापक और सारे ब्रह्माण्ड को गति देनेवाले, परमैश्वर्यशाली और आशुतोष परमात्मा को प्राप्त करता है और सदा आनन्द एवं उल्लासमय जीवन बिताता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
११३५. आ मित्रे वरुणे भगे मधोः पवन्तः ऊर्मयः। विदाना अस्य शक्मभिः।।

जो उपासक यम-नियम आदि के अनुष्ठान और शम-दम आदि अध्यात्म कर्मों द्वारा शान्तस्वरूप परमात्मा को जान लेते हैं–प्राप्त कर लेते हैं, उन उपासकों के प्राण में, अपान में और मस्तिष्कस्थ ओज में आनन्दमय परमात्मा की आनन्दधाराएँ प्रवाहित हो जाती हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
११३६. अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये। श्रवो वसूनि सञ्जितम्।।

द्युलोक और भूलोक, प्राण और अपान हम उपासकों को आनन्दमय शान्तस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए सदाचाररूपी धन, जीवन को पुष्ट करनेवाला आहार, यश और शास्त्रज्ञान तथा निवास के लिए आवश्यक सब साधनों को प्राप्त कराएँ।

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १२
११३७. आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हम उपासक आज आपसे उस दक्षम्=उत्साह, चातुर्य, मानसिक शक्ति और बल को चाहते हैं जो सुख देनेवाला है, ज्ञान का प्रापक है, मोक्षमार्ग की ओर ले-जानेवाला है, हमारा पालन और रक्षण करनेवाला है, हमें सब विघ्नों से बचानेवाला है और सबके द्वारा अभीष्ट है, वाञ्छित है, चाहने योग्य है।

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १२
११३८. आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम्। पान्तमा पुरुस्पृहम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हम उपासक आनन्दस्वरूप और आनन्दप्रद आपका वरण करते हैं। हम वरण करने योग्य और उपासकों को वरनेवाले सर्वश्रेष्ठ आपको चाहते हैं। महामेधावी और उपासकों की कामनाओं को पूर्ण करनेवाले आपको हम वरते हैं। मन के गुप्त रहस्यों को जाननेवाले–मन के शासक आपको अपने जीवन में धारण करते हैं, विघ्न-बाधाओं से रक्षा करनेवाले आपको हम अपनाते हैं और सबके द्वारा चाहनेयोग्य आपका हम वरण करते हैं। हम आपको और केवल आपको चाहते हैं।

ऋषिः–भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १२
११३९. आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा। पान्तमा पुरुस्पृहम्।।

हे पवित्र ज्ञान-सम्पन्न और पवित्र-कर्म करनेवाले प्रभो! हम सत्यस्वरूप अथवा महाधनरूप आपको चाहते हैं, चेतनाप्रद आपको अपनाते हैं, रक्षा करनेवाले और पालक आपको चाहते हैं और सबके द्वारा चाहने योग्य आपका वरण करते हैं। हम आपको इन्हीं वर्तमान शरीरों में चाहते हैं, जिससे मोक्ष प्राप्त होकर अगले जन्मों से छुटकारा मिल जाए।

सूक्त–३

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–वैश्वानरः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२३२उ ३ २ ३ २
११४०. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः।।

द्युलोक के शिरोरूप, पृथिवी के स्वामी, सत्यनिष्ठ उपासक के हृदय में प्रकट होनेवाले, क्रान्तदर्शी–महामेधावी, संसार के सम्राट्, जनता के पूजनीय, मनुष्यों के रक्षक और त्राणकर्त्ता, सर्वजन-हितैषी, सर्वश्रेष्ठ, प्रकाशरूप प्रभु को विशुद्ध अन्तःकरणवाले देवगण अपने हृदय-मन्दिर में प्रकट करते हैं, साक्षात् करते हैं।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–वैश्वानरः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
११४१. त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः।।

हे अमृतस्वरूप परमात्मन्! सब मुमुक्षुजन हृदय में प्रकट हुए आपको अपने सारे अज्ञानों का नाशक मानते हुए आपकी स्तुति करते हैं। हे विश्वनायक प्रभो! आपकी प्राप्ति के संकल्प से कर्म करनेवाले मनुष्य अमृतत्व–मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं। कब? जब आप उनके मन और बुद्धियों में दीप्त हो जाते हैं– उनके मन और बुद्धियों को अपनी ज्ञान-ज्योति से प्रकाशमान बना देते हैं।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–वैश्वानरः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
११४२. नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त।
३ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ २
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः।।

श्रेष्ठतम कर्मों के केन्द्र–जिसे प्राप्त करने के लक्ष्य से श्रेष्ठ कर्म किये जाते हैं, सन्मति, सद्गति, सद्ज्ञान, लौकिक और पारलौकिक ऐश्वर्य के भण्डार, सर्वमहान्, आनन्दरस के आधार, सबके द्वारा सहायता के लिए पुकारे जानेवाले, जिसमें सब-कुछ होम दिया जाता है–समर्पित कर दिया जाता है–ऐसे परमात्मा की मुमुक्षुजन स्तुति करते हैं। हिंसारहित कर्मों की ओर ले-जानेवाले, श्रेष्ठतम कर्मों का निर्देश करनेवाले, सर्वहितैषी, विश्वनायक परमात्मा का मुमुक्षु उपासक अपने अन्दर साक्षात् करते हैं।

सूक्त–४

ऋषिः–यजत आत्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ २
११४३. प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा। महिक्षत्रावृतं बृहत्।।

हे उपासको! तुम सबके मित्र, सबसे स्नेह करनेवाले, सबको अभ्युदय-कार्य में प्रेरित करनेवाले, सबके द्वारा वरणीय, पापों के निवारक और सबको मोक्ष-प्राप्ति के लिए वरनेवाले परमेश्वर के लिए प्रशंसात्मक वाणी से खूब गायन करो। परमेश्वर के मित्र और वरुण–ये दोनों रूप तुम्हारे जीवनों को प्रभावशाली बनानेवाले और क्षतों से त्राण करनेवाले हैं। प्रभु के ये दोनों रूप जीवन को नियमित बनानेवाले और तुम्हारी वृद्धि के कारण हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–यजत आत्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २
११४४. सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च। देवा देवेषु प्रशस्ता।।

मित्र और वरुण–सबसे प्रेम करनेवाला और सबके द्वारा वरणीय–इन दो रूपोंवाला परमेश्वर महातेजस्वी है और सारे संसार पर शासन करता है। वह परमेश्वर देवों में प्रशस्त देव है–सर्वश्रेष्ठ है–ऐसे परमात्मा की खूब स्तुति करो।

ऋषिः–यजत आत्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
११४५. ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु।।

मित्र और वरुण–इन दोनों रूपोंवाला परमेश्वर हम उपासकों को लौकिक और पारलौकिक, अभ्युदय और निःश्रेयस, भोग और मोक्षरूप महान् सम्पत्तियों को देने में सर्वथा समर्थ है। हे मित्र और वरुण! आपका धन और बल अन्य सब देवों की अपेक्षा महान् है।

सूक्त–५

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
११४६. इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः।।

हे अद्भुत प्रभा=दीप्तिवाले और सब प्राणियों को तेजस्वी बनानेवाले परमेश्वर आप आइए, हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकट होकर अपने दर्शन दीजिए। आपको चाहनेवाले, पवित्र हुए-हुए आपके ये पुत्र आपके तनिक-से कृपा-कटाक्ष से सत्य, अहिंसा, सदाचाररूप धन को प्राप्त कर सकते हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
११४७. इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः।

सब प्राणियों को तेजस्वी बनानेवाले हे परमेश्वर! आप आइए, हमारे हृदय-मन्दिरों में प्रकट हो जाइए। हम अपनी धारणाओं और ध्यान द्वारा आपको चाहते हैं। ब्रह्म-चिन्तकों ने आपको प्राप्त किया है। मैं उपासना-रस का निष्पादन करनेवाले अपने साथी उपासकों के साथ ब्रह्म-प्रतिपादक वैदिक स्तोत्रों से आपकी स्तुति कर रह हूँ, इसे आप ध्यानपूर्वक सुनें।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
११४८. इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधीष्व नश्चनः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप शीघ्र आइए–हमारे हृदय-मन्दिरों में दर्शन दीजिए। हम भक्त आपके आगमन में विलम्ब नहीं सह सकते और आप भी अपने उपासकों को अनुगृहीत करने में विलम्ब नहीं करते। पाप-तापों और काम-क्रोध आदि दोषों को दूर करनेवाले सर्वशक्तिमान् प्रभो! आप हमारी स्तुति और प्रार्थनाओं को ध्यानपूर्वक सुनिए। उपासना-रस के सिद्ध हो जाने पर आप हमें अपना आध्यात्मिक प्रसाद प्रदान कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—६

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
११४९. तमीडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत्। कृष्णा कृणोति जिह्वया।।

हे उपासको ! तुम उस प्रकाशस्वरूप परमेश्वर की स्तुति करो—उसके गीत गाओ जो अपनी प्रकाशक शक्ति से सूर्य आदि सारे ज्योतिष्मान् पिण्डों को ज्योति प्रदान कर रहा है। वह स्तुत्य परमेश्वर अपनी वेदवाणी द्वारा उपासकों के कर्मों को क्षीण कर देता है और इस प्रकार उन्हें मोक्ष-प्राप्ति का अधिकारी बना देता है।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ २ ३
११५०. य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः। द्युम्नाय सुतरा अपः।।

जो मनुष्य ज्ञान से दीप्त परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के निमित्त अपने आपको सुन्दर हवि के रूप में समर्पित कर देता है, उस ज्ञानी और यशस्वी बने हुए मनुष्य के लिए भव-सागर सुगमता से पार होने योग्य हो जाता है।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्राग्नी । **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
११५१. ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः। एन्द्रमग्निं च वोढवे।।

हे ज्ञान एवं बलस्वरूप परमेश्वर ! आपके ये दोनों रूप हमारे अन्दर अमृत-अन्नभोग=मोक्ष-प्राप्तिवाली कामनाओं को पूर्ण कर दें और व्यापनशील प्रेरणा देनेवाले मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को अपने विचारों से ओत-प्रोत कर दें— भर दें जिससे हम बलशाली और ज्ञानस्वरूप आपको प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

सूक्त—७

ऋषिः–सिकतानिवावरी। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३१ २र ३ १ २
११५२. प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम्।

१ २ २ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
मर्यइव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा।।

परम रसीला परमात्मा इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा के पाप-वासनाओं से शून्य निर्मल हृदय में प्रकट होता है। सबका सखा परमेश्वर अपने सखा जीवात्मा की प्रार्थना को टालता नहीं है, स्वीकार करता है। जैसे मनुष्य युवा कन्याओं, बहिनों, पुत्रियों के साथ प्रेमपूर्वक मिलता है, वैसे ही सोमरस-आस्वादन के लिए तत्पर जीवात्मा सैकड़ों दुर्वृत्तियों के दमन करनेवाले श्रेयः-मार्ग से अनन्त सुखनिधि परमात्मा में निवास करता है—परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

ऋषिः–सिकतानिवावरी। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
११५३. प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवरणेष्वक्रमुः।

२ ३ १ २ ३क२र ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
हरिं क्रीडन्तमभ्यनूषत स्तुभोऽभि धेनवः पयसेदशिश्रयुः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आपको चाहनेवाले, स्तुतिकर्ता मेधावी उपासक गुप्त स्थानों—हृदय आदि प्रदेशों में धारणा-ध्यान आदि योगांगों का अभ्यास आरम्भ करते हैं। स्तोता-उपासक संसार की रचना, पालना और संहाररूपी क्रीड़ा करनेवाले आप की स्तुति करते हैं और आपके आनन्दरस का पान करनेवाले उपासक अपनी वृद्धि के लिए—अपने आत्मकल्याण के लिए आपका ही सहारा लेते हैं।

ऋषिः-सिकतानिवावरी। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१ २ ३१२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ २
११५४. आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमान ऊर्मिणा।
२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम्।।

हे परम रसीले शान्तस्वरूप परमात्मन्! आनन्दधारा में प्राप्त होते हुए और हमारे जीवनों को पवित्र करते हुए आप, हमारी स्थायी वृद्धि करनेवाली अपनी संगति प्राप्त कराइए। अपनी उस भक्ति को भी प्राप्त कराइए जो सदा स्थिर है और हमें दिन-रात में तीन बार प्रार्थना के शब्दों के साथ, श्रद्धा के साथ, माधुर्य के साथ और दृढ़ता के साथ आपका ध्यान करने की प्रेरणा करती है।

[त्रिः—दिन-रात में तीन बार—प्रातः, सायं और योगियों के लिए रात्रि के बारह बजे के पश्चात् भी।]

सूक्त—८

ऋषिः-पुरुहन्मा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
११५५. न किष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा।।

जो परमेश्वर उपासकों की सदा वृद्धि करता है, उस परमेश्वर को भिन्न-भिन्न कामनाओं से किये जानेवाले कर्मों के द्वारा कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता। उस परमैश्वर्यशाली प्रभु को काम्य यज्ञों द्वारा—केवल बाह्य कर्मकाण्डवाले यज्ञों द्वारा भी प्राप्त नहीं किया जा सकता जो परमेश्वर कि सारे संसार को धारण करनेवाले हैं, सब सुर-असुरों के द्वारा स्तवन करने योग्य हैं, महामेधावी हैं, ज्ञान से देदीप्यमान हैं, किसी शक्ति से अथवा काम-क्रोधादि से कभी पराजित होनेवाले नहीं, परन्तु अपने तेज से सबका धर्षण करनेवाले, सबको पराजित करनेवाले हैं।

ऋषिः-पुरुहन्मा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
११५६. अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुज्रयः।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामीरनोनवुः।।

जो असह्य तेजवाला है, जिसे कोई पराजित नहीं कर सकता, जो अत्यन्त उग्र है परन्तु साथ ही उदात्त और उत्कृष्ट स्वभाववाला है, अध्यात्म संग्रामों में उपासक के काम-क्रोध आदि शत्रुओं को बुरी तरह कुचलनेवाला है, जिसके आश्रय में महान् लोक-लोकान्तर अत्यन्त वेग से गति कर रहे हैं और हृदय में प्रकट होने पर स्तोता जिसकी सम्यक् स्तुतियाँ करते हैं—द्युलोक और भूलोक अर्थात् देव और मनुष्य भी उसी परमेश्वर की स्तुति करते हैं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—९

ऋषिः–पर्वतनारदौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ काश्यपौ वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २र २ ३ १ २ २ ३ २ ३१ २र ३ २
११५७. सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत। शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये।।

हे उपासक मित्रो! चारों ओर से आकर नम्रतापूर्वक शुभ आसनों पर बैठो और जीवन को पवित्र बनानेवाले परमेश्वर के लिए खूब गान करो। उसकी महिमा के गीत गाओ। प्रभु-गुणगान करते हुए तुम शिशु की भाँति निश्छल और निर्दोष बनो और आत्मकल्याण के लिए यज्ञों—देवपूजा, संगतीकरण और दान से, श्रेष्ठतम कर्मों—स्वार्थशून्यता, परोपकार आदि कर्मों से अपने-आपको अलंकृत करो।

ऋषिः–पूर्ववत्। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २र
११५८. समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम्। देवाव्यां३मदमभि द्विशवसम्।।

हे उपासको! तुम प्राणों को उन्नत करनेवाले, मुमुक्षुजनों द्वारा कमनीय, आनन्दस्वरूप और आनन्दप्रद निग्रह और अनुग्रह, सृष्टि रचना और कर्मफल प्रदानरूप दो प्रकार के बलों के स्वामी उस परमात्मा को अपने साथ प्रत्यक्षतया और उस प्रकार सम्बद्ध कर लो, जोड़ लो जैसे माताएँ शिशुओं को अपने साथ जोड़ लेती हैं।

ऋषिः–पूर्ववत्। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
११५९. पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये। यथा मित्राय वरुणाय शन्तमम्।।

हे उपासको! तुम अपने जीवनों को पवित्र एवं निर्मल बनाओ जिससे तुम आत्मबल की प्राप्ति के लिए, प्रगति=ज्ञान-प्रकाश की प्राप्ति और तृप्ति के लिए, तथा प्राणिमात्र से मित्रता और पापों का निवारण करने के लिए आत्मबल और प्रगति के साधक शान्तिदायक परमेश्वर को प्राप्त कर सको।

सूक्त—१०

ऋषिः–अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा विराट्। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३क २र ३१ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
११६०. प्र वाज्यक्षाः सहस्रधारास्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम्।।

आनन्दमयी और मधुर वाणीवाला, शक्तिशाली और ज्ञानी उपासक उस प्रभु की ओर तेजी से बढ़ चलता है जो प्रभु उसके अन्दर ही छिपे हुए हैं, स्वयं पवित्र हैं और उपासक के जीवन को पवित्र बनानेवाले हैं, विशेष रूप से वरणीय हैं और उपासक की वासनाओं का निवारण करनेवाले हैं तथा रक्षण करने में सर्वोत्तम हैं।

ऋषिः–अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा विराट्। **स्वरः**–पञ्चमः।

२ ३क २र ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
११६१. स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः।।

अनेक शक्तियोंवाला ज्ञानी उपासक आप्त विद्वानों द्वारा उनके सत्संग से पवित्र हो जाता है और उनके सद्वचनों से उसकी बुद्धि परिपक्व हो जाती है, तब वह परमेश्वर को प्राप्त करने के योग्य बन जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-द्विपदा विराट्। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २
११६२. प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः।।

हे शान्तस्वभाव आत्मन्! मुमुक्षुजनों ने तुम्हारे जीवन को संयमशील बनाया है और आदरणीय गुरुओं ने सद्वचनों के द्वारा तुम्हें शुभ गुणों से अलंकृत किया है, अब तुम परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की अमृतमयी गोद में जा बैठो।

सूक्त—११

ऋषिः-भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २
११६३. ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। ये वादः शर्यणावति।।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क २र २ ३ १२ ३ १ २
११६४. य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम्। ये वा जनेषु पञ्चसु।।

१ २ ३ २ ३२उ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
११६५. ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम्। स्वाना देवास इन्दवः।।

जो शान्तस्वरूप परमात्मा दूर—मोक्षधाम में है, जो समीप अर्थात् स्वात्मा में विद्यमान है वह **परमेश्वर** प्रणवरूप धनुष [**प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।** मुण्ड० २।३।४] के बल पर साक्षात् होता है, जो परमात्मा ऋजुगामी परमाणुओं में—सूक्ष्मभूतों में निवास करता है, कार्यद्रव्यों—पृथिवी आदि—स्थूलभूतों में रमा हुआ है, जो परमेश्वर पशु-पक्षी एवं वनस्पतियों में और जो प्रभु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद—इन सभी मनुष्यों में बसा हुआ है, वह महाप्राण, परम रसीला और आनन्दप्रद परमेश्वर हमारे लिए मोक्षधाम से आनन्दामृत की वृष्टि करे और हमें आत्मबल भी प्रदान करे।

सूक्त—१२

ऋषिः-वत्सः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
११६६. आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात्। अग्ने त्वां कामये गिरा।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आपके गुणों का गान करनेवाला, आपका प्रिय पुत्र मोक्षधाम से भी आपके मनन करनेयोग्य स्वरूप को अपनी आत्मा में खींच लाता है। प्रभो! मुझे सांसारिक भोग, वैभव, पुत्र-कलत्र=स्त्री, महल-अटारी कुछ भी नहीं चाहिए। मैं तो अपनी स्तुति-वाणियों द्वारा केवल आपको चाहता हूँ।

ऋषिः-वत्सः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २उ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २
११६७. पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि दिशो विश्वा अनु प्रभुः। समत्सु त्वा हवामहे।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप प्राणिमात्र के रक्षक हैं। आप अनेक प्रकार से प्राणियों की रक्षा करते हैं। आप निश्चय ही समान द्रष्टा हैं—प्राणिमात्र का रक्षण करने में समदर्शी हैं, विना भेदभाव के सबकी रक्षा करते हैं। सब दिशाओं के आप समानरूप से स्वामी हैं—सारे ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं। देवासुर-संग्राम में और आनन्द-अवसरों पर हम आपका स्मरण करते हैं—आपको पुकारते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
११६८. समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे। वाजेषु चित्रराधसम्।।

देवासुर-संग्रामों में और आनन्द प्रसंगों में हम अपनी रक्षा और आत्म-तृप्ति के लिए परमेश्वर का स्मरण करते हैं। धन और बल चाहनेवाले तथा विजय की कामनावाले हम उपासक सब प्रकार के धन और बलों की प्राप्ति में तथा संग्राम-विजय में अद्भुत सफलता प्रदान करनेवाले सर्वाग्रणी, प्रकाशस्वरूप परमेश्वर को पुकारते हैं, उसकी शरण लेते हैं।

सूक्त–१३

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–ककुबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
११६९. त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनासहम्।।

हे परमैश्वर्यशाली प्रभो! आप हमें आध्यात्मिक बल–दूसरों को प्रभावित करनेवाली शक्ति प्रदान कीजिए। हे अनन्त प्रज्ञान और कर्मोंवाले परमात्मन्! आप हमें सुख, यश–संयम और सदाचार का यश तथा धन एवं पौरुष प्रदान कीजिए। हे सर्वद्रष्टा! आप हमें वह वीरत्व=पराक्रम प्रदान कीजिए जिससे हम काम-क्रोध आदि की सब सेनाओं का पराभव कर सकें और मनुष्यों द्वारा किये जानेवाले मान-अपमान को सह सकें।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–कुकबुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
११७०. त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।।

हे सबको बसानेवाले परमात्मन्! सबको अपने आश्रय में बसाने के कारण आप ही हमारे पालन और रक्षण करनेवाले पिता हैं। हे अनन्त प्रज्ञान और कर्मोंवाले प्रभो! सबका निर्माण करनेवाले होने के कारण आप ही हमारी माता हैं। इसलिए अब हम आपके प्रति वैदिक स्तोत्रों का उच्चारण करना चाहते हैं और आपसे अपनी रक्षा चाहते हुए सुख–आनन्द-प्राप्ति के लिए याचना करते हैं।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–पुरउष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३२ ३१२ १ २ ३ १ २
११७१. त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे सहस्कृत। स नो रास्व सुवीर्यम्।।

शत्रुओं का शोषण करनेवाले बल से सम्पन्न प्रभो! हे सबसे पुकारे जानेवाले परमात्मन्! सहस्=आत्मतेज द्वारा साक्षात्करणीय परमेश्वर! हमारे लिए अन्न, बल, धन और ज्ञान प्राप्त करानेवाले आपकी हम विनयपूर्वक स्तुति करते हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें शम-दम आदि रूप आध्यात्मिक और मानसिक बल प्रदान करें।

सूक्त–१४

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ २उ ३ १ २
११७२. यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः।

२ ३ १ २ ३ १ २
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन् ! सर्वविलक्षण ! ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! मेरे पास ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसे मैं आपको समर्पित कर सकूँ। हृदय भी नीरस है, अतः प्रेम भी नहीं है, जिसे आपकी भेंट कर सकूँ। हे सर्वैश्वर्यसम्पन्न प्रभो ! आप अपने दोनों हाथों से हमें ज्ञान और प्रेमरूपी धन प्रदान कीजिए।

[परमात्मा की अनन्त शक्तियाँ ही उसके हाथ हैं। वह अनन्त हाथोंवाला है। यहाँ उदारता सूचित करने के लिए काव्यमयी शैली में दो हाथों का कथन है।]

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २र ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र
११७३. यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावनः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! जिस धन को आप दिव्य और वरणीय तथा उपासकों द्वारा संग्रहणीय समझते हैं उस दिव्य एवं वरणीय धन को हमें शीघ्र प्राप्त कराइए। हम धन-दाता आपके अनिन्दित पालन और पोषण करनेवाले दान को प्राप्त करनेवाले हों। हम उस धन को प्राप्त करें जिसके आगमन से हम दूषित न हों–हमारे और हमारी सन्तानों के चरित्र न बिगड़ें।

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
११७४. यत्ते दिक्षु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
तेन दृळ्हा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये।।

(क) सर्व अनिष्टों का विदारण करनेवाले परमेश्वर ! सब दिशाओं में बिखरा–फैला हुआ–सर्वत्र व्याप्त आपका जो प्रकृष्ट सफलता देनेवाला, मनन करने योग्य और वृद्धि का कारणभूत ज्ञान है उस ज्ञान के द्वारा आप हमारे लाभ के लिए, हमारे कल्याण के लिए हमें स्थिर शान्तिरूप धन प्रदान कीजिए अथवा **'वा+अजम्'**=हमारे अज्ञान, पाप और भ्रान्ति को विदीर्ण कर दीजिए।

(ख) हे आनन्दरूपी धनवाले परमात्मन् ! सब दिशाओं में–दिशाओं की प्रत्येक वस्तु में आपका जो प्रशंसनीय, प्रसिद्ध, श्रवण करने योग्य और अत्यन्त मनन करने योग्य स्वरूप है, अपने उस स्वरूप-दर्शन से आप हमारे हित के लिए हमें स्थिर अमृत-अन्नभोग=मोक्ष प्रदान करते हैं, अतः आप स्तुति के योग्य हैं।

।। यहाँ चतुर्थ प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ पञ्चमः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः। देवता—पवमानः सोमः। छन्दः—त्रिष्टुप्। स्वरः—धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
११७५. शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति विप्रं मरुतो गणेन।
३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।।

मुमुक्षुजन विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व आदि द्वारा अपने-आपको समलंकृत करते हैं और विविध कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, कमनीय, बुद्धियों को सूक्ष्म बनानेवाले, जीवात्माओं का सर्वतोमुखी विकास करनेवाले परमेश्वर का अन्वेषण करते हैं—परमेश्वर को खोजते हैं। वह क्रान्तदर्शी—महामेधावी और शान्तस्वरूप परमात्मा वेदवाणियों के द्वारा सब ज्ञानों का उपदेष्टा होता हुआ, कलात्मक व्यवहार से उपदेश करता हुआ पवित्र आत्मा को प्राप्त होता है।

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः। देवता—पवमानः सोमः। छन्दः—त्रिष्टुप्। स्वरः—धैवतः।

२ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३१ २ ३१ २ ३ २
११७६. ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रनीथः पदवीः कवीनाम्।
३ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ २ ३१२ ३ २
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप।।

परमेश्वर के साथ मेल होने पर अब इस उपासक का जीवन कैसा होता है? इसका मन ऋषियों के मन के समान तत्त्वद्रष्टा बनने का प्रयत्न करता है। यह स्वयं ऋषि बन जाता है—वेदों का साक्षात्कर्ता बनता है और अन्यों को भी ऋषि बनने की प्रेरणा देता है। यह मोक्ष का भागी बनता है। यह सबका नेता बनता है। यह तत्त्वदर्शियों के मार्ग पर चलनेवाला बनता है। यह महान् बनता है। यह सुख-दुःख से रहित, नित्यानन्दयुक्त मोक्षधाम को चाहता हुआ अत्यन्त विनम्र बनता है। यह परमेश्वर की स्तुति करनेवाला बनता है और विशेष दीप्तिवाले परमेश्वर की दीप्ति से चमक उठता है।

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः। देवता—पवमानः सोमः। छन्दः—त्रिष्टुप्। स्वरः—धैवतः।

३ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
११७७. चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति।।

यह उपासक निरन्तर परमेश्वर के ध्यान में ही मग्न रहता है, प्रशंसनीय जीवनवाला होता है—सदा उत्तम कर्म ही करता है। यह शक्तिशाली और कल्याणकारी होता है। यह परमेश्वर में विचरणशील होता है, सदा ज्ञान-प्राप्त करने के स्वभाववाला होता है। उपासना से द्रवित होनेवाला, सदा प्रसन्न रहनेवाला और इस प्रसन्नता से अन्यों को मोहित=आकृष्ट करनेवाला होता है। यह प्रभु के आनन्दरस की तरंगों का सेवन करनेवाला होता है और काम-क्रोध आदि शत्रुओं के विनाश के लिए विवेक-वैराग्य आदि आयुधों का धारण करनेवाला होता है। ऐसा प्रभु का पुजारी—महान् आत्मा परमेश्वर के आनन्दस्वरूप का सेवन करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—२

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३क २र
११७८. एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन्। वर्धन्तो अस्य वीर्यम्।।

परमेश्वर के आनन्दरस का पान करनेवाले इन उपासकों ने अपनी प्रिय कामना—मनोरथ—प्रभु-दर्शन की अभिलाषा को पूर्ण कर लिया है और अपने जीवन में इस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की प्रेरणाओं को (वि+ईर) बढ़ा लिया है अर्थात् इनके हृदय में ईश्वरीय प्रेरणाएँ अधिकाधिक होने लगी हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
११७९. पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना। ते नो धत्त सुवीर्यम्।।

प्राण-अपान की साधना करनेवाले, परमेश्वर की आज्ञा-पालन में तत्पर रहनेवाले, सत्य-सदाचार आदि द्वारा अपने को पवित्र बनानेवाले उपासक सारे ब्रह्माण्ड को गति देनेवाले परमेश्वर की ओर गति करते हैं। परमात्मा की ओर गति करनेवाले ये पवित्रात्मा हमें भी सर्वोत्तम सामर्थ्य और सुप्रेरणा दें जिससे हम भी परमेश्वर की ओर चलने और उसे प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
११८०. इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय। देवानां योनिमासदम्।।

हे शान्त एवं पवित्र सद्गुरो ! मुझे—मेरे जीवन को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनाइए। मुझे परमेश्वर की आराधना एवं प्रसन्नता के लिए प्रेरित करो जिससे मैं परमात्मा के उस मोक्षधाम को प्राप्त कर सकूँ जिसे प्राप्त करने की अभिलाषा सभी विद्वान् किया करते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २
११८१. मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः। अनु विप्रा अमादिषुः।।

हे सोम=उपासक जीवात्मन् ! चित्त के विक्षेपों को दूर करनेवाले दस यम-नियम तेरे जीवन को शुद्ध बनाते हैं और ज्ञानामृत पिलानेवाली सात छन्दोंवाली वेदवाणियाँ तुझे प्रेरणाएँ देती हैं तथा मेधावी विद्वान् भी तुझे उत्साहित करते हैं, अतः तुझे परमेश्वर की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना ही चाहिए।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३क २र १ २र
११८२. देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्यः। सं गोभिर्वासयामसि।।

हे सोम=जीवात्मन् ! तू अत्यन्त रक्षणीय है। सर्वप्रथम तुझे इन्द्रियों के विषयों से बचाने के लिए हम मेधावी विद्वान् वेदवाणियों के उपदेशों द्वारा आच्छादित करते हैं। शनैः-शनै ऐन्द्रिक सुख का परित्याग करते हुए तुम अन्त में परमानन्द को प्राप्त कर लोगे। इन्द्रियों के विषयों पर विजय-प्राप्ति से आमोद=प्रसन्नता प्राप्त होता है और अन्त में परमानन्द=मोक्ष की प्राप्ति होती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र २ १ २
११८३. पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः। परि गव्यान्यव्यत।।

अत्यन्त प्रकाशमान और सर्वदुःखहारी परमेश्वर आनन्दधारा में प्रवाहित होता हुआ हृदयरूपी कलश में प्रकट होता है। जीवों को अपना आश्रय प्रदान करता हुआ उन्हें वेदवाणी का ज्ञान प्रदान करता है अर्थात् उन्हें वैदिक मार्गनिष्ठ बनाता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १
११८४. मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः। इन्दो सखायमा विश।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप ब्रह्मज्ञानरूपी धन से सम्पन्न हम उपासकों को प्राप्त होओ–हमपर अपनी कृपा का वरदहस्त रक्खो। अपनी कृपा के फलस्वरूप आप हमारे काम-क्रोध, लोभ आदि सब शत्रुओं को नष्ट कर दीजिए। प्रभो! हम सब आपके सखा हैं–आपके समान धर्मा है। हम भी आपकी ही भाँति चेतन हैं, नित्य हैं, अतः हमें अपना सखा मानकर आप हमारे हृदय में प्रवेश करें–हमें अपना दर्शन दें।

[परमात्मा तो पहले ही हृत्प्रविष्ट है। इस कथन का तात्पर्य केवल इतना ही है कि हमें आपका सम्यक् ज्ञान हो।]

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २र
११८५. नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम्। भक्षीमहि प्रजामिषम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हम उपासक सब मनुष्यों के द्रष्टा, इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा द्वारा रसरूप में पान करने योग्य, सुख प्राप्त करानेवाले, प्रजारूप और अन्नरूप अथवा सब प्रजाओं को आनन्द प्रदान करनेवाले आपको भजें, आपका ध्यान करें, आपकी स्तुति करें। प्रभो! आप ही प्रजा हैं, आप ही अन्न हैं और आप ही हमारे सब-कुछ हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
११८६. वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि। सहो नः सोम पृत्सु धाः।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप हम उपासकों के लिए द्युलोक से आनन्दरस की धारा बहा दो और देह में यश की स्थापना कर दो अर्थात् हमारे जीवनों को आनन्दरस पूर्ण और यशस्वी बना दो तथा देवासुर-संग्रामों के अवसर पर काम-क्रोध आदि शत्रुओं को पराभव=पराजित करने का बल प्रदान करो।

सूक्त–३

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
११८७. सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः। वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम्।।

सहस्रों आनन्दधाराओं में प्रवाहित होनेवाला परमात्मा उस जितेन्द्रिय उपासक को प्राप्त होता है जिसने अपने मन को विषय-वासनाओं के मल से संस्कृत=निर्मल बना लिया है और सारी लौकिक इच्छाओं से रहित हो गया है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २

११८८. पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत। सुष्वाणं देववीतये।।

हे रक्षा चाहनेवाले उपासको ! तुम सब आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और जीवन को पवित्र करनेवाले, कामनाओं के पूरक और निरन्तर उत्तम प्रेरणा देनेवाले परमात्मा का खूब गुणगान करो। किसलिए? मोक्ष-प्राप्ति के लिए, प्रभु-दर्शन के लिए और दिव्य-गुणों को जीवन में धारण करने के लिए।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

११८९. पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः। गृणाना देववीतये।।

परमेश्वर के आनन्दरस का पान करनेवाले उपासक सहस्रों–अनेक प्रकार के बलों से युक्त होकर प्रजाजनों को ज्ञान प्रदान करने के लिए और उन्हें मोक्ष, प्रभु-प्राप्ति और दिव्य गुणों की प्राप्ति कराने के लिए सदुपदेश करते हुए सर्वत्र विचरते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

११९०. उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः। द्युमदिन्दो सुवीर्यम्।।

हे परम रसीले परमात्मन्! मोक्षधाम की प्राप्ति के लिए आप हमारी महती इच्छाओं–श्रेष्ठ कामनाओं–विवेक, ज्ञान, शम, दम आदि से सम्पन्न होने की भावनाओं को सिद्ध कीजिए और हमें तेजस्वी बल तथा यशोमयी धर्मवीरता भी प्रदान कीजिए।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २उ ३ १ २ ३ १ २

११९१. अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये। वि वारमव्यमाशवः।।

जैसे अश्वारोहियों द्वारा प्रेरित किये हुए अश्व संग्राम आदि में दौड़ते चले जाते हैं, उसी प्रकार आचार्यों द्वारा प्रेरित किये हुए शीघ्रकारी उपासक मोक्ष की प्राप्ति के लिए ज्ञान से देदीप्यमान, आसुरी वृत्तियों से रक्षण में सर्वोत्तम, वरणीय परमात्मा की ओर तीव्रता से बढ़ते जाते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २

११९२. ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम्। स्वाना देवास इन्दवः।।

साधनाशील, ज्ञानैश्वर्य-सम्पन्न, तेजस्वी विद्वान्– ये सब हमारे लिए आनन्दमय प्रभु के ज्ञानरूपी ऐश्वर्य को, अनेक प्रकार के लौकिक और आध्यात्मिक धनों को, सहस्रों सांसारिक धनों से श्रेष्ठ अत्यन्त उत्कृष्ट मोक्षरूपी धन को तथा यश प्रदान करनेवाले बल को प्राप्त कराएँ।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र

११९३. वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न मातरः। दधन्विरे गभस्त्योः।।

परमात्मा के सर्वोत्तम नाम 'ओम्' का नाद गुँजाते हुए तेजस्वी विद्वान् परमात्मा को प्राप्त करने के लिए

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उसकी ओर उसी प्रकार दौड़ते हैं जैसे गौएँ बछड़ों की ओर दौड़ती हैं। ये लोग अभ्यास और वैराग्यरूपी हाथों=साधनों से उस परमेश्वर को अपने हृदय में धारण करते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ २१ २र ३ १ २ २ ३ २३ १ २
११९४. जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमानः कनिक्रदत्। विश्वा अप द्विषो जहि।।

परमात्मा के प्रति प्रीतियुक्त, स्वयं में तृप्त, अतः उल्लासपूर्ण जीवनवाला, योग-साधना के द्वारा अपने जीवन को पवित्र करनेवाला विनीत उपासक परमात्मा से बारम्बार प्रार्थना करता है—हे प्रभो ! हमारे राग-द्वेष, काम-क्रोध आदि सारे शत्रुओं को और सब द्वेष-भावनाओं को हमसे दूर कर दो—नष्ट कर दो।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १२ ३१२ १ २ ३ १ २
११९५. अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः। योनावृतस्य सीदत।।

हे उपासको ! तुम अदानशीलता, कृपणता, असत्य की प्रशंसा और आत्मसमर्पण न करने की भावनाओं को परे धकेलते हुए; शम-दम, यम-नियम आदि योग के साधनों द्वारा अपने आपको पवित्र करते हुए मोक्ष-सुख को प्राप्त करानेवाले, संसार के नियामक और व्यवस्थापक, वेद के उपदेष्टा परमेश्वर की अमृतमयी गोद में बैठो।

सूक्त—४

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १
११९६. सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य धारया। इन्द्राय मधुमत्तमाः।।

सत्य-सदाचार आदि उत्तम गुणों को जीवन में धारण करने के कारण सत्यस्वरूप परमात्मा के अत्यन्त प्रिय, वेदवाणी के उपदेशों को जीवन में ढालने के कारण सुसंस्कृत, शुद्ध अन्तःकरण=मन, बुद्धि, चित्त, अहंकारवाले अतएव ज्ञान-ज्योति से प्रकाशमान सौम्य एवं विनम्र उपासक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को पाने के लिए—प्रभु-दर्शन के लिए ही इस संसार में मनुष्य-योनि में भेजे जाते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ २उ ३ १२ २ ३ १ २ ३ ३ १ २
११९७. अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न धेनवः। इन्द्रं सोमस्य पीतये।।

मेधावीजन—ब्रह्म के उपासक परमेश्वर के आनन्दरस का पान करने के लिए प्रातः-सायं परमैश्वर्यशाली परमात्मा की स्तुति और उपासना करते हैं और परमेश्वर के साथ ऐसा ही प्रेम करते हैं जैसे दुधारू गौएँ बछड़े के साथ प्रेम करती हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १२३ १ २ ३ १ २३ २ १ २ ३ १ २र ३ २
११९८. मदच्युत् क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित्। सोमो गौरी अधि श्रितः।।

गर्वरहित, विद्वान् उपासक को चाहिए कि वह दो ही स्थान पर निवास करे—लहरोंवाली नदियों के तट पर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथवा घर में वेद के स्वाध्याय में निरत रहते हुए। यदि शान्त-एकान्त में रहने की इच्छा हो तो किसी रमणीय नदी के तट पर बैठकर नदी की तरंगों की अठखेलियों से अपनी मन की तरंगों का अनुसन्धान करे—अपने तरंगित मन को शान्त करे। यदि एकान्त सम्भव न हो तो घर में रहकर ही अध्ययन-अध्यापन, स्वाध्याय में काल यापन करें। उपासक व्यर्थ की गप्पों में समय को नष्ट न करें।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ २
११९९. दिवो नाभा विचक्षणोऽव्या वारे महीयते। सोमो यः सुक्रतुः कविः।।

वह सर्वद्रष्टा—सबका पालक-पोषक, विश्व-रचयिता, क्रान्तदर्शी, सर्वज्ञ, वेदकाव्य का निर्माता, शान्तस्वरूप परमात्मा मोक्षधाम में विद्यमान है और वही पार्थिव—पञ्चभौतिक परन्तु वरणीय हृदय-देश में भी परमपूज्य रूप में विराजमान है। परमात्मा सर्वव्यापक है। वह द्युलोक में भी है और पृथिवी के गर्भ में भी है। वह मोक्षलोक में भी है और शरीरस्थ हृदय में भी है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ २उ ३ १ २
१२००. यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः। तमिन्दुः परि षस्वजे।।

जो शान्तस्वरूप परमात्मा रचना-कौशल से परिपूर्ण आकाशीय सूर्य-चन्द्र, नक्षत्र आदि पिण्डों में शोभायमान है और जो पवित्र अन्तःकरणों = मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार में विद्यमान है, ज्ञानी उपासक उस परम रसीले परमेश्वर का आलिंगन करता है—उसके साथ मेल—संगति करता है, उसके आश्रय में रहता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१२०१. प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि। जिन्वन् कोशं मधुश्चुतम्।।

परम रसीला परमेश्वर नदी-तट पर अथवा गृह में रहकर उपासना करनेवाले उपासक की स्तुतिपूर्ण वाणियों को—प्रार्थना-वचनों को चाहता है—सुनता है एवं स्वीकार करता है और फलस्वरूप उपासक के मधुर उपासनारस-स्रावी—रस टपकानेवाले हृदयकोश को आनन्द से तृप्त कर देता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
१२०२. नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धेनामन्तः सबर्दुघाम्। हिन्वानो मानुषा युजा।।

सदा स्तुति करनेयोग्य, सूर्य-चन्द्र आदि प्रकाशकों का प्रकाशक परमात्मा योग में युक्त होनेवाले मनुष्यों को सन्मार्ग में लगे रहने की प्रेरणा करता हुआ उपासकों के हृदयों में मोक्षरूपी दुग्ध का पान करानेवाली वेदवाणी को स्थापित करता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१२०३. आ पवमान धारया रयिं सहस्रवर्चसम्। अस्मे इन्दो स्वाभुवम्।।

हे परमरसीले, आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और सबको पवित्र करनेवाले परमात्मन्! आप हम उपासकों को सहस्रों दीप्तियोंवाले अर्थात् अत्यन्त तेजस्वी, शोभन सत्तावाले—स्थिर रूप से ठहरनेवाले, उत्तम सामर्थ्य से युक्त ज्ञान, मोक्ष और बलरूप धन प्राप्त कराइए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २र ३ २ १ २ ३ १ २
१२०४. अभि प्रिया दिवः कविर्विप्रः स धारया सुतः। सोमो हिन्वे परावति।।

(क) सर्वप्रेरक और सर्वोत्पादक परमेश्वर दूर देश में विद्यमान द्युलोक के सुन्दर लगनेवाले नक्षत्रों और तारागणों में गति दे रहा है—उन्हें नियम और व्यवस्था में चला रहा है। वह मेधावी, तृप्तिकारक परमेश्वर ध्यान-धारणा द्वारा हृदय-मन्दिर में प्रकट किया जाता है।

(ख) वह क्रान्तदर्शी, सर्वज्ञ, तृप्तिकारक—विविध प्रकार से पालन और पूरण करनेवाला शान्तस्वरूप परमात्मा स्तुति-वाणी अथवा वेद-वाणी द्वारा हृदय-सदन में प्रकट किया जाता है। हृदय में प्रकट किया गया वह परमात्मा मोक्षधाम के कमनीय सुखों को दूर देश में भी—जहाँ कहीं भी स्तुति की गई हो वहाँ, प्रेरित करता है।

सूक्त—५

ऋषिः–उचथ्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१२०५. उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः। वाणस्य चोदया पविम्।।

(क) हे उपासक ! तेरे शत्रु-शोषक बल वृद्धि को प्राप्त हो रहे हैं। समुद्र में उठनेवाली तरंगों की ध्वनि के समान तुम्हारी ध्वनि=आवाज है। तुम्हारी वाणी गर्जनापूर्ण है—वाणी में ओज और बल है। तू अपनी जीवनरूपी वीणा से (सौ तारोंवाली सितार से) मधुर स्वर को प्रेरित कर। तेरा सौ वर्ष का जीवन सौ तारोंवाली वीणा के समान है। इस जीवन-वीणा से सौ-के-सौ वर्ष शुभ, मधुर, मंगलमय और हितकर शब्दों का ही उच्चारण होता रहे।

(ख) हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! समुद्र की तरंगों की प्रभावक ध्वनि के समान आपके सृष्टि-रचना-सम्बन्धी बल-कौशल संसार में प्रख्यात हो रहे हैं। यह आपका शिल्पात्मक कार्य है। आपका दूसरा ज्ञानात्मक कार्य है—आप अपने शब्दभण्डार वेदरूपी वीणा की मधुर-वाणी को प्रेरित करते हो।

ऋषिः–उचथ्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ २उ ३ २ ३ १ २
१२०६. प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि।।

(क) हे उपासक ! जब तू सर्वोच्च और रक्षण में उत्तम प्रभु में गति करता है, अर्थात् ब्रह्मनिष्ठ होकर कार्य करता है तब यज्ञशील तेरे प्रकृष्ट यज्ञों में ऋग्, यजुः और सामरूप तीन वाणियाँ उच्चरित होती हैं।

(ख) हे शान्तस्वरूप परमात्मन् ! सर्गारम्भ में—सृष्टि-उत्पत्ति के समय संसार-यज्ञ के रचनेवाले आपकी ऋग्, यजुः, सामरूपी तीन वाणियाँ प्रकट होती हैं। ये कहाँ प्रकट होती हैं? पृथिवी के सर्वोच्च स्थान त्रिविष्टप पर तथा पार्थिव देह के सम्भजनीय स्थान ऋषियों के हृदय में, जब आप वहाँ प्रकट—साक्षात् हो जाते हैं।

ऋषिः–उचथ्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
१२०७. अव्या वारैः परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। पवमानं मधुश्चुतम्।।

उपासक अपने-आपको वासनाओं के आक्रमण से बचाने के द्वारा, वरणीय साधनों—मन, वाणी आदि से स्तुति के द्वारा और दृढ़ संकल्पों के द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार करते हैं। किस परमात्मा का? उसका जोकि आत्मिक तृप्ति देनेवाले हैं, उपासकों के जीवन को पवित्र करनेवाले हैं, दुःखों का हरण करनेवाले हैं और सबको आनन्द देनेवाले हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–उचथ्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२०८. आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम्।।

हे उल्लासमय जीवनवाले—अत्यन्त प्रसन्न स्वभाववाले, क्रान्तदर्शिन्! तू अर्चनीय—पूजनीय परमेश्वर के पवित्र स्थान—अमृतमयी गोद में बैठने के लिए वेदवाणी के अनुसार तीव्रता से गतिमान् हो अर्थात् तेरे सभी कार्य वेदानुसार ही हों।

ऋषिः–उचथ्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२०९. स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः इन्द्रस्य जठरं विश।।

हे उल्लासमय जीवनवाले—अत्यन्त प्रसन्न मनोवृत्तिवाले उपासक! तू वेदवाणियों के अनुसार गतिशील हो अर्थात् वैदिक कर्मों को करते हुए और अवैदिक कर्मों को त्यागते हुए तू अपने जीवन को पवित्र बना और शान्त रात्रियों में उपासना द्वारा अपने जीवन को सद्गुणों से अलंकृत करता हुआ तू परमात्मा के उदर में समा जा—परमात्मा में स्थित हो जा, परमात्मा के आश्रय में रह।

सूक्त –६

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२१०. अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप आनन्दरसमयी धारा में उपासक के जीवन में—शरीर के अंग-प्रत्यंग में प्रवाहित हो जाओ। इस रीति से प्रवाहित होओ कि इसके सभी दुर्गुण नष्ट हो जाएँ, पाप-वासनाएँ भस्म हो जाएँ, और जीवन में कान्ति उत्पन्न होकर इसे नया आध्यात्मिक जन्म प्राप्त हो जाए। आपके द्वारा दिये आनन्दों में निमग्न रहकर यह उपासक ९९ वर्ष की आयु को पूर्णतया प्राप्त करे।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२११. पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शंबरम्। अध त्यं तुर्वशं यदुम्।।

सबका उपास्य परमेश्वर सत्य कर्मों—सुकर्मों का अनुष्ठान करनेवाले, सत्यज्ञान—यथार्थ ज्ञानवाले, मोक्ष-प्राप्ति के अभिलाषी उपासक के कल्याण के लिए शान्ति को भंग करनेवाले क्रोध को, शीघ्रता से अपने वश में कर लेनेवाले काम को और निरन्तर औरों से धन हड़प लेने की वृत्ति लोभ को उपासक के सामने ही तत्काल मार डालता है—नष्ट कर देता है।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२१२. परि णो अश्वमश्वविद् गोमदिन्दो हिरण्यवत्। क्षरा सहस्रिणीरिषः।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप उत्तम कर्मेन्द्रियों को प्राप्त करानेवाले हैं, अतः 'हमें उत्तम कर्मेन्द्रियाँ प्राप्त कराइए। उत्तम कर्मेन्द्रियों के साथ-साथ आप हमें उत्तम ज्ञानेन्द्रियां भी प्राप्त कराइए। साथ ही उत्तम धन और हित-रमणीय गुण भी प्राप्त कराइए।' इस प्रकार की हमारी सहस्रों इच्छाओं को पूर्ण कीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—७

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २

१२१३. अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्।।

(क) शान्तस्वरूप परमात्मा उपासक के हिंसक-भावों और पाप-वासनाओं को दूर करता हुआ, अदान-भावनाओं और असत्य-प्रशंसा की प्रवृत्तियों को दूर हटाता हुआ जितेन्द्रिय पुरुष के काम-क्रोध-लोभ आदि से शून्य संस्कृत हृदय में जाने के हेतु से आनन्दधारारूप में प्रवाहित होता है।

(ख) सौम्य और विनीत उपासक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के पवित्रधाम—मोक्ष में जाने के लिए मनुष्य के हिंसाकारी 'काम, क्रोध और लोभ को नष्ट करता है, न देने की वृत्ति—अदानशीलता, कृपणता को भी दूर करता है। इस प्रकार अपने जीवन को पवित्र बनाता है और अन्त में अपने लक्ष्य तक पहुँच जाता है।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १२ ३ १ २र १ २ ३ २ ३ १ २

१२१४. महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः। रास्वेन्दो वीरवद्यशः।।

हे परम रसीले! आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और जीवन को पवित्र बनानेवाले परमात्मन्! आप हमें महाधन=मोक्ष प्रदान कीजिए। इस मोक्षधन की प्राप्ति के लिए हमारे काम-क्रोध आदि शत्रुओं को नष्ट कर दीजिए और पराक्रमशीलता से युक्त यश प्रदान कीजिए अथवा हमें ऐसा यश प्रदान कीजिए कि वीर लोग भी हमारा कीर्तिगान करें।

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१२१५. न त्वा शतं च न ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्। यत्पुनानो मखस्यसे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! जब आप उपासकों के जीवनों को पवित्र करते हुए उनके उपासना-यज्ञों को निर्विघ्न सिद्ध—पूर्ण करना चाहते हैं, तब उन्हें आध्यात्मिक सफलताएँ, सिद्धियाँ और नाना प्रकार का धन देते हुए आपको सैकड़ों कुटिलजन और सैकड़ों बाधाएँ भी नहीं रोक सकतीं।

सूक्त—८

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २

१२१६. अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! संसार को गति देते हुए आप जिस धारा—धारणशक्ति से सूर्य को चमकाते हैं, अपनी उसी धारा—आनन्दरसधारा से मनुष्य के भीतर वर्तमान प्राणों को, इन्द्रियों को, रस-रक्त को आप्लावित—सराबोर कर दीजिए।

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२ ३ १ २

१२१७. अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे।।

सर्वत्र सरणशील—सर्वव्यापक, सबको सदा उत्तम प्रेरणा देनेवाला, आनन्दधारा में प्रवाहित होनेवाला

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और सबको पवित्र करनेवाला परमेश्वर विद्वान् और मननशील उपासक में चित्रित अश्वों को अर्थात् विविध क्रियाओं को करनेवाले इन्द्रियरूप घोड़ों को जोड़ता है। किसलिए? इसलिए कि मनुष्य अध्यात्म मार्ग में गतिशील हो—मनुष्य भोग-विलास की रुचिवाला न होकर प्रभु-प्रवण (ईश्वर की ओर झुकाववाला) बने, अपनी आत्मा का अनुसन्धान करे।

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ २ ३ २ ३ १ २ ३ २

१२१८. उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे। इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्॥

जीवन के उद्देश्य को समझकर अब परमात्मा के प्रति सरणशील उपासक अध्यात्म मार्ग में गमन करने के लिए उन प्रसिद्ध इन्द्रियाश्वों को जो विषयों की ओर हरण करते हैं, परम रमणीय परमात्मा में जोड़ देता है। परमात्मा के आनन्दरस का पान करके उसकी महिमा को अनुभव करनेवाला जितेन्द्रिय पुरुष सहसा पुकार उठता है—हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! तू परम रसीला है।

सूक्त—९

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१२१९. अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम्।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २

यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः॥

हे मेधावी उपासको! तुम लोग अन्य विद्वानों द्वारा प्रीतिपूर्वक उपासित, दानशील और पूज्यतम, कुमार्ग से बचानेवाले और सदा सुप्रेरणा देनेवाले, प्रकाशस्वरूप और आनन्दप्रद परमात्मा को उपासना-यज्ञ में अपने हृदय-मन्दिर में प्रकट करो। उस परमात्मा को जो मरणधर्मा मनुष्यों में नित्य है, अजर और अमर है, सत्यस्वरूप है, महा तेजस्वी है, संसार का शिरोमणि है, स्वयं परम पावन है और अन्यों को पवित्र करनेवाला है।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

१२२०. प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद्व्यस्थात्।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति॥

जब उपासक अश्व=सर्वव्यापक परमात्मा के साथ मेल करता है, उसकी संगति और उपासना करता है तब उसकी रक्षा करने में अत्यन्त समर्थ परमेश्वर बड़ी-बड़ी विघ्न-बाधाओं से, आपत्तियों से उसकी रक्षा करता है एवं वायु इसके अनुकूल होकर बहने लगती है। हे अग्निस्वरूप परमात्मन्! आपके तेज का जीव की ओर जाना—आपका उपासक की रक्षा का संकल्प लेना उसके सारे दुःखों, कष्टों और प्रतिकूलताओं को समाप्त कर देता है।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २र ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

१२२१. उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २

अच्छा द्यामरुषो धूम एषि सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान्॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! सुखवर्षक और सर्वमनोरथों के पूरक आपके हृदय-मन्दिर में साक्षात् हो जाने पर उपासक के जीवन में अजर-अमर ज्ञान-ज्योतियाँ प्रकट हो जाती हैं। उस समय आरोचमान=तेज से अत्यन्त प्रकाशमान, शान्त, काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कँपा देनेवाला परमेश्वर उपासकों को मोक्षधाम की ओर ले-जाता है और उनके मार्ग में आनेवाले अवरोधों को दूर करके उनके हृदय-मन्दिरों में प्रकट हो जाता है।

सूक्त—१०

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २र ३२ ३२३ १ २ १ २र ३ १ २
१२२२. तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्॥

हम सर्वप्रसिद्ध और परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की स्तुति करते हैं। किसलिए? ज्ञान पर पर्दा डालनेवाले और काम-क्रोध आदि पाप-वासनाओं को नष्ट करने के लिए। वह सुखवर्षक और कामनापूरक परमेश्वर हमें सुख प्रदान करने और हमारे मनोरथों को पूर्ण करने में सर्वथा समर्थ है।

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २उ ३ २
१२२३. इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः। द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः॥

(क) सर्वप्रसिद्ध, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर कर्मफल प्रदान करने में पूर्ण समर्थ है। वह अत्यन्त ओजस्वी है। उसके सृष्टि-उत्पत्ति और पालन-पोषणरूप बल कार्य करने में संलग्न हैं। वह तेजस्वी, यशस्वी और शान्तस्वरूप है।

(ख) इन्द्रियों का अधिष्ठाता जीवात्मा सब प्रकार के पदार्थों को देनेवाले परमात्मा के लिए ही नियुक्त है अर्थात् उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य परमात्मा की प्राप्ति है। यह जीव निर्बल न होकर अत्यन्त तेजस्वी है। यह बलशाली बनकर अपना और अन्यों का हितसाधन करता है। यह ज्योतिर्मय, शक्तिशाली, ऐश्वर्यशाली, प्रभु-प्रेरणा को सुननेवाला और त्यागवृत्ति वाला होता है। यह प्रभु-स्तवन करनेवाला और यशस्वी होता है तथा विनीत और शान्त स्वभाववाला होता है।

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ १ २र ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ १ २र
१२२४. गिरा वज्रो न सम्भृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष उग्रो अस्तृतः॥

(क) वह परमेश्वर पाप-वृत्र के लिए वज्र के समान है। वेदवाणी के स्वाध्याय से और स्तुति-उपासना से अपनाया जाता है—हृदय में धारण किया जाता है। वह महाबलवान् है। वह अच्युत् है। वह बड़े-से-बड़ों को गिरा देता है परन्तु वह किसी से नहीं गिराया जा सकता। वह अत्यन्त तेजस्वी है, अविनाशी है और संसाररूपी शकट का वहन करनेवाला है।

(ख) परमात्मा के आशीर्वाद से उपासक शरीर की दृष्टि से वज्र के समान दृढ़ बन जाता है। वह उपासना-मार्ग में या जीवन-मार्ग में आनेवाले सब विघ्नों को दूर करने में पूर्ण समर्थ हो जाता है। वह मानस और आत्मबल से पूर्ण हो जाता है। वह अपने कर्तव्य-मार्ग से भ्रष्ट नहीं होता। निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ, जीवन और मृत्यु उसे न्यायपथ से विचलित नहीं कर सकते। यह उदात्त स्वभाववाला बनता है। काम-क्रोध आदि विकार इसकी हिंसा नहीं कर सकते। यह अहिंसक और अजेय बनता हुआ अपने जीवन-पथ पर आगे बढ़ता जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–११

ऋषिः–उचथ्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २३ १२ ३१ २र ३२३ १२ ३ १ २३ १२

१२२५. अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे।।

हे हिंसारहित उपासना-यज्ञ के याजक महापुरुष! आप आदरणीय–पतन एवं विनाशरहित, स्व-पर के समुद्धारक ज्ञानी भक्तों के साथ मिलकर पवित्र हृदय में निष्पादित परमात्मा के आनन्दरस का पान हमें भी कराओ। प्रभो! जीवात्मारूप इन्द्र आपके आनन्दरस का पान कर सके इसके लिए इसके जीवन को वासनाओं से शून्य, शुद्ध, पवित्र और निर्मल बना दो।

ऋषिः–उचथ्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३२उ ३क २र १२ ३ १ २

१२२६. तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्याशत। पवमानस्य मरुतः।।

हे परम रसीले परमात्मन्! मुमुक्षुजन और दिव्य गुणसम्पन्न विद्वान् आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और उपासकों के जीवनों को पवित्र करनेवाले, अत्यन्त रोचमान–प्रकाशमान आपके मधुर आनन्दरस का पान करते हैं और दिव्यस्वरूप आपका ध्यान करते हैं।

ऋषिः–उचथ्यः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३१२ ३२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२

१२२७. दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। सुनोता मधुमत्तमम्।।

हे उपासको! तुम मोक्षधाम के अमृत, अत्युत्तम–सर्वोत्तम, मधुररसपूर्ण–आनन्दमय, शान्तस्वरूप परमात्मा को ओजस्वी आत्मा की तृप्ति के लिए अपने हृदय-मन्दिर में प्रकट करो–योगाभ्यास द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार करो।

सूक्त –१२

ऋषिः–कविः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

३ २ ३१ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ १ २

१२२८. धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।

१ २ ३२उ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २

हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा।।

शान्तस्वरूप परमात्मा मोक्षलोक का धारक है, उपासना–योगाभ्यास द्वारा प्राप्त करने योग्य है, रसरूप है–आनन्दमय है, मुमुक्षुओं का प्राण है–प्राणप्रिय है, मनुष्यों द्वारा स्तुति करने योग्य है। वह उपासकों के त्रिविध दुःखों का हरण करनेवाला है और उपासकों के जीवनों को पवित्र करता है। वह वायु के समान सर्वव्यापक है, आस्तिक जनों द्वारा हृदय में उपासित किया जाता है। वह उपासना करनेवाले लक्ष्य-साधकों और स्तुति करनेवाली प्रजाओं को अनायास प्राप्त हो जाता है।

ऋषिः–कविः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २ १२ ३ १ २र

१२२९. शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वा३ः सिषासन् रथिरो गविष्टिषु।

१ २ ३ १ २ ३१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जैसे शत्रुओं का संहारक शूरवीर अपने हाथों में अस्त्र और शस्त्रों को धारण करता है, उसी प्रकार विश्व-रथ का स्वामी—सारे ब्रह्माण्ड का सञ्चालक, आध्यात्मिक यज्ञ करनेवाले उपासकों को मोक्षसुख देने की इच्छा करते हुए कृपा और प्रसादरूप आयुधों=रक्षण-साधनों को धारण करता है। परम रसीला, आनन्दस्वरूप परमेश्वर उपासक आत्माओं में आत्मिक बलों को प्रेरित करता हुआ और उन्हें योग-मार्ग में आगे बढ़ाता हुआ मननशील, योगाभ्यासी योगियों द्वारा हृदय में अभिव्यक्त, प्रकट, साक्षात् किया जाता है।

ऋषिः-कविः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३२३ १ २
१२३०. इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश।
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र नः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया नो वाजाँ उप माहि शश्वतः।।

आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाले और जीवों को पवित्र करनेवाले हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अपनी आनन्दमयी तरंगों से गति करते हुए—रसधारा में बहते हुए इन्द्रियों के अधिष्ठाता आत्मा के मध्य में—मन-बुद्धि, चित्त, अहंकार में प्रविष्ट हो जाओ, बस जाओ, रम जाओ। हमें अपनी आनन्दधाराओं से सींच दो। जैसे वर्षाकालीन मेघों की विद्युत् दिशाओं को प्रकाशित कर देती हैं, उसी प्रकार आप जीवों के कल्याण के लिए ज्ञान आदि प्रदान द्वारा लोकों में स्थित जीवों को समृद्ध करो तथा सद्बुद्धियों और सत्कर्मों के साथ-साथ ऐसा शाश्वत बल प्रदान करो जिससे हम काम-क्रोध आदि आन्तरिक शत्रुओं का नाश कर सकें और ज्ञान, सत्य, सदाचार आदि गुणों को बढ़ा सकें।

सूक्त—१३

ऋषिः-देवातिथिः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

१२ ३ २उ ३ २३क २र ३२ ३ १ २
१२३१. यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः।
१ २ ३ १ २र ३ २३१ २ ३१२
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप नर-नारियों द्वारा पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण—सब दिशाओं में पुकारे जाते हैं। हे सर्वश्रेष्ठ परमात्मन्! आप उन पुकारनेवालों की पुकार सुनते हैं और उनके लिए प्रेरक बन जाते हैं। आप स्तुति करनेवाले और आत्मसमर्पक उपासक के लिए समीप स्थित होकर उन्हें आनन्दामृत से तृप्त करनेवाले हो जाते हैं।

ऋषिः-देवातिथिः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १२३ २ ३ १ २ ३१२ ३ १ २
१२३२. यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा।
१ २ ३ १२३ १२ ३ १ २र ३ १ २
कण्वासस्त्वा स्तोमेभिर्ब्रह्मवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जो सदा सच्चे हृदय से आपकी स्तुति करनेवाले हैं, राग-द्वेष आदि दुर्वृत्तियों का नाश करनेवाले, क्रियाशील—अध्यात्म मार्ग में चलनेवाले और आत्मबलवाले उपासकों को आप समान रूप से हर्षित करते हैं। जो पाप-शून्य एवं मेधावी तथा हृदय में निरन्तर आपका ध्यान करनेवाले उपासक स्तुतियों द्वारा अपने-आपको आपके चरणों में अर्पित करते हैं, हे इन्द्र! आप उनके हृदय में आओ—उन्हें अपने दर्शन दो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१४

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
१२३३. उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत्।।

हम परमात्मा से दो बातें चाहते हैं– प्रथम तो यह है कि अन्तर्यामिरूप में हमारे अन्दर विद्यमान परमैश्वर्यशाली परमेश्वर हमारे वेदवाणी के अनुकूल कहे गये प्रार्थना-वचनों को सुने और हमारी प्रार्थनाओं को पूर्ण करे। दूसरी यह है कि प्रशस्त धनवाला और सब बलों का स्वामी परमात्मा हमारे उपासनारस को स्वीकार करने के लिए हित-बुद्धि से हमें प्राप्त हो।

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

२उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१२३४. तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसा धिषणे निष्टतक्षतुः।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः।।

सर्वप्रसिद्ध, अपनी सत्ता से स्वयं देदीप्यमान, सुख-वर्षक और उपासकों के मनोरथों के पूरक, अपने बल से संसार के उत्पादक और पालक परमात्मा को हम अपनी प्रज्ञा और भक्ति, मन और बुद्धि, स्तुति और विद्या से प्रकट करते हैं—साक्षात् करते हैं। हे परमेश्वर ! उपमाओं में सर्वश्रेष्ठ उपमारूप आप हैं अथवा उपासना करने योग्यों में सर्वोपरि उपास्यदेव आप ही हैं, अन्य कोई नहीं। आपके उपासक का मन उपासनारस की कामनावाला है—आपका उपासक आपको चाहता है।

सूक्त—१५

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१२३५. पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा।।

हे आनन्दप्रद परमेश्वर ! आप आनन्दधारा में प्रवाहित होते हुए हमारे हृदय-मन्दिर में छलको-हमें प्राप्त होओ। आपका आनन्दरस इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा को निरन्तर प्राप्त होता रहे। आप अपने धर्म—जीवों की कल्याण-कामना से उपासक की आयु को बढ़ाओ।

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
१२३६. पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम्। इन्दो समुद्रमा विश।।

(क) आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले हे शान्तस्वरूप परमेश्वर ! आप भक्तों को ज्ञान, वैराग्य आदि प्रशंसनीय धन प्रदान करते हैं। हे परम रसीले परमात्मन् ! इस धन के दान के साथ आप उपासक के मन में भी प्रविष्ट हो जाओ– उपासक के मन को भी अपनी ज्योति से ज्योतिर्मय कर दो

(ख) अपने जीवन को पवित्र करनेवाले शान्त एवं विनीत स्वभाव जीवात्मन् ! तू यश और कीर्ति देनेवाले सांसारिक धन को त्याग दे और हे ज्ञान-ज्योति से दीप्त उपासक ! तू आनन्द-सागर परमात्मा में प्रविष्ट हो जा—अपने मन को परमात्मा में लगा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १२ २ ३ ० २ ३२ ३१ २र ३ १२
१२३७. अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः। नुदस्वादेवयुं जनम्।।

हे सौम्य और विनीत उपासक! तू काम-क्रोध आदि शत्रुओं को नष्ट करता हुआ अपने जीवन को पवित्र करता है। हे प्रज्ञालोक से सम्पन्न, कर्मशील और दृढ़ संकल्पी उपासक! तू नास्तिक जनों को परे हटा दे और प्रभु के साथ मेल करके आनन्द का सरोवर बन जा।

सूक्त –१६

ऋषिः–अम्बरीषः, ऋजिश्वा च। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १२
१२३८. अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम्।
१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम्।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप हमें मोक्षरूपी वह ऐश्वर्य प्रदान कीजिए जोकि अतिशय बल प्रदाता है, सब उपासकों द्वारा वाञ्छनीय है–कमनीय है, सहस्रों प्रकार से उपासकों को पुष्ट करनेवाला है, अत्यन्त यश प्रदाता है और अपने अलौकिक प्रकाश से अन्य सारे प्रकाशों को आभाहीन–तुच्छ बनानेवाला है।

ऋषिः–अम्बरीषः, ऋजिश्वा च। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १२
१२३९. वयं ते अस्य राधसो वसोर्वसो पुरुस्पृहः।
१ २र ३ १ २र ३ १ २
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्ने ते अध्रिगो।।

हे सबको बसानेवाले और सबमें बसनेवाले परमात्मन्! हम उपासक आपके सब कर्मों को सिद्ध करनेवाले धन की प्रबल कामना करनेवाले हों। हम आपकी प्रेरणाओं के अत्यन्त निकट रहें–हम सदा आपकी प्रेरणाओं को सुनते रहें और उनके अनुसार कर्म करते रहें। हे सर्वव्यापक प्रभो! हम सदा आपकी शरण में रहें, आपके आनन्द में निमग्न रहें–हमारा मन सदा आपमें ही रमण करे।

ऋषिः–अम्बरीषः, ऋजिश्वा च। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१२४०. परि स स्वानो अक्षरदिन्दुरव्ये मदच्युतः।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा न याति गव्ययुः।।

परम रसीला, उपासकों के जीवन में आनन्दरस क्षरित करने–टपकानेवाला वह परमेश्वर जीवन में उत्साह का सञ्चार करता हुआ रक्षणीय उपासक में पूर्णरूप से प्रवाहित हो जाता है। वह सर्वोपरि परमात्मा उपासक के लिए ज्ञान-दुग्ध प्रदान करने की कामना से अपनी ज्योति और आनन्दमयी धारा के साथ उपासक के हिंसारहित उपासना-यज्ञ में प्रकट हो जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–१७

ऋषिः–अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र

१२४१. पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप महान् हैं– सबसे बड़े हैं, श्रेष्ठ हैं, सर्वोत्कृष्ट हैं, आनन्द के सागर हैं। आप ही मेरी इन्द्रियों के रक्षक हैं–उन्हें विषयों में जाने से बचानेवाले हैं। आप मेरे सब जीवन-केन्द्रों–मूलाधार आदि सब चक्रों में प्रवाहित हो जाइए।

ऋषिः–अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २

१२४२. शुक्र पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाभ्यः।।

(क) हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अत्यन्त पवित्र, तेजस्वरूप और शीघ्रकारी हैं। आप विद्वानों के लिए, इन्द्रियों के लिए, द्युलोक के लिए–द्युलोक के निवासियों के लिए, समस्त पृथिवी-निवासियों के लिए और सब प्रजाजनों के लिए सुख, शान्ति और आनन्द प्रदान कीजिए।

(ख) हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप शुभ्र दीप्तिवाले हैं। आप उपासकजनों के प्राण के लिए, शरीर और इन्द्रियों के लिए कल्याणरूप होकर उपासक के प्राण, शरीर और इन्द्रियों में आनन्दधारारूप में प्रवाहित हो जाइए–इन सबको अपने आनन्दरस से सींच दीजिए।

ऋषिः–अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २

१२४३. दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप द्युलोक और मोक्षधाम के धारक हैं। आप पवित्र और तेजःस्वरूप हैं। आप अमृतस्वरूप हैं तथा अत्यन्त बलवान् हैं। आप अपने उपासकों को सत्य में धारण करनेवाले–सत्यनिष्ठ बनानेवाले हैं–ऐसे आप हमारे जीवन में धारारूप में प्रवाहित हो जाइए।

सूक्त–१८

ऋषिः–उशना काव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २र

१२४४. प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! अत्यन्त कान्तिमान्–सहस्रों सूर्यों की आभा के समान दीप्त, स्वाभाविक स्नेह करनेवाले मित्र की भाँति तृप्तिकर, पृथिवी पर चलनेवाले रथ की भाँति मेरे अन्तःकरण में रमण करने योग्य, अतिथि के समान आदर करने व पूजा के योग्य आपकी मैं स्तुति करता हूँ। आपका यशोगान–आपकी गौरव-गाथा का गान करता हूँ।

ऋषिः–उशना काव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २र ३ २

१२४५. कविमिव प्रशंस्यं यं देवास इति द्विता। वि मर्त्येष्वादधुः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जिस परमात्मा की वेदों में कविरूप में प्रशंसा की गई है अथवा जिसे क्रान्तदर्शी कहा गया है, विद्वान् लोग जिसके सम्बन्ध में यह कहते हैं कि वह परमात्मा दो रूपोंवाला है– सगुण और निर्गुण है–दयालु आदि गुणों के कारण वह सगुण है और निराकार, अकाय आदि गुणों के कारण निर्गुण है–ऐसे परमेश्वर को मनुष्यों में विद्वान् लोग अपने जीवन में धारण करते हैं–प्रकट करते हैं।

ऋषिः–उशना काव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ २३१ २र
१२४६. त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुहि गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना।।

सदा अखण्डैकरस रहनेवाले, कभी वृद्ध और जीर्ण न होनेवाले, युवतम परमात्मन्! आप आपके प्रति आत्मसर्मपण करनेवाले उपासक नर-नारियों की रक्षा कीजिए, उनके प्रार्थना-वचनों को सुनिए और आपके पुत्ररूप अपने उपासकों की आप स्वयं रक्षा कीजिए–उन्हें सुमार्ग में प्रेरित कीजिए।

सूक्त–१९

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २ ३ १२ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १
१२४७. एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य। गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः।।

हे परमप्रिय! सदा विजयशील! दृष्टि से ओझल न करनेयोग्य! परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप आकाश में छाये हुए मेघ के समान सर्वत्र छाये हुए हैं– सर्वव्यापक हैं, सबसे महान् हैं, मोक्षधाम के स्वामी हैं। आप हमें प्राप्त होओ–हमारे हृदय-मन्दिर में अपना दर्शन दो।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ २
१२४८. अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी। इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः।।

हे सत्यस्वरूप परमात्मन्! आप निश्चय ही अपने भक्तों के रक्षक हैं। आपने अपने अनन्त सामर्थ्य से द्युलोक और भूलोक को अपने वश में किया हुआ है। हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप मोक्षधाम के स्वामी हैं और उपासना करनेवालों को निरन्तर बढ़ानेवाले हैं, अतः हम आपकी उपासना करते हैं।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
१२४९. त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र धर्ता पुरामसि। हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप निश्चय ही हमारे जीवन की न्यूनताओं को पूर्ण करनेवाली बहुत और अनेक प्रकार की सामग्रियों को धारण करनेवाले हैं अथवा आप श्रेष्ठ आत्माओं–मुमुक्षुओं के धारणकर्ता हैं–उनके योग-क्षेम की सुव्यवस्था करते हैं। आप क्षयकारी काम-क्रोध आदि आसुरी भावों के नाशक हैं। आप मननशील जनों की उन्नति करनेवाले हैं और दिव्यलोक–द्युलोक के रक्षक हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—२०

ऋषिः–जेता माधुच्छन्दसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २र
१२५०. पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः।।

परमैश्वर्यशाली परमात्मा मोक्ष प्रदान करके शरीररूपी नगरों का भेदन करनेवाला और प्रलय में लोक-लोकान्तरों का संहार करनेवाला है। वह अजर-अमर और सदा युवा है, सृष्टि की उत्पत्ति और संहार के लिए तत्त्वों का परस्पर संयोग और विभाग करनेवाला है। वह वेदकाव्य का रचयिता है, अनन्त बलवाला है, संसार का निर्माता और धारक है। दण्डधारक, बहुतों द्वारा अनेक प्रकार से स्तुति करने योग्य वह परमेश्वर हृदय-मन्दिर में प्रकट होता है।

ऋषिः–जेता माधुच्छन्दसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१२५१. त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम्।
२ ३ १ २र ३ १ २
त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः।।

हे अविदीर्ण शक्तिवाले परमात्मन्! विद्यावान् होकर भी जिनका ज्ञान ढका हुआ है, आप उनकी न्यूनता=कमी को दूर कर दीजिए, जिससे ये विद्वान् लोग जो पहले काम-क्रोध, राग-द्वेष आदि से पीड़ित थे, अब इनके आक्रमण का भय न होने से निर्भीक बने हुए आपको प्राप्त कर सकें।

ऋषिः–जेता माधुच्छन्दसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ १ २३१ २ ३ १ २र
१२५२. इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमैरनूषत।
३ २ ३ १ २ ३ १२ ३२ ३ २ ३ १ २
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः।।

हे उपासको! अपने बल के कारण सारे संसार पर शासन करनेवाले परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की स्तुति-समूहों द्वारा निरन्तर स्तुति करो। उस प्रभु की स्तुति करो जिसके दानों की संख्या सहस्रों है, जिसने जीव के कल्याण के लिए सहस्रों तृप्तिकारक पदार्थ प्रदान किये हुए हैं। इतना ही क्यों उसकी दान प्रवृत्तियाँ तो बहुत अधिक हैं, लाखों हैं। उसके दानों को कौन गिन सकता है, उसकी कृपा-दृष्टियाँ अनन्त हैं।

पञ्चमः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः–पराशरः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २
१२५३. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मन् जनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः।
१ २ ३ २३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विश्व का रक्षक, आनन्द का सागर, प्रजाओं—पशु, पक्षी, मनुष्य आदि को उत्पन्न करता हुआ परमेश्वर विस्तृत और विविध आकारवाले संसार में व्याप रहा है। रक्षाकर्म में संलग्न वह सुखवर्षक और मनोरथपूरक, वेदों का प्रकाशक, उपासनीय, शान्तस्वरूप परमात्मा पवित्र हृदय में साक्षात् होता हुआ उपासक की सर्वविध उन्नति करता है।

ऋषिः—पराशरः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

१ २ ३२ ३ २३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१२५४. मत्सि वायुमिष्टये राधसे नो मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान्मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! योगाभ्यास के द्वारा साक्षात् हुए आप इष्ट कामनाओं की सिद्धि के लिए और मोक्ष-प्राप्ति के लिए हमारी आयु=जीवन को उल्लासमय बना दो, प्राणापान को—श्वास-प्रश्वास को मस्ती देनेवाला बना दो, प्राणों के बल को—जीवनीय शक्ति को मदमस्त बनानेवाला बना दो, इन्द्रियों को हर्षप्रद बना दो। हे आनन्दप्रद परमेश्वर! आप ज्ञानाधार मस्तिष्क और रसाधार हृदय को हर्ष प्रदान करनेवाला बना दो।

ऋषिः—पराशरः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २
१२५५. महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद् गर्भोऽवृणीत देवान्।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः।।

महान् शक्तिशाली, परमपूज्य, शान्तस्वरूप परमात्मा आश्चर्यप्रद कर्म करता है। वह कर्मशील मुमुक्षुओं का वरण करता है—मोक्ष प्रदान करने के लिए उनपर कृपा का वरदहस्त रखता है। आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला परमेश्वर उपासक की आत्मा में आत्मबल स्थापित करता है। वह परम दीप्त परमात्मा सूर्य-पिण्ड में ज्योति का आधान करता है।

सूक्त—२

ऋषिः—शुनःशेपः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१२५६. एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयते। अभि द्रोणान्यासदम्।।

(क) यह आत्मा देव है—नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ करनेवाला है। यह अविनाशी है—अजर-अमर है। यह पंखों से गति करनेवाले—उड़नेवाले पक्षी की भाँति गति करता है। यह एक शरीर को छोड़ता है और अनेक प्रकार के शरीर-कलशों—योनियों में जा बैठता है।

(ख) यह अविनाशी आनन्दप्रद परमेश्वर पंखों से उड़नेवाले पक्षी की भाँति उपासकों के हृदय-कलशों में आ बैठता है और उनके कर्म-बन्धनों को काट देता है।

ऋषिः—शुनःशेपः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र २ ३ १ २ ३ १ २
१२५७. एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते। दधद्रत्नानि दाशुषे।।

वह प्रकाशकों का प्रकाशक और आनन्दप्रद परमेश्वर मेधावी उपासकों द्वारा प्रातः और सायं दोनों समय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तुत—उपासित किया जाता है। वह परमात्मा उनकी श्रद्धा का अवगाहन—सूक्ष्म निरीक्षण करता है और आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक को सत्य, शम, दमादि आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्रदान करता है।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
१२५८. एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः। पवमानः सिषासति।।

सर्वत्र विद्यमान, जीव के सम्पूर्ण दोषों को काटने—नष्ट करनेवाला परमेश्वर अनुकरणीय शम-दम आदि उदात्त गुणवाले उपासकों द्वारा प्राप्त किया जाता है। आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाला परमेश्वर सब वरणीय धनों और सुखों को उपासक को देना चाहता है—देता है।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१२५९. एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति। आविष्कृणोति वग्वनुम्।।

सर्वव्यापक, आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला और उपासक के जीवन को पवित्र बनानेवाला प्रकाशकों का प्रकाशक, आनन्दप्रद परमेश्वर उपासक-आत्मा के शरीर-रथ के सारथि बनते हैं, उसे मार्ग का ठीक ज्ञान प्रदान करते हैं और अपने आनन्दरस का पान कराते हैं तथा उसके लिए वेदवाणी के रहस्यों को प्रकट करते हैं।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
१२६०. एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः। हरिर्वाजाय मृज्यते।।

सर्वत्र विद्यमान, दुःखों का हरण करनेवाला, आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाला, प्रकाशकों का प्रकाशक और आनन्दप्रद परमात्मा स्तुति करनेवाले मेधावी और सत्य की कामना करनेवाले उपासकों द्वारा ज्ञान, बल, धन, अन्न प्राप्त करने के लिए खोजे जाते हैं—उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होते हैं।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१२६१. एष देवो विपा कृतोऽति ह्वरांसि धावति। पवमानो अदाभ्यः।।

सर्वत्र विद्यमान, आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाला और उपासकों को पवित्र करनेवाला, किसी से न दबनेवाला, किसी से हिंसित न होनेवाला, प्रकाशकों का प्रकाशक और आनन्दप्रद परमात्मा स्तुति करनेवाले मेधावी उपासक द्वारा साक्षात् किया हुआ—हृदय-मन्दिर में बिठाया हुआ उनके सब क्रोधों और कुटिलताओं को समाप्त करके उन्हें अत्यन्त निर्मल बना देता है।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३२उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
१२६२. एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया। पवमानः कनिक्रदत्।।

आनन्दधारारूप में प्राप्त होता हुआ परमेश्वर उपासक के मस्तिष्क को पवित्र बना देता है—ज्ञान-ज्योति से चमका देता है, उसके राजस कर्मों को, उसकी अज्ञान-रात्रियों को समाप्त करता है, उसके पार्थिव भोगों की इच्छाओं को नष्ट कर देता है और बार-बार सन्मार्ग का उपदेश करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ १ २ ३ २
१२६३. एष दिवं व्यासतिरो रजांस्यस्तृतः। पवमानः स्वध्वरः।।

सर्वत्र विद्यमान, आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाला, अहिंसित, अबाधित शक्तिवाला, उपासक के हिंसारहित यज्ञ को सफल बनानेवाला परमेश्वर उपासक के मस्तिष्क में व्याप्त हो जाता है और उपासक की अज्ञान-रात्रियों के समान उसके अज्ञान-अन्धकारों को दूर कर देता है।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
१२६४. एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः। हरिः पवित्रे अर्षति।।

सर्वत्र विद्यमान, आनन्दप्रद परमात्मा अपने जीवन को सत्य, सदाचार, शम-दम आदि सद्गुणों से समलंकृत करने से जीवन्मुक्तों के द्वारा, उच्चकोटि के विद्वानों, साधकों द्वारा साक्षात् किया जाता है और त्रिविध तापों को हरण करनेवाला वह परमेश्वर पवित्र हृदय में ही प्राप्त होता है।

ऋषिः–शुनःशेपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २
१२६५. एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः। धारया पवते सुतः।।

सर्वत्र विद्यमान, सर्वप्रसिद्ध परमेश्वर निश्चय ही अनन्त कर्मशक्ति से सम्पन्न है। वह सर्वज्ञ है। वह हृदय-मन्दिर में प्रकट होकर आनन्दरसमयी धारा से उपासक को प्राप्त होता है और उनके जीवन को पवित्र कर देता है। वह उपासक की इष्ट कामनाओं को सिद्ध करता है–उसे मनोवाञ्छित फल प्रदान करता है।

सूक्त–३

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
१२६६. एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्।।

दिव्य गुणों से युक्त, अपनी वासनाओं को नष्ट करनेवाला उपासक व्यावहारिक बुद्धि का परित्याग करके शीघ्र गमनशील इन्द्रियरूप पवित्र रथों के द्वारा परमात्मा को चाहनेवाली सूक्ष्म बुद्धि से परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के शुद्धस्वरूप को जानने और प्राप्त करने के लिए उसकी ओर गमन करता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१२६७. एष पुरू धियायते बृहते देवतातये। यत्रामृतास आशत।।

जिस परमेश्वर में स्थित होकर मुक्त आत्माएँ आनन्दरस का पान करती हैं–मोक्षसुख का अनुभव करती हैं, उस महान् यज्ञरूप परमेश्वर को पाने के लिए दिव्य गुणों से युक्त यह उपासक ज्ञान और कर्म को खूब चाहता है अर्थात् यह अत्यन्त ज्ञानी बनाता है और सदा कर्मों में लगा रहता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२६८. एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः। प्रचक्राणं महीरिषः।।

उपासक की बड़ी-बड़ी इच्छाओं—सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, साक्षात् करनेयोग्य, प्राप्त करने योग्य, सर्वत्र व्यापक परमेश्वर को उपासकजन मन, बुद्धि, चित्त, अहंकाररूपी पात्रों में श्रद्धापूर्वक साक्षात् करते हैं। मन से उसका मनन, बुद्धि से निश्चय, चित्त से स्मरण और अहंकार से उसे अपनाते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२६९. एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुन्ध्यावता पथा। यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः।।

हृदय में छिपा हुआ परमेश्वर आत्मशुद्धिवाले मार्ग से, यम-नियम आदि योग-मार्ग से प्राप्त किया जाता है, जबकि ज्ञान और बल को जीवन में धारण करनेवाले विद्वान्, महात्मा उपासकजन इसे ग्रहण कर लेते हैं, अपना लेते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२७०. एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः। पतिः सिन्धूनां भवन्।।

सर्वत्र विद्यमान, मोक्षसुख प्रदान करनेवाला परमात्मा शरीर में बहने—गति करनेवाले प्राणों का पालक होता हुआ तेजस्वी, शोभन आनन्दप्रवाहों के साथ उपासक के हृदय-मन्दिर में प्रकट होता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२७१. एष शृंगानि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो३वृषा। नृम्णा दधान ओजसा।।

यह उपासक हिंसा-साधनों—राग-द्वेष आदि वृत्तियों के समुदाय को अथवा दुर्जनों को कम्पित करके परे हटा देता है—नष्ट कर देता है। अपनी बुद्धि को तीव्र करता है। यह जनसमूह का हित करनेवाला होता है—उनके विघ्नों को दूर करता है, उनपर सुखों की वर्षा करता है और ओजस्विता के साथ बलों को धारण करनेवाला होता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२७२. एष वसूनि पिब्दनः परुषा ययिवाँ अति। अव शादेषु गच्छति।।

प्रभु की ओर चलनेवाला यह उपासक अच्छाइयों—उत्तम गुणों का पान करनेवाला—उत्तम गुणों को अपने अन्दर धारण करनेवाला होता है। यह कठोरताओं को—अमानवीय दोषों को लाँघ जाता है अर्थात् सत्य, सदाचार, दया आदि गुणों को जीवन में धारण करता है और निर्दयता, कठोरता, राग-द्वेष आदि दोषों को त्याग देता है। यह जीवन को नष्ट करनेवाली वासनाओं पर आक्रमण करता है और उनसे पार उतर जाता है।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१२७३. एतमु त्यं दश क्षिपो हरिं हिन्वन्ति यातवे। स्वायुधं मदिन्तमम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सर्वप्रसिद्ध, मनुष्यों के धारक और पोषक, अत्यन्त हर्षकारक—आनन्दप्रदाता, त्रिविध तापों के हरण करनेवाले, अत्यन्त मनोहर परमात्मा को प्राप्त करने के लिए विषयों से निवृत्त हुई दस इन्द्रियाँ आत्मा को योग-मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

सूक्त—४

ऋषि:-राहूगणः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ २उ ३ २उ ३ १२ २ ३ १२ ३ १२
१२७४. एष उ स्य वृषा रथोऽव्या वारेभिरव्यत। गच्छन् वाजं सहस्रिणम्।।

सर्वत्र विद्यमान वह परमेश्वर सचमुच सुखों का वर्षक है, उपासकों के मनोरथों का पूरक है, अत्यन्त रमणीय है—रसरूप है, मनोहर है। वह पार्थिव देह के साधन-द्वारों—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि से तथा श्रवण, मनन, निदिध्यासन आदि से हृदय-सदन में साक्षात् किया जाता है। प्रभु को प्राप्त करके यह उपासक सहस्रों शक्तियों को पा लेता है—सहस्रों शक्तियों से सम्पन्न बन जाता है।

ऋषि:-राहूगणः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३२ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ २ ३ १ २ ३ १२
१२७५. एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये।।

सर्वप्रसिद्ध, त्रिविध तापों अथवा आधि, व्याधि, उपाधि को हरनेवाले, परम रसीले परमेश्वर को, 'काम-क्रोध-लोभ'-रूप त्रिक को नष्ट करनेवाले उपासक दृढ संकल्पों से प्राप्त होते हैं। प्राप्त किस लिए होते हैं? इन्द्र=शक्तिशाली और ऐश्वर्यवान् बनने के लिए तथा परमानन्द=मोक्षसुख की प्राप्ति के लिए।

ऋषि:-राहूगणः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ २उ ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १ २
१२७६. एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति। गच्छञ्जारो न योषितम्।।

दृढ़ संकल्पों द्वारा परमेश्वर को प्राप्त करनेवाला यह उपासक अत्यन्त प्रशंसनीय गतिवाला होकर—उत्तम चाल-चलन और सद्व्यवहार सम्पन्न होकर मानव प्रजाओं में निवास करता है—उनके साथ उठता-बैठता है। यह मानव प्रजाओं में उसी प्रकार जानेवाला होता है जैसे स्तुति करनेवाला स्तोता परमेश्वर की ओर जाता है—परमेश्वर से प्रेम करता है।

ऋषि:-राहूगणः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २उ ३ १ २र ३ १ २र २उ ३ २ ३ १ २
१२७७. एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशुः। य इन्दुर्वारमाविशत्।।

(क) शम-दम आदि गुणों से युक्त यह उपासक सबको प्रसन्न करनेवाला, मधुर वाणीवाला और ज्ञान देनेवाला बनकर नीचे की ओर देखता है अर्थात् विनम्र और सौम्य बनता है। यह तेजस्वी उपासक वरणीय परमात्मा में प्रविष्ट हो जाता है।

(ख) सर्वत्र विद्यमान वह परमेश्वर सबको तृप्ति देनेवाला और आनन्दस्वरूप है। वह तेज से देदीप्यमान और परम रसीला है। वह मोक्षधाम का देनेवाला है। वह सारे प्राणिमात्र को देखता—उनका पालन-पोषण करता है और वरणीय हृदय अथवा आत्मा में प्रविष्ट हो जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–राहूगणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ १२ ३ १ २र ३ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
१२७८. एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः। क्रन्दन् योनिमभि प्रियम्।।

सर्वत्र विद्यमान वह परमेश्वर परमानन्द=मोक्ष-प्राप्ति के लिए उपासित किया जाता है। त्रिविध दुःखों का हरण करनेवाला और सारे ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाला परमेश्वर उपासक जीव की ओर गति करता है—उसे अपनाता है। वह निरन्तर उपदेश करता हुआ—बुरे कर्मों के प्रति मन में भय, शंका और लज्जा उत्पन्न करता हुआ तथा शुभ कर्मों के प्रति आनन्द, उत्साह और प्रसन्नता उत्पन्न करता हुआ हृदय में प्राप्त होता है।

ऋषिः–राहूगणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१२७९. एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भते।।

विषयों की ओर ले-जानेवाली दस इन्द्रियाँ अब विषयों से पराङ्मुख होकर और सदा कर्मों में लगी रहनेवाली बनकर साधना-मार्ग में निरत उपासक को शुद्ध कर डालती हैं। अब इस उपासक की इन्द्रियाँ विषयों की ओर न जाकर प्रभु-प्रवण—प्रभु की ओर झुकाववाली बन जाती हैं। दसों इन्द्रियों के समाहित हो जाने पर आनन्दप्रदाता परमेश्वर आत्मा में प्रकाशित होता है।

सूक्त—५

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
१२८०. एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन् मनसस्पतिः। अव्यं वारं वि धावति।।

(क) मोक्ष-प्रदाता, सर्वज्ञ, मन के रहस्यों—गुप्त विचारों को जाननेवाला, मुमुक्षुजनों द्वारा हृदय में धारित यह परमात्मा रक्षणीय और वरणीय उपासकों की ओर गति करता है।

(ख) शक्तिशाली, ज्ञानी और त्यागी यह उपासक मानव-समाज के हित से कार्य करता है। योगाभ्यास द्वारा अपनी शक्तियों को बढ़ाकर यह संसार के अधिक-से-अधिक रहस्यों को जानने का प्रयत्न करता है। यह अपने मन का स्वामी बनता है। यह रक्षा करने में सर्वोत्तम और वरणीय परमेश्वर की ओर विशेषरूप से दौड़ता है।

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ २
१२८१. एष पवित्रे अक्षरत् सोमो देवेभ्यः सुतः। विश्वा धामान्याविशन्।।

शान्तस्वरूप वह परमात्मा मुमुक्षु उपासकों द्वारा साक्षात् किया हुआ उपासक के मन, बुद्धि, श्रोत्र, नेत्रादि सब अंगों में प्रविष्ट होने के लिए पवित्र स्थान हृदय में आनन्दरसधारारूप में प्रवाहित हो जाता है।

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१२८२. एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः। वृत्रहा देववीतमः।।

काम-क्रोध आदि शत्रुओं और पाप-वासनाओं का नाशक, मुमुक्षुजनों का अत्यन्त कमनीय, अविनाशी, अजर, अमर, प्रकाशकों का प्रकाशक वह परमात्मा उपासकों के शुद्ध और पवित्र हृदय में प्रकाशित होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-प्रियमेधः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
१२८३. एष वृषा कनिक्रदद् दशभिर्जामिभिर्यतः। अभि द्रोणानि धावति।।

सुखवर्षक और मनोरथपूरक, दस इन्द्रियों द्वारा वश में किया हुआ परमेश्वर सदुपदेश करता हुआ अधिकारी उपासकों के हृदय-मन्दिर में गति करता है—उन्हें प्राप्त होता है।

[इन्द्रियों द्वारा वश में करने का भाव यह है कि जिसकी इन्द्रियाँ पवित्र होती हैं, वही परमेश्वर को प्राप्त कर सकता है।]

ऋषिः-प्रियमेधः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
१२८४. एष सूर्यमरोचयत् पवमानो अधि द्यवि। पवित्रे मत्सरो मदः।।

वह परमेश्वर आनन्दधारारूप में प्राप्त होता है और सबको पवित्र करता है। वह द्युलोक में सूर्य को चमकाता है और मस्तिष्क रूपी द्युलोक में ज्ञान-सूर्य को उदित करता है। वह स्वयं आनन्दस्वरूप है, अतः पवित्र हृदय में आनन्द का स्रोत बहा देता है।

ऋषिः-प्रियमेधः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
१२८५. एष सूर्येण हासते संवसानो विवस्वता। पतिर्वाचो अदाभ्यः।।

वेदवाणी का स्वामी, किसी से न दबाया जाने योग्य वह परमेश्वर अपने परम रसीले स्वरूप में सब उपासकों को आच्छादित करता हुआ—ढकता हुआ किरणें बिखेरते हुए सूर्य के समान सबको हँसाता—हर्षित करता है—अपने ज्ञान-प्रकाश और आनन्दरस-प्रदान से सबको आह्लादित—प्रमुदित, प्रसन्न करता है।

सूक्त—६

ऋषिः-नृमेधः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
१२८६. एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते। पुनानो घ्नन्नप द्विषः।।

क्रान्तदर्शी, सर्वज्ञ परमेश्वर उपासकों द्वारा प्रातः सायं दोनों समय स्तुत किया जाता है— उपासक दोनों समय प्रभु की उपासना करते हैं। परिणामस्वरूप वह परमेश्वर उपासक के जीवन को पवित्र करता हुआ उसके पवित्र हृदय में प्राप्त होता है। वह उसकी अविद्या का नाश करता है और द्वेष-भावनाओं को मार भगाता है।

ऋषिः-नृमेधः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१२८७. एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित् परि षिच्यते। पवित्रे दक्षसाधनः।।

मोक्ष पर अधिकार रखनेवाला, समस्त बलों का साधक उपासक को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक बल प्रदान करनेवाला वह परमेश्वर अपनी ओर आनेवाले उपासक के पवित्र हृदय में प्राप्त होता है और उपासक को सब-कुछ प्रदान करता है।

ऋषिः-नृमेधः। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ २ ३ १२ ३ २
१२८८. एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः। सोमो वनेषु विश्ववित्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञानियों का शिरोमणि, सुखों का वर्षक और मनोरथपूरक, सारे ब्रह्माण्ड को जाननेवाला— सर्वज्ञ, सारे विश्व को प्राप्त—सर्वव्यापक, शान्तस्वरूप वह परमेश्वर उपासकों द्वारा उपासित हुआ ध्यान के साधनभूत उपकरणों-मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार में आ जाता है।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २र
१२८९. एष गव्युरचिक्रदत् पवमानो हिरण्ययुः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः।।

आनन्द धारारूप में प्राप्त होनेवाला और सबके जीवनों को पवित्र करनेवाला परम रसीला, अविनाशी, सबपर विजय पानेवाला, सबको अपने अधिकार में रखनेवाला, उपासकों के लिए वेदज्ञान प्रदान करने का इच्छुक और सदाचाररूपी परमोत्तम धन चाहता हुआ वह परमात्मा उपदेश करता है– "मेरे मार्ग में—प्रभु-प्राप्ति के मार्ग में चलने से तुम्हारा विनाश नहीं होगा।"

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ २
१२९०. एष शुष्म्यसिष्यददन्तरिक्षे वृषा हरिः। पुनान इन्दुरिन्द्रमा।।

महाबलवान्, सुखवर्षक और अभिलाषापूरक, त्रिविध तापों का नाशक परम रसीला, आनन्दधारारूप में प्राप्त होता हुआ और जीवों को पवित्र करता हुआ वह परमेश्वर उपासक आत्मा को प्राप्त होकर उसके पवित्र अन्तःकरण—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार में प्रवाहित हो जाता है—बस जाता है।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१२९१. एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति। देवावीरघशंसहा।।

परम बलवान्, किसी से न दबनेवाला, आनन्दधारा में प्राप्त होता हुआ जीवों को पवित्र करनेवाला, मुमुक्षु उपासकों का रक्षक, पाप की प्रशंसा करनेवालों का नाशक, शान्तस्वरूप वह परमेश्वर हृदय में प्राप्त होता है।

सूक्त—७

ऋषिः–राहूगणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
१२९२. स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः।।

सुखवर्षक और कामनापूरक, काम-क्रोध आदि राक्षसी भावों और विघ्नों का नाशक मुमुक्षु उपासकों को चाहनेवाला, उपासित हुआ वह परमात्मा परमानन्द=मोक्षसुख प्रदान करने के लिए पवित्र हृदय में प्राप्त होता है।

ऋषिः–राहूगणः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २उ ३ १ २
१२९३. स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः। अभि योनिं कनिक्रदत्।।

सर्वद्रष्टा, सारे ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाला, त्रिविध तापों का हरण करनेवाला, वह शान्तस्वरूप परमात्मा अपने निवास-स्थान आत्मा को लक्ष्य करके उपदेश देता हुआ शुभकर्मों के करने और अशुभ कर्मों को त्यागने की प्रेरणा देता हुआ पवित्र हृदय में प्राप्त होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-राहूगणः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१२९४. स वाजी रोचनं दिवः पवमानो वि धावति। रक्षोहा वारमव्ययम्।।

वह ज्ञानी, बलशाली और यशस्वी परमेश्वर मोक्षधाम का प्रकाशक है। वह आनन्दधारा में प्राप्त होता हुआ जीवों को पवित्र करता है। वह दोषों और विघ्नों का विनाशक है—ऐसा परमात्मा वरण करनेयोग्य—अपनाने योग्य अविनाशी जीवात्मा को विशेषरूप से प्राप्त होता है।

ऋषिः-राहूगणः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१२९५. स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत्। जामिभिः सूर्यं सह।।

ईश्वर, जीव और प्रकृति— इस त्रिक में सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर आनन्दधारारूप में प्राप्त होता हुआ जीवों को पवित्र करता है। वह अपनी कल्याणकारिणी शक्तियों के साथ जीवों के अज्ञान का नाश करने के लिए उनकी ओर जाता है और उनके अविद्या-अज्ञान को दूर करके उन्हें सूर्य की भाँति तेजस्वी बना देता है।

ऋषिः-राहूगणः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ २ १ २
१२९६. स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददाभ्यः। सोमो वाजमिवासरत्।।

सर्वप्रसिद्ध, पापों का नाशक, सुखवर्षक और मनोरथपूरक, मोक्षैश्वर्य को प्राप्त करानेवाला, अहिंसनीय—किसी से न दबनेवाला वह शान्तस्वरूप परमात्मा, उपासनाकाल में हृदय में प्रकट किया हुआ उपासक की ओर ऐसे दौड़ता है जैसे ब्रह्मा यज्ञ की ओर दौड़ता है अथवा धन का दास धन की ओर दौड़ता है।

ऋषिः-राहूगणः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २र २ ३ १ २ ३ १ २
१२९७. स देवः कविनेषितो३ऽभि द्रोणानि धावति। इन्दुरिन्द्राय मंहयन्।।

प्रकाशकों का प्रकाशक, परम रसीला वह शान्तस्वरूप परमेश्वर स्तुतिकर्ता मेधावी उपासक द्वारा प्रेरित होकर—उपासक की स्तुति से द्रवित होकर जीवन के कल्याण के लिए, आत्मा को अपने आनन्दरस का पान कराने के लिए, उसकी शारीरिक उन्नति के लिए, उसके मानस को दान की भावना से भरने के लिए और उसके मस्तिष्क को ज्ञान-ज्योति से दीप्त करने के लिए उसके अन्तःकरण में—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकाररूपी पात्रों में प्राप्त होता है।

सूक्त—८

ऋषिः-पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा। **देवता**-पवमानाध्येतृस्तुतिः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१२९८. यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।।

जो व्यक्ति वेद की पावमानी=पवित्र करनेवाली ऋचाओं को, जो परमात्मा के यथार्थ स्वरूप का बोध कराती हैं, अर्थ-ज्ञानपूर्वक पढ़ता है, वह ऋषियों द्वारा धारण किये गये और तत्त्वदर्शी, ब्रह्मनिष्ठों द्वारा अनुभव

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

किये गये अखण्डैकरस, नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्तस्वभाव आनन्दस्वरूप परमेश्वर के दिव्य आनन्द का भोग करता है, आनन्दरस का पान करता है, परमात्मा के आनन्द का अनुभव करता है।

ऋषिः–पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा। **देवता**–पवमानाध्येतृस्तुतिः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २उ ३ १ २र ३ १२३ १
१२९९. पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्।
२ ३ १२ ३ १ ३ १ ३ २
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।।

जो व्यक्ति वेद की पावमानी ऋचाओं को अर्थ-ज्ञानपूर्वक पढ़ता है और ऋषियों द्वारा अपने अन्दर धारित परमात्मा के आनन्दरस को अपनी आत्मा में समा लेता है, उस व्यक्ति के लिए वेदवाणी और ज्ञानाधार परमेश्वर दूध, घी, शहद और जल का दोहन करते हैं। दूध के समान ज्ञानामृत को, घृत के समान अत्यन्त मधुर प्रेमामृत को, मधु के समान जीवन को माधुर्य से ओत-प्रोत बनानेवाले वैराग्यामृत को और स्वच्छ शीतल जल के समान मनुष्यमात्र को प्रसन्न करनेवाले सदाचारयुक्त व्यवहारामृत को उसके जीवन को पवित्र और सफल बनाने के लिए उसमें भर देते हैं।

ऋषिः–पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा। **देवता**–पवमानाध्येतृस्तुतिः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१३००. पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः।
१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम्।।

वेद की ऋचाएँ पवित्र करनेवाली हैं। ये राग-द्वेष आदि कल्मषों को दूर करती हैं, ब्रह्म=परमेश्वर का **प्रतिपादन** करती हैं। ये ऋचाएँ सचमुच कल्याण प्राप्त करानेवाली हैं, सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाली हैं और **तेजस्वी बना** देनेवाली हैं। इनके अर्थ-ज्ञानपूर्वक स्वाध्याय से ऋषियों ने आनन्दरस=ब्रह्मामृत धारण किया है। **इनके द्वारा ब्रह्मवेत्ताओं** ने मोक्ष प्राप्त किया है।

ऋषिः–पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा। **देवता**–पवमानाध्येतृस्तुतिः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १२ ३ २ ३ १ २र ३ २
१३०१. पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम्।
२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
कामान्त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः।।

वेद की पावमानी ऋचाएँ ब्रह्म का प्रतिपादन करती हैं, उसकी प्राप्ति के साधन—यज्ञ, तप, दान, श्रद्धा, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि साधनों का वर्णन करती है। ये ऋचाएँ हमारे लिए इस लोक और परलोक का स्वास्थ्य, सौन्दर्य, बल, समृद्धि, ज्ञान, सुख, शान्ति और मोक्ष प्रदान करें। निष्काम विद्वानों अथवा वेद-प्रापक ऋषियों द्वारा हम तक लाई गई—पहुँचाई गई दिव्य गुणोंवाली ऋचाएँ हमारे इहलौकिक और पारलौकिक सभी अभीष्ट मनोरथों को सफल एवं समृद्ध करें।

ऋषिः–पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा। देवता–पवमानाध्येतृस्तुतिः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १२ ३ १ २ ३ १ २
१३०२. येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा। तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः।।

जिस पवित्र ज्ञान के द्वारा और जिस शुद्धस्वरूप परमात्मा के दर्शन से मुमुक्षु उपासक अपने-आपको

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

निरन्तर पवित्र करते हैं, अपने आत्मा का शोधन करते हैं—उसे संग-दोष से बचाते हैं, उस सहस्रों आनन्दधाराओंवाले परमेश्वर के दर्शन से और हज़ारों धाराओंवाले ज्ञान के द्वारा वेद की पावन ऋचाएँ हमें पवित्र करें।

ऋषिः–पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा। **देवता**–पवमानाध्येतृस्तुतिः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ ३ १२ ३ १ २ ३ २
१३०३. पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
पुण्यांश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति।।

वेद की पवित्र ऋचाएँ कल्याण प्राप्त कराती हैं। उनके द्वारा ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य जीवन में उल्लास प्राप्त करता है और आनन्द-सागर परमात्मा को भी प्राप्त करता है। वेदाध्ययन के फलस्वरूप वह पवित्र अन्नों का सेवन करता है। वेद के स्वाध्याय से वह मोक्ष प्राप्त करता है—जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है और पुण्यभोगों को भोगता है।

सूक्त—९

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २
१३०४. अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे।
३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम्।।

जो युवतम है—कभी वृद्ध और क्षीण नहीं होता, अखण्डैकरस है, पुरातन होकर भी सदा नया है, सबके हृदय में प्रदीप्त होकर प्रकाशित हो रहा है, आश्चर्यमयी ज्योतिवाला है, विशाल द्युलोक और भूलोक में व्याप्त है, जीव के हित के लिए अपना सब-कुछ दे डालनेवाला है अथवा उपासकों के पवित्र हृदय में प्रकट होनेवाला है, सब ओर जानेवाला—सर्वत्र व्याप्त है—ऐसे पूज्य परमात्मा को हम विनम्रता, उत्कट श्रद्धा और भक्ति द्वारा प्राप्त होते हैं—प्राप्त करते हैं।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २३ २ ३ २ ३ १ २
१३०५. स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वानग्निं ष्टवे दम आ जातवेदाः।
१ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३ १ २
स नो रक्षिषद् दुरितादवद्यादस्मान् गृणत उत नो मघोनः।।

जो परमात्मा सर्वज्ञ और वेदशास्त्र का भी कारण है (जिसने जीवों के कल्याण के लिए वेद प्रकट किये हैं) वह उपासना-गृह (हृदय-मन्दिर) में स्तुत किया जाता है—हृदय में ध्यान और उपासना से ही उसकी प्राप्ति होती है। प्रभु के सच्चे भक्त बनने पर वह अपने दिव्य प्रभाव से, महान् महिमा से उनकी सब बुराइयों को, निखिल वासनाओं को एवं दुःखों को पराभूत कर देते हैं। वह परमेश्वर हम स्तुति करनेवाले और यज्ञशीलजनों को अशुभ आचरणों से और सब निन्दनीय बातों से बचाए, वह पापाचार से और निन्दित विचार से सदा हमारी रक्षा करे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१३०६. त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! आप सब बुराइयों का निवारण करनेवाले और वरण करने योग्य होने से 'वरुण' हैं। आप पाप और मरण-भय से रक्षा करनेवाले होने के कारण हमारे सच्चे हितकारी 'मित्र' हैं। श्रद्धा-भक्ति, ज्ञान-वैराग्य आदि गुणों को अपने जीवन में बसानेवाले उपासकजन स्तुति-वाणियों द्वारा आपको सदा बढ़ाते हैं—आपका यशोगान करते हैं—आपकी महिमा का बखान करते हैं। हे प्रभो! आपमें रहनेवाले, सुख-शान्ति, यश आदिरूप दिव्यगुणों के कारण आप सेव्यमान हो। हे मित्र, वरुण और अग्नि नामवाले प्रभो! आप कल्याण-साधनों से, अपने शुभाशीर्वचनों से सदा हमारी रक्षा करो।

सूक्त–१०

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः

१३०७. महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे।।

जो परमैश्वर्यशाली परमेश्वर अपने ओज से—ऐश्वर्य-बल से, अपने सामर्थ्य से महान् हैं—सर्वोत्कृष्ट हैं, वर्षा करनेवाले मेघ के समान सुख-शान्ति की वर्षा करनेवाले हैं, वह स्तुतिकर्ता के स्तुति-गानों से उपासक पर कृपालु होकर उसे बढ़ाता है—सब प्रकार से समृद्ध बनाता है।

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३०८. कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम्। जामि ब्रुवत आयुधा।।

मेधावी उपासक जब स्तुति-समूहों के द्वारा सब शत्रुओं का विदारण करनेवाले परमेश्वर को ध्यानयज्ञ का साधन=सिद्ध करनेवाला बना लेते हैं, तब काम-क्रोध आदि शत्रुओं को नष्ट करने के लिए अन्य सब आयुधों=अस्त्र-शस्त्रों को निरर्थक कहते हैं अथवा आक्रमण करनेवाले क्रोध को तुच्छ समझते हैं। प्रभु का नाम ही वह महान् आयुध होता है जो सब शत्रुओं को नष्ट कर डालता है।

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३०९. प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद् भरन्त वह्नयः। विप्रा ऋतस्य वाहसः।।

विश्व का पालन और पूरण करनेवाले अमृतरूप परमात्मा के प्रकृष्ट आनन्द को जब अग्नि के समान तेजस्वी उपासक अपने हृदय में धारण कर लेते हैं, तब ये मेधावीजन सत्य के वाहक बन जाते हैं, अर्थात् अमृत=सत्यस्वरूप परमेश्वर को जीवन में धारण कर लेने के पश्चात् ही विप्र=मेधावी सत्य के प्रचारक बन सकते हैं।

सूक्त–११

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३१०. पवमानस्य जिघ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत। जीरा अजिरशोचिषः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्दधारारूप में प्राप्त होनेवाले और उपासकों को पवित्र करनेवाले, दुःख और दोषों को नष्ट करनेवाले, त्रिविध तापों को हरनेवाले और सुख प्रदान करनेवाले, कभी जीर्ण न होनेवाले तेज से युक्त परमात्मा की शीघ्रवाहिनी, आह्लादकारिणी आनन्दधाराएँ हम उपासकों पर बरस रही हैं।

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१३११. पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः। हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः।।

१ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१३१२. पवमान व्यश्नुहि रश्मिभिर्वाजसातमः। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम्।।

हे आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले परमात्मन्! आप उपासक के जीवन को पवित्र बनानेवाले, अत्यन्त रसमय–आनन्दस्वरूप, उपासक के शरीर-रथों के सर्वोत्तम सञ्चालक, तेजों से अति तेजस्वी, त्रिविध दुःखों का हरण करनेवाले और सुख प्रदान करनेवाले, अत्यन्त आह्लादक, सब नाम और रूपवाले पदार्थों के प्रलयकर्ता, ज्ञान, बल, अन्न, यश प्रदान करनेवालों में सर्वोकृष्ट ऐसे आप अपनी आनन्दधाराओं से मुझ स्तोता–उपासक के लिए शोभन बल और पराक्रम धारण कराते हुए मेरे जीवन में व्याप्त हो जाइए, मुझमें समा जाइए।

सूक्त–१२

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३२उ ३ १ २ ३ २ ३ २
१३१३. परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः।

३ १ २र ३ २ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २
दधन्वाँ यो नर्यो अपस्वा३ऽन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः।

हे उपासको! वह शान्तस्वरूप परमात्मा अध्यात्म यज्ञ की सर्वश्रेष्ठ हवि है। उसका हृदय में साक्षात् करो और हृदय से जीवन में सर्वत्र सींचो–आत्मसात् करो। पवित्र योग-साधनों के द्वारा शान्तस्वरूप परमात्मा को शारीरिक रसों और प्राणों में क्षरित करो–प्रकट करो। श्रेष्ठ जनों का हितकारी परमेश्वर ऐसे उपासक-आत्मा को अपने अन्दर धारण करता है।

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१३१४. नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवादब्धः सुरभिन्तरः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
सुते चित्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम्।।

किसी से न दबने योग्य हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप प्राणों के प्राण और अत्यन्त मधुररूप हैं। आप हमारे जीवनों को पवित्र करते हुए अपनी रक्षण शक्तियों के साथ हमारे हृदय में आनन्दरसमयी धारा के रूप में प्रवाहित हो जाइए। आपके साक्षात् हो जानें पर आपके ध्यान से, चिन्तन और स्मरण से आपको पहले प्राणों में, फिर इन्द्रियों में सींचते हुए हम निश्चय ही आनन्दित होते हैं।

[हृदय में प्रकट हुआ परमेश्वर प्राणों और इन्द्रियों में सुख का सञ्चार करता है।]

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा विराट् पंक्ति। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१३१५. परि स्वानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परम रसीला परमेश्वर मुमुक्षुओं को आनन्द प्रदान करता है, वह सर्वद्रष्टा है, सबकी सुनता और सबकी देख-भाल करता है—सबकी सुध लेता है। वह कर्मशील और संसार का निर्माता है। उपासित हुआ वह परमात्मा अपने उपासकों पर अनुग्रह करने के लिए दयार्द्र बन जाता है।

सूक्त—१३

ऋषिः-वसुर्भारद्वाजः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
१३१६. असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
२ २उ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्।।

विनीत और सौम्य उपासक क्रोध और रोष आदि वृत्तियों से रहित हो गया है। अपने को विषयों से दूर रखनेवाला, उपदेशामृत की वर्षा करनेवाला, पृथिवी-निवासियों के प्रति बारम्बार उपदेश करता है और इस प्रकार वह राजा के समान प्रजा के कष्टों का क्षय करता है। अपने को पवित्र करता हुआ उपासक संसार के घेरे—माया-मोह को लाँघकर अविनाशी परमेश्वर को प्राप्त करता है और जैसे श्येन=बाज़ नामक पक्षी सायंकाल अपने घोंसले में जा बैठता है, उसी प्रकार यह उपासक स्नेहमयी जगन्माता की अमृतमयी गोद में जा बैठता है।

ऋषिः-वसुर्भारद्वाजः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१३१७. पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे।
१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३२
स्वसार आपो अभि गा उदासरन्त्सं ग्रावभिर्वसते वीते अध्वरे।।

इस संसार का पालक और पूरक, सबको तृप्त करनेवाला और सबका हित करनेवाला परमात्मा महान् आत्मा—उपासक का पिता है। परमेश्वर से सुरक्षित होकर यह ज्ञानी उपासक योगाभ्यास करने के लिए पृथिवी के नाभिभूत पर्वत की कन्दराओं में अपना निवास बनाता है। योग में निष्णात होकर ये उपासक पृथिवी-निवासियों के प्रति उनकी उन्नति की भावना से स्वेच्छापूर्वक ऐसे ही विचरते हैं जैसे जल स्वयं बहते रहते हैं। ये ज्ञानी उपासक कमनीय अध्यात्मयज्ञों में स्तोताओं के साथ उत्तम प्रकार से रहते हैं—सदा यज्ञमय कर्मों को करते हुए यज्ञमय जीवन बिताते हैं।

ऋषिः-वसुर्भारद्वाजः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
१३१८. कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
अपसेधन्दुरिता सोम नो मृड घृता वसानः परि यासि निर्णिजम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप क्रान्तदर्शी और सर्वज्ञ हैं। आप महिमावान् उपासक को उसे बुद्धिमान् बनाने के लिए प्राप्त होते हैं। आप सर्वव्यापक और परम पवित्र हैं। आपकी ओर चलनेवाले उपासकों को आप प्राप्त होते हैं। हे सोम! हमारे दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को हटाते हुए आप हमें सुखी कीजिए। प्रकाश-पुञ्ज और स्नेहशील आप उपासक को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बना देते हैं अथवा पवित्र उपासक को प्राप्त होते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१४

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१२ ३ २३ १ २र
१३१९. श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत।
१२ ३१ २र ३ १२३ १२ ३१ २र
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः।।

(क) जैसे किरणें सूर्य के आश्रय में रहती हैं, वैसे ही सब मनुष्य परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के आश्रय में रहते हुए उत्पन्न हुए और उत्पन्न होनेवाले अन्न और धनों का सेवन करें और अपने आत्मिक बल से भजनीय—उपासनीय परमेश्वर का साक्षात्कार करें।

(ख) सूर्य के समान श्रम करते हुए—पसीने से तर-बतर होते हुए सब मनुष्य प्रभु द्वारा प्रदत्त अन्नों का सेवन करें। अपनी शक्ति—परिश्रम से उत्पन्न हुए और भविष्य में उत्पन्न होनेवाले अन्न और धनों को अपने-अपने भाग के अनुसार सेवन करें।

[यह मन्त्र साम्यवाद का मूल है।]

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१२ ३१ २र ३१ २र ३१२
१३२०. अलर्षिरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः।
१ २ ३ १२ ३१ २र ३ १२ ३१२ ३१२
यो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन्।।

हे उपासक! तू परमात्मा के दानों को प्राप्त करता है, अतः तू नाना प्रकार के धन देनेवाले परमेश्वर की स्तुति कर। परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के दान सबके सुख और कल्याण के लिए होते हैं। जीवों—मनुष्यों को दान देने का इच्छुक परमेश्वर उपासना करनेवाले उपासक की कामना को—धन-प्राप्ति की इच्छा को विफल नहीं करता अपितु सफल, सिद्ध और पूर्ण करता है।

सूक्त—१५

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१२ ३ १२ ३ १२ ३ १२
१३२१. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
१२ ३ २उ ३ १ २ ३२३ २उ ३ १ २र
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि।।

हे शत्रुओं का संहार करनेवाले प्रभो! जहाँ-जहाँ से हमें भय प्राप्त हो वहाँ-वहाँ से आप हमें निर्भय बनाइए। हे ज्ञान-बलैश्वर्य-सम्पन्न प्रभो! आप हमारे विविध भयों का निवारण करने में समर्थ हैं, अतः आप अपनी रक्षण-शक्तियों से हमारे हिंसक और दुष्ट शत्रुओं को और काम-क्रोध आदि मानस विकारों को नष्ट कर दीजिए।

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २र ३ १२ ३२उ ३ १ २ ३२
१३२२. त्वं हि राधसस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधर्ता।
१ २ ३१ २ ३१२
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के धनों के स्वामी हे परमात्मन्! आप निश्चय ही मोक्षरूपी महाधन और ब्रह्माण्डरूपी गृह के धारणकर्ता हो—आधार हो। हे वेदवाणियों से स्तुति करने योग्य परमैश्वर्यशाली और सब यज्ञों के साधक परमात्मन्! यज्ञात्मक श्रेष्ठ कर्म करनेवाले, निर्माणात्मक कर्म करनेवाले, आपका साक्षात्कार करनेवाले हम उपासक सर्वप्रसिद्ध आपको पुकारते हैं—आपका स्मरण करते हैं।

सूक्त—१६

ऋषिः—भरद्वाजः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ १ २ ३ १ २
१३२३. त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे। पवस्व मंहयद्रयिः।।

(क) हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हमारे हिंसारहित उपासना-यज्ञ में आप हमें ज्ञान देने की इच्छा करते हैं। कैसे आप? जो सबको सदा हर्षित करनेवाले—आनन्द देनेवाले हैं, महा-ओजस्वी और दानदाता हैं। ऐसे आप आनन्दधारा में प्रवाहित होते हुए हमारे हृदय-मन्दिर में आइए।

(ख) हे सौम्य एवं विनीत उपासक! तू सदा ज्ञान की कामनावाला बन। तू सदा प्रसन्न रहनेवाला बन। तू अत्यन्त शक्तिशाली बन। तू यज्ञ=श्रेष्ठतम कर्मों में लगा रहकर अपने जीवन को पवित्र बना और धन का दान करनेवाला बन।

ऋषिः—भरद्वाजः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
१३२४. त्वं सुतो मदिन्तमो दधन्वान्मत्सरिन्तमः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप महान् ऐश्वर्यवाले, उपासकों को अतिशय आनन्द देनेवाले और सबको धारण करनेवाले हैं। आप आनन्द के सरोवर हैं, अतः अत्यन्त तृप्ति देनेवाले हैं। आप परम रसीले, सबको जीतनेवाले और अविनाशी हैं, अतः हम आपकी उपासना करते हैं।

ऋषिः—भरद्वाजः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१३२५. त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तं शुष्ममा भर।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप स्तुति करनेवाले और दृढ़ संकल्पोंवाले उपासकों द्वारा उपासित होकर हमें सन्मार्ग का उपदेश देते हुए—अशुभ से पृथक् और शुभ में प्रेरित करते हुए हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकट होओ और हममें ज्योतिर्मय आध्यात्मिक बल भर दो—प्रदान कर दो।

सूक्त—१७

ऋषिः—मन्युराप्सवः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—उष्णिक्। **स्वरः**—ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
१३२६. पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा। आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः।।

हे परम रसीले परमात्मन्! आप दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए अपनी आनन्दरसमयी धाराओं और तेज के साथ हमारे आत्मा में प्रवाहित हो जाओ और हमारे जीवनों को पवित्र बना दो। हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप माधुर्य से युक्त हैं, आनन्दस्वरूप हैं, हमें भी आनन्दी बनाने के लिए हमारे हृदय-कलश में आ विराजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-मन्युराप्सवः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१२ ३ १ २३२३ २ ३ १२ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१३२७. तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः। त्वां देवासो अमृताय कं पपुः।।

हे परम रसीले परमात्मन्! भक्तिरस को बहानेवाले आपके आनन्द-बिन्दु आत्मा को आनन्द से आप्लावित=सराबोर कर देते हैं। आपके आनन्द-बिन्दुओं के पान से उपासक के जीवन में एक अद्भुत मस्ती का सञ्चार हो जाता है। मुमुक्षुजन अमर होने के लिए, मोक्ष-प्राप्ति के लिए आनन्दस्वरूप आपके आनन्दरस का पान करते हैं।

ऋषिः-मन्युराप्सवः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१३२८. आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम्। वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः।।

हे ज्योतिः प्रेरक! सब रसों के प्रापक! मोक्ष-सुख को प्राप्त! ज्ञान से दीप्त! ऐश्वर्यशाली महात्माओ! आप हमारे जीवनों को पवित्र करते हुए हमें आध्यात्मिक उत्कर्ष=मोक्ष-सुख प्राप्त कराओ अथवा हमारे रयिम्=आत्मा के प्रति गतिशील होओ और उसे सुख-शान्ति प्राप्त कराओ।

सूक्त—१८

ऋषिः-अम्बरीष ऋजिश्वा च। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ १२
१३२९. परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण।
२ ३२उ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
योदेवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति।।

भक्तजन उस स्पृहणीय=चाहने योग्य, त्रिविध तापों का हरण करनेवाले, संसार का धारण और पोषण करनेवाले परमात्मा की, वरण करनेवाले अन्तःकरण—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार द्वारा अर्चना करते हैं, जो अपने कृपाकटाक्ष से मुमुक्षुजनों को प्राप्त होता है।

ऋषिः-अम्बरीष ऋजिश्वा च। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२उ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
१३३०. द्विर्यं पञ्च स्वयशसं सखायो अद्रिसंहतम्।
३ १ २र ३ १ २ ३ १२ ३ १२
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त ऊर्मयः।।

विषयों से पृथक् होकर सखा बनी हुई दस इन्द्रियाँ जीवन में ज्ञान का प्रकाश करनेवाली होकर परमात्मा का साक्षात्कार करा देती हैं। किस परमात्मा का? उस परमात्मा का जोकि स्तुतिकर्ताओं को प्राप्त होनेवाले हैं, अपने यश से यशस्वी हैं, इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा के अत्यन्त प्रिय और स्पृहणीय=कमनीय हैं।

ऋषिः-अम्बरीष ऋजिश्वा च। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ १२ ३ १ २र
१३३१. इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे।
१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! काम-क्रोध आदि वासनाओं को नष्ट करनेवाले, दानशील, कर्मशील, हृदय-सदन में बैठनेवाले—ध्यान करनेवाले और मुमुक्षुजन आपके आनन्दरस का पान कर सकें इसलिए इनके द्वारा आप हृदय में सींचे जाते हो—प्रकट किये जाते हो।

सूक्त—१९

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**—पञ्चमः।

१२ ३२उ ३२ ३२ ३२ ३१ २र

१३३२. पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अग्नि के समान शुद्ध और पवित्र हैं, अत्यन्त बलशाली हैं। आप महान् आत्मिक बल—पूर्ण स्वातन्त्र्य, पूर्ण निर्भयता, पूर्ण ज्ञान और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति के लिए तथा मोक्षरूपी धन की प्राप्ति के लिए हमें पवित्र कीजिए, उसके योग्य बनाइए और आनन्दधारारूप में हमारे हृदय में प्रकट हो जाइए—अपना दर्शन दीजिए।

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**—पञ्चमः।

१ २ ३ ३ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १२

१३३३. प्र ते सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय।।

उपासना-रस निष्पन्न करनेवाले साधकजन आनन्द-प्राप्ति के लिए, महान् यश की प्राप्ति के लिए, महाधन=मोक्ष की प्राप्ति के लिए रसरूप—आनन्दस्वरूप, शान्तस्वरूप परमात्मा को अपने आत्मा में प्रवाहित करते हैं।

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**—पञ्चमः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

१३३४. शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम्।।

उपासकजन दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए प्रशंसनीय और पापनाशक, प्रत्यक्ष करने योग्य, त्रिविध तापों—दुःखों के नाशक, अति मनोहारी, परम रसीले और स्वप्रकाशस्वरूप, शान्तस्वरूप परमात्मा को पाप-वासनाओं से शून्य निर्मल हृदय में प्राप्त करते हैं।

सूक्त—२०

ऋषिः—अमहीयुः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २

१३३५. उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः।।

मुमुक्षुजन उत्तम गुणों से सम्पन्न, प्राणों और कर्मों में शक्ति का सञ्चार करनेवाले, ज्ञानरश्मियों से सुशोभित, दुःखों, पापों और शत्रुओं के भंजक, परम रसीले परमात्मा को अपने हृदय-मन्दिर में निश्चय ही प्राप्त करते हैं।

ऋषिः—अमहीयुः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २

१३३६. तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव। य इन्द्रस्य हृदं सनिः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो परमेश्वर जीवात्मा के हृदय को विषयों से हटाकर अपनी ओर झुकाता है, हमारी स्तुति-वाणियाँ उस परमेश्वर को ही बढ़ावें—उसी की महिमा का गुणगान करें, जैसे प्रचुर दूधवाली माताएँ अपने शिशु को दुग्ध आदि से बढ़ाती हैं।

[परमात्मा को बढ़ाने का तात्पर्य है उसकी आज्ञानुसार चलकर—उसके सच्चे पुत्र बनकर उसकी कीर्ति को बढ़ाना।]

ऋषिः–अमहीयुः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१३३७. अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्। वर्धा समुद्रमुक्थ्य।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमारे हृदय-मन्दिर में आइए— अपने दर्शन दीजिए। आप हमारी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में शान्ति प्राप्त कराइए तथा समग्र पृथिवी पर भी शान्ति फैलाइए, हमारी बढ़ी-चढ़ी मोक्षाभिलाषा या दर्शनेच्छा को और अधिक चमकाइए। वैदिक सूक्तों द्वारा प्रशंसित हे परमेश्वर! आप हमारे ज्ञान-समुद्र को खूब बढ़ाइए, हमारे मन को उत्साहित कीजिए और हमारी श्रद्धा को बढ़ाइए।

सूक्त–२१

ऋषिः–त्रिशोकः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २३ २ ३ २ ३ १ २
१३३८. आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा।

जो उपासक योगाभ्यास द्वारा अपने हृदय-मन्दिर में प्रकाशस्वरूप परमेश्वर को प्रदीप्त कर लेते हैं और सदा अखण्डैकरस रहनेवाला परमेश्वर जिनका मित्र बन जाता है, वे अपने जीवन में निरन्तर पारमार्थिक वृद्धि करते हैं—जीवन में सदा आगे बढ़ते रहते हैं, उन्नति करते हैं, फूलते और फलते हैं।

ऋषिः–त्रिशोकः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ ३ १ २
१३३९. बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्त्रं पृथुः स्वरुः। येषामिन्द्रो युवा सखा।।

सदा अजर-अमर रहनेवाला, बलवान् और परमैश्वर्यशाली परमेश्वर जिन उपासकों का मित्र बन जाता है, उनकी आत्मा महान् बन जाती है, उनका तेज भी महान् होता है, उनकी स्तुति महती होती है, उनका त्याग विशाल होता है और प्रतिष्ठा लोकोत्तर होती है।

ऋषिः–त्रिशोकः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ १ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१३४०. अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः। येषामिन्द्रो युवा सखा।।

सदा युवा—शुभ से संपृक्त करने और अशुभ से पृथक् करनेवाला, शत्रुसंहारक परमेश्वर जिनका मित्र—स्नेही बन जाता है, वे उपासक जब काम-क्रोधादि आसुरी योद्धाओं द्वारा घिर जाते हैं, तब शत्रुओं को शीर्ण करनेवाला पराक्रमशाली परमेश्वर अपनी शक्तियों के साथ उपासक की सहायता के लिए आ जाता है और बिना युद्ध के ही—अपनी उपस्थितिमात्र से उन आसुरी योद्धाओं को परे भगा देता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–२२

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१३४१. य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे। ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अग।।

हे प्रिय ! जो अकेला ही आत्मसमर्पण करनेवाले मनुष्य को नाना प्रकार के धन प्रदान करता है, वही इन्द्र है। वह सबका स्वामी है। उसका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं है। वह किसी से पराजित होनेवाला नहीं है, वह किसी से रोका जानेवाला नहीं है, अतः उसी की उपासना करनी चाहिए।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१३४२. यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति। उग्रं तत्पत्यते शव इन्द्रो अंग।।

सारे ब्रह्माण्ड को गति देनेवाले–नियम और व्यवस्था में चलानेवाले हे परमात्मन् ! ऐश्वर्यों से समृद्ध बहुत-से मनुष्यों में से जो भी मनुष्य यज्ञशील और उपासना-रसवाला होकर आपकी परिचर्या–उपासना करता है, वह शीघ्र ही तेजस्वी होकर शत्रु-विनाशक बल प्राप्त कर लेता है और ऐश्वर्य से सम्पन्न बन जाता है।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१३४३. कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्। कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अंग।।

हे प्रिय आत्मन् ! शत्रु-संहारक परमेश्वर पता नहीं कब यज्ञ न करनेवाले, प्रभु-आराधना–उपासना न करनेवाले नास्तिक को और भोगों के पीछे मरनेवाले मनुष्य को इस प्रकार नष्ट कर दे जैसे पद-आघात से वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाले अहिछत्र (खुम्ब) को कुचल दिया जाता है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह परमेश्वर कब हमारी प्रार्थना-वाणियों को सुन ले, अतः सदा परमेश्वर की आराधना–उपासना करते रहना चाहिए।

सूक्त–२३

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१३४४. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे।।

हे बहुकर्मा और बहुप्रज्ञ परमेश्वर ! उद्गाता साम-मन्त्रों द्वारा आपका गान करते हैं–आपकी उपासना करते हैं। ऋचाओं द्वारा स्तुति करनेवाले ऋग्वेदी पूजनीय आपकी ऋग्वेद के मन्त्रों से प्रशंसा करते हैं–आपकी स्तुति करते हैं। यजुर्वेद के अध्येता आपकी प्रार्थना करते हैं और आपको अपने वंशधर के समान उच्च कोटि का मानते हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१३४५. यत्सानोः सान्वारुहो भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्।
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जब साधक एक पर्वत-शिखर से दूसरे पर्वत शिखर पर चढ़ता है अर्थात् एक उच्च योगभूमि से दूसरी उच्च योगभूमि पर आरोहण करता है तब वह अपने कर्तव्य कर्म को बहुत अच्छी प्रकार से देखता है। अगली-अगली योगभूमियों पर आरोहण करते हुए यह जितेन्द्रिय आत्मा अपने जीवन-लक्ष्य परमेश्वर को ठीक-ठीक जान लेता है, उसका साक्षात्कार कर लेता है। अब यह शक्तिशाली बना हुआ औरों पर सुखों की वृष्टि करता हुआ औरों को भी प्रभु-प्राप्ति की प्रेरणा देता है।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१३४६. युंक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा।
१ २ ३ १ २र
अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप अश्वों को हमारे शरीररूप रथ में अवश्य नियुक्त कर दीजिए। कैसे इन्द्रिय-अश्वों को? जो ज्ञान-ज्योति से दीप्त और शक्तिशाली हैं—ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञान-ज्योति से जगमगानेवाली हैं और कर्मेन्द्रियाँ शक्ति से सम्पन्न हैं, जो हृदय और मन को ब्रह्म-ज्योति से पूर्ण करनेवाले हैं। ज्ञान और कर्मेन्द्रियों की साधना से ही मन और हृदय ब्रह्म की ज्योति से पूर्ण होता है। हे उपासकों के रक्षक! आप हमारी स्तुति और प्रार्थनारूप वाणियों को ध्यानपूर्वक सुनिए।

।। यहाँ पाँचवाँ प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ षष्ठः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—इध्मः समिद्धो वाग्निः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१३४७. सुषमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते। होतः पावक यक्षि च।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! आप अत्यन्त प्रकाशमय हैं, ज्ञान के पुञ्ज हैं। आप हमें दिव्य गुणयुक्त विद्वानों को प्राप्त कराइए अर्थात् हमें सदा सज्जनों का सत्संग प्राप्त कराइए और दिव्य गुणों का हमारे साथ मेल कराइए। आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक के लिए आप होता=ऋत्विक् बनकर उसके जीवन-यज्ञ को सफल बनाइए। हे सर्वशोधक और पापों को दग्ध करनेवाले परमात्मन्! आप हमपर प्रसन्न हों—हमारे प्रति कृपालु हों।

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—तनूनपात्। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१३४८. मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे। अद्या कृणुह्यूतये।।

हे क्रान्तदर्शिन्! वेदज्ञान द्वारा सब विद्याओं का उपदेश करनेवाले परमात्मन्! शरीर को नष्ट और आत्मा को पतित न होने देनेवाले परमेश्वर! आप आज ही—अविलम्ब हमारी आत्म-रक्षा के लिए—अशुभ विचारों और व्यवहारों से हमें बचाने के लिए हमारे द्वारा किये जानेवाले ज्ञानयज्ञ को और आत्मसमर्पणवाले यज्ञ को विद्वानों में भी फैला दीजिए—विद्वानों में भी इन यज्ञों का प्रचार हो, ऐसी प्रेरणा कीजिए।

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—नराशंसः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१३४९. नराशंसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये। मधुजिह्वं हविष्कृतम्।।

हमारी हृदय-वेदी में रचाये गये ज्ञानयज्ञ में अथवा आत्मसमर्पणरूप यज्ञ में मैं उस परमेश्वर का आह्वान करता हूँ जो मुमुक्षुजनों द्वारा प्रशंसनीय—स्तुति के योग्य है और नर-नारियों को उनके कर्तव्य-कर्मों का उपदेश देनेवाला है, अत्यन्त प्रिय है—चाहने योग्य है, जिसकी वाणी—वेदवाणी मधुर उपदेशों से पूर्ण है और जो हविरूप है—जिसने अपने आपको जीवों के कल्याण के लिए समर्पित किया हुआ है।

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—इडः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१३५०. अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईडित आ वह। असि होता मनुर्हितः।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! हमारे द्वारा स्तुत और उपासित होकर आप अत्यन्त निर्मल और उत्तम इन्द्रियों से युक्त (सु-उत्तम+ख-इन्द्रियाँ) हमारे शरीररूपी रथ में आत्मारूपी रथी को दिव्य गुण प्राप्त कराइए, अथवा विद्वानों को प्राप्त कराइए जिससे हम सदा विद्वत्सत्संग में रहें। मैं आपसे यह प्रार्थना इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि आप महान् दाता हैं, मनुर्हितः=मनस्वी हैं, सर्वहितकारी हैं अथवा मनुष्यों के हितकारी हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—२

ऋषिः:-वसिष्ठः। **देवता**-आदित्यः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१३५१. यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः।।

(क) हमें जो ज्ञान या प्रकाश अपेक्षित है, उसे आज ही—इसी जीवन में ज्ञानोदय होते ही निष्पाप—निर्विकार, परम स्निग्ध=सबके साथ स्नेह करनेवाला, मृत्यु और पाप से बचानेवाला, सर्वप्राप्य और सब-कुछ देनेवाला, सर्वजगदुत्पादक और परमैश्वर्यशाली परमेश्वर प्रदान करता है।

(ख) सूर्योदय होते ही जो व्यक्ति इस जीवन में निष्पाप बनता है—अशुभ कर्मों से पृथक् रहकर शुभकर्म करता है, सबके साथ मैत्री का व्यवहार करता है, सबके साथ न्यायपूर्वक वर्तता है, उसे सर्वप्रेरक, भजनीय—उपासनीय तथा समग्र ऐश्वर्ययुक्त परमेश्वर अपनी प्रेरणाएँ देता है।

ऋषिः:-वसिष्ठः। **देवता**-आदित्यः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१३५२. सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः। ये नो अंहोऽतिपिप्रति।।

उत्तमोत्तम सदुपदेश देनेवाले, ज्ञानी महापुरुष जिस घर में प्रकृष्टरूप से जाते हैं—खूब जाते रहते हैं, वह घर निश्चय ही सबकी अच्छी प्रकार रक्षा करनेवाला हो जाता है। हे ज्ञानी पुरुषो! आप ही हैं जो हमें पापों, पाप-भावनाओं, अशुभ कर्मों, दुर्विचार और दुर्व्यहार से पार ले-जाते हैं।

ऋषिः:-वसिष्ठः। **देवता**-आदित्यः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१३५३. उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये। महो राजान ईशते।।

जो गृहस्थ, अपने गुणों से स्वयं प्रकाशमान परमेश्वर की प्राप्ति के लिए लिये गये अखण्ड संकल्प का परित्याग नहीं करते—परमेश्वर-प्राप्ति के संकल्प पर दृढ़ रहते हैं, वे मर्यादित जीवनवाले व्यक्ति महा तेजस्वी बन जाते हैं।

सूक्त—३

ऋषिः:-प्रगाथः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१३५४. उ त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि।।

(क) हे आनन्दवर्षक परमात्मन्! विद्वानुजन आपको स्तुतियों के द्वारा प्रसन्न करें अथवा हमारे द्वारा निष्पादित उपासना-रस आपको प्रसन्न करें—आपको हमारे प्रति दयालु एवं कृपालु बनाएँ, फलस्वरूप आप इन्हें (विद्वानों को) जीवन के लिए आवश्यक धन और योग-मार्ग में सिद्धि प्रदान करें। जो वेदविरोधी और नास्तिकजन हैं उन्हें हमसे दूर कर दीजिए।

(ख) हे जीवात्मन्! तुझे सोम के कण—आध्यात्मिक आनन्द के बिन्दु उत्कृष्ट हर्ष प्राप्त करानेवाले हों। हे चट्टान के समान अविचल जीव! तू सिद्धि का सम्पादन कर। पुरुषार्थ द्वारा सफलता प्राप्त कर और वेद तथा ज्ञानविरोधी और नास्तिकता की भावनाओं को नष्ट कर दे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–प्रगाथः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २उ ३ २ ३ १ २र
१३५५. पदा पणीनराधसो नि बाधस्व महाँ असि। न हि त्वा कश्च न प्रति।।

हे परमेश्वर! आप आराधनाहीन–दिखावे और दम्भ के लिए उपासना करनेवालों, वणिक्-वृत्तिवालों–धर्म का व्यापार करनेवालों को जड़ से उखाड़ फेंकिए, उन्हें पैर की ठोकर से ऐसे कुचल डालिए जैसे खुम्ब को कुचल डालते हैं। आप महान् हैं–महाशक्तिशाली हैं। आपका प्रतिपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी कोई नहीं है और आपके समान उपास्य देव भी कोई नहीं है।

ऋषिः–प्रगाथः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र २उ ३ १ २
१३५६. त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्व राजा जनानाम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप उत्पन्न हुए सब पदार्थों के स्वामी हैं और आप ही भविष्य में उत्पन्न होनेवाले पदार्थों के भी ईश हैं। आप उपासना-रस निष्पन्न करनेवालों के भी स्वामी हैं और उपासनारहित नास्तिकजनों के भी स्वामी हैं। आप उत्पन्न किये गये (समुद्र या खानों से निकाले गये) धनों के स्वामी हैं और आप ही न उत्पन्न किये गये धनों के स्वामी हैं। आप जायमान प्राणियों–मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतंग आदि सबके स्वामी हैं। आप सबको यथायोग्य भोग प्रदान करते हैं, यह आपकी महती दया है।

सूक्त–४

ऋषिः–पराशरः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २र ३ ५ २ ३ २ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१३५६. आ जागृविर्विप्र ऋतं मतीनां सोमः पुनानो असदच्चमूषु।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः।।

शान्तस्वरूप परमात्मा सदा जागरणशील–सदा सावधान रहनेवाले हैं, सत्य और यथार्थ स्तुति-प्रार्थनाओं को विशेषरूप से पूर्ण करनेवाले हैं, साधकों के जीवनों को पवित्र बनानेवाले हैं और उपासक के स्वाद लेनेवाले=आनन्द अनुभव करनेवाले पात्रों–मन, बुद्धि, चित्त, अहंकारों में आ बैठते हैं अथवा ज्ञान, भक्ति, वैराग्य आदि में रस लेनेवाले साधकों में वह परमेश्र शान्ति, तृप्ति, प्रसन्नता आदि के रूप में रहते हैं। ये परमेश्वर वे हैं जिनकी दम्पती–पति-पत्नी, स्त्री-पुरुष और परस्पर प्रेम, सद्भाव, विनय आदि के द्वारा मिलकर रहनेवाले मनुष्य पूजा–उपासना करते हैं। विभिन्न कामनाओंवाले उपासक उसके सम्पर्क में आते हैं। हिंसाशून्य जीवनवाले और उत्तम शरीररूप रथवाले साधक उसे प्राप्त करते हैं, हाथों से उत्तम कर्म करनेवाले उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए सदा सुकर्म ही करते हैं।

ऋषिः–पराशरः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
१३५८. स पुनान उप सूरे दधान ओभे अप्रा रोदसी वी ष आवः।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र
प्रिया चिद्यस्य प्रियसास ऊती सतो धनं कारिणे न प्र यंसत्।।

वह शान्तस्वरूप परमात्मा लोगों को सत्प्रेरणा और सदुपदेश देनेवाले ज्ञानी के हृदय में प्रकट होता है,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उसके जीवन को पवित्र बनाने के लिए और उसपर कृपा करने के लिए। कैसा है वह परमात्मा? वह परमात्मा इस द्युलोक और भूलोक को—सारे ब्रह्माण्ड को अपनी ज्योति और व्याप्ति से पूर्ण कर रहा है। वह ज्ञानियों में अपने को प्रकट करता है अर्थात् ज्ञानी लोग हृदय में उस प्रभु का दर्शन करते हैं। उस प्रियतम, नित्य परमेश्वर की प्रिय कृपाधाराएँ और शक्तियों के प्रवाह प्राणिमात्र की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं, जैसे कोई काम करनेवाले अपने सेवक को धन देता है, वैसे ही परमेश्वर अपने कृपापात्र भक्तों को लौकिक और आध्यात्मिक—सब प्रकार के धन प्रदान करता है।

ऋषिः—पराशरः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

१३५९. स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि नो ज्योतिषावीत्।
यत्र नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमिष्णन्॥

परमपद—मोक्ष को जाननेवाले, परमानन्द का अनुभव करनेवाले, अनादि परम्परा के हमारे गुरु, ऋषि, महर्षि जिस परमात्मा में विचरते हैं और वेद की आज्ञा के अनुसार चलानेवाले नूतन गुरु, योगी, उपासक जिस अखण्ड मोक्ष-सुख की इच्छा करते हैं, उस मोक्षपद में पहुँचानेवाला वह शान्तस्वरूप परमात्मा सद्गुणों में सबसे अधिक बढ़ा-चढ़ा हुआ है और अपने भक्तों को भी बढ़ाता है। वह स्वयं पवित्र है और सदा सन्तृप्त रहता है और अपने भक्तों को भी पवित्र एवं सन्तृप्त करता है। वह सबपर सुखों की वर्षा करता है और अपने दिव्य प्रभाव से हमारी—सब जीवमात्र की रक्षा करता है।

सूक्त—५

ऋषिः—प्रगाथो घौरः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

१३६०. मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत॥

हे उपासक मित्रो! सत्य से विपरीत मत बोलो अर्थात् सदा सत्य ही बोलो। किसी को दुःख मत दो, विरोधी को भी मत सताओ। तुम सब मिलकर सुखों के वर्षक और कामनाओं के पूरक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना किया करो। परमेश्वर के द्वारा उत्पन्न इस जगत् में आत्मा—आत्मा और परमात्मा का स्वरूप जानने के लिए और जगत् के रहस्यों को जानने के लिए वेद का स्वाध्याय करो।

ऋषिः—प्रगाथो घौरः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

१३६१. अवक्रक्षिणं वृषभं यथा जुवं गां न चर्षणीसहम्।
विद्वेषणं संवननमुभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम्॥

हे मित्रो! प्रभु-उपासको! तुम उस परमेश्वर की स्तुति किया करो जो काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कुचलनेवाले हैं और अकुटिल=सौम्य उपासकों में निवास करनेवाले—उन्हें प्रत्यक्ष होनेवाले हैं, सुखवर्षक, कामनापूरक और शक्तिशाली हैं, ठीक-ठीक प्रेरणा देनेवाले हैं, पृथिवी के समान सब प्राणियों को तृप्त करनेवाले हैं, अथवा भूमि-माता के समान क्षमाशील और सबपर कृपालु हैं, राग-द्वेष से रहित हैं, सम्यक्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भजनीय—उपासना करने योग्य हैं, अभ्युदय और निःश्रेयस—दोनों को सिद्ध करनेवाले हैं, महादानी हैं और द्युलोक और भूलोक दोनों लोकों के रक्षक हैं।

सूक्त—६

ऋषिः–मेध्यातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१३६२. उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपके उपासक आपकी कृपा-प्राप्ति के लिए अत्यन्त मधुर स्वर में और अत्यन्त विनम्रतापूर्वक आपका स्तुतिगान करते हैं। कैसे हैं ये उपासक? ये एकमना होकर काम-क्रोध आदि शत्रुओं को जीतनेवाले हैं; संयम, क्षमा, उदारता, सत्य, सदाचार आदि शान्ति-प्रापक धन का सेवन करनेवाले हैं, आपकी शाश्वत रक्षा में वर्तमान हैं, ज्ञानधन अथवा मोक्षधन की इच्छावाले हैं। जैसे रथी रथ के द्वारा शत्रुओं पर विजय करते हैं, धन प्राप्त करते हैं, सुरक्षित रहते हैं और अन्न प्राप्त करते हैं, वैसे ही आपकी स्तुति से सभी इष्ट लाभ होते हैं।

ऋषिः–मेध्यातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१३६३. कण्वाइव भृगवः सूर्याइव विश्वमिद्धीतमाशत।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन्।।

सारे संसार में व्यापक, सभी के द्वारा ध्यान करने योग्य (कष्ट में नास्तिक भी उसे पुकार उठते हैं) उस प्रभु को निश्चितरूप से प्राप्त करते हैं। कौन? सांसारिक इच्छाओं को तिलाञ्जलि देनेवाले मेधावी, तपश्चर्या द्वारा काम-क्रोध आदि को भून डालनेवाले, सूर्य के समान ज्ञान से प्रदीप्त और गतिशील मनुष्य उसे प्राप्त करते हैं। जिन्हें बुद्धि प्रिय है, ऐसे मनुष्य स्तुति-समूहों से परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की पूजा-उपासना करते हुए, उसकी अर्चना करते हुए उसे श्रद्धापूर्वक अपने अन्दर बिठाते हैं।

सूक्त—७

ऋषिः–त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–पिपीलिकामध्या अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१३६४. पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः। द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे।।

(क) हे शान्तस्वरूप उपासक! मोक्ष-प्राप्ति के लिए तू शीघ्रता से परमात्मा की ओर चल। तू उत्साह-सम्पन्न है, अतः शान्ति के आवरक, मोक्ष के निरोधक अज्ञान, भय, शोक, मोह आदि को परे भगा दे। द्वेष-नद से पार उतरने के लिए तू ऋण चुकानेवाले के समान उत्साही बन।

(ख) हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हमें मोक्ष-प्रदान करने के लिए आप हमें शीघ्रता से प्राप्त होओ। मोक्ष-मार्ग में विघ्न-बाधारूप हमारे काम-क्रोध आदि वृत्रों को समूल नष्ट कर दीजिए और हमें द्वेष-नद से पार उतारने के लिए, ऋण चुकानेवाले के सदृश आप हमें प्राप्त होओ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–पिपीलिकामध्या अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१३६५. अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः। गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या।।

(क) हे आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले परमात्मन्! आपने अपनी महान् शक्ति से निराधार आकाश में सूर्य को प्रकट किया है, चमकाया है और मेघों=बादलों में जल की अनन्त राशि को स्थापित किया है। वेदवाणी के प्रेरक आप द्युलोक और भूलोक में सर्वत्र अबाधगति से विचरण करते हैं।

(ख) आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और उपासक को पवित्र करनेवाले हे परमात्मन्! जिसके जीवन में विशेष स्तुति-वाणी है, आप ऐसे उपासक आत्मा में अपनी शक्ति से सूर्य के समान ज्ञान-प्रकाश प्रकट कर देते हैं, उपासक की स्तुति-वाणी से द्रवित्र होकर आप महामति—उपकारक बुद्धि के साथ उपासक के हृदय-सदन में प्राप्त होते हो।

ऋषिः–त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**–पवमानः सोमः। छन्दः–पिपीलिकामध्या अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१३६६. अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये। वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! जितना-जितना हम आपका साक्षात्कार करते हैं, उतना-उतना ही हम उल्लासमय जीवनवाले बनते हैं। आपके साक्षात्कार से ही हम आपके महान् राज्य मोक्ष-सुख में पहुँचने के योग्य बनते हैं। हे आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और उपासकों के जीवन तथा हृदयों को पवित्र करनेवाले परमात्मन्! आप मुमुक्षुजनों को अतिशीघ्र प्राप्त होते हो, अतः हमें भी मुमुक्षु बनने का सामर्थ्य दीजिए।

सूक्त—८

ऋषिः–अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१३६७. परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय।।

हे शान्त उपासक! उपासना के कारण तेरा जीवन अति मधुर—रसीला और स्वादु बन गया है, अतः तू परमैश्वर्य-सम्पन्न, परम स्नेही, परम कृपालु—रक्षण और पोषणकर्ता, भजनीय—उपासनीय परमात्मा की ओर दौड़ चल—तीव्रता से प्रभु-प्राप्ति के मार्ग पर बढ़ चल। तू सदा, सर्वत्र उसी का ध्यान करता हुआ उसी में स्थिर हो जा।

ऋषिः–अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१३६८. एवामृताय महे क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः।।

हे शान्त उपासक! तू प्रकाशयुक्त है—ज्ञान-ज्योतिवाला है, दिव्य गुण-सम्पन्न है, अमृत है—अमृत के समान संग्रह करने योग्य है अर्थात् ईश्वर तेरा ग्रहण करेंगे। सचमुच तू ऐसा ही है, अतः तू अमृत्व की प्राप्ति के लिए और महान् निवास—मोक्षधाम की प्राप्ति के लिए गति कर—अमरत्व और मोक्ष-प्राप्ति के लिए प्रयत्न कर।

ऋषिः–अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। **देवता**–पवमानः सोमः। छन्दः–द्विपदा विराट् पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१३६९. इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयात् क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! साक्षात् हुए आनन्दरसरूप आपका इन्द्रियों का अधिष्ठाता उपासक आत्मा पान करे जिससे उसे आत्मिक बल और ज्ञान की प्राप्ति हो। अन्य देव—विद्वान् भी उस आनन्दरस का पान करें। सारी इन्द्रियाँ भी आपके आनन्दरस का पान करें—बाह्य वस्तुओं में आपका मनन, श्रवण और दर्शन करें।

सूक्त—९

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१३७०. सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुतः साकमीरते।
तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन॥

(क) सूर्य की किरणों के समान द्रुत गति से भ्रमण करनेवाले, उत्तम रीति से प्रेरित होकर, निरपेक्ष गति करते हुए, शीघ्र गामी, सभी लोक सर्वत्र व्याप्त सूत्रात्मा ब्रह्म को लक्ष्य करके एक ही काल में अपनी-अपनी कक्षा में परिक्रमा करते हैं। वास्तव में कोई भी लोक परमेश्वर की शक्ति और प्रेरणा—कृपा के बिना गति नहीं कर सकता।

(ख) उपासनारस से द्रवणशील, सदा प्रसन्न, उपासनारूप ऐश्वर्यवाले, वेगशाली—उत्साह व दृढ़ निश्चयवाले, सूर्य की किरणों के समान शीघ्रगामी उपासक आरम्भ किये हुए उपासना-यज्ञ की ओर एक साथ ही दौड़ते हैं, क्योंकि परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के बिना कोई भी ज्योति—प्रकाश मनुष्य को पवित्र नहीं कर सकता।

(ग) जैसे सूर्य की किरणें प्राणियों को द्रुत गति से कार्यों में प्रेरित करती हैं, वैसे ही परमेश्वर के आनन्दमद से उन्मत्त हुए उपासक प्रभु की प्रेरणाएँ प्राप्त कर परस्पर मिलकर प्रजाजनों को ज्ञान, भक्ति, सदाचार की प्रेरणाएँ देने के लिए भूमण्डल में विचरते हैं। सद्भाव और एकता आदि भावों के प्रचार में उद्योगी, यश, चरित्र और पाण्डित्य से सर्वत्र ख्याति प्राप्त विद्वान् सर्वव्यापक, सूत्रात्मा—परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव का सर्वत्र प्रचार करते हैं, क्योंकि परमैश्वर्यशाली परमात्मा के अतिरिक्त और कोई शक्ति मनुष्य को पवित्र नहीं कर सकती।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१३७१. उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि।
पवमानः सन्तनिः सुन्वतामिव मधुमान् द्रप्सः परि वारमर्षति॥

प्रभु-उपासक अपनी मति=बुद्धि और मननशक्ति को परमात्मा के साथ जोड़ता है अर्थात् उपासक सदा परमात्मा का मनन, चिन्तन तथा विवेचन करता रहता है और अपनी आत्मा को परमात्मा के प्रति समर्पित कर देता है। उपासक के मुख में आनन्ददायिनी स्तुति सदा सक्रिय रहती है जो उसे सतत प्रेरणा देती रहती है। यह उपासक अपने को पवित्र करता हुआ और अन्य जनों में पवित्रता का विस्तार करता हुआ पाप-निवारक परमेश्वर की ओर उसी प्रकार गति करता है, जैसे भक्तियज्ञ करनेवालों का मधुर भक्तिरस परमेश्वर की ओर प्रवाहित होता है।

ऋषिः–हिरण्यस्तूपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१३७२. उक्षा मिमेति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम्।
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपने जीवन को भक्तिरस से सींचनेवाला उपासक प्रभु का स्तुतिगान करता रहता है। उसकी स्तुति-वाणियाँ परमेश्वर की ओर ही प्रयाण करती हैं। यह परमेश्वर के स्थान पर और किसी की स्तुति नहीं करता। ये दिव्य स्तुतियाँ प्रकाशकों के प्रकाशक, आनन्दप्रद परमेश्वर के शुद्ध-स्वरूप को प्रकट करती हैं। यह सौम्य एवं विनीत उपासक सोने-चाँदी के प्रलोभनों को लाँघ जाता है और अविनाशी, शुद्धस्वरूप तथा सर्वव्यापक परमेश्वर को पूर्णरूप में प्राप्त कर लेता है।

सूक्त—१०

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१३७३. अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम्।
दूरेदृशं गृहपतिमथर्व्युम्।।

हे विषयों में न रमनेवाले नरो! तुम हाथ-पैर आदि अवयवों से रहित, अत्यन्त प्रशंसनीय और स्तोतव्य, वेद द्वारा प्रशंसित, अतीन्द्रिय विषय के भी पारद्रष्टा, हृदय-सदन और ब्रह्माण्ड गृह के स्वामी, सर्वव्यापक परमात्मा को ज्ञान और भक्तिरूप अरणियों तथा श्रवण, मनन, निदिध्यासन द्वारा अपने आत्मा में प्रकट करो, उसका साक्षात्कार करो।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१३७४. तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित्।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः।।

परमात्मा में निवास करनेवाले अथवा जीवन में उत्तम निवासवाले उपासक कहीं से, किसी भी भय अथवा शत्रु से अपनी रक्षा के लिए उस प्रकाशस्वरूप परमेश्वर को अपने हृदयरूपी गृह में प्राप्त कर लेते हैं। किस प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं? जो प्रत्येक व्यक्ति पर उत्तम रीति से कृपा-दृष्टि रखनेवाले हैं, प्राणिमात्र का पालन-पोषण करनेवाले हैं, नित्य हैं—अविनाशी हैं, स्तुतियों से साक्षात् करने योग्य हैं, पूज्य हैं, उपासक की वृद्धि के कारण हैं और मोक्षधाम, हृदय-सदन तथा ब्रह्माण्ड-गृह में निवास करते हैं।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१३७५. प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ।
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः।।

हे युवतम—अजर-अमर, अखण्डैकरस प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हृदय-मन्दिर में साक्षात् हुए आप निरन्तर प्रबुद्ध ज्ञान-दीप्तियों के साथ हमारे सामने चमकते रहिए अर्थात् आपकी कृपादृष्टि से हम निरन्तर आपका दर्शन करते रहें। प्रभो! श्रेष्ठ प्रजाएँ—उपासक आत्माएँ ही आपको प्राप्त करती हैं।

सूक्त—११

ऋषिः–सार्पराज्ञी। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३७६. आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यह जिज्ञासु जो पहले तम, रज और सत्त्वगुणों से मिश्रित था—अब त्रिगुणातीत होकर और स्तोता बनकर—प्रभु के गुणों का गायक बनकर नदी के तीर पर जाकर आसन जमाता है और उपासना-मार्ग पर आगे-आगे पग बढ़ाता जाता है। यह उपासना आदि के द्वारा सुखस्वरूप और प्रकाशमान, पालक और उत्पादक जगत्पिता परमेश्वर की ओर प्रयाण करता है।

ऋषिः–सार्पराज्ञी। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३७७. अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्।।

परमेश्वर की दीप्ति—प्रकाश द्युलोक से लेकर पृथिवी तक सर्वत्र व्याप्त हो रहा है। महान् प्रभु मोक्षधाम को भी अपने प्रकाश से प्रकाशित कर रहा है।

ऋषिः–सार्पराज्ञी। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३७८. त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतंगाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः।।

त्रिलोकी का शासन करनेवाला अथवा तीनों लोकों का संहार करनेवाला तेजःस्वरूप परमात्मा प्रति-दिन—सदा अपने तेज से—ज्योति और प्रकाश से सर्वत्र सुशोभित हो रहा है—चमक रहा है। हम उस सर्वव्यापक परमेश्वर की स्तुति और प्रार्थना करते हैं।

षष्ठः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त–१

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३७९. उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते।।

हम उपासक हिंसारहित यज्ञों में पहुँचकर अथवा अपने अन्दर उपासना-यज्ञ को आरम्भ करने के लिए प्रकाशस्वरूप परमात्मा के प्रति मननीय स्तुति-वचनों का उच्चारण करें। हम उस प्रभु के लिए स्तुति-वचनों का उच्चारण करें जो हमसे दूर और हमारे समीपवालों की पुकारों को सुनते हैं।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३८०. यः स्नीहितीषु पूर्व्यः सञ्जगमानासु कृष्टिषु। अरक्षद्दाशुषे गयम्।।

वह परमेश्वर परस्पर स्नेह करनेवाली और सदा मिलकर चलनेवाली श्रमशील प्रजाओं के जीवनों में पूर्णता का विकास करनेवालों में सर्वोत्तम हैं। वह परमेश्वर दानशील और आत्मसमर्पण करनेवाले व्यक्ति के लिए उत्तम सन्तान, उत्तम धन, उत्तम गृह और उत्तम प्राण-शक्ति प्राप्त कराते हैं।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१३८१. स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु शन्तमः। उतास्मान् पात्वंहसः।।

वह शान्तस्वरूप, कल्याणकारी, सुख एवं मंगलस्वरूप, जीवों को उन्नति-पथ पर आगे-ही-आगे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ले-जानेवाला प्रकाशस्वरूप परमात्मा सदा हमारे साथ रहनेवाले ज्ञान-धन की रक्षा करे और हमें पापों से बचाए।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
१३८२. उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि। धनञ्जयो रणेरणे।।

काम-क्रोध आदि शत्रुओं के साथ होनेवाले सभी संग्रामों में उनके बलों को जीतनेवाला अर्थात् काम-क्रोध आदि शत्रुओं को परास्त करनेवाला, ज्ञान पर पर्दा डालनेवाले पाप-वृत्रों का नाशक, सबको उन्नति-पथ पर आगे-ही-आगे ले-जानेवाला परमात्मा हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकट हो गया है। जन्म लेनेवाले सब मनुष्यों—उपासकों को चाहिए कि वे परमेश्वर की स्तुति-प्रार्थना किया करें।

सूक्त—२

ऋषिः-भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१३८३. अग्ने युंक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः।।

हे सर्वोन्नति-साधक, आनन्दप्रद परमात्मन्! जो इन्द्रियरूपी घोड़े आपके ही दिये हुए हैं, उन्हें आप हमारे शरीररूपी रथ में जोत दीजिए, जिससे ये हमारी साधना—जीवन-यात्रा को सफल कर दें और हमें शीघ्र ही मोक्ष तक पहुँचा दें—मोक्ष प्राप्त करा दें।

ऋषिः-भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २र
१३८४. अच्छा नो याह्या वहाभि प्रयांसि वीतये। आ देवान्त्सोमपीतये।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप हमारे समक्ष आइए—हमें अपना साक्षात्कार कराइए। हमारे प्रयासों को लक्ष्य में रखकर अपने दर्शन दीजिए। हमें सात्त्विक अन्न प्राप्त कराइए। आप ज्ञान-वैराग्य, शम-दम आदि दिव्य गुणों को हमें प्राप्त कराइए और विद्वानों का संग भी प्राप्त कराइए। किस लिए? जिससे हम अपने जीवनों को पवित्र बना सकें, अपनी मनःकामनाओं को पूर्ण कर सकें और अन्त में मोक्षधाम के भागी बन सकें।

ऋषिः-भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१२ ३ १ २र ३ १ २ २ ३ १ ३
१३८५. उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत्। शोचा वि भाह्यजर।।

हे सबका भरण-पोषण करनेवाले प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप क्षीण न होनेवाले, निरन्तर वर्तमान रहनेवाले तेज से प्रकाशित हुए हमारे हृदयों में खूब चमकिए। हे जीर्ण न होनेवाले—अविनाशी परमात्मन्! हमें तेजस्वी बना दीजिए, हमारे जीवनों को ज्योतिर्मय बना दीजिए।

सूक्त—३

ऋषिः-प्रजापतिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
१३८६. प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः।
२३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ २र
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपासना करने योग्य, आनन्दस्वरूप परमात्मा का साक्षात् करनेवाला श्रद्धालु मनुष्य किसी दुष्ट, दुर्जन, नास्तिक के ईश्वर-विरोधी, अनिष्ट वचन सुनने की इच्छा नहीं रखता। जैसे ज्ञानाग्नि से प्रदीप्त ब्रह्मनिष्ठ ज्ञानी कर्मकाण्ड बहुल या हिंसा-प्रधान यज्ञों को त्याग देते हैं, वैसे ही हे उपासको! तुम कुत्ते के समान लोभी, कामी और इधर-उधर भटकनेवाले जन को और प्रभु-उपासना न करनेवाले भगवद्विमुख नास्तिक को त्याग दो।

ऋषिः-प्रजापतिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ १ २र ३ २उ ३ २ ३क २र
१३८७. आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः।
१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ १
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम्।।

जैसे बालक रक्षा करने में समर्थ माता-पिता की भुजाओं में सुरक्षित होता है, उसी प्रकार विषयों में भटकनेवाला जीव सबके आच्छादक—शरणस्थान परमेश्वर की शरण में उपस्थित होकर सुरक्षित हो जाता है। विषयों में भटककर अपनी शक्तियों को जीर्ण करनेवाला जीव अब स्तुतिकर्ता—प्रभु-उपासक बनकर काम-क्रोध आदि शत्रुओं का विनाश करने के लिए अग्रसर होता है, कृत संकल्प बनता है और श्रेष्ठ गुणों के कारण वरणीय बनकर परमात्मा की अमृतमयी गोद में जा बैठता है।

ऋषिः-प्रजापतिः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
१३८८. स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम्।।

वह शान्तस्वरूप परमेश्वर द्युलोक और भूलोक को धारण करता है। वह महान् पराक्रमी और बुद्धि-वृत्तियों का प्रेरक है। वह समर्थ साधनों से युक्त है। उपासक के त्रिविध तापों का हर्ता परमेश्वर काम-क्रोध आदि दुर्गुणों और वासनाओं से शून्य पवित्र हृदय में प्राप्त होता है और मेधावी उपासक परमात्मा की अमृतमयी गोद में जा बैठता है।

सूक्त—४

ऋषिः-सोभरिः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। **स्वरः**-ऋषभः।

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१३८९. अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि। युधेदापित्वमिच्छसे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप शत्रुरहित हैं, नेता से रहित हैं, माता-पिता से भी रहित हैं। आप नित्य हैं—सनातन हैं। आपकी ओर गति करनेवाले उपासक को आप अपनाते हैं।

ऋषिः-सोभरिः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
१३९०. न की रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः।
३ २ ३ १२ ३१ २र ३ २उ ३ १ २
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! दया, दान, संयम, नम्रता आदि गुणों से रहित केवल धन के अभिमानी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पुरुष से आप मित्रता नहीं करते—धनाभिमानी आपको पसन्द नहीं करते। धनाभिमानरूपी मदिरा में प्रमत्त नास्तिकजन खूब शराब आदि पीते हैं, आस्तिकता का उपहास उड़ाते हैं, और गरीबों की हिंसा करते हैं, परन्तु जब आप भूकम्प आदि के रूप में घोर गर्जन करते हैं तो इन्हें दण्ड देते हुए इनकी सारी सम्पत्ति को छीन लेते हैं, वैभव नष्ट हो जाने पर इन जनों के द्वारा आप पिता के समान स्मरण किये जाते हैं। वे कहते हैं— हे प्रभो ! हमारी रक्षा कर! हमारी कुमति को दूर कर हमें सुबुद्धि प्रदान कर।

सूक्त—५

ऋषिः–मेधातिथिमेध्यातिथी काण्वौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१३९१. आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मन् ! विषयों में न भटकानेवाली वृत्तियाँ तुझे विषयों में भटकाकर तेरा ब्रह्म से मेल करानेवाली हों। ब्रह्म के साथ मेल के कारण ये प्रकाशवाली हो जाएँ। ज्योतिर्मय शरीर में युक्त हुई ये सहस्रों और लाखों चित्त-वृत्तियाँ शान्त और निरुद्ध होकर तुझे परमात्मा के आनन्दरस का पान कराने के लिए ले-चलें—तुझे सोमपान करनेवाला बनाएँ।

ऋषिः–मेधातिथिमेध्यातिथी काण्वौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१३९२. आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या।
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! काम-क्रोध का नाश करनेवाले विवेक और वैराग्य तथा उनके साथ सम्बन्ध रखनेवाले, निर्मल पृष्ठवाले अर्थात् अत्यन्त निर्मल मन और बुद्धि आपको हमारे दोषों से शून्य, ज्योतिर्मय रमणीय हृदय में ले आएँ। किस लिए? आपके अत्यन्त प्रशंसनीय मधुर आनन्दरस का पान करने के लिए।

ऋषिः–मेधातिथिमेध्यातिथी काण्वौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१३९३. पिबा त्वाऽ३स्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपाइव।
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुतिश्चारुर्मदाय पत्यते।।

वेदवाणियों द्वारा प्रभु की स्तुति करनेवाले हे जीवात्मन् ! हृदय में निष्पादित प्रभु के आनन्दरस का तू पान तो कर। यह आनन्दरस पहले पान के समान ही है। परम पवित्र, अपापविद्ध, रसरूप परमेश्वर की यह आनन्दरसधारा अत्यन्त मधुर है और जीवन में विशिष्ट आनन्द प्रदान करने में समर्थ है।

सूक्त—६

ऋषिः–ऋजिश्वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। **स्वरः**–ऋषभः।

१३९४. आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे उपासको! अपने हृदय में उस प्रभु की भावना उत्पन्न करो, श्रद्धा से उसे आत्मा में सींच लो, जो प्रभु सर्वव्यापक हैं, स्तुति के योग्य—उपासनीय हैं, सत्कर्मों के प्रेरक हैं, लोक-लोकान्तरों को गति देनेवाले हैं, भक्तों में निवास करनेवाले हैं और जल की भाँति उपासकों की ओर प्रवाहित होनेवाले हैं।

ऋषिः–ऊर्ध्वसद्मा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१३९५. सहस्रधारं वृषभं पयोदुहं प्रियं देवाय जन्मने।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत्।।

यदि पुनः जन्म मिले तो पवित्र और श्रीसम्पन्न कुल में ही जन्म मिले अथवा जीवन्मुक्त बनने के लिए मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ। उस प्रभु की जोकि सहस्रों वेदरूपी वाणीवाले हैं, सुखवर्षक, कामनापूरक और शक्तिशाली हैं;आत्मा में आनन्दरस का दोहन करनेवाले हैं, जो सबके प्रीतिपात्र और सबको तृप्त करनेवाले हैं, जो परमात्मा सत्य में स्थित है अथवा सत्य का जन्मदाता है, जो जीवात्माओं में ऋत के द्वारा ही बढ़ता है—सत्य के पालन से आत्मा में प्रकाशित होता है, जो देदीप्यमान और विश्वब्रह्माण्ड का नियामक है, जो सत्य, सत्यस्वरूप और सबसे महान् है।

सूक्त—७

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
१३९६. अग्निर्वृत्राणि जंघनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः।।

हम उपासक विशिष्ट स्तुति द्वारा प्रकाशस्वरूप परमेश्वर को हृदय में प्रदीप्त करते हैं [उसके न्याय और व्यवस्था आदि द्वारा उसका आभास हृदय में होता है।] फिर हम उसकी ओर चलते हैं और अन्त में उसके प्रति समर्पित हो जाते हैं तथा उसे पा लेते हैं। हमारे लिए ज्ञान, सुखैश्वर्य चाहता हुआ वह परमेश्वर हमारे ज्ञान और सुखैश्वर्य के आवरकों, अवरोधकों—अज्ञान, रोग, दुःख, दारिद्रय को नष्ट कर देता है।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
१३९७. गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे। सीदन्नृतस्य योनिमा।।

(क) हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप मेरी माता के गर्भ में भी विद्यमान हैं, मेरे पिता के भी पिता हैं, मेरी अविनाशी आत्मा में विद्युत् के समान चमक रहे हैं और सत्यज्ञान के आधार वेद में स्थित हैं अर्थात् वेद में आपकी महिमा का प्रतिपादन है।

(ख) पिता का भी पिता परमेश्वर पृथिवी के गर्भ में विद्यमान है। अत्यन्त प्रकाशमान वह प्रकृति और जीव में भी व्यापक है और सत्य के आधार वेदज्ञान का प्रकाशक है।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१३९८. ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे। अग्ने यद्दीदयद्दिवि।।

हे सर्वज्ञ, वेदों के प्रकाशक, सर्वव्यापक, विश्वद्रष्टा—सबका पालन-पोषण करनेवाले, प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! जो आप द्युलोक में प्रकाशमान हो रहे हो, वे आप हमें उत्तम सन्तान प्रदान कीजिए और वेद का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान भी प्रदान कीजिए। हमें वह सन्तान दीजिए जो ज्ञान के प्रकाश में चमकनेवाली—अत्यन्त ज्ञानी हो और विद्वानों में सुशोभित हो।

सूक्त—८

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २ ३ २ ३१२ ३१२ ३ २ ३२ ३ १२ ३ १२
१३९९. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम्।
३ २ ३ २३ १२ ३ १२ ३ २३ १ २ ३२ ३ १ २
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता।

शान्तस्वरूप परमात्मा का प्रेरक तेज जब उपासक के अन्दर आता है, तब साक्षात् किया जाता हुआ यह शान्तस्वरूप देव इन्द्रियों के पानार्थ अपने आनन्दरस की धारा प्रवाहित कर देता है। अब इन्द्रियाँ भोग-प्रवण न रहकर प्रभु के आनन्दरस का पान करने लगती हैं। साक्षात् किया हुआ वह परमेश्वर हितोपदेश करता हुआ हृदय में परिपूर्ण हो जाता है। उस समय जैसे गौ आदि पशुओं का स्वामी दूध-घृत आदि की कामना से घरों में आता है, वैसे ही अध्यात्म यज्ञ का होता यह उपासक आनन्दरस से परिपूर्ण परमात्मा के पास पहुँच जाता है।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २ २र ३ २ १ २ ३ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २
१४००. भद्रा वस्त्रा समन्याऽऽ३वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।
१ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ।।

(क) महाज्ञानी, सर्वज्ञ, विश्वद्रष्टा, सदा जागरूक, हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप उपासकों को जीवन-संग्राम में विजयी बनानेवाले, जीवन में व्याकुलता पैदा न करके शान्ति प्रदान करनेवाले वस्त्रों—आच्छादनों—अपनी आनन्दतरंगों से आच्छादित—तरंगित करते हुए तथा रहस्यमय और प्रेमभरे उपदेश करते हुए, मोक्ष प्रदान करने के निमित्त, आनन्दरस का आस्वादन करनेवाले हमारे मन-बुद्धिरूपी पात्रों में आनन्दधारारूप में प्रवाहित होते हुए आगमन करो।

(ख) गुणों में महान् और क्रान्तदर्शी उपासक! तू शोभाजनक और व्याकुलता पैदा न करनेवाले वस्त्रों को धारण करता हुआ और प्रवचन करने योग्य वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करता हुआ सर्वत्र भ्रमण कर। हे वेदकाव्य के प्रवक्ता उपासक! सबपर कृपादृष्टि रखते हुए, अपने कर्तव्य में सदा सावधान रहते हुए तू दिव्य गुणों की प्राप्ति के निमित्त द्युलोक और पृथिवीलोक के निवासियों को पवित्र करता हुआ सर्वत्र प्रवचन करता रह।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१२ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१४०१. समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे।
३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

आनन्दधारा में प्रवाहित होनेवाले हे परमेश्वर! आप तृप्तिकर्ता, यशवालों में अत्यन्त यशस्वी—महान् आत्माओं में परम महान् हैं, मुक्तों की निवासभूमि—मोक्षधाम के आप स्वामी हैं। आपके दिव्य-अंश को—दिव्य गुणों को अपने में पूरण करनेवाले हम उपासकों द्वारा आप सम्यक् प्राप्त किये जाते हैं। आनन्दधारा रूप में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रवाहित होते हुए आप हमारे हृदय-मन्दिर में आशीर्वचनों का उच्चारण करो। हे प्रभो! अपनी कल्याण-क्रियाओं द्वारा आप सदा हमारा रक्षण करो।

सूक्त—९

ऋषिः–तिरश्चीः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ २ ३ १ २ ३२ ३२ १ २
१४०२. एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु।।

हे उपासको! आओ तो, चारों ओर से यहाँ एकत्र हो जाओ। हम सब शुद्धस्वरूप, अपापविद्ध, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की पवित्र सामगानों और निर्मल मनोवृत्ति से स्तुति करें, असत्य आदि दोषों से रहित, सत्य आदि गुणों से युक्त वाणियों से बढ़नेवाले—महिमा-मण्डित होनेवाले प्रभु का स्तवन करें। हमारे पवित्र विचार, उच्चारऔर आचार से वह हमें आशीर्वाद प्रदान करता है और हमपर कृपालु होता है।

ऋषिः–तिरश्चीः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१४०३. इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः।
३ २ ३ १ २र ३ १ २
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्य।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप शुद्धस्वरूप हैं। आप हमारे शुद्ध-पवित्र हृदय में आइए, टुक अपने दर्शन दीजिए। आप शुद्ध=पतित पावन हैं—अपने शुद्ध संरक्षणों—रक्षा-विधानों से हमारे जीवनों का उद्धार कीजिए। आप शुद्ध-पवित्र हैं, अतः पवित्र साधनों से अर्जित धन हममें धारण कराइए-हम पवित्र साधनों से ही धन कमाएँ। हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप शुद्ध हैं—आनन्दस्वरूप हैं—हमें भी आनन्द प्राप्त कराइए। आप हमपर प्रसन्न हों—आपकी दयादृष्टि हमपर सदा बनी रहे।

ऋषिः–तिरश्चीः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २
१४०४. इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषाससि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप निश्चय ही पूर्ण शुद्ध हैं, अतः आप शुद्ध-पवित्र जीवनवाले उपासकों को योग-क्षेम के लिए आवश्यक धन और मोक्षैश्वर्य देना चाहते हैं। आप शुद्ध—निर्दोष एवं पवित्र है, अतः आपके प्रति आत्मसमर्पण करनेवालों को आप शम, दम, विवेक, वैराग्य आदि दिव्य रत्न देना चाहते हैं। आप **शुद्ध**=निर्दोष हैं, हमें निर्दोष बनाने के लिए आप हमारे काम-क्रोध आदि वृत्रों को नष्ट करना चाहते हैं। आप **शुद्ध हैं**— अत्यन्त पवित्र और निर्मल हैं, अतः शक्ति, त्याग-भावना और ज्ञान प्रदान करते हुए आप हमें भी **शुद्ध**, पवित्र और निर्मल बनाते हैं।

[शक्ति से शरीर शुद्ध बनता है, त्याग-भावना से मन पवित्र बनता है और ज्ञान से बुद्धि निर्मल होती है।]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१०

ऋषिः–सुतम्भर आत्रेयः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४०५. अग्ने स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! मोक्षधन की कामनावाले हम उपासक मोक्षधाम में व्यापक, आनन्दप्रद, मनोरथों को पूर्ण करनेवाले आपके स्तोत्रों=स्तुतिगानों का आज ही—इसी जीवन में बारम्बार उच्चारण करते हैं।

ऋषिः–सुतंम्भर आत्रेयः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४०६. अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा। स यक्षद् दैव्यं जनम्।।

प्रकाशस्वरूप परमात्मा जो सबको अपनानेवाला है और सबसे बढ़कर दानी है, वह परोपकारियों को सब आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करानेवाला है। वह मननशील उपासकों के हृदय में साक्षात् होता है और हम उपासकों की स्तुति और प्रार्थनाओं को प्रेमपूर्वक सुनता है तथा उन्हें स्वीकार करता है—पूर्ण करता है। वह प्रभु दिव्य गुणयुक्त महापुरुषों को हमारे साथ संगत करे—हमें विद्वानों का संग प्राप्त कराए।

ऋषिः–सुतम्भर आत्रेयः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४०७. त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः। त्वया यज्ञं वि तन्वते।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! आप ज्ञान, बल, धन आदि के दृष्टिकोण से सबसे महान् हैं। आप हम उपासकों के प्रीतिपात्र हैं। आप भक्तों को सब-कुछ देनेवाले और उन्हें अपनानेवाले हैं। आप वरण करने योग्य हैं। आपकी सहायता और कृपा से उपासक यज्ञ=श्रेष्ठतम कर्म—सुकर्म करने में समर्थ होते हैं अथवा आपको लक्ष्य में रखकर—आपको प्राप्त करने का संकल्प लेकर उपासकजन अध्यात्म-यज्ञों का विस्तार करते हैं।

सूक्त—११

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४०८. अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामंगोषिणमवावशन्त वाणीः।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि।।

उपासक की स्तुति-प्रार्थनारूप वाणियाँ निरन्तर उस परमेश्वर को चाहती हैं जो त्रिपृष्ठ—वाणी, मन और आत्मा से स्पर्श होनेवाला है [वाणी से उसकी स्तुति, मन से प्रार्थना और आत्मा से उसकी उपासना होने से वह 'त्रिपृष्ठ' है], जो सुखवर्षक और अभिलाषाओं का पूरक है, जो दीर्घ जीवन प्रदाता है, अंग-अंग में निवास करनेवाला है, नस-नस में रमा हुआ है, जो ज्ञान-रश्मियों को धारण और प्रदान करनेवाला है, वरण करने योग्य है और समुद्र के समान दयार्द्र है, जो रत्नों का धारक और वरणीय पदार्थों का दाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४०९. शूरग्रामः सर्ववीरः सहावाञ्जेता पवस्व सनिता धनानि।।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाढः साह्वान् पृतनासु शत्रून्।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले हे परमात्मन्! आप शान्ति, सन्तोष, आनन्द आदि गुणों के पुञ्ज हैं अथवा आप हिंसकों के विनाशक हैं, वीरता में सबसे बढ़े-चढ़े हैं और सबको सुप्रेरणा देनेवाले हैं, धनों का विभाग और वितरण करनेवाले हैं, क्रूरों का संहार करनेवाले हैं, शत्रुओं को दूर फेंकनेवाले हैं। आप देवासुर-संग्राम में पराजित न होनेवाले हैं, मनुष्यों को सतानेवाले दुर्जनों का पराभव करनेवाले हैं—ऐसे आप हमारे हृदय-मन्दिर में आओ और हमारे जीवनों को पवित्र बना दो।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४१०. उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरन्धी।
अपः सिषासन्नुषसः स्वा३र्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान्।।

हे आनन्दधारा में प्रवाहित होनेवाले परमात्मन्! आप सर्वव्यापक हैं। आप द्युलोक और भूलोक को सुख-समृद्धि से पूर्ण करते हुए हम उपासकों और अन्य जनों को भी निर्भय बनाते हुए हमारे हृदय-मन्दिर में प्रवाहित हो जाइए। जल, उषाएँ, सांसारिक सुख और शक्तियाँ, धन और ज्ञान आदि अनेक महान् शक्तियाँ प्रदान करते हुए आपने हमें वेदवाणियों का भी सम्यक् उपदेश किया है, अतः हे प्रभो! आप वन्दनीय हैं—उपासनीय हैं।

सूक्त–१२

ऋषिः–नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१४११. त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत्पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप महायशस्वी हैं। आपकी सदा, सर्वत्र स्तुति की जाती है। आप उपासकों में सद्गुणों को प्रेरित करनेवाले हैं। आप बलों के भण्डार हैं। आप घोर पाप-वृत्रों—पाप-संकल्पों को नष्ट करनेवाले हैं। आप अकेले होकर भी बहुतों द्वारा भी पराजित न होनेवाले हैं। आप सब प्रजाओं का पालन, पोषण और धारण करनेवाले हैं।

ऋषिः–नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१४१२. तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे।
महीव कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नवन्।।

प्राणशक्ति, प्रज्ञान और वसुओं—नाना प्रकार के धनों, निवास के लिए आवश्यक वस्तुओं को प्रदान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करनेवाले हे प्रभो ! हम प्रकृष्ट ज्ञानवाले, सर्वप्रसिद्ध आपसे ही जीवन में सर्वविध सफलता प्राप्त करानेवाला धन चाहते हैं, जैसे-सन्तानें अपने पिता से अपने-अपने भाग को चाहती हैं। हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! जैसे द्युलोक और भूलोक आपकी शरण में हैं, वैसे ही हम उपासक भी आपकी शरण में हैं। आपकी शरण हम उपासकों के लिए महान् यश, प्रभूत धन और विशाल घर के समान है। हे प्रभो ! हमारी कामना है कि आपके स्तोत्र हमें प्राप्त हों—हम सदा आपके ही गुणों का गान करनेवाले हों, आपका संरक्षण हमें प्राप्त हो और आपका आनन्दरस भी हमें प्राप्त हो।

सूक्त—१३

ऋषिः—सोभरिः काण्वः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। **स्वरः**—ऋषभः।

१ २ ३१ २३ २र ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१४१३. यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।।

श्रेष्ठ कर्मशीलों सर्वोत्तम, उपासना-यज्ञों में अत्यन्त पूज्य; देवों में महांदेव, महादानी, हमारे इष्टफलों के देनेवाले, अविनाशी और हमारे उपासना-यज्ञ को सफल बनानेवाले, जीवन-यज्ञ को निर्विघ्न पूर्ण करनेवाले आपका हम वरण करते हैं, आपको अपनाते हैं—आपकी उपासना करते हैं।

ऋषिः—सोभरिः काण्वः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१४१४. अपां नपातं सुभगं सुदीदितिमग्निमु श्रेष्ठशोचिषम्।
१ २ ३ २ ३ १२ ३ २ ३२उ ३ १ २ ३ २
स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपामा सुम्नं यक्षते दिवि।।

कर्मशील जनों को न गिरने देनेवाले अपितु उन्नत करनेवाले, उत्तम भग = समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य—को प्राप्त करानेवाले, ज्ञान की उत्तम ज्योति से द्योतित होनेवाले, सर्वश्रेष्ठ प्रकाशमय ज्योतिवाले, सबको आगे ले-जानेवाले परमेश्वर का ही हम वरण करते हैं, उसी को अपनाते हैं। वह परमेश्वर हमें प्राण और अपान शक्ति का सुख प्रदान करता है। प्राण से शरीर में शक्ति का सञ्चार होता है और अपान से रोग दूर होते हैं। वह परमात्मा हमें अपाम् = वीर्य-कणों को मस्तिष्क में संगत करने की प्रेरणा देता है—हमें ऊर्ध्वरेता बनने की शक्ति प्राप्त कराता है।

सूक्त—१४

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ २उ ३ १ २ ३ १ २
१४१५. यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः। स यन्ता शश्वतीरिषः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! काम-क्रोध आदि शत्रुओं के साथ होनेवाले देवासुर-संग्रामों में आप जिस मनुष्य की रक्षा करते हो और जिसको योग-साधन में प्रेरित करते हो, वही मनुष्य हृदय में तरंगित होनेवाली कामनाओं और वासनाओं पर काबू पाता है।

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
१४१६. न किरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित्। वाजो अस्ति श्रवाय्यः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सभी शत्रुओं और आसुरी भावनाओं का पराभव करनेवाले ज्ञानप्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आपसे सुरक्षित इस अथवा विलक्षण शक्ति प्राप्त कर लेनेवाले किसी भी उपासक पर आक्रमण करनेवाला कोई नहीं है। जहाँ आप हैं वहाँ वासना कैसे फटक सकती है? आपसे सुरक्षित उपासक की शक्ति=बल अद्भुत, विलक्षण और लोकोत्तर होती है।

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४१७. स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता। विप्रेभिरस्तु सनिता॥

सब मनुष्यों का धारण और पालन करनेवाला परमेश्वर काम-क्रोध आदि के साथ युद्ध में लगे हुए उपासक को संसार-सागर से पार लगानेवाले महापुरुषों के साथ पार उतार दे। इस संग्राम को जीतने और संसार-सागर से पार उतरने के लिए यह मेधावी ब्राह्मणों के साथ आपकी उपासना करनेवाला हो।

सूक्त–१५

ऋषिः–नोधाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४१८. साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी॥

ध्यानशील योगी की विशेष प्रेरणा प्राप्त करानेवाली ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की दस शक्तियाँ एक-साथ सींचनेवाली–ध्यान में तृप्त करनेवाली होती हैं। ये ध्यानी को परमात्मा की ओर चलानेवाली होती हुई परमात्मा में पहुँचा देती हैं, तब त्रिविध दुःखों का हरण करनेवाला परमात्मा अपनी ओर शरणशील योगी में उत्पन्न हुई भावनाओं के प्रति दयार्द्र हो जाता है और निरन्तर गमनशील घोड़ की भाँति, उपासक के हृदय-मन्दिर में प्राप्त हो जाता है, जैसे घोड़ा अन्तमें तबेले में पहुँच जाता है।

ऋषिः–नोधाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४१९. सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः।
मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्त्सं गच्छते कलश उस्रियाभिः॥

सबके द्वारा वरण करने योग्य, सुखवर्षक और कामनापूरक शान्तस्वरूप परमात्मा मुमुक्षु उपासकों द्वारा हृदय में धारण किया जाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे दूध और स्नेह की प्रबल कामनावाला बालक माताओं के द्वारा धारित और पोषित किया जाता है। जैसे सब ओर से परिष्कृत–साफ-सुथरे घर को प्राप्त करने के लिए मनुष्य पत्नी के साथ संगत होता है, उसी प्रकार उपासक शुद्धस्वरूप परमेश्वर की ओर जाता हुआ हृदय-सदन में परमेश्वर की प्रकाशमयी-ज्योति के साथ संगत हो जाता है।

ऋषिः–नोधाः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४२०. उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः।
मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जिसका कभी वध—नाश नहीं किया जा सकता ऐसे सत्य, अहिंसा, शम, दम आदि ज्ञान को धारण करनेवाला उपासक उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। शनैः-शनैः यह दीप्तिमान उपासक सद्बुद्धि से युक्त होकर ब्रह्मविद्या के साथ संगत हो जाता है। यह ब्रह्मविद्या उपासकों में सर्वश्रेष्ठ उपासक को अपनी प्राप्ति से इस प्रकार सेवन करती है जैसे धोये हुए शुद्ध वस्त्र उसका सेवन करते हैं अर्थात् जैसे निर्मल वस्त्र उसके शरीर का आश्रय लेते हैं, ऐसे ही ब्रह्मविद्या उसकी आत्मा का आश्रय लेती है।

सूक्त—१६

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

१४२१. पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः।
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधेऽ३स्माँ अवन्तु ते धियः।।

प्रभु उपदेश करता है—हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! तू हमारे द्वारा निर्मित इस सुखदायी संसार का उपभोग कर। तू अपनी इन्द्रियों को प्रशस्त बनाता हुआ, संयममय जीवन बिताता हुआ प्रसन्नता अनुभव कर। जीव कहता है—प्रभो! आप हमारे बन्धु हो। हमें ज्ञान प्रदान कीजिए। हम आपके साथ—आपकी मित्रता में रहने में हर्ष का अनुभव करें और सदा उन्नति एवं समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ें। आपकी बोधधाराएँ हमारा रक्षण करें।

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

१४२२. भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा न स्तरभिमातये।
अस्माञ्चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपके द्वारा प्रदत्त कल्याणकारिणी मति=शिक्षा में रहकर हम अन्न, धन, बल और ज्ञान से सम्पन्न बनें। आप हमें अभिमान के वशीभूत मत होने दीजिए, उसपर तो पर्दा ही डाले रहिए। आप अपनी अलौकिक रक्षण-शक्तियों द्वारा हमारी रक्षा करते रहिए और हमें सुखों में धारण कीजिए।

सूक्त—१७

ऋषिः—रेणुर्वैश्वामित्रः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—जगती। **स्वरः**—निषादः।

१४२३. त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत।।

शान्तस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए स्तुति, प्रार्थना और उपासना—इन तीन क्रमोंवाली तथा गायत्री आदि सात छन्दोमयी वेदवाणियाँ सत्य और वासनाओं को शीर्ण करनेवाले ज्ञान को जीवात्मा के परमोत्कृष्ट हृदय-आकाश में पूर्ण कर देती है—भर देती है। जब यह उपासक वेदज्ञान के द्वारा उन्नत हो जाता है, तब आत्मशुद्धि के लिए चार अन्य कर्म—प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का अनुष्ठान करता है। इस प्रकार यह ज्ञान और योगाभ्यास से आत्मा का साक्षात्कार कर लेता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–रेणुर्वैश्वामित्रः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१४२४. स भक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे।
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला वह परमात्मा कल्याणप्रद मोक्षानन्द का सेवन कराना चाहता हुआ द्युलोक और भूलोक–दोनों के रहस्यों को वेदरूपी काव्य के द्वारा खोलता है। वह परमेश्वर अत्यन्त तेजस्वी, आप्त उपासकों को त्याग, तप और दानशीलता से प्राप्त होता है। जब अन्य जन भी आनन्दप्रद परमेश्वर के श्रवण, मनन, निदिध्यासन के हेतु से योगाभ्यास में प्रवृत्त होते हैं, तब वे भी परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं।

ऋषिः–रेणुर्वैश्वामित्रः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१४२५. ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी उभे अनु।
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद्राजानं मनना अगृभ्णत।।

इस शान्तस्वरूप परमेश्वर के वे पूर्वोक्त ज्ञान-सम्पन्न मुमुक्षु उपासक मृत्युरहित और अहिंसनीय हो जाते हैं। दोनों जन्मों को लक्ष्य करके वह परमेश्वर उन्हें संसार में आने पर वासनाओं से अहिंसनीय और पुनः मोक्ष में जाने पर मृत्युरहित बना देता है। परमेश्वर इन ज्ञान-सम्पन्न उपासकों के लिए संसार में अन्न आदि भोग और मोक्ष में मुक्तों के योग्य आनन्द प्राप्त करता है। परमात्मा की कृपा होने पर ही मननशील उपासक संसार के व्यवस्थापक, प्रकाशमान परमात्मा को स्वात्मा में ग्रहण करते हैं।

सूक्त–१८

ऋषिः–कुत्सः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४२६. अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽ३भि मित्रावरुणा पूयमानः।
अभी नर धीजवनं रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हमारे द्वारा स्तुत होते हुए आप हमारे जीवनों को पवित्र करते हुए हमारी कामनाओं की पूर्ति के लिए हमारे गतिशील मन में आ जाओ–समा जाओ जिससे यह मन आपका ही मनन करता रहे। आप हमारे प्राण-अपानों में समा जाओ जिससे वे अपनी श्वास-प्रश्वास क्रियाओं को सुचारु रूप से करते रहें। आप बुद्धि से अपने विषयो में गमन करनेवाले नेत्रादि इन्द्रियों के समूह में रम जाओ जिससे वे उचित विषय में ही गमन करें और अन्त में आप शरीररूपी रथ में स्थित, अंगों में शक्तिवर्षक, ओजरूप, बल-वीर्य से सम्पन्न आत्मा में प्रविष्ट हो जाओ जिससे आत्मा सदा आपके आनन्द में मग्न रहे।

ऋषिः–कुत्सः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४२७. अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः।
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान् रथिनो देव सोम।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे आनन्दप्रद और शान्तस्वरूप परमात्मन्! हमारे जीवनों को पवित्र और सुखपूर्ण बनाने के लिए आप हमें आच्छादन करनेयोग्य उत्तम वस्त्र प्राप्त कराइए। हमारे भरण-पोषण के लिए सुगमता से दोहन योग्य दुधारू गौओं को प्राप्त कराइए। हमारे भरण-पोषण के लिए सोना-चाँदी अथवा आह्लादक धन प्राप्त कराइए और रथ में जोते जानेवाले घोड़े भी हमें प्राप्त कराइए।

ऋषिः–कुत्सः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४२८. अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः।
अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! हमारे जीवनों को पवित्र करते हुए आप हमें दिव्य धनों अर्थात् ज्ञान, सदाचार, दृढ़ संकल्प, उत्साह, साहस आदि को प्राप्त कराइए और सम्पूर्ण पार्थिव धनों– अन्न, वस्त्र, भवन, पशु आदि को भी प्राप्त कराइए अथवा जिस साधन से संसार-यात्रा को चलाने के लिए आवश्यक धन–सम्पत्ति को प्राप्त कर सकें वह साधन–ज्ञान और बल भी हमें प्राप्त कराइए। जिस धन का हम भोग करें उसके साथ आपका धन्यवाद करें। हमें ऋषियों द्वारा श्रुत और नेत्र द्वारा दृष्ट=साक्षात्कृत वेदज्ञान भी प्राप्त कराइए।

सूक्त–१९

ऋषिः–नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१४२९. यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय।
तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम्।।

हे कारण से रहित अनादि! मोक्षैश्वर्यवाले परमात्मन्! जो आप पापरूपी वृत्रों को नष्ट करने के लिए हमारे हृदयों में प्रकट होते हैं, उसी आपने पृथिवी का विस्तार किया है और निश्चय से उसी आपने द्युलोक को थामा हुआ है।

ऋषिः–नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१४३०. तत्ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृतिः।
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपके निमित्त किये जानेवाले यज्ञ आपके द्वारा ही सृष्ट किये गये हैं, वेद द्वारा आपने ही इनका विधान किया है। आपने ही सूर्य को प्रकट किया है और दिन की रचना भी आपने ही की है। जो उत्पन्न हो चुका है और जो भविष्य में उत्पन्न होगा–उस सारे विश्व को आपने अभिभूत किया हुआ है, अपने वश में किया हुआ है, उसपर विजय पाई हुई है।

ऋषिः–नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१४३१. आमासु पक्वमैरय आ सूर्यं रोहयो दिवि।
घर्मं न सामं तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हे महोपदेशक! आप हम उपासकों में बलिष्ठ प्राणों को प्रेरित करो—हमें महा प्राणवान् बना दो और हमारे मस्तिष्क में ज्ञान-सूर्य को उदित कर दो। हे उपासको! तुम अपने आपको उपासना में ऐसे तपाओ जैसे यज्ञ को तपाया—प्रज्वलित किया जाता है और शोभन स्तुतियों से महान्, सेवनीय एवं प्रीतिपात्र, वेदवाणियों द्वारा सम्भजनीय—उपासनीय परमात्मा का साक्षात्कार करो।

सूक्त—२०

ऋषिः–अगस्त्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–स्कन्धोग्रीवी बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
१४३२. मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषा ते वृष्ण इन्दुर्वाजी सहस्रसातमः।।

हे त्रिविध तापों को हरनेवाले परमेश्वर! पान के द्वारा काम-क्रोध आदि शत्रुओं से त्राण करनेवाले आपके अत्यन्त तीव्र और मद से उन्मत्त बना देनेवाले आनन्दरस का मैंने पान किया है। इस रसपान से आप मुझे हर्षोन्मत्त बना रहे हो। प्रभो! आप स्वयं मद हो, अत्यन्त मादक हो, हर्षस्वरूप हो और दूसरों को भी हर्ष देनेवाले हो। हे कामनापूरक परमेश्वर! आप सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाले हो, दीप्तिमान् और परम रसीले हो, बलवान् और ज्ञानवान् हो तथा अत्यन्त दानशील हो। आप मुझे भी मनोरथपूरक, दीप्तिमान्, मधुर, बलवान्, ज्ञानवान्, और बहुदानी बना दो।

ऋषिः–अगस्त्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१ २ ३२उ ३ २ ३ १ २
१४३३. आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाडमर्त्यः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप सुखवर्षक और कामनापूरक हो, आप स्वयं आनन्दस्वरूप और अन्यों को आनन्दित करनेवाले हैं, आप वरणीय हैं—ऐसे आप हमें प्राप्त हों। आप अत्यन्त बलवान् हैं, सम्भजनीय—सबके द्वारा उपासनीय हैं, काम-क्रोध आदि शत्रुओं के संहारक हैं और अमर—अखण्डैकरस तथा अविनाशी हैं, अतः हम आपकी उपासना करते हैं।

ऋषिः–अगस्त्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२उ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २
१४३४. त्वं हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो रथम्।
३ २ ३ १ २ ३२उ ३ २ ३ २ ३ १ २
सहावान् दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप निश्चय ही शूर हैं—सब शत्रुओं का नाश कर डालनेवाले हैं, आप अधिकारियों को मोक्ष दाता हैं। आप मुझ मननशील उपासक के देव-रथ को आपकी ओर गमन करने के लिए प्रेरित कीजिए। आप बलशाली, परमसमर्थ हैं, अतः जो व्रतहीन—सदाचाररहित, मर्यादा में न रहनेवाले दुर्जन और दुराचारी हैं, उन्हें अपात्र समझकर अपने तेज से भस्म कर दो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

षष्ठः प्रपाठकः तृतीयोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः—कविर्भार्गवः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३२उ ३ २ ३ २ ३१ २र ३ १ २३१ २र
१४३५. पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि। अयक्ष्मा बृहतीरिषः।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप हम उपासकों पर सब ओर से सुख और आनन्द की वृष्टि कीजिए। द्युलोक से हमारी कामनाओं के अनुसार जलों की खूब वृष्टि कीजिए। यक्ष्मा आदि रोगों से रहित और यक्ष्मा आदि रोगों को दूर करनेवाले अन्न और ओषधियाँ हमें प्रचुर मात्रा में प्रदान कीजिए।

ऋषिः—कविर्भार्गवः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ २ ३ २र १ २ ३ १२ ३२
१४३६. तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन्। जन्यास उप नो गृहम्।।

(क) आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अपनी उस आनन्दधारा के साथ हमें प्राप्त हों जिससे आपकी वेदवाणियाँ हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकाशित हो जाएँ और उन वाणियों से उत्पन्न सुख हमारे घर के सभी सदस्यों को प्राप्त हो।

(ख) धारारूप में प्रवाहित होनेवाले हे परमेश्वर! आप धारण करनेवाली अपनी उस वृष्टि—जलधारा से जलों को आकाश से बहाइए जिससे हमारे घरों में गौएँ आएँ। चारा आदि प्रभूत मात्रा में उत्पन्न होने से हमें घर में गौएँ रखने में सुविधा हो। गौओं के घरों में होने के परिणामस्वरूप घर में आनन्द-ही-आनन्द हो और उनमें प्रेम का साम्राज्य हो।

ऋषिः—कविर्भार्गवः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

३१ २ ३ १२ ३१२ ३१२ ३ १ २ ३ १ २र
१४३७. घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव।।

(क) आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप मुमुक्षुजनों के अत्यन्त स्पृहणीय—चाहने योग्य होते हुए उनके अध्यात्म-यज्ञों में अपनी वेदवाणी से प्रकाश—ज्ञान—ज्योति प्रवाहित—प्रेरित कीजिए। हमारे यज्ञ आडम्बरमात्र न होकर ज्ञान के आलोक से आलोकित हों। आप हम उपासकों के लिए सुख-वृष्टि कीजिए।

(ख) धारारूप में प्राप्त होनेवाले हे परमात्मन्! आप यज्ञों में देवयज्ञ—अग्निहोत्र को सबसे अधिक चाहते हैं, अतः हमारे धारण और पोषण के उद्देश्य से इन यज्ञों में घृत को क्षरित कराइए। हम खूब यज्ञ करें—ऐसी प्रेरणा आप हमें दें। इन यज्ञों के द्वारा आप हमारे लिए वृष्टि की धाराएँ बहा दीजिए।

ऋषिः—कविर्भार्गवः। **देवता**—पवमानः सोमः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१ २ ३२ १२ ३ १२ ३ १२ ३१२ ३२३ १ २
१४३८. स न ऊर्जे व्या३व्ययं पवित्रं धाव धारया। देवासः शृणवन् हि कम्।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले हे परमात्मन्! आप हमारे जीवन में बल और प्राणशक्ति का सञ्चार करने के लिए अपनी आनन्द-धाराओं के साथ हमारे पवित्र और विविध विषय-वासनाओं की ओर न जानेवाले हृदय में विशेषरूप से प्राप्त होओ। हमारी सभी इन्द्रियाँ भी आपके आनन्द का अनुभव करें—नेत्र सर्वत्र आपकी छवि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को निहारें, कान आपके स्तुति-गीतों का श्रवण करें, वाणी आपके गुणों का गान करे इत्यादि। अथवा पवित्र हृदय और दिव्य गुणोंवाले विद्वान् भी आनन्दस्वरूप आपके ही सम्बन्ध में सुनें और आपका ही श्रवण, मनन, निदिध्यासन करते रहें।

ऋषिः–कविर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४३९. पवमानो असिष्यदद्रक्षांस्यपजंघनत्। प्रत्नवद्रोचयन् रुचः।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला और हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाला परमेश्वर काम-क्रोध आदि दुर्गुणों, पापों—पापवासनाओं और आसुरी वृत्तियों को नष्ट करता हुआ हमारी ओर प्रवाहित हुआ है। उसने परम्परा से चली आई कान्तियों को—ज्ञान-दीप्तियों—ब्राह्मी-दीप्तियों को हममें चमका दिया है।

सूक्त—२

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१४४०. प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर। अरंगमाय जग्मयेऽपश्चादध्वने नरः।।

परमात्मा चाहता है कि जीव सदा उसकी आज्ञा के अनुसार सत्य, सदाचार, प्रेम, दया, परोपकार आदि धर्मों का पालन करते रहें। यही उसकी सच्ची भक्ति है। इस भक्ति को चाहनेवाले, सब लोकों को जाननेवाले, सर्वसमर्थ, सर्वव्यापक, सदा अग्रगामी—सन्मार्ग दिखानेवाले परमात्मा की प्रसन्नता—कृपा-प्राप्ति के लिए मनुष्य प्रतिदिन प्रभु-उपासना किया करे।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१४४१. एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम्।
अमत्रेभिर्ऋजीषिणमिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः।।

हे उपासको! तुम सब अपने समान संयमी, शम-दम आदि गुणों से युक्त, काम-क्रोध आदि शत्रुओं से अहिंसित, धर्मरूपी ऐश्वर्य से सम्पन्न, भक्ति के तेज से प्रदीप्त—तेजस्वी उपासकों के साथ सब ओर से उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की शरण में जाओ जो परमेश्वर सब सज्जनों की रक्षा करनेवाले हैं, महाबलशाली हैं और सब पाप-ताप आदि को भस्म कर देनेवाले हैं।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१४४२. यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ।
वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत्तन्तमिदेषते।।

हे उपासको! यदि तुम धर्मरूपी ऐश्वर्यवाले, भक्ति के तेज से तेजस्वी, शम-दम आदि से युक्त संयमी अन्य उपासकों के साथ परमेश्वर की शरण में जाओगे तो वह सर्वज्ञ और विघ्न-बाधाओं को कुचल डालनेवाला परमेश्वर तुम्हारे सभी मनोरथों को पूर्ण कर देगा, क्योंकि वह सब-कुछ जानता है—उससे कुछ भी छिपा नहीं है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३ १ २ ३ २उ ३ १ २३ १ २ ३२
१४४३. अस्माअस्मा इदन्धसोऽध्वर्यो प्र भरा सुतम्।
३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
कुवित्समस्य जेन्यस्य शर्धतोऽभिशस्तेरवस्वरत्।।

हिंसारहित उपासना-यज्ञ में निरत हे उपासक! तू हृदय में प्रकट हुए अपने उपासनारस को श्रद्धापूर्वक परमेश्वर और केवल परमेश्वर के लिए समर्पित कर दे। इसका फल क्या होगा? वह परमेश्वर तुम्हारे द्वारा जीतने योग्य, कुत्सित प्रेरणाएँ देनेवाले, दबाने—सतानेवाले काम-क्रोध आदि दोषों को सब प्रकार से, पूर्णरूप से नष्ट कर डालेगा। वह तुम्हारे सभी अज्ञानों, विघ्नों और बाधाओं को नष्ट कर देगा।

सूक्त—३

ऋषिः-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३ १२ ३ १ २ १२ ३ २ २
१४४४. बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत।।

हे उपासको! टुक आओ और सबका भरण-पोषण करनेवाले, अपने बल से बलशाली—स्वभाव से बलशाली, बलस्वरूप, अत्यन्त तेजस्वी, ज्ञान के प्रकाश से युक्त, शान्तस्वरूप परमात्मा के लिए स्तुति-समूह का उच्चारण करो—स्तुतियों से उसकी अर्चना करो।

ऋषिः-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३१ २र २ ३ १ २ ३ १ २
१४४५. हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावा धावता मधु।।

हे उपासको! तुम हिंसक-भावनाओं के त्याग से और आदर की भावनाओं से हृदय-मन्दिर में निष्पादित परमात्मा का साक्षात्कार करो और अपने ज्ञानवान् चेतन आत्मा में महामधुरूप परमात्मा को सब प्रकार से प्राप्त करो।

ऋषिः-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २
१४४६. नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन। इन्दुमिन्द्रे दधातन।।

हे उपासको! तुम नम्रतापूर्वक—अभिमान को तिलाञ्जलि देकर परमात्मा के समीप बैठा करो—परमात्मा की उपासना किया करो। ध्यान द्वारा परमेश्वर की भावना को अपने जीवन में परिपक्व करो। प्रकाशस्वरूप और परमरसीले परमात्मा को अपनी आत्मा में धारण करो।

ऋषिः-असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २र ३ १२ ३ १ २र ३ २ ३ २
१४४७. अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे। देवेभ्यो अनुकामकृत्।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप काम-क्रोध आदि शत्रुओं को और सब विघ्न-बाधाओं को नष्ट करनेवाले हैं। आप सारे प्राणियों का ध्यान रखनेवाले—सबका पालन-पोषण करनेवाले हैं, आप विविध प्रकार का ज्ञान देनेवाले हैं। आप हमारे जीवन में प्रवाहित होओ और हमारे जीवनों को पवित्र बना दो। आप हमारी इन्द्रियों के लिए शान्ति प्राप्त कराइए—हमारी सभी इन्द्रियाँ निर्मल और शान्त हों—ऐसी कृपा कीजिए। जिनके

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश हो गया है, जिन्हें विद्या का प्रकाश प्राप्त हो गया है, ऐसे देवों की चाही हुई सभी कामानाओं को और मोक्ष-कामना को भी आप पूर्ण करते हैं।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४४८. इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे। मनश्चिन्मनसस्पतिः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप मन के–उपासक की मनोवृत्तियों के ज्ञाता हैं, आप मन के स्वामी, पालक और रक्षक हैं, अतः उपासक आत्मा को आनन्दरस पान कराने के लिए, उसकी रक्षा करने के लिए और उसके हर्ष के लिए–उल्लासमय जीवन के लिए उसकी सब कामनाओं को पूर्ण करो।

ऋषिः–असितः काश्यपो देवलो वा। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४४९. पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि णः। इन्दविन्द्रेण नो युजा।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाले हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप हमें उत्तम सामर्थ्य, प्राणशक्ति और ज्ञानरूपी धन प्रदान कीजिए। हे परम रसीले परमात्मन्! हमारे इष्टदेव! आप हम उपासकों के साथ युक्त हो जाइए।

सूक्त–४

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४५०. उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य।।

ज्ञानी और भक्तों के हृदय में सरणशील हे परमात्मन्! आप निश्चय से उस मनुष्य के हृदय-आकाश में उदित होते हैं, जोकि धन होने पर दान देता है, ज्ञान और भक्तिरस से लोगों के हृदयों को तृप्त करता है, नरहितकारी कार्य–परोपकार करता है और काम-क्रोध आदि शत्रुओं को मार भगाता है।

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४५१. नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत्।।

१४५२. स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद् गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते।।

जो परमेश्वर निर्माण और संहाररूपी भुजाओं से काम-क्रोध आदि असुरों की पुरियों–गढ़ों अर्थात् शरीरों को तोड़-फोड़कर जीवों को मुक्त कर देता है, वही परमेश्वर इन पुरों में रहनेवाले काम-क्रोध, राग-द्वेष, कुटिलता आदि सर्पों को भी कुचल डालता है, क्योंकि वह वृत्रहा है, पाप-नाशक है, ज्ञान पर पर्दा डालनेवाली आवरक–प्रतिबन्धक शक्तियों का नाशक है। वह परमैश्वर्यशाली परमात्मा हमारा कल्याणकारी मित्र है। वह दूध की विशाल धारा बहानेवाली कामधेनु के समान है। वह सैर-सपाटे के साधन अश्व=घोड़े के समान है। वह जौ आदि अन्नों के समान उपासक के लिए मधुर अन्न के समान है। वह ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति से सम्पन्न बल, गौवाले दुग्धादि पेय, वेद-वाणियों से युक्त ज्ञान और यव आदि धान्यों से युक्त उत्तम पुष्टिकारक अन्न प्रदान करता है। अथवा वह दूध की विशाल धारा बहानेवाली गौ के समान हमें प्रबल मन, स्वस्थ इन्द्रियाँ और नाना प्रकार की खाद्य सामग्री प्रदान करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—५

ऋषिः—विभ्राट् सौर्यः। **देवता**—सूर्यः। **छन्दः**—जगती। **स्वरः**—निषादः।

१४५३. विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम्।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति।।

विशेषदीप्ति से प्रकाशमान परमेश्वर हमारे हृदयों में भारी मात्रा में उमड़े हुए उपासना-रसरूपी मधु को स्वीकार करता है और आत्मयाजी को छल-कपट से रहित दीर्घ जीवन प्रदान करता है, प्राणियों के दुःखों से दयार्द्र और स्व-स्नेह से वह प्रजाओं की रक्षा करता है, उनका पालन-पोषण करता है और संसार में अनेक प्रकार से प्रकाशमान होता है।

ऋषिः—विभ्राट् सौर्यः। **देवता**—सूर्यः। **छन्दः**—जगती। **स्वरः**—निषादः।

१४५४. विभ्राड् बृहत्सुभृतं वाजसातमं धर्मं दिवो धरुणे सत्यमर्पितम्।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा।।

विशेष प्रकाश से प्रकाशमान, महतो महान्, सम्यक् धारण-पोषण करनेवाले, बल प्रदान करने में सर्वश्रेष्ठ, प्रकाशधारी परमात्मा की सूर्य में स्थित भौतिक ज्योति के समान उसकी सत्यस्वरूप आध्यात्मिक ज्योति मुझ उपासक में प्रकट हो गई है। यह ज्योति काम-क्रोध आदि शत्रुओं की नाशक है, आत्मा पर आवरण डालनेवाले राग-द्वेष आदि वृत्रों की विनाशक है, अपक्षय करनेवाले लोभ-मोह आदि दस्युओं की प्रबल ध्वंसक है, केवल प्राण-पोषण में तत्पर व्यक्ति की संहारक है और सब सपत्नों=शत्रुओं, वैरियों को कुचल डालनेवाली है।

ऋषिः—विभ्राट् सौर्यः। **देवता**—सूर्यः। **छन्दः**—जगती। **स्वरः**—निषादः।

१४५५. इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद्धनजिदुच्यते बृहत्।
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम्।।

ज्योतियों-की-ज्योति वह परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ ज्योति है, सर्वोत्तम ज्योति है। यह ज्योति विश्वजयी—सबको जीतनेवाली है। यह लौकिक और पारलौकिक सभी धनों की स्वामिनी है। इस ब्रह्मज्योति को सबसे बड़ी शक्ति कहा जाता है। इस भौतिक ज्योति का आधार वह परमेश्वर सारे विश्व का प्रकाशक, महान् प्रकाशमान, अध्यात्म दृष्टि के लिए सूर्य के समान है। वह महा विस्तारवाला—सर्वव्यापक है। वह तेज का पुञ्ज, बल का भण्डार और अविनाशी है।

सूक्त—६

ऋषिः—वसिष्ठः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

१४५६. इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमैश्वर्यशाली प्रभो ! आप हमारे जीवन में ज्ञानशक्ति, कर्म शक्ति और संकल्प शक्ति प्रदान कीजिए, **ठीक उसी प्रकार** जैसे एक पिता अपने पुत्रों के लिए इन शक्तियों को प्रदान करता है। हे सबके द्वारा पुकारे **जानेवाले प्रभो** ! इस जीवन-यात्रा के मार्ग में आप हमें शिक्षा दीजिए— हमें अपनी प्रेरणा के अनुसार चलने में **समर्थ बनाइए**, जिससे हम इसी जीवन में ज्ञान के प्रकाश को और ज्योतिस्वरूप आपको प्राप्त कर सकें।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
१४५७. मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३माशिवासोऽव क्रमुः।
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! प्रच्छन्नरूप से अन्दर प्रविष्ट हो जानेवाले अज्ञात पाप हमपर आक्रमण न करें। सदा अहित और अशुभ का चिन्तन करनेवाले अमंगलरूप पापी पुरुष हमारे समीप ही न आएँ—हमें ऐसे लोगों का सग कभी प्राप्त न हो। हे सब विघ्नों की हिंसा करनेवाले प्रभो! आपके द्वारा उत्तमता से सुरक्षित हम पुरातन से चली आई सब वासनाओं को—आधि-व्याधिरूपी नदियों को पार कर जाएँ।

सूक्त—७

ऋषिः-भर्गः प्रागाथः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१४५८. अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पंते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप आये दिन—प्रत्येक आज के दिन, कल आनेवाले दिन—प्रतिआगामी कल और उससे आगे आनेवाले परसों अर्थात् सदा, सर्वदा, सब कालों में हमारी रक्षा कीजिए। हे सज्जनों के पालक प्रभो! आप सब दिनों में, दिन और रात हम स्तोताओं की रक्षा कीजिए।

ऋषिः-भर्गः प्रागाथः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ २
१४५९. प्रभंगी शूरो मघवा तुवीमघः सम्मिश्लो वीर्याय कम्।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप उपासकों की सब आपत्तियों को दूर करनेवाले हो, सब विघ्नों के विनाशक हो। आप ऐश्वर्यशाली हैं, अत्यन्त पूजनीय हैं। आप सबमें ओत-प्रोत हैं, धर्माचरण करनेवालों को सुख प्रदान करते हैं। हे अनन्त प्रज्ञानों और कर्मोंवाले परमात्मन्! आपकी निर्माण और संहाररूपी भुजाएँ अत्यन्त शक्तिशाली और सुखों की वृष्टि करनेवाली हैं—सर्वकामनापूरक हैं। अथवा कर्म और ज्ञानरूपी आपकी दोनों भुजाएँ इहलोक और परलोक में भोग और अमृत को बरसानेवाली हैं। आपकी ये दोनों भुजाएँ उपासक में ओज सींचती हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—८

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–सरस्वान्। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
१४६०. जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः। सरस्वन्तं हवामहे।।

(क) आत्मा में ज्ञान के प्रकट होने की इच्छा रखते हुए, परमात्मा के सच्चे पुत्रों के समान आचरण करते हुए, शोभन दानी बनते हुए, परमात्मा के प्रति आत्मसमर्पण करते हुए जीवन में आगे बढ़ते हुए, परमात्मा की ओर अग्रसर होनेवाले हम उपासक वेदवाणी के स्वामी, परम कृपालु परमात्मा को पुकारते हैं—उसका स्मरण करते हैं।

(ख) परमात्मा की ओर बढ़नेवाले हम गृहस्थ उपासक गृहस्थधर्म के निर्वाह के लिए पत्नी की कामनावाले होते हुए तथा पुत्र और पुत्रियों की कामनावाले होते हुए उत्तम दान शील बनते हैं—पञ्च महायज्ञों के अनुष्ठाता बनते हैं और अब तो सारे सहारों को छोड़कर ज्ञान के सागर केवल उसी को पुकारते हैं—उसी का ध्यान, उसी की आराधना और उपासना करते हैं।

सूक्त—९

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–सरस्वती। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ १ २
१४६१. उत नः प्रिया प्रियासु सप्त स्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोम्या भूत्।।

प्रिय वस्तुओं में प्रिय—अत्यन्त प्रिय, सबसे प्रिय, गायत्री आदि सात छन्दों से युक्त, अध्येता—स्वाध्याय करनेवाले के दुर्गुणों को परे फेंकनेवाली, प्रेमपूर्वक सेवन करने योग्य वेदवाणी—स्तुति करने योग्य—स्वाध्याय करने योग्य है।

[स्वसा=सु+अस, अस भुवि। सात उत्तम अस्तित्वोंवाली अर्थात् आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, द्रविण=धन और ब्रह्मवर्चस् देकर मनुष्यों को उत्तम अस्तित्ववाला बनानेवाली।]

सूक्त—१०

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१४६२. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक, सर्वैश्वर्यवान्, प्राणियों को गर्भ के दुःखों से छुड़ानेवाले, सर्वप्रकाशक, कामना करने योग्य आनन्दप्रद परमात्मा के उस सर्वश्रेष्ठ और वरणीय, पापों को भस्म करनेवाले तेज का हम ध्यान करते हैं, उसे हृदय में धारण करते हैं। वह जगदीश्वर अथवा ध्यान किया हुआ उसका तेज हमारी बुद्धियों, कर्मों, प्राणशक्ति और वाणी को सदा सन्मार्ग में प्रेरित करे।

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१४६३. सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः।।

हे ज्ञान के स्वामिन्! सबका मंगल, कल्याण, भला चाहनेवाला मैं आपका मेधावी पुत्र हूँ और आपकी प्राप्ति के लिए कमर कसे हुए तैयार हूँ। आप मुझे सौम्य, निर्माण के कार्यों में रुचिवाला और ज्ञान के प्रकाश को सर्वत्र फैलानेवाला बना दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१४६४. अग्न आयूँषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।।

सब बुराइयों को भस्म करनेवाले प्रभो! आप हमारे दुर्गुण और दुर्व्यसनों को दूर करके हमारे जीवनों को पवित्र बना दीजिए। आप हमारे इहलौकिक जीवन के सुचारु सञ्चालन के लिए बल, शक्ति, नाना प्रकार के अन्न और रस–खाद्य पदार्थ प्रदान कीजिए और हमारी पारलौकिक कामना–मोक्ष को भी सिद्ध कीजिए। हे प्रभो! कुत्तों की-सी दुष्प्रवृत्तियों (काम, लोभ, स्वजाति-द्रोह, चापलूसी, वान्ताश=कै करके स्वयं चाट लेना) और कुत्तों जैसे काटनेवाले दुष्ट लोगों को हमसे दूर हटा दीजिए।

सूक्त–११

ऋषिः–यजत आत्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१४६५. ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वा क्षत्रं देवेषु।।

हे मित्रावरुणौ! मित्र और वरुण नामवाले हे परमेश्वर! आपकी स्नेहमयी और पापनिवारक दोनों शक्तियाँ हमारे हृदयान्तरिक्ष को विशाल बनाने में समर्थ हैं। आपकी ये दोनों शक्तियाँ द्युलोक–मस्तिष्क की सम्पत्ति–ज्ञान, प्रेम, दया, उदारता, मैत्री, करुणा आदि गुणों को देने में समर्थ है। देवों में यह प्रसिद्ध है कि आपकी ये दोनों शक्तियाँ क्षतों से त्राण करने में अत्यन्त बलवती हैं। घृणा-द्वेषरूपी घावों से पीड़ित, संसार के दुःखों से सन्तप्त, समाज द्वारा प्रताड़ित, शोषित, दीन और दुःखी जनों को आपके प्रेम का प्रलेप (मलहम) और करुणा का वारि (जल) तथा पाप-निवारण की भावना उन्हें सान्त्वना प्रदान कर उनके दुःखों को दूर करती है।

ऋषिः–यजत आत्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१४६६. ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते। अद्रुहा देवौ वर्धेते।।

परमात्मा की 'मित्र' प्रेरक शक्ति अमृत–अमर–मरणधर्मरहित उपासक को मोक्ष के साथ जोड़ती हुई और उसकी 'वरुण'–जीव को अपनानेवाली शक्ति दक्ष–अनासक्त होकर कुशलतापूर्वक कर्म करनेवाले और प्रभु-प्राप्ति की प्रबल कामनावाले साधक को पूर्ण सत्य प्रभु को प्राप्त कराती है। दोनों धर्मोंवाला–दोनों शक्तियोंवाला परमेश्वर द्रोह=वैररहित उपासक को बढ़ाता है–उन्नत करता है। अथवा परमेश्वर की ये दोनों शक्तियाँ दिव्य हैं, द्रोहरहित हैं। ये दोनों शक्तियाँ उपासक को बढ़ाती हैं।

ऋषिः–यजत आत्रेयः। **देवता**–मित्रावरुणौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३क २र ३२उ ३ १ २ ३२ ३ १ २
१४६७. वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः। बृहन्तं गर्तमाशाते।।

परमेश्वर की स्नेहमयी और पापनिवारक शक्तियाँ उपासक के मस्तिष्करूप द्युलोक से आनन्द-बिन्दुओं की वृष्टि करानेवाली होती हैं। परमेश्वर की ये दोनों शक्तियाँ साधक के रेतसूरूपी जलों की ऊर्ध्व गति का कारण बनती हैं। ये दोनों शक्तियाँ दान देने की उदार भावनाओं की रक्षा करती हैं और अन्त में ये दोनों शक्तियाँ साधक को विशाल और रमणीय मोक्षधाम को प्राप्त करा देती हैं।

[प्रभु की स्नेहशक्ति आनन्द-बिन्दुओं की वृष्टि कराती है तो उसकी पाप-निवारक शक्ति उपासक को पापों से बचाकर ऊर्ध्वरिता बनाती हैं।]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–१२

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ २

१४६८. युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि।।

(क) योगी लोग अपनी चित्तवृत्तियों को सांसारिक विषयों से हटाकर उपासना-योग के द्वारा अपने आत्मा को परमात्मा के साथ युक्त करते हैं। किस परमात्मा के साथ? जो सब प्रकार से महान् है, दया का सागर है और हिंसा आदि दोषों से रहित है, जो सबको जाननेवाला–सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है, जो सब जगत् और सब मनुष्यों के हृदयों में व्याप्त है। इस योग का फल क्या होगा? इस योगाभ्यास से उपासकों के आत्मा अविद्या आदि सब दोषों के अन्धकार से छूटकर आत्माओं को प्रकाशित करनेवाले प्रकाशमय परमेश्वर में स्थित हो जाते हैं।

(ख) योगी लोग चारों ओर ठहरे हुए पदार्थों को चरते हुए–निरन्तर उन्हीं में विचरते हुए, उन्हीं का ध्यान करते हुए अपने महान्–अत्यन्त दीप्त और गतिशील मन को क्रोधशून्य = शान्त करके महान् और देदीप्यमान परमेश्वर के साथ जोड़ते हैं। ऐसा करनेवाले ये योगी चमक उठते हैं–इनके मुखमण्डल पर ब्रह्मदर्शन का उल्लास दिखाई देता है और ये ज्योतिर्मय मोक्षलोक में शोभा पाते हैं अर्थात् मोक्षपद को प्राप्त करते हैं।

(ग) जो मनुष्य अंग-अंग में व्याप्त होनेवाले, शरीर को हानि न पहुँचाकर शरीर के अवयवों की वृद्धि करनेवाले, सम्पूर्ण शरीर में गति करनेवाले महान् प्राणवायु को प्राणायाम के द्वारा अपने वश में करते हैं, वे ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशमान होकर प्रकाशस्वरूप परमात्मा अथवा आत्मा में आनन्द से प्रकाशित होते हैं।

(घ) रक्त वर्णवाला, सबसे बड़ा सूर्य अपनी किरणों से सब मूर्तिमान् द्रव्यों को प्रकाशित और आकर्षित करता हुआ सर्वत्र गति करता है। सभी लोक-लोकान्तर उसी के आकर्षण के साथ युक्त हो रहे हैं। द्युलोक में विद्यमान सभी नक्षत्र उसी के प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २

१४६९. युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा।।

योगी लोग अत्यन्त चञ्चल, धर्षण कर डालनेवाले–कुचल डालनेवाले और इधर-उधर विषयों में भटकानेवाले ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियरूप अश्वों को सर्वप्रसिद्ध परमात्मा की प्राप्ति की कामनावाले तथा विशिष्ट ज्ञान और कर्म का परिग्रह करनेवाले बनाकर शरीररूपी रथ के साथ जोड़ते हैं और साधना करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २

१४७०. केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

हे उपासको! वह परमात्मा अज्ञानियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए और रूप से रहित–गुणों से हीन मनुष्यों को रूप से, सद्गुणों से अलंकृत करने के लिए अज्ञान-अन्धकारों को दग्ध करता हुआ उषाकालों में उपासकों की स्तुति-प्रार्थना से कृपाशील होकर उनके हृदय-मन्दिरों में प्रकट होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–१३

ऋषिः–उशना। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४७१. अयं सोम इन्द्रं तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि।
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम्।।

हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मन्! यह आध्यात्मिक भक्तिरस तेरे लिए ही निष्पादित किया गया है। यह तेरे जीवन को पवित्र बनाने के लिए है। तू इसकी रक्षा कर—काम-क्रोध आदि से इसका विघात न कर। तू जिस परमात्मा का ध्यान=चिन्तन करता है और तू जिस परम रसीले प्रकाशमान परमात्मा का वरण करता है, वह तेरे लिए अत्यधिक आनन्द प्रदान करता है और तुझे अपने साथ मिलाता है।

ऋषिः–उशना। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४७२. स ईं रथो न भुरिषाडयोजि महः पुरूणि सातये वसूनि।
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त।।

वह शान्तस्वरूप परमात्मा और उसकी उपासना का आह्लादक आनन्दरस निश्चय ही अत्यन्त रमणीय है तथा काम-क्रोध आदि शत्रुओं का पराभव करनेवाला है। नाना प्रकार के लौकिक और सत्य-सदाचार आदि आध्यात्मिक वसुओं=धनों की प्राप्ति के लिए उपासक इस महाशक्ति को योग द्वारा अपने साथ जोड़ता है और उसके आनन्दरस का पान करता है। इस सोमपान के पश्चात् इस उपासक के सब कर्म मानव-मात्र के लिए हितकर हो जाते हैं अर्थात् यह मानव हितकारी कार्य ही करता है। ये सोमपान करनेवाले उपासक काम-क्रोध आदि के साथ होनेवाले संग्राम में सदा विजयी होते हैं।

ऋषिः–उशना। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४७३. शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वानभिशस्ता दिव्या यथा विट्।
आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनाषाण् न यज्ञः।।

वह शान्तस्वरूप परमात्मा काम-क्रोध आदि शत्रुओं के बल का शोषक है। वह वायु के समान बलशाली है। हे सोम! आप हमारे जीवनों में प्रवाहित होओ और हमारे जीवनों को ऐसा पवित्र बना दो कि सारी प्रजा आनन्दप्रद और दिव्य गुणों से सम्पन्न बन जाए। जैसे स्नान के पश्चात् शान्ति प्राप्त होती है, ऐसे ही आप हमारे लिए शीघ्र ही सुमति प्रदान करनेवाले हो जाइए, क्योंकि आप अनन्तरूप हैं, शत्रुसेना का पराभव करनेवाले सेनापति के समान काम-क्रोध-आदि शत्रुओं का पराभव करनेवाले हैं, उपासकजनों के तृप्तिकर्ता और यज्ञस्वरूप हैं।

सूक्त–१४

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–वर्धमाना गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४७४. त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप सब यज्ञों—सब श्रेष्ठ कर्मों को सिद्ध—पूर्ण करनेवाले हैं। आप दिव्य गुणों के द्वारा दयालुजनों में प्रतिष्ठित होते हैं अर्थात् शम-दम आदि दिव्य गुणों के द्वारा दयालुजनों को आपकी प्राप्ति होती है।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१४७५. स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः। आ देवान् वक्षि यक्षि च।।

हे ज्ञानप्रकाशक महान् परमात्मन्! आप हमारे हिंसारहित जीवन-यज्ञों में स्तुतिमयी वाणियों के द्वारा हमारे साथ संगति कीजिए—हमारे साथ मेल कीजिए, हमें प्राप्त होइए, आप हममें दिव्य गुणों को धारण कीजिए और हमें उनके साथ जोड़ दीजिए तथा हमें विद्वानों का संग प्राप्त कराइए।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१४७६. वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा। अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो।।

हे वेद और जगत् के विधातः! प्रकाशकों के प्रकाशक परमात्मन्! आप पारलौकिक और लौकिक—दोनों मार्गों को ठीक-ठीक ही जानते हैं। हे सबको आगे ले-चलनेवाले परमात्मन्! हमारे संकल्पों को सिद्ध करनेवाले परमेश्वर! आप हमें श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दीजिए। आप हमारे अग्रणी बनिए और हमें सुपथ से चलाइए, जिससे हमारा इहलोक और परलोक दोनों ही सिद्ध हों।

सूक्त—१५

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१४७७. होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया। विदथानि प्रचोदयन्।।

(क) आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला परमेश्वर सब-कुछ देनेवाला—सकल मनोरथों को पूर्ण करनेवाला है। वह प्रकाशस्वरूप, आनन्दप्रद और मरणधर्मरहित-अमृतस्वरूप है। वे अपनी दिव्य महाप्रज्ञा द्वारा समस्त कर्तव्य कर्मों, विविध विज्ञानों और यज्ञों का ज्ञान कराने के लिए और उनकी सफलता के लिए अनुग्रह करते हुए हमारे समक्ष आते हैं—हृदय में प्रत्यक्ष होते हैं।

(ख) वे प्रभु सब-कुछ देनेवाले, स्वयं प्रकाश और अमृतरूप हैं। वे प्रभु अपनी दयालुता के कारण अपनी असाधारण और दिव्य प्रज्ञा के साथ हमारे सम्मुख आते हैं—हृदय में प्रत्यक्ष होते हैं। वे प्रभु निरन्तर ज्ञान देते हैं। वे त्याग करने और वासनाओं के साथ संग्राम करने की प्रेरणा देते हैं।

['माया' शब्द यह सन्देश दे रहा है कि हमारे मस्तिष्क में ज्ञान हो, हृदय में दया की भावना हो और हाथों में कर्म करने की शक्ति हो। 'विदथ' शब्द भी यही कह रहा है कि मस्तिष्क को ज्ञान-ज्योति से पूर्ण करके, हृदय में त्याग-भावना भरकर हाथों से शत्रुओं के साथ संग्राम करो।]

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१४७८. वाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु प्र णीयते। विप्रो यज्ञस्य साधनः।।

बल-साध्य कर्मों की सफलता के निमित्त अनन्त बलशाली परमेश्वर का ध्यान और चिन्तन किया जाता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है। हिंसारहित उपासना-यज्ञ में—जप, स्वाध्याय, ज्ञान-प्रचार आदि यज्ञों में प्रणयपूर्वक वही परमेश्वर अपनाया जाता है। अपूर्ण को पूर्ण करनेवाला वह महामेधावी सब यज्ञों का साधक—सिद्ध करनेवाला है।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३१ २ १२ ३२ ३ १२
१४७९. धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे। दक्षस्य पितरं तना।।

सर्वश्रेष्ठ और वरणीय परमेश्वर ने इस विश्व की रचना बुद्धिपूर्वक—याथातथ्य की है। भूतों और भौतिक जगत् की उत्पत्ति के लिए परमेश्वर ने ही प्रकृति में गर्भ का आधान किया था। उसी परमेश्वर ने बलों के पिता—सूर्य को आकाश में स्थापित किया है, अतः उस पालक-पोषक परमात्मा की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए।

सूक्त—१६

ऋषिः–हर्यतः प्रागाथः। **देवता**–अग्निर्हवींषि वा। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २३ १२ ३१ २ ३ १ २ ३२
१४८०. आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम्। रसा दधीत वृषभम्।।

हे उपासको! तुम प्रकाशस्वरूप परमात्मा के निमित्त उपासनारस समर्पित करो। तुम्हारे श्वास और उच्छ्वास के साथ उपासना-प्रवाह प्रवाहित होता रहे। तुम सुखवर्षक और कामनापूरक परमात्मा को स्तुति-वाणी के द्वारा अपने हृदय-मन्दिर में धारण करो।

ऋषिः–हर्यतः प्रागाथः। **देवता**–अग्निर्हवींषि वा। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ २ ३ २ ३२ ३१२ ३ १२ ३ १ २
१४८१. ते जानत स्वमोक्यां३ सं वत्सासो न मातृभिः। मिथो नसन्त जामिभिः।।

उपासक लोग भली-भाँति जानते हैं कि उनका अपना निवास-गृह ब्रह्मलोक—मोक्षधाम है। जैसे बालक और बछड़े माताओं के साथ अपने-अपने आश्रय स्थान को जानते हैं वैसे ही उपासक लोग भी। मोक्ष में पहुँचनेवाले ये उपासक वहाँ अन्य मुक्तों के साथ मिलते हैं।

ऋषिः–हर्यतः प्रागाथः। **देवता**–अग्निर्हवींषि वा। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३२उ ३क २र
१४८२. उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि। इन्द्रे अग्ना नमः स्वः।।

जो उपासक भोग करानेवाली इन्द्रियों को केवल भोगों में न लगाकर भोग्य वस्तुओं के अन्दर दृष्टिगोचर होनेवाले परमात्मा के सृजनात्मक गुणों में लगाते हैं, तथा धारणा के साधन मन को मोक्ष में लगाते हैं और अपने आत्मा को परमात्मा में लगाते हैं, उन्हें इहलोक में नमः=नाना प्रकार के अन्न—खाद्यपदार्थ और मोक्षधाम में आनन्दामृत की प्राप्ति होती है।

सूक्त—१७

ऋषिः–बृहद्दिव आथर्वणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २र ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१४८३. तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः।

३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म ही पृथिव्यादि सब लोक-लोकान्तरों में सबसे श्रेष्ठ था, है, और रहेगा। उसकी कृपा से उपासक अपने व्रतों में सुदृढ़ और प्रज्ञालोकरूपी धनवाला—ज्ञानरूपी धनवाला होकर एक प्रकार से नूतन जन्मवाला हो जाता है। वह ब्रह्म इस उपासक के हृदय में साक्षात् होकर इसके काम-क्रोध आदि शत्रुओं को तुरन्त नष्ट कर डालता है। प्रभु की आज्ञा के अनुसार चलनेवाले और प्रभु के प्रति नत होकर अपनी रक्षा करनेवाले सभी मनुष्य एक अवर्णनीय मस्ती का अनुभव करते हैं।

ऋषिः–बृहद्दिव आथर्वण। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४८४. वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु।।

अपने बल से बढ़ा-चढ़ा, महा ओजस्वी, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर उपक्षय=तोड़-फोड़ करनेवाले के लिए शत्रु बना हुआ उनके लिए भय धारण करता है—उन्हें भयभीत करता है। हे प्रभो! प्राणी और अप्राणी जगत् को आप पवित्र करते हैं, सामान्य उपासक और मुमुक्षुजनों को आप अपने आनन्दरस में स्नान कराते हैं। आपके द्वारा धारित और पोषित वे साधारण और विशेष उपासक हर्ष, आनन्द और उल्लास के अवसरों पर मस्ती में भरकर आपकी स्तुति करते हैं और आपके साथ एकतान हो जाते हैं।

ऋषिः–बृहद्दिव आथर्वणः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१४८५. त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जब ये मनुष्य एक से दो (पति-पत्नी) और दो से तीन (पति-पत्नी और पुत्र) हो जाते हैं, तब पुत्रोत्पादन के पश्चात् संसार के सुखों का उपभोग करके ये सब काम्य कर्मों को त्याग देते हैं और आपमें निरत हो जाते हैं, क्योंकि आप संसार के स्वादु पदार्थों में भी सबसे अधिक स्वादु हैं। आप तो 'रस' हैं, अतः आप हमें अपने रसमय—आनन्दमय स्वरूप से संयुक्त कर दीजिए। आप तो मधुस्वरूप हैं अपने उस मधुस्वरूप को मुझ उपासक आत्मा के साथ संगत कर दीजिए—मिला दीजिए—अपना साक्षात् दर्शन करा दीजिए।

सूक्त—१८

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अष्टिः। **स्वरः**–मध्यमः।

१४८६. त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशम्।
स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम्।।

त्रिलोकी में व्यापक, पूज्य, महान् बलशाली परमात्मा उपासक द्वारा आत्मभाव से और श्रद्धापूर्वक निष्पादित तथा प्राण-साधना के द्वारा पवित्र किये हुए उपासनारस का पान करता है—उसे स्वीकार करता है और तृप्त होता है—उपासक के प्रति कृपालु हो जाता है। उपासनारस को स्वीकार करके कृपालु हुआ वह परमेश्वर उपासक को मोक्षरूप महाफल प्रदान करता है। वह परमात्मा महान् है, अनन्त है। दिव्य गुणों से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

युक्त, इन्द्रियों का अधिष्ठाता, जीवन्मुक्त सौम्य उपासक आनन्दप्रद, सत्यस्वरूप, **परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को पा लेता है।**

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अतिशक्वरी। **स्वरः**–पञ्चमः।

१४८७. साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः।
दाता राध स्तुवते काम्यं वसु प्रचेतन सैनं सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! अपने स्वाभाविक ज्ञान और क्रियाशक्ति के साथ प्रसिद्ध आप अपने स्वाभाविक ओज=बल के साथ संसार का वहन कर रहे हैं। स्वपराक्रमों से आप वृद्ध है, महान् हैं। संग्रामकारी काम-क्रोध आदि आसुरी भावनाओं का आप तिरस्कार करते हैं। आप सर्वद्रष्टा हैं। हे प्रकृष्ट चेतनावाले परमेश्वर! आप स्तुति करनेवाले उपासक के लिए उसका अभीष्ट धन—मोक्ष और कार्यों की सिद्धि करनेवाला धन प्रदान करते हैं। वह स्तोता दिव्य गुणोंवाला बनकर दिव्य गुणोंवाले आपको प्राप्त कर लेता है। सत्यनिष्ठ उपासक उस सत्यस्वरूप परमेश्वर को पा लेता है। उपासनारूपी ऐश्वर्यवाला इन्दु उस परमैश्वर्यशाली इन्द्र को पा लेता है।

ऋषिः–गृत्समदः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अतिशक्वरी। **स्वरः**–पञ्चमः।

१४८८. अध त्विषीमाँ अभ्योजसा कृविं युधाभवदा रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे।
अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत प्र चेतय सैनं सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम्।।

दीप्तिमान् परमेश्वर अपने तेज से उपासक की काम-क्रोधादि हिंसक प्रवृत्तियों को युद्ध करके पराजित कर देता है, उपासक के प्राण और अपान को, मन और बुद्धि को तृप्त करता है, मस्तिष्क और हृदय को पूर्ण करता है [मस्तिष्क को ज्ञान-ज्योति से और हृदय को आनन्दरस से]। इस परमेश्वर की शक्ति द्वारा उपासक खूब बढ़ता है—उन्नति करता है। वह परमेश्वर किसी को तो [जो उपासक नहीं है] जन्म देनेवाले संसार के मध्य जन्म-मरण के चक्र में रखता है। किसी को [उपासक को] जन्म-मरणरूप संसार से पृथक् कर देता है—मोक्ष प्रदान करता है। हे उपासक! तू सावधान हो। तू परमेश्वर का चिन्तन कर! सदा स्मरण रख, इस सत्यस्वरूप, दिव्य गुणयुक्त परमैश्वर्यशाली परमात्मा को सत्यनिष्ठ, दिव्य गुणयुक्त और ज्ञानरूपी ऐश्वर्यवाला उपासक ही प्राप्त करता है।

।। यहाँ छठा प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ सप्तमः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४८९. अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनं सत्यस्य सत्पतिम्॥

हे उपासक! जो वस्तु जैसी है उसको वैसा ही जानने के लिए, यथार्थ ज्ञान के लिए तू वेदवाणियों के द्वारा ज्ञानस्वरूप, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की अर्चना किया कर और उस प्रभु की ओर चल—उसकी प्राप्ति का प्रयत्न कर जो वेदवाणियों का स्वामी है, इन्द्रियों का रक्षक है, सज्जनों का पालक है और सत्यज्ञान का प्रेरक है।

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४९०. आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे॥

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हमने विषयों में भटकनेवाली इन्द्रियों को सब ओर से हटाकर वासना-शून्य हृदय में निरुद्ध कर दिया है और सब चित्त-वृत्तियों को उस हृदय-आकाश में निरुद्ध करके हम आपका स्तवन करते हैं—आपकी उपासना करते हैं।

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१४९१. इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत्॥

अपने व्रतों के पालन करने में सुदृढ़, इन्द्रियों को वश में करनेवाले जीवात्मा के लिए वेदवाणियाँ और वशीभूत की हुई इन्द्रियाँ सब मलों, पाप-तापों, दुःख-दैन्य का हरण करनेवाले सारभूत ज्ञान—मधु विद्या = ब्रह्म विद्या का दोहन करती हैं। जब ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तब उपासक अपने हृदय-मन्दिर में ही उस परमेश्वर को पा लेता है।

सूक्त—२

ऋषिः–नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१४९२. आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम॥

सब सभाओं में, सब हर्ष अवसरों पर, सब देवासुर-संग्रामों में पुकारने योग्य—स्मरण करने योग्य परमात्मा को अलंकृत करो—उसकी महिमा के गीत गाओ और कहो कि—हे पापनाशक! आप स्तुति के अनुरूप फल-प्रदाता हैं, अत्यन्त बलशाली हैं, अतः आप हमारे मन, बुद्धि, चित्त, अहंकाररूपी उपासना-रस निष्पादन करनेवाले स्थानों को अपने आनन्दरस से आप्लावित कर दो, सींच दो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-नृमेधपुरुमेधौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१४९३. त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत्।
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप सिद्धियों के, जीवन में सफलता प्रदान करनेवाले धनों के सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रमुख दाता हैं। आप सत्यस्वरूप हैं। आप अपने भक्तों को समर्थ तथा मन और इन्द्रियों का स्वामी बनानेवाले हैं। हम महाधनी, महायशस्वी, महाज्योतिर्मय, महान् प्रेरक, शक्ति के पुञ्ज और परमपूज्य आपकी संगति का वरण करते हैं—आपको अपनाते हैं और आपकी ही उपासना करते हैं।

सूक्त—३

ऋषिः-त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-ऊर्ध्वा बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१४९४. प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद्दिव आ निरधुक्षत।
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन्।।

उपासक लोग बहुत विलोडन=मन्थन करने के पश्चात् जब सबसे पूर्व होनेवाले अर्थात् अनादि, पान करनेयोग्य, रसमय, आनन्दस्वरूप, अत्यन्त प्रशंसनीय, पूर्णपुरुष परमेश्वर का पवित्र हृदय में साक्षात्कार कर लेते हैं, तब साक्षात् हुए उस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को लक्ष्य कर मस्ती में भरकर उसकी महिमा के गीत गाते हैं, उसकी स्तुति-प्रार्थना करते हैं।

ऋषिः-त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-ऊर्ध्वा बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१४९५. आर्दी के चित्पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत।
दिवो न वारं सविता व्यूर्णुते।।

हृदय में श्रद्धा और मस्तिष्क में ज्योति का विकास करने के पश्चात् कुछ दिव्य गुण विशिष्ट और तत्त्वज्ञानी उपासक जो परमेश्वर को ही अपनी रुचिकर सम्पत्ति मानते हैं वे इस प्राप्तव्य परमेश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन करते हुए इसकी बारम्बार स्तुतियाँ करते हैं। जैसे सूर्य अन्धकार के आवरण को हटा देता है, उसी प्रकार परमेश्वर उपासक के अविद्या-अन्धकार के आवरण को हटा देता है।

ऋषिः-त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-ऊर्ध्वा बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१४९६. अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना।
यूथे न निष्ठा वृषभो वि राजसि।।

आनन्दधारारूप में प्रवाहित होनेवाले और सबको पवित्र करनेवाले हे परमात्मन्! अब उपासक अनुभव करता है कि आपने अपने बल से द्युलोक और पृथिवीलोक को अपने वश में किया हुआ है। आप सूर्य-चन्द्र, नक्षत्र आदि सारे लोक-लोकान्तरों को अपनी ज्योति से भरपूर कर रहे हो, इन सबको नियम और व्यवस्था में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चला रहे हो। जैसे गौओं के मध्य में साँड सुशोभित होता है, उसी प्रकार आप मनुष्य-समाज में सुशोभित होते हैं, ज्ञानी, बलवान् और श्रेष्ठ होने के कारण आपकी शोभा है।

सूक्त—४

ऋषिः-शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१४९७. इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः।।

हे प्रकाशस्वरूप परपात्मन्! आप हमारी सभी इन्द्रियों में सम्भजन—प्रभु-उपासना का, दूसरों के प्राणों की रक्षा का और सुसंस्कृत वाणी बोलने का सम्यक् प्रवचन कर दो। हमारी इन्द्रियाँ समाहित होकर सर्वत्र आपकी विभूतियों का दर्शन करें, वे दूसरों की रक्षा में तत्पर रहें और सदा सुसंस्कृत वाणी ही बोलें।

ऋषिः-शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१४९८. विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ। सद्यो दाशुषे क्षरसि।।

हे दर्शनीय ज्योतिवाले परमात्मन्! आप आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक को धन देते ही हैं, वह चाहे कहीं भी हो, वह चाहे समुद्र की लहरों के परली पार हो अथवा बिलकुल निकट—घर पर ही हो। हे परमेश्वर! आप आत्मदानी के लिए तुरन्त आनन्दरस का स्रोत बहा देते हो।

ऋषिः-शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१४९९. आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु। शिक्षा वस्वो अन्तमस्य।।

हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप हमें सर्वोत्कृष्ट—प्रथम कोटि के धनों का भागी बनाइए, हमें मध्यम कोटि के धनों का भागी बनाइए और सबसे निचली कोटि—तृतीय श्रेणी के धनों को भी हमें देने की इच्छा कीजिए।

[ज्ञान सर्वोत्तम धन है, बल मध्यम कोटि का धन है और रुपया-पैसा तृतीय कोटि का धन है। संसार में धन्य वही है जो इन तीनों धनों का स्वामी है। अथवा मोक्षानन्द प्रथम कोटि का धन है, ध्यान, स्वाध्याय, शम-दम आदि की साधना मध्यम कोटि का धन है और सद्भोग निकृष्ट कोटि का धन है। अथवा प्रथम कोटि का धन है आध्यात्मिक, द्वितीय कोटि का धन है मानसिक और तृतीय कोटि का धन है शारीरिक]।

सूक्त—५

ऋषिः-वत्सः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५००. अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह। अहं सूर्यइवाजनि।।

मैंने निश्चय ही सबके पालक और रक्षक, ज्ञानदाता परमेश्वर से सत्य की—सत्य ज्ञान की बुद्धि को—ऋतम्भरा प्रज्ञा को ग्रहण किया है। परिणामस्वरूप मैं सूर्य के समान देदीप्यमान, ओजस्वी और तेजस्वी हो गया हूँ।

ऋषिः-वत्सः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५०१. अहं प्रत्नेन जन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्। येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मैं [उपासक] पूर्वजन्म के शुभ संस्कारों से बाल्य काल से वेदवाणियों का एक मेधावी पुरुष के समान अथवा वर्तमान स्तुतिकर्ताओं के समान अत्यन्त शुद्धरूप में उच्चारण करता हूँ। इस हेतु से अर्थात् पूर्वजन्म के सत्कर्मों के कारण जीवात्मा पाप-शोषक बल और सत्य, सदाचार, ज्ञान आदि को धारण करता है।

[मन्त्र के '**प्रत्नेन जन्मना**' शब्दों से पुनर्जन्म का सिद्धान्त सिद्ध होता है।]

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५०२. ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः। ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जो अनृषि कोटि के व्यक्ति आपकी स्तुति नहीं करते और जो ऋषि कोटि के व्यक्ति करते हैं—उन्होंनें ठीक किया या ग़लत, उनसे आप प्रसन्न हैं या अप्रसन्न, मैं कुछ नहीं जानता। मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि मेरी उत्तम स्तुतियों के द्वारा आप मुझपर प्रसन्न हों—कृपालु हों और मेरी सर्वविध वृद्धि—उन्नति करें।

सूक्त—६

ऋषिः–अग्निस्तापसः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१५०३. अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत।
ये देवत्रा य आयुषु तेभिर्नो महया गिरः।।

सहस् और तप द्वारा साक्षात्करणीय हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप समस्त तपस्वियों, ऋषियों द्वारा की गई स्तुति-प्रार्थनाओं का प्रेमपूर्वक सेवन कीजिए—उन्हें सुनिए और पूर्ण कीजिए। देवों—मुमुक्षुओं में और साधारण मनुष्यों में जो तप, ज्ञान, विद्या आदि धर्म हैं उनके द्वारा आप हमारी स्तुतिवाणियों को महिमा-मण्डित कीजिए, अर्थात् हम स्तुति-प्रार्थना के अनुसार कार्य भी उसी प्रकार करें जिससे हमारी विद्या, तप और ज्ञान आदि की वृद्धि हो।

ऋषिः–अग्निस्तापसः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१५०४. प्र स विश्वेभिरग्निभिरग्निः स यस्य वाजिनः।
तनये तोके अस्मदा सम्यङ्वाजैः परीवृतः।।

अग्नि=प्रकाशस्वरूप प्रभु वह है जिसकी ओर शक्तिशाली और धनवान् के पुत्र और पौत्रों में—सभी सन्तानों में चलने की प्रवृत्ति होती है। अग्नि वह है जो सब ऋषियों और तपस्वियों द्वारा प्रीतिपूर्वक सेवित होता है अर्थात् ऋषि और तपस्वी भी जिसका सत्संग करते हैं और अग्नि वह है जो अन्न, धन, बल, ज्ञान और त्याग से आवृत—संयुक्त होता है।

ऋषिः–अग्निस्तापसः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१५०५. त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय। त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप अग्नि के समान तेजस्वी और विद्वान् उपासकों के द्वारा हमारे ज्ञान को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और यज्ञ—शुभ कर्मों की भावना को बढ़ाइए। आप हमें देवयज्ञ [अग्निहोत्र] के लिए तथा दिव्य गुणों के विस्तार के लिए धन दीजिए और हमें उस धन का दान करने के लिए भी प्रेरित कीजिए।

सूक्त—७

ऋषिः-त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-ऊर्ध्वा बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१५०६. त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः।
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! वृक्तबर्हिषः=कर्मकाण्ड प्रधान बाह्य यज्ञों को त्यागनेवाले, सन्तानों को त्यागनेवाले वनस्थ या संन्यासी, हृदय की तुच्छता के घास-फूँस को उखाड़कर अपने हृदय को निर्मल बनानेवाले योगी—ये प्रथम कोटि के व्यक्ति महाधन=मोक्ष-प्राप्ति के लिए और अपने आत्मकल्याण के लिए अपनी प्रज्ञाओं और कर्मों को आपमें लगाते हैं। हे सर्वसमर्थ, काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कम्पित करके दूर भगा देनेवाले प्रभो! आप हमें शक्तियुक्त कर्म करने के लिए प्रेरित कीजिए, आप हमें ओजस्वी बनने के लिए प्रेरित कीजिए और मोक्ष-प्राप्ति के आवश्यक साधन—विवेक, वैराग्य, शम-दम आदि बल की प्राप्ति के लिए भी हमें प्रेरणा दीजिए।

ऋषिः-त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-ऊर्ध्वा बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१५०७. अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथोत्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम्।
शर्याभिर्न भरमाणो गभस्त्योः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अपनी कृपा और प्रसादरूप हाथों की अनन्त शक्तियों से—अपने वरदहस्त से, श्रवसा=ज्ञान और धन से हमारा भरण और पोषण करते हो। वृक्तबर्हिष=वनस्थ या संन्यासी, योगी श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार के द्वारा निश्चय ही अत्यन्त वेग से आपकी ओर गमन करता है। ये प्रथम कोटि के वनस्थ और योगी, अवर्णनीय और संहारक होते हुए भी आकर्षक बने हुए, मनुष्य के द्वारा निरन्तर पिये जानेवाले और क्षीण न होनेवाले [जिनकी प्यास कभी बुझती नहीं है] विषय-स्रोत को स्तोत्रों द्वारा—आप के गुणगान—नामोच्चारण=जप द्वारा नष्ट कर देते हैं।

ऋषिः-त्र्यरुणत्रसदस्यू। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-ऊर्ध्वा बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१५०८. अजीजनो अमृत मर्त्याय कमृतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः।
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत्।।

हे अविनाशी परमात्मन्! आप मनुष्यों के लिए ज्ञान-ज्योति प्रदान कर उन्हें सुख प्रदान करते हो। आप उन्हें सुन्दरता व अमरता के पोषक वेदोपदिष्ट धर्ममार्ग में प्रेरित करते हो। आप सदा उपासक की ओर बढ़ते हो—उसपर कृपा करते हो और उसके लिए अन्न, धन, बल, ज्ञान और मोक्ष का प्रवाह बहाते हो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—८

ऋषिः–विश्चमना वैयश्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१५०९. एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु। प्र राधांसि चोदयते महित्वना॥

हे उपासको ! परमैश्वर्यशाली परमात्मा की प्राप्ति के लिए तुम अपने हृदय में भक्तिरस उत्पन्न करो—अपने हृदय को श्रद्धा और भक्ति से पूरित करो। वह परमात्मा श्रद्धा और भक्तिरूपी मधुर रस को ही स्वीकार करता है। फिर वह अपने सामर्थ्य, कृपा और उदारता से प्रभूत मात्रा में धन, ज्ञान और जीवन में सफलता प्रदान करता है।

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१५१०. उपो हरीणां पतिं राधः पृञ्चन्तमब्रवम्। नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य॥

मनुष्यों के पालक और रक्षक, इन्द्रियरूपी अश्वों के वशीकर्ता उपासकों को लौकिक और आध्यात्मिक सम्पत्ति तथा जीवन में सफलता का सम्पर्क करानेवाले—सफलतां प्रदान करनेवाले परमेश्वर की उपासना करके मैं उनसे ही प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझ स्तुति करनेवाले और सदा कार्यों में व्यापृत = लगे रहनेवाले उपासक के मन से—हृदय से निकली हुई प्रार्थना को अवश्य सुनिए और उसे स्वीकार कीजिए—पूर्ण कीजिए।

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१५११. न ह्यं३ऽग पुरा च न जज्ञे वीरतरस्त्वत्। न की राया नैवथा न भन्दना॥

हे परम प्रिय परमात्मन् ! आपसे बढ़कर वीर—पराक्रमशाली, काम-क्रोध आदि शत्रुओं का संहारक, सृष्टि का उत्पादक, धारक और संहारक न तो कोई पूर्व कल्प में हुआ और न इस समय है। न कोई धन की दृष्टि से आपसे अधिक वैभवशाली और दानशील हुआ है, न रक्षा की दृष्टि से और न स्तुति करने की दृष्टि से आपसे कोई महान् हुआ है।

सूक्त—९

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–निचृदुष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१५१२. नदं न ओदतीनां नदं योयुवतीनाम्। पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि॥

हे उपासको ! आप सबको प्रातः उषाओं का शब्द सुनना चाहिए अर्थात् उषाकाल में ब्रह्ममुहूर्त में ही निद्रा त्यागकर उठ जाना चाहिए, फिर पाप से बचानेवाली और भद्र के साथ मेल करानेवाली वेदवाणियों के शब्द सुनने चाहिएँ अर्थात् वेद का स्वाध्याय करना चाहिए। तुम [उपासक] अहिंसनीय, विनाश से बचानेवाली वेदवाणियों के स्वामी परमेश्वर को चाहो, उसकी ओर गमन करो और उसे अपने तरकस का तीर बना लो जिससे तुम्हारे काम-क्रोध आदि सब शत्रुओं का नाश हो जाए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१०

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-**मध्यमः**।

१५१३. देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम्।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते॥

हे उपासको! वह परमात्मा तुम्हें सब प्रकार के धन और मोक्षधन देनेवाला है। वह प्रभु उपासक के श्रद्धा-भक्ति से आपूर (भरे हुए) हृदय को चाहता है—भक्त के शुद्ध, पवित्र और निर्मल हृदय में बैठना चाहता है, अतः तुम अपने हृदय को भक्तिरस से इतना सींचो कि वह हृदय से उमड़ने लग जाए, साथ ही उसे परमात्म-ज्ञान से अच्छी प्रकार भर लो। ये दो कार्य करने के पश्चात् परमात्मा आपको मोक्ष प्रदान करेगा, अपना दर्शन देगा।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-**पञ्चमः**।

१५१४. तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत।
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे॥

मुमुक्षु उपासकजन हिंसारहित उपासना-यज्ञ के होता और प्रकृष्ट ज्ञानवाले उस परमात्मा को जो संसार का वहन करनेवाला है अपने जीवन-यज्ञ का, शरीररूपी रथ का सञ्चालक बनाते हैं। उस प्रभु की अर्चना—उपासना करनेवाले उपासक के जीवन-रथ को आगे ले-जानेवाला प्रकाशस्वरूप परमात्मा उसे रमणीय ज्ञानरूप धन प्रदान करता है और आत्मसमर्पण करनेवाले मनुष्य के लिए आत्मिक बल देता है।

सूक्त—११

ऋषिः-सोभरिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१५१५. अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः॥

जिस प्रभु की प्राप्ति के निमित्त अहिंसा, सत्य, अस्तेय=चोरी-त्याग, ब्रह्मचर्य आदि व्रतों को धारण किया जाता है, उस प्रभु के मार्ग को—उपासना-मार्ग को—योग-मार्ग को जाननेवाला और उस मार्ग पर गमन करनेवाला अवश्य ही उस प्रभु का साक्षात्कार करता है। हमारी स्तुति-वाणियाँ निरन्तर, आर्य=श्रेष्ठ पुरुषों, ज्ञानियों, तपस्वियों, योगियों के हृदय में प्रकट होनेवोले और ज्ञान, सदाचार आदि प्रदान करके उनकी उन्नति करनेवाले, ज्ञानस्वरूप परमेश्वर को ही प्राप्त हों—हम उसी की भक्ति के, महिमा के गीत गाएँ।

ऋषिः-सोभरिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

१५१६. यस्माद्रेजन्त कृष्टयश्चर्कृत्यानि कृण्वतः।
सहस्रसां मेधसाताविव त्मनाग्निं धीभिर्नमस्यत॥

क्योंकि उत्तम कर्मों और प्रभु-स्तवनों को करते हुए श्रमशील मनुष्य चमक उठते हैं और काम-क्रोध

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आदि शत्रुओं को कँपाकर परे भगा देते हैं, अतः यह मानना और समझना चाहिए कि जीवन मेधसातौ = यज्ञरूप परमेश्वर की प्राप्ति और उत्तम कर्म करने के लिए ही मिला है। ऐसा समझकर अनन्त ऐश्वर्यों को प्राप्त करानेवाले प्रकाशस्वरूप परमात्मा को आत्मा द्वारा, ध्यान-धारणाओं द्वारा और प्रज्ञानों तथा कर्मों द्वारा नमस्कार किया करो।

ऋषिः–सोभरिः काण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २र ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १२
१५१७. प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना।
१२ ३ १२ ३ १ २र ३ १ २र १ २
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि।।

देवों का देव, काम-क्रोध आदि क्षयकारियों का नाशक, ज्योतिर्मय परमात्मा बल के दृष्टिकोण से विद्युत् और सूर्य के समान है। वह भूतों का निर्माण करनेवाली पृथिवी को अपनी इच्छा के अनुसार रचता है, धारण करता है और संहार करता है। वह आनन्द के घर–मोक्षधाम में विद्यमान है। अपने कल्याण के लिए, मोक्ष-प्राप्ति के लिए ऐसे परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए।

सूक्त–१२

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–अग्निः पवमानः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
१५१८. अग्न आयूँषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।।

बुराइयों को भस्म करके जीवों की उन्नति करनेवाले प्रभो! आप हमारे जीवनों को पवित्र कीजिए। हमें बल, पराक्रम और अन्न प्रदान कीजिए तथा कुत्ते के समान दुर्वृत्तियों (काम-क्रोध, लोभ, चापलूसी, स्वजाति-द्रोह आदि) को हमसे दूर भगा दीजिए।

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–अग्निः पवमानः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २
१५१९. अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्।।

प्रकाशस्वरूप परमात्मा सर्वद्रष्टा, सबको पवित्र करनेवाला, मनुष्यमात्र का उपास्य एवं हितकर, सृष्टि के पूर्व से ही सब जगत् का धारण करनेवाला और सब जगत् का हितसाधक है, उस देवों, विद्वानों, ऋषि-मुनियों द्वारा गान करने योग्य, मोक्षरूपी महागृह के स्वामी, महाधन और महाप्राण परमात्मा को हम चाहते हैं, उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं, उससे अपने अभ्युदय और निःश्रेयस = मोक्ष-प्राप्ति के लिए याचना करते हैं।

ऋषिः–शतं वैखानसाः। **देवता**–अग्निः पवमानः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १
१५२०. अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप परोपकार आदि शोभन और दिव्य कर्म करनेवाले हैं, आप हम जीवों के कर्मों को भी दिव्य बनाते हैं। आप हमें उत्तम शारीरिक बल = सामर्थ्य और आत्मिक तेज प्रदान कीजिए। हे प्रभो! मुझ उपासक को ज्ञानरूपी धन प्रदान कीजिए और उसकी रक्षा के साधन भी प्रदान कराइए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१३

ऋषि:–वसूयव आत्रेयाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५२१. अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च।।

(क) हे शोधक परमात्मदेव! आप अपनी ओजस्विनी, मधु वर्षानेवाली-आह्लाद देनेवाली वाणी से दैवी सम्पत्ति का सेवन करनेवाले हम सज्जनों को अभ्युदय और निःश्रेयस-साधन का उपदेश दीजिए और अपने सदुपदेश से हमें प्रसन्न कीजिए—हमारा कल्याण कीजिए।

(ख) हे शोधक, विश्वप्रकाशक और आनन्दप्रद प्रभो! हमारी ओजस्विनी और मधुर स्तुति-वाणी के द्वारा आप हमें मुमुक्षुजनों के पास पहुँचाइए, उनके साथ हमारा मेल कराइए अर्थात् हमें सज्जनों की संगति प्राप्त कराइए।

(ग) हे शोधक! प्रकाशमय देव! आप ज्ञानप्रकाश और आनन्द प्रदान करनेवाली वेदवाणी द्वारा हमें दिव्य गुण प्राप्त कराइए और हमारे उपासना-यज्ञों को सफल कीजिए।

ऋषि:–वसूयव आत्रेयाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५२२. तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवाँ आ वीतये वह।।

तेज और स्नेह के स्रोत हे प्रभो! ज्ञानप्रद रश्मियोंवाले भगवन्! सर्वद्रष्टा, सौन्दर्यनिधि, परमप्रेमास्पद, स्वयं प्रकाश आपसे हम प्रार्थना करते हैं कि मोक्ष-प्राप्ति के लिए आप हमें विद्वानों का संग प्राप्त कराइए और नये आध्यात्मिक जन्म के लिए हमें दिव्य गुण भी प्राप्त कराइए।

ऋषि:–वसूयव आत्रेयाः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५२३. वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि। अग्ने बृहन्तमध्वरे।।

हे वेदकाव्य के उपदेष्टा, क्रान्तदर्शिन्! प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! कमनीय दान देनेवाले, सहस्रों सूर्यों के समान दीप्तिमान्, सर्वतो महान् आपको हम उपासक हिंसारहित उपासना-यज्ञों में प्रदीप्त करते हैं—आपका साक्षात्कार करते हैं।

सूक्त—१४

ऋषि:–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५२४. अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि। विश्वासु धीषु वन्द्य।।

सब प्रज्ञानों और कर्मों में अभिवादन और स्तुति के योग्य हे मार्गदर्शक प्रभो! प्राणों के त्राण के साधन इस शरीर के भरण-पोषण में और स्तुति के पोषण में आप अपने रक्षा-साधनों के द्वारा हमारी रक्षा कीजिए।

[प्राणों के सुरक्षित होने से हम रोगी नहीं होते और स्तुति के पोषण से हमारा मन वासनाओं से आक्रान्त नहीं होता।]

ऋषि:–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५२५. आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम्। विश्वासु पृत्सु दुष्टरम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सुपथ पर चलानेवाले प्रभो! आप हमें वह अलौकिक धन और दिव्य शक्ति प्रदान कीजिए जो हमें सत्यमार्ग पर चलने का साहस प्रदान करे, वरणीय हो और संग्रामों में शत्रुओं से दुस्तर—अजेय हो।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५२६. आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम्। मार्डीकं धेहि जीवसे।।

हे सुपथ पर चलानेवाले प्रभो! उत्कृष्ट एवं यशस्वी जीवन के लिए आप उत्तम ज्ञान के साथ-साथ हमें ऐसा धन और शक्ति प्रदान कीजिए जो सभी मनुष्यों का पालन-पोषण करनेवाले और सभी के लिए सुख एवं कल्याणकारी हों।

[ज्ञान, धन और शक्ति—तीनों की प्राप्ति की सुन्दर कामना है।]

सूक्त—१५

ऋषिः-केतुराग्नेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५२७. अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु। तेन जेष्म धनंधनम्।।

हमारी ध्यान-धारणाएँ, हमारी बुद्धियाँ, हमारे कर्म, हमारी प्रार्थना-वाणियाँ और प्राण-साधना प्रकाशस्वरूप परमात्मा को हमारी ओर प्रेरित करें जैसेकि अश्वारोही योद्धा संग्रामों में शीघ्रगामी अश्व को प्रेरित करता है। उस परमेश्वर की प्रेरणा से हम नाना प्रकार के धनों को और संग्रामों को जीतने में समर्थ हों।

ऋषिः-केतुराग्नेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५२८. यया गा आकरामहै सेनयाग्ने तवोत्या। तां नो हिन्व मघत्तये।।

हे पथ-प्रदर्शक प्रभो! जिस आपको अपना स्वामी और अराध्यदेव समझते हुए आपके संरक्षण में हम पार्थिव भोगों पर विजय पा लेते हैं अर्थात् जीवन में धन-धान्य, भोग-सामग्री की कमी नहीं रहती, अपनी उस रक्षा को हमें सदा प्राप्त कराइए जिससे हम पजित **धन**—सुधन, उत्तम साधनों से कमाये गये धन को प्राप्त करनेवाले हों और उसका दान भी देनेवाले हों।

ऋषिः-केतुराग्नेयः। **देवताः**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्रीः। **स्वरः**-षड्जः।

१५२९. आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम्। अङ्धि खं वर्त्तया पविम्।।

हे पथ-प्रदर्शक प्रभो! आप हमें सदा स्थिर रहनेवाला, प्रथनशील—उपकार में आनेवाला—बहुतों का पोषण करनेवाला, उत्तम गौओं और घोड़ोंवाला धन प्रदान कीजिए। हमारे हृदय को पवित्र कीजिए और वाणी को समृद्ध—मधुर बनाइए।

ऋषिः-केतुराग्नेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५३०. अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्यं रोहयो दिवि। दधज्ज्योतिर्जनेभ्यः।।

(क) हे प्रकाश के केन्द्र प्रभो! आप इतने उपकारक हैं कि आपने प्राणियों को प्रकाश देने के लिए सतत गमनशील, कभी जीर्ण न होनेवाले सूर्य को आकाश में स्थापित कर दिया है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(ख) हे ब्रह्माग्ने ! आपने योगियों और साधकों के लिए ज्ञान-प्रकाश प्रकट करने के लिए अविनश्वर और जरारहित ज्ञान-सूर्य को द्युलोक—मस्तिष्क में स्थापित किया है।

ऋषिः–केतुराग्नेयः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५३१. अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत्। बोधा स्तोत्रे वयो दधत्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! आप प्रजाओं को ज्ञान देनेवाले हैं। आप सर्वाधिक प्रिय और सर्वश्रेष्ठ हैं, सबके हृदय में विराजमान हैं। आप स्तुतिकर्ता के लिए आध्यात्मिक बोध, उत्तम अन्न तथा दीर्घायु प्रदान करते हैं।

सूक्त–१६

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५३२. अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति।।

'यह ब्रह्माग्नि = परमेश्वर पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक की ज्योतियों में मूर्धारूप है, सर्वश्रेष्ठ है, उनका शासक और प्रकाशक है'—इस कथन को विस्तार से स्पष्ट करते हैं—द्युलोक का उच्च भाग जो प्रकाशक सूर्य है, वह गौण है, परमात्मा ही सर्वोच्च शक्ति है। पृथिवी पर जो भौतिक अग्नि है, वह गौण है, परमात्मा ही अग्रनेता है। अन्तरिक्ष के जलों को प्रेरित करनेवाली विद्युत्-अग्नि भी गौण है, परमात्मा ही सर्वमहान् प्रेरक है, उसकी ज्योति से ही सर्वत्र प्रकाश और चमक है।

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५३३. ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वः पतिः। स्तोता स्यां तव शर्मणि।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! आप वरणीय ज्ञानरूप धन और सबके त्राण = रक्षण के लिए दान करने योग्य धन के स्वामी हैं। आप मोक्षसुख के भी स्वामी हैं। मैं स्तुतिकर्ता उपासक सदा आपकी शरण में रहूँ—आपका होऊँ और आपको पा जाऊँ।

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५३४. उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतींष्यर्चयः।।

हे ज्योतिर्मय परमात्मन् ! आपकी पवित्र, शुभ और प्रकाशमान ज्वालाएँ तथा आपकी नाना प्रकार की ज्ञान-ज्योतियाँ मेरे मस्तिष्क में उदित हो रही हैं और आपकी आनन्द-तरंगें मेरे हृदय में तरंगित हो रही हैं।

सप्तमः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त–१

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५३५. कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः। को ह कस्मिन्नसि श्रितः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! मनुष्यों में जामि=आपकी समानता रखनेवाला कौन है? कोई नहीं, क्योंकि आप अनुपम तथा अद्वितीय हैं। पूर्णरूप से आपकी उपासना कौन कर सकता है? कोई नहीं क्योंकि आपका रूप गुण-कर्म-स्वभाव सब अतर्क्य हैं। आप कौन हैं? इसे भी कोई नहीं जान सकता, क्योंकि आप इन्द्रियों, मन और बुद्धि की पहुँच से बाहर हैं। आप किसके आधार पर टिके हैं? किसी के आधार पर नहीं, क्योंकि आप स्वयं सर्वाधार हैं। जो सबका आधार है, कोई उसका आधार कैसे हो सकता है?

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१५३६. त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्यः॥

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! आप मनुष्यों के बन्धु हो। आप सबसे स्नेह करनेवाले और सबकी रक्षा करनेवाले हैं। आप सबके प्रिय हैं, सबको तृप्त करनेवाले हैं। आप सखाओं के लिए स्तुति करने योग्य सखा है अथवा आप सब सखाओं की अपेक्षा स्तुत्य सखा हैं।

[आपका कोई बन्धु, मित्र या सखा नहीं है, हाँ, आप सभी के बन्धु, मित्र और सखा हैं।]

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २र
१५३७. यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत्। अग्ने यक्षि स्वं दमम्॥

हे सर्वोन्नति-साधक परमात्मन्! आप हमारे साथ प्राण और अपान को संगत कीजिए। हमारे प्राणापान अपने-अपने कार्य को ठीक-ठीक करनेवाले होकर शरीर में सुरक्षित रहें। आप हमारी इन्द्रियों को हमारे साथ संगत कीजिए—हमारी प्रत्येक इन्द्रिय अपने कार्य को सुचारु रूप से करनेवाली हो। आप महान् वेदज्ञान को हमारे साथ संगत कीजिए। हम सदा वेद का स्वाध्याय करनेवाले बनें। हमें अपने घर=मोक्षधाम से संगत कीजिए—हमें मोक्ष प्रदान कीजिए।

सूक्त—२

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३क २र ३ १ २र ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१५३८. ईडेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा॥

स्तुतिकर्त्ताओं से स्तुति करने योग्य, सभी के द्वारा नमस्करणीय, अज्ञान-अन्धकारों से परे, दर्शनीय, सुखवर्षक और कामनापूरक, पथ-प्रदर्शक अग्निस्वरूप परमात्मा योगियों, मुमुक्षुओं, उपासकों से योग-साधना के द्वारा हृदय-मन्दिरों में प्रदीप्त किया जाता है।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
१५३९. वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तं हविष्मन्त ईडते॥

सुखवर्षक और कामनाओं का पूरक, सर्वव्यापक, सूर्य-चन्द्र आदि सब देवों का धारक, ज्ञानस्वरूप परमात्मा योगियों द्वारा योग-साधना से हृदय में प्रकट किया जाता है। श्रद्धालु भक्त, आत्महवि-समर्पण करनेवाले और यज्ञशेष खानेवाले उसकी उपासना करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५४०. वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत्।।

हे शक्तिशालिन्, सुखवर्षक और मनोरथों को पूर्ण करनेवाले प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! हम भी शक्तिशाली, सुखवर्षक और कामनापूरक होते हुए सुखवर्षक, मनोरथपूरक, अतिशयेन देदीप्यमान आपको योग-साधना द्वारा अपनी हृदय-वेदि पर प्रदीप्त करते हैं।

सूक्त–३

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५४१. उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः। अग्ने शुक्रास ईरते।।

हे प्रकाशमान, सबको आगे ले-जानेवाले प्रभो! हृदय-मन्दिर में समिद्ध–प्रकट–साक्षात् हुए आपकी बड़ी-बड़ी शुभ ज्ञान-ज्वालाएँ और आनन्द-तरंगें मस्तिष्क और हृदय में उठती रहती हैं।

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५४२. उप त्वा जुह्वो३ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत। अग्ने हव्या जुषस्व नः।।

हे कमनीय, परम मनोहर प्रभो! मेरी स्नेहपूर्ण स्तुति-वाणियाँ और आत्म-भावनाएँ आपको प्राप्त हों अथवा प्रेम में स्निग्ध और ज्ञान से दीप्त मेरी चित्तवृत्तियाँ आपको प्राप्त हों। मेरे जीवन को प्रकाशमय बनानेवाले हे परमात्मन्! आप श्रद्धा और भक्तिभरी हमारी भेंटों को प्रेमपूर्वक स्वीकार कीजिए और हमारी पुकारों को, निवेदनों को, प्रार्थनाओं को सुनिए और अपने कृपाकटाक्ष से उन्हें पूर्ण कीजिए।

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५४३. मन्द्रं होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम्। अग्निमीडे स उ श्रवत्।।

आनन्दमय, दानशील, ऋतु-ऋतु में उपासनीय, अद्भुत प्रभाववाले, ज्ञानरूप धनवाले, पथ-प्रदर्शक परमेश्वर की मैं स्तुति करता हूँ। वह निश्चय से हमारी स्तुति और प्रार्थनाओं को सुनता है।

[खटखटाओ खुलेगा, माँगो मिलेगा।]

सूक्त–४

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१५४४. पाहि नो अग्न एकया पाह्यू३त द्वितीयया।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो।।

हे स्वयं प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप यथार्थ ज्ञानरूप प्रथम शक्ति के द्वारा अविद्या-अज्ञानरूप गाढ़ अन्धकार से हमारी रक्षा करो। द्वितीय शक्ति बल-शौर्य आदि के द्वारा दुर्बलता, परतन्त्रता आदि महान् पापों से हमारी रक्षा करो। ऋग्यजुः और सामरूप तीन वेदों से स्तुत, स्वकीय जनों के शिक्षण-रक्षण आदि सामर्थ्यों के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वामिन्! आप अपनी तृतीय शक्ति ऐश्वर्य से दरिद्रता आदि दुःखों से हमारी रक्षा करो। चारों वेदों द्वारा स्तुत, सबको बसानेवाले और सबमें बसनेवाले हे परमात्मन्! चौथी शक्ति सेवा=श्रम के द्वारा आलस्य और प्रमाद से हमारी रक्षा करो। हे प्रभो! इन सम्मिलित ज्ञान, बल, ऐश्वर्य एवं सेवारूप चारों शक्तियों द्वारा आप बारम्बार हमारी रक्षा करो।

ऋषिः-भर्गः प्रागाथः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१५४५. पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव।
त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं नक्षामहे वृधे।।

हे परमात्मन्! आप हमें राक्षसी वृत्तियों (अपने रमण के लिए औरों के क्षय की वृत्ति, जिनसे रक्षा की जाए) और अदानशीलता से; असत्य के प्रशंसक, असत्य-भाषी, असत्य आचरण करनेवाले जनों से हमारी रक्षा कीजिए। काम-क्रोध-लोभ आदि शत्रुओं के साथ चलनेवाले संग्रामों में आप हमारी रक्षा कीजिए। दिव्य गुणों के विस्तार के लिए, देवों की संगति के लिए और अपनी सर्वविध वृद्धि=उन्नति के लिए हम अपने निकटतम बन्धु (हृदय में ही बसनेवाले) आपको ही प्राप्त होते हैं, आपकी ही शरण में आते हैं।

सूक्त—५

ऋषिः-त्रित आप्त्यः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१५४६. इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि।
चिकिद्वि भाति भासा बृहतासिक्नीमेति रुशतीमपाजन्।।

सर्वत्र राजमान, हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप संसार के स्वामी हैं, सबको प्राप्त हैं, परन्तु सर्वथा निर्लिप्त हैं, ज्ञान-ज्योति से प्रदीप्त हैं, दुष्ट प्राणियों को दण्ड देकर रुलानेवाले हैं, जीवों को बल-समृद्धि प्राप्त कराने के लिए सदा सुप्रेरणाएँ देते रहते हैं—ऐसे आपका मैंने साक्षात्कार कर लिया है। ज्ञानी और चेतना-प्रदाता परमेश्वर उपासक की अज्ञान रात्रि को दूर हटाता हुआ अपनी महा प्रभा द्वारा ज्ञान प्रकाशमयी उषा को चमकाता हुआ उपासक के हृदय में प्रकट होता है।

ऋषिः-त्रित आप्त्यः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१५४७. कृष्णां यदेनीमभि वर्पसाभूज्जनयन्योषां बृहतः पितुर्जाम्।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति।।

हे परमात्मन्! जब आप उपासक के आत्मस्वरूप को आच्छादित करनेवाली अनादि काल से चली आनेवाली तमःप्रधान अविद्या को अपने शुभ ज्ञान-प्रकाश से—अपने साक्षात्कृत स्वरूप से दूर कर देते हैं और लोकों का पालन करनेवाले सूर्य की पुत्री उषा के समान देदीप्यमान ब्रह्मविद्या को प्रादुर्भूत करते हुए ज्ञानसूर्य के ज्ञानमय तेज को उपासक के मस्तिष्क में रख देते हैं, तब सर्वव्यापक आप अपने दिव्य तेजों से खूब चमकते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–त्रित आप्त्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१५४८. भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्।।

कल्याणस्वरूप और कल्याणकारी परमेश्वर कल्याण-कारिणी और सुखदायिनी सात्त्विक चित्त-वृत्तियों के द्वारा उपासित हुआ उपासक के हृदय में प्रकट होता है, तत्पश्चात् राग-द्वेष आदि को जीर्ण = नष्ट करनेवाला कल्याण-पथिक जीवात्मा अपने को मोक्ष में ले-जानेवाली ब्रह्मविद्या को प्राप्त होता है। तब प्रकाशयुक्त, श्वेत वर्णवाले (अत्यन्त सात्त्विक) ज्ञान से सुशोभित परमात्मा अपने में रमण करनेवाले ज्ञानी उपासक में विराजमान हो जाता है।

सूक्त–६

ऋषिः–उशना काव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५४९. कया ते अग्ने अंगिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम्। वराय देव मन्यवे।।

सब जीवों के अंग-अंग में आनन्दरस का सञ्चार करनेवाले और अंगों के प्रेरक, सबको आगे ले-चलानेवाले, आत्मबल को न गिरने देनेवाले, प्रकाशकों के प्रकाशक, आनन्दप्रद परमात्मन्! सर्वश्रेष्ठ, ज्ञानस्वरूप, वरण और मनन करने योग्य आपके लिए हम किस वाणी से स्तुति करें? आपकी महिमा अपरम्पार है, अतः हमारी वाणी आपका वर्णन करने में असमर्थ है। असीम परमात्मा ससीम मन, बुद्धि और वाणी का विषय कैसे बन सकता है?

ऋषिः–उशना काव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५५०. दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो। कदु वोच इदं नमः।।

हे बल और सामर्थ्य के प्रापक परमेश्वर! पूजनीय–उपासनीय, सुखस्वरूप परमात्मन्! आपके लिए मैं अपने मन और स्वयं को समर्पित करना चाहता हूँ, परन्तु कैसे करूँ, समझ नहीं पा रहा हूँ? आपके प्रति नमस्कार-वचन भी किस विधि से बोलूँ, यह भी नहीं जानता।

[यह आतुर भक्त की पुकार है। जीवन समाप्ति की ओर है, अतः वह कह उठता है–मैं अपने मन और अपने-आपको आपके चरणों में कब समर्पित करूँगा? आपको नमस्कार की भेंट कब अर्पित करूँगा?]

ऋषिः–उशना काव्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५५१. अधा त्वं हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः। वाजद्रविणसो गिरः।।

हे परमेश्वर! अब तो आप ही हमारे लिए सब-कुछ कीजिए। क्या-क्या? जन्म-जन्मान्तरों में हमारे लिए उत्तम निवास-स्थानों को और अन्त में परमधाम = मोक्ष प्राप्त कराइए। सत्य-सदाचाररूप पूज्य धन और वेदज्ञान प्रदान कीजिए। प्रभो! आप ही यह सब-कुछ दीजिए। आपको छोड़कर और कहाँ माँगने जाऊँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—७

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१५५२. अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप अपने तेज, विद्या और विज्ञान आदि के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में आइए—प्रकट होइए। हम उपासक सब इष्ट पदार्थों को देनेवाले आपका वरण करते हैं। अत्यन्त पूजनीय और संगति करने योग्य आपको पवित्र तथा संयत की गई श्रद्धा, भक्तिपूर्ण मनोवृत्ति और आत्मसमर्पणवाली बुद्धि हमारी ओर—हमारे हृदय में प्रकट होने के लिए द्रवित कर दे, जिससे आप हमारे हृदय-आसन पर आ विराजें।

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१५५३. अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अंगिरः स्रुचश्चरन्त्यध्वरे।
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम्।।

साहस और धैर्य के प्रेरक! उपासकों के अंग-अंग में रस का सञ्चार करनेवाले प्रभो! यज्ञशील जन और स्तोतागण अपने हिंसा-शून्य जीवन में निश्चय ही आपकी ओर गति कर रहे हैं। आप आत्मबल के न गिरने देनेवाले हो, दीप्त ज्ञानरश्मिवाले, सुख और आनन्द के ईश हो, अनादि और कामनाओं के पूरक हो—ऐसे आपको हम अपने जीवन-यज्ञों में चाहते हैं और आपको पाने का प्रयत्न करते हैं। हमारे जीवन-यज्ञ का लक्ष्य केवल और केवल आपकी प्राप्ति है।

सूक्त—८

ऋषिः–सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१५५४. अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम्।
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरूवसुं पुरुप्रशस्तमूतये।।

हमारी स्तुतियाँ सदा सब बुराइयों के दाहक ज्वालाओंवाले, दर्शनीय परमात्मा को प्राप्त हों अर्थात् हम सदा परमेश्वर का स्तुतिगान करें। यज्ञशील उपासक नमस्कार—श्रद्धा-भक्ति के साथ, अपनी रक्षा के लिए सर्वत्र बसनेवाले, सबको बसानेवाले, पालक और पूरक धनों को देनेवाले, अत्यन्त प्रशंसनीय परमात्मा की ओर जाते हैं।

ऋषिः–सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१५५५. अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम्।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हम उपासक साहस और धैर्य की प्रेरणा देनेवाले, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, वेदों के प्रकाशक, धनों के स्वामी, उपासकों के वरणीय और इष्ट-पदार्थों को देनेवाले प्रकाशस्वरूप परमेश्वर की स्तुति करते हैं। वह अमर परमात्मा मरणधर्मा मनुष्य और मुमुक्षु उपासक—दोनों प्रकार की प्रजाओं में दो रूपों में विद्यमान है। वह मरणधर्मा मनुष्यों को जीवन-निर्वाहक वस्तुएँ देनेवाला है और मुमुक्षु उपासकों को मोक्ष प्रदान करता है।

सूक्त—९

ऋषिः-विश्वामित्रः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५५६. अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम्। तूर्णी रथः सदा नवः।।

वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा अहिंस्य है—न कोई उसका नाश कर सकता है और न कोई उसे दबा सकता है। वह मननशील और मनुष्यों के हितकारक—उपकारक प्रजाओं—उपासकों का सन्मार्गदर्शक अग्रगामी नेता है। वह शीघ्रकारी है—दया,दान, न्याय आदि में वह कभी भी विलम्ब नहीं करता अथवा वह उपासक के कष्टों, दुःख-दैन्यों को छिन्न-भिन्न करनेवाला है। वह अत्यन्त रमणीय है, पुराना होता हुआ भी नया है और स्तुति करने के योग्य है।

ऋषिः-विश्वामित्रः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५५७. अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः। क्षयं पावकशोचिशः।।

(क) त्यागी, दानी, आत्मसमर्पण करनेवाला मनुष्य प्रभु-स्तुति के द्वारा अत्यन्त प्रिय भोगों को भोगता है और अन्त में पवित्र, ज्योतिस्वरूप परमात्मा के मोक्षधाम को प्राप्त कर लेता है। उपासक भौतिक दृष्टि से सांसारिक भोगों को भोगता है और अन्त में जीवन के चरम लक्ष्य परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

(ख) परमेश्वर के प्रति आत्मसमर्पण करनेवाला मनुष्य **वाहसा** = मन से तृप्ति का अनुभव करता है और देह-त्याग के पश्चात् मोक्षपद को प्राप्त करता है।

ऋषिः-विश्वामित्रः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१५५८. साह्वान् विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः। अग्निस्तुविश्रवस्तमः।।

प्रकाशस्वरूप परमात्मा उपासक की समस्त विघ्न-बाधाओं, विरोधी शक्तियों को दबाने और परे हटानेवाला है। वह पृथिवी आदि देवों का आधार और मुमुक्षु उपासकों का पालक-पोषक है। वह अजर-अमर, शुद्ध-पवित्र और महायशस्वी है।

सूक्त—१०

ऋषिः-सोभरिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। **स्वरः**-ऋषभः।

१५५९. भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः।।

हे शोभन ऐश्वर्य से युक्त परमात्मन्! भद्रदर्शन, भद्रश्रवण, भद्रभावना और भद्र-आचार की आहुतियाँ पाया हुआ आत्म-अग्नि हमारे लिए कल्याणकारक हो। हमारे द्वारा दिये गये दान प्राणिमात्र को सुख

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पहुँचानेवाले हों। छल-कपट से रहित हमारा जीवन-यज्ञ सबको सुख पहुँचानेवाला और सबका कल्याण करनेवाला हो। हमारी प्रशस्तियाँ—हमारा गुणगान भद्र हो। हमारा सर्वत्र, सब प्रकार से यशोगान ही हो, कहीं भी हमारी निन्दा न हों।

ऋषिः-सोभरिः काण्वः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१५६०. भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहिः।
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टये।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! पाप-वृत्रों के विनाश के लिए आप हमारे मनों को शुभ और दृढ़ संकल्पवाला बना दीजिए, जिससे काम-क्रोध आदि शत्रुओं के साथ होनेवाले संग्रामों में हम असुरों का संहार कर सकें। प्रबल आक्रमण करनेवाले इन पाप-वृत्रों के स्थिर बलों को भी आप ढीला कर दीजिए। प्रभो! इन पाप-वृत्रों पर विजय पाने के लिए और जीवन की मनःकामना—मोक्ष के लिए हम आपकी ही उपासना करें।

सूक्त—११

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१५६१. अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो। अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः।।

'ओम्' के जपरूप स्वाध्याय, उसके अर्थभावनरूप योगाभ्यास और वैराग्य—तीनों के संघर्षण बल से हृदय-मन्दिर में प्रकाशित—साक्षात् होनेवाले प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप पशुओं, रश्मियों, इन्द्रियों, वेदवाणियों के और अन्न, धन ज्ञान आदि के स्वामी हैं। जातवेदः=हे सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और वेद प्रकाशक प्रभो! आप हमें अत्यन्त प्रशंसनीय अन्न, धन यश और ज्ञान प्रदान करें।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१५६२. स इधानो वसुष्कविरग्निरीडेन्यो गिरा। रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि।।

हे महाप्राण! सबको जीवन देनेवाले प्रभो! आप अत्यन्त दीप्त हैं, सर्वत्र सबमें बसनेवाले और सबको निवास देनेवाले हैं, वेदकाव्य के उपदेष्टा कवि हैं, सबको आगे ले-चलनेवाले—सबके मार्ग-दर्शक हैं, वेदवाणी के द्वारा दर्शन करने योग्य हैं—ऐसे आप हमारे लिए सब दिव्य गुणों को और मोक्षरूपी ऐश्वर्य को प्रदान कीजिए और हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकाशित हो जाइए।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१५६३. क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः। स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति।।

हे सारे संसार के नियामक और व्यवस्थापक, सर्वत्र प्रकाशमान पापियों के नाशक, प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप उपासक आत्मा के द्वारा दिनभर में और रात्रि में होनेवाले पापों को नष्ट कर दीजिए—आपकी प्रेरणा से वे न दिन में पाप करें और न रात्रि में ही। आप राक्षसी भावों, राक्षसी कर्मों को भी अपनी शक्ति से दग्ध कर दीजिए—जला दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१२

ऋषिः-गोपवन आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-आनुष्टुभः प्रगाथः (अनुष्टुप्)। **स्वरः**-गान्धारः।

१५६४. विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निं वो दुर्यं वच स्तुषे शूषस्य मन्मभिः।।

अपने आत्मबल को बढ़ाने की इच्छावाले प्रत्येक मनुष्य को सदा के साथी, अतिथि के समान पूजनीय, अत्यन्त प्रिय, सुख-शान्ति के धाम परमात्मा की मननीय वचनों—उसके गुणों को प्रकट करनेवाले स्तुति-वचनों से स्तुति करनी चाहिए।

ऋषिः-गोपवन आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-आनुष्टुभः प्रगाथः (गायत्री)। **स्वरः**-षड्जः।

१५६५. यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम्। प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः।।

अपने दोषों को नष्ट करने के लिए प्रस्तुत रहनेवाले मनुष्य और आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक पाप से बचानेवाले, सदा स्नेह करनेवाले मित्र के समान प्रेरणा देनेवाले, महान् ऐश्वर्यवाले जिस परमेश्वर की स्तुतियों से प्रशंसा करते हैं, उसी स्वयं सिद्ध, उपास्य परमेश्वर की मैं भी स्तुति=गुणगान करता हूँ।

ऋषिः-गोपवन आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-आनुष्टुभः प्रगाथः (गायत्री)। **स्वरः**- षड्जः।

१५६६. पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता। हव्यान्यैरयद् दिवि।।

अत्यन्त प्रशंसनीय, स्तुति करनेयोग्य, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, वेदोपदेष्टा उस परमेश्वर की मैं स्तुति करता हूँ, जो परमेश्वर अध्यात्म-यज्ञ में परिपक्व हो जानेवाली आत्माओं को मोक्षधाम में भेजता है—मोक्ष प्राप्त कराता है।

सूक्त—१३

ऋषिः-भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१५६७. समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम्।
विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम्।।

जो स्वयं शुद्ध है और अपने उपासकों के जीवनों को शुद्ध करनेवाला है, जो हिंसारहित उपासना-यज्ञों में सदा सम्मुख रखने योग्य है, जो कूटस्थ और निश्चल है, जो महामेधावी और दानशील है, सबके द्वारा वरणीय, किसी से द्रोह न करनेवाला, क्रान्तदर्शी, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और वेदज्ञान का उपदेष्टा है—ऐसे आत्मसमर्पणरूपी समिधा द्वारा हृदय में सम्यक् प्रदीप्त हुए—प्रकट हुए प्रकाशस्वरूप परमात्मा की मैं वेदवाणियों से स्तुति करता हूँ और सुखों की प्राप्ति--इष्ट मोक्ष-सुख की प्राप्ति के लिए उससे याचना करता हूँ तथा उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता हूँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१५६८. त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम्।
देवासश्च मर्तासश्च जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! उपासकों के दोषों को दूर करनेवाले, कभी न मरनेवाले—अविनाशी, उपासकों को जीवन-सामग्री देनेवाले तथा उन्हें मोक्षधाम में पहुँचानेवाले, सर्वपालक और रक्षक, स्तुति करनेयोग्य आपको ध्यान के प्रत्येक अवसर पर उपासक अपने हृदय में धारण करते हैं। मुमुक्षुजन तथा साधारण मनुष्य भी सदा स्वयं जागरूक और उपासकों को जागरूक रखनेवाले, सर्वव्यापक, सब प्रजाओं में ज्येष्ठ—सबसे बड़े स्वामी परमात्मा को नमन के द्वारा—नम्रभाव से, अहंकारशून्य होकर अपने हृदय-आसन पर विराजमान करते हैं।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१५६९. विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे।
यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहेऽध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! आप जीवन्मुक्त और साधारण उपासक—दोनों को उन-उनके कर्मों के अनुरूप विविध प्रकार से पुरस्कृत करते हो, परन्तु मुमुक्षुजनों को कष्ट-अग्नि में सन्तप्त करके—उन्हें तपाकर उज्ज्वल बनाते हो और उन्हें मोक्ष प्रदान करते हो। आप द्युलोक और भूलोक दोनों में समाये हुए हैं। जब हम आपकी प्राप्ति के साधन धारणा-ध्यान क्रिया को और कल्याणकारी मति—अर्चना को अपनाते हैं—आपका ध्यान और आपकी उपासना करते हैं तब आप हमारे लिए कल्याणकारी बन जाते हैं और हमारे मन, बुद्धि तथा आत्मा तीनों के लिए कवच बन जाते हैं।

सूक्त–१४

ऋषिः–प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वान्यतरो वा।
देवता–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५७०. उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! जिस प्रकार बहिनें अपने भाइयों का गुणगान करती हुई उनके पास जाती हैं, उसी प्रकार अपने आत्मा को आपके प्रति अर्पण करनेवाले उपासक और ज्ञानीजनों के स्तुति-प्रार्थना-वचन आपको प्राप्त होते हैं अर्थात् उपासक और ज्ञानी प्रतिदिन आपकी ही स्तुति प्रार्थना करते हैं और सर्वव्यापक आपमें स्थित हो जाते हैं—आपकी अमृतमयी गोद में बैठ जाते हैं।

ऋषिः–पूर्ववत्। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५७१. यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम्। आपश्चिन्नि दधा पदम्।।

जिस ज्ञानी उपासक का तीन धारणाओं—स्तुति-प्रार्थना-उपासनावाला मस्तिष्क वासनाओं से आक्रान्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नहीं होता, काम-क्रोध-लोभ जिसके ज्ञान को आवृत नहीं कर लेते, जिसका हृदयान्तरिक्ष वासनाओं से **अबद्ध**=शून्य रहता है, ऐसा आप्त उपासक—उच्चकोटि का साधक परमेश्वर के अमृतधाम—मोक्ष में स्थान पा लेता है—मुक्त हो जाता है।

ऋषिः–पूर्ववत्। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५७२. पदं देवस्य मीढुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः। भद्रा सूर्यइवोपदृक्।।

सुख-शान्ति की वर्षा करनेवाले, सर्वमनोरथों के पूरक, आनन्दप्रद परमेश्वर का मोक्षपद अपराभूत=पराजित न होनेवाली रक्षाओं से सुरक्षित है। ईश्वराज्ञा का पालन करनेवाले ही वहाँ पहुँच पाते है। जैसे प्रातःकालीन सूर्य का अल्पदर्शन भी शरीर में नीरोगता उत्पन्न करता है, उसी प्रकार परमेश्वर की अल्प-सी कृपा-दृष्टि भी—स्वल्प दर्शनानुभूति भी जीव के लिए अत्यन्त कल्याणकारी और सुखदायी होती है।

सप्तमः प्रपाठकः, तृतीयोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१५७३. अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! साधारण जन, सत्य आचार-विचारवाले मेधावी जन, रौद्र कर्म करनेवाले क्षत्रिय जन—ये सब आपके आनन्दरस का पान करने के लिए सामगानों द्वारा सनातन आपका एकतान होकर—समवेत स्वर में स्तुतिगान करते हैं और दोनों ओर—प्राकृतिक दृश्यों में बाहर तथा शरीर की रचना में अन्दर आपके गुणों का वर्णन करते हैं।

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१५७४. अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा।।

उपासनारूपी ऐश्वर्यवाले इस उपासक के हृदय-मन्दिर में जब आनन्द व्यापक बन जाता है—जब इसके हृदय में आनन्दरस की तरंगें ठाठें मारने लगती हें, यह आनन्द की हिलोरों में मस्त हो जाता है, तब परमैश्वर्यशाली परमेश्वर इस उपासक के सुखवर्षी बल को बढ़ा देता है। ईश्वर के इस माहात्म्य की उपासकजन आज भी परम्परागत वैसे ही सर्वोत्तम प्रकार से स्तुति करते हैं, जैसे पूर्व समय के उपासक करते थे।

सूक्त—२

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५७५. प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बल और ज्ञानशक्ति से सम्पन्न हे परमेश्वर! वैदिक सूक्तों के वेत्ता, नीतिकुशल और स्तोता लोग दोनों रूपोंवाले आपकी प्रकृष्ट स्तुतियाँ किया करते हैं। अपनी कामनापूर्ति—सर्वश्रेष्ठ कामना मोक्षपद की प्राप्ति के लिए मैं भी आपका वरण करता हूँ—अपने जीवन में आपको अपनाता हूँ।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५७६. इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा।।

बल और ज्ञानशक्ति से सम्पन्न हे परमेश्वर! आप उपक्षयकारी=विनाशकारी काम-क्रोध आदि का पालन करनेवाली—उभारनेवाली असंख्य मनोवृत्तियों को एक ही कर्म—संकल्प से, साक्षात् दर्शन से एक ही साथ कँपा देते हो, नष्ट कर डालते हो।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५७७. इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या ऽऽ३ अनु।।

बल और ज्ञानशक्ति से सम्पन्न हे परमेश्वर! ध्यानी—उपासक धारणा-ध्यान आदि का अभ्यास करनेवाले उपासक स्वार्थ की भावना से ऊपर उठे हुए कर्मों के द्वारा आपके दर्शन की कामना से वैदिक मार्ग का अनुसरण करते हुए आपकी ओर आ रहे हैं—आपकी प्राप्ति का प्रयत्न कर रहे हैं।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५७८. इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च। युवोरप्तूर्यं हितम्।।

बल और ज्ञानशक्ति से सम्पन्न हे परमेश्वर! आपके महान् दान सदा आपके साथ ही रहते हैं अर्थात् आप अविलम्ब कर्मफल प्रदाता हैं। आपने इच्छा की और जीव को कर्मों का फल=दान मिला। हे प्रभो! जीव को संसार-सागर से तारकर उसे मोक्ष प्रदान करना भी आपकी इन दोनों शक्तियों में निहित है।

सूक्त—३

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१५७९. शग्ध्यू३ षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि।।

हे नाना प्रकार की शक्तियों के स्वामिन्! हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप अपने ज्ञान और कर्म द्वारा होनेवाले रक्षणों से हमारी रक्षा करने में सर्वथा समर्थ है। हे शत्रुओं का विदारण करनेवाले प्रभो! हम धन नहीं चाहते—धन के पीछे नहीं भागते। हम तो यशस्वी और निवास के लिए आवश्यक सम्पत्तियाँ और साधन प्रदान करनेवाले आपकी आज्ञा के अनुसार चलते हैं।

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१५८०. पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः।
न किर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमेश्वर! आप मुझमें कर्मेन्द्रियों को स्थापित करनेवाले हैं और आप ही ज्ञानेन्द्रियों को अनगिनत ज्ञानरश्मियों से पूर्ण करनेवाले हैं। हे ज्ञान-ज्योति से दीप्त परमात्मन्! आप ज्ञानमय स्रोत हैं—वेदरूपी ज्ञान की रश्मियाँ निरन्तर आप से हीं प्रवाहित हो रही हैं। हे आनन्दप्रद प्रभो! आप आनन्दामृत के निर्झर हो। आपके दिये हुए दान को कोई नष्ट नहीं कर सकता—मुझसे छीन नहीं सकता, अतः मैं जो-जो दान आपसे माँगूँ, वे सब मुझे प्रदान कीजिए।

सूक्त—४

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१५८१. त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! मेरे हृदय और जीवन में विचरने के लिए आप ही आइए—हृदय में प्रकट हो जाइए। आप हमें लौकिक और आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्राप्त कराइए जिससे हम भी इन सम्पत्तियों का दान कर सकें। हे परमपूजित धनवाले प्रभो! आप हमपर धनों की भरपूर वर्षा कीजिए जिससे हमारी ज्ञानेन्द्रियों का यज्ञ ठीक प्रकार से चल सके और हमारी कर्मेन्द्रियों का यज्ञ भी सुचारु रूप से सम्पन्न हो सके।

ऋषिः–भर्गः प्रागाथः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१५८२. त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे।
आ पुरन्दरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक के लिए हजारों और लाखों—असंख्य पदार्थ प्रदान करते हैं। आप उसे गौओं और घोड़ों के समूह प्रदान करते हैं और उसकी सब इष्ट-कामनाओं की पूर्ति करते हैं। अपने दर्शन-अमृत से शरीररूपी पुरियों को विदीर्ण—छिन्न-भिन्न करनेवाले परमैश्वर्यशाली आपका गुणगान करते हुए उत्कृष्ट सत्य वचन बोलनेवाले हम उपासक अपनी रक्षा और आत्म-तृप्ति के लिए आपको अंगीकार करते हैं—अपनाते हैं।

सूक्त—५

ऋषिः–सोभरिः काण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१५८३. यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये।।

वह दानशील परमेश्वर निवास के लिए आवश्यक सब प्रकार के धन प्रदान करता है और इस प्रकार मनुष्यों को हर्षित, आनन्दित और तृप्त करता है। इस प्रकाशस्वरूप परमात्मा के लिए हम सर्वश्रेष्ठ स्तुति-वचन भेंट करें, ठीक उसी प्रकार जैसे श्रेष्ठ अतिथियों के लिए मधु=मधुर जल आदि और श्रेष्ठ भोजन-पात्र भेंट किये जाते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–सोभरिः काण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१५८४. अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः।
उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम्।।

हे दुःखों के विनाशक और दर्शनीय प्रभो! देवाधिदेव आपको चाहनेवाले और दिव्य गुणों को अपने से जोड़ने की कामनावाले, सर्वोत्तम दान देनेवाले—आत्मसमर्पण करनेवाले हम उपासक वेदवाणियों के द्वारा, रथ को खेंचने में समर्थ अश्व के समान, संसार-वाहक आपका अन्वेषण करते हैं और आपको प्राप्त करते हैं। हे सब प्रजाओं का पालन करनेवाले प्रभो! आप हमारे पुत्रों और पौत्रों दोनों को ज्ञानियों, महापुरुषों की आराधनारूपी सम्पत्ति भरपूर मात्रा में दीजिए अर्थात् हमारे पुत्र और पौत्र सभी ईश्वर-उपासक बनें—घर में कोई भी नास्तिक उत्पन्न न हो।

सूक्त—६

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–वरुणः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५८५. इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके।।

उपासकों के द्वारा वरण करने योग्य और सबको वरनेवाले हे परमेश्वर! मेरी इस पुकार व प्रार्थना को आप सुनिए और आज ही—तुरन्त—इसी जीवन में मुझे सुखी कर दीजिए। अपनी रक्षा चाहनेवाला मैं आपकी स्तुति करता हूँ, आपको चाहता हूँ, आपकी प्रीप्ति की कामना करता हूँ।

सूक्त—७

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५८६. कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर।।

हे सुखवर्षक और कामनापूरक परमात्मन्! आप किस रक्षा-विधि से प्राप्त होकर हमें सब प्रकार से आनन्दित व हर्षित कर रहे हैं। आप अपनी अनिर्वचनीय और सुखमयी रक्षा-विधि से सब प्राणियों को सुखी कर रहे हैं। [आपका दण्ड भी जीवों के कल्याण व सुख के लिए ही है]। हे प्रभो! आप अपने उसी आनन्दमय रक्षण से अपने स्तोताओं के लिए जीवन-यात्रा के लिए आवश्यक इष्ट वस्तुएँ प्रदान करें और उनके आत्माओं में दर्शनामृत भी आभरित करें—आत्माओं को दर्शनामृत से तृप्त करें।

सूक्त—८

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१५८७. इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये।।

दिव्य गुणों के विस्तार के लिए हम ज्ञानरूप परमैश्वर्यवाले परमात्मा को ही पुकारते हैं, उपासनायज्ञ के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आरम्भ होने पर हम आसुर भावों के संहारक परमेश्वर को पुकारते हैं, विजय की कामनावाले हम देवासुर-संग्राम में शक्ति के पुञ्ज परमेश्वर का आह्वान करते हैं और धन की प्राप्ति के लिए भी हम परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का ही स्मरण करते हैं।

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१५८८. इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत्।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे स्वानास इन्दवः।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ने अपनी महान् महिमा से द्युलोक और भूलोक में अपने अनन्त बल का विस्तार किया हुआ है। परमेश्वर ने ही द्युलोक में सूर्य को चमकाया है। निश्चय से उस महान् नियामक परमेश्वर में ही सारे लोक-लोकान्तर नियमित और व्यवस्थित हुए-हुए गति कर रहे हैं। जप-तप आदि के अनुष्ठान से ऐश्वर्य और तेज-सम्पन्न उपासक भी उसी परमैश्वर्यशाली परमेश्वर में रमण करते हैं, आनन्दित होते हैं।

सूक्त–९

ऋषिः–विश्वकर्मा भौवनः। **देवता**–विश्वकर्मा। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१५८९. विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व तन्वां३स्वा हि ते।
मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु।।

हे अखिल विश्व का निर्माण करनेवाले परमात्मन्! मुझ उपासक के आत्मसमर्पण से प्रसन्न–कृपालु हुए आप मेरे आत्मा को अपने साथ संगत कीजिए, क्योंकि यह आत्मा तेरा अपना ही शरीर है(**'आत्मनि तिष्ठन् यस्य आत्मा शरीरम्।'** शत० १४।७।७।३)। जो आपसे विमुख, विषय-लोलुप हैं, वे इस संसार में मोह को प्राप्त होते हैं, उन्हें सुख-शान्ति का अनुभव नहीं होता। प्रभो! हम तो आपके अभिमुख हैं, आपके आज्ञापालक हैं, अतः परमैश्वर्यों से सम्पन्न आप हमारे अभ्युदय और निःश्रेयस-लाभ के ही प्रेरक बनें।

सूक्त–१०

ऋषिः–अनानतः पारुच्छेपिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अत्यष्टिः। **स्वरः**–गान्धारः।

१५९०. अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति
सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः। धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः।
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः।।

निरन्तर लक्ष्य की ओर बढ़नेवाला योग-साधक यम-नियमों के पालन से कान्तिसम्पन्न बन जाता है। जैसे सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार को नष्ट कर डालता है, उसी प्रकार इस कान्ति से जो सबकी दुर्भावनाओं का हरण करनेवाली है और जीवनों को पवित्र करनेवाली है तथा मेल व प्रेम की वृत्तियों से यह सब द्वेषों को तर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जाता है—नष्ट कर डालता है। अब इसे पीठ-पीछे औरों की निन्दा की बजाए धारणात्मक बातें ही रुचिकर लगती हैं। यह औरों की निन्दा न करता हुआ अपने जीवन का शोधन करता हुआ उसे पवित्र बनाता है। यह कभी क्रोध नहीं करता और दूसरों के दुःखों को दूर करने में सदा प्रयत्नशील रहता है। यह मधुर भाषण करता हुआ, मेल-मिलाप का सन्देश देता हुआ जन-जन के पास पहुँचता है।

ऋषिः–अनानतः पारुच्छेपिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अत्यष्टिः। **स्वरः**–गान्धारः।

१५९१. प्राचीमनु प्रदिशं याति चेकितत्सं
रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः।
अग्मन्नुक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन्
वज्रश्च यद् भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता।।

अपने और परमेश्वर के स्वरूप को जानता हुआ उपासक उत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त होता है। इसका शरीररूपी रथ प्रकाशमय होता हुआ आगे और आगे बढ़ता है। इसका यह दर्शनीय स्वस्थ शरीर उस देवों के देव परमेश्वर को प्राप्त करानेवाला होता है। उपासक हार्दिक स्तुति-वचनों से परमेश्वर की स्तुति करते हैं और परमेश्वर उन्हें काम-क्रोध आदि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए उत्साहित करते हैं। इस प्रकार जब ओजस्वी परमात्मा और उत्साही जीवात्मा दोनों मिल जाते हैं, [अर्थात् जब परमात्मा का वरदहस्त जीवात्मा की रक्षा करता है।] तब ये उपासक शत्रुओं से नष्ट नहीं किये जा सकते, काम-क्रोध आदि के साथ होनेवाले संघर्षों में ये न दबाये जा सकते हैं, न गिराये जा सकते हैं, न नष्ट किये जा सकते हैं—ये तो अजेय बन जाते हैं।

ऋषिः–अनानतः पारुच्छेपिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अत्यष्टिः। **स्वरः**–गान्धारः।

१५९२. त्वं ह त्यत्पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि
स्व आ दम ऋतस्य धीतिभिर्दमे।
परावतो न साम तद्यत्रा रणन्ति धीतयः।
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे।।

हे शान्तस्वरूप उपासक! तू निश्चय ही स्तोताओं=उपासकों, भक्तों के सर्वप्रसिद्ध धन मोक्ष को या सत्यस्वरूप परमेश्वर को पा लेता है। तू अपने शम-दम आदि सद्गुणों से विभूषित दान्त अन्तःकरण में वैदिक प्रार्थनारूप कर्म द्वारा उस परमेश्वर की पूजा=उपासना करता है। अपने दान्त=शान्त अन्तःकरण में प्रभु-प्रार्थना करता हुआ उपासक सत्य अनुष्ठानों के द्वारा अपने जीवन का पूर्णरूपेण शोधन कर लेता है। जिस हृदय में ध्यानशील उपासक प्रभु के गुणों का उच्चारण करते हैं—प्रभु का स्तवन करते हैं, वहाँ से शान्ति कभी दूर नहीं होती, वहाँ तो सदा सुख-शान्ति और आनन्द का साम्राज्य बना रहता है। उपासक की शान्त अन्तःकरण से की गई धारणा-ध्यान-समाधियों अथवा स्तुति, प्रार्थना, उपासनाओं द्वारा साक्षात् हुआ परमेश्वर उपासक को तेजस्वी बनाता है और अन्त में मोक्ष प्रदान करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—११

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–पूषा। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५९३. उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत। नृवत्कृणुह्यूतये।।

हे सबका पोषण करनेवाले परमात्मन्! आप हमारी रक्षा, तृप्ति और शान्ति के लिए हमारी **बुद्धि** को जीवन्मुक्त महापुरुषों जैसी बना दीजिए जिससे हमारी इन्द्रियों, मनों और शरीरों में शक्ति प्राप्त हो। **हे प्रभो!** आप इन्हें बल सम्पन्न और पौरुष युक्त बना दें जिससे हम मूर्खों को विद्यादान, भूखों को अन्नदान और निर्बलों को बल प्रदान कर सकें।

सूक्त—१२

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–मरुतः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५९४. शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः। विदा कामस्य वेनतः।।

(क) हे सत्य बलवाले, उन्नति-पथ पर ले-जानेवाले और वासनाओं को नष्ट करनेवाले परमात्मन्! आप स्तुति करनेवाले, आपसे स्नेह करनेवाले आपके प्रति अनुरक्त एवं श्रद्धालु तथा आपके दर्शन की कामनावाले उपासक की कामना को पूर्ण कीजिए—उसे स्वदर्शन एवं मोक्षपद प्राप्त कराइए।

(ख) सत्य बलवाले, सन्मार्ग में ले-जानेवाले हे उपासना-यज्ञ के सञ्चालको! मैं काम-क्रोध आदि शत्रुओं से पीड़ित हूँ, सहायकों से रहित हूँ और कामनावाला—माँगनेवाला हूँ। मुझ उपासक की इच्छा को पूर्ण करो।

सूक्त—१३

ऋषिः–ऋजिश्वाः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५९५. उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृडीका भवन्तु नः।।

हमारी सन्तानें, हमारे पुत्र और पुत्रियाँ अविनाशी परमेश्वर की वेदवाणियों को ध्यान और श्रद्धापूर्वक सुनें, जिससे वे हमारे लिए उत्तम सुख देनेवाली हो जाएँ।

सूक्त—१४

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–द्यावापृथिव्यौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५९६. प्र वां महि द्यवि अभ्युपस्तुतिं भरामहे। शुची उप प्रशस्तये।।

प्रकाशमान और पवित्र द्युलोक और भूलोक के अधिष्ठाता, हमारे पिता और माता हे परमेश्वर! हम आपको लक्ष्य करके—आपकी प्राप्ति के लिए आपकी प्रकर्षरूप से—खूब ही स्तुति करते हैं, आपकी महिमा के गीत गाते हैं और श्रेयः=आत्म-कल्याण की प्राप्ति के लिए आपके समीप जाते हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–द्यावापृथिव्यौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५९७. पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः। ऊह्याथे सनादृतम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे अखिल ब्रह्माण्ड के प्रकाशक और धारक परमात्मन्! आप अपने स्वरूप से स्वरूपदर्शन से उपासकों को पवित्र करते हैं और साथ ही अपने बल से द्यावापृथिवी में सर्वत्र शोभायमान हैं। आप शाश्वत काल से–सदा से वेदज्ञान के धारक ब्राह्मणों और उपासकों को मोक्ष में पहुँचाते हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–द्यावापृथिव्यौ। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५९८. मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परि यज्ञं नि षेदथुः।।

अखिल ब्रह्माण्ड के प्रकाशक और धारक हे परमात्मन्! आप स्नेही उपासक का इष्ट साधते हैं उसकी इष्ट-कामनाओं को पूर्ण करते हैं, उसके जीवन में यज्ञ की भावना भरते हैं और उसे संसार-सागर से पार उतारते हैं। आप देवपूजा और संगतीकरण करनेवाले तथा दानशील उपासक को प्राप्त होते हैं।

सूक्त–१५

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१५९९. अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे।।

हे परमात्मन्! जैसे कबूतर दाने के लोभ में दानेवाले जाल में फँस जाता है उसी प्रकार नाना प्रकार के भोगों की प्राप्ति के लिए मैं भी बारम्बार संसार-जाल में फँस जाता हूँ–जन्म-मरण के चक्र में आ जाता हूँ। प्रभो! मुझ बद्ध जीवात्मा के आर्तनाद को सुनो और मुझे जन्म-मरण के चक्र से छुड़ाकर मोक्षधाम में पहुँचाओ।

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६००. स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते। विभूतिरस्तु सूनृता।।

हे सफलताओं और सिद्धियों के स्वामिन्! काम-क्रोध आदि शत्रुओं को कम्पित करके दूर करनेवाले परमात्मन्! वेदवाणियों का उपदेश करनेवाले प्रभो! जिस आपका हम स्तुति-गान करते हैं, उस आपकी विभूति=ऐश्वर्य हमारे लिए कल्याणकारक हो।

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६०१. ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो। समन्येषु ब्रवावहै।।

हे अनन्त प्रज्ञान और कर्मोंवाले प्रभो! काम-क्रोध आदि शत्रुओं के साथ चल रहे इस देवासुर-संग्राम में हमारी रक्षा के लिए आप हमारे सर्वोच्च अधिष्ठाता बनिए–अपनी छत्रछाया का वरदहस्त सदा हमारे ऊपर रखिए। अन्य अवसरों पर भी, अन्य संग्रामों, संघर्षों में भी आपकी कृपादृष्टि हमपर बनी रहे, यह हम आपसे सम्यक प्रार्थना करते हैं।

सूक्त–१६

ऋषिः–हर्यतः प्रागाथः। **देवता**–अग्निर्हवींषि वा। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६०२. गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

हे परमेश्वर! आप मेरे हृदय-मन्दिर में उन वेदवाणियों का उपदेश कीजिए जो महान् अर्थगौरववाली हैं और यज्ञों का—श्रेष्ठतम कर्मों का उपदेश करनेवाली हैं तथा दोनों कानों के लिए हितकर एवं रमणीय हैं।

ऋषिः–हर्यतः प्रागाथः। **देवता**–अग्निर्हवींषि वा। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६०३. अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवटस्य विसर्जने।।

अपने व्रतों में पर्वत के समान दृढ़ रहनेवाले उपासक संसाररूप कूप के विसर्जन—त्याग (मृत्यु) के पश्चात् स्वभावतः सबका पोषण करनेवाले परमात्मा में रहते हुए उसके आनन्द-अमृत को प्राप्त कर कृतार्थ हो जाते हैं।

ऋषिः–हर्यतः प्रागाथः। **देवता**–अग्निर्हवींषि वा। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६०४. सिञ्चन्ति नमसावटमुच्चाचक्रं परिज्मानम्। नीचीनबारमक्षितम्।।

उपासकजन अविनाशी, रक्षा करनेवाले (आश्रय लेने योग्य), अद्भुत कर्म करनेवाले और सबसे अधिक तृप्तिकर्ता, सर्वव्यापक और सर्वोत्पादक, पतितोद्धारक और जीवों की ओर द्वारवाले—प्रवृत्त होनेवाले आनन्द स्रोत परमात्मा को नम्र स्तुतियों से, नम्रता से, सौम्यता से अपने आत्मा में सींचते हैं।

सूक्त—१७

ऋषिः–देवातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१६०५. मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव।
महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! महाप्रतापी, सुखवर्षक आपकी मित्रता में हम भयभीत न हों, निर्भय बनें, आपकी मित्रता में हम थकें नहीं—अनथक कार्य करनेवाले हों—हमें शारीरिक और मानसिक श्रान्ति न हो, हम कभी खेद को प्राप्त न हों, कभी खिन्न न हों। आपके कर्म महान् और सर्वथा प्रशंसनीय—स्तुत्य हैं, क्योंकि संसार में मनुष्यों पर दृष्टि डालते हैं तो देखते हैं कि उनमें यदुम्=विरक्त उपासक सद्गति पाता है—संसार-बन्धन से छूट जाता है और तुर्वशम्=कामी संसार-बन्धन में फँस जाता है।

ऋषिः–देवातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१६०६. सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति।
मध्वा सम्पृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब।।

सुखवर्षक और ऐश्वर्यशाली परमात्मा अपनी वाम जंघा से सारे संसार को आच्छादित करता है अर्थात् परमात्मा की व्यापकता की तुलना में यह संसार अत्यन्त तुच्छ है—पादमात्र है और वह भी वाम=बायाँ पाद। इसका [परमात्मा का] खण्डन करनेवाला—इसकी सत्ता से इनकार करनेवाला नास्तिक भी इसकी हिंसा नहीं कर सकता। हाँ, अपनी हिंसा वह अवश्य करता है—बार-बार जन्म लेकर काल का ग्रास बनता है। हे प्रभो! सारवान् ज्ञान से युक्त—ज्ञानपूर्ण स्तुति-वाणियाँ आपको समर्पित की जा रही हैं। आप द्रवित—कृपालु होकर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

हमारे हृदय-मन्दिर में शीघ्र आइए, हमारी प्रार्थनाओं को सुनिए और उन्हें स्वीकार कीजिए।

सूक्त—१८

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
१६०७. इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत।।

सारे संसार में बसनेवाले और सबको अपने अन्दर बसानेवाले हे महाधनी परमेश्वर! ये स्तुतियाँ आपके प्रति समर्पित हैं, आप इन्हें स्वीकार करो और हम उपासकों की सर्वविध उन्नति करो। अग्नि के समान तेजस्वी, शरीर, मन और आत्मा से शुद्ध, पवित्र और निर्मल; मेधावी उपासक भी अपनी वृद्धि और उन्नति के लिए निरन्तर आप ही की स्तुति करते हैं।

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१६०८. अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये।।

वह परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सहस्रम्=सब ऋषि-मुनियों द्वारा अपना बल बनाया गया है अर्थात् वे परमात्मा के बल से ही अपने को बलवान् मानते हैं। वह परमेश्वर समुद्र और आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त हैं। इस प्रभु की वह महिमा सत्य ही है। विभिन्न यज्ञों के अवसरों पर ब्राह्मणों द्वारा सञ्चालित राज्य में अथवा विद्वत्समूहों में मेधावियों द्वारा उसके बल की स्तुति की जाती है।

सूक्त—१९

ऋषिः–श्रुष्टिगुः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
१६०९. यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
तिरश्चिदर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत् सो अज्यते रयिः।।

(क) सब आर्य=श्रेष्ठ पुरुष जिस परमैश्वर्यशाली परमात्मा के दास हैं—भृत्यवत् उसकी आज्ञा के पालक हैं, वह परमेश्वर वेदनिधि का रक्षक है, वह सबका स्वामी है, सर्वेश्वर है। उसी सर्वेश्वर में—जोकि ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित है, वेदवाणी का स्वामी है, प्रलयकाल में वेद की सम्पत्ति उसी में छिपी रहती है, हे मनुष्य! वह वेदवाणी की सम्पत्ति सृष्टि-आरम्भ में तेरे लिए ही प्रकट की जाती है।

(ख) यह सारा संसार—सारे संसारवासी चाहे वे ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य और क्षत्रिय कोई भी हों—परमात्मा के शासन में रहते हैं। जो उत्तम गुणों से देदीप्यमान, पवित्र आचारवाले सज्जन के साथ प्रतिकूल व्यवहार करता है अथवा उसके प्रति दुर्वचन बोलता है, वह परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देता है। वह परमेश्वर ऐश्वर्यशाली और ऐश्वर्य प्रदाता है, अतः सब उसकी ओर जाते हैं—उसकी उपासना करते हैं, उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-श्रुष्टिगुः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१६१०. तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः।
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे स्वानास इन्दवः।।

अपना पूरण करनेवाले मेधावी उपासक, तीव्रसंवेगी—परमात्मा की प्राप्ति के लिए आकुल और व्याकुल योगी आनन्दरसवाले, तेज=प्रकाश के प्रसारक (प्रभु-दर्शन से हृदय ज्योति से पूर्ण हो जाता है), अर्चनीय—पूजनीय, वेदज्ञानस्वरूप परमेश्वर की अर्चना—उपासना करते हैं, इसलिए कि हममें (उपासकों में) लौकिक और पारलौकिक सब प्रकार की सम्पत्ति का विस्तार हो, सुखवर्षी बल प्राप्त हो और हमारे जीवनों में प्रभु के प्रति उपासना-रस का प्रवाह प्रवाहित होता रहे।

सूक्त—२०

ऋषिः-पर्वतनारदौ। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१६११. गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव। शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय।।

हे परम रसीले परमात्मन्! हे हमारे हृदयाकाश के चाँद! हे सर्वोत्तम बलशालिन्! हृदय-मन्दिर में प्रकट हुए आप हमें विद्यावान् और मननशील बनाइए तथा हमारी वाणी में पवित्र अक्षर रखिए अर्थात् हम सदा सत्य, मधुर और हितकर ही बोलें।

ऋषिः-पर्वतनारदौ। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१६१२. स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः। सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव।।

हे परमरसीले परमात्मन्! हमारे हृदय-आकाश के चाँद! हमारी इन्द्रियों के पालक और रक्षक हे परमात्मन्! हे प्रकाशकों के प्रकाशक! आप अतिशय दीप्ति से सम्पन्न हैं और नर-नारियों के हितकारी हैं। आप हमारे लिए उसी प्रकार रुचिकर—प्रीतिकर हों जैसे मित्र अपने मित्र के लिए प्रीतिकारक होता हैं।

ऋषिः-पर्वतनारदौ। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१६१३. सनेमि त्वमस्मदा अदेवं कं चिदत्रिणम्। साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम्।।

हे परम रसीले परमात्मन्! हमारे हृदय-आकाश के चाँद! आप अनादिकाल से हमारे सखा हैं, अतः आप शीघ्र ही हमसे नास्तिकता की भावना को, नास्तिक जन को और जो कोई बहुत खानेवाले पेटू हैं—भोग-विलास में रत रहना ही जिसका जीवनोद्देश्य है—ऐसे जन को पराभूत कर दीजिए—उसे परे हटा दीजिए। विघ्न-बाधाओं को और हिंसकों को हमसे दूर भगा दीजिए और संशय-वृत्तिवाले, अन्दर कुछ और बाहर कुछ—इस दोगली वृत्ति को और छली-कपटी मनुष्य को भी हमसे दूर कर दीजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–२१

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१६१४. अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते।।

ज्योतिस्वरूप परमात्मा में निरत भक्तगण संसार का निर्माण करनेवाले परमात्मा की ओर जाते हैं, उसका साक्षात्कार करते हैं और अपने जीवनों को कान्ति से अलंकृत करते हैं—कान्तियुक्त बनाते हैं। ये उपासक अपने मधुर उपासनारस से परमेश्वर को सींचते हैं और स्वयं उसके आनन्दरस का आस्वाद लेते हैं, उसका पान करते हैं। हृदय-समुद्र की भक्तिमयी तरंगों में सहसा प्रकट हो जानेवाले, सर्वमनोरथपूरक, आनन्दरस सींचनेवाले, सर्वद्रष्टा परमेश्वर को भक्तजन आनन्दरस के प्रवाहों में ग्रहण करते हैं—प्राप्त कर लेते हैं।

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१६१५. विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति।
अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचमत्यो न क्रीडन्नसरद् वृषा हरिः।।

हे उपासको! महामेधावी, सर्वज्ञ, आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और जीवन को पवित्र बनानेवाले परमात्मा के लिए सामगान किया करो। वह परमेश्वर पूजनीय वेदवाणी के द्वारा—वेदोपदेश के द्वारा उपासकों के अज्ञान-अन्धकार को दूर करता है। जैसे साँप अपनी जीर्ण-शीर्ण काँचली को छोड़कर निकल जाता है, वैसे ही परमेश्वर उपासक की पुरानी वासनाओं को निकाल देता है—समाप्त कर देता है। सुखवर्षक, कामनापूरक, त्रिविध तापों का हरण करनेवाला परमेश्वर घोड़े के समान क्रीड़ा करता हुआ अर्थात् स्वभावतः, बिना परिश्रम के उपासकों को रमण कराता हुआ—आनन्दित करता हुआ उन्हें जीवन में आगे बढ़ा देता है और उनके हृदय में ही प्राप्त हो जाता है।

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१६१६. अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः।
हरिर्घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः।।

(क) हे उपासको! परमात्मा की स्तुति की जाती है—उसके गुणों का वर्णन किया जाता है—वह परमात्मा सर्वश्रेष्ठ, सारे ब्रह्माण्ड का नियामक और व्यवस्थापक, सबके द्वारा प्राप्त करने योग्य, चन्द्र और सूर्य के उदय-अस्त द्वारा दिनों का निर्माण करनेवाला, सारे लोकों में व्याप्त, क्लेशहारी और जगत्संहारी है। वह तेज का प्रसारक, सुदर्शनीय, आनन्द का सागर तथा समुद्र के समान गम्भीर और विस्तीर्ण, ज्योतिस्वरूप तथा सबका आश्रय है—ऐसा परमेश्वर उपासकों की उन्नति और वृद्धि करता है। वही परमेश्वर सांसारिक और आध्यात्मिक सम्पत्तियों को प्रवाहित कर रहा है—उपासकों को दे रहा है।

(ख) वह उपासक उस प्रभु को अवश्य प्राप्त कर लेता है, जो १. सदा आगे-ही-आगे बढ़नेवाला, जीवन में उन्नति करनेवाला है, २. जो नियमित और व्यवस्थित जीवनवाला है, ३. सदा कर्मों में व्याप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रहनेवाला—कर्मशील है, ४. अपने दैनिक कार्यों को व्यवस्थित ढंग से करनेवाला है, ५. जो लोकहित के लिए समर्पित है, ६. जो औरों के दुःखों का हरण करनेवाला है, ७. जो ज्ञान-ज्योति का सर्वत्र विस्तार करनेवाला है, ८. जो सौम्य एवं प्रियदर्शन है, ९. जो ज्ञान का समुद्र है, १०. जो ज्योतिर्मय रथवाला है—प्रकाश का अनुगामी है और ११. सबके लिए आश्रयरूप है— शरण में जाने योग्य है। ऐसा उपासक अभ्युदय और निःश्रेयसरूप सम्पत्ति के लिए गतिशील होता है।

।। यहाँ सातवाँ प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथाष्टमः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६१७. विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः। चनो धाः सहसो यहो॥

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! अग्नितुल्य सभी उपासकों द्वारा उपासित हुए आप हमारे इस जीवन-यज्ञ को सफल कीजिए और हमारे प्रार्थना-वचनों को सुनिए। योगाभ्यास द्वारा प्राप्त होनेवाले हे प्रभो! आप हमें अपने आनन्दरस का पान कराइए।

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६१८. यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः॥

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! यद्यपि हम अत्यन्त श्रद्धा-भावना से अपने धन आदि के द्वारा प्रत्येक विद्वान् की पूजा करते हैं—उसका आदर-सत्कार करते हैं, परन्तु आत्मसमर्पण तो आपके प्रति ही किया जाता है, हृदय तो हम आपको ही समर्पित करते हैं।

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६१९. प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम्॥

हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! सब प्रजाओं के पालक, भक्तों को सब-कुछ देनेवाले, स्वयं आनन्दित और सबको हर्षित करनेवाले, सर्वश्रेष्ठ, सबके द्वारा वरणीय और भक्तों को वरण करनेवाले आप हमारे प्रिय हों—हमारे प्रीतिपात्र हो जाएँ और हम भी शोभन—सदाचारसम्पन्न, अग्नि के समान तेजस्वी उपासकोंसहित आपके प्रिय हो जाएँ।

सूक्त—२

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६२०. इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥

हे मनुष्यो! गुणों में, योग्यता में, अधिकार में, शासन में—सब दृष्टिकोणों से सब पदार्थों से और सब प्राणियों से सर्वोपरि विद्यमान परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का हम बार-बार हृदय-मन्दिर में स्मरण करते हैं। हमारे लिए और तुम्हारे लिए वह चेतनस्वरूप परमेश्वर ही एकमात्र सेवनीय और पूज्य इष्टदेव है—परमेश्वर को छोड़कर हम और किसी की उपासना न करें।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६२१. स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि। अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सुखवर्षक और कामनापूरक, सत्य ज्ञान के देनेवाले परमेश्वर! किसी के द्वारा भी न रोके जा सकनेवाले आप आपके आज्ञापालक और अपने पुरुषार्थ में वर्तमान हम लोगों के लिए आनन्द प्रदान करनेवाले ज्ञानरूपी मोक्ष-द्वार को खोल दो।

ऋषिः–मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६२२. वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुतः।।

जैसे साँड गौओं के समूह को प्राप्त होता है, वैसे ही शक्तिशाली और कामनाओं का पूरक, सत्य स्वभाव और निश्चय से याचना किया हुआ, सारे संसार का निर्माता और शासक, ऐश्वर्यवान् परमेश्वर अपने ओज के साथ श्रमशील मनुष्यों को प्राप्त होता है।

सूक्त–३

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१६२३. त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः।।

सबके हृदय में बसनेवाले और सबको निवास के लिए आवश्यक धन देनेवाले हे प्रभो! हे विलक्षण शक्तिसम्पन्न परमात्मन्! आप हमारी रक्षा के लिए जीवन में सिद्धि और सफलता प्रदान करनेवाला तत्त्वज्ञान और सदाचाररूपी धन हमें प्रदान कीजिए। हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आप ज्ञानरूप सम्पत्ति के स्वामी हैं, अतः हमारी सन्तानों के लिए भी गम्भीर ज्ञान प्राप्त कराइए।

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१६२४. पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः।
अग्ने हेडांसि दैव्या युयोधि नोऽदेवानि ह्वरांसि च।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप अपनी न दबायी जा सकनेवाली और अटल रक्षाओं के द्वारा हमारे पुत्रों और पौत्रों की पालना कीजिए। आप वायु, सूर्य आदि द्वारा होनेवाले दैवी प्रकोपों–आधिदैविक कोपों, दुःखों को हमसे दूर रखिए और अदेव कोटि के मनुष्यों में होनेवाले आधिभौतिक और आध्यात्मिक कोपों, दुःखों को तथा छल-कपट के व्यवहारों को भी हमसे अलग कर दीजिए।

सूक्त–४

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–विष्णुः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१६२५. किमित्ते विष्णो परिचक्षि नाम प्र यद्ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि।
मा वर्पो अस्मदप गूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सर्वव्यापक अतएव निराकार परमात्मन्! आपको किस नाम से सम्बोधित करूँ! अच्छा, आपको उसी नाम से बुलाऊँ जिस नाम से आपने स्वयं को उद्घोषित कर दिया है कि मैं 'शिपिविष्ट' हूँ—प्रकाशमयी किरणों से व्याप्त हूँ, ज्योतिर्मय हूँ, प्रकाश ही प्रकाश हूँ। प्रभो! अब आप अपने इस तेजस्वी रूप को हमसे छिपाइए मत। आपका दर्शन मेरे लिए इसलिए आवश्यक है कि वासनाओं के साथ होनेवाले देवासुर-संग्रामों में आप विलक्षणरूपवाले—उग्ररूपवाले होते हैं। आपका यह उग्ररूप ही हमारे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाशक होता है।

ऋषिः–वसिष्ठः। देवता–विष्णुः। छन्दः–त्रिष्टुप्। स्वरः–धैवतः।

१६२६. प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट हव्यमर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान्।
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके॥

हे ज्योतिर्मय प्रभो! आप हमारे सारे शुभ-अशुभ कर्मों को जानते हैं, अतः आज—इसी जीवन में मैं अपने हृदय को—आत्मा को आपको समर्पित करता हूँ और इन्द्रियों का स्वामी बना हुआ आपका गुणगान करता हूँ। आप लोक-लोकान्तरों में तो हैं ही, उनसे परे भी विद्यमान हैं, अथवा अविद्या-अन्धकार से सर्वथा दूर हैं—'आदित्यवर्ण' हैं। सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक होने से आप हैं विभु और मैं हूँ अणु, अतः निर्बल मैं बलस्वरूप आपकी स्तुति करता हूँ।

ऋषिः–वसिष्ठः। देवता–विष्णुः। छन्दः–त्रिष्टुप्। स्वरः–धैवतः।

१६२७. वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

हे ज्योतिर्मय, सर्वव्यापक परमात्मन्! मैं अपने मुख से आपके लिए स्तुति-वचन समर्पित करता हूँ। आप मेरे उन स्तुतिवचनों को तथा आत्मसमर्पण को स्वीकार करो। मेरी उत्तम स्तुतियोंवाली वाणियाँ आपकी महिमा को बढ़ाएँ—आपके गुणों का सर्वत्र गान करें। मेरी स्तुति आपको प्रसन्न करे—आपको मेरे प्रति कृपालु बनाए। हे प्रभो! आप अपने कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा कीजिए।

सूक्त—५

ऋषिः–वामदेवः। देवता–वायुः। छन्दः–अनुष्टुप्। स्वरः–गान्धारः।

१६२८. वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु।
आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता॥

हे सर्वव्यापक और प्राणाधार परमेश्वर! यम-नियमों की साधना द्वारा पवित्र, सत्यवादी, तीव्र-संवेगी उपासक मैं मोक्षधाम प्राप्त करने के लिए आपके प्रति मधुर उपासना-रस का सर्वश्रेष्ठ उपहार लाया हूँ। इस उपासना-रस का पान करने—इसे स्वीकार करने के लिए आप आइए—मेरे हृदय-मन्दिर में साक्षात् दर्शन दीजिए। हे प्रकाशकों के प्रकाशक! आनन्दप्रद प्रभो! आप अत्यन्त स्पृहणीय हैं—कामना करने योग्य हैं, अतः अपनी सहस्रों शक्तियों के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में आइए—प्रकट हो जाइए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-वामदेवः। देवता-इन्द्रवायू। छन्दः-अनुष्टुप्। स्वरः-गान्धारः।

१६२९. इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः।
युवां हि यन्तीन्दवो निम्नमापो न सध्र्यक्।।

हे सर्वव्यापक और प्राणाधार परमात्मन्! आप और आपका परमैश्वर्यवान् स्वरूप—ये दोनों स्वरूप हमारे हृदयों में निष्पादित किये हुए उपासना-रस को पान करने के सर्वथा योग्य हैं। रसीले उपासना-रस को प्रस्तुत करनेवाली उपासक आत्माएँ आपकी ओर—आपके दोनों रूपों की ओर पहुँचती हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे जलधाराएँ एक-दूसरे से मिलकर चलती हुई निम्न स्थान समुद्र की ओर जाती हैं।

[इस मन्त्र में 'जल का नीचे की ओर बहना'— water keeps its level—इस सिद्धान्त का प्रतिपादन है।]

ऋषिः-वामदेवः। देवता-इन्द्रवायू। छन्दः-अनुष्टुप्। स्वरः-गान्धारः।

१६३०. वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती।
नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये।।

हे सर्वव्यापक और प्राणाधार परमात्मन्! आप और आपका ऐश्वर्यवान् स्वरूप—इन दोनों स्वरूपोंवाले आप अत्यन्त बलवान् हो—काम-क्रोधादि शत्रुओं के बल का शोषण करनेवाले हो और जीवन में गति, तेजस्विता, साहस, उत्साह, पराक्रम आदि देनेवाले बल से भी युक्त हो। हे परमात्मन्! आप हमारे उपासना-रस के पान—स्वीकार करने के लिए तथा हमारी रक्षा के लिए अपनी सहस्रों शक्तियों के साथ सरथं=शीघ्र हमारे हृदय-मन्दिर में आइए—अपने साक्षात् दर्शन दीजिए।

सूक्त—६

ऋषिः-रेभसूनू काश्यपौ। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-अनुष्टुप्। स्वरः-गान्धारः।

१६३१. अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहसे।
यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे।।

रात्रि में [रात्रि के बारह बजे के पश्चात्] और रात्रि के पश्चात् अर्थात् उषाकाल में उपासक द्वारा स्तुत और उपासित हुआ परमात्मा अपने उपासकों को बल, ज्ञान, धन, अन्न आदि प्रदान करता हुआ उनकी ओर आता है और उधर अविद्या-अन्धकार को नष्ट कर देनेवाले उपासक ध्यान-धारणाओं के निरन्तर अभ्यास से राक्षसी वृत्तियों को दूर करने के लिए त्रिविध तापों का हरण करनेवाले परमेश्वर को प्राप्त होते हैं।

ऋषिः-रेभसूनू काश्यपौ। देवता-पवमानः सोमः। छन्दः-अनुष्टुप्। स्वरः-गान्धारः।

१६३२. तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः। यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः।।

हे उपासकजनो! आओ, हम शान्तस्वरूप परमात्मा के उस आनन्दरस को प्राप्त करें जो उपासना-रस जीवात्मा के द्वारा डटकर पान करने योग्य है। हम उस आनन्दरस को प्राप्त करें जिसे स्तोतागण और योगिजन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सिद्ध, पद्म, सुखादि आसनों पर बैठकर पूर्वकाल में पान करते रहे हैं और आज भी पान करते हैं।

ऋषि:-रेभसूनू काश्यपौ। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१६३३. तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत। उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः।।

हे उपासको! उस सर्वप्रसिद्ध, सबको पवित्र करनेवाले परमात्मा की सनातन वेदवाणी द्वारा स्तुति करो। उसकी स्तुति करने से ही, उसे प्रणाम करने से ही सब लोग अपना श्रेयः=कल्याण सिद्ध करते हैं।

सूक्त—७

ऋषि:-शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६३४. अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम्।।

दंश-मशक=मच्छर-निवारक बालवाले और संसार-यात्रा को सुख से सम्पन्न करानेवाले घोड़े के समान अध्यात्म-यज्ञ के वहनकर्ता, विघ्नहर्ता, दोष-निवारक, वरणीय और शरण देनेवाले, हिंसारहित यज्ञों—जप, स्वाध्याय, तप, उपासना आदि यज्ञों के प्रकाशक और सञ्चालक प्रकाशस्वरूप तुझ परमात्मा की मैं नमस्कारों द्वारा वन्दना करता हूँ।

ऋषि:-शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६३५. स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः। मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात्।।

निश्चय ही वह अग्रनायक परमात्मा, जोकि निज शक्ति के द्वारा उत्तम सुख-प्रदाता और कल्याणकर्ता है, जो अत्यन्त विशाल—महतोमहीयान् है, जीवन में गति-प्रदाता है और आनन्दरसवर्षी है, हमारा हो—हमारा प्रीतिपात्र हो और वह हमारा प्रेरक बने।

ऋषि:-शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६३६. स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः। पाहि सदमिद्विश्वायुः।।

हे अग्रनायक परमात्मन्! आप सब प्रजाजनों के स्वामी हैं, अतः आप सबकी पूर्णायु के निमित्त बनें—सबको दीर्घायु प्रदान करें। आप पाप के प्रशंसक—पापी मनुष्य से, चाहे वह हमारे निकट विद्यमान हो अथवा हमसे दूर हो, हमारी सदा ही—निरन्तर पूर्णतया रक्षा कीजिए।

सूक्त—८

ऋषि:-नृमेधः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

१६३७. त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः।
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप अध्यात्म संग्रामों में सब स्पर्धा करनेवाली विरोधी भावनाओं—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

काम-क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष आदि आसुरी वृत्तियों को नष्ट कर दीजिए। आप अशुभ, अकीर्तिकर, अनिष्ट के विनाशक हैं और जीवन में शुभ गुणों के विकासक हैं। आप पापों के विनाशक हैं, अतः हमारी हिंसा करनेवाली वृत्तियों को आप शीघ्र नष्ट कर दीजिए।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१६३८. अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्तः मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि।।

जैसे शीघ्रता से गति करते हुए बालक के पीछे माता-पिता चलते हैं, उसी प्रकार हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपके अद्भुत एवं महान् बल के पीछे-पीछे द्युलोक और भूलोक—सारा ब्रह्माण्ड और जड़-चेतन सभी देव गति करते हैं। आप सभी पाप-वृत्रों के विनाशक हैं, अतः आपके मन्यु=क्रोध के समक्ष उपासक में विद्यमान सब स्पृधाएँ—दुर्भावनाएँ, आसुरी वृत्तियाँ ढीली पड़ जाती हैं और फिर स्वयं मर जाती हैं।

सूक्त—९

ऋषिः- गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६३९. यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि।।

(क) यज्ञ की भावना ने आत्मा का उत्थान किया है—इसकी सर्वविध उन्नति की है, इसलिए जीवात्मा ने यज्ञ के लिए सारी भूमि=पार्थिव सम्पत्ति को उलट दिया है—यज्ञ के लिए सारी थैली ही उलट दी है—सब-कुछ दान मे दे दिया है। इस यज्ञिय-भावना के फलस्वरूप परमात्मा जीवात्मा को मोक्षधाम में पहुँचा देता है।

(ख) यह सृष्टि-यज्ञ परमेश्वर की महिमा को बढ़ा रहा है—परमात्मा की कीर्ति, उसके गुण-कर्म-स्वभावों का दिग्दर्शन करा रहा है, क्योंकि परमात्मा ने भूमि को उसके कक्ष पर—वृत्त-चक्र पर घुमाया है और द्युलोक में सूर्य को मुकुटरूप में स्थापित किया है।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६४०. व्या३न्तरिक्षमतिरन् मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद् वलम्।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ने अन्तरिक्ष को विशेषरूप से फैलाया है और द्युलोक में प्रकाशमान नक्षत्र और तारागणों को फैलाया है। उसी शान्तस्वरूप परमात्मा के आध्यात्मिक भक्तिरस की मस्ती में यह जीवात्मा काम-क्रोधादि शत्रुओं के बलों को छिन्न-भिन्न कर देता है।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६४१. उद् गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम्।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर प्राणायाम के अभ्यासियों के लिए हृदय की गुहा में छिपी हुई ज्ञानरश्मियों को प्रकट करता हुआ बाहर लाता है और उपासक आत्मा के आवरक अज्ञान को, काम-क्रोध आदि आसुर भावनाओं को नीचे धकेल देता है—उन्हें पराजित कर देता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–१०

ऋषिः–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६४२. त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये।।

हे उपासक ! तू उस सर्वप्रसिद्ध परमेश्वर को ही अपनी रक्षा के लिए अपनी ओर झुका—अपने हृदय-मन्दिर में प्रकट कर। वह तुम्हारे काम-क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष आदि सब शत्रुओं का पराभव करनेवाला है और सब वेद-वाणियों में फैला हुआ है अर्थात् सब वेदवाणियाँ उसका वर्णन कर रही हैं।

ऋषिः–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६४३. युध्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम्। नरमवार्यक्रतुम्।।

हे उपासको ! तुम उस प्रभु को अपनी ओर झुकाओ—उसे अपने हृदय-मन्दिर में बिठाओ जो प्रभु पाप और पापियों के नाशक हैं, देवासुर-संग्रामों में काम-क्रोध आदि आसुर शक्तियों के साथ युद्ध करनेवाले हैं, जो सत्यस्वरूप हैं—सर्वश्रेष्ठ हैं, जो सर्वशक्तिमान् हैं—किसी पर आश्रित नहीं हैं, जो उपासना-रस को स्वीकार करनेवाले और सौम्य तथा विनीत उपासकों के रक्षक हैं, जो स्व-गुण-कर्म-स्वभाव से च्युत न होनेवाले अर्थात् अटल, एकरस वर्तमान हैं, वे प्रभु नर हैं—सबको उन्नतिपथ—मोक्ष की ओर ले-जानेवाले हैं और निर्भ्रान्त ज्ञानवाले तथा अपने संकल्पों से न हटाये जानेवाले हैं।

ऋषिः–श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६४४. शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वाँ ऋचीषम। अवा नः पार्ये धने।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! ऋचाओं के साक्षात् ज्ञाता और उपदेष्टा प्रभो ! आप पूर्ण विद्वान् हैं—ज्ञानी हैं, अतः आप हमें सांसारिक और ज्ञान-धन प्रदान कीजिए। साथ ही हमें संसार-सागर से पार उतारनेवाले मोक्षधाम प्राप्त करानेवाले शम-दम, ज्ञान-वैराग्य आदि धन में भी स्थापित कीजिए।

सूक्त–११

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१६४५. तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव दक्षमुत क्रतुम्। वज्रं शिशाति धिषणा वरेण्यम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! कर्तव्य-अकर्तव्य का तथा यथार्थ ज्ञान का उपदेश देनेवाली वेदवाणी आपके सर्वप्रसिद्ध महान् स्वरूप का, महान् ऐश्वर्य का, आपके बल का आपके प्रज्ञान, संकल्प और सृष्टि रचनारूप कार्य का, आपके वरणीय ओज का सूक्ष्म वर्णन और विवेचन करती है।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१६४६. तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः। त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन् ! दिन में सूर्य से और रात्रि में चन्द्रमा, नक्षत्र, तारे और सितारों से द्योतित

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्युलोक आपके बल को बढ़ाता है—आपके बल की महिमा गाता है और नाना प्रकार के अन्न, फूल, फल, ओषधियाँ, वनस्पतियाँ प्रदान करनेवाली विशाल पृथिवी आपके यश को बढ़ाती है। अन्तरिक्ष में वर्तमान जल धाराएँ, नदी और समुद्र तथा उत्तुंग पर्वत मालाएँ—ये सब भी आपको ही बढ़ाती हैं—द्युलोक और भूलोक के सभी पदार्थ आपके बल, यश और महिमा का ही तो गान कर रहे हैं।

ऋषिः-गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१६४७. त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः। त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! रश्मियों से व्याप्त आदित्य—सूर्य, विशाल अन्तरिक्ष, दिन और रात, वायु और अग्नि—ये सब आपकी ही महिमा के गीत गा रहे हैं। मानसून वायु का बल भी निरन्तर आपकी ही स्तुति कर रहा है।

सूक्त—१२

ऋषिः-विरूपः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६४८. नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आत्म-बल की प्राप्ति के लिए हम आपको प्रणाम करते हैं। हे प्रकाशकों के प्रकाशक, आनन्दप्रद परमेश्वर! श्रम करनेवाले मनुष्य, आपको अपनी ओर आकर्षित करनेवाले अथवा आपकी ओर आकर्षित होनेवाले जन और अपने जीवनरूपी खेती में सद् गुणों के बीज बोनेवाले कर्मयोगी आपका स्तवन करते हैं। प्रभो! आप अपने स्वाभाविक ज्ञान, बल और क्रिया द्वारा काम-क्रोध आदि शत्रुओं के बलों को नष्ट कर दीजिए।

ऋषिः-विरूपः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६४९. कुवित्सु नो गविष्टयेऽग्ने संवेषिषो रयिम्। उरुकृदुरु णस्कृधि।।

(क) हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! विद्या=ज्ञान-प्राप्ति के लिए आप हमें अथाह श्रद्धा और भक्तिरूपी धन प्रदान कीजिए। आप महान् पराक्रमी हैं, अतः हमें भी महान् पराक्रमवाला, महान् उत्साही बना दो।

(ख) हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप हमें ज्ञान-यज्ञ करने के लिए—गवेषणा [Research] के लिए खूब धन प्रदान कीजिए। हे महान् कर्म सम्पादक प्रभो! आप हमें विशाल हृदयवाला बना दीजिए। हम उदार हों और ज्ञान के अन्वेषण के लिए दिल खोलकर दान दें।

ऋषिः-विरूपः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६५०. मा नो अग्ने महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा। संवर्गं सं रयिं जय।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! जैसे भार उठानेवाला भारी लगने पर बोझ को बीच में ही उतार फेंकता है, वैसे आप हमें काम-क्रोध आदि शत्रुओं के साथ होनेवाले संग्राम में त्याग मत दीजिए। आप हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि के वर्गों पर विजय प्राप्त कराइए और चतुर्वर्ग में सर्वोत्तम मोक्षरूपी धन प्राप्त कराइए तथा **संवर्गं रयिं सं जय**=त्यागने योग्य, पाप-भोग धन पर सम्यक् विजय प्राप्त कराइए। हम ईमानदारी से कमाये हुए धन का ही उपभोग करें।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१३

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६५१. समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के प्रकाशस्वरूप की झलक पाने के लिए, उसके प्रकाशमय स्वरूप के दर्शन करने के लिए, इस संसार में प्रविष्ट हुए-हुए और अब प्रभु की अमृतमय गोद में प्रवेश के इच्छुक अपने हृदय से वासनारूपी घास-फूँस को उखाड़कर उसमें विवेक, वैराग्य, शम, दम आदि गुणों के बीज बोनेवाले प्रजाजन उसके समक्ष आदर और श्रद्धापूर्वक झुकते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे बहनेवाली नदियाँ समुद्र के प्रति झुकती हैं।

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६५२. वि चिद् वृत्रस्य दोधतः शिरो बिभेद वृष्णिना। वज्रेण शतपर्वणा।।

सुखवर्षी और सबकी कामनाओं को पूर्ण करनेवाला परमेश्वर अपनी असंख्यात शक्तिवाली गति=प्राप्ति से ज्ञान और विवेक पर परदा डालनेवाले अज्ञान के और उग्ररूप धारण किये हुए काम के सिर को निश्चित रूप से काट गिराता है अर्थात् जब जीव को परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है तब उसके अज्ञान का और काम-क्रोध आदि वासनाओं का सर्वथा नाश हो जाता है।

ऋषिः–वत्सः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६५३. ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी।।

जैसे कोई ऋषि मृगचर्म=मृगछाला या व्याघ्र-चर्म को स्वेच्छा से कभी फैला देता है और कभी समेट लेता है वैसे ही परमैश्वर्यशाली परमेश्वर अपने जिस ओज से=आत्म-बल से सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय—समय पर उसका संहार करते रहते हैं, उसका वह सर्वप्रसिद्ध बल सर्वत्र देदीप्यमान हो रहा है, चमक रहा है।

सूक्त—१४

ऋषिः–शुनःशेपः आजीगर्तिः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–एकपदा पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१६५४. सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी।।

(क) परमात्मा उपासक के लिए शोभन ज्ञान=वेदरूपी सर्वोत्कृष्ट ज्ञान देनेवाला, निवास के लिए आवश्यक धन और आध्यात्मिक उन्नति के लिए शम-दम आदिरूप धन प्रदान करनेवाला, रमणीय सुख देनेवाला और शोभन—उत्तम नेता है—सुमार्ग से चलानेवाला है।

(ख) उपासक के लिए वेदवाणी उत्तम विज्ञानोंवाली है—'सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' यह वेदवाणी लौकिक और पारलौकिक वसुओं—आयु, प्राण, प्रज़ा, पशु, कीर्ति, धन, ब्रह्मतेज और ब्रह्मलोक=मोक्ष देनेवाली है। यह प्रभु में रमण करानेवाली है और संसार में रमणीयता की स्थापना करानेवाली है। इस वेदवाणी में जो उपदेश हैं वे सब सु=उत्तम और सत्य हैं, अतः यह मनुष्यों को सुमार्ग में चलानेवाली है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

ऋषिः-शुनःशेपः आजीगर्तिः। देवता-इन्द्रः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

१६५५. सरूप वृषन्ना गहीमौ भद्रौ धुर्यावभि। ताविमा उप सर्पतः।

हे सौम्य! लावण्य से युक्त! शक्ति के पुञ्ज जीवात्मन्! ब्रह्म=परमेश्वर और वेद अथवा ज्ञान और कर्म—ये दोनों कल्याणकारक और सुख-प्रापक हैं तथा जीवन को लक्ष्य-स्थान—मोक्ष तक पहुँचानेवाले हैं। ये दोनों तेरे समीप जाते—पहुँचते हैं अर्थात् तुझे जीवन में ब्रह्म की प्राप्ति हो, वेदज्ञान भी मिले और तेरे जीवन में ज्ञान और कर्म इन दोनों का भी समन्वय हो।

ऋषिः-शुनःशेपः आजीगर्तिः। देवता-इन्द्रः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

१६५६. नीव शीर्षाणि मृढ्वं मध्य आपस्य तिष्ठति। शृंगेभिर्दशभिर्दिशन्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! जो उपासक प्राप्त करनेयोग्य आपके मध्य में बैठा है, आपकी शरण में है, आप इसकी शीर्षस्थ इन्द्रियों—कान, नासिका, आँख और मुख, को शुद्ध बना दो—इन्हें शुभ गुणों से अलंकृत कर दो। कुमार्ग में ले-जाने से कल्याण-पथ का हिंसन करनेवाली दसों इन्द्रियों को दुर्गुणों से छुड़ाकर इन्हें सद्गुणों से समलंकृत कर दो और इनका रक्षण करो।

अष्टमः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चांगिरसः। देवता-इन्द्रः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

१६५७. पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय।।

अत्यन्त स्तुत्य शान्त उपासना-रस को निष्पन्न करनेवाले हे उपासको! तुम प्रसन्न करने योग्य, दुर्बुद्धि के नाशक और सद्बुद्धि के प्रेरक, पराक्रमशाली और काम-क्रोध आदि शत्रुओं के विनाशक परमात्मा की ओर दौड़ो—उसकी शरण में जाओ, उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करो।

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चांगिरसः। देवता-इन्द्रः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

१६५८. एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम्। इन्द्रं गीर्भिर्गिर्वणसम्।।

उपासक को ब्रह्म के साथ जोड़नेवाली, सुख देनेवाली, परमात्मा को हृदय में ले-आनेवाली मेरी ज्ञान और कर्मेन्द्रियाँ स्तोत्रों के द्वारा सम्भजनीय—उपासनीय, चेतनत्व और नित्यत्व आदि गुणों के कारण समान प्रसिद्धिवाले सखा—मित्र परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को उपासना-मन्दिर, हृदय में प्राप्त कराती हैं।

ऋषिः-मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चांगिरसः। देवता-इन्द्रः। छन्दः-गायत्री। स्वरः-षड्जः।

१६५९. पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत्। नि यमते शतमूतिः।।

अपने उपासकों की रक्षा करनेवाला, पाप-विनाशक परमेश्वर शम, दम, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य आदि गुणों से सुभूषित उपासकों की ओर अवश्य आये, उनसे दूर न रहे। वह परमेश्वर अपने अनन्त रक्षा-साधनों से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपासकों को सँभालता है—उनकी देख-रेख करता है।

सूक्त—२

ऋषिः-श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६६०. आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्रातिरिच्यते।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! स्वरूप में, काल की दृष्टि से, योग्यता में, गुणों में, अधिकार में, शासन की दृष्टि से—संसार में आपसे बड़ा कोई नहीं है, अतः सौम्य, शीतल स्वभाववाले उपासक आपमें उसी प्रकार प्रविष्ट हो जाएँ—आपकी शरण में पहुँच जाएँ जैसे निरन्तर प्रवाहवाली नदियाँ समुद्र में प्रविष्ट हो जाती हैं।

ऋषिः-श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६६१. विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं सोमस्य जागृवे। य इन्द्र जठरेषु ते।।

हे शक्तिशालिन्! सर्वकामनापूरक एवं सुखवर्षक! जीवों की रक्षा, कर्मफल प्रदान और न्याय करने में सदा जागरूक—सावधान!, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप अपनी महान् महिमा से सर्वत्र—सारे ब्रह्माण्ड में व्याप रहे हैं और अपने सामर्थ्य से ही उत्पन्न हुए संसार का प्रलय समय में भक्षण—संहार कर देते हैं— यह सारा संसार आपमें ही समा जाता है।

ऋषिः-श्रुतकक्षः सुकक्षो वा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६६२. अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्। अरं धामभ्य इन्दवः।।

हे पापनाशक! परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! विनीत एवं सौम्य उपासक आपकी अमृतमयी गोद में बैठने में समर्थ हो और उपासकों के उपासना-यज्ञ—श्रेष्ठतम कर्म—परोपकार के कार्य उन्हें तेजस्वी और प्रतापी बनाने में समर्थ हों।

सूक्त—३

ऋषिः-शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६६३. जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम्।।

हमारी स्तुति-प्रार्थनाओं को जाननेवाले परमात्मन्! आप प्राणिमात्र के कल्याण के लिए हमारे वासना-शून्य निर्मल हृदय में प्रवेश कीजिए, जहाँ अत्यन्त पूजनीय, उपासनीय और वेदों का ज्ञान प्रदान करनेवाले, कर्मफलरूप दण्ड देकर दुष्टों को रुलानेवाले आपके लिए नयनाभिराम—अति मनोहर स्तुति की जाती है।

ऋषिः-शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१६६४. स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धिये वाजाय हिन्वतु।।

पूजनीय, सर्वशक्तिमान्, अमेय—न मापा जाने योग्य, अनन्त ज्ञान, बल और क्रियाशक्तिवाला, पाप और

पापियों को कँपानेवाले ज्ञान से सम्पन्न परमेश्वर उपासकों का पालक और पूरक है। वह स्वयं आह्लादमय होता हुआ उपासकों को आनन्दित करनेवाला है। ऐसा वह परमेश्वर हमें बुद्धि की प्राप्ति के लिए—सत्कर्मों के अनुष्ठान के लिए, शक्ति, ज्ञान, धन और अन्न की प्राप्ति के लिए तथा त्यागभाव के लिए प्रेरित करे।

ऋषिः–शुनःशेप आजीगर्तिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६६५. स रेवाँइव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः। उक्थैरग्निर्बृहद् भानुः।।

देवों=विद्वानों का हितकारी, महाज्ञानी, अथवा दिव्य प्रेरक, महातेजस्वी, प्रकाशस्वरूप परमात्मा हमारे स्तुति-वचनों को उसी प्रकार सुने जैसे कोई धनी अथवा राजा किसी याचक की प्रार्थना को सुनता है।

सूक्त—४

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६६६. तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद् गवे न शाकिने।।

हे मनुष्यो! तुम सब एक-साथ मिलकर, एक मन-वचन और कर्मवाले होकर सुख-शान्ति और आनन्द की प्राप्ति के लिए जगदुत्पादक, बहुत प्रकार से स्तुति करने योग्य और बहुतों द्वारा पुकारे जानेवाले, काम-क्रोध आदि शत्रुओं के नाशक और सब प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान करनेवाले, वृषभ के समान शक्तिशाली, सर्वप्रसिद्ध परमेश्वर का स्तुति-गान करो, उसकी महिमा के गीत गाओ।

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६६७. न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुपश्रवद् गिरः।।

सबको निवास के लिए आवश्यक धन देनेवाला, सबको अपने अन्दर बसानेवाला और सबके अन्दर बसनेवाला परमेश्वर निश्चय ही ज्ञान से युक्त शक्ति के दान को सीमित नहीं करता अर्थात् प्रभूत ज्ञान और शक्ति प्रदान करता है, परन्तु कब? निश्चय ही जब उपासक प्रभु के वचनों=वेदवाणियों को ध्यानपूर्वक सुनता है—वेद का स्वाध्याय करता है और तदनुसार आचरण करता है।

ऋषिः–शंयुर्बार्हस्पत्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६६८. कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत्।।

दुष्टों का दमन करनेवाला परमेश्वर अल्पज्ञ जीव के इन्द्रियों के बाड़े—अन्तःकरण में, हृदय में प्रकट होता है और अपनी शक्तियों के द्वारा पाप-दस्युओं को हटाकर हम उपासकों का वरण कर लेता है—अपना लेता है।

सूक्त—५

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–विष्णुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६६९. इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पांसुले।।

सर्वव्यापक परमात्मा ने यह पराक्रमपूर्ण कार्य किया है कि पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में अपने अन्वेषण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करने योग्य स्वरूप को स्थापित किया है, परन्तु उसका स्वरूप प्रकृतिमय जगत् में छिपा हुआ है, अतः दृष्टि में नहीं आता। योगाभ्यास द्वारा अपने अविद्या-अन्धकार को दूर करके कोई योगी ही उसके स्वरूप को देख पाता है।

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–विष्णुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६७०. त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥

सारे ब्रह्माण्ड का पालक और रक्षक, किसी से न दबनेवाला—अहिंसनीय, सर्वव्यापक परमेश्वर तीनों पदों—प्राप्त करने योग्य स्थानों—पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में पराक्रम करता है—सब लोकों का निर्माण करता है, सबका पालन करता है और समय आने पर संहार करता है, अतः उपासक को चाहिए कि वह सत्य, दया, सदाचरण, उपासना आदि गुणों को धारण करता हुआ आस्तिक बना रहे।

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–विष्णुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६७१. विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥

सर्वव्यापक परमात्मा के आश्चर्यप्रद और अलौकिक कर्मों—संसार की उत्पत्ति, स्थिति और संहार, जीवों के लिए भोग-प्रदान, कर्मानुसार फल-प्रदान आदि को देखो—सोचो और विचारो, जिन कर्मों को देखकर जीवात्मा अपने कर्तव्यों को स्पष्टरूप से देखता है, अपने कर्तव्यों का पालन करता है और अपने कर्मों को परमेश्वर के आदेश के अनुसार ढालता है। वह परमेश्वर जीवात्मा का योग-अनुष्ठान से प्राप्त होनेवाला सखा है।

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–विष्णुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६७२. तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥

स्तोता—ज्ञानी उपासक सर्वव्यापक परमात्मा के सर्वप्रसिद्ध, सर्वोत्कृष्ट आनन्दस्वरूप को सदा अपने आत्मा में देखते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे आकाश में प्रकाशित हुए सूर्य को जनसामान्य देखते हैं।

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–विष्णुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६७३. तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥

सर्वव्यापक परमात्मा का जो सर्वोत्कृष्ट आनन्दस्वरूप है, उसे मेधावी=ज्ञानी, सदा जागरूक—सावधान—सतत कर्मशील—कर्मयोगी और विशेष स्तुति करनेवाले=भक्त अपनी आत्मा में प्रकाशित करते हैं।

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः। **देवता**–विष्णुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६७४. अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्या अधि सानवि॥

सर्वव्यापक परमात्मा ने क्योंकि यह पराक्रमपूर्ण कार्य किया है कि पृथिवी से लेकर द्युलोक तक—सर्वत्र अपने अन्वेषणीय स्वरूप को स्थापित कर दिया है, अतः वह सर्वत्र व्यापक है। उस परमात्मा की दिव्य शक्तियाँ हमारा सर्वत्र रक्षण करें और जीवन्मुक्त महापुरुष हमें उस परमात्मा का श्रवण और बोध कराएँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—६

ऋषिः—वसिष्ठः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

१६७५. मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन्।
आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपकी ओर ले-जानेवाले ज्ञानी हमें आपसे पृथक् न करें अपितु आपके साथ संयुक्त करें। दूर से भी और समीप से भी आप, आपसे मिलकर—आपके दर्शन पाकर आनन्दित होनेवाले मनुष्य के हृदय-सदन में आ जाइए—प्रकट हो जाइए और यहाँ रहते हुए ही हमारी प्रार्थना को ध्यानपूर्वक सुनिए और स्वीकार कीजिए।

ऋषिः—वसिष्ठः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

१६७६. इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! वेद का स्वाध्याय करनेवाले आपके उपासक उपासना-रस के निष्पन्न हो जाने पर आपके आश्रित हुए एक-साथ मिलकर ऐसे बैठते हैं जैसे मधु पर मक्खियाँ बैठती हैं। आपकी आनन्दरसरूपी सम्पत्ति की कामना करनेवाले स्तुतिकर्ताजन ऐश्वर्यशाली आपमें अपनी अभीष्ट कामना का आधान करके निश्चिन्त हो जाते हैं जैसे रथ-आरोही रथ में पैर रखकर—बैठकर निश्चिन्त हो जाते हैं।

सूक्त—७

ऋषिः—आयुः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

१६७७. अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत।
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत।।

हे मनुष्यो! सर्वश्रेष्ठ, मनन और चिन्तन करने योग्य परमेश्वर की स्तुति की जाती है। तुम भी परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए सामगान गाओ। पूर्व समय में होनेवाले विद्वानों ने भी सत्य स्वरूप परमेश्वर की खूब स्तुतियाँ की हैं और नूतन स्तुतिकर्त्ताओं की बुद्धियाँ भी उसी सत्यस्वरूप परमेश्वर की स्तुति में प्रवृत्त होती हैं, अतः तुम भी उसी की महिमा के गीत गाओ।

ऋषिः—आयुः काण्वः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

१६७८. समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम्।
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः।।

वह परमैश्वर्यशाली परमेश्वर विशाल ऐश्वर्यों को, बड़ी-बड़ी धन-सम्पत्तियों को प्रकट करता है। वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्युलोक और पृथिवीलोक को अपने-अपने मार्ग पर प्रेरित करता है और सूर्य को आकाश में चमकाता है। ऐसे निरतिशय ऐश्वर्य-सम्पन्न परमेश्वर को शक्ति के पुञ्ज ब्रह्मचारी, शरीर, मन और आत्मा से पवित्र, इन्द्रियों के मलों को नष्ट करनेवाले, सौम्य एवं विनीत उपासक भली-भाँति प्रसन्न करते हैं—अपने ऊपर कृपालु बनाते हैं।

सूक्त—८

ऋषिः–अम्बरीष ऋजिश्वा च। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१६७९. इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे। नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे।।

हे सौम्य एवं विनीत उपासक! तू पापों को नष्ट करनेवाले, सन्मार्ग में ले-चलनेवाले सर्वसामर्थ्य-सम्पन्न, काम-क्रोध आदि शत्रुओं को दूर भगा देनेवाले, हृदय-सदन में बैठनेवाले परमैश्वर्यशाली परमात्मा के आनन्दरस का पान करने के लिए इस संसार में छोड़ा जाता है—भेजा जाता है, अतः तू परमेश्वर को ही प्राप्त करने का प्रयत्न कर।

ऋषिः–अम्बरीष ऋजिश्वा च। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१६८०. तं सखायः पूरूरुचं वयं यूयं च सूरयः। अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम्।।

हे स्तुतिकर्ता मित्रो! आओ, हम और तुम मिलकर उस अत्यन्त दीप्त—कान्तिमान, ज्ञानरूप कीर्ति से युक्त और बल के भण्डार परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का भजन—उपासना करें और उसे प्राप्त करें।

ऋषिः–अम्बरीष ऋजिश्वा च। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१६८१. परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण।
यो देवान्विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति।।

भक्तजन उस कामना करने योग्य, भरण-पोषण करनेवाले, त्रिविध तापों का हरण करनेवाले परमात्मा की वरण-साधन मन के द्वारा अर्चना करते हैं, जो अपनी कृपा और आनन्द के साथ सब भक्तों—उपासकों को प्राप्त होता है।

सूक्त—९

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१६८२. कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति।
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! सबको बसानेवाले और सबके अन्दर बसनेवाले प्रभो! जिस मनुष्य को आप बसानेवाले हो उसे कौन मरणधर्मा मनुष्य धर्षित कर सकता है? कोई भी नहीं। हे निष्पाप ऐश्वर्यवाले परमात्मन्! आपपर की गई श्रद्धा मनुष्य को उस प्रकाश में रखती है जो सब आपत्तियों, उलझनों और विघ्नों से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दूर रखती है और शक्तिशाली, सर्वसमर्थ परमेश्वर इस श्रद्धालु को ज्ञान, धन, अन्न, बल प्रदान करते हैं।

ऋषिः–वसिष्ठः। देवता–इन्द्रः। छन्दः–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। स्वरः–पञ्चमः।

१६८३. मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु।
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता।।

हे दुःखहारिन् सर्वव्यापक प्रभो! जो धनों के स्वामी अपने प्रिय धनों का दान कर देते हैं, आप उन्हें वासनाओं का विनाश करने के लिए प्रेरित कीजिए [दान वासनाओंका खण्डन करके जीवन को पवित्र बना देता है]। हे प्रभो! आपके उत्कृष्ट नेतृत्व में हम पूर्व स्तुतिकर्ता विद्वानों के समान सब पापों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, दुःखों और कठिनाइयों को तर जाएँ।

सूक्त–१०

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। देवता–इन्द्रः। छन्दः–उष्णिक्। स्वरः–ऋषभः।

१६८४. एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः। एवा हि वीर स्तवते सदावृधः।।

हिंसा-शून्य उपासना-यज्ञ के सञ्चालक हे जीवात्मन्! तू मधु से भी अत्यन्त मधुर = मादक, आह्लादक, श्रद्धा-अनुरागभरे उपासना-रस से परमपिता परमेश्वर को सींच—अपने उपासना-रस को प्रभु के प्रति समर्पित कर दे। ऐसा करने पर वह सर्वप्रेरक परमात्मा उपासक को जीवन-मार्ग का उपदेश देता है और उसकी सर्वविध वृद्धि = उन्नति करता है।

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। देवता–इन्द्रः। छन्दः–उष्णिक्। स्वरः–ऋषभः।

१६८५. इन्द्र स्थातर्हरीणां न किष्टे पूर्व्यस्तुतिम्। उदानंश शवसा न भन्दना।।

सतत गमनशील सूर्य-चन्द्र आदि के अधिष्ठाता हे परमेश्वर! आपकी पूर्वकाल से चली आई सनातन वैदिक स्तुतियों को कोई नहीं पहुँच सकता, न बल की दृष्टि से और न कल्याण करने तथा सुख देने की दृष्टि से, अर्थात् आपका बल महान् है, आपका कल्याण करना और सुख-प्रदान भी महान् है—कोई इनका पार नहीं पा सकता।

ऋषिः–विश्वमना वैयश्वः। देवता–इन्द्रः। छन्दः–उष्णिक्। स्वरः–ऋषभः।

१६८६ तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः। अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम्।

यश चाहनेवाले हम शक्तियों के स्वामी उस परमेश्वर को पुकारते हैं जो हमारे द्वारा निरन्तर होनेवाले अध्यात्म-यज्ञों से और सत्कर्मों से खूब बढ़नेवाला है—महिमा को, गौरव को प्राप्त होता है।

सूक्त–११

ऋषिः–सोभरिः काण्वः। देवता–अग्निः। छन्दः–काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। स्वरः–ऋषभः।

१६८७. तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे उपासको! तुम परमानन्दपूर्ण मोक्षलोक में पहुँचानेवाले परमेश्वर की अर्चना करो। शम, दम आदि दिव्य गुणों से युक्त भक्त उसी निर्लेप, सर्वज्ञ, प्रकाशकों के प्रकाशक, आनन्दप्रद परमेश्वर को अपनी आत्मा में धारण करते हैं। तुम भी अपनी इन्द्रियों को उसी आत्मसमर्पण करने योग्य परमात्मा में पहुँचाओ—अर्थात् अपनी इन्द्रियों को परमात्मा की प्राप्ति में लगाओ।

ऋषिः–सोभरिः काण्वः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१६८८. विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषमग्निमीडिष्व यन्तुरम्।
अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम्।।

विशेषरूप से अपना पूरण करनेवाले हे मेधावी! परमात्मा को अपने अन्दर भरने में कुशल जीवात्मन्! तू महादानी, अद्भुत दीप्तिवाले और दर्शनीय, विश्वनियन्ता प्रकाशस्वरूप परमेश्वर की खूब स्तुति कर। तू अपने जीवन-यज्ञ की सफलता के लिए परम पवित्र, संगति करने योग्य, शक्तिप्रद और शाश्वत, सर्वश्रेष्ठ, सबका पालन और पूरण करनेवाले परमात्मा की अवश्य ही स्तुति कर।

सूक्त–१२

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१६८९. आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे।।

हे शान्तस्वरूप परमेश्वर! आप योग-साधना द्वारा साक्षात् किये जाते हो। साक्षात् होकर आप विघ्न-बाधाओं को दूर कर देते हो। मनुष्य जैसे शरीररूपी पुरी में प्रविष्ट होता है, उसी प्रकार आप पृथिवी से लेकर द्युलोक तक ब्रह्माण्डरूपी पुरी में सर्वत्र प्रविष्ट हैं—सर्वव्यापक हैं। आप उपासकों के दुःखों को दूर करनेवाले हैं और सदा ही वन्दनीय—उपासनीय हृदय में प्रकट और धारित किये जाते हैं।

ऋषिः–सप्तर्षयः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१६९०. स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीढ्वान्त्सप्तिर्न वाजयुः।
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिर्ऋक्वभिः।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला और अपनी आनन्दधाराओं से उपासकों को सींचनेवाला वह शान्तस्वरूप परमात्मा उपासक आत्माओं के सूक्ष्म-करणों—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार में उपासक को प्राप्त होता है। वह परमेश्वर सुखवर्षी है। वह उपासक को अश्व के समान वेग प्रदान करता है। वह मन को वश में करनेवाले, ऋचाओं द्वारा स्तुति करनेवाले और मेधावी उपासकों द्वारा निरन्तर अर्चनीय और प्रसादनीय—प्रसन्न करने योग्य होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१३

ऋषिः—कलिः प्रागाथः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**—मध्यमः।

१६९१. वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम्।
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते।।

हमने इस जीवन में कल और आज—सदा आत्मा में उत्पन्न किये हुए उपासना-रस को ओजस्वी परमात्मा को भेंट किया है। हे उपासको! आज भी उपासना-यज्ञ में निष्पादित हुए उपासनारस को उस परमेश्वर के लिए समर्पित करो और उस प्रभु की प्राप्ति के लिए निश्चय ही अपने-आपको वेद के ज्ञान से सुभूषित करो, क्योंकि वेदज्ञान से रहित मनुष्य उस परमेश्वर को नहीं पा सकता।

ऋषिः—कलिः प्रागाथः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

१६९२. वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति।
सेमं न स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया।।

परमेश्वर से उपदिष्ट प्रज्ञानों के प्राप्त हो जाने पर भेड़िये के स्वभाववाला हिंसक और महाक्रोधी मनुष्य भी अथवा चोर भी और विघ्न-बाधाओं को नष्ट करने के लिए हृदय का मन्थन करनेवाला सज्जन भी शुभ गुणों का वरण करनेवाला होकर अपने जीवन को सद्गुणों से सुशोभित—अलंकृत कर लेता है। हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप हमारे स्तुति-वचनों को प्रेमपूर्वक स्वीकार करते हुए अपने अलौकिक ज्ञान के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में प्रकट हो जाइए।

सूक्त—१४

ऋषिः—विश्वामित्रः। **देवता**—इन्द्राग्नी। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१६९३. इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः। तद्वां चेति प्र वीर्यम्।।

बल और ज्ञान-शक्ति से सम्पन्न हे प्रभो! परमैश्वर्यवाले और ज्योतिस्वरूप परमेश्वर! आपके ये दोनों रूप द्युलोक और मस्तिष्क को चमकानेवाले हैं। द्युलोक सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रों से चमकता है तो मस्तिष्क ज्ञानेन्द्रियरूप नक्षत्रों—नेत्र, श्रोत्र आदि द्वारा चमकता है। वैदिक मन्त्रों में, यज्ञों में, संग्रामों में, ज्ञानियों में आप सर्वत्र विभूषित हो रहे हो। इन्द्र और अग्नि—इन दोनों रूपों में आपका सामर्थ्य, बल और पराक्रम सर्वत्र प्रकट हो रहा है।

[परमात्मा एक ही है। दो, तीन, चार परमात्मा नहीं हैं। एक ही परमात्मा भिन्न-भिन्न गुणों के कारण इन्द्र और अग्नि शब्दों से वर्णित किया जा रहा है।]

ऋषिः—विश्वामित्रः। **देवता**—इन्द्राग्नी। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१६९४. इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या३ अनु।।

हे ऐश्वर्यसम्पन्न और ज्योतिस्वरूप प्रभो! आपकी कृपा से सत्यस्वरूप आपके निर्दिष्ट मार्ग के अनुसार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हमारे कर्म चलते हैं—आपके उपदिष्ट वेदज्ञान के अनुसार हम कर्मों का अनुष्ठान करते हैं। हमारी स्तुतियाँ भी आपकी ओर जा रही हैं अर्थात् हम अन्य देवों और जड़ पदार्थों की स्तुति न करके आपकी ही स्तुति करते हैं।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१६९५. इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च। युवोरप्तूर्यं हितम्।।

हे ऐश्वर्यसम्पन्न और ज्योतिस्वरूप प्रभो! आपका बल और क्रियाशक्ति साथ-साथ रहते हैं अर्थात् ये दोनों एक-दूसरे के सहयोगी हैं। कर्मों का शीघ्र फल प्रदान करना आपकी इन दोनों शक्तियों में निहित है।

सूक्त—१५

ऋषिः–मेध्यातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१६९६. क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्रयन्धसः।।

जीवन-यज्ञ में इन्द्रियों के साथ मिलकर आनन्दरस का पान करते हुए अथवा कर्मफल का भोग करते हुए इस आत्मा को कौन जानता है? किसने उसका दर्शन किया है? और कौन जानता है कि वह कितनी आयु धारण करता है? एक शरीर से दूसरे शरीर में जानेवाला यह वेगवान् आत्मा परमात्मा की उपासना से हर्षित होकर अपने आत्मबल से असुरों की पुरियों [काम-क्रोध-लोभ के दुर्गों] को तोड़ डालता है और मुक्त हो जाता है।

ऋषिः–मेध्यातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१६९७. दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे।
न किष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाँश्चरस्योजसा।।

आत्मदान—आत्मसमर्पण द्वारा अन्वेषणीय, इस जीवन में ही वरणीय परमैश्वर्यशाली परमात्मा सर्वत्र विचर रहा है। हे सर्वव्यापक जगदीश्वर! उपासना-रस के निष्पन्न हो जाने पर आप हमारे हृदय में आइए—अपने दर्शन दीजिए। आपको अपने कार्यों में कोई शक्ति रोक नहीं सकती, क्योंकि आप सर्वतोमहान् है और अपने ओज के साथ सर्वत्र विचर रहे हैं।

ऋषिः–मेध्यातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१६९८. य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः।
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत्।।

वह परमेश्वर सज्जनों के लिए उदात्त(noble) और दुष्टों के लिए भयंकर है। वह शत्रुओं के द्वारा हिंसित नहीं किया जा सकता। वह कूटस्थ है और उपदेश देने—सन्मार्ग में प्रेरित करने के लिए सदा उद्यत है। वह ऐश्वर्यशाली परमेश्वर यदि स्तोता की पुकार को सुन लेता है—स्वीकार कर लेता है तो वह उपासक से विमुख नहीं होता, अपितु इसकी सहायता के लिए इसके हृदय-मन्दिर में प्रकट हो जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१६

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१६९९. पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः। अभि विश्वानि काव्या।।

स्वयं पवित्र तथा औरों को पवित्र करनेवाले, सत्कर्मों द्वारा समुज्ज्वल, भक्तिरूपी ऐश्वर्य से सुशोभित, शम-दम आदि से युक्त शान्त उपासक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए अनेक प्रकार के स्तोत्रों का उच्चारण करते हैं, विविध प्रकार के स्तोत्रों से परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं—अपने प्रति कृपालु बनाते हैं।

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
१७००. पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत। पृथिव्या अधि सानवि।।

अन्दर और बाहर से शुद्ध और पवित्र उपासक द्युलोक से, अन्तरिक्षलोक से और भूलोक से भी उच्च=श्रेष्ठलोक में—मोक्षधाम में ले-जाये जाते हैं, अर्थात् प्रभु-उपासक सब भौतिक लोकों का अतिक्रमण करके मोक्षधाम में पहुँचाते हैं।

ऋषिः–निध्रुविः काश्यपः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १
१७०१. पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः। घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः।।

व्यापनशील—सर्वव्यापक अत्यन्त देदीप्यमान, निर्मल, धारारूप में प्राप्त होनेवाला, परम रसीला परमेश्वर उपासक की सारी द्वेष-भावनाओं को नष्ट करता हुआ उसके हृदय-सदन में प्रकट होता है।

सूक्त—१७

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१७०२. तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता। इन्द्राग्नी वाजसातमा।।

हे परमैश्वर्यशालिन् तथा ज्ञानप्रकाश से प्रकाशित परमेश्वर! इन्द्र और अग्नि दोनों नामोंवालेआप दोष और विघ्नों के विनाशक हैं, पाप और पाप-वासनाओं का हनन करनेवाले हैं, सदा विजयी और कभी पराजित न होनेवाले हैं तथा ज्ञानरूपी धन के देनेवाले हैं—ऐसे आपको मैं सदा पुकारता हूँ, आपकी प्रार्थना और उपासना करता हूँ।

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१७०३. प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे।।

हे परमैश्वर्यशालिन् तथा ज्ञान-प्रकाश से प्रकाशित परमेश्वर! वैदिक सूक्तों से स्तुतिकर्ता, आचार-नीति और अध्यात्म दृष्टि के वेत्ता, स्तोता उपासक इन्द्र और अग्नि नामवाले आपकी खूब ही स्तुति करते हैं। मैं भी इष्ट कामनाओं की प्राप्ति के लिए और अन्त में मोक्ष-प्राप्ति के लिए आपका पूर्ण रूप से वरण करता हूँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्राग्नी। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१७०४. इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा।।

हे परमैश्वर्यशालिन् तथा ज्ञान-ज्योति से प्रकाशित परमात्मन्! आप उपक्षय=तोड़-फोड़ करनेवाले काम-क्रोध आदि को पालने और उभारनेवाली गतिशील मनोवृत्तियों को अपने एक कर्म—एक संकल्प द्वारा अथवा अपने साक्षात् दर्शन द्वारा कँपा देते हो—नष्ट कर देते हो।

सूक्त—१८

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
१७०५. उप त्वा रण्वसन्दृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत। अग्ने ससृज्महे गिरः।।

उपासक के अध्यात्म बल—साहस और धैर्य से प्रकट होनेवाले प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! योगानुष्ठान में प्रयत्नशील हम उपासक परम मनोहर एवं रमणीयस्वरूप आपके प्रति स्तुति-वाणियाँ समर्पित करते हैं—आपका गुण-गान करते हैं।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २
१७०६. उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम्। अग्ने हिरण्यसन्दृशः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! जैसे सूर्य के प्रचण्ड ताप से सन्तप्त व्यक्ति वृक्ष आदि की छाया का आश्रय लेते हैं, वैसे ही सांसारिक तापों से सन्तप्त हम उपासक अमृतस्वरूप आपके आश्रय को अपनी उत्कट श्रद्धा-भक्ति द्वारा प्राप्त हुए हैं—आपकी अमृतमयी गोद में आ बैठे हैं।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २ ३ १ २
१७०७. य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृंगो न वंसगः। अग्ने पुरो रुरोजिथ।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप उग्र=प्रचण्ड न होते हुए भी दुष्टों को उग्र-से प्रतीत होते हैं। आपका तेज तीक्ष्ण नहीं है—शान्त है तो भी खलों को वह तीक्ष्ण प्रतीत होता है। आप अंगुली-निर्देश से—बिना परिश्रम के, अनायास ही दुष्टों और महादुष्टों का नाश करनेवाले हैं। आप अत्यन्त कमनीय हैं और आपकी संगति चाहनेवालों के पास आप स्वयं पहुँच जाते हैं—प्राप्त हो जाते हैं। आप अपनी कृपा से उपासकों के मन को निरुद्ध कर देते हैं और उनकी शरीररूपी पुरियों को भंग करके उन्हें मोक्ष प्रदान करते हैं।

सूक्त—१९

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१७०८. ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रं घर्ममीमहे।

मोक्ष-आनन्द प्रदान करनेवाले, वेदरूपी ज्योति के स्वामी, सब नर-नारियों के हितकारी, अविनाशी तथा प्रकाशस्वरूप परमेश्वर से हम उपासक कल्याण-प्राप्ति और मोक्ष-सुख की याचना करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३१२ ३२ ३२ ३क २र ३२ ३१ २र ३२
१७०९. य इदं प्रतिपप्रथे यज्ञस्य स्वरुत्तिरन्। ऋतूनुत्सृजते वशी।।

मनुष्यों को यज्ञ = सत्कर्मों—पुण्यकर्मों का सुखरूप फल प्रदान करने के लिए वह विश्वनायक परमात्मा इस जगत् का पुनः-पुनः निर्माण करता है। सारे संसार को वश में रखनेवाला वह परमेश्वर ऋतुओं को, ऋतु-ऋतु में उत्पन्न होनेवाले पदार्थों को उत्पन्न करता है। वही परमात्मा उपासकों को मोक्ष की ओर भी ले-जाता है।

ऋषिः–भरद्वाजो बार्हस्पत्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २३ १२ ३ १२ ३२ ३ १२ ३२उ ३ १ २
१७१०. अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य। सम्राडेको वि राजति।

प्रकाशस्वरूप परमात्मा भूतकाल में उत्पन्न हुए उपासकों की कामनाओं का विषय रहा है—पहले उत्पन्न हुए सभी ऋषि-मुनि, योगी उसे प्राप्त करने की कामना करते रहे हैं और भविष्य में भी वह उपासकों की कामनाओं का विषय रहेगा। वह एकमात्र, अद्वितीय परमेश्वर उपासकों के प्रिय धामों—मन, नेत्र आदि अंगों में विराजमान है।

अष्टमः प्रपाठकः, तृतीयोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
१७११. अग्निः प्रत्नेन जन्मना शुम्भानस्तन्वां३ स्वाम्। कविर्विप्रेण वावृधे।।

पूर्वजों के शुभ—पुण्य कर्मों के कारण अग्नि = प्रकाशमय बना हुआ उपासक अपने आत्मा को सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, शम-दम आदि दिव्य गुणों द्वारा समलंकृत करता हुआ और इस प्रकार क्रान्तदर्शी बना हुआ सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ परमेश्वर की कृपा से खूब बढ़ता है—उन्नति करता है, फूलता और फलता है।

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १२ ३ १ २३१ २ ३ २ ३ १ २ ३
१७१२. ऊर्ज्जो नपातमाहुवेऽग्निं पावकशोचिषम्। अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे।।

हिंसा-शून्य इस जीवन-यज्ञ में मैं आत्मिक बल को न गिरने देनेवाले, जीवन को पवित्र बनानेवाले, प्रकाश से युक्त, सबको आगे ले-जानेवाले मार्गदर्शक परमात्मा को श्रद्धा-भक्तिपूर्वक बुलाता हूँ—निरन्तर उसका स्मरण करता हूँ।

ऋषिः–विरूप आंगिरसः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २र ३१२ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २
१७१३. स नो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचिषा। देवैरा सत्सि बर्हिषि।।

हे सूर्य के समान तेजस्विन्! मृत्यु से त्राण करनेवाले तेज से युक्त प्रभो! सबके साथ स्नेह करने के कारण पूजनीय परमात्मन्! हे मार्ग-दर्शक परमेश्वर! आप अपने पवित्र तेज से, अपने न्याय, दया, आनन्द आदि दिव्य गुणों के साथ हमारे वासनाओं से शून्य हृदय-आसनों पर आ विराजिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—२

ऋषि:–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७१४. उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः। नुदस्व याः परिस्पृधः।।

हे पापों को नष्ट करनेवाले परमात्मन्! आपके शत्रु-शोषक बल काम-क्रोध आदि राक्षसों को छिन्न-भिन्न करने के लिए उमड़ रहे हैं। हे परमेश्वर! जो हमारी स्पर्धा करनेवाली विरोधी प्रवृत्तियाँ हैं, दुर्भावनाएँ हैं, आप उन्हें परे धकेल दीजिए—हमसे दूर कर दीजिए।

ऋषि:–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७१५. अया निजघ्निरोजसा रथसंगे धने हिते। स्तवा अबिभ्युषा हृदा।।

हे परमेश्वर! आप अपने अनन्त सामर्थ्य से उपासकों के काम-क्रोध आदि सब बाधाओं, पापों और पाप-वासनाओं को नष्ट कर देते हैं। इस शरीर-रथ के साथ आपका मेल—रमणीय संग होने पर परम हितकारी मोक्षधन की प्राप्ति के लिए मैं भयरहित—संकोचरहित हृदय—मन से आपकी स्तुति करता हूँ।

ऋषि:–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७१६. अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या। रुज यस्त्वा पृतन्यति।।

सर्वव्यापक, आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और उपासकों को पवित्र करनेवाले परमेश्वर के नियमों को दुर्बुद्धि से, नास्तिकभाव से कोई भी मनुष्य दबा नहीं सकता, तोड़ नहीं सकता, उनका उल्लंघन नहीं कर सकता। हे प्रभो! जो दुर्बुद्धि आपके साथ संग्राम करना चाहता है, आपकी मर्यादा—नियमों को भंग करना चाहता है, उसे आप छिन्न-भिन्न—नष्ट कर देते हैं।

ऋषि:–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७१७. तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्।।

उपासकजन सर्वप्रसिद्ध अहंकार के नाशक और आनन्द की वृष्टि करनेवाले, त्रिविधतापों का हरण करनेवाले, शारीरिक नस-नाड़ियों में शक्ति का सञ्चार करनेवाले, आनन्दस्वरूप, परम रसीले प्रकाशस्वरूप परमात्मा को अपनी आत्मा में प्रकट कर लेते हैं।

सूक्त—३

ऋषि:–विश्वामित्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बृहती। **स्वरः**–मध्यमः।

१७१८. आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः।
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप मोर-पक्षी के पंखों के समान कमनीय व आनन्ददायिनी अपनी ज्ञान-रश्मियों के साथ हमारे हृदय-मन्दिर में आइए। हमारे हृदय-मन्दिर में आने में बाधक शक्तियाँ आपको रोक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

न लें, जैसे पाशवाले व्याध पशुओं को रोक लेते हैं। जैसे कोई उद्यमी मरुभूमि को लाँघ जाता है, वैसे ही आप सब विघ्न-बाधाओं को लाँघकर हमारे हृदय-सदन में अवश्य आ जाइए—प्रकट हो जाइए।

ऋषिः-विश्वामित्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
१७१९. वृत्रखादो वलं रुजः पुरां दर्मो अपामजः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृढा चिदारुजः।।

पाप-पुञ्ज का नाशक, अज्ञान का भञ्जक, भविष्य में मिलनेवाले शरीरों को छिन्न-भिन्न करनेवाला, कामनाओं—वासनाओं को नष्ट करनेवाला, प्राप्त करने योग्य वस्तुओं को प्राप्त करानेवाला, रमणीय मोक्षपद को प्राप्त करानेवाला, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर मन और बुद्धि द्वारा आह्वान किये जाने पर उपासक के दृढ़-से-दृढ़ बन्धनों को तोड़ डालता है—दुर्वृत्तियों को नष्ट कर देता है।

ऋषिः-विश्वामित्रः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१७२०. गम्भीराँ उदधीँरिव क्रतुं पुष्यसि गाइव।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्याइवाशत।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर ! जैसे आप अथाह सागर की रक्षा करके न तो उसे सूखने देते हैं और न मर्यादा भंग करने देते हैं, जैसे आप पृथिवी की रक्षा करके उसे अल्प और असहिष्णु नहीं होने देते, ऐसे ही आप सत्य संकल्प और सत्कर्म करनेवाले उपासकों की रक्षा करके उन्हें पुनः अज्ञान और पाप-पंक में नहीं फँसने देते। जैसे गौएँ घास की ओर जाती हैं, छोटी-छोटी नहरें महान् जलाशय को प्राप्त होती हैं, उसी प्रकार संयमी उपासक आपको प्राप्त होते हैं।

सूक्त—४

ऋषिः-देवातिथिः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २र
१७२१. यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम्।
३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब।।

जैसे प्यास से व्याकुल हुआ हिरण तृण आदि से आच्छादित निर्मल जलाशय की ओर दौड़कर जाता है, वैसे ही हे परमेश्वर ! आपके साथ बन्धुत्व प्राप्त हो जाने पर आप शीघ्र हमारे हृदय-मन्दिर में आइए और आपकी स्तुति करनेवाले, समाधि में निमीलित नेत्रोंवाले हम उपासकों में प्रवाहित उपासना-रस का पान कीजिए—इसे स्वीकार कीजिए।

ऋषिः-देवातिथिः काण्वः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१७२२. मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद्दधिषे सहः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे ज्ञानैश्वर्यसम्पन्न परमेश्वर! हमारे श्रद्धा-भक्तिपूर्ण उपासना-रस आपको प्रसन्न करें—आपको हमारे प्रति दयालु एवं कृपालु बनाएँ, जिससे आप उपासना-रस का निष्पादन करनेवाले उपासक के लिए जीवन में सर्वविध सफलता प्रदान करें। आप उस उपासक के उपासना-रस को स्वीकार करें जिसका उपासना-रस सिर से पैर तक प्रवाहित हो रहा है। आप उपासक में सर्वप्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ साहस को, पापों का पराभव करनेवाले उत्तम बल को धारण करते हैं।

सूक्त—५

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**-मध्यमः।

१७२३. त्वमंग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः।।

हे परम प्रिय, अत्यन्त बलशाली परमेश्वर! दिव्य गुणों से युक्त आप आपकी आज्ञापालन में निरत उपासकों को प्रशंसनीय बना दो, उन्हें प्रोत्साहित करो और आन्तरिक बल प्रदान करो। हे परमपूजित ज्ञानैश्वर्यवाले प्रभो! आपको छोड़कर और कोई सुखदाता नहीं है, इसलिए हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! मैं आपके प्रति ही स्तुति-गान गाता हूँ।

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**-पञ्चमः।

१७२४. मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसोऽस्मान् कदा चना दभन्।
विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ।।

सबमें बसनेवाले और सबको बसानेवाले हे परमेश्वर! आपके द्वारा प्रदत्त धन और सफलताएँ, योगसिद्धियाँ—विभूतियाँ तथा आपके द्वारा की गई हमारी रक्षाएँ हमें कभी भी प्रतारित न करें—आत्म-प्रवञ्चित न करें—आपके द्वारा प्रदत्त धनों, सफलताओं और रक्षाओं को हम अपनी न समझ बैठें। हम मननशील उपासकों का हित करनेवाले प्रभो! आप हम दर्शनेच्छुक उपासकों के वास के लिए आवश्यक सब धनों को प्रभूत मात्रा में प्रदान कीजिए।

सूक्त—६

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-उषाः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१७२५. प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः। दिवो अदर्शि दुहिता।।

उपासकों का उत्तम प्रकार से नेतृत्व करनेवाली, उन्हें नव और उत्तम जीवन प्रदान करनेवाली, अज्ञान-अन्धकार को दूर फेंककर ज्ञान-प्रकाश प्रदान करनेवाली, अविद्या-जन्य, राग-द्वेष आदि का पूर्ण निराकरण करनेवाली, जीवन में अध्यात्म प्रकाश को पूरण करनेवाली आध्यात्मिक ज्योति उपासक के अन्दर प्रकट होती है और उपासक के चारों ओर भी दीख पड़ती है।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-उषाः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१७२६. अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी। सखा भूदश्विनोरुषाः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परमात्मज्योति सर्वव्यापक है, यह अद्‌भुत और दर्शनीय है, अत्यन्त तेजस्विनी है, वेदज्ञान का निर्माण और प्रकाश करनेवाली है, सत्य-मार्ग की दर्शिका है और द्यावापृथिवी अथवा सूर्य-चन्द्रमा के समान ही कीर्तिवाली है। द्यावापृथिवी के समान सबका धारण करनेवाली और सूर्य-चन्द्रमा के समान प्रकाश करनेवाली है अथवा कानों के समान धर्मवाली हैं—कान सुनते हैं, यह भी उपासक की प्रार्थनाओं को सुनती है।

ऋषिः-वामदेवः। **देवता**-उषाः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३१ २र ३ १ २ ३२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
१७२७. उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि। उतोषो वस्व ईशिषे।।

सर्वपापहरण करनेवाली हे परमात्मज्योति! तू निश्चय ही द्युलोक और पृथिवीलोक के समान अथवा सूर्य-चन्द्रमा के समान कीर्तिवाली है अथवा कानों के समान धर्मवाली है, वेदज्ञान का निर्माण और प्रकाश करनेवाली है तथा निवास के लिए आवश्यक सब धनों का भी तू ही स्वामित्व करती है।

सूक्त—७

ऋषिः-प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ २ ३ १ २र ३क २र ३ २ ३२ ३ १ २ ३२
१७२८. एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत्।।

निश्चय ही परमात्म-ज्योति एक अपूर्वज्योति है। यह सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्कृष्ट ज्योति है। यह प्रिय रूपवाली और उपासकों को तृप्त करनेवाली है। इसने मोक्षधाम से उपासक में प्रकाशित होकर अथवा मस्तिष्क में प्रकाशित होकर अज्ञान-रात्रि को हटा दिया है। हे ज्ञानज्योतिस्वरूप और आनन्दरसरूप परमात्मन्! मैं आपके गुणों का खूब गान करता हूँ।

ऋषिः-प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

२ ३ १ २र ३ १२ ३ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २
१७२९. या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम्। धिया देव वसुविदा।।

ज्ञानज्योतिस्वरूप और आनन्दरसरूरप परमेश्वर अविद्या आदि क्लेशों का क्षय करनेवाला तथा दर्शनीय है, हृदय-समुद्र का नव-निर्माण करनेवाला है, मन को संकल्प-विकल्परूप नद से पार करनेवाला है अथवा मलिन मन से जिस (प्रभु) का पार पाना—दर्शन करना असम्भव है, धन-साध्य कर्मों से भी जिसका पार पाना असम्भव है, जो दिव्य गुणों से युक्त है और उपासकों को भौतिक और निवास के लिए आवश्यक सब वस्तुओं का देनेवाला है—ऐसे परमेश्वर की मैं स्तुति करता हूँ, उसकी महिमा के गीत गाता हूँ।

ऋषिः-प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१७३०. वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि। यद्वां रथो विभिष्पतात्।।

महान् जीवन्मुक्त आत्माएँ शरीर के जीर्ण होकर समाप्त हो जाने पर मोक्षधाम में ज्ञानज्योतिस्वरूप और आनन्दस्वरूप परमात्मा को प्राप्त होती हैं। हे प्रभो! आपका मोक्षरूप रमण-स्थान ज्ञानी और कर्मशील उपासकों द्वारा प्राप्त किया जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—८

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१७३१. उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति। येन तोकं च तनयं च धामहे।।

सुख-शान्ति प्रदान करनेवाली हे परमात्मज्योति ! तू हमारे लिए ऐसा आश्चर्यपूर्ण ज्ञान, भक्ति, सदाचार आदि साधन प्रदान कर जिससे हम अपने पुत्रों और पौत्रों का भी रक्षण कर सकें—उन्हें भी भव-सागर से पार उतार सकें।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१७३२. उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि। रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति।।

इन्द्रियों और मन को प्रशस्त बनानेवाली ! विशिष्ट प्रभावाली ! वाणी को प्रिय तथा सत्यभाषी बनानेवाली हे परमात्मज्योति ! तू हमारे मानव-जीवन में आज से ही हमारे लिए आध्यात्मिक धन प्रदान करती हुई हमारे अज्ञान-अन्धकार को दूर कर।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१७३३. युंक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः। अथा नो विश्वा सौभगान्या वह।।

सुख-शान्ति प्रदान करनेवाली हे परमात्मज्योति ! तू आज ही ज्ञान से प्रकाशमान, इन्द्रिय-संयम में लगे हुए तथा तेरे मार्ग में आगे बढ़नेवाले हम उपासकों को अपने साथ युक्त कर ले और हमारे लिए सारे सौभाग्यों—ऐश्वर्य धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य—को प्राप्त करा।

सूक्त—९

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१७३४. अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद् दस्रा हिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम्।।

हे दर्शनीय, ज्योति और आनन्दस्वरूप परमात्मन् ! आपकी कृपा से हमारा शरीररूपी घर उत्तम इन्द्रियरूप घोड़ोंवाला हो। यह ज्योतिर्मय और आनन्द से भरपूर हो। हे प्रभो ! उत्कृष्ट मनवाले आप अपने रमणीय स्वरूप को इधर—हमारी ओर नियत—स्थिर कीजिए।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–उष्णिक्। **स्वरः**–ऋषभः।

१७३५. एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्त्तनी। उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये।।

सुख प्रदान करनेवाले, हितकारी तथा रमणीय जीवन-मार्ग का उपदेश करनेवाले, दर्शनीय तथा काम-क्रोध आदि दोषों और अविद्या अन्धकार को नष्ट करनेवाले, दिव्य गुणोंवाले, ज्योतिस्वरूप और आनन्दमय परमात्मन् ! प्रातःकाल जागनेवाले उपासक आपके आध्यात्मिक आनन्दरस का पान करने के लिए आपको यहाँ—इस उपासना-मन्दिर—हृदय-सदन में ले आएँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः-गोतमो राहूगणः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-उष्णिक्। **स्वरः**-ऋषभः।

१७३६. यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः। आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम्।।

जिस ज्योतिस्वरूप और आनन्दरसरूप परमेश्वर ने जन-कल्याण के लिए मोक्षधाम से अविनाशी और प्रशंसनीय ज्ञान-ज्योति को प्रकाशित किया है, वही दोनों रूपों-[ज्योति और आनन्दरूप]-वाला परमेश्वर हमारे लिए बल और प्राणशक्ति दायक ब्रह्मानन्दरस प्राप्त कराता है।

सूक्त-१०

ऋषिः-वसुश्रुत आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-पंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

१७३७. अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः।
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

(क) जो सबमें बसनेवाला और सबको बसानेवाला है, मैं उस सर्वप्रसिद्ध ज्ञानस्वरूप, परमेश्वर की अर्चना करता हूँ। मैं उस ईश्वर की अर्चना करता हूँ जिसकी शरण में जाकर ज्ञानेन्द्रियाँ शान्त हो जाती हैं; शीघ्रगामी मन जिसकी शरण में पहुँचकर निरुद्ध हो जाता है और अविनाशी मुक्त आत्माएँ जिसका आश्रय लेती हैं। हे सर्वाश्रय! आप स्तोताओं को अन्न, ज्ञान, दिव्य प्रेरणा और अभीष्ट मोक्षपद प्रदान कीजिए।

(ख) मैं अग्नि=उन्नत पुरुष उसे मानता हूँ जो संसार में रहने का ढंग जानता है। मैं घर उसे मानता हूँ जिसमें गौएँ होती हैं। घर मैं उसे माना हूँ जिसमें तीव्रगामी घोड़े होते हैं, घर मैं उसे मानता हूँ जिसमें स्थिर बल, ज्ञान और त्याग-वृत्तिवाले मनुष्य निवास करते हैं। स्तोता वे हैं जिनके लिए प्रभु प्रेरणा प्राप्त कराते हैं, अन्न-सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त कराते हैं और अन्त में मोक्ष प्राप्त कराते हैं।

ऋषिः-वसुश्रुत आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-पंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

१७३८. अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः।
अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर।।

सर्वद्रष्टा [सबकी देख-भाल करनेवाला] प्रकाशस्वरूप परमात्मा ही संसार में प्रविष्ट अथवा परमात्मा में प्रविष्ट [परमात्मा के प्रति समर्पित] प्रत्येक उपासक को आत्म-बल प्रदान करता है। वह अग्रनायक परमात्मा प्रसन्न-कृपालु हुआ प्रिय उपासक के लिए अपने साक्षात् स्वरूप को प्राप्त कराता है। वह वरण करनेयोग्य उपासक को प्राप्त हो जाता है अथवा उपासक को वरणीय ब्रह्मतेज प्राप्त कराता है। हे अग्रनायक परमात्मन्! आप सभी स्तुतिकर्ताओं को उनका अभीष्ट-मोक्ष-सुख प्रदान कीजिए।

ऋषिः-वसुश्रुत आत्रेयः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-पंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

१७३९. सो अग्निर्यो वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः।
समर्वन्तो रघुद्रुवः सं सुजातासः सूरय इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

जो प्रकाशस्वरूप परमात्मा सबमें बसने और सबको बसाने से, सबका आश्रय दाता होने से सबके द्वारा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तुत किया जाता है, सब ज्ञानेन्द्रियाँ जिसकी शरण में जाती हैं, वेद-वाणियाँ जिसका गुण-गान करती हैं, अत्यन्त तीव्रगामी मन जिसकी शरण में जाते हैं और संयत इन्द्रिय, मन, बुद्धिवाले विद्वान् जिसकी शरण में जाते हैं—ऐसे आप हे प्रभो! उपासकों को अभीष्ट—मोक्ष-सुख प्रदान कीजिए।

सूक्त—११

ऋषिः–सत्यश्रवा आत्रेयः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७४०. महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।।

हे अन्तरात्मा में प्रकाशित परमात्मज्योति! मोक्षधाम में ले-जानेवाली तू हमें इस जन्म में महान् मोक्षैश्वर्य की प्राप्ति के लिए जगा—हमें प्रबोध प्रदान कर। तू हमें निश्चय से उसी प्रकार जगा—बोध प्रदान कर जैसे पहले जन्मों में जगाती रही है। किस विषय में जगा? उत्तम सत्य ज्ञान की प्राप्ति में, आध्यात्मिक कर्म-पट (वस्त्र, तन्तु) के विस्तार में, वरणीय गुणों की प्राप्ति में, इन्द्रियों, मन और बुद्धि को संयमित करने में और व्यापक सत्य तथा व्यापक प्रेम में।

ऋषिः–सत्यश्रवा आत्रेयः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७४१. या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः।
सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।।

मोक्षधाम के आनन्दरस को उपासक में दुहनेवाली हे परमात्मज्योति! उपासक को उत्तमता से अध्यात्म-मार्ग में ले-चलनेवाली, प्रकाशमान एवं रमणीय रूपवाली तू हमारे अविद्या-अन्धकार को दूर करती हुई हमारे अन्दर प्रकाशित हो। तू उनके अन्दर भी प्रकाशित हो जो पाप और अज्ञान का पराभव करनेवाले हैं, सदा सत्य ज्ञान का श्रवण करनेवाले हैं, जो आध्यात्मिक कर्मों का विस्तार करनेवाले हैं, दिव्य गुणों को अपने जीवन में धारण करनेवाले हैं, इन्द्रियों, मन और बुद्धि को संयम में रखनेवाले हैं तथा मन, वचन और कर्म से सदा और सबके प्रति सत्य बोलते हैं, सबके साथ प्रेम करते हैं और दुःखों का नाश करनेवाले न्याययुक्त कर्म ही करते हैं।

ऋषिः–सत्यश्रवा आत्रेयः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७४२. सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः।
यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।।

मोक्षधाम के आनन्दरस को उपासक में दुहनेवाली परमात्मज्योति! तू हमें ज्ञानरूपी धन प्रदान कर और हमारे अविद्या-अन्धकार को दूर हटाकर हमारे अन्दर प्रकाशित हो। तू निश्चय ही उनके अन्दर भी प्रकाशित हो, जो पाप और अज्ञान को नष्ट करनेवाले हैं, सदा सत्य ज्ञान का श्रवण करनेवाले हैं, जो आध्यात्मिक कर्मों का विस्तार करनेवाले हैं, दिव्य गुणों को अपने जीवन में धारण करनेवाले हैं, इन्द्रियों, मन और बुद्धि को संयम में रखनेवाले हैं, तथा मन, वचन और कर्म से सदा और सबके प्रति सत्य बोलते हैं, सबके साथ प्रेम करते हैं और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दुःखों का नाश करनेवाले न्याययुक्त कर्म ही करते हैं।

सूक्त—१२

ऋषिः–अवस्युरात्रेयः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७४३. प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम्।
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम्।।

(क) हे स्त्री-पुरुषो ! तुम्हारा अत्यन्त प्रिय, सुखवर्षी, कामनापूरक, मोक्षैश्वर्य को प्राप्त करानेवाला, प्रत्येक मनुष्य के शरीर-रथ को एकर्षि परमेश्वर सुन्दर रूपों और आकृतियों द्वारा अलंकृत करता है। वही परमेश्वर जीवन-सम्बन्धी आदर्शों का भी कथन करता है और वेदमन्त्रों के उपदेश द्वारा तुम्हारे मन और आत्माओं को भी समलंकृत करता है। अपने जीवनों को सद्गुणों से अलंकृत करते हुए तुम दोनों मधुररूप बन जाओ—सबके प्रिय बन जाओ। हे स्त्री-पुरुषो ! तुम दोनों मेरे [परमात्मा के] इस कथन—आदेश, उपदेश को ध्यानपूर्वक सुनो।

(ख) हे प्राणापानो ! आपके संयम के द्वारा—प्राणसाधना के द्वारा प्रभु का स्तवन करनेवाला तत्त्वद्रष्टा उपासक अत्यन्त प्रिय, शक्तिशाली, अभ्युदय और निःश्रेयसरूपी सम्पत्तियों को प्राप्त करानेवाले इस शरीररूप रथ को अंग-प्रत्यंग में सुभूषित करता है। हे मधुर प्राणापानो ! मेरी पुकार को सुनो। आपकी साधना से मैं अपने शरीर-रथ को शुभगुणों से सभूषित कर पाऊँ।

ऋषिः–अवस्युरात्रेयः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७४४. अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना।
दस्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्णा सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम्।।

हे सद्गृहस्थ स्त्री-पुरुषो ! तुम्हारा मार्ग-दर्शक एकर्षि **मैं** [परमेश्वर] सदा तुम्हारी सब पाप-वासनाओं को तिरस्कृत करता हूँ, तुम्हारी विघ्न-बाधाओं को परे धकेलता हूँ। पाप-शून्य और विघ्न-बाधाओं से रहित होकर तुम मेरी ओर आओ और सदा अपने दोषों, दुर्गुणों का क्षय=विनाश करते रहो। सदा हितकर और रमणीय धर्ममार्ग में चलते रहो, सदा प्रसन्नचित्त—हँसते-मुस्कराते रहो, अपने हृदय-समुद्र में सदा भक्ति और प्रेम का रस बहाया करो, मधुररूप होकर सबकी प्रीति के पात्र बनो। मेरे इस कथन को ध्यानपूर्वक सुनो।

ऋषिः–अवस्युरात्रेयः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७४५. आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम्।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम्।।

हे स्त्री-पुरुषो ! शम-दम, विवेक-वैराग्य आदि रत्नों=दिव्य गुणों को धारण करते हुए तुम दोनों मेरी [परमेश्वर की] ओर आओ। तुम दोनों पापों के प्रति भयंकर बनो—पापों को जीवन में प्रविष्ट न होने दो; हितकर, रमणीय और ज्योतिर्मय मार्ग में आगे बढ़ते रहो; प्रीतिपूर्वक एक-दूसरे की और प्राणिमात्र की सेवा करो; ज्ञान, बल और त्यागरूपी धन को प्राप्त करो; मधुररूप होकर सबके प्रिय बन जाओ। मेरे इस आदेश

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और उपदेश को ध्यानपूर्वक सुनो।

सूक्त—१३

ऋषिः-बुधगविष्ठिरावात्रेयौ। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २
१७४६. अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३१२ ३ २ ३ १ २
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ।।

ब्रह्मचर्य-आश्रम में पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोकरूपी समिधाओं द्वारा—आचार्यरूप अग्नि से—त्रिलोकी के ज्ञान द्वारा ब्रह्मचारीरूप अग्नि प्रज्वलित की जाती है। गृहस्थ-आश्रम में यह प्रत्येक आनेवाली उषा में अर्थात् प्रतिदिन मनुष्यों के लिए दुधारू गौ के समान होता है। जैसे गौ अपने दूध से प्रजा का पालन-पोषण करती है, उसी प्रकार यह गृहस्थ पञ्चयज्ञों के द्वारा प्राणिमात्र का पालन-पोषण करता है। जैसे पक्षी बड़े होकर वृक्ष की शाखा को छोड़ने की इच्छावाले होते हैं, उसी प्रकार यह भी अब गृहस्थ को त्यागकर वनस्थ होने का संकल्प लेता है और वन में साधना के द्वारा सूर्य के समान चमकता हुआ यह संन्यासी बनकर मोक्ष की ओर बढ़ता जाता है।

ऋषिः-बुधगविष्ठिरावात्रेयौ। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१७४७. अबोधि होता यजथाय देवानूर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात्।
१ २ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३१ २र ३ १ २
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान् देवस्तमसो निरमोचि।।

सकल इष्ट पदार्थों का दाता, उपासकों को स्वीकार करनेवाला ज्ञानस्वरूप परमेश्वर उपासना-यज्ञ करने के लिए उपासकों में शम-दम, श्रद्धा-भक्ति, ज्ञान-वैराग्य आदि दिव्य गुणों को जाग्रत् करता है। प्रसन्न—कृपालु हुआ वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा जीवन की प्रभातवेला में—उठते हुए यौवनकाल में आत्मा में साक्षात् होता है, जरा-अवस्था में नहीं। सम्यक् रूप से आत्मा में प्रदीप्त हुए परमात्मा के चमकते हुए दिव्य तेज का उपासक प्रत्यक्ष साक्षात्कार करता है। देवों का देव वह महादेव परमात्मा प्रत्यक्ष होने पर अपने उपासकों को अविद्या-अन्धकार से और सांसारिक दुःखों से—त्रिविध तापों से मुक्त कर देता है।

ऋषिः-बुधगविष्ठिरावात्रेयौ। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१७४८. यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आद्दक्षिणा युज्यते वाजयन्त्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः।।

जो साधक ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय पञ्चक के गणों की मनरूपी लगाम को अच्छी प्रकार से वश में कर लेता है, उसे प्रकाशमान और सबको आगे ले-जानेवाला परमात्मा पवित्र ज्ञान-धाराओं से युक्त कर देता है और उपासक की ज्ञान, धन, बल तथा अन्न-प्राप्ति की कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। उपासकों की स्तुति-वाणियों से प्रसन्न—कृपालु बना हुआ परमात्मा इन उपासकों को तरंगों में उछलती हुई अपनी आनन्दरसधारा का पान कराता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१४

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

१७४९. इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ठ विभ्वा।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २

यथा प्रसूता सवितुः सवायैवा रात्र्युषसे योनिमारैक्।।

यह सर्वोत्कृष्ट और सर्वोत्तम ज्योतियों की ज्योति—ब्रह्म ज्योति मेरे अन्दर प्रकट हो गई है। यह अद्भुत ज्योति प्रकृष्ट ज्ञानमय है और सारे विषयों का ज्ञान प्राप्त करानेवाली है—ऐसी यह ज्योति मुझमें प्रादुर्भूत हो गई है। जैसे उत्पन्न हुई उषा सूर्य के आगमन के लिए होती है और रात्रि उषा के लिए स्थान खाली कर देती है, उसी प्रकार तमोगुण, अविद्या-अन्धकार और पाप-वासनाएँ हमसे दूर हों और परमात्म-ज्योति हमें प्राप्त हो।

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र

१७५०. रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २

समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने।।

यह श्रेष्ठ ब्रह्मज्योति ज्ञानप्रकाशक वेदरूपी वत्स=बछड़ेवाली है, स्वयं प्रकाशमयी है—यह अत्यन्त निर्मल है, ऐसी यह ब्रह्मज्योति मुझ उपासक में प्रकट हो गई है। इस ब्रह्मज्योति के निवास-स्थानों—मन, बुद्धि, चित्त अहंकार को पाप-वासनाओं ने रिक्त कर दिया है अर्थात् ब्रह्मज्योति के प्रकाश में मन, बुद्धि आदि सभी पवित्र हो गये हैं। उनमें पाप का लेश भी नहीं रहा। ब्रह्मज्योति और पाप-वासना—ये दोनों समान आश्रयवाली—आत्मा में अनुभूत होनेवाली हैं। ये दोनों ही अपने-अपने रूपों में चमकती हुई विचरण करती हैं और एक-दूसरे के स्वरूप को विनष्ट करती है। ब्रह्मज्योति के उदित होने पर पाप-वासनाएँ नष्ट हो जाती हैं और पाप-वासनाओं के प्रबल होने पर ब्रह्मज्योति का दर्शन असम्भव है।

ऋषिः–कुत्स आंगिरसः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ २उ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २

१७५१. समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे।।

ब्रह्मज्योति और पाप-वासना—दोनों बहिनों के समान हैं। इनकें विचरने का मार्ग भी एक ही है और वह अन्तरहित—प्रवाह से अनादि है। मन की स्थिति के अनुसार दोनों अपने-अपने मार्ग में भिन्न-भिन्न कार्य करती हैं, ब्रह्मज्योति मोक्ष में ले-जाती है और पाप-वासना भोग—संसार में ले-जाती है। जिसमें कल्याण नहीं सूझता वह पाप-वासना और बोध प्रदान करनेवाली ब्रह्मज्योति—ये दोनों भिन्न-भिन्न रूपवाली हैं और एकमन से अनुभूत होनेवाली हैं। नियम में बद्ध ये दोनों न तो परस्पर मिलती हैं और न ठहरती हैं—उपासक में ब्रह्मज्योति और भोगप्रवण मनुष्य में पाप-वासना चलती रहती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—१५

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१७५२. आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः।
अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवासमश्विना घर्ममच्छ।।

अभीष्ट कामनाओं का आधार–पूरक प्रकाशस्वरूप परमात्मा उपासक के आत्मा में, हृदय में, प्राणों में, मन और बुद्धि में भासित होता है–चमक उठता है। मेधावी उपासकों की परमेश्वर को चाहने और प्राप्त करानेवाली स्तुति-वाणियाँ श्रद्धा और भक्ति से उच्चारित की जाती हैं। हे ज्योति एवं आनन्दस्वरूप परमात्मन्! रमणीय मोक्षधाम के स्वामिन्! आप हमारे अभिमुख होओ। आप हमारे जीवन-यज्ञ में आइए और हमारी वृद्धि के साधनभूत आध्यात्मिक यज्ञों में भी आइए तथा इन्हें सफल बनाइए।

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१७५३. न संस्कृतं प्रमिमीतो गमिष्ठान्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह।
दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्त्तिं दाशुषे शम्भविष्ठा।।

हे ज्योति एवं आनन्दस्वरूप परमेश्वर! श्रद्धा-भक्ति द्वारा स्तुत किये गये आप हमारे शम-दम आदि शुभ गुणों से सुसंस्कृत जीवन-यज्ञ को हिंसित नहीं करते, उसकी उपेक्षा नहीं करते अपितु उसे बढ़ाते ही हो। प्रभो! मेरे जीवन-यज्ञ में अवश्य ही मेरे समीप आओ–मुझे अपने दर्शनों से वञ्चित मत करो। प्रातः और सायं दोनों समय मेरी उपासना में अपनी रक्षण-शक्तियों के साथ मेरे हृदय-मन्दिर में अवश्य आइए–अपना साक्षात् दर्शन दीजिए। सब प्रकार की वृत्तियों से शून्य मनवाले और आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक का आप कल्याण कीजिए–उसे परमानन्द प्रदान कीजिए।

ऋषिः–अत्रिः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१७५४. उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य।
दिवा नक्तमवसा शन्तमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान।।

हे ज्योतिस्वरूप एवं आनन्दरसरूप परमेश्वर! हमारी इन्द्रियों को स्वस्थ, संयमित और चञ्चलतारहित रखने के लिए आप आइए, हमें अपना दर्शन दीजिए। कब? सूर्योदय के समय, दोपहर पहले, दोपहर बाद (मध्याह्न में), दिन में, रात में अर्थात् सब कालों में अपने कल्याणकारी रक्षा-साधनों से अथवा अपने शान्तिदायक ब्रह्मानन्दरूपी अन्न के साथ आया करो–अपना दर्शन प्रदान किया करो। आपका आनन्दरस प्राप्त होने पर अब इन्द्रियाँ विषयों के रस का सेवन नहीं करतीं–वे भोग-विलास से विरक्त हो जाती हैं।

सूक्त—१६

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१७५५. एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते।
निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अज्ञान को भस्म करनेवाली विवेकमयी आध्यात्मिक उषाओं ने मेरे जीवन के पूर्वार्द्ध अर्थात् यौवन में ही मुझमें ऋतम्भरा प्रज्ञा को प्रकट कर दिया है और सूर्यों के सूर्य परमेश्वर को भी अभिव्यक्त कर दिया है। जैसे शूरवीर योद्धा युद्ध के अवसर पर अपने-अपने शस्त्रों को चमकाते हैं, वैसे ही माता के समान योगी का निर्माण करनेवाली प्रकाशमान ज्ञान-रश्मियाँ=आध्यात्मिक उषाएँ मुझ उपासक को निर्मल करती हुई मेरे अन्दर प्रकट होती हैं।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१७५६. उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत।
अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः।।

प्रभु-कृपा से प्रकाशमान आध्यात्मिक ज्ञान-ज्योतियाँ अनायास हमारे जीवनों में प्रकट हो जाती हैं। स्वयं युक्त होनेवाली अत्यन्त देदीप्यमान ज्ञान-रश्मियाँ मुझ उपासक में युक्त हो जाती हैं अथवा स्वयं युक्त होनेवाली ये आरोचमान=चमकीली ज्ञान-रश्मियाँ इन्द्रियों को आत्मतत्त्व के चिन्तन में लगाती हैं। अज्ञान को भस्म करनेवाली ये आध्यात्मिक उषाएँ उपासक के मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को पूर्ववत् वृत्तिरहित बनाकर निर्मल कर देती हैं। निर्मल हुआ ज्ञान-ज्योति से देदीप्यमान यह उपासक अत्यन्त प्रकाशमान ज्ञानस्वरूप परमेश्वर का सेवन करता है—परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

ऋषिः–गोतमो राहूगणः। **देवता**–उषाः। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१७५७. अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः।
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते।।

सबका नेतृत्व करनेवाली आध्यात्मिक उषाएँ एक-जैसी योग-क्रियाओं के द्वारा तथा दूर देश तक व्यापक अपनी प्रभाओं के द्वारा कर्मशील उपासकों को परमात्मा की उपासना से जोड़ देती हैं। दोषों का दहन करनेवाली ये आध्यात्मिक उषाएँ निश्चय ही सब कालों में ~~शुभ—पुण्य~~-कर्म करनेवाले, दानशील अथवा आत्मसमर्पण करनेवाले, उपासना-रस का निष्पादन करनेवाले उपासक के लिए इष्ट कामनाओं को और सब सुखों को प्राप्त कराती हैं।

सूक्त—१७

ऋषिः–दीर्घतमा औचथ्यः। **देवता**–अश्विनौ। **छन्दः**–जगती। **स्वरः**–निषादः।

१७५८. अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्यू३षाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषा।
आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद्देवः सविता जगत् पृथक्।।

(क) हे ज्योति एवं आनन्दस्वरूप प्रभो! जब आप संसाररूप रथ को चलाने के लिए सम्यक् रूप से युक्त होते हो—ईक्षण करते हो तब पवित्र अग्नि प्रकट हो जाती है, सूर्य उदित हो जाता है, अत्यन्त प्रसन्नता प्रदान करनेवाली प्रभातवेला अपने तेज—प्रकाश के साथ प्रकट हो जाती है, वायुदेव और पृथक्-पृथक् जगत्—चेतन जगत्—प्राणिजगत् भी प्रकट हो जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(ख) प्राणापान की साधना शरीर में अग्नि= क्रियाशीलता को उत्पन्न करती है, इस साधना से मस्तिष्क में ज्ञानरूपी सूर्य उदित हो जाता है। इस ज्ञान-दीप्ति से हृदय में दोषों को दहन करनेवाली और हर्ष प्रदान करनेवाली पूजा की वृत्ति प्रकट होती है। इस प्राणापान की साधना जीवन-यात्रा के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शरीर-रूपी रथ को इन्द्रियरूपी घोड़ों के साथ जोतती है। इस उपासना-मार्ग पर चलता हुआ यह दिव्य गुण-सम्पन्न उपासक अपने अन्दर ज्ञान, कर्म व उपासना के उत्तम ऐश्वर्यों को उत्पन्न करता हुआ इस संसार-सागर से पार उतर जाता है—मुक्त हो जाता है।

ऋषि:-दीर्घतमा औचथ्यः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१७५९. यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम्।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि॥

(क) हे ज्योतिस्वरूप एवं आनन्दरसरूप परमात्मन्! जब आप संसार-रथ से भिन्न मनरूपी रथ को युक्त करते हैं, तब आप हमारे आत्मबल को तेज और माधुर्य से सींचते हैं—हम उपासकजनों में आनन्द-अमृत को प्रेरित करते हैं। प्रभो! आपकी कृपा से हम काम-क्रोध आदि के साथ होनेवाले संग्रामों में आध्यात्मिक धनों का सेवन करें—आध्यात्मिक धनों को प्राप्त करें।

(ख) जब प्राण और अपान शरीररूपी शक्तिशाली रथ में जुत जाते हैं तब ये हमारे बल को तेज और माधुर्य से सींच देते हैं अर्थात् शरीर में तेजस्विता और वाणी में माधुर्य आ जाता है। साधक प्राण-अपान को सम्बोधित करते हुए कहता है कि आप हम उपासकों में ज्ञान को प्रेरित कर दो [प्राणापान की साधना से मस्तिष्क ज्ञान-ज्योति से उद्दीप्त हो जाता है।] और हममें ऐसी शक्ति भर दो कि हम शूरवीरों द्वारा सम्भजनीय धनों को प्राप्त कर सकें—पुरुषार्थ द्वारा ही धन कमाएँ।

ऋषि:-दीर्घतमा औचथ्यः। **देवता**-अश्विनौ। **छन्दः**-जगती। **स्वरः**-निषादः।

१७६०. अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः।
त्रिवन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे॥

ज्योतिस्वरूप एवं आनन्दस्वरूप परमात्मा का आत्मा को वहन करनेवाला, इन्द्रियों, मन और बुद्धि—तीनों के तृप्त करनेवाला, अत्यन्त प्रशंसनीय, शीघ्रव्यापन-शक्तिवाला रमणीयस्वरूप हमारी ओर गति करे—हमें प्राप्त हो। स्तुति, प्रार्थना और उपासनारूप तीन बन्धनों से बाँधने योग्य, परमैश्वर्यशाली, सारे सौभाग्यों—ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य का भण्डार परमेश्वर हमारे लिए कल्याण प्राप्त कराए। वह दोपाये और चौपाये अर्थात् मनुष्य और तद्भिन्न पक्षी, पशु आदि सभी प्राणियों को सुख-शन्ति प्राप्त कराए।

सूक्त—१८

ऋषि:-अवत्सारः। **देवता**-पवमानः सोमः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१७६१. प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः। अच्छा वाजं सहस्रिणम्॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाले और सबको पवित्र करनेवाले हे परमेश्वर! आपकी आनन्दधाराएँ उपासकों को सांसारिक संगों से बचाती हैं और अनन्त शक्तियाँ प्रदान करती हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे द्युलोक से होनेवाली वृष्टिधाराएँ नाना प्रकार के अन्न, फूल, फल, ओषधियाँ व वनस्पतियाँ प्रदान करती हैं।

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
१७६२. अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति। हरिस्तुञ्जान आयुधा।।

सब दुःखों, रोगों, कष्ट-क्लेशों का हरण करनेवाला परमेश्वर सब आयुधों–इन्द्रियों, मन और बुद्धि को सुरक्षित, पालित और पोषित करता हुआ और मानवमात्र के हितसाधक ऋग्यजुः, साम और अथर्वरूप वेदरूपी काव्यों को उपदिष्ट करता हुआ हृदय-मन्दिर में प्राप्त होता है।

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २र
१७६३. स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः। श्येनो न वंसु षीदति।।

आनन्दधारा में प्राप्त होनेवाला और सबके जीवनों को पवित्र करनेवाला शान्तस्वरूप, स्वयं भयरहित और उपासकों की भयरहित शरण, राजा के समान नियामक एवं व्यवस्थापक, शोभन कर्मोंवाला वह परमेश्वर उपासकों द्वारा अन्वेषण किया जाता हुआ उनके हृदयों में स्थित हो जाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे–श्येन = बाज़ पक्षी अपने घोंसले में स्थित होता है।

ऋषिः–अवत्सारः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१७६४. स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि। पुनान इन्दवा भर।।

हे परम रसीले परमात्मन्! हमारे द्वारा स्तुत किये जाते हुए और हमारे जीवनों को पवित्र करते हुए आप सब धनों को–चाहे वे दैवी–आध्यात्मिक सम्पत्तियाँ हैं अथवा पार्थिव सम्पत्तियाँ हैं, हमें प्रभूत मात्रा में प्रदान कीजिए।

।। यहाँ आठवाँ प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ नवमः प्रपाठकः

प्रथमोऽर्धः

सूक्त–१

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७६५. प्रास्य धारा अक्षरन् वृष्णः सुतस्यौजसः। देवाँ अनु प्रभूषतः।।

सुखवर्षक और सब मनोरथों के पूरक, ऐश्वर्यस्वरूप और हृदय में प्रकट होनेवाले, ओजस्वी विद्वानों पर अपना प्रभाव डालनेवाले शान्तस्वरूप परमेश्वर की आनन्दधाराएँ सर्वत्र प्रवाहित हो रही हैं। आओ, इन आनन्दधाराओं में स्नान करो, डुबकियाँ लगाओ।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७६६. सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा। ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम्।।

आत्मारूप शर=बाण द्वारा ब्रह्म=परमात्मा का वेधन करनेवाले मेधावी और कर्मयोगी उपासक वेदवाणियों द्वारा परमेश्वर का गुणगान करते हुए उस अर्चनीय, प्राप्त और पान करने योग्य, प्रशंसनीय ज्योतिस्वरूप, हृदय में साक्षात् होनेवाले परमात्मा का अन्वेषण करते हैं और उसे प्राप्त करते हैं।

ऋषिः–नृमेधः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७६७. सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो। वर्धा समुद्रमुक्थ्य।।

हे प्रभूत धनैश्वर्य-सम्पन्न शान्तस्वरूप परमात्मन्! आपके सर्वप्रसिद्ध तेज, अपने आचार-विचार और जीवन को पवित्र करनेवाले उपासक की सब विघ्न-बाधाओं को पराभूत कर देते हैं। हे प्रशंसनीय प्रभो! आप उपासक के हृदय-समुद्र को अपनी आनन्दमयी तरंगों द्वारा तरंगित कर दीजिए।

सूक्त–२

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७६८. एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे।।

यह परमेश्वर ब्रह्मा=सबसे बढ़ा हुआ है, सबसे महान् है, सृष्टि को उत्पन्न करनेवाला है। यह ऋतु-ऋतु में—प्रत्येक ऋतु में उपासना करने योग्य है। वह वेदों में 'इन्द्र' नाम से प्रसिद्ध है। मैं ऐसे गुणों से युक्त परमेश्वर की स्तुति करता हूँ।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७६९. त्वामिच्छवसस्पते यन्ति गिरो न संयतः।।

हे बलों के स्वामी परमात्मन्! जैसे वेदवाणियाँ केवल आपको ही प्राप्त होती हैं—आपका ही वर्णन करती

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हैं, उसी प्रकार संयमी उपासक की स्तुतियाँ आपको ही प्राप्त होती हैं, क्योंकि वस्तुतः आप ही उपासनीय हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
१७७०. वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद् यन्तु रातयः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! जैसे स्रवण करनेवाली—बहनेवाली विविध पर्वतीय नदियाँ अपने-अपने मार्ग से पृथिवी को सींचती हैं, वैसे ही आपसे प्रवाहित होनेवाली दान-धाराएँ हमारा सेचन करें—हमें प्राप्त हों।

सूक्त–३

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–आनुष्टुभः प्रगाथः (अनुष्टुप्)। **स्वरः**–गान्धारः।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१७७१. आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम्।।

हे अत्यन्त बलिष्ठ परमात्मन्! हम अपनी रक्षा के लिए और सुख-प्राप्ति के लिए महान् कर्म करनेवाले, दुर्गति और कष्टों से बचानेवाले, सज्जनों के रक्षक, परमैश्वर्यशाली आपको रथ की भाँति पुनः-पुनः अपने जीवन में आवर्तित करते हैं—अपनी ओर अभिमुख करते हैं।

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–आनुष्टुभः प्रगाथः (गायत्री)। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २
१७७२. तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते। आ पप्राथ महित्वना।।

हे अनन्त बल-सम्पन्न, अनन्तकर्म और संकल्पवाले, वेदवाणी के स्वामी, प्रज्ञानधन परमात्मन्! आप अपनी विश्वव्यापिनी महिमा से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्यापक हो रहे हैं।

ऋषिः–प्रियमेधः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–आनुष्टुभः प्रगाथः (गायत्री)। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
१७७३. यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः। हस्ता वज्रं हिरण्ययम्।।

हे परमेश्वर! अपनी महिमा से महान् जिस आपके निग्रह और अनुग्रहरूप दो हाथों ने पृथिवी के नियामक, हितकारी और रमणीय, न्यायरूप वज्र को पूर्णतया ग्रहण किया हुआ है, मैं उपासक उन आपका स्मरण करता हूँ, उन आपकी उपासना करता हूँ।

सूक्त–४

ऋषिः–दीर्घतमा औचथ्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २
१७७४. आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेदत्यः कविर्नभन्यो३नार्वा।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सूरो न रुरुक्वाञ्छतात्मा।।

जो अनन्त जीवों का आत्मा है वह परमेश्वर नर-नारियों की क्रीड़ा-स्थली बनी शरीररूपी पुरी को प्रकाशित करता है और मोक्ष प्रदान करके नष्ट भी करता है। वह परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त है वह वेदकाव्य का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपदेष्टा और क्रान्तदर्शी है, वह आकाशीय विद्युत् के समान गतिशील है तथा सूर्य के समान तेजस्वी और प्रदीप्त है।

ऋषिः–दीर्घतमा औचथ्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१७७५. अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात्।
होता यजिष्ठो अपां सधस्थे।।

दो साधनों अभ्यास और वैराग्य, स्वाध्याय और योग, देहरूपी अधरा-अरणि और प्रणवरूपी उत्तर-अरणि द्वारा आत्मा में प्रकाशित होनेवाला; अग्नि, विद्युत् और सूर्य–इन तीन ज्योतियों को और अन्य सब लोक-लोकान्तरों को प्रकाशित करता हुआ, सबको अपनानेवाला, अत्यन्त दानशील, संसार-यज्ञ का प्रकाशक परमात्मा आप्तजनों–उपासक आत्माओं के हृदय में [जोकि आत्मा और परमात्मा दोनों का निवास-स्थान है] विराजमान है।

ऋषिः–दीर्घतमा औचथ्यः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१७७६. अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या।
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश।।

वह सबको अपनानेवाला और अत्यन्त दानशील, अभ्यास और वैराग्य, योग और स्वाध्याय, देहरूपी अधर-अरणि और प्रणवरूप उत्तर-अरणि के द्वारा साक्षात् होनेवाला परमात्मा सब वरण करनेयोग्य पदार्थों तथा नाना प्रकार के अन्नों, धनों और यश-योग्य प्रशंसनीय कर्मों को धारण करता है। जो मरणधर्मा मनुष्य उस सर्वरक्षक परमेश्वर के प्रति आत्मसमर्पण कर देता है, वह परमेश्वर का सच्चा सुपुत्र है। वह उत्तम सन्तानोंवाला होता है, उत्तम गृहस्थ होता है और जीवन में सर्वविध उन्नति करता है।

सूक्त–५

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पदपंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७७७. अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम्। ऋध्यामा त ओहैः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हम आज ही–इसी जीवन में सर्वप्रसिद्ध आपको, जो आप कि हमें आप तक बहा ले-जानेवाले–अपने-आपको प्राप्त करानेवाले, अश्व के समान हमारे अभीष्टों को सिद्ध करनेवाले, हमारे संकल्प और क्रियाशीलता के अनुसार हमारा कल्याण करनेवाले, प्रतिक्षण हृदय को छूनेवाले–उत्तम कर्म करने के लिए उद्यत होने पर आनन्द, उत्साह और प्रसन्नता तथा बुरे कर्म का संकल्प करने पर भय, शंका और लज्जा उत्पन्न करनेवाले हैं, स्तुति-समूहों के द्वारा अपने अन्दर धारण करते हैं।

ऋषिः–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पदपंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७७८. अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः। रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! जब उपासक आपको प्राप्त करानेवाले स्तुति-समूहों से आपको अपने अन्दर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

धारण करता है, तब निश्चय ही आप उसे तीन तत्त्वों के प्रपाक=प्राप्त करानेवाले और नेता होते हो—आप उसे शुभ संकल्प और शुभ क्रियाशीलता प्राप्त कराते हो, उसे सर्वमनोरथों को सिद्ध करनेवाली चतुरता प्रदान करते हो और महान् मोक्षपद प्राप्त कराते हो।

ऋषि:–वामदेवः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–पदपंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७७९. ऐभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ्क्स्वा३र्ण ज्योतिः। अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप हमारे इन अर्चन-मन्त्रों के द्वारा हमारे अभिमुख—सम्मुख हो जाइए—हमारे हृदय-सदन में प्रकट हो जाइए। आप सूर्य के समान ज्योतिस्वरूप हैं, अतः आप अपने सब तेजों के द्वारा हमारे लिए कल्याण-मन—कल्याणकारी हो जाइए और हमें भी उत्तम मनवाला बना दीजिए।

सूक्त—६

ऋषि:–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–अग्निरश्विनावुषाश्च। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१७८०. अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः।।

हे प्रकाशस्वरूप, अविनाशी परमात्मन्! आप हमें स्वप्रकाशस्वरूप मोक्षधाम के विशेष सुखवाले अलौकिक ऐश्वर्य को प्राप्त कराइए। हे वेदों के प्रकाशक! सर्वज्ञ और सर्वव्यापक परमात्मन्! आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक को आप इसी जीवन में अविद्या-अन्धकार से पृथक् करके मोक्षानन्द का अनुभव करनेवाले मुक्त-आत्माओं की ओर ले-जाइए अर्थात् इन्हें जीवन्मुक्तों का संग और मोक्ष प्राप्त कराइए।

ऋषि:–प्रस्कण्वः काण्वः। **देवता**–अग्निरश्विनावुषाश्च। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१७८१. जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रथीरध्वराणाम्।
सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यमस्मे धेहि श्रवो बृहत्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! संसार-चक्र के सञ्चालक जगन्नेता प्रभो! उपासकों द्वारा प्रीतिपूर्वक सेवन व उपासित किये गये आप उनके पापों को भस्म करके उन्हें शुद्ध कर डालते हैं और उन्हें जीवन में आगे बढ़ाते हैं। आप उपासकों को सांसारिक और आध्यात्मिक भोग्य पदार्थों और सुख-शान्ति को प्राप्त करानेवाले हैं तथा सब हिंसा-शून्य यज्ञों के सञ्चालक हैं। प्राणापान की साधना और हमारे दोषों के द्वारा आप हमें शोभन बल—आत्मबल और महान् ज्ञान, महाधन=मोक्ष और महान् यश प्रदान कीजिए।

सूक्त—७

ऋषि:–बृहदुक्थो वामदेव्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१७८२. विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विविध कामनाओंवाले, युद्ध में शत्रुओं को फाड़ डालनेवाले युवा पुरुष को भी बुढ़ापा निगल जाता है। हे उपासक! जीवन-मृत्यु के रहस्य को जानने के लिए परमात्मा के कला-शिल्प और वेदरूपी काव्य को देखो, उस ब्रह्म की महती शक्ति से जो कल श्वास ले रहा था—जीवित था, वही आज मर गया।

ऋषिः–बृहदुक्थो वामदेव्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१७८३. शाक्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीडः।
यच्चिकेत सत्यमित्तन्न मोघं वसु स्पार्हमुत जेतोत दाता।।

वह परमेश्वर अपनी शक्ति से ही शक्तिमान्—सर्वसमर्थ है अथवा जगद्रचनरूप कर्म के लिए पूर्ण समर्थ है—अपने कर्मों को करने के लिए किसी की सहायता नहीं लेता। वह सब पदार्थों का प्रकाशक है, सुन्दर रीति से प्राणिमात्र का पालन-पोषण करनेवाला, महा तेजस्वी—सबसे महान् और अत्यन्त तेजस्वी है। वह शूरवीर, सनातन और गृहरहित अर्थात् सर्वव्यापक है। वह जो कुछ जानता है सत्य ही जानता है, वह व्यर्थ या असत्य नहीं जानता। वही सब कमनीय वस्तुओं का विजेता और दाता है—ऐसा वह प्रभु हमारे पास आये—हमें प्राप्त हो।

ऋषिः–बृहदुक्थो वामदेव्यः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१७८४. ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय वज्री।
ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न ऋतेकर्ममुदजायन्त देवाः।।

मुमुक्षु उपासक किये जाते हुए महत्त्वपूर्ण कर्मों की सफलता के लिए परमेश्वर को सदा अपने सम्मुख रखते हैं, क्योंकि ऐसे महत्त्वपूर्ण कर्म परमेश्वर की सहायता के बिना सफल नहीं हो सकते। परमेश्वर इन मुमुक्षु उपासकों द्वारा सुखवर्षक, पौरुषयुक्त कर्म कराता है और न्याय वज्रधारी परमेश्वर इनमें पाप-वृत्र के नाश के लिए शक्ति सींच देता है।

सूक्त—८

ऋषिः–बिन्दुः पूतदक्षो वा। **देवता**–मरुतः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७८५. अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना।।

हे उपासको! परमात्मा का आनन्दरस हृदय-मन्दिर में निष्पादित किया गया है। संसार के विषयों के पीछे न भागनेवाले अनासक्त पुरुष, अपनी शक्ति से देदीप्यमान नियमित जीवनवाले तेजस्वी उपासक और प्राणापान की साधना करनेवाले योगी इस आनन्दामृत का पान करते हैं।

ऋषिः–बिन्दुः पूतदक्षो वा। **देवता**–मरुतः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१७८६. पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः। त्रिषधस्थस्य जावतः।।

सबके साथ स्नेह करनेवाले, काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नियमन करनेवाले, व्रतों में बाँधकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बना देनेवाले व्यक्ति परम पवित्र—पाप से सर्वथा रहित, संसार के रचयिता, त्रिलोकी—पृथिवी,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अन्तरिक्ष और द्युलोक के स्वामी परमात्मा के आनन्दरस का पान करते हैं।

ऋषिः–बिन्दुः पूतदक्षो वा। **देवता**–मरुतः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १२ ३ १ २र
१७८७. उतो न्वस्य जोषमा इन्द्रः सुतस्य गोमतः। प्रातर्होतेव मत्सति।।

इन्द्रियों का अधिष्ठाता जीवात्मा पृथिवी के स्वामी और सृष्टिकर्ता परमेश्वर के आनन्दरस का पान करके निश्चय ही ऐसे प्रसन्न हो जाता है जैसे प्रातःकाल यज्ञ करनेवाला होता प्रसन्न होता है।

सूक्त–९

ऋषिः–जमदग्निर्भार्गवः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१७८८. बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि।।

उपासक प्रभु के आनन्दरस का पान करते हुए कह उठता है–हे सूर्यों के सूर्य! सचमुच आप महान् हैं–अत्यन्त आदरणीय हैं, तेजस्विता के पुञ्ज होने के कारण आपकी महिमा अत्यन्त स्तुत्य है। हे प्रकाशकों के प्रकाशक! आनन्दप्रद परमेश्वर! आप अपनी महिमा के कारण महान् हैं।

ऋषिः–जमदग्निर्भार्गवः। **देवता**–सूर्यः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१७८९. बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि।
३ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम्।।

हे सूर्यों के सूर्य परमात्मन्! यह सत्य है कि आप अपने ज्ञान और यश के कारण महान् हैं। हे प्रकाशकों के प्रकाशक परमेश्वर! आप सचमुच महान् हैं–पूजनीय और समादरणीय हैं। आप अपनी महिमा के कारण उपासक विद्वानों के प्राणरूप हैं–विद्वानों को प्राणशक्ति प्रदान करते हैं। आप उपासकों के सम्मुख ध्येयरूप में निहित हैं। आप किसी के द्वारा न दबाये जा सकनेवाले और अविनाशी हैं। आप सर्वव्यापक और ज्योतिस्वरूप हैं।

सूक्त–१०

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १२ ३ २
१७९०. उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम्।।

हे आनन्दों के स्वामी परमेश्वर! उपासक भक्तों द्वारा पवित्र किये गये हृदय में आप शीघ्र पधारिए–अपने दर्शन दीजिए। अपनी आकुलता और विह्वलता को प्रदर्शित करने के लिए भक्त पुनः कह उठता है–हे प्रभो! भक्तों द्वारा पवित्र किये गये हृदय में आप अवश्य आइए।

ऋषिः–सुकक्षः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
१७९१. द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः। उप नो हरिभिः सुतम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो परमैश्वर्यशाली परमेश्वर दो स्वरूपोंवाला—दो प्रकार का जाना जाता है अर्थात् जो पाप-वृत्रों का अतिशय हनन करनेवाला और अर्थापत्ति से पुण्यों का पोषण करनेवाला है, जो नानाविध जगत् का रचयिता और सैकड़ों प्रज्ञानों का प्रदाता है—ऐसा वह परमेश्वर अपने मनोहरी तेजों के साथ हम उपासकों के पवित्र हृदय-मन्दिर में अवश्य आये—प्रकट हो जाए।

ऋषिः-सुकक्षः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-गायत्री। **स्वरः**-षड्जः।

१७९२. त्वं हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि। उप नो हरिभिः सुतम्।।

हे पाप-वृत्रों के नाशक परमेश्वर! आप ही इन उपासना-रसों अथवा उपासना-यज्ञों के रक्षक हैं, अतः उपासित हुए आप हम उपासकों के निर्मल हृदय-सदन में पधारिए—अपने दर्शनामृत का पान कराइए।

सूक्त—११

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-विराडनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१७९३. प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्र चेतसे प्रसुमतिं कृणुध्वम्।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः।।

हे उपासको! तुम अपनी महान् वृद्धि—उन्नति के लिए सर्वमहान् परमेश्वर के प्रति आत्मसमर्पण कर दो। प्रकृष्ट ज्ञानी, सर्वज्ञ और प्रकृष्ट चेतनावाले परमेश्वर की प्राप्ति के लिए उसकी शोभन स्तुति करो और अपनी मति=बुद्धि को कल्याणी मति बनाओ—अपनी बुद्धियों को श्रेष्ठ बनाओ। हे परमेश्वर! आप उपासकों की कामनाओं को पूर्ण करनेवाले हैं। आप उनकी कामनापूर्ति के लिए शाश्वत श्रेष्ठ प्रजाओं के हृदय में विचरिए और उनमें उत्तम विचारों की प्रेरणा कीजिए।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-विराडनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१७९४. उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः।
तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः।।

मेधावी उपासक महा विस्तारवाले—सर्वव्यापक, सर्वमहान् परमैश्वर्यशाली परमेश्वर के लिए उन प्रार्थना-मन्त्रों का उच्चारण करते हैं जिनसे उपासकों के अन्याय-आचरण और दुःखों का नाश होता है तथा जीवन की गति उत्तम होती है। धीर उपासक परमेश्वर द्वारा उपदिष्ट व्रतों=नियमों का उल्लंघन नहीं करते—उसके नियमों को नहीं तोड़ते।

ऋषिः-वसिष्ठः। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-विराडनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१७९५. इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै।
हर्यश्वाय बर्हया समापीन्।।

विप्र तथा धीर उपासक पापों का पराभव करने के लिए सदा वेद-वाणियों को अपने हृदय में धारण करते

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हैं और विश्वब्रह्माण्ड के सच्चे सम्राट्, अबाधित तेजवाले, परमैश्वर्यशाली परमेश्वर को भी अपने हृदय मे धारण करते हैं। हे उपासक! तू मनोहारी और सर्वव्यापक परमात्मा की प्राप्ति के लिए अपने सम्बन्धियों— बन्धु-बान्धवों और मित्रों को भी इस मार्ग में बढ़ाया कर।

सूक्त—१२

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (बृहती)। **स्वरः**–मध्यमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र

१७९६. यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! ज्ञान आदि जितने ऐश्वर्यों के आप स्वामी हैं, यदि मैं भी उतने ऐश्वर्यों का स्वामी होता तो अपने स्तोता को निश्चय से धारण करता—उसे सब-कुछ दे डालता। रदावसो=अभिमानी, नास्तिक वृत्तिवाले धनी पुरुषों के धन को समाप्त कर देनेवाले प्रभो! मैं भी पाप-वृद्धि के लिए कभी धन न दूँ। रदावसो=हे धन की खान परमात्मन्! आप पापी को मत दीजिए परन्तु अपने उपासक को उत्तम निवास के लिए आवश्यक धन तो अवश्य प्रदान कीजिए।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–बार्हतः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**–पञ्चमः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २

१७९७. शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद् विदे।

२र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २

न हि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता च न।।

प्रभु स्तोता के उपालम्भ का उत्तर देते हुए कहते हैं—लोकहित और सर्वभूतहित के द्वारा मेरी सच्ची उपासना करनेवाले स्तोता के लिए मैं निश्चय ही उसके योग-क्षेम के लिए आवश्यक धनों को प्रतिदिन देता ही हूँ। इस ब्रह्माण्ड में चारों ओर कहीं भी होने—बसनेवाले अपने स्तोता को मैं आवश्यक धन अवश्य देता हूँ। इस उत्तर को सुनकर स्तोता कहता है—हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपसे भिन्न हमारा उत्तम मित्र और कोई नहीं है और आपके सिवाय सच्चा रक्षक भी कोई नहीं है। आप ही हमारे बन्धु और पिता हैं, अतः आप ही हमारा पालन-पोषण कीजिए।

सूक्त—१३

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २

१७९८. श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेर्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम्।

३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ २

कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा।।

हे परमेश्वर! आपके आनन्दरस के पान करने के इच्छुक, धर्म और योग-मार्ग में, अपने कर्त्तव्य कर्मों में पर्वत के समान दृढ़ रहनेवाले उपासक की पुकार को सुनिए और आपकी अर्चना करनेवाले तथा अपना पूरण करनेवाले उपासक की मनोवाञ्छा को जानिए। आप उपासकों को जीवन-यात्रा के लिए आवश्यक धन प्राप्त कराइए और ऐसी कृपा कीजिए कि हम सदा आपकी समीपता का सेवन करनेवाले हों।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१७९९. न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान्।
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि।।

हे परमेश्वर! संसार-सागर से पार उतारनेवाले, अविद्या और दुरितों के नाशक आपकी वेदवाणियों की मैं जानते हुए उपेक्षा नहीं करता—सदा वेदवाणियों के उपदेश के अनुसार चलता हूँ। प्राणशक्ति देनेवालों में सर्वोत्तम आपकी उत्तम स्तुति को भी मैं नहीं भूलता हूँ। मैं तो सदा आपके यशोरूप 'ओम्' नाम का बारम्बार उच्चारण करता हूँ।

ऋषिः–वसिष्ठः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–विराडनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१८००. भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित्।
मारे अस्मन्मघवं ज्योक्कः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपकी प्राप्ति के लिए मनुष्य-समाज में खूब यज्ञ किये जा रहे हैं। मननशील उपासक बार-बार आपको ही पुकारते हैं। आप तो हमारे समीप ही वर्तमान हैं, अतः देरी मत कीजिए, शीघ्र दर्शन दीजिए।

सूक्त—१४

ऋषिः–सुदाः पैजवनः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–शक्वरी। **स्वरः**–धैवतः।

१८०१. प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत
अभीके चिदु लोककृत् संगे समत्सु वृत्रहा।
अस्माकं बोधि चोदिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु।।

हे उपासको! तुम लोग परमैश्वर्यशाली परमात्मा के सदा स्थिर रहनेवाले बल को अपने आत्मा में धारण करो अर्थात् तुम भी परमात्मा जैसे शक्तिशाली बनो। परमेश्वर की समीपता में रहने पर वह निश्चय ही अपना दर्शन देता है और सहायता प्रदान करने के अवसर पर सहायता प्रदान करता है। परमेश्वर का संग होने पर वह काम-क्रोध आदि के साथ होनेवाले देवासुर-संग्रामों में पापों को नष्ट करता है। हे प्रभो! आप हमें बोध और सुप्रेरणा प्रदान कीजिए। आप ऐसी कृपा कीजिए कि कुत्सितजनों की हमें अभिभव=पराजित करनेवाली दुर्भावनाएँ उनके हृदय-आकाश में ही नष्ट हो जाएँ।

ऋषिः–सुदाः पैजवनः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–शक्वरी। **स्वरः**–धैवतः।

१८०२. त्वं सिन्धूँरवासृजोऽधराचो अहन्नहिम्।
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यम्।
तं त्वा परि ष्वजामहे नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप स्यन्दनशील—एक-दूसरे के पास पहुँचनेवाली वेदवाणियों को नीचे—अपने अन्दर से ऋषियों के अन्तःकरण में उँडेलते हैं और इस प्रकार सर्वत्र व्याप्त अज्ञान को नष्ट करते हैं। आपने नीचे की ओर प्रवाहित होनेवाली नदियों का सृजन किया है और इस निमित्त मेघों का हनन किया है। आपने रक्त स्यन्दन करनेवाली नाड़ियों का सृजन किया है। आपने पाप-सर्पों का हनन किया है। आप शत्रुरहित प्रसिद्ध हैं और हमारे लिए सब वरणीय वस्तुओं को पुष्ट करते हैं। हम आपका आलिंगन करते हैं। प्रभो! कृपा करो कि हमारे विरोधी कामदेव आदि की डोरियाँ धनुषों पर ही नष्ट हो जाएँ—कामदेव का तीर हमपर चल ही न सके।

ऋषिः–सुदाः पैजवनः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–शक्वरी। **स्वरः**–धैवतः।

१८०३. वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः।
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति।
या ते रातिर्ददिर्वसु नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आपकी कृपा से अदानशीलता और अरि=शत्रुरूप सब दुर्वृत्तियाँ पूर्णरूप से नष्ट हो जाएँ और हमारी बुद्धियाँ, कर्म तथा ध्यान-वृत्तियाँ आपकी ओर प्रगति करें। जो शत्रु पाप-भाव से हमें मारना चाहता है, उस शत्रु के प्रति आप वध के साधनभूत अस्त्र को फेंकनेवाले हैं। आपकी जो दानक्रिया है वह निवास के लिए आवश्यक धन देनेवाली है। काम-क्रोध आदि शत्रुओं की धनुषों पर चढ़ी कमजोर डोरियाँ आपकी कृपा से धनुषों पर ही टूट-फूट जाएँ।

सूक्त–१५

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधाश्चांगिरसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८०४. रेवाँ इद्रेवत स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः। प्रेदु हरिवः सुतस्य।।

हे दुःखहर्ता और सुखप्रदाता परमेश्वर! धनवान् का स्तोता=प्रशंसक निश्चय ही धनवान् हो जाता है फिर आप जैसे प्रकृष्ट धनवान् और मोक्षैश्वर्यवाले परमात्मा का स्तोता=उपासक प्रकृष्ट धनवान् और मोक्षैश्वर्यवाला बनेगा ही, इसमें आश्चर्य ही क्या है?

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधाश्चांगिरसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८०५. उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्।।

सर्वव्यापक परमेश्वर वाणीरहित अर्थात् गूँगे तथा ज्ञानरहित—अज्ञानी द्वारा उच्चारण किये गये स्तोत्रों=स्तुति-वचनों को क्या नहीं जानता? अवश्य जानता है और उन्हें स्वीकार भी करता है। वह विद्वानों द्वारा गाये जाते हुए सामगानों को भी समझता है। परमात्मा सर्वज्ञ है, वह विद्वानों और मूर्खों दोनों की प्रार्थनाओं को सुनता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधाश्चांगिरसः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८०६. मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः। शिक्षा शचीवः शचीभिः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप हम उपासकों को हिंसक के प्रति मत त्याग दीजिए, हम हिंसकों के वश में न पड़ें। आप हमें दबानेवाले–हमारा तिरस्कार करनेवालों के प्रति भी हमें मत सौंपिए। हे शक्तिमन्! आप अपने प्रज्ञानों द्वारा हमें शिक्षा दीजिए जिससे हम सदा आपकी शिक्षा में रहें–आपकी आज्ञाओं का पालन करें।

सूक्त–१६

ऋषिः–नीपातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१८०७. एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम्।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो।।

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! आप दुःखों का हरण करनेवाली और सुख प्रदान करनेवाली अपनी शक्तिधाराओं के साथ आइए–हमारे हृदय-मन्दिरों में प्रकट हो जाइए। आप मेधावी उपासक की शोभन स्तुति को ध्यानपूर्वक सुनिए। हे प्रकाशधनवाले और प्रकाश में बसानेवाले परमात्मन्! प्रकाशमय मोक्षलोक का शासन करनेवाले आप मुझे अपने प्रकाशमय मोक्षधाम में ले-चलिए, मोक्षधाम में पहुँचा दीजिए।

ऋषिः–नीपातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१८०८. अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः। दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो।।

(क) संसार का नायक परमेश्वर! इसी मानव-जीवन में आसुरी शक्तियों को उसी प्रकार कँपा देता है जैसे भेड़िया भेड़ को कँपा देता है। हे प्रकाश धनवाले और उपासकों को प्रकाश में बसानेवाले परमात्मन्! प्रकाशमय मोक्षधाम का शासन करनेवाले आप मुझे प्रकाशमय मोक्षधाम में ले-चलिए।

(ख) इस मानव-जीवन में तत्त्वद्रष्टा व्यक्तियों की एक विशिष्ट मर्यादा होती है। ये नेमिव्रत = मर्यादाशील होते हैं। ये वेदोपदिष्ट मार्ग से विचलित नहीं होते। ये वासनाओ को उसी प्रकार कम्पित करके दूर फेंक देते हैं जैसे भेड़िया भेड़ को चीर-फाड़ डालता है। हे तत्त्वद्रष्टः! तू प्रकाशमय सारे ब्रह्माण्ड के शासक परमेश्वर के प्रकाशमय लोक को प्राप्त कर। हे ज्ञानरूप वास्तविक धनवाले जीव! तुझे ऐसा ही करना उचित है।

ऋषिः–नीपातिथिः काण्वः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१८०९. आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण वक्षतु।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! सोम = वीर्य-शक्ति का अपने में संयम करनेवाला–ब्रह्मचारी, अर्चना करनेवाला विद्वान् उपासक उपासना-यज्ञ में मानसिक जप से आपकी स्तुति करता हुआ आपको भली-भाँति प्राप्त करे। हे प्रकाश-धनवाले और उपासकों को प्रकाश में बसानेवाले परमात्मन्! प्रकाशमय मोक्षधाम का शासन करनेवाले आप मुझे उस प्रकाशमय मोक्षधाम में ले-चलिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त–१७

ऋषिः–जमदग्निर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८१०. पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः।।

हे शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अत्यन्त मधुर रसवाले हैं–आनन्द के सागर हैं। आप उपासक आत्मा को आनन्द प्रदान करने के लिए उसके हृदय-मन्दिर में प्रवाहित हो जाइए, उसे अपने दर्शनामृत का पान कराइए तथा उसके जीवन को निर्मल और सुजीवन बना दीजिए।

ऋषिः–जमदग्निर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८११. ते सुतासो विपश्चितः शुक्रा वायुमसृक्षत।।

वह उपासित किया हुआ सर्वज्ञ, शुद्ध, पवित्र और प्रकाशमान शान्तस्वरूप परमात्मा उपासक आत्मा को मोक्ष प्राप्त करने के योग्य बनाता है।

ऋषिः–जमदग्निर्भार्गवः। **देवता**–पवमानः सोमः। **छन्दः**–द्विपदा गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८१२. असृग्रं देववीतये वाजयन्तो रथा इव।।

(क) परमात्मदेव की प्राप्ति के लिए उपासना-रस धारारूप में प्रकट हुए हैं। ये उपासना-रस रथों के सदृश उपासकों में वेग प्रदान करते हैं।

(ख) ये सोम=वीर्यकण मनुष्य को शक्तिशाली बनाते हुए उसकी जीवन-यात्रा के लिए रथ के समान हैं। ये जीवन-यात्रा को पूर्ण कराके सर्वप्रसिद्ध परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए रचे गये हैं।

(ग) सोमस्वरूप योगिजन संग्राम में विजय प्राप्त करानेवाले रथों के समान स्वयं ज्ञानस्वरूप होकर, अपने आत्मस्वरूप में प्रतिष्ठित होकर परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए साधना कर रहे हैं।

सूक्त–१८

ऋषिः–परुच्छेपो दैवोदासिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अत्यष्टिः। **स्वरः**–गान्धारः।

१८१३. अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा।
घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः।।

मैं श्रद्धावान् उपासक प्रकाशस्वरूप परमात्मा को आदाता=सृष्टि प्रलयकर्ता और सम्पत्तियों का दाता मानता हूँ। मैं उसे आत्मबल का प्रादुर्भावक मानता हूँ। वह ऋग्वेदादि चारों वेदों का प्रकाशक है, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है। तत्त्वदर्शी ज्ञानवान् के समान मैं उस परमेश्वर का अत्यन्त आदर और सम्मान करता हूँ। वह प्रकाशकों का प्रकाशक परमेश्वर द्युलोक के चमकते हुए नक्षत्रों में पहुँची हुई अपनी सामर्थ्य के कारण संसार-यज्ञ का उत्तम प्रकार से रचनेवाला है। इस प्रभु का दर्शन मलों को दूर रखनेवाली उस ज्ञानदीप्ति के प्रकाश के पश्चात् ही हो पाएगा, जो ज्ञानदीप्ति चमकते हुए प्रकाशवाली है, त्याग की भावनावाली है और अत्यन्त क्रियाशील है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–परुच्छेपो दैवोदासिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अत्यष्टिः। **स्वरः**–गान्धारः।

१८१४. यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमंगिरसां विप्र मन्मभिर्विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः।
परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम्।
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विश प्रावन्तु जूतये विशः।।

हे कामनापूरक परमात्मन्! उपासना-यज्ञ के यजमान हम उपासक सर्वाधिक पूज्य संगतीकरण के योग्य और सर्वाधिक दानशील, उपासना-यज्ञ को सफल बनानेवाले आपको पुकारते हैं। अंग-अंग को रसीला बनानेवालों में आप सर्वश्रेष्ठ हैं। हम कामनापूरक मननीय स्तोत्रों द्वारा आपका आह्वान करते हैं। पृथिवी के चारों ओर गति करनेवाले चन्द्रमा और द्युलोक के सूर्य के सदृश चमकती किरणोंवाले, मनुष्यों को सब-कुछ देनेवाले, सुखों की वर्षा करनेवाले, कामनाओं के पूरक जिस परमेश्वर को ये उपासक प्रजाएँ प्रकृष्टरूप से प्राप्त होती हैं और ये प्रजाएँ जीवन में प्रगति के लिए जिसे प्राप्त होती हैं, हम उस परमेश्वर को पुकारते हैं, उसका स्मरण, मनन, चिन्तन और ध्यान करते हैं।

ऋषिः–परुच्छेपो दैवोदासिः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–अत्यष्टिः। **स्वरः**–गान्धारः।

१८१५. स हि पुरु चिदोजसा विरुक्मता दीद्यानो भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः।
वीडु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्वनेव यत्स्थिरम्।
निष्षहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते।।

वह अग्रनायक परमेश्वर निश्चय ही स्वात्मबल से और विशेष तेजस्विता से अत्यन्त प्रकाशमान है। वह हमारी द्रोह आदि दुर्भावनाओं का विनाश करनेवाला है। जिसकी संगति में सुदृढ़ कुवासनाएँ और जन्म-जन्मान्तर से सञ्चित अविद्या भी पानी की भाँति बह जाती है, वह परमेश्वर सब पापों और दुर्वृत्तियों को परे हटाता हुआ इनका नियमन कर देता है। इस कार्य से वह पीछे नहीं हटता—अवश्य करता है, जैसे धनुष द्वारा शत्रुओं का पराभव करनेवाला वीर योद्धा युद्ध से पीछे नहीं हटता।

नवमः प्रपाठकः, द्वितीयोऽर्धः

सूक्त–१

ऋषिः–अग्निः पावकः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–विष्टारपंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१८१६. अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो।
बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यां३ दधासि दाशुषे कवे।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आपका यश और ज्ञान महान् है। हे महादीप्तिमन्! आपकी प्रकाश ज्वालाएँ सूर्य, चन्द्र तथा तारागणों में प्रबलरूप से भासित हो रही हैं। विशेष ज्ञान-ज्योति में बसानेवाले हे प्रभो! क्रान्तदर्शिन्! वेदकाव्य के उपदेष्टा परमेश्वर! आप आत्मसमर्पण करनेवाले उपासक के लिए प्रशंसनीय वेदज्ञान और मोक्षानन्द प्रदान करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

ऋषिः-अग्निः पावकः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-विष्टारपंक्तिः। **स्वरः**-पञ्चमः।

१८१७. पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षि भानुना।
पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आपका तेज़=प्रकाश पवित्र करनेवाला है। आपका प्रकाश शुभ्र और निर्मल है। आप पूर्ण तेजवाले हैं। आप अपने ज्ञानप्रकाश से उपासक के हृदय-मन्दिर में उदित होते हैं। जैसे पुत्र माता-पिता के पास विचरण करता हुआ उन्हें तृप्त करता है, ऐसे ही आप मुझ उपासक को भी तृप्त करें। आप दोनों लोकों—द्युलोक और पृथिवीलोक को, मोक्ष और भोग को, निःश्रेयस और अभ्युदय को हमारे लिए सम्पृक्त कराते हैं—उनके अमृत और भोगों को भोगने का सु-अवसर देते हैं।

ऋषिः-अग्निः पावकः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-सतोबृहती। **स्वरः**-पञ्चमः।

१८१८. ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व धीतिभिर्हितः।
त्वे इषः सं दधुर्भूरिवर्पसश्चित्रोतयो वामजाताः।।

हे वेदों के प्रकाशक परमेश्वर! आप उपासक के बल को न गिरानेवाले अपितु बढ़ानेवाले हैं। आप सर्वव्यापक और सर्वज्ञ हैं, अतः आपके समक्ष धर्म-मार्ग का उल्लंघन करके हम पाप-कर्म कैसे कर सकते हैं? हमारी उत्तम स्तुतियों द्वारा आप प्रसन्न हों—हमपर कृपालु हों, हमारी आराधनाएँ आपको रिझाने में समर्थ हों। आप ध्यान-धारणाओं और योगाभ्यास द्वारा हृदय-मन्दिर में स्थापित किये जाते हो। ध्यान-धारणा द्वारा परमेश्वर को अपने हृदय में प्रतिष्ठित करनेवाले उपासक अपनी सब कामनाओं, इच्छाओं, अभिलाषाओं को आपके प्रति समर्पित कर देते हैं, ये आपकी प्रेरणाओं को सुनते हैं और उनके अनुसार अपने जीवन का निर्माण करते हैं, परिणामस्वरूप ये सुन्दर आकृतिवाले होते हैं। इनका मुखमण्डल 'ब्रह्म इव'—ब्रह्म के समान चमक उठता है। इनका जीवन अद्भुत रक्षणोंवाला होता है और अत्यन्त सुन्दर बन जाता है।

ऋषिः-अग्निः पावकः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-सतोबृहती। **स्वरः**-पञ्चमः।

१८१९. इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्य।
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि दर्शतं क्रतुम्।।

हे मरणधर्मरहित—अविनाशी परमात्मन्! संसार का स्वामित्व करते हुए आप हम उपासक मनुष्यों को गौ, अश्व, भेड़, बकरी आदि पशु-सम्पत्ति से समृद्ध कीजिए। आप दर्शनीयस्वरूप मोक्षधाम पर शासन करते हैं, सृष्टि के आरम्भ में दर्शनीय रूपों को प्रकाशित करते हैं और दर्शनीय संसार का पालन-पोषण भी करते हैं।

ऋषिः-अग्निः पावकः। **देवता**-अग्निः। **छन्दः**-सतोबृहती **स्वरः**-पञ्चमः।

१८२०. इष्कर्त्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः।
रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं रयिम्।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! हिंसारहित उपासना-यज्ञों को सफल करनेवाले, ज्ञान देकर सावधान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करनेवाले, महाधन अर्थात् मोक्ष का स्वामित्व करनेवाले, याचनीय धनों के दाता—आपको सुख-प्राप्ति के लिए उपासकजन सदा अपने सामने रखते हैं और सदा आपकी स्तुति करते हैं। आप उपासकों को, महान् सौभाग्य प्रदान करनेवाली कामना को और शाश्वत ऐश्वर्य—मोक्ष को धारण कराते हैं।

ऋषिः—अग्निः पावकः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—उपरिष्टाज्ज्योतिस्त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

१८२१. ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः।
श्रुतकर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा।।

उपासकजन यथार्थज्ञान अर्थात् वेदज्ञानवाले, महान् तथा पूजनीय, अत्यधिक सुन्दर, अतः सबके लिए दर्शनीय तुझ प्रकाशस्वरूप परमात्मा को सुख और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए सदा अपने सन्मुख रखते हैं—तुझे आँखों से ओझल नहीं होने देते—सदा आपका ध्यान और चिन्तन करते हैं। स्त्री-पुरुष या पति-पत्नी—सबकी स्तुति प्रार्थनाओं को सुननेवाले, सर्वव्यापक, देवाधिदेव आपकी हम उपासक वेदवाणी द्वारा स्तुति करते हैं और आपको अपने हृदय-मन्दिर में धारण करते हैं।

सूक्त—२

ऋषिः—सोभरिः काण्वः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—काकुभः प्रगाथः (ककुबुष्णिक्)। **स्वरः**—ऋषभः।

१८२२. प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः।
यस्य त्वं सख्यमाविथ।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप जिस उपासक के मैत्रीभाव को प्राप्त हो जाते हैं—जिसके आप मित्र बन जाते हैं, वह उपासक आपके रक्षणों द्वारा संसार-सागर से पार उतर जाता है। ये रक्षण उपासक को अपने कर्त्तव्यों में वीर बनाते हैं और उसे ज्ञान तथा कर्म का मार्ग दर्शाते हैं।

ऋषिः—सोभरिः काण्वः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—काकुभः प्रगाथः (सतोबृहती)। **स्वरः**—पञ्चमः।

१८२३. तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे।
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि।।

आनन्दरस में स्नान करानेवाले प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आपका आनन्दरसरूप, सर्वाश्रयदाता, रमणीय, सनातन और दीप्तिमान स्वरूप उपासकों द्वारा हृदय-मन्दिर में धारण किया जाता है। इसी उद्देश्य से पूजा, अर्चना, उपासना के लिए उचिततम उषाकालों में तो आप मुझे प्रिय हैं ही—उषाकालों में तो मैं आपका स्मरण करता ही हूँ, आप तो रात्रि और दिन के सब कालों में भी मेरे जीवन में चमकते हो।

सूक्त—३

ऋषिः—अरुणो वैतहव्यः। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—जगती। **स्वरः**—निषादः।

१८२४. तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः।
तमित् समानं वनिनश्च वीरुधोऽन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ओषधियाँ अपने ऋतुकाल में उस सर्वाग्रणी परमेश्वर को गर्भरूप में धारण करती हैं। जल भी उसी प्रभुरूप अग्नि को गर्भरूप में धारण करते हैं। वह परमेश्वर ही तो जलों में रसरूप में विद्यमान है। माताएँ ऋतुकाल में उसी सर्वाग्रणी प्रभु को गर्भरूप में धारण करके कालान्तर में सन्तान उत्पन्न करती हैं। वन के ऊँच-ऊँचे वृक्ष उसी सम्यक् प्राणित करनेवाले [जीवन देनेवाले] प्रभु को गर्भरूप में धारण करते हैं। इन उत्तुंग वृक्षों को देखकर किसको प्रभु की महिमा का स्मरण नहीं होता? गर्भधारण करनेवाली लताएँ भी सदा उसी प्रभु की महिमा को प्रकट करती हैं।

[आँखवालों को अणु-अणु में, कण-कण में प्रभु की महिमा दृष्टिगोचर होती है।]

सूक्त—४

ऋषिः–चाक्षुषोऽग्निः प्रजापतिर्वा। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

३ १ २र ३ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २
१८२५. अग्निरिन्द्राय पवते दिवि शुक्रो वि राजति। महिषीव वि जायते।।

प्रकाशस्वरूप परमेश्वर इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवात्मा को कर्मफल प्रदान करने के लिए क्रियाशील हो रहा है। वह जितेन्द्रिय उपासक को प्राप्त होता है। वह शुद्धस्वरूप अत्यन्त प्रकाशमान परमेश्वर मोक्षधाम में भी शोभायमान है। वह महा महिमावाला परमेश्वर विविध रूपों में संसार में प्रकट हो रहा है। वह महामहिमाशाली परमेश्वर योगाभ्यास से विशेषरूप से साक्षात् होता है।

सूक्त—५

ऋषिः–अवत्सारः काश्यपः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

२ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१८२६. यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः।।

जो सदा जागरूक है—सदसद् विवेकी है, ऋचाएँ उसी की कामना करती हैं, सब विज्ञान उसे ही प्राप्त होते हैं, सर्वत्र उसी की स्तुति होती है। जो सदा सावधान है सामवेद के मन्त्र, सब उपासनाएँ और शान्तियाँ उसे ही प्राप्त होती हैं। जो जागता है उसे यह सोम=शान्तस्वरूप परमात्मा कहता है कि मैं सदा तेरी मित्रता में निश्चित निवासवाला हूँ—सदा तेरा मित्र हूँ।

सूक्त—६

ऋषिः–अवत्सारः काश्यपः। **देवता**–विश्वे देवाः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१८२७. अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति।
३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निर्जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः।।

अपने को आगे ले-जानेवाला, विषयों में अनासक्त, तपस्वी, पापों का नाशक ही वस्तुतः अग्नि है। अग्नि सदा जागरूक रहता है, अतः ऋग्वेद की ऋचाएँ, सारे विज्ञान उसी को प्राप्त होते हैं और सर्वत्र उसी की स्तुति होती हैं। आत्म-अग्नि सदा सावधान है, अतः सामवेद के मन्त्र, उपासनाएँ और शान्तियाँ भी उसे ही प्राप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

होती है। अग्नि सदा जागरणशील है, यह शान्तस्वरूप परमात्मा कहता है कि मैं तेरी मित्रता में निश्चित निवासवाला हूँ—सदा तेरा मित्र हूँ।

सूक्त—७

ऋषिः—काश्यपा असितमृगा औद्दालकिः कुसुरुबिन्दुर्वा। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१८२८. नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषेभ्यः। युञ्जे वाचं शतपदीम्।।

पहले से ही मोक्षधाम में विराजमान अपने आत्मा के सदृश मुक्तात्माओं को मैं नमस्कार करता हूँ और इस समय साथ बैठे हुए ब्रह्मनिष्ठ विद्वानों को भी मैं सादर नमस्कार करता हूँ और असंख्य ज्ञानों से परिपूर्ण, सब सत्य विद्याओं से युक्त वेदवाणी का मैं समाहित चित्त से मनन और विचार करता हूँ।

ऋषिः—काश्यपा असितमृगा औद्दालकिः कुसुरुबिन्दुर्वा। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१८२९. युञ्जे वाचं शतपदीं गाये सहस्रवर्तनि। गायत्रं त्रैष्टुभं जगत्।।

असंख्य ज्ञानों से परिपूर्ण, सब सत्य विद्याओं से युक्त वेदवाणी का में समाहित चित्त से मनन और विचार करता हूँ और सहस्रों मार्गवाली, सहस्रों प्रकार से गान की जानेवाली, प्रभु की उपासनामयी सामवेदरूपी वाणी का मैं गान करता हूँ, साथ ही गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती छन्दों से भरे ऋग्वेद=विज्ञान वेद का अध्ययन करता हूँ।

ऋषिः—काश्यपा असितमृगा औद्दालकिः कुसुरुबिन्दुर्वा। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१८३०. गायत्रं त्रैष्टुभं जगद् विश्वा रूपाणि सम्भृता। देवा ओकांसि चक्रिरे।।

मैं गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती छन्दों से भरे ऋग्वेद का अध्ययन करता हूँ। इस विज्ञानवेद में सब आकृतिमान पदार्थों का संग्रह है—तृण से लेकर ब्रह्मपर्यन्त सब पदार्थों का ज्ञान इस वेद में है। विद्वान् उपासक इन वेदों को अपना विश्राम-आश्रय बनाते हैं अर्थात् वे जब श्रान्त मनवाले होते हैं तब वेदमन्त्रों के अध्ययन, मनन और चिन्तन से अपना मन बहलाते हैं।

सूक्त—८

ऋषिः—काश्यपा असितमृगा औद्दालकिः कुसुरुबिन्दुः प्रजापतिर्वा। **देवता**—अग्निः। **छन्दः**—गायत्री। **स्वरः**—षड्जः।

१८३१. अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरिन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः।।

(क) अग्नि ज्योतिस्वरूप है और ज्योति अग्निस्वरूप है। इन्द्र ज्योतिस्वरूप है और ज्योति इन्द्रस्वरूप है, सूर्य ज्योतिरूप है और ज्योति सूर्यरूप है। अभिप्राय यह है कि अग्नि, इन्द्र और सूर्य—ये सब नाम एक ही ज्योतिस्वरूप परमेश्वर के हैं।

(ख) 'अग्नि ज्योति है और ज्योति अग्नि है'—यह कहकर अग्नि और ज्योति का अभेद प्रकट किया गया है। ज्योति के बिना अग्नि की कल्पना नहीं हो सकती। विद्युत् ज्योति है और ज्योति ही विद्युत् है, ज्योति से भिन्न

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विद्युत् कुछ भी नहीं। सूर्य भी ज्योति है और ज्योति ही सूर्य है। सूर्य कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसमें ज्योति रहती हो, वस्तुतः ज्योति ही सूर्य है। इस प्रकार परमेश्वर देवों के मुख्य गुण का संकेत करके जीवों को संदेश दे रहे हैं कि 'तू भी ज्योतिर्मय बन'।

ऋषिः–काश्यपा असितमृगा औद्दालकिः कुसुरुबिन्दुः प्रजापतिर्वा। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८३२. पुनरूर्जा नि वर्तस्व पुनरग्न इषायुषा। पुनर्नः पाह्यंहसः।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप हमें पुनः-पुनः आत्मबल और प्राणशक्ति प्रदान करने के लिए हमारे अभिमुख होओ। आप हमारी कामना की पूर्ति के लिए, स्वस्थ जीवन तथा दीर्घायु प्रदान करने के लिए बारम्बार पधारिए–अपने दर्शन दीजिए। हे प्रभो! आप हमें बन्धनकारक पाप और कुटिलता से बार-बार बचाइए।

ऋषिः–काश्यपा असितमृगा औद्दालकिः कुसुरुबिन्दुः प्रजापतिर्वा। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८३३. सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया। विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप अपने रमणीय, मनोहर रूप के साथ हमारे समक्ष प्रत्यक्ष होओ [आत्मा को परमात्मा का प्रत्यक्ष होता है]। आप अपनी आनन्दधारा से हमें तृप्त करो और चारों ओर, सबको अन्न = भोग प्रदान करो।

सूक्त–९

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८३४. यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात्।।

हे ज्ञानरूप परमैश्वर्यवाले परमेश्वर! जैसे आप अकेले ही ज्ञान-धन के स्वामी हैं, वैसे ही यदि मैं भी आपकी भाँति ज्ञान-धन का स्वामी बन जाऊँ तो मेरा स्तोता = भक्त दिव्य वेदवाणी और ज्ञानमयी दृष्टि से संयुक्त हो जाए। प्रभो! मैं ज्ञान धन के लिए तरस रहा रहूँ, कृपा करो, अपना दिव्य ज्ञान प्रदान करके मेरी प्यास बुझाओ।

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८३५. शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम्।।

प्रज्ञा, वाणी और शक्तियों के स्वामी हे परमेश्वर! यदि मैं वेदवाणियों का स्वामी हो जाऊँ तो मैं मन का शासन करनेवाले, बुद्धिमान् अपने भक्त के लिए वेदज्ञान देने की इच्छा करूँ और दे डालूँ [परन्तु आप अपने भक्तों के लिए वेदज्ञान प्रदान नहीं कर रहे। मैं कब आपकी कृपा का पात्र बनूँगा?]

ऋषिः–गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८३६. धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते। गामश्वं पिप्युषी दुहे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे ज्ञानरूप परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आपकी ज्ञान-दुग्ध का पान करानेवाली वेदवाणीरूपी गौ उत्तम ज्ञान देनेवाली, दुःखों को दूर करनेवाली और सत्य एवं यथार्थ है। ज्ञानरूपी दुग्ध से बढ़ानेवाली यह वेदवाणी यज्ञशील व्यक्ति के लिए और निर्माणात्मक कार्य करनेवाले के लिए ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियों को पूरण करती है—उनके दोषों को दूर करके उन्हें निर्मल बनाती है।

सूक्त—१०

ऋषिः–त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीपो वाम्बरीषः। **देवता**–आपः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
१८३७. आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

(क) हे सर्वव्यापक परमेश्वर! आप निश्चय ही सुख-शान्ति प्रदाता हैं। आप बल और प्राणशक्ति की तथा मोक्षानन्द की प्राप्ति के लिए हमारा धारण-पोषण कीजिए एवं आसुरी शक्तियों के साथ महायुद्ध के लिए और महान् रमणीय आपके दर्शन के लिए हमारा धारण-पोषण कीजिए।

(ख) दिव्य जल रोग-निवारण द्वारा निश्चय ही सुख-शान्ति प्राप्त करानेवाले हैं। वे हमें बल और प्राणशक्ति में धारण करते हैं अर्थात् जीवन में बल और प्राणशक्ति का सञ्चार करते हैं। वे आँखों के लिए महान् रमणीयता प्राप्त करानेवाले हैं।

(ग) ज्ञान-जल की धाराएँ निश्चय ही सुख-शान्ति प्रदान करनेवाली हैं। ये ज्ञान-धाराएँ हमें बल और प्राणशक्ति में धारण करें। यह ज्ञान हमें महत्त्व प्राप्त करानेवाला और हमारे अन्दर पूजा की वृत्ति उत्पन्न करनेवाला हो। यह हमारे जीवन की रमणीयता के लिए हो तथा हमें काम-क्रोध आदि वासनाओं के साथ संग्राम करने योग्य बनाए और अन्त में यह हमें प्रभु-दर्शन करने के लिए समर्थ बनाए।

ऋषिः–त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीपो वाम्बरीषः। **देवता**–आपः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
१८३८. यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।

हे सर्वव्यापक और प्राप्त करने योग्य परमेश्वर! आपका जो अत्यन्त कल्याणकारी आनन्दरस है, हमें इस मानव-जीवन में उस आनन्दरस का भागी बनाइए, ठीक उसी प्रकार जैसे पुत्रों की हित-कामना करती हुई माताएँ उन्हें दूध पिलाती हैं।

ऋषिः–त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीपो वाम्बरीषः। **देवता**–आपः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
१८३९. तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।

हे सर्वव्यापक और प्राप्त करने योग्य परमेश्वर! जिस आनन्दरस को हमारे जीवन में बसाकर आप हमें तृप्त करते हैं, आपके उस आनन्दरस की प्राप्ति के लिए हम आपकी शरण में आते हैं। आप हमारे लिए उस आनन्दरस को चुवाइए—उसे हमारी आत्मा में प्रकट कीजिए।

सूक्त—११

ऋषिः–उलो वातायनः। **देवता**–वायुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २
१८४०. वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूंषि तारिषत्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सर्वगत तथा प्राणाधार परमेश्वर! हमारे हृदय के सन्तोष के लिए आप हमें कल्याण-सम्पादक, शाश्वत सुख प्रदान करनेवाला, जन्म-मरण आदि रोगों का प्रशमन करनेवाला तत्त्वज्ञानरूप महौषध प्रदान करें। हे परमात्मन्! आप तत्त्वज्ञान, विमल शान्ति और परमानन्द प्रदान करके हमारी आयु को बढ़ाइए जिससे हम अपना और दूसरों का कल्याण कर सकें।

ऋषिः–उलो वातायनः। **देवता**–वायुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८४१. उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि।।

हे सर्वगत तथा प्राणाधार परमेश्वर! आप हमारे पालक और रक्षक पिता हैं तथा स्नेहमयी माता हैं। आप, हमारे सम्माननीय बन्धु तथा प्रिय एवं हितकर मित्र हैं। आप हमें पवित्र और शान्त जीवन-लाभ के लिए समर्थ बनाइए।

ऋषिः–उलो वातायनः। **देवता**–वायुः। **छन्दः**–गायत्री। **स्वरः**–षड्जः।

१८४२. यददो वात ते गृहे३ऽमृतं निहितं गुहा। तस्य नो धेहि जीवसे।।

हे सर्वगत तथा प्राणाधार परमेश्वर! आपके निवास-स्थान हृदय-गृह में आपका जो आनन्द-अमृत गुहा में ही छिपा पड़ा है, उसका कुछ अंश शाश्वत जीवन-लाभ के लिए हमें भी प्रदान कर दीजिए।

सूक्त–१२

ऋषिः–आंगिरसः सुपर्णः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८४३. अभि वाजी विश्वरूपो जनित्रं हिरण्ययं बिभ्रदत्कं सुपर्णः।
सूर्यस्य भानुमृतुथा वसानः परि स्वयं मेधमृज्रो जजान।।

(क) हे परमेश्वर! आप बलवान् और विश्व को सुन्दररूप देनेवाले हैं। आप संसार का उत्तम पालन-पोषण करनेवाले हैं और पापों को भून डालनेवाले हैं। सुवर्ण के समान प्रकाशमान जनन-साधन ब्रह्माण्ड को सब प्रकार से धारण करते हुए और ऋतु-ऋतु के अनुसार सूर्य के तेज को फैलाते हुए आप बिना किसी की सहायता के संसार-यज्ञ की परिपूर्ण रचना करते हैं।

(ख) समदर्शी परमात्मा की ओर जानेवाला जिज्ञासु जगत् के उत्पादक, हित-रमणीय और तेजःस्वरूप, सर्वव्यापक परमात्मा को अपने हृदय में धारण करता हुआ और अपने आपको सदा परमात्मा के तेज से आच्छादित करता हुआ, स्वयं सब पापों का नाशक बनकर अपने जीवन को सुभूषित बनाकर यज्ञमय बना लेता है।

ऋषिः–आंगिरसः सुपर्णः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८४४. अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपं तेजः पृथिव्यामधि यत् सम्बभूव।
अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विश्व को सुन्दर रूप प्रदान करनेवाले परमेश्वर का जो तेज जलों में स्थित है, जो तेज अग्नि में स्थित है, जो तेज पृथिवी में स्थित है, अपने महत्त्व को सूचित करता हुआ जो तेज अन्तरिक्ष में स्थित है, सुखवर्षक और सर्वमनोरथों के पूरक, सर्वव्यापक परमात्मा का वह तेज उपासक को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा है और सर्वत्र कह रहा है—'हे मनुष्यो! सन्मार्ग में चलो।'

ऋषिः–आंगिरसः सुपर्णः। **देवता**–अग्निः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८४५. अयं सहस्रा परि युक्ता वसानः सूर्यस्य भानुं यज्ञो दाधार।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा धर्ता दिवो भुवनस्य विश्पतिः।।

यह यज्ञरूप परमेश्वर सब ओर वर्तमान, आकर्षण-शक्ति द्वारा परस्पर सम्बद्ध असंख्य लोक-लोकान्तरों में बस रहा है-व्याप्त हो रहा है। इसने प्रकाशमान सूर्य को भी धारण किया हुआ है। यह मनुष्यों को अपेक्षित सैकड़ों और सहस्रों प्रकार के पदार्थ और सुख प्रदान कर रहा है। यह प्रभूत और अपरिमित दान दे रहा है। यह द्युलोक और भूलोक तथा समस्त भुवनों का धारण और पोषण करनेवाला है तथा सब प्रजाओं का भी पालक-पोषक और रक्षक है।

सूक्त–१३

ऋषिः–वेनः। **देवता**–वेनः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८४६. नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम्।।

ज्ञानी-भक्त सर्वत्र उस एक परमेश्वर की ही अर्चना करते हुए, उसी की कामना करते हुए उस सच्चिदानन्द स्वरूपवाले और सबका पालन-पोषण करनेवाले, सर्वव्यापक, दुःखों के अत्यन्त अभाववाले मोक्षधाम में प्रतिष्ठित परमेश्वर का निर्मल, एकाग्र मन से साक्षात् दर्शन करते हैं। उस परमेश्वर का दर्शन करते हैं, जो अपने भक्तों को कान्ति और सद्गति प्रदान करनेवाले पक्षद्वय [दो पंखों] से संयुक्त है, जो अपने भक्तों को अत्यन्त स्पृहणीय अहिंसा आदि यमों और शौच आदि नियमों के अभीष्ट फलों को प्राप्त करानेवाले हैं, जो कल्याणप्रद और सबका भरण-पोषण करनेवाले हैं।

ऋषिः–वेनः। **देवता**–वेनः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८४७. ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात् प्रत्यङ्चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वा३र्ण नाम जनत प्रियाणि।।

चेतनात्माओं में सर्वोत्कृष्ट, गतिशील लोकों और वेदवाणी का धारक परमेश्वर दुःखरहित, नितान्त सुखपूर्ण मोक्षधाम में स्थित है। काम-क्रोध आदि आसुर शक्तियों के नाश के लिए शत्रुओं के प्रतिकूल जानेवाले संकल्परूप अद्भुत आयुधों को वह धारण किये हुए है। योगिजनों और अपनी प्रिय प्रजाओं के दर्शन के लिए परमेश्वर सर्वत्र प्राप्त, रमणीय तथा प्रियतम आनन्दमय स्वरूप को धारण किये हुए है। वह सूर्य के समान तेजस्वी है। वेद इसके प्रिय नामों को प्रकट करता है, इसके नामों का वर्णन करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः–वेनः। **देवता**–वेनः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८४८. द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन्।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि।।

(क) विविध रूपों में वर्तमान जगत् को धारण करनेवाला परमेश्वर दुर्जनों का संहार करता हुआ अपने तेज अर्थात् शक्ति से भक्तों को देखता हुआ जब भक्तिरस से सराबोर किसी भक्त को देखता है, तब उसके समक्ष प्रकट होता है—उसे अपना दर्शन देता है। वह प्रकाशस्वरूप परमेश्वर दीप्त तेज से, प्रचण्ड शक्ति से शोभित होता हुआ उस भक्त को तथा वैसे ही अन्य भक्तों को अधोलोक और मध्य लोक से ऊपर=पृथक् तीसरे मोक्षलोक में ले-जाता है

(ख) सुख और दुःख में पतनशील अणु जीवात्मा जब आनन्द के सागर परमात्मा की ओर गति करता है, तब विशिष्ट धर्मों में व्रतमय जीवन में स्थित होकर अभिकांक्षापूर्ण दिव्य चक्षु द्वारा परमात्मा को देखता रहता है। पवित्र तेज से चमकता हुआ योगी प्रभु-दर्शन करके तृप्त हो जाता है और तमोगुण तथा रजोगुण से ऊपर उठकर सत्त्वगुण में स्थित हुआ यह भक्त सदा प्रिय कर्मों—प्रभु को प्रसन्न करनेवाले कर्मों को ही करता है।

नवमः प्रपाठकः, तृतीयोऽर्धः

सूक्त—१

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८४९. आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः।।

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सर्वव्यापक और शीघ्र फल-प्रदाता है। वह पुण्यात्माओं के लिए सुख-दाता है। पापियों के लिए वह तीक्ष्ण सींगोंवाले बैल के समान भयंकर है। वह काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाशक है। वह ज्ञानी उपासकों और सब प्रजाओं का सन्मार्ग में प्रेरक है। वह दुष्टों को रुलानेवाला और पुण्यात्माओं को अपनी ओर बुलानेवाला है। वह सदा जागरूक और स्पर्धारहित है—कोई उसकी स्पर्धा नहीं कर सकता। स्व-पराक्रम में वह सर्वाधिक वीर है—अद्वितीय महावीर है। वह उपासक को बाँधनेवाली=जकड़नेवाली, काम-क्रोध आदि सैकड़ों वासनाओं और विघ्नों को एक-साथ नष्ट करनेवाला है।

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८५०. संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा।।

सांसारिक वासनाओं और बन्धनों के साथ युद्ध करनेवाले और उन्नति के पथ पर सदा आगे बढ़नेवाले उपासको! तुम पापियों को रुलानेवाले, सदा जागरूक और स्पर्धा न किये जा सकनेवाले—अनुपम, सदा जयशील, काम-क्रोध आदि के साथ युद्ध करनेवाले, स्वयं अप्रधर्ष्य—अविचल, सबका घर्षण—पराभव

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करनेवाले परमेश्वर के साहाय्य द्वारा पाप-शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो। इच्छामात्र से पापों का हनन करनेवाले, सुखवर्षक और कामनापूरक परमेश्वर के साहाय्य से तुम पाप-शत्रुओं का पराभव कर दो—उन्हें युद्ध में हरा दो।

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१ २र ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १२
१८५१. स इषुहस्तैः स निषंगिभिर्वशी सं स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सं सृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्यू३ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता।।

वह परमेश्वर निग्रह और अनुग्रहरूपी हाथों से संगदोष से रहित मुक्तात्माओं से युक्त=जुड़ा है। वह सारे संसार का एकमात्र स्वामी और शासक है। वह वासनाओं से युद्ध करनेवाला है। वह भक्तगणों के साथ मिला हुआ है। वह सब संसर्गों और विषय-सम्पर्कों को जीतनेवाला है। वह भक्तों, उपासकों का रक्षक है, वह शत्रुओं को पराजित करनेवाले बल से युक्त है। वह ज्ञानरूप धनुषवाला है और प्रतिकूल जनों—शत्रुओं को परे फेंकनेवाला—उनका संहार करनेवाला है।

सूक्त—२

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–बृहस्पतिः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१२ ३ १ २ ३ १२ ३१ २र ३ १ २
१८५२. बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ अपबाधमानः।
३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३१ २र
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्।।

हे महाशक्तियों के रक्षक एवं स्वामिन्! आप काम-क्रोध आदि राक्षसी भावों और दुर्जनों का हनन करनेवाले हैं। आप शत्रुओं और ईर्ष्या-द्वेष की भावनाओं को परे हटाते हुए संकल्परूप रथ से हमारे सम्मुख आओ—हमें अपना दर्शन दो। आप विघ्नों, बन्धनों और काम-क्रोध आदि की सेनाओं को छिन्न-भिन्न करते हुए और इन मारक शक्तियों पर युद्ध द्वारा विजय प्राप्त करते हुए हमारे शरीर-रूपी रथों के रक्षक बनिए।

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
१८५३. बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप बल के कारण प्रसिद्ध और बल से प्राप्त होने योग्य है। आप पुराण पुरुष हैं। आप विरोधियों को परे फेंकनेवाले प्रकृष्ट वीर हैं, सबके प्रेरक हैं। आप काम-क्रोध आदि शत्रुओं का पराभव करनेवाले हैं। आप बलवान् हैं। आप सहनशील परन्तु साथ ही उग्र=प्रतापी हैं। सर्वोपरि विराजमान आप वीर उपासकों को प्राप्त होनेवाले हैं। आप सर्वव्यापक, परम बलशाली, ओजस्वी और सर्वविद्याविशारद हैं—परम विद्वान् हैं। ऐसे आप हमारे विजयशील शरीर-रथ के अधिष्ठाता—सञ्चालक बनिए।

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टप्। **स्वरः**–धैवतः।

३ १ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
१८५४. गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा।
३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
इमं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम्।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे समान प्रसिद्धिवाले उपासको! तुम पार्थिव शरीरों का भेदन करके मोक्ष प्रदान करनेवाले, उपासकों को प्राप्त होनेवाले, हाथों में न्यायरूपी वज्र को धारण करनेवाले, देवासुर-संग्राम में विजयी, अपने ओज द्वारा आसुरी शक्तियों का विनाश करनेवाले, इस परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की अनुकूलता में पापों के मुकाबिले में वीरता प्रदर्शित करो। हे समान ज्ञानवाले उपासक मित्रो! तुम सब परस्पर मिलकर परमेश्वर की उपासना करो।

सूक्त—३

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१८५५. अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्यो३स्माकं सेना अवतु प्र युत्सु॥

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर शत्रुओं का मर्दन करने में दयारहित—अत्यन्त कठोर है, शूरवीर है, अत्यन्त दीप्तिमान् है। वह विजय-लाभ से च्युत नहीं किया जा सकता। उसपर कोई प्रहार नहीं कर सकता। वह शत्रु-सेना को शीघ्र ही परास्त कर देता है। ऐसा परमेश्वर दुर्जनों का और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का अपने बल द्वारा मर्दन कर डाले और हमारी जो विवेक, वैराग्य, शम-दम आदि षट्सम्पत्ति, मुमुक्षुत्व, श्रवण, मनन और निदिध्यासनरूप साधनों की जो सेना है उसकी काम-क्रोध आदि के साथ होनेवाले युद्ध में रक्षा करे।

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २
१८५६. इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर विवेक-वैराग्य आदि से युक्त इन देव-सेनाओं का नेता है—प्रवर्तक है। बृहस्पति—महाशक्तियों के स्वामी परमेश्वर की शत्रु-सेना के विनाश के लिए उत्साह देनेवाली महाशक्ति सदा हमारे सम्मुख अवस्थित रहे। शक्ति प्रदाता और रक्षक परमेश्वर सदा हमारे सम्मुख रहे। पाप-समूहरूप शत्रु-सेनाओं का मर्दन करनेवाली और इनपर विजय प्राप्त करती हुई हमारी देव-सेना के आगे-आगे महातेजस्वी, पराक्रमशाली विद्वान् लोग चलें।

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
१८५७. इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥

सब कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, वरणीय, अविनाशी, विद्वानों—ज्ञानियों के राजा—शासक परमैश्वर्यशाली परमेश्वर का बल आसुरी सेनाओं पर विजय पाने के लिए अत्यन्त प्रभावकारी है। परमात्मा के इस प्रचण्ड बल को प्राप्त करके महामनस्वी—उदार मनवाले, भूमण्डल को कँपा देनेवाले, पापों पर विजय प्राप्त करनेवाले दिव्य पुरुषों का जयनाद सर्वत्र गूँज उठता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—४

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८५८. उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत् सत्वनां मामकानां मनांसि।
उद् वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः।।

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! आप मेरे और मुझसे सम्बद्धजनों के शरीर, इन्द्रिय और मन आदि आयुधों को अत्यन्त प्रदीप्त कर दीजिए—खूब चमका दीजिए। आप सत्त्वगुणवाले उपासकों के मनों को [मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार=गौरव की भावना] उत्कृष्ट=प्रसन्न और दीप्त बना दीजिए। हे पाप-वृत्रों का नाश करनेवाले परमेश्वर! मेरी इन्द्रियरूपी घोड़ों के वेग उत्कृष्ट हों जिससे पापों पर विजय पानेवाले शरीर-रथों के विजय-घोष आकाश को गुँजा दें।

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८५९. अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु।।

(क) हमारे ध्वजधारी सैनिकों के शत्रु-सेनाओं में पहुँचने पर शत्रुओं का संहारक परमेश्वर उनकी रक्षा करे। हमारे बाण=बाण चलानेवाले सैनिक विजयी हों, वे शत्रुओं को जीतें। हमारे वीर उत्कृष्ट और सर्वोपरि सिद्ध हों। हे सेनापतियो! आप युद्ध में हमारी ही रक्षा करो।

(ख) परमेश्वर की आज्ञा का पालन करनेवाले हम उपासकों के परम सत्य—अत्यन्त श्रेष्ठ उपासना-कार्य से परमैश्वर्यशाली परमेश्वर हमपर प्रसन्न हो। हमारी सन्मार्ग में गमन करने की जो इच्छाएँ हैं, वे पूर्ण हों। हमारे प्राण उत्कृष्ट हों। हे विद्वानो! जब-जब मैं आपको पुकारूँ तब-तब आप मेरी रक्षा करो—मुझे पतन के गर्त में गिरने से बचाओ।

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–त्रिष्टुप्। **स्वरः**–धैवतः।

१८६०. असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा स्पर्धमाना।
तां गूहत तमसापव्रतेन यथैतेषामन्यो अन्यं न जानात्।।

हे ज्ञानी पुरुषो! काम-क्रोध आदि शत्रुओं की जो सेना परस्पर स्पर्धा करती हुई-सी [कभी काम प्रबल हो जाता है तो कभी लोभ बढ़ जाता है, इत्यादि] बड़े वेग से हमारी ओर आ रही है, उस शत्रुसेना को निष्क्रियता [काम-क्रोध के त्याग की प्रबल इच्छा] और प्रतिकूल कर्म-संकल्प से [क्रोध नहीं करूँगा, लोभ से दूर रहूँगा, इत्यादि] लुप्त कर दो जिससे इनमें से एक भी शत्रु दूसरे को न पहचान सके और परस्पर बल पाकर उभर न सके।

[यदि काम क्रोध को न देखे तो उत्पन्न ही न हो। इसी प्रकार राग द्वेष को, द्वेष राग को उत्पन्न करता है, इत्यादि]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूक्त—५

ऋषिः-अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**-अप्वाः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१८६१. अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्।।

हे पापमयी वृत्ति! तू काम-क्रोध आदि शत्रुओं के चित्त=क्रिया-शक्ति को घबराहट में डालती हुई उन तक पहुँच और उनके अंगों को जकड़ ले। तू उनके हृदय में प्रवेश कर और शोक की तीव्र ज्वालाओं से उन्हें भस्म कर डाल। ये काम-क्रोध आदि शत्रु गाढ़ अन्धकार से युक्त हो जाएँ।

ऋषिः-अप्रतिरथ ऐन्द्रः। **देवता**-इन्द्रो मरुतो वा। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१८६२. प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ।।

हे मुमुक्षुजनो! जीवन में प्रगति करो, आगे बढ़ो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं को जीतो। परमैश्वर्यशाली परमात्मा तुम्हारे लिए सुख प्रदान करे और तुम्हें आशीर्वाद दे। तुम्हारी भुजाएँ—पाप के बाधक बल प्रबल एवं प्रचण्ड हों जिससे कोई शक्ति तुम्हें पराभूत और पराजित न कर सके।

ऋषिः-पायुर्भारद्वाजः। **देवता**-इषवः। **छन्दः**-अनुष्टुप्। **स्वरः**-गान्धारः।

१८६३. अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते।
गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व मामीषां कं च नोच्छिषः।।

ज्ञान द्वारा तीव्र किये गये, काम-क्रोध आदि को नष्ट करनेवाले ब्रह्मविद्यारूप अस्त्र! छोड़ा गया—चलाया गया तू दूर-दूर तक जा—काम-क्रोध आदि शत्रुओं पर जा गिर और उन्हें दबा दे। उन काम-क्रोध आदि में से किसी को भी मत छोड़, किसी को शेष मत रहने दे, ढूँढ-ढूँढकर सबको नष्ट कर दे।

सूक्त—६

ऋषिः-अप्रतिरथ ऐन्द्रो भरद्वाजो पायुर्वा। **देवता**-इन्द्रः। **छन्दः**-त्रिष्टुप्। **स्वरः**-धैवतः।

१८६४. कंकाः सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् गृध्राणामन्नमसावस्तु सेना।
मैषां मोच्यघहारश्च नेन्द्र वयांस्येनाननुसंयन्तु सर्वान्।।

(क) ज्ञानी—उत्तम प्रकार से अपना पालन-पोषण करनेवाले उपासक इन काम-क्रोध आदि शत्रुओं के पीछे पड़ जाएँ—इन्हें समाप्त करने का दृढ़ संकल्प कर लें। काम-क्रोध आदि की यह सेना लोभी और लालची मनुष्यों का अन्न हो—वे ही इनमें आमोद-प्रमोद का अनुभव करें। हे जीवात्मन्! तू यह ध्यान रख कि इन काम आदि में से कोई भी पापी छूट न जाए—शेष न रह जाए। तू चुन-चुनकर सबको समाप्त कर दे। क्रियाशील

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

व्यक्ति इन काम आदि शत्रुओं के पूरी तरह पीछे पड़ जाएँ और इन्हें नष्ट कर डालें।

(ख) बगुले और मुर्गे आदि निरन्तर आसुरी कर्मों में लगे रहते हैं। वह आसुरी सेना गीधों का अन्न होती है। इन आसुरी सैनिकों में से कोई भी नष्ट होने से न बचे। इनमें से जो भी हमें पाप की ओर खींचकर ले-जाता है वह नष्ट होने से न बचे। कौए आदि इन आसुरी कर्मों में निरन्तर लगे रहते हैं। हे परमैश्वर्यशाली प्रभो ! आप मेरा रक्षण कीजिए, मुझे इन दुर्वृत्तियों—काम-क्रोध-लोभ आदि से बचाइए।

[बगुला छल-कपट का प्रतीक है, मुर्गा दम्भ और पाखण्ड का प्रतीक है, गीध अति लोभ का सूचक है और कौआ चालाकी का प्रतीक है। उपासक को इन दुर्वृत्तियों को त्याग देना चाहिए।]

ऋषिः–अप्रतिरथ ऐन्द्रो भरद्वाजोऽग्निर्वा। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१८६५. अमित्रसेनां मघवन्नस्माञ्छत्रुयतीमभि।
उभौ तामिन्द्र वृत्रहन्नग्निश्च दहतं प्रति।।

हे परमैश्वर्यशालिन् ! पापियों के नाशक ! शत्रुसंहारक परमेश्वर ! हमारे साथ स्नेह न करनेवाली अपितु शत्रुरूप होकर चढ़ाई करनेवाली बलवती आसुरी सेना को आप और अग्निदेव दोनों मिलकर भस्म कर दो उनमें से प्रत्येक सैनिक को दग्ध कर दो, कोई छूटने न पाये। प्रभो ! आप पापनाशक भी हो और तेजःस्वरूप भी हो, अतः अपने दोनों रूपों से काम-सेना को जला डालो।

ऋषिः–पायुर्भारद्वाजः। **देवता**–संग्रामाशिषः। **छन्दः**–पंक्तिः। **स्वरः**–पञ्चमः।

१८६६. यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव।
तत्र नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।।

जिनका अभी शिक्षा-संस्कार नहीं हुआ है ऐसे शिखाहीन बालक—छोटे-छोटे शिशु जहाँ रहते हैं, वे सबको आनन्दित करते हैं। वैसे ही जहाँ वेद के शब्द उपस्थित रहते हैं—जहाँ वेद का स्वाध्याय होता है, वहाँ सबको आनन्द ही होता है। ऐसे अपूर्व वेद के स्वामी अविनाशी परमेश्वर हमें कल्याण प्रदान करें, सदा ही—सब दिनों में अपना आश्रय प्रदान करें और सुख-शान्ति प्रदान करें।

सूक्त—७

ऋषिः–शासो भारद्वाजः। **देवता**–इन्द्रः। **छन्दः**–अनुष्टुप्। **स्वरः**–गान्धारः।

१८६७. वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः।।

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! हे पाप-वृत्र संहारक प्रभो ! आप उपद्रव करनेवाले राक्षसी—तामसिक दुर्भावों को नष्ट कर दीजिए। हिंसकों, संग्राम के लिए उद्यत राजसिक दुर्भावों को विनष्ट कर दीजिए। हमारी बुद्धियों पर परदा डालनेवाले अज्ञान के जबड़ों को तोड़ डालिए—पूर्णरूपेण समाप्त कर दीजिए। हमें पराधीन बनानेवाले काम-क्रोध आदि शत्रुओं के अभिमान और क्रोध को भी नष्ट कर दो—इन सबको निःसत्त्व बना दो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऋषिः—शासो भारद्वाजः। देवता—इन्द्रः। छन्दः—अनुष्टुप्। स्वरः—गान्धारः।

१८६८. वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
यो अस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः॥

हे शत्रु-संहारक परमेश्वर! आप हमारी हिंसा करनेवाले काम-क्रोध आदि शत्रुओं और हमारे साथ संग्राम करनेवाली दुर्भावनाओं को कुचल डालिए। जो हमारे साथ संघर्ष=झगड़ा करना चाहते हैं—हमसे लड़ना चाहते हैं, जो दुर्भावनाएँ सेना बनाकर एक-साथ हमपर आक्रमण करना चाहती हैं, उन्हें नीचे दबा दीजिए। जो शत्रु और दुर्भावनाएँ हमें नष्ट करना चाहती हैं और हमें अपना दास बनाना चाहती हैं, उन्हें घोर अन्धकार में पहुँचा दीजिए।

ऋषिः—शासो भारद्वाजः। देवता—इन्द्रः। छन्दः—विराड् जगती। स्वरः—निषादः।

१८६९. इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानावनाधृष्यौ सुप्रतीकावसह्यौ।
तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते याभ्यां जितमसुराणां सहो महत्॥

परमैश्वर्यशाली परमेश्वर की निग्रह और अनुग्रहरूप दो भुजाएँ जगत् के शासन में स्थिररूप से कार्य कर रही हैं, कार्य करने में ये दोनों सदा युवारूप हैं—कभी थकती नहीं हैं। ये दबाई न जा सकनेवाली, दर्शनीय और असह्य—कभी पराजित न होनेवाली हैं। आसुर शक्तियों के साथ सांमुख्य=मुक़ाबिले का अवसर आ जाने पर उपासक इन दो प्रमुख तत्त्वों को अपना आलम्बन—सहारा समझे, जिन दो तत्त्वों के द्वारा आसुरी-भावों का महाबल जीत लिया जाता है।

[प्रभु-भक्त विश्वास रखे कि परमेश्वर उसपर अनुग्रह करेगा और उसके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का निग्रह करेगा।]

सूक्त—८

ऋषिः—पायुर्भारद्वाजः। देवता—संग्रामाशिषः। छन्दः—त्रिष्टुप्। स्वरः—धैवतः।

१८७०. मर्माणि ते वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥

कोई गुरु अपने शिष्य को कह रहा है—हे उपासक! मैं तेरे मर्म-स्थलों—पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि को ब्रह्मरूपी कवच से आच्छादित करता हूँ—ढकता हूँ। शान्तस्वरूप पमेश्वर, सारे संसार का शासनकर्ता परमेश्वर तुझे आनन्दामृत द्वारा निरन्तर आच्छादित रक्खे। पाप-निवारक परमेश्वर तुझ विशाल हृदयवाले के लिए उत्कृष्ट सुख प्रदान करे अथवा तुझे महान् से भी महान् सर्वश्रेष्ठ मोक्षसुख प्रदान करे। काम-क्रोध आदि शत्रुओं पर तुझे विजय पाते हुए देखकर विद्वान् लोग हर्षित हों और तुझे उत्साहित करें।

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रोऽग्निर्वा। देवता—संग्रामाशिषः। छन्दः—अनुष्टुप्। स्वरः—गान्धारः।

१८७१. अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणोऽहय इव।
तेषां वो अग्निनुन्नानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम्॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(क) हमसे वैर करनेवाले काम-क्रोध आदि शत्रुओ! तुम अन्धे हो जाओ—तुम्हारी मारक शक्तियाँ कुण्ठित हो जाएँ। सिर कटे साँपों की भाँति तुम अपने विष-प्रयोग से रहित हो जाओ। जैसे सिर कटा साँप कोई अहित नहीं कर सकता उसी प्रकार काम-क्रोध आदि भी हमें हानि न पहुँचानेवाले हो जाएँ। ज्ञान-अग्नि तुम्हें भस्म कर दे और शत्रु-संहारक परमेश्वर तुम्हारे प्रिय बन्धुओं काम-क्रोध आदि में से प्रत्येक को चुन-चुनकर मार डाले।

(ख) हे स्नेहहीन, कटुता से वर्तनेवालो! क्या तुम अन्धे हो गये हो? तुम्हें कटुता का परिणाम नहीं दीखता। क्या तुम सिररहित हो गये हो? क्या तुम्हारी विचार-शक्ति समाप्त हो गई? तुम तो साँप जैसे हो गये हो जो या तो औरों को डसता है या अपने विष से स्वयं अन्दर-ही-अन्दर जलता है। तुम मनुष्यों में से जिन्हें श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने प्रेरणा दी, परन्तु उन्होंने अनसुना कर दिया उन दुष्टों में जो प्रथम श्रेणी के धूर्त हैं, उन्हें राजा दण्डित करे।

ऋषिः—पायुर्भारद्वाजः। **देवता**—संग्रामाशिषः। **छन्दः**—पंक्तिः। **स्वरः**—पञ्चमः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१८७२. यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ठ्यो जिघांसति।
३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २र ३ २ ३ २ ३ १ २र
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं शर्म वर्म ममान्तरम्॥

(क) जो भी अपना या पराया और जो परदेशी—बाहर का व्यक्ति शत्रु बनकर हमें मारने की इच्छा करता है, सब दिव्य भाव उसे नष्ट कर दें। वेदज्ञान मेरा अन्दर का कवच हो और सदा प्रसन्न रहने की मनोवृत्ति मेरा अन्दर का कवच हो। ज्ञान-प्राप्ति में संलग्न रहते हुए हम 'काम, लोभ, मोह' से अपने को बचाएँ और मानस सन्तुलन को ठीक रखते हुए 'क्रोध, मद व मत्सर' से बचें।

(ख) जो हमारा सम्बन्धी होकर भी हमारे साथ अप्रिय आचरण करता है, जो दूर रहकर भी छिपे रूप में हमें मारना चाहता है, उसे सब विद्वान् पुरुष नष्ट कर दें। वेदज्ञान और परमेश्वर हमारा आन्तरिक कवच हो, सुखकारी, शरणदाता परमेश्वर हमारा भीतर का कवच हो।

सूक्त—९

ऋषिः—जय ऐन्द्रः। **देवता**—इन्द्रः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
१८७३. मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥

हे परमैश्वर्यशाली परमेश्वर! आप वेदवाणियों में व्याप्त, सर्वव्यापक और दुष्टों के लिए हिंसक सिंह के समान भयप्रद हैं। आप प्रकृति से परे भी व्यापक हैं। आप अपने मारणशील, अति तीक्ष्ण ज्ञानवज्र को चमकाकर काम-क्रोध आदि हमारे अन्तः शत्रुओं को नष्ट कीजिए और हिंसक प्रवृत्तियों को भी छिन्न-भिन्न कर दीजिए।

ऋषिः—गौतमो राहूगणः। **देवता**—विश्वे देवाः। **छन्दः**—त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
१८७४. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २र
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

हे परमेश्वर! पवित्र बनकर तथा दान आदि सद्गुणों से अलंकृत होकर हम कानों से सदा कल्याणकारक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और सुखकर वचनों को ही सुनें। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि सदाचार से युक्त होकर और सबके पूज्य बनकर हम आँखों से सदा शुभ एवं मंगलमय दृश्यों को ही देखें। इस प्रकार अपनी शक्तियों को जीर्ण न होने देते हुए हम दृढ़=हृष्ट-पुष्ट अंगों से तथा नीरोग शरीरों से सदा आपका स्तवन करते रहें और तुझ देव द्वारा निर्दिष्ट जो सौ वर्ष या इससे भी अधिक तीन सौ, चार सौ वर्ष की आयु है, उसे प्राप्त करें। हम ऐसा जीवन व्यतीत करें जिससे अधिक-से-अधिक मानव-कल्याण हो।

ऋषिः—गौतमो राहूगणः। **देवता**—विश्वे देवाः। **छन्दः**—विराट् स्थाना त्रिष्टुप्। **स्वरः**—धैवतः।

१८७५. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

महायशस्वी और प्रभूत अन्नों का स्वामी परैश्वर्यशाली परमेश्वर हम लोगों के लिए शरीर का सुख धारण कराए। सर्वज्ञ और सब पदार्थ जिसकी महिमा का गान करते हैं, वह पुष्टिकर्ता परमात्मा हम लोगों के लिए धातुओं—वात, पित्त और कफ की समता के सुख को धारण कराए। जो वज्र के समान दुःखों का नाशक और जानने योग्य सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है, वह हम लोगों के लिए इन्द्रियों के शान्तिरूप सुख को धारण कराए। जो वेदवाणी का स्वामी परमेश्वर है, वह हम लोगों को विद्या-प्रदान से आत्मा के सुख को धारण कराए। वेदवाणी का स्वामी वह परमेश्वर हमारा सर्वविध कल्याण करे।

'स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु', का दूसरी बार पाठ ग्रन्थ समाप्ति का सूचक है।

।। यहाँ नवम प्रपाठक सम्पूर्ण हुआ
और उत्तरार्चिक भी समाप्त हुआ।।

सामवेद का परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वतीकृत
हिन्दीभाष्य भी समाप्त हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सामवेद
मन्त्रानुक्रमणिका

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे ५२९, १२५३
अक्षन्नमीमदन्त ४१५
अगन्म महा नमसा १३०४
अगन्म वृत्रहन्तमं ८९
अग्न आ याहि वीतये १, ६६०
अग्न आ याह्यग्निभि १५५२
अग्न आयूंषि पवसे ६२७, १४६४, १५१८
अग्न ओजिष्ठमा भर ८१
अग्निं तं मन्ये यो ४२५, १७३७
अग्निं दूतं वृणीमहे ३, ७९०
अग्निं नरो दीधितिभि ७२, १३७३
अग्निं वो देवमग्निभिः १२१९
अग्निं वो वृधन्तम् २१, ९४६
अग्निं सूनं सहसो १५५५
अग्निं हिन्वन्तु नो १५२७
अग्निं होतारं मन्ये ४६५, १८१३
अग्निः प्रत्नेन जन्मना १७११
अग्निः प्रियेषु धामसु १७१०
अग्निनाग्निः समिध्यते ८४४
अग्निमग्निं हवीमभिः ७९१
अग्निमिन्धानो मनसा १९
अग्निमीडिष्वावसे ४९
अग्निमीडे पुरोहितं ६०५
अग्निरस्मि जन्मना ६१३
अग्निरिन्द्राय पवते १८२५
अग्निरुक्थे पुरोहितो ४८
अग्निर्ऋषिः पवमानः १५१९
अग्निर्जागार तमृचः १८२७
अग्निर्जुषत नो गिरो १४०६
अग्निर्ज्योतिर्ज्योति १८३१
अग्निर्मूर्द्धा दिवः २७, १५३२
अग्निर्वृत्राणि जंघनद् ४, १३९६
अग्निर्हि वाजिनं विशे १७३८
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा २२
अग्ने केतुर्विशामसि १५३१
अग्ने जरितर्विश्पति ३९
अग्ने तमद्याश्वं न ४३४, १७७७
अग्ने तव श्रवो वयो १८१६
अग्ने त्वं नो अन्तम ४४८, ११०७
अग्ने दवाँ इहा वह ७९२
अग्ने नक्षत्रमजरमा १५३०
अग्ने पवस्व स्वपा १५२०
अग्ने पावक रोचिषा १५२१
अग्ने मृड महाँ असि २३
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे १००
अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये २५, १३८३
अग्ने रक्षा णो अंहसः २४
अग्ने वाजस्य गोमत ९९, १५६१
अग्ने विवस्वदा भरा १०
अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं ४०, १७८०
अग्ने विश्वेभिरग्निभि १५०३
अग्न सुखतमे रथे १३५०
अग्ने स्तोमं मनामहे १४०५
अग्रेगो राजाप्यस्त १६१६
अग्रे सिन्धूनां पवमानो १०३३
अचिक्रदद्वृषा हरि ४९७, १०४२
अचेत्यग्निश्चिकिति ४४७
अचोदसो नो धन्वन् ५५५
अच्छा कोशं मधुश्चुत ६५८
अच्छा नः शीरशोचिषं १५५४
अच्छा नो याह्या १३८४
अच्छा व इन्द्रं मतयः ३७५
अच्छा समुद्रमिन्दवो ६५९
अच्छा हि त्वा सहसः १५५३
अजीजनो अमृत मर्त्याय १५०८
अजीजनो हि पवमान १३६५
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते ५६४, १६१४
अतश्चिदिन्द्र न उपा २१५
अतस्त्वा रयिरभ्ययद् ८३८
अतीहि मन्युषाविणं २२३
अतो देवा अवन्तु १६७४
अत्यायातमश्विना १७४४
अत्या हियाना न ११९१
अत्रा वि नेमिरेषा १८०८
अत्राह गोरमन्वत १४७, ९१५
अथा ते अन्तमानां १०८९
अदर्दरुत्समसृजो ३१५
अदर्शि गातुवित्तमो ४७, १५१५
अदाभ्यः पुरएता १५५६
अदृश्रन्नस्य केतवो ६३४
अद्य नो देव सवितः १४१
अद्याद्या श्वः श्व इन्द्र १४५८
अध क्षपा परिष्कृतो १६३१
अध ज्मो अध वा ५२
अध त्विषीमाँ अभ्योजसा १४८८
अध धारया मध्वा १०२०
अध यदिमे पवमान १४९६
अधा त्वं हि नस्करो १५५१
अधा हिन्वान इन्द्रियं ८३९
अधा हीन्द्र गिर्वण ४०६, ७१०
अधा ह्यग्ने क्रतोः १७७८
अधि यदस्मिन् ५३९
अधुक्षत प्रियं मधु १०३९
अध्वर्यो अद्रिभिः ४९९, १२२५
अध्वर्यो द्रावया त्वं ३०८
अनवस्ते रथमश्वाय ४४०
अनु ते शुष्मं तुरयन्त १६३८
अनु त्वा रोदसी उभे ९८९
अनु प्रत्नस्यौकसो ७४४
अनु प्रत्नास आयवः ५०२
अनु हि त्वा सुतं ४३२, १३६६
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः ९९८
अन्तश्चरति रोचनास्य ६३१, १३७७
अन्धा अमित्र भवता १८७१
अपघ्नन्तो अराव्णः ११९५

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपघ्नन्पवते मृधो ५१०, १२१३
अपघ्नन्पवसे मृधः ४९२, १२३७
अप त्यं वृजिनं रिपुं १०५
अप त्ये तायवो ६३३
अप द्वारा मतीनां ११२४
अपां नपातं सुभगं १४१४
अपां फेनेन नमुचेः २११
आपदुशिप्रचन्धसः १४५
अपामिवेदूर्मयस्त ५४४
अपामीवामप स्रिधमप ३९७
अपिबत्कद्रुवः सुत १३१
अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै ३२२
अप्सा इन्द्राय वायवे ९९५
अप्सु रेतः शिश्रिये १८४४
अबोधि होता यजथाय १७४७
अबोध्यग्निः समिधा ७३, १७४६
अबोध्यग्निर्ज्म उदेति १७५८
अभिक्रन्दन्कलशं १०३२
अभि गव्यानि वीतये १०६२
अभि गावो अधन्विषु ९६२
अभि गोत्राणि सहसा १८५५
अभि ते मधुना पयो ६५२
अभि त्यं देवं सविता ४६४
अभि त्यं मेषं पुरु ३७६
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं ५२८ १४०८
अभि त्वा पूर्वपीतये २५६, १५७३
अभि त्वा वृषभा सुते १६१,६३१
अभि त्वा शूर नोनुमो २३३, ६८०
अभि द्युम्नं बृहद्यश ५७९, १०११
अभि द्रोणानि बभ्रवः ७६५
अभि द्विजन्मा त्री १७७५
अभि प्र गोपतिं १६८, १४८९
अभि प्रयांसि वाहसा १५५७
अभि प्र वः सुराधस २३५, ८११
अभि प्रियं दिवस्पद ११२७
अभि प्रियाणि काव्या १७६२
अभि प्रियाणि पवते ५५४, ७००
अभि प्रिया दिवः १२०४
अभि ब्रह्मीरनूषत ८७०
अभि वस्त्रा सुवसना १४२७
अभि वाजी विश्वरूपो १८४३
अभि वायुं वीत्यर्षा १४२६
अभि विप्रा अनूषत ११९७
अभि वो वीरमन्धसो २६५
अभि व्रतानि पवते १०२१
अभि सोमास आयवः ५१८, ८५६
अभि हि सत्य सोमपा १२४८
अभी नवन्ते अद्रुहः ५५०
अभी नो अर्ष दिव्या १४२८
अभी नो वाजसातमं ५४९, १२३८
अभी षतस्तदा भरेन्द्र ३०९
अभी षु णः सखीना ६८४
अभ्यभि हि श्रवसा १५०७
अभ्यर्ष बृहद्यशो ९७१
अभ्यर्ष स्वायुध १०५३
अभ्यारमिदद्रयो १६०३
अभ्यार्षानपच्युतो १०५४
अभ्रातृव्यो अना ३९९, १३८९
अमित्रसेनां मघवन् १८६५
अमित्रहा विचर्षणिः १४४७
अमी ये देवा स्थन ३६८
अमीषां चित्तं प्रतिलोभ १८६१
अयं त इन्द्र सोमो १५९, ७२५
अयं दक्षाय साधनो ११००
अयं पुनान उषसो ८२३
अयं पूषा रयिर्भगः ५४६, ८१८
अयं भराय सानसि ६९५
अयं यथा न आभुवत् ९४७
अयं वां मधुमत्तमः ३०६
अयं वां मित्रावरुणा ९१०
अयं विचर्षणिर्हितः ५०८
अयं विश्वा अभि ९४८
अयं विश्वानि तिष्ठति ७५७
अयं स यो दिवस्परि ९००
अयं सहस्रमानवो दृशः ४५८
अयं सहस्रमृषिभिः १६०८
अयं सहस्रा परि युक्ता १८४५
अयं स होता यो १७७६
अयं सूर्य इवोपदृगयं ७५६
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं १४७१
अयमग्निः सुवीर्यस्य ६०
अयमु ते समतसि १८३, १५९९
अया चित्तो विपानया ८०५
अया धिया च गव्यया १८८
अया निजघ्निरोजसा १७१५
अया पवस्व देवयु ७७२
अया पवस्व धारया ४९३, १२१६
अया पवा पवस्वैना ५४१, ११०४
अया रुचा हरिण्या ४६३, १५९०
अया वाजं देवहितं ४५४
अया वीती परि स्रव ४९५, १२१०
अया सोम सुकृत्यया ५०७
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः ६३९
अयुक्तसूर एतशं १२१७
अयुद्ध इद्युधा वृतं १३४०
अरं त इन्द्र कुक्षये १६६२
अरं त इन्द्र श्रवसे २०९
अरण्योर्निहितो जातवेदा ७९
अरमश्वाय गायत ११८
अरूरुचदुषसः पृश्नि ५९६, ८७७
अर्चत प्रार्चत नरः ३६२
अर्चन्ति नारीरपसो १७५७
अर्चन्त्यर्कं मरुतः ४४५, १११४
अर्वाङ्त्रिचक्रो मधु १७६०
अर्षा नः सोम शं १३३७
अर्षा सोम द्युमत्तमो ५०३, ९९४
अलर्षिरातिं वसुदामुप १३२०
अवक्रक्षिणं वृषभं १३६१
अव द्युतानः कलशाँ ७०२
अव द्रप्सो अंशुमती ३२३
अवसृष्टा परा पत १८६३
अव स्म दुर्हृणायतो १०९२
अवा नो अग्न ऊतिभि १५२४
अव्या वारे परि ११३३
अव्या वारैः परि १२०७
अश्वं न गीर्भी १५८४
अश्वं न त्वा वारवन्तं १७, १६३४
अश्विना वर्तिरस्मदा १७३४
अश्वी रथी सुरूप २७७
अश्वेव चित्रारुषी १७२६
अश्वो न चक्रदो ७८३
अषाढमुग्रं पृतनासु ११५६
असर्जि कलशाँ ९४२
असर्जि रथ्यो यथा ४९०
असर्जि वक्वा रथ्ये ५४३
असावि देवं गो ३१३

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

असावि सोम इन्द्र ३४७, १०२८
असावि सोमो अरुषो ५६२, १३१६
असाव्यंशुर्मदाय ४७३, १००८
असि हि वीर सेन्यो १००३
असृक्षत प्र वाजिनो ४८२, १०३४
असृग्रं देववीतये १८१२
असृग्रमिन्दवः पथा ११२८
असृग्रमिन्द्र ते गिरः २०५
असौ या सेना १८६०
अस्तावि मन्म १६७७
अस्ति सोमो अयं १७४, १७८५
अस्तु श्रौषट् पुरो ४६१
अस्मभ्यं त्वा वसु ५७५
अस्मभ्यं रोदसी ११३६
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं १०४६
अस्माअस्मा इदन्धसो १४४३
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु १८५९
अस्य प्रत्नामनु द्युतं ७५५
अस्य प्रेषा हेमना ५२६, १३९९
अस्य व्रतानि नाधृषे १७१६
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ६९६
अस्येदिन्द्रो वावृधे १५७४
अहं प्रत्नेन जन्मना १५०१
अहमस्मि प्रथमजा ५९४
अहमिद्धि पितुष्परि १५२, १५००

आ

आ गन्ता मा रिषण्यत ४०१
आग्निं न स्ववृक्तिभि ४२०
आग्ने स्थूरं रयिं १५२९
आ घ त्वावान् १०८५
आ घा गमद्यदि ७४५
आ घा ये अग्निं १३३, १३३८
आ जागृविर्विप्र ऋतं १३५७
आ जामिरत्के अव्यत १३८७
आ जुहोता हविषा ६३
आ तिष्ठ वृत्रहन् १०२९
आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं १६७, ७२८
आ तू न इन्द्र वृत्रहन् १८१
आ ते अग्न इधीमहि ४१९, १०२२
आ ते अग्न ऋचा हविः १०२३
आ ते दक्षं मयोभुवं ४९८, ११३७
आ ते वत्सो मनो ८, ११६६
आ त्वा गिरो रथी ३४९
आ त्वा ग्रावा वदन् १८०९
आ त्वाद्य सबर्दुघां २९५
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी ६६७
आ त्वा रथं यथोतये ३५४, १७७१
आ त्वा रथे हिरण्यये १३९२
आ त्वा विशन्त्विन्दवः १९७, १६६०
आ त्वा सखायः सख्या ३४०
आ त्वा सहस्रमा शतं २४५, १३९१
आ त्वा सोमस्य गल्दया ३०७
आ त्वेता नि षीदतेन्द्र १६४, ७४०
आदह स्वधामनु ८५१
आदित्प्रत्नस्य रेतसो २०
आदित्यैरिन्द्रः सगणो १११२
आदीं केचित्पश्यमानास १४९५
आदीं त्रितस्य योषणो ७७१
आदीं हंसो यथा गणं ७७०
आदीमश्वं न हेतारम् १०१०
आ नः सुतास इन्दवः १३२८
आ नः सोम संयतं ११५४
आ नः सोम सहो जुवो ८३४
आ न इन्दो शतग्विनं ८३५
आ नस्ते गन्तु मत्सरो १४३३
आ नो अग्ने रयिं भर १५२५
आ नो अग्ने वयोवृधं ४३
आ नो अग्ने सुचेतुना १५२६
आ नो भज परमेष्वा १४९९
आ नो मित्रावरुणा २२०, ६६३
आ नो रत्नानि बिभ्रता १७४५
आ नो वयोवयः शयं ३५३
आ नो विश्वासु हव्य २६९, १४९२
आ पप्राथ महिना वृष्ण्या ८६३
आ पवमान धारय १२०३
आ पवमान सुष्टुतिं ९०६
आ पवस्व मदिन्तम १२०८
आ पवस्व महीमिषं ८९५
आ पवस्व सहस्रिणं ५०१
आ पवस्व सुवीर्यं ७८६
आपानासो विवस्वतो ११२३
आपो हि ष्ठा मयोभुव १८३७
आ प्रागाद् भद्रा युवति ६०८
आ बुन्दं वृत्रहा ददे २१६
आ भात्यग्निरुषसा १७५२
आभिष्ट्वमभिष्टिभिः ६४२
आ मन्द्रमा वरेण्यमा ११३८
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभि २४६, १७१८
आमासु पक्वमैरय १४३१
आ मित्रे वरुणे भगे ११३५
आयं गौः पृश्निरक्र ६३०, १३७६
आ यः पुरं नार्मिणी १७७४
आ यद्दुवः शतक्रत १०८६
आ ययोस्त्रिंशतं तना १०६०
आ याहि वनसा सह ४४३
आ याहि सुषुमा हि १९१, ६६६
आ याह्ययमिन्दवे ४०२
आ याह्युप नः सुतं २२७
आ योनिमरुणो रुहद् ९२५
आ रयिमा सुचेतुनमा ११३९
आ वंसते मघवा वीर ८७९
आ व इन्द्रं कृविं २१४
आ वच्यस्व महि १०३८
आ वच्यस्व सुदक्ष १०१२
आविर्मर्या आ वाजं ४३५
आविवासन्परावतो ९०२
आविशन्कलशं सुतो ४८९
आ वो राजानमध्वरस्य ६९
आशुः शिशानो वृषभो १८४९
आशुरर्ष बृहन्मते ८९८
आ सुते सिञ्चत १४८०
आ सोता परि षिञ्च ५८०, १३९४
आ सोम स्वानो अद्रि ५१३, १६८९
आ हरयः ससृज्रिरे १४९०
आ हर्यताय धृष्णवे ५५१
आ हर्यतो अर्जुनो ७६८

ई

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं ७२१
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः ९१४
इडामग्ने पुरुदंसं सनिं ७६
इत ऊती वो अजरं २८३
इत एत उदारुहन् ९२
इत्था हि सोम इन्मदो ४१०
इदं त एकं पर ६५
इदं वसो सुतमन्धः १२४, ७३४
इदं वा मदिरं मध्व १०७५

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इदं विष्णुर्विचक्रमे २२२, १६६९
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिः १७४९
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं १४५५
इदं ह्यन्वोजसा सुतं १६५, ७३७
इनो राजन्नरतिः समिद्धो १५४६
इन्दुः पविष्ट चारुर्म ४३१
इन्दुः पविष्ट चेतनः ४८१
इन्दुरिन्द्राय पवत ८७३
इन्दुर्वाजी पवते ५४०, १०१९
इन्दो यथा तव स्तवो ९७६
इन्दो यदद्रिभिः सुतः ९६४
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन् ९३४
इन्द्रं धनस्य सातये ६४७
इन्द्रं नरो नेमधिता ३१८
इन्द्रं वयं महाधन १३०
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्यु १७९५
इन्द्रं विश्वा अवीवृधं ३४३, ८२७
इन्द्रं वो विश्वतस्परि १६२०
इन्द्रः स दामने कृत १२२३
इन्द्र आसां नेता १८५६
इन्द्र इद्धर्योः सचा ५९७, ७९७
इन्द्र इन्नो महोनां ७१५
इन्द्र इषे ददातु न १९९
इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो २२६
इन्द्र क्रतुं न आ भर २५९, १४५६
इन्द्र जठरं नव्यं ९५३
इन्द्र जुषस्व प्र वहा ९५२
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ५८६
इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवो ४१२
इन्द्र त्रिधातु शरणं २६६
इन्द्र नेदीय एदिहि २८२
इन्द्रमग्निं कविच्छदा ६७१
इन्द्रमच्छ सुता इमे ५६६, ६९४
इन्द्रमिद् गाथिनो १९८, ७९६
इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं २४९, १५८७
इन्द्रमिद्धरी वहतो १०३०
इन्द्रमीशानमोजसा १२५२
इन्द्र वाजेषु नोव ५९८, ७९८
इन्द्र शुद्धो न आ गहि १४०३
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं १४०४
इन्द्रश्च वायवेषां १६२९
इन्द्रं सुतेषु सोमेषु ३८१, ७४६
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो ९५४
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य १३६९
इन्द्र स्थातर्हरीणां १६८५
इन्द्रस्य नु वीर्याणि ६१२
इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ १८६९
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य १८५७
इन्द्रस्य सोम पवमान १२३०
इन्द्रस्य सोम राधसे ११८०
इन्द्राग्नी अपसस्पर्यु १५७७, १६९४
इन्द्राग्नी अपादियं २८१
इन्द्राग्नी आ गतं ६६९
इन्द्राग्नी जरितुः सचा ६७०
इन्द्राग्नी तविषाणि १५७८, १६९५
इन्द्राग्नी नवतिं पुरः १५७६, १७०४
इन्द्राग्नी युवामिमे ९९१
इन्द्राग्नी रोचना दिवः १६९३
इन्द्रा नु पूषणा वयं २०२
इन्द्रा पर्वता बृहता ३३८
इन्द्राय गाव आशिरं १४९१
इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा ३३९
इन्द्राय नूनमर्चतो ९५१
इन्द्राय पवते मदः ५२०
इन्द्राय मद्वने सुतं १५८, ७२२
इन्द्राय साम गायत ३८८, १०२५
इन्द्राय सोम पातवे मदाय १४४८
इन्द्राय सोम पातवे वृत्र १३३१, १६७९
इन्द्राय सोम सुषुतः ५६१
इन्द्रा याहि चित्रभानो ११४६
इन्द्रा याहि तूतुजान ११४८
याहि धियेषितो ११४७
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते ४७२, १०७६
इन्द्रे अग्ना नमो ८००
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे ८५०
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो १८०
इन्द्रो अंग महद् भयमभि २००
इन्द्रो दधीचो अस्थभि १७९, ९१३
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस ७९९
इन्द्रो मदाय वावृधे ४११, १००२
इन्द्रो मह्ना रोदसी १५८८
इन्द्रो राजा जगतश्चर्ष ५८७
इन्द्रो विश्वस्य राजति ४५६
इन्धे राजा समर्यो ७०
इमं मे वरुण श्रुधी १५८५
इमं वृषणं कृणु ५९१
इमं स्तोममर्हते जात ६६, १०६४
इम इन्द्र मदाय ते २९४
इम इन्द्राय सुन्विरे २९३
इम उ त्वा वि चक्षते १३६
इममिन्द्र सुतं पिब ३४४, ९४९
इममू षु त्वमस्माकं २८, १४२७
इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो २५०, १६०७
इमा उ त्वसा पुरूवसोभि १४६
इमा उ त्वा सुतेसुते २०१
इमा उ वां दिविष्टय ३०४, ७५३
इमा नु कं भुवना ४५२, १११०
इमास्त इन्द्र पृश्नयो १८७
इमे त इन्द्र ते वयं ३७३
इमे त इन्द्र सोमाः २१२
इमे हि ते ब्रह्मकृतः १६७६
इयं वामस्य मन्मन ९१६
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व १८१९
इषं तोकाय नो ९९६
इषे पवस्व धारया ५०५, ८४१
इष्कर्त्तरमध्वरस्य १८२०
इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं १५१
इह त्वा गोपरीणसं ७३३
इहेव शृण्व एषां १३५

ई

ईंखयन्तीरपस्युव १७५
ईडिष्वा हि प्रतीव्यां १०३
ईडेन्यो नमस्यस्तिर १५३८
ईशान इमा भुवनानि ९५७
ईशिषे वार्यस्य हि १५३३
ईशे हि शक्रस्तमूतये ६४६

उ

उक्थं च न शस्यमानं २२५, १८०५
उक्थमिन्द्राय शंस्यं ३६३
उक्षा मिमेति प्रति १३७२
उग्रा विघनिना मृध ८५४
उच्चा ते जातमन्धसो ४६७, ६७२

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उत त्या हरितो रथे १२१८
उत नः प्रिया प्रियासु १४६१
उत न एना पवया ११०५
उत नो गोमतीरिषो १०६३
उत नो गोविदश्व ९७७
उत नो गोषणिं धिय १५९३
उत नो वाजसातये ११९०
उत प्र पिप्य ऊध १४२०
उत ब्रुवन्तु जन्तव १३८२
उत वात पितासि १८४१
उत सखास्यश्विनो १७२७
उत स्या नो दिवा १०२
उत स्वराजो अदिति १३५३
उता यातं संगवे १७५४
उतो न्वस्य जोषमा १७८७
उत्तिष्ठन्नोजसा सह ९८८
उत्ते बृहन्तो अर्चयः १५४१
उत्ते शुष्मास ईरते १२०५
उत्ते शुष्मासो अस्थू १७१४
उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः १९४, १३५४
उदग्ने भारत द्युमद १३८५
उदग्ने शुचयस्तव १५३४
उदपप्तन्नरुणा भानवो १७५६
उदुत्तमं वरुण पाश ५८९
उदु त्यं जातवेदसं ३१
उदु त्ये मधुमत्तमा २५१, १३६२
उदु त्ये सूनवो गिरः २२१
उदु ब्रह्माण्यैरत ३३०
उदुस्रियाः सृजते ७५२
उद्गा आजदंगिरोभ्य १६४१
उद्धेदभि श्रुतामघं १२५, १४५०
उदु द्यामेषि रजः ६३८
उद्धर्षय मघवन् १८५८
उद्यस्य ते नवजातस्य १२२१
उप च्छायामिव घृणे १७०६
उप त्रितस्य पाष्यो १०१४
उप त्वा कर्मन्नूतये ७०९
उप त्वाग्ने दिवेदिवे १४
उप त्वा जामयो १३, १५७०
उप त्वा जुह्वो १५४२
उप त्वा रण्वसंदृशं १७०५
उप नः सवना गहि १०८८
उप नः सूनवो गिरः १५९५
उप नो हरिभिः १५०, १७९०
उप प्रक्षे मधुमति ४४४, १११५
उपप्रयन्तो अध्वरं १३७९
उप शिक्षापतस्थुषो ७६१
उप स्रक्वेषु बपस्तः १४८२
उपह्वरे गिरीणां १४३
उपास्मै गायता ६५१, ७६३
उपो मतिः पृच्यते १३७१
उपो षु जातमप्तुरं ४८७, ७६२, १३३५
उपो षु शृणुहि गिरो ४१६
उपो हरीणां पतिं १५१०
उभयं शृणवच्च २९०, १२३३
उभयतः पवमानस्य ८८७
उभे यदिन्द्र रोदसी ३७९, १०९०
उरुगव्यूतिरभयानि १४१०
उरुव्यचसे महिने १७९४
उरुशंसा नमोवृधा ६६४
उषस्तच्चित्रमा भरा १७३१
उषा अप स्वसुष्टमः ४५१
उषो अद्येह गोमत्य १७३२
उस्रा वेद वसूनां १०५८

ऊ

ऊर्जा मित्रो वरुणः ४५५
ऊर्जो नपाज्जातवेदः १८१८
ऊर्जो नपातं स हिनाय ७०४
ऊर्जो नपातमा हुवे १७१२
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये ५७
ऊर्ध्व स्तिष्ठा न ऊतये १६०१
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि १८४७

ऋ

ऋचं साम यजामहे ३६९
ऋजुनीती नो वरुणो २१८
ऋतमृतेन सपन्ते १४६६
ऋतस्य जिह्वा पवते ७०१
ऋतावानं महिषं १८२१
ऋतावानं वैश्वानर १७०८
ऋतेन मित्रावरुणा ८४८
ऋतेन यावृतावृधा ७९४
ऋधक् सोम स्वस्तये ६५६
ऋषिमना य ऋषिकृत् ११७६
ऋषिर्विप्रः पुरएता ६७९

ए

एतं त्य हरितो दश १२७९
एतं त्रितस्य योषणो १२७५
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप १२६८
एत असृग्रमिन्दव ८३०
एतमु त्यं दशक्षिपो मृजन्ति १०८१
एतमु त्यं दशक्षिपो हरिं १२७३
एतमु त्यं मदच्युतं ५८१
एता उ त्या उषसः केत १७५५
एते सोमा अभि प्रिय ११७८
एते सोमा असृक्षत १०६१
एतोन्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं ३५०, १४०२
एतोन्विन्द्रं स्तवाम सखायः ३८७
एदु मधोर्मदिन्तरं ३८५, १६८४
एना विश्वान्यर्य आ ५९३, ६७४
एना वो अग्निं नमसो ४५, ७४९
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत ३८६, १५०९
एन्द्र नो गधि प्रिय ३९३, १२४७
एन्द्र पृक्षु कासु २३१
एन्द्र याहि हरिभिरुप ३४८, १८०७
एन्द्र याह्युप नः परा ४५९
एन्द्र सानसिं रयिं १२९
एभिर्नो अर्कैर्भवा नो १७७९
एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः १४४१
एवा नः सोम परिषिच्य ८६१
एवा पवस्व मदिरो ८०८
एवा मृताय महे क्षयाय १३६८
एवा रातिस्तुविमघ ८२५
एवा हि शक्रो राये ६४३
एवा ह्यसि वीरयु २३२, ८२४
एवा ह्येव एवा ६५०
एष इन्द्राय वायवे १२८७

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

एष उ स्य पुरुव्रतो १२६५
एष उ स्य वृषा रथो १२७४
एष कविरभिष्टुतः १२८६
एष गव्युरचिक्रदत् १२८९
एष दिवं वि धावति १२६२
एष दिवं व्यासरत्तिरो १२६३
एष देवः शुभायते १२८२
एष देवो अमर्त्यः १२५६
एष देवो रथर्यति १२५९
एष देवो वि पन्युभिः १२६०
एष देवो विपाकृतो १२६१
एष धिया यात्यण्व्या १२६६
एष नृभिर्वि नीयते १२८८
एष पवित्रे अक्षरत् १२८१
एष पुरू धियायते १२६७
एष प्र कोशे मधुमाँ ५५६
एष प्रत्नेन जन्मना ७५८, १२६४
एष प्रत्नेन मन्मना ७५९
एष ब्रह्मा य ऋत्विय ४३८, १७६८
एष रुक्मिभिरीयते १२७०
एष वसूनि पिब्दनः १२७२
एष वाजी हितो १२८०
एष विप्रैरभिष्टुतो १२५७
एष विश्वानि वार्या १२५८
एष वृषा कनिक्रद १२८३
एष शुष्म्यदाभ्यः १२९१
एष शुष्म्यसिष्यद १२९०
एष शृंगाणि दोधु १२७१
एष सूर्यमरोचयत् १२८४
एष सूर्येण हासते १२८५
एष स्य ते मधुमाँ ५३१
एष स्य धारया सुतो ५८४
एष स्य पीतये सुतो १२७८
एष स्य मद्यो रसोव १२७७
एष स्य मानुषीष्वा १२७६
एष हितो वि नीयते १२६९
एषो उषा अपूर्व्या १७८, १७२८
एह देवा मयोभुवा १७३५
एह हरी ब्रह्मयुजा १६५८
एह्यूषु ब्रवाणि ते ७, ७०५

ऐ

ऐभिर्ददे वृष्ण्या १७८४

ओ

ओजस्तदस्य तित्विष १८२, १६५३
ओभे सुश्चन्द्र विश्पते १०२४

औ

और्वभृगुवच्छुचिं १८

क

क इमं नाहुषीष्वा १९०
क ईं वेद सुते सचा २९७, १६९६
क ईं व्यक्ता नरः ४३३
कंका सुपर्णा अनु १८६४
कण्वा इन्द्रं यदक्रत १३०८
कण्वाइव भृगवः १३६३
कण्वेभिर्धृष्णवा ८६६
कदा चन स्तरीरसि ३००
कदा मर्तमराधसं १३४३
कदा वसो स्तोत्रं २२८
कदु प्रचेतसे महे २२४
कनिक्रन्ति हरिरा ५३०
कया ते अग्ने अंगिर १५४९
कया त्वं न ऊत्याभि १५८६
कया नश्चित्र आ १६९, ६८२
कविमग्निमुप स्तुहि ३२
कविमिव प्रशंस्यं १२४५
कविर्वेधस्या पर्येषि १३१८
कवी नो मित्रावरुणा ८४९
कश्यपस्य स्वर्विदो ३६१
कस्तमिन्द्र त्वा २८०, १६८२
कस्ते जामिर्जनाना १५३५
कस्त्वा सत्यो मदानां ६८३
कस्य नूनं परीणसि ३४
कायमानो वना त्वं ५३
किमित्ते विष्णो १६२५

कुवित्सस्य प्र हि १६६८
कुवित्सु नो गविष्टये १६४९
कु ष्ठः को वामश्विना ३०५
कृण्वन्तो वरिवो गवे ८३२
कृष्णां यदेनीमभि १५४७
केतुं कृण्वं दिवस्परि ९५९
केतुं कृण्वन्नकेतवे १४७०
को अद्य युंक्ते धुरि ३४१
क्रत्वा महाँ अनुष्वधं ४२३
क्रीडुर्मखो न मंहयुः ९७४
क्वास्य वृषभो १४२
क्वेयथ क्वेदसि २७५
क्षपो राजन्नुत १५६३

ग

गम्भीराँ उदधीँरिव १७२०
गर्भे मातुः पितुः १३९७
गव्यो षु णो यथा १८६
गायत्रं त्रैष्टुभं जगद्विश्वा १८३०
गायन्ति त्वा गायत्रिणो ३४२, १३४४
गाव उप वदावटे मही ११७, १६०२
गावश्चिद्धा समन्यवः ४०४
गिरस्त इन्द ओजसा १०४३
गिरा व्रजो न सम्भृतः १२२४
गिर्वणः पाहि नः १९५
गृणाना जमदग्निना ६६५
गृणे तदिन्द्र ते शवं ३९१
गोत्रभिदं गोविदं १८५४
गोमन्न इन्दो अश्ववत् ५७४, १६११
गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्य ९५५
गोषा इन्दो नृषा १०४५
गौर्धयति मरुतां १४९

घ

घृतं पवस्व धारया १४३७
घृतवती भुवनानामभि ३७८

च

चक्रं यदस्याप्स्वा ३३१
चन्द्रमा अप्स्वान्तरा ४१७

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चमूषच्छ्येनः शकुनो १९७७
चर्षणीधृतं मघवानमु ३७४
चित्रं देवानामुदगादनीकं ६२९
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य ६४

ज

जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र ३१७
जघ्निर्वृत्रममित्रियं ८१६
जज्ञानः सप्त मातृभि १०१
जज्ञानो वाचमिष्यसि ९६०
जनस्य गोपा अजनिष्ट ९०७
जनीयन्तो न्वग्रवः १४६०
जराबोध तद्विविड्ढि १५, १६६३
जातः परेण धर्मणा ९०
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः ११९४
जुष्टो हि दूतो असि १७८१
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते १०३१

त

तं गाथया पुराण्या १६३३
तं गूर्धया स्वर्णरं १०९, १६८७
तं ते मदं गृणीमसि ३८३, ८८०
तं ते वयं यथा गोभिः ७३६
तं त्वा गोपवनो गिरा २९
तं त्वा घृतस्नवीमहे १५२२
तं त्वा धर्तारमोण्योः ८०४
तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं ८३६
तं त्वा मदाय धृष्वय १०४४
तं त्वा विप्रा वचोविदः १०७७
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः ११०९
तं त्वा समिद्भिरंगिरो ६६१
तं दुरोषमभी नरः ६९९
तं वः सखायो मदाय ५६९, १०९८
तं वो दस्ममृतीषहं २३६, ६८५
तं वो वाजानां पति १६८६
तं सखायः पुरूरुचं १६८०
तं हिन्वन्ति मदच्युतं १७१७
तं हि स्वराजं वृषभं १२३४
तं होतारमध्वरस्य १५१४
तक्षद्यदी मनसो वेनतो ५३७
ततो विराडजायत ६२१
तत्ते यज्ञो अजायत १४३०
तत्सवितुर्वरेण्यं १४६२
तदग्ने द्युम्नमा भर ११३
तदद्या चित्त उक्थिनो ८८२
तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं १४८३
तद्विप्रासो विपन्यवो १६७३
तद्विष्णोः परमं पदं १६७२
तद्वो गाय सुते सचा ११५, १६६६
तपोष्पवित्रं विततं ८७६
तमग्निमस्ते वसवो १३७४
तमस्य मर्जयामसि १६३२
तमिद्वर्धन्तु नो गिरो १३३६
तमिन्द्रं जोहवीमि ४६०
तमिन्द्रं वाजयामसि ११९, १२२२
तमीडिष्व यो अर्चिषा ११४९
तमु अभि प्र गायत ३८२
तमु त्वा नूनमसुर १४१२
तमु ष्टवाम यं गिर ८८५
तमु हुवे वाजसातये ७४८
तमोषधीर्दधिरे गर्भ १८२४
तया पवस्व धारया १४३६
तरणिं वो जनानां २०४
तरणिरित्सिषासति २३८, ८६७
तरणिर्विश्वदर्शतो ६३५
तरत्स मन्दी धावति ५००, १०५७
तरत्समुद्रं पवमान ८५७
तरोभिर्वो विदद्वसु २३७, ६८७
तव क्रत्वा तवोतिभि १०५२
तव त्य इन्दो अन्धसो १२२६
तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव १६४५
तव त्यन्नर्यं नृतोप ४६६
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं १६४६
तव द्रप्सा उदप्रुत १३२७
तव द्रप्सो नीलवान् १८२३
तव श्रियो वर्ष्यस्येव ९८२
तवाहं नक्तमुत सोम ९२३
तवाहं सोम रारण ५१६, ९२२
तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं २७०
तस्मा अरं गमाम १८३९
ता अस्य नमसा सहः १००७
ता अस्य पृश्नायुवः १००६
ता नः शक्तं पार्थिवस्य ११४५, १४६५
ता नो वाजवतीरिष ११५१
ताभिरा गच्छतं ९९३
ता वां गीर्भिर्विपन्युवः ८०२
ता वां सम्यगद्रुह्वाणेष ९८६
तावानस्य महिमा ६२०
ता सम्राजा घृतासुती ९१२
ता हि शश्वन्त ईडत ८०१
ता हुवे ययोरिदं ८५३
तिस्रो वाच ईरयति ५२५, ८५९
तिस्रो वाच उदीरते ४७१, ८६९
तुचे तुनाय तत्सु ३९५
तुभ्यं सुतासः सोमाः २१३
तुभ्येमा भुवना कवे ७७७
तुरण्यवो मधुमन्तं १६१०
तुविशुष्म तुविक्रतो १७७२
ते अस्य सन्तु केतवो १४२५
ते जानत स्वमोक्यं १४८१
ते नः सहस्रिणं रयिं ११९२
ते नो वृष्टिं दिवस्परि ११६५
ते पूतासो विपश्चितः ११०२
ते मन्वत प्रथमं ६०६
ते विश्वा दाशुषे १०३६
ते सुतासे विपश्चितः १८११
ते स्याम देव वरुण १०६९
तोशा वृत्रहणा हुवे १७०२
तोशासा रथयावाना १०७४
त्यं सु मेषं महया ३७७
त्यमु वः सत्रासाहं १७०, १६४२
त्यमु वो अप्रहणं ३५७
त्यमू षु वाजिनं देव ३३२
त्रातारमिन्द्रमवितार ३३३
त्रिंशद्धाम वि राजति ६३२, १३७८
त्रिकद्रुकेषु चेतनं ७२४
त्रिकद्रुकेषु महिषो ४५७, १४८६
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः ६१८
त्रिरस्मै सप्त धेनवो ५६०, १४२३
त्रीणि त्रितस्य धारया १०१५
त्रीणि पदा वि चक्रमे १६७०
त्वं जामिर्जनानामग्ने १५३६
त्वं दाता प्रथमो राध १४९३

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

त्वं द्यां च महिव्रत १०१८
त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं ७१८
त्वं न इन्द्रा भर ओजो ४०५, ११६९
त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो ४१, १६२३
त्वं नृचक्षा असि सोम ९५६
त्वं नो अग्ने अग्निभि १५०५
त्वं नो अग्ने महोभि ६
त्वं पुरू सहस्राणि १५८२
त्वं यविष्ठ दाशुषो १२४६
त्वं राजेव सुव्रतो ९७२
त्वं वरुण उत मित्रो १३०६
त्वं वलस्य गोमतो १२५१
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु १०९४
त्वं समुद्रिया अपो ७७६
त्वं सिन्धूँरवासृजो १८०२
त्वं सुतो मदिन्तमो १३२४
त्वं सुष्वाणो अद्रिभि १३२५
त्वं सूर्ये न आ भज १०५१
त्वं सोम नृमादनः ९६५
त्वं सोम परि स्रव ९८१
त्वं सोमासि धारयु १३२३
त्वं ह त्यत्पणीनां १५९२
त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो ३२६
त्वं हि क्षैतवद्यशो ८४
त्वं हि नः पिता वसो ११७०
त्वं हि राधसस्पते १३२२
त्वं हि वृत्रहन्नेषां १७९२
त्वं हि शश्वतीनां १२४९
त्वं हि शूरः सनिता १४३४
त्वं ह्यांग दैव्य पवमान ५८३, ९३८
त्वं ह्येहि चेरवे २४०, १५८१
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं ६१
त्वमग्ने यज्ञानां होता २, १४७४
त्वमग्ने वसूँरिह ९६
त्वमग्ने सप्रथा असि १४०७
त्वमंग प्र शंसिषो २४७, १७२३
त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने ४२
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि ३११, १६३७
त्वमिन्द्र बलादधि १२०
त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी २४८, १४११

त्वमिन्द्राभिभूरसि १०२६
त्वमिमा ओषधीः ६०४
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र १३५६
त्वमेतदधारयः कृष्णासु ५९५
त्वया वयं पवमानेन ५९०
त्वया ह स्विद्युजा वयं ४०३
त्वष्टा नो दैव्यं वचः २९९
त्वां दूतमग्ने अमृतं १५६८
त्वां यज्ञैरवीवृधन् १०५५
त्वां रिहन्ति धीतयो १०१७
त्वां विश्वे अमृतं ११४१
त्वां विष्णुर्बृहन् १६४७
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत ११७१
त्वामग्ने अंगिरसो ९०८
त्वामग्ने पुष्करा ९
त्वामिच्छवसस्पते १७६९
त्वामिदा ह्यो नरो ३०२, ८१३
त्वामिद्धि हवामहे २३४, ८०९
त्वावतः पुरूवसो १९३
त्वे अग्ने स्वाहुत ३८
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति १४८५
त्वे विश्वे सजोषसो १०९५
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति ८३
त्वे सोम प्रथमा वृक्त १५०६

द

दधन्वे वा यदीमनु ९४
दधिक्राव्णो अकारिषं ३५८
दविद्युतत्या रुचा ६५४
दाना मृगो न वारणः १६९७
दाशेम कस्य मनसा १५५०
दिवः पीयूषमुत्तमं १२२७
दिवो धर्तासि शुक्रः १२४३
दिवो नाभा विचक्षणो ११९९
दीर्घं ह्यंकुशं यथा १०९१
दुहान ऊधर्दिव्यं ६७६
दुहानः प्रत्नमित्पयः ७६०
दूतं वो विश्ववेदसं १२
दूरादिहेव यत्सतो २१९
देवानामिदवो १३८
देवेभ्यस्त्वा मदाय ११८२

देवो वो द्रविणोदाः ५५, १५१३
दोषो आ गाद् बहद् १७७
द्युक्षं सुदानुं तविषी ६८६
द्रप्सः समुद्रमभि १८४८
द्विता यो वृत्रहन्तमो १७९१
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं १३३०

ध

धर्ता दिवः पवते ५५८, १२२८
धानावन्तं करम्भिणम २१०
धिया चक्रे वरेण्यो १४७९
धीभिर्मृजन्ति वाजिनं ९४१
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता १८३६
ध्वस्रयोः पुरुष १०५९

न

न कि इन्द्र त्वदुत्तरं २०३
न कि देवा इनीमसि १७६
न किरस्य सहन्त्य १४१६
न किष्टं कर्मणा २४३, ११५५
न किष्ट्वद्रथीतरो ९५०
न की रेवन्तं सख्याय १३९०
न घा वसुर्नि यमते १६६७
न घेमन्यदा पपत ७२०
न तमंहो न दुरितं ४२६
न तस्य मायया १०४
न ते गरो अपि १७९९
न त्वा बृहन्तो अद्रयो २९६
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो ६८१
न त्वा शतं च न १२१५
नदं व ओदतीनां १५१२
न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु ८६८
नमः सखिभ्यः पूर्व १८२८
नमसेदुप सीदत १४४६
नमस्ते अग्न ओजसे ११, १६४८
न यं दुध्रा वरन्ते ६८८
नराशंसमिह प्रियम १३४९
नव यो नवतिं पुरो १४५१
न संस्कृतं प्र मिमीतो १७५३
न सीमदेव आप २६८

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

न हि ते पूर्तमक्षिपद् ७०७
न हि त्वा शूर देवा ७३०
न हि वश्चरमं च २४१
न ह्यांग पुरा च न १५११
नाके सुपर्णमुप यत् ३२०, १८४६
नाभा नाभिं न आ ११२६
नाभिं यज्ञानां सदन ११४२
नित्यस्तोत्रो वनस्पति १२०२
नि त्वा नक्ष्य विश्पते २६
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ५४
नियुत्वान्वायवा गह्य ६००
नीव शीर्षाणि मृढ्वं १६५६
नूनं पुनानोविभिः १३१४
नू नो रयिं महामिन्दो ९२६
नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्र ११८५
नृभिर्धौतः सुतो अश्नै ७३५
नृभिर्येमानो हर्यतो ८५८
नेमिं नमन्ति चक्षसा ९३१

प

पदं देवस्य मीढुषो १५७२
पदा पणीनराधसो १३५५
पन्यंपन्यमित्सोतार १२३, १६५७
पन्यांसं जातवेदसं १५६६
परि कोशं मधुश्चुतं ५७७
परित्यं हर्यतं हरिं ५५२, १३२९
१६८१
परि द्युक्षं सनद्रयिं ४९६
परि नः शर्ममन्त्या ८९७
परि नो अश्वमश्वविद् १२१२
परि प्र धन्वेन्द्राय ४२७, १३६७
परि प्रासिष्यदत्कविः ४८६
परि प्रिया दिवः कवि ४७६, ९३५
परि यत्काव्या कवि ११३१
परि वाजपतिः कवि ३०
परि विश्वानि चेतसा ९७०
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं ८९९
परि स्य स्वानो अक्षर १२४०
परि स्वानश्चक्षसे १३१५
परि स्वानास इन्दवो ४८५, ११२२
परि स्वानो गिरिष्ठाः ४७५, १०९३
परितो षिञ्चता सुतं ५१२, १३१३
पर्जन्यः पिता महिषस्य १३१७
पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये ४२८
१३६४
पर्षि तोकं तनयं पर्तृभि १६२४
पवते हर्यतो हरिरति ५७६, ७७३
पवन्ते वाजसातये ११८९
पवमान धिया हितो ९२१
पवमान नि तोशसे १२३६
पवमानमवस्यवो विप्र ११८८
पवमान रसस्तव ८९०
पवमान रुचारुचा ९०५
पवमान व्यश्नुहि १३१२
पवमान सुवीर्यं रयिं १४४९
पवमानस्य जिघ्नतो १३१०
पवमानस्य ते कवे ६५७
पवमानस्य ते रसो ८९१
पवमानस्य ते वयं ७८७
पवमानस्य विश्ववित् ९५८
पवमाना असृक्षत पवित्र ५२२
पवमाना असृक्षत सोमाः १६९९
पवमाना दिवस्पर्यन्त १७००
पवमानास आशवः शुभ्रा १७०१
पवमानो अजीजनद् ४८४, ८८९
पवमानो अभि स्पृधो ११३२
पवमानो असिष्यदद्रक्षा १४३९
पवमानो रथीतमः १३११
पवस्व दक्षसाधनो ४७४, ९१९
पवस्व देव आयुषगिन्द्रं ४८३, १२३५
पवस्व देववीतय इन्द्रा ५७१, १३२६
पवस्व देववीरति पवित्रं १०३७
पवस्व मधुमत्तम ५७८, ६९२
पवस्व वाचो अग्रियः ७७५
पवस्व वाजसातमो ५२१
पवस्व वाजसातये १०१६
पवस्व विश्वचर्षण ८९६
पवस्व वृत्रहन्तम ९६६
पवस्व वृष्टिमा सु १४३५
पवस्व सोम द्युम्नी ४३६
पवस्व सोम मधुमाँ ५३२
पवस्व सोम मन्दयन् १८१०
पवस्व सोम महान्त्समुद्रः ४२९, १२४१
पवस्व सोम महे दक्षा ४३०, १३३२
पवस्वेन्दो वृषा सुतः ४७९, ७७८
पवित्रं ते विततं ब्रह्म ५६५, ८७५
पवीतारः पुनीतन १०५०
पातं नो मित्रा पायुभि ९८७
पाता वृत्रहा सुतमा १६५९
पात्यग्निर्विपो अग्रं ६१४
पान्तमा वो अन्धस १५५, ७१३
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा १८१७
पावका नः सरस्वती १८९
पावमानीः स्वस्त्ययनीः १३००
पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ता १३०३
पावमानीर्दधन्तु न १३०१
पावमानीर्यो अध्ये १२९९
पाहि गा अन्धसो २८९
पाहि नो अग्न एकया ३६, १५४४
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो १५४५
पिबन्ति मित्रो अर्यमा १७८६
पिबा त्वास्य गिर्वणः १३९३
पिबा सुतस्य रसिनो २३९, १४२१
पिबा सोममिन्द्र मदन्तु ३९८, ९२७
पुनरूर्जा नि वर्तस्व १८३२
पुनाता दक्ष साधनं ११५९
पुनानः कलशेष्वा ११८३
पुनानः सोम जागृवि ५१९
पुनानः सोम धारयापो ५११, ६७५
पुनानासश्चमूषदो ११७९
पुनाने तन्वा मिथः १५९७
पुनानो अक्रमीदभि ४८८, ९२४
पुनानो देववीतये ८४३
पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं ८४२
पुनानो वारे पवमानो १०८०
पुरः सद्य इत्थाधिये १२११
पुरां भिन्दुर्युवा कवि ३५९, १२५०
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि ११६७
पुरु त्वा दाशिवाँ ९७
पुरुष एवेदं सर्वं ६१९
पुरुहूतं पुरुष्टुतं ७१४
पुरूतमं पुरूणा ७४१
पुरूरुणा चिद्धयस्त्यवो ९८५
पुरोजिती वो अन्धसः ५४५, ६९७
पूर्वस्य यत्ते अद्रिवो ६४८

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो ८२९
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् १५८०
प्र कविर्देववीतये ९६८
प्र काव्यमुशनेव ५२४, १११६
प्र केतुना बृहता ७१
प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य ६०९
प्र गायताभ्यर्चाम देवां ५३५
प्रजामृतस्य पिप्रतः १३०९
प्र त आश्विनीः पवमान ८८६
प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट १६२६
प्रति त्यं चारुमध्वरं १६
प्रति प्रियतमं रथं ४१८, १७४३
प्रति वां सूर उदिते १०६७
प्रति ष्या सूनरी जनी १७२५
प्र तु द्रव परि कोशं ५२३, ६७७
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः ७३९
प्र ते धारा असश्चतो १७६१
प्र ते धारा मधुमती ५३४
प्र ते सोतारो रसं १३३३
प्रत्ने पीयूषं पूर्व्यं १४९४
प्रत्यग्ने हरसा हरः ९५
प्रत्यङ् देवानां विशः ६३६
प्रत्यस्मै पिपीषते ३५२, १४४०
प्रत्यु अदर्श्याय ३०३, ७५१
प्रथश्च यस्य सप्रथश्च ५९९
प्र देवमच्छा मधुमन्त ५६३
प्र दैवोदासो अग्निर्देव ५१, १५१७
प्र धन्वा सोम जागृवि ५६७
प्र धारा मधो अग्रियो ११२९
प्र न इन्दो महे तु ५०९
प्र पवमान धन्वसि ९६३
प्र पुनानाय वेधसे ५७३
प्रप्र क्षयाय पन्यसे ९३७
प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं ३६०
प्र भंगी शूरो मघवा १४५९
प्र भूर्जयन्तं महां ७४
प्रभो जनस्य वृत्रहन् ६४९
प्र मंहिष्ठाय गायत १०७, ८७८
प्र मन्दिने पितुमदर्चता ३८०
प्र मित्राय प्रार्यम्णे २५५
प्र यद् गावो न भूर्णय ४९१, ८९२
प्र युजा वाचो अग्रियो ११३०

प्र यो राये निनीषति ५८
प्र यो रिरिक्ष ओजसा ३१२
प्र व इन्द्राय बृहते २५७
प्र व इन्द्राय मादनं १५६, ७१६
प्र व इन्द्राय वृत्रहन् ४४६, १११३
प्र वां महि द्यवी १५९६
प्र वाचमिन्दुरिष्यति १२०१
प्र वाज्यक्षाः सहस्रधार ११६०
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो १५७५, १७०३
प्र वो धियो मन्द्रयुवो ११५३
प्र वो महे मतयो यन्तु ४६२
प्र वो महे महेवृधे ३२८, १७९३
प्र वो मित्राय गायत ११४३
प्र वो यह्वं पुरूणां ५९
प्र सम्राजं चर्षणीनां १४४
प्र सम्राजमसुरस्य ७८
प्र स विश्वेभिरग्नि १५०४
प्रसवे त उदीरते १२०६
प्र सुन्वानायान्धसः ५५३, ७७४
१३८६
प्र सेनानीः शूरो अग्रे ५३३
प्र सो अग्ने तवोतिभिः १०८, १८२२
प्र सोम देवीतये ५१४, ७६७
प्र सोम याहीन्द्रस्य ११६२
प्र सोमासो अधन्विषुः ९६१
प्र सोमासो मदच्युतः ४७७, ७६९
प्र सोमासो विपश्चितो ४७८, ७६४
प्र स्वानासो रथा १११९
प्र हंसासस्तृपला वग्नुमच्छा १११७
प्र हिन्वानो जनिता ५३६
प्र होता जातो महान् ७७
प्र होत्रे पूर्व्यं वचो ९८
प्राचीमनु प्रदिशं याति १५९१
प्राणा शिशुर्महीनां ५७०, १०१३
प्रातरग्निः पुरुप्रियो ८५
प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न ९४५
प्रास्य धारा अक्षरन् १७६५
प्रियो नो अस्तु विश्पति १६१९
प्रेता जयता नर १८६२
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि १३७५
प्रेष्ठं वो अतिथिं ५, १२४४
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि ४१३

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र ५६
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य ५५७, ११५२
प्रोथदश्वो न यवसे १२२०
प्रो ष्वस्मै पुरोरथ १८०१

ब

बट् सूर्य श्रवसा महाँ १७८९
बण्महाँ असि सूर्य २७६, १७८८
बभ्रवे नु स्वतवसे १४४४
बलविज्ञायः स्थविरः १८५३
बृबदुक्थं हवामहे २१७
बृहदिन्द्राय गायत २५८
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः ३७
बृहद्वयो हि भानवे ८८
बृहन्निदिध्म एषां १३३९
बृहस्पते परि दीया १८५२
बोधन्मना इदस्तु १४०
बोधा सु मे मघवन् ९२९
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं ३२१
ब्रह्म प्रजावदा भर १३९८
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो ४३९
ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं ६६८
ब्रह्मा देवानां पदवीः ९४४
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः २२९

भ

भगो न चित्रो अग्नि ४४९
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम १८७४
भद्रं नो अपि वातय ४२२
भद्रंभद्रं न आ भरेष १७३
भद्रं मनः कृणुष्व १५६०
भद्रा वस्त्रा समन्या १४००
भद्रो नो अग्नि राहुतो १११, १५५९
भद्रो भद्रया सचमान १५४८
भरामेध्मं कृणवामा १०६५
भिन्धि विश्वा अप १३४, १०७०
भूयाम ते सुमतौ १४२२
भूरि हि ते सवना १८००
भ्राजन्त्यग्ने समिधान ६१५

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

म

मघोनः स्म वृत्रहत्येषु १६८३
मघोन आ पवस्व ११८४
मत्सि वायुमिष्टये १२५४
मत्स्यपायि ते महः १४३२
मत्स्वा सुशिप्रिन् ८१४
मदच्युत्क्षेति सादने ११९८
मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं १३४८
मनीषिभिः पवते पूर्व्यः ८२२
मदन्तु त्वा मघवन् १७२२
मन्द्रं होतारमृत्विजं १५४३
मन्द्रिया सोम धारया ५०६
मन्ये वां द्यावापृथिवी ६२२
मयि वर्चो अथो यशो ६०२
मर्माणि ते वर्मणा १८७०
महत्तत्सोमो महिष ५४२, १२५५
महाँ इन्द्रः पुरश्च नो १६६
महाँ इन्द्रो य ओजसा १३०७
महान्तं त्वा महीरन्वापो १०४०
महि त्रीणामवरस्तु १९२
मही मित्रस्य साध १५९८
महीमे अस्य वृष ११०६
महे च न त्वाद्रिवः परा २९१
महे नो अद्य बोधयो ४२१, १७४०
महो नो राय आ भर १२१४
मा चिदन्यद्वि शंसत २४२, १३६०
मा ते राधांसि मा त १७२४
मा त्वा मूरा अविष्यवो ७३२
मा न इन्द्र परा २६०
म न इन्द्र पीयत्नवे १८०६
मा न इन्द्राभ्या दिशः १२८
मा नो अग्ने महाधने १६५०
मा नो अज्ञाता वृजना १४५७
मा नो हृणीथा अतिथिं ११०
मा पापत्वाय नो ९१८
मा भेम मा श्रमिष्मो १६०५
मित्रं वयं हवामहे ७९३
मित्रं हुवे पूतदक्षं ८४७
मूर्धानं दिवो अरतिं ६७, ११४०
मृगो न भीमः कुचरो १८७३
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो ११८१
मृज्यमानः सुहस्त्या ५१७, १०७९
मेडिं न त्वा वज्रिणं ३२७
मेधाकारं विदथस्य ९८४
मो षु त्वा वाघतश्च २८४, १६७५
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयु ८२६

य

यं जनासो हविष्मन्तो १५६५
यं रक्षन्ति प्रचेतसो १८५
यं वत्रेषु क्षितय ३३७
यः पावमानीरध्ये १२९८
यः सत्राहा विचर्षणि २८६
यः सोमः कलशेष्वा १२००
यः स्नीहितीषु पूर्व्यः १३८०
य आनयत्परावतः १२७
य आर्जीकेषु कृत्वसु ११६४
य इदं प्रतिपप्रथे १७०९
य इद्ध आ विवासति ११५०
य इन्द्र चमसेष्वा १६२
य इन्द्र सोमपातमो ३९४
य उग्र सन्ननिष्टृतः १६९८
य उग्र इव शर्यहा १७०७
य उस्रिया अपि या ५८५
य ऋते चिदभिश्रिषः २४४
य एक इद्विदयते ३८९, १३४१
य ओजिष्ठस्तमा भर ८२०
यच्चिद्धि शश्वता १६१८
यच्छक्रासि परावति २६४
यजा नो मित्रावरुणा १५३७
यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं ३३४
यजिष्ठं त्वा यजमाना १८१४
यजिष्ठं त्वा ववृमहे ११२, १४१३
यज्जायथा अपूर्व्य ६०१, १४२९
यज्ञं च नस्तन्वं च ११११
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् १२१, १६३९
यज्ञस्य केतुं प्रथमं ९०९
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा १०७३
यज्ञायज्ञा वो अग्नये ७०३
यत इन्द्र भयामहे २७४, १३२१
यत्ते दिक्षु प्राध्यं ११७४
यत्र क्व च ते मनो ७०६
यत्र बाणा संपतन्ति १८६६
यत्सानोः सान्वारुहो १३४५
यत्सोम चित्रमुक्थ्यं ९९९
यत्सोममिन्द्र विष्णवि ३८४
यथा गौरो अपा कृतं २५२, १७२१
यददो वात ते गृहे १८४२
यदद्भिः परिषिच्यसे ७८५
यदद्य कच्च वृत्रहन् १२६
यदद्य सूर उदिते १३५१
यदा कदा च मीढुषे २८८
यदिन्द्र चित्र म इह ३४५, ११७२
यदिन्द्र नाहुषीष्वा २६२
यदिन्द्र प्रागपागुदक् २७९, १२३१
यदिन्द्र यावतस्त्वमेता ३१०, १७९६
यदिन्द्र शासो अव्रतं २९८
यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय १२२, १८३४
यदिन्द्रो अनयद्रितो १४८
यदि वीरो अनु ष्याद ८२
यदीं गणस्य रशनामजीगः १७४८
यदी वहन्त्याशवो ३५६
यदी सुतेभिरिन्दुभिः १४४२
यदुदरीत आजयः ४१४, १००४
यद् द्याव इन्द्र ते शतं २७८, ८६२
यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना १७५९
यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा ६२४
यद्वा उ विश्पतिः शितः ११४
यद्वा रुमे रुशमे श्यावके १२३२
यद्वाहिष्ठं तदग्नये ८६
यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे २०७, १०७२
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र ११७३
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा १४१५
यया गा आकरामहै १५२८
यवंयवं वो अन्धसा ९७५
यशो मा द्यावापृथिवी ६११
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य १३४२
यस्त इन्द्र नवीयसीं ८८४
यस्ते अनु स्वधामसत् ७३८
यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र ११६
यस्ते मदो युज्यश्चारु ९२८
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना ४७०, ८१५

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यस्ते शृंगवृषो ७२७
यस्त्वामग्ने हविष्पति ८४५
यस्माद्रेजन्त कृष्टय १५१६
यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो ७२३
यस्य त इन्द्रः पिबाद्यस्य १०९७
यस्य ते पीत्वा वृषभो ६९३
यस्य ते महिना महः १७७३
यस्य ते विश्वमानुषग् १०७१
यस्य ते सख्ये वयं ७७९
यस्य त्यच्छमबरं मदे ३९२
यस्य त्रिधात्ववृतं १५७१
यस्यां विश्व आर्यो १६०९
यस्येदमा रजोयुजस्तुजे ५८८
या इन्द्र भुज आभरः २५४
या ते भीमान्यायुधा ७८०
या दस्रा सिन्धुमातरा १७२९
या वां सन्ति पुरुस्पृहो ९९२
यावित्था श्लोकमा १७३६
या सुनीथे शौचद्रथे १७४१
यास्ते धारा मधुश्चुतो ९७९
युंक्ष्वा हि केशिना १३४६
युंक्ष्वा हि वाजिनी १७३३
युंक्ष्वा हि वृत्रहन् ३०१
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं १४६८
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य ७१२
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी १४६९
युञ्जे वाचं शतपदीं १८२९
युध्मं सन्तमनर्वाणं १६४३
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं ७५४
युवं हि रथः स्वः पती १००१
ये ते पन्था अधो दिवो १७२
ये ते पवित्रमूर्मयो ७८८
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवु १५०२
येन ज्योतींष्यायवे ८८१
येन देवाः पवित्रेणा १३०२
येना नवग्वा दध्यङ् ९३९
येना पावक चक्षसा ६३७
ये सोमासः परावति ११६३
यो अग्निं देववीतये ८४६
योगेयोगे तवस्तरं १६३, ७४३
यो जागार तमृचः १८२६
यो जिनाति न जीयते ९७८
यो धारया पावकया ६९८
यो नः स्वोरणो १८७२
यो न इदमिदं पुरा ४००
योनिष्ट इन्द्र सदने ३१४
यो नो वनुष्यान् ३३६
यो मंहिष्ठो मघोनां ६४५
यो रयिं वो रयिन्तमो ३५१
यो राजा चर्षणीनां २७३, ९३३
यो वः शिवतमो १८३८
यो विश्वा दयते वसु ४४, १५८३

र

रक्षोहा विश्वचर्षणि ६९०
रयिं नश्चित्रमश्विन १०५६
रसं ते मित्रो अर्यमा १०७८
रसाय्यः पयसा पिन्व ८०७
राजानावनभिद्रुहा ९११
राजानो न प्रशस्तिभिः ११२१
राजा मेधाभिरीयते ८३३
रायः समुद्राँश्चतुरो ८७१
राया हिरण्यया मति १०६८
राये अग्ने महे त्वा ९३
रुशद्वत्सा रुशती १७५०
रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे १५३, १०८४
रेवाँ इद्रेवत स्तोता १८०४

व

वच्यन्ते वां ककुहासो १७३०
वयं घ त्वा सुतावन्त २६१, ८६४
वयं घा ते अपि स्मसि २३०
वयं ते अस्य राधसो १२३९
वयः सुपर्णा उप सेद ३१९
वयमिन्द्र त्वायवो १३२
वयमु त्वा तदिदर्था १५७, ७१९
वयमु त्वामपूर्व्य ४०८, ७०८
वयमेनमिदा ह्योपीपेमेह २७२, १६९१
वयश्चित्ते पतत्रिणो ३६७
वरिवोधातमो भुवो ६९१
वरुणः प्राविता भुवन् ७९५
वषट् ते विष्णवास आ १६२७
वसन्त इन्नु रन्त्यो ६१६
वसुरग्निर्वसुश्रवा ११०८
वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत २९२
वाचमष्टापदीमहं ९९०
वाजी वाजेषु धीयते १४७८
वात आ वातु भेषजं १८४, १८४०
वातोपजूत इषितो ९८३
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा १६३०
वायो शुक्रो अयामि १६२८
वार्ण त्वा यव्याभिः ७११
वावृधानः शवसा भूर्योजाः १४८४
वाश्राा अर्षन्तीन्दवो ११९३
वास्तोष्पते ध्रुवा २७५
विघ्नन्तो दुरिता पुरु ८३१
वि चिद् वृत्रस्य दोधतः १६५२
वि त्वदापो न पर्वतस्य ६८
विदा मघवन् विदा ६४१
विदा राये सुवीर्यं ६४४
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं ७२९
विधुं दद्राणं समने ३२५, १७८२
वि न इन्द्र मृधो जहि १८६८
विपश्चिते पवमानाय १६१५
विभक्तासि चित्रभानो १४९८
विभूतरातिं विप्र चित्र १६८८
विभूषन्नग्न उभयाँ १५६९
विभोष्ट इन्द्र राधसो ३६६
विभ्राजं ज्योतिषा स्व १०२७
विभ्राड् बृहत्पिबतु ६२८, १४५३
विभ्राड् बृहत्सुभृतं १४५४
वि रक्षो वि मृधो जहि १८६७
विव्यक्थ महिना वृषन् १६६१
विशोविशो वो अतिथिं ८७, १५६४
विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः १५८९
विश्वतोदावन्विश्वतो ४३७
विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे ८४०
विश्वस्य प्र स्तोभ ४५०
विश्वाः पृतना अभिभूतरं ३७०, ९३०
विश्वा धामानि विश्वचक्ष ८८८
विश्वानरस्य वस्पति ३६४
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु ६१०
विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं १६२७
वि षु विश्वा अरातयो १८०३

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विष्णोः कर्माणि पश्यत १६७१
वि सुतयो यथा पथा ४५३, १७७०
वीड् चिदारुजत्नुभि ८५२
वीतिहोत्रं त्वा कवे १५२३
वृकश्चिदस्य वारण १६९२
वृत्रखादो बलं रुजः १७१९
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीष ३२४
वृषणं त्वा वयं वृषन् १५४०
वृषा पवस्व धारया ४६९, ८०३
वृषा पुनान आयूंषि १०००
वृषा मनीनां पवते ५५९, ८२१
वृषा यूथेव वंसगा १६२२
वृषा शोणो अभि कनि ८०६
वृषा सोम द्युमाँ ५०४, ७८१
वृषा ह्यसि भानुना ४८०, ७८४
वृषो अग्निः समिध्यते १५३९
वृष्टिं दिवः परि ११८६
वृष्टिद्यावा रीत्या १४६७
वृषणस्ते वृष्ण्यं शवो ७८२
वेत्था हि निर्ऋतीनां ३९६
वेत्था हि वेधो अध्वनः १४७६
व्यान्तरिक्षमतिरन्मदे १६४०

श

शं नो देवीरभिष्टये ३३
शं पदं मघं रयीषिणे ४४१
शंसेदुक्थं सुदानव ७१७
शकेम त्वा समिधं १०६६
शग्ध्यू षु शचीपत २५३, १५७९
शचीभिर्नः शचीवसू २८७
शतानीकेव प्र जिगाति ८१२
शशमानस्य वा नरः १५९४
शाक्मना शाको अरुणः १७८३
शाचिगो शाचिपूजनायं ७२६
शिक्षा ण इन्द्र राय १६४४
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं १८३५
शिक्षेयमिन्महयते १७९७
शिशुं जज्ञानं हरिं १३३४
शिशुं जज्ञानं हर्यतं ११७५
शुक्रं ते अन्यद्यजतं ७५
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः १२४२
शुचिः पावक उच्यते ९६७
शुनं हुवेम मघवान ३२९
शुभ्रमन्धो देववातम १००९
शुम्भमाना ऋतायुभि १०३५
शुष्मी शर्धो न मारुतं १४७३
शूरग्रामः सर्ववीरः सहा १४०९
शूरो न धत्त आयुधा १२२९
शृणुतं जरितुर्हव ९१७
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः ८९४
शेषे वनेषु मातृषु ४६
श्रत्ते दधामि प्रथमाय ३७१
श्रायन्त इव सूर्यं २६७, १३१९
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं २०८
श्रुधि श्रुतकर्ण वह्निभि ५०
श्रुधी हवं तिरश्च्या ३४६, ८८३
श्रुधी हवं विपिपानस्य १७९८
श्रुष्टयग्ने नवस्य मे १०६

स

सं क्रन्दनेनानिमिषेण १८५०
सं ते पयांसि समु यन्तु ६०३
सं देवैः शोभते वृषा ९२०
सं मातृभिर्न शिशुर्वाव १४१९
सं वत्सइव मातृभिः १०९९
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं ८३७
स इधानो वसुष्कवि १५६२
स इषुहस्तैः स निषङ्ग् १८५१
स ईं रथो न भुरि १४७२
सखाय आ नि षीदत ५६८, ११५७
सखाय आ शिषामहे ३९०
सखायस्त्वा ववृमहे ६२
सख्ये त इन्द्र वाजिनो ८२८
स घा तं वृषणं रथ ४२४
स घा नः सूनुः १६३५
स घा नो योग आ ७४२
स घा यस्ते दिवो ३६५
सत्यमित्था वृषेदसि २६३
सत्राहणं दाधृषिं ३३५
स त्रितस्याधि सानवि १२९५
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त ८१०
सदसस्पतिमद्भुतं १७१
सदा गावः शुचयोः ४४२
सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा १९६
स देवः कविनेषितो १२९७
स नः पवस्व शं गवे ६५३
स नः पुनान आ भर ७८९
स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा ६६२
स न इन्द्रः शिवः १४५२
स न इन्द्राय यज्यवे ५९२, ६७३
स न ऊर्जे व्याव्ययं १४३८
सना च सोम जेषि १०४७
सना ज्योतिः सना १०४८
सना दक्षमुत क्रतुमप १०४९
सनादग्ने मृणसि यातु ८०
सनेमि त्वमस्मदा अदेवं १६१३
स नो दूराच्चासाच्च १६३६
स नो भगाय वायवे १०८३
स नो मन्द्राभिरध्वरे १४७५
स नो महाँ अनिमानो १६६४
स नो मित्रमहस्त्वमग्ने १७१३
स नो विश्वा दिवो १७६४
स नो वृषन्नमुं चरुं १६२१
स नो वेदो अमात्यमग्नी १३८१
स नो हरीणां पत १६१२
स पवस्व मदिन्तम १२०९
स पवस्व य आविथेन्द्रं ४९४
स पवित्रे विचक्षणो १२९३
स पुनान उप सूरे दधान १३५८
स पूर्व्यो महोनां वेनः ३५५
सप्त त्वा हरितो रथे ६४०
सप्तिं मृजन्ति वेधसो १७६६
स प्रथमे व्योमनि ७४७
स भक्षमाणो अमृतस्य १४२४
समत्स्वग्निमवसे ११६८
समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः ६०७
स मर्मृजान आयुभिरिभो १७६३
समस्य मन्यवे विशो १३७, १६५१
स मह्ना विश्वा दुरितानि १३०५
समानो अध्वा स्वस्रोः १७५१
स मामृजे तिरो अण्वानि १६९०
समिद्धमग्निं समिधा गिरा १५६७
समिन्द्रेणोत वायुना १०८३

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

समिन्द्रो रायो बृहती १६७८
समीचीना अनूषत ९०३
समीचीनास आशत ११२५
समी वत्सं न मातृभिः ११५८
समुद्रो अप्सु मामृजे १०४१
समु प्रिया अनूषत ८१९
समु प्रियो मृज्यते १४०१
समु रेभासो अस्वरन् ९३२
समेत विश्वा ओजसा ३७२
सम्मिश्लो अरुषो भुवः ८१७
सम्राजा या घृतयोनी ११४४
स योजत उरुगायस्य १११८
स योजते अरुषा ७५०
सरूप वृषन्ना गहीमौ १६५५
स रेवाँइव विश्पति १६६५
स वर्धिता वर्धनः १३५९
स वह्निरप्सु ९७३
स वाजं विश्वचर्षणि १४१७
स वाजी रोचनं दिवः १२९४
स वाज्यक्षाः सहस्ररेता ११६१
स वायुमिन्द्रमश्विना ११३४
स वीरो दक्षसाधनो १३८८
स वृत्रहा वृषा सुतो १२९६
सव्यामनु स्फिग्यं १६०६
स सुतः पीतये वृषा १२९२
स सुन्वे यो वसूनां ५८२, १०९६
स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो ९३६
सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने १८३३

सहर्षभाः सहवत्सा उदेत ६२६
सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज ६२५
सहस्रधारं वृषभं पयो १३९५
सहस्रधारः पवते समुद्रो ८७४
सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः ६१७
स हि पुरू चिदोजसा विरु १८१५
स हि ष्मा जरितृभ्य ९६९
साकं जातः क्रतुना साकमोजसा १४८७
साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो ५३८, १४१८
सा नो अद्या भरद्वसुर्व्युच्छा १७४२
साह्वान्विश्वा अभियुजः १५५८
सिञ्चन्ति नमसावटमुच्चा १६०४
सीदन्तस्ते वयो यथा ७०४
सुत एति पवित्र आ ९०१
सुता इन्द्राय वायवे ७६६
सुतासो मधुमत्तमाः ५४७, ८७२
सुनीथो घा स मर्त्यो २०६
सुनोत सोमपाव्ने सोम २८५
सुप्रावीरस्तु स क्षयः १३५२
सुमन्मा वस्वी रन्ती १६५४
सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघा १६०, १०८७
सुवितस्य वनामहेति ८९३
सुषमिद्धो न आ वह १३४७
सुषहा सोम तानि ते १७६७
सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि ३१६
सुष्वाणासो व्यद्रिभि ११०३
सूर्यस्येव रश्मयो द्राव १३७०

सो अग्निर्यो वसुर्गृणे १७३९
सो अर्षेन्द्राय पीतये ९८०
सोमं गावो धेनवो ८६०
सोमं राजानं वरुणमग्नि ९१
सोमः पवते जनिता मतीनां ५२७, ९४३
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं ५७२, ९४०
सोमः पुनानो अर्षति ११८७
सोमः पूषा च चेततु १५४
सोम उ ष्वाणः सोतृभि ५१५, ९९७
सोमाः पवन्त इन्दवो ५४८, ११०१
स्तोत्रं राधानां पते १६००
स्वरन्ति त्वा सुते नरो ८६५
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः १८७५
स्वादिष्ठया मदिष्ठया ४६८, ६८९
स्वादोरित्था विषूवतो ४०९, १००५
स्वायुधः पवते देव ६७८

ह

हथो वृत्राण्यार्या हथो ८५५
हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो ६२३
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः १४४५
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः ९०४
हिन्वानासो रथा इव ११२०
हिन्वानो हेतृभिर्हित ६५५
होता देवो अमर्त्यः १४७७

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.